

मसूरी MUSSOORIE

पुस्तकालय LIBRARY and an antication to a paragraphic paragra

अवाप्ति संख्या
Accession No. 4020
वर्ग संख्या
Class No. 297 · 092
पुस्तक संख्या
Book No. Sal V · 13

ರ ನಿರ್ದರ್ಭದ ಬರುದಿ ಬರುದಿ

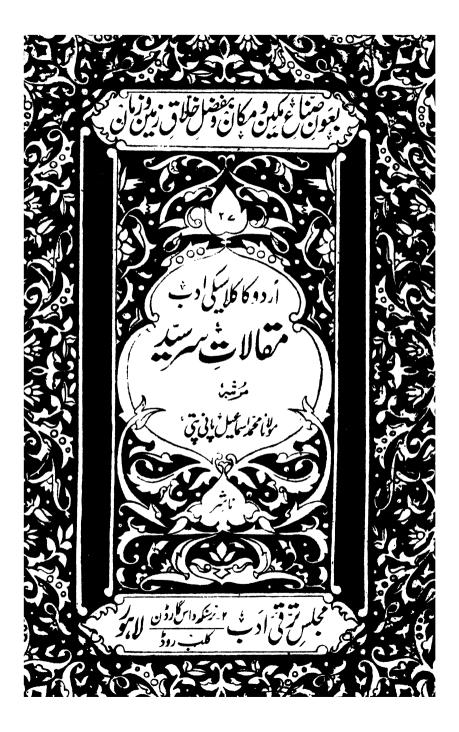
جمله حقوق محفوظ طبع اول : دسمبر ، ۱۹۹۳ م تعداد : . . . ۲

سيد امتياز على تاج ستارهٔ امتياز ناشر : ناظم مجلس ترقی ٔ ادب ، لاهور

زرین آرٹ پریس ، ۹۱ ریلوے روڈ ، لاھور مطبع :

> مجد ذوالفقار خاں مهتمم :

> > آٹھ روپے قيمت :





حصیله سدنده هم ۱ سرسدک واق محاید کے امتعلق مضایی ۲ سفایل متعلق بر استخشادات ۳ شوکوں کے مضایمن ۲ سفایل ممتعلق واقعات حاصرہ

| صفحا | | | | | ران | عنو | | | | ہار | نمبر ش |
|------|-----|-------|-------|--------|-------|--------|---------|-------|---------------------|--------|------------|
| | مين | مضا | محلق | کے مد | ئد _ | ، عقا | ِ ذاتی | 5 | سرسيد | (1) | |
| ٣ | - | - | - | - | - | - | - | - | ى باتھ | اعتقاد | -1 |
| ۷ | - | - | - | - | - | - | - | - | البهتان | دافع | -7 |
| ٥١ | ائد | کے عق | سيد _ | ني سرر | ستعلز | ن کے | قياست | اور | ، رسول ^م | خدا، | -٣ |
| ٥٣ | - | - | _ | - | - | - | سرسيد | اور . | بت دعا | استجا | -~ |
| ۵۵ | - | - | - | - | - | - | وليت | کی ق | ور آس َ | دعا ا | -5 |
| ٦٥ | - | - | - | - | ت | ، حقية | رت کی | ر نبو | النهی او | وحى | -7 |
| ۷۳ | - | - | - | - | - | ھے | لری _ | ر فع | ایک ام | نبوت | -∠ |
| ۷۸ | - | - | - | - | - | _ | - | قت | ہ کی حقیہ | سعجز | -A |
| 9 ٢ | - | - | - | - | - | ھے ؟ | نبوت | ليل | عجزه دا | کیا . | <u>-</u> 9 |
| ٠٣ | - | - | - | ب - | تے ھ | ، هو۔ | ، ایمان | باعث | عجزات | کیا س | -1. |
| ٠٦ | - | - | - | - | - | زات | . معج | سدور | ت اور ہ | آنحضرا | -11 |
| ~~ | _ | _ | _ | ھے ۔ | جزه _ | ے مع | عاظ سے | س لح | کریم ک | قرآن َ | -17 |

| 179 | - | - | - | - | - | - | <u>م</u> حث | ن کی | نسوخ | سخ و م | نا | -14 |
|-------------|-----|-------|------|---------|------------|--------|-------------|---------------|-------------|------------|-----|-------|
| 161 | _ | - | - | - | - | - | بهات | متشا | ت و | ات محكما | Ī | - I n |
| 104 | - | - | - | جود | کا و | شتوں | ور فر | ئيل ا | . میکا | برئيل و | • | -10 |
| 122 | - | - | - | - | - | قيقت | کی ۔ | بطان | ور شب | رشتوں ا | ė | -17 |
| 141 | - | - | - | - | - | - • | انبيا | د اور | وجو | يطان كا | å | -12 |
| 19. | - | - | - | - | اد | کیا مر | سے | رش | ى الع | ستوى عا | .1 | -11 |
| 711 | - | - | - | - | - | یں | بجيد ه | رآ <i>ن</i> : | ِات ق | نظ سٺو | ا ل | -19 |
| 710 | - | تحقيق | ، کی | ئىياطىز | جم ن | اور ر | بيان | ر کا | برجو | سان کے | T. | -۲. |
| * * * * | _ | - | - | - | - | - | - | - | ياء | مقيقة الرو | | -۲1 |
| 7 11 0 | - | - | - | - | - | - | - | متيار | رو ا | سئله جب | | -T T |
| 700 | - | - | - | - | - | - | ن | تحقيق | مه کی | سئله مت | | -۲۳ |
| 109 | - | - | - | - | - | - | له | مسئا | اج کا | عدد ازو | . ت | -T ~ |
| 777 | | | | | | | | | | سئله ط | | |
| 14. | - | - | - | _ | - | - | _ 4 | فلسف | قرآنى | جهاد کا | _ | ۲٦ |
| ۲4۸ | - | - | - | _ | - | - | | حقيقت | ر کی | نفخ صو | _ | ۲۷ |
| 'A# | - | - | - | میں | ۺؽ | کی رو | نيقت | ّت حف | , حالا | معاد کے | _ | ۲۸ |
| " ~^ | - | - | - | _ | - | - | - | يت | مام ر | بہشت کے | - | ۲ ۹ |
| | | ات | سار | ، استف | ني به | متعلز | مين | مضا | (Y) |) | | |
| ۵۷ | _ | _ | بات | ۔ جوا | ن <u>ح</u> | اور کا | ضات | اعترا | ٤ | اخبارات | - 1 |) |
| | نصد | کس ما | | | | | | | | سوال ـ | | |

سے پیدا کی ۔ ۔

| | پر | رآن | ت اور | خيالار | ٤. | باحب | ک م | پر ایا | الهام | وحی و | -4 |
|--------------|-----|-------|-------|--------|------------|--------|--------|--------|--------------|----------------|------|
| ۳۸۲ | - | - | - | - | - | - | - | بره ـ | كا تبص | سرسید ک | |
| | | | ىامىن | مض | تعلق | کے م | وں |) ترک | ٣) | | |
| ۳.۵ | - | - | - | - | - | - | - | - | - | ترک | -1 |
| ۳11 | - | ~ | - | - | - | - | - | ک | ور تر | یونانی ا | -4 |
| ۳ ۱ ۳ | _ | - | - | - | ر کا | مجلسو | کی | ی روم | ی یعن | ذكر ثرآ | -٣ |
| ۳۱۹ | _ | - | - | - | _ | - | - | زيب | کی تہا | تر <i>کو</i> ں | -~ |
| 470 | - | _ | _ | ن | مسلاد | ن کے | وستاز | رر هند | روم او | سلطان | ۵- |
| ۳۳. | - (| مدردي | کی ه | | | | | | | ترکوں | |
| | Ĺ | نزديك | 5 | سوں | ے مقدر | ان کے | لدوست | هی هن | روم ب | سلطان | -∠ |
| ۳۳۳ | - | - | - | - | - | - | - | _ | - 2 | كافر نكل | |
| ٣٣٦ | - | - | - | - | _ | - | م | الاسلا | شيخ | ٹرکی کا | -^ |
| mm 1 | - | - | _ | - | - | _ | - | ت ـ | , حالن | ٹرکی کی | - 9 |
| ~~~ | - | - | - | - | - | - | - | | مين | ملک | -1. |
| 70. | - | - | _ | - | - | _ | _ | ک ـ | ور تر | روس ا | -11 |
| 70 T | _ | _ | - | - | بعامله | ی کا • | ر ٹرکے | وس او | ن ، ر | انگلستار | -17 |
| 701 | _ | _ 0 | چند | ، لیے | ب <u>ح</u> | زخميو | اور | بتيموں | 5 | تركوں | -1 4 |
| ~ ~ 1 | _ | - | _ | بان | ِ زخم | کان و | و بيو | يتيان | رائے | چنده بر | -1 ~ |
| 776 | - | - | _ | - | _ | | | | | ٹائمز از | -10 |
| | | ضره | ، حا | نعات | ے واق | متعلق | مين | مضا | (4) | | |
| ~ ~ 9 | _ | _ | _ | _ | | | • | | | دهلی ُ | -1 |

| m20 | - | - | - | - | _ | - | - | - | - | رهابی | -7 |
|--------------|-----|------|-------|-------|------------|-------|--------|----------------|---------|------------------|-------|
| ۳۷۸ | - | - | - | - | - | - | رك | ک رپو | نوں کے | جيل خا | -٣ |
| ۳۸٦ | _ | _ | - | - | U | تخفيف | ی کی | سركار | ھائے | عدالت | -6 |
| ۳ ۹ ٦ | - | _ | - | - | - | - | آباد | فتح | سيلدار | قاتل تحد | -0 |
| ٥٠١ | - | - | _ | - | - | - | - | کت | ت حرَ | قابل نفر | -7 |
| | ونا | س ھو | ، لبا | بكسار | طے ا | واس | 5 | نتارو ر | اور مخ | وكيلون | -2 |
| ۵ ۵ | - | - | - | - | - | - | - | - | - | چاھیے | |
| ٥١٠ | - | - | - | - | - | - | قعه | کا وا | ن پور | شاهجها | -^ |
| ٥١٣ | - | - | - | _ | - | - | - | کاح | يعاد نَ | قانون م | -9 |
| ٩١٥ | - | - | - | - | - | - | - | د | کا فسا | خورجه | - y . |
| ٥٢١ | - | _ | - | - | - | دات | ، وارد | عجيب | ى كى . | بچه کش | -1 |
| ۵۲۳ | - | - | - | _ | - | - | ن | کا خوا | نيوں َ | هندوستا | -17 |
| 0 7 9 | _ | - | - | - | _ | اثر | کم کا | کے ح | منرل آ | گورنر ۔ | -17 |
| ٥٣٢ | - | _ | - | - | - . | - | - | ע ק | کا سا | زبر دس تى | -10 |
| ۵۳۷ | - | - | - | - | - | - | آثار | ، کے | ی ترق | زسانے ک | -10 |
| ٥٣٩ | - | - | _ | ں ۔ | د خا | لام م | ی غا | ر منث | خبار او | اودھ ا | -17 |
| ٥٣٣ | - | - | - | - | - | - | - | - | - | تجارت | -12 |
| ٥٣٤ | - | - | - | - | - | - | ورى | کی چ | بهادر | صاحب | -11 |
| ۵۰. | - | - | _ | - | - | انٹے | کو ڈا | نوال َ | ر کون | آلڻا چو | -19 |
| ۵۵۵ | _ | _ | لدسه | سے مق | ہنگی ِ | کا بھ | احب | ک ص | سي اياً | كلكته | -۲. |
| 104 | _ | _ | ن ـ | امتحا | ښ | زبان | لىسى. | ، کا د | ، يورپ | صاحباز | -۲1 |

| 156 | - | - | - | • | - | - | - | ريعت | حکام ش | ترميم ا | -77 |
|-------|---|---|------|-------|-------|--------|--------|--------|-----------|----------|-------|
| ٦٢٥ | - | - | - | - | - | - | ٠, ٠ | هنگاسه | ُباد کا ، | حيدر آ | -74 |
| ۵٦۷ | - | - | - | - | - | - | - | - | مهانى | انتظام | - T M |
| ٥٢٣ | - | - | - | - | - | بی | , فياض | ک کی | تھ برو | لارڈ نار | -۲۵ |
| ٥٧٥ | - | - | - | - | - | فاء | استع | ک کا | رتھ برو | لارڈ نا | -۲٦ |
| ۵۸۱ | - | - | - | - | - | - | - | ه | کا مقد. | جوتے | -Y Z |
| ۵۸۵ | - | - | - | - | - | - | - | - | لب. | نئی تہذ | - T A |
| ७१. | - | - | دراس | رنر س | ر گور | ب بهاد | صاحر | برك ه | لارڈ ھا | وفات | -r q |
| anjai | | | | | | | | | | | |
| | | | | | •• | ماما | | ä. 5 | | ماقدي | |

(1)

سرسیل کے ذاتی عقائل کے مضامین متعلق مضامین

اعتقادى بالله

اشهدان لااله الاالله

(تهذیب الاخلاق بابت یکم صفر ۲۹۰ه)

میں نہایت سچے دل سے اس بات پر یقین رکھتا ہوں کہ تمام عالموں کا بنانے والا کوئی ہے اور اُسی کو هم کہتے هیں اللہ۔ وہ همیشه سے ہے اور همیشه رہے گا۔ اس کا هونا ضروری ہے اور اس کا نه هونا ممکن نهیں ۔ وہ سب سے بڑا ہے اور تمام صفات کال اس کی ذات میں موجود ہیں ۔ آس کا سا کوئی نہیں نه ہونے میں ۔ کیوں که هونا اس کی ذات هے اور نه کسی صفت میں کیوں که آس کی تمام صفتیں هی آس کی ذات هے ۔ وه زنده هے نه جان سے بلکہ اپنی ذات سے ۔ وہ جانتا ہے نہ کسی جاننے والی چیز سے بلکہ اپنی ذات سے ۔ وہ دیکھتا ہے نه کسی دیکھنے والی چیز سے بلکه اپنی ذات سے ۔ وہ سنتا ہے نہ کسی سننے والی چیز سے بلکہ اپنی ذات سے ۔ وہ بولتا ہے نہ کسی بولنے والی چیز سے بلکہ اپنی ذات سے ۔ وہ تمام نقصانوں سے پاک ہے اور تمام عیبوں سے بے عیب ۔ یہ مثل ہے کہ بے عیب ذات خدا کی ہے۔ بالکل اُس پر ٹھیک ہے۔ تمام مخلوقات کا وہی مالک ہے اور تمام معلومات کا وہی عالم ہے ـ سب ممكن چيزوں پر قادر ہے ـ الحتّى القائم ہے ـ دانا و بينا ہے ـ نه اس کا کوئی مشابه ہے اور نه اس کا کوئی مصاحب اور مددگار

اور نه اس کی مانند کوئی هے اور نه اس کا کوئی شریک ـ نه وجوب وجود میں اور نه استحقاق عبادت میں اور نه پیدا کرنے میں اور نه صلاح و تدبیر بتانے میں ـ پس اس کے سواکوئی کسی قسم کی عبادت یعنی اظہار اپنے تذلل اور اس کی غایت الغایت تعظیم کا مستحق نہیں هے ـ پس هارے تذلل کا اور جو طریقه اس کی تعظیم کا ٹهہرایا گیا هو اس طریقه کی تعظیم کا استحقاق اس کے سوا دوسرے کو نہیں ـ

وہی بیار کو اچھا کرتا ہے اور وہی سب کو رزق پہنچاتا ہے وہی بلاؤں کو ٹالتا ہے اور وہی خوشیوں کو لاتا ہے مگر یہ سب باتیں اپنے قانون قدرت کے سطابق کرتا ہے ۔

آس کا قانون قدرت کبھی ٹوٹتا نہیں ۔ وہ ھر طرح کے قانون قدرت کے بنا دیا پھر کے بنا دیا پھر آس نے بنا دیا پھر آس کے برخلاف کچھ ھوتا نہیں ۔

قدرت کے قانون بنانے میں کسی سبب کا محتاج نہیں بددیہ السموات والارض و اذا قبضی امرا فاہما یقول له دن فیر فیرکون ۔ امر کے لفظ سے وہی قانون قدرت مراد ہے جس کو بغیر کسی سبب کے صرف کن کے لفظ سے یعنی ارادہ سے جو مقتضائے کال ہے بتا دیتا ہے ۔

وہ کسی میں ساتا نہیں اور نه کسی میں ملتا ہے۔ اُس میں تعدد و حدوث آ هی نہیں سکتا ۔ نه اُس کی ذات میں اور نه اُس کی صفات میں ۔ اُس کا تعلق متعلقات سے بھی حادث نہیں ہے بلکه ظہور متعلقات سے آن کے وقتوں میں وهم حدوث اور خیال تعدد هؤتا ہے۔ مگر اُس میں نه حدوث ہے اور نه کسی طرح کا تعدد ۔

وہ نہ جوہر ہے نہ عرض ہے نہ جسم ہے نہ کسی محدود جگہ میں ہے نہ کسی جگہ میں ہے نہ یہ کہا جا سکتا ہے کہ یہاں ہے یا وہاں ہے ۔ نہ اس میں حرکت ہے اور نہ اس پر سکون کا اطلاق ھو سکتا ہے اور نہ آس کی نسبت کسی جگہ سے آنا اور کسی جگہ میں جانا بولا جا سکتا ہے ۔ آس کے لیے کوئی طرف و سمت متعین نہیں ۔ ایسنما تولوا فشم و جہ الله ۔ آس کا عرش پر هونا صرف انسانوں کو آس کی بڑائی کا خیال دلانا ہے نہ آس کا عرش پر یا اوپر کی سمت پر ھونا ۔ اوپر تو ایک اضافی سمت ہے جو ھاری اوپر کی سمت ہے وہ کسی دوسروں کے نیچے کی سمت ہے مگر عرش پر پر ھونے سے ھر ایک کے دل پر وحشی سے لے کر مہذب فلسفی تک کے دل پر آس کی بڑائی کا خیال آتا ہے ۔

مرنے کے بعد مومنین و موحدین اُس کو دیکھیں گے۔ وہ ایک ایسا روحانی انکشاف ہوگا جاو عقلی تصدیق سے جیسے کہ اس دنیا میں ہم رکھتے ہیں بدرجہا بڑھ کر ہو جس کی نسبت عرف عام میں آنکھوں سے دیکھنا کہا جاتا ہے مگر اُس رویت کے لیے نه سمت ہوگی نه شکل ۔ نه رنگ ہوگا نه کوئی ڈھنگ ۔ نه مقابله ہوگا نه آمنا سامنا ۔ محض ُعو کا مقام ہوگا۔

کفر و معاصی کا بھی آسی قانون قدرت کے موافق و ھی خالق ھے ۔ سگر آس نے اپنے قانون قدرت سے انسان کو ایسا بنایا ھے جس میں آن سے بچنے کی قدرت رکھی ھے ۔ اس لیے اگرچہ خدا آن کا خالق ھے سگر خود انسان اپنی قدرت و اختیار سے آن کا کاسب ھے گو کہ بلحاظ قانون قدرت کاسب کا بھی خدا ھی په اطلاق ھو سکے مگر اُس کو نه کفر و معاصی سے کچھ نقصان ھے اور نہ عبادت کی حاحت ۔

آس کے تمام کام سراسر حکمت ھیں ، جو کچھ که آس سے ھوا وہ سب نیک ہے ۔ کیما قبیل ۔ آل چه از پردہ خفا به منصه ظہور جلوہ گر است ھمه نیکو است ۔

پیر ما گفت خطا در قلم صنع نرفت آفریں بر نظر پاک خطا پوشش باد پس جورو ظلم کی نسبت آس کی طرف نہیں ہو سکتی۔ وہ اپنی مغلوق کو پیدا کرتا ہے۔ جس طرح کہ آس کی حکمت کا تقاضا ہوتا ہے۔ عدل و حکمت کے لیے ہر ایک کو آسی کے حال میں دیکھنا چاھیے نہ نسبتاً۔ کیوں کہ عدل و حکمت نسبتی چیز نہیں ہے۔ بلکہ ہر ایک کے لیے بہ منزلہ آس کے خاصہ کے ہے جس کی تعریف میں آیا ہے۔ سا یوجہد فیہہ ولا یہوجہد فی غیرہ۔

اس کے سوا کوئی حاکم نہیں۔ مگر اس سے یہ لازم نہیں آتا کہ وہ اندھا دھوندی سے لغو و بے فائدہ احکام جاری کرنے لگے۔ پس یہ اعتقاد رکھنا کہ حسن و قبح اشیاء کی اور کسی فعل پر ثواب یا عقاب ھونا صرف خدا کے حکم اور اُس کے امر و نہی کے سبب سے ھے محض لغو اعتقاد ھے بلکہ حسن و قبح اشیاء کی اور کسی فعل پر ثواب و عقاب کا ھونا اُسی قانون قدرت پر سبی ھے اور خدا کے احکام اُسی قانون قدرت کا بیان ھے پس اُن میں سے بعض تو ایسے کے احکام اُسی قانون قدرت کا بیان ھے پس اُن میں سے بعض تو ایسے ھیں کہ اُن کے حسن و قبح کو ابتدا ھی عقل انسان کی دریافت کر لیتی ھے اور بعض ایسے ھیں۔ بعد الاخبار مدن الدرسل عدن اللہ تعالی۔ اُن کے حسن و قبح کو عقل تسلیم کرتی ھے۔

فيهذا اعتقادى بالله الواحد الاحد الصمد الذى لم يبلد ولم يبولد ولم يبكن له كفواً احد وقد قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من قال لا اله الاالله الله مستيقنابها قلبه دخل الجنة فانا من اهل الجنة انشاء الله تعالى محرمة سيدنا محد خاتم النبين صلى الله عليه وسلم تسليما كثيراً كشراً

حافع البهتان

(تہذیب الاخلاق جلد ہ بابت ۱۵ شعبان ۱۹۱۰) (آن اعتراضوں کے جواب جو سرسید پر کیے جاتے تھے)

یه ایک بہت هی اهم اور نهایت خاص مضمون هے جو سر سید نے اپنے ذاتی اعتقادات اور خیالات کے متعلق تفصیل اور جامعیت کے ساتھ رقم فرمایا ہے۔ مذھب کے متعلق جو جو اتهامات اور الزامات لوگ آس زمانه مس سرسید پر لگاتے تھے اور آج کل بھی بعض لو ک آن کا اعادہ كرتے هيں ۔ اس مضمون ميں ان سب كا تسلى بخش اور مدلل جواب دیا گیا ہے۔ اس میں سرسید نے اپنے ھر ایک مذھبی عقیدے اور خیال کو نہایت وضاحت کے ساتھ اور بہت کھول کر صاف صاف بیان کر دیا ہے اور کوئی بات مبہم نہیں چہوڑی ۔ جو لوگ سرسید کے مذھی ۔ ۔ عقائد کی طرف سے بدظن ہیں وہ اگر انصاف و دیانت کے ساتھ اس مضمون کو مطالعه فرمائیں گے تو یقیناً اس نتیجه پر بهنچیں کے که سرسید نه بے اعتقاد تھے اور نہ ملحد ۔ بلکہ آن کو تمام عقائد حقہ پر کاسل يقين تها اور وه تمام مسائل اسلاميه كو درست اور ٹھیک جانتے تھے ۔ ھاں یہ بات ضرور تھی کہ جو لغو و لا یعنی باتیں اور بے ہودہ اعتقادات عوام اور مولویوں نے اسلام میں داخل کر دیے تھے آن کے خلاف وہ

بڑے زور سے قلمی جہاد کرتے تھر اور آخر وقت تک کرتے رہے۔ نه اُنھوں نے آن کو کبھی جائز سمجھا اور نه آن کو ٹھیک حانا اور حو کچھکہا منافقت اور ریا کاری سے نہیں کہا۔ بلکہ وہی کہا جس کی اُن کے ضمیر نے گواھی دی۔ نه کفر کے فتووں کے خوف سے اس خمال کو حہیایا حو آن کے نزدیک حق تھا۔ نه کسی کی خوشامد کر خیال سے حق بات کا انکار کیا۔ آن کر بعض مخصوص مذھبی اعتقادات سے بے شک اختلاف کیا حا سکتا ہے سکر محض اس وحہ آن کے خدوس اور آن کی قوسی همدردی کے بے پناہ حذبہ سے هرگز انکار نہیں کیا جا سکتا اور نہ بعض باتوں میں اختلاف کے باعثآن کو دین سے برگشتہ اور اسلام سے سنحرف قرار دیا حا سکتا ہے ۔ حضور رسول کریم صلی اللہ علیه و آله وسلم کی جیسی محبت اور اسلامی احکام کی حیسی عظمت آن کے دل سی تھی۔ شاید بڑے بڑے علائے کرام کے دلوں میں بھی اتنی نه ھو اس مختصر تمہید کے بعد اب سرسید کا اصل مضمون پڑھیر ۔ (محد اساعیل پانی پتی)

جناب حضرت سید الحاج سولانا مولوی حاجی علی بخش خال صاحب بهادر سب آرڈینٹ جج گورکھ پور نے ایک کتاب مسمی به تائید الاسلام تحریر فرمائی ہے جس میں مجھ پر بہت سے اتهام کیے ہیں اگرچہ میں ایسی باتوں کی نسبت کچھ پرواہ نہیں کرتا مگر بہت سے دوست بجد ہیں کہ جن عقاید کو جناب سید الحاج نے اتہاماً تمهاری طرف منسوب کیا ہے آن کی نسبت بلا بحث و استدلال صرف اتنا لکھو کہ حقیقت میں وہ تمهارا عقیدہ ہے یا تم پر اتهام ہے

پس میں آن کے ارشاد کی تعمیل کرتا ھوں ۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے ھیں کہ مجموعہ موجودہ اسلام عاطب یعنی میرے نزدیک قطعاً باطل ہے۔ یہ محض اتہام ہے۔ میرا یہ عقیدہ نہیں ہے میں نے ایک مقام پر جہاں یہ بحث کی ہے کہ مذاھب مختلفہ میں کون سا مذھب سچ ھو سکتا ہے اور بعد ایک لمبی تقریر کے بیان کیا ہے کہ مذھب اسلام کے سوا اور کوئی مذھب سچ نہیں ھو سکتا وھاں میں نے لکھا ہے کہ اسلام سے میری مراد یہ مجموعہ احکام نہیں ہے کیوں کہ اُس میں احکام منصوصہ اور اجتہادیات اور قیاسیات سب شامل ھیں جن میں خطا کا احتال ہے اس مقام پر میری مراد مذھب اسلام سے صرف احکام منصوصہ ھیں پس یہ کہنا کہ مخاطب کے نزدیک مجموعہ موجودہ اسلام قطعاً باطل سے کیسا غلط اور کتنا بڑا اتہام ہے۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے ہیں کہ مجموعہ اسلام مخاطب یعنی میرے نزدیک خلاف مرضی اللہی ہے۔

نعوذ بالله من هذه الكلمات كبرت كلمة تخرج من افوا همهم ان يقولون الاكذبا مسرح نزديك كوئى مذهب سوائے مذهب اسلام كے مطابق مرضى اللهي كے نہيں ہے۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے ہیں کہ احکام معاد پر اعتقاد لانا اور صحیح جاننا مخاطب کے نزدیک مانع ترقی ہے۔

لعنت خدا کی هو آس پر جس نے یه لکها هو اور جس کا یه اعتقاد هو میں نے یه لکها هے که جب اس سچے مذهب (یعنی اسلام) میں بهی لغو خیالات اور بد تعصبات مل جاتے هیں تو وه ویسا هی انسان کی ترقی کا هارج هوتا هے کجا یه لفظ اور کجا وه عقیده جو سید الحاج نے میری نسبت لکها هے جس وقت آنهوں نے به کتاب لکهی هے شاید خود آن کو احکام معاد پر یتیں نه نها

کیوں کہ اگر یقین ہوتا تو وہ ضرور خیال فرماتے کہ مرنا بھی ہے اور خدا کے سامنے جانا بھی ہے میں کیوں کر ایک شخص پر ایسا اتہام کروں۔

جناب سید الحاج نے ارقام فرمایا ہے کہ معجزات انبیا کے اعتبار سے مجرد نبی کے قول پر یقین لانا مخاطب کے نزدیک باطل ہے ۔

اس عبارت کا مطلب شاید مصنف هی سمجهیں تو سمجهیں اور کوئی تو سمجه نہیں سکتا مگر صرف اس قدر لکھنا کافی هے که جناب سید الحاج میرے آرٹیکل کا جو مطلب سمجھے هیں وہ غلط سمجھے هیں میں نے آس آرٹیکل میں صرف شرف عقل ثابت کیا ہے۔ حناب سید الحاج نے ارقام فرمایا هے که ایجاد شریعت مخاطب کے یعنی میرے نزدیک ضرور هے۔

لعندت الله عالمي قايله و عالمي معتقده مير مے اعتقاد ميں شريعت حقه مجديه خاتم شريعت هے جيسا كه مجد صلى الله عليه وسلم خاتم النبوت هيں ـ

جناب سید الحاج نے ایک فقرہ میں پانچ اتہام میری نسبت کیے ھیں۔ ایک اتباع سواد اعظم و اتفاق جمہور مخاطب کے نزدیک باطل ہے۔ دوم۔ کسی عالم کے قول کا اعتبار نہیں نه سند لانی چاھیے۔ سوم۔ مسلمات مذھبی سے انکار کرنا ته بدعت ہے نه کفر ہے۔ چہارم۔ تقلید آئمہ اربعہ کی ظلمت و ضلالت ہے۔ پنجم۔ فقہ و حدیث پر اعتاد لانا ہے جا ہے۔

یه سب کچه جو لکها هے سب غلط هے اور تمام تر مضامین کو تحریف کیا هے فویل للذین یکتبون الکتاب بایدیهم ثم یقولون هذا سن عند الله وه لکچر جو آزادی رائے پر هے اور جس کی تحریف جناب سید الحاج نے فرمائی هے آس کا مطلب

سمجھنے کو ابھی مدت چاھیے پس اسی قدر لکھنا کافی ہے کہ جناب سید الحاج کا یہ استنباط غلط ہے وہ مطلب نہیں سمجھے یا دانستہ تحریف کی ہے ـ

جناب سید الحاج نے پھر ایک فقرہ میں دو اتہام کیے ہیں ۔ ایک جو مسئلہ شرعیہ تہذیب مصطلحہ مخاطب کے خلاف ہو باطل ہے ۔ دوم ۔ خصوصاً کثرت ازواج ۔ سوم ۔ و استرقاق ۔

پہلا اور دوسرا امر محض بہتان ہے میرے عقیدہ میں کوئی مسئلہ شرعی تہذیب کے خلاف ہے ہی نہیں اور جس تعدد ازدواج کی نسبت شرع میں اجازت ہے وہ عین تہذیب ہے اور شہوت رانی کے لیے شرع کو ٹٹی بنانا بہایم کی مانند ہونا ہے ۔

تیسرا امر البته کسی قدر صحیح هے یه تو اکثر عاباء متقدمین بهی تسلیم کرتے هیں که آیه کریمه فا سا سنا بعد و اسا فداء سے استرقاق ممنوع هے مگر وہ علماء اُس کو منسوخ مانتے هیں میں منسوخ نہیں مانتا ۔

جناب سید الحاج ایک دهوکه کی عبارت میں میری نسبت واعظین و صوفیه و علماء مدرسین پر سب و شتم کرنا لکھتے ہیں ـ

یه تول تول عبارت جس میں کل واعظین و صوفیه و علاء داخل هوں سید الحاج کو لکھنی مناسب نه تھی جن مکار واعظین و صوفیه اور علاء بدنام کن نیکونامے چند کی نسبت میں نے لکھا ہے آن کی نسبت سب لکھتے آئے ھیں مولانا روم کی مثنوی دیکھو۔ امام غزالی کی احیاء العلوم پڑھو۔

جناب سید الحاج ارقام فرساتے هیں که سیں نے احکام معاد مثل جنت و نار ـ صراط و میزان و صور و حشر و اجساد وغیرہ و عذاب قبر وغیرہ جو محسوسات نہیں هیں باطل ٹھہرائے هیں ـ

یه محض اتہام ہے میں نے ایک حرف بھی اب تک آن کی نسبت نہیں کہا نعیم جنت و وعید جہنم پر اور بعث بعدالموت پر میں اعتقاد رکھتا ھوں باقی رھی آن کی کیفیات ۔ وہ ھر شخص موافق اپنے مذاق کے بیان کرتا ہے چناں چه امام غزالی می کتاب احیاء العلوم ان باتوں سے اُپر ہے ۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے ہیں کہ صرف فرائض پر عمل کرنا وہ بھی نیچر کے موافق ہوں کافی ٹھہرایا ہے۔

اگرچہ اس میں بھی تدلیس کی ہے مگر بلاشبہ میرا اعتقاد ہے کہ جس قدر کہ فرائض مذھب اسلام میں ہیں وہ فطرت اللہ یعنی نیچر کے مطابق ہیں اور بلاشبہ صرف فرائض کا ادا کرنا اور گناھوں سے بچنا ہمشت میں جانے کو کافی ہے۔

جناب سید الحاج نے ارقام فرمایا ہے کہ جو عبادت خلاف نیچر ہو اس کو میں نے باطل ٹھہرایا ہے۔

اس میں بھی تحریف کی ہے کیوں کہ میں نے کہا ہے کہ زھد و ریاضت کو صرف راتوں کو جاگنے اور ذکر و شغل کرنے اور نفل پڑھنے اور نفل روزہ رکھنے میں منحصر سمجھنا (قطع نظر اس کے کہ آن کا ایسا کرنا اور حد اعتدال سے گزر جانا قانون قدرت کے برخلاف ہے مقصود شارع ہے یا نہیں ہم تسلیم کرتے ہیں کہ وہ عبادت سہی) مگر آس کے سوا اور نیک باتوں کو عبادت نه سمجھنا جو آن سے زیادہ مفید ہیں بڑی غلطی ہے ۔ کجا یہ مضمون اور کجا یہ اتہام جو جناب سید الحاج نے بایں دعوی دین داری مجھ پر کیا ہے ۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے ہیں کہ جس قدر عادات و حسنات خلاف نیچر ہوں آن کو سیں نے باطل ٹھہرایا ہے ۔

مگر جناب سید الحاج یه نهیں سمجھتے که جس قدر نیک عادتیں اور حسنات هیں وہ نیچر یعنی فطرت الله کے برخلاف هیں هی نهیں کیا جناب سید الحاج عادت خلاف فطرت کو حسن سمجھتر هیں ۔

وہ میرا قول نقل کرتے ہیں که مذہب خدا کا قول اور اور اور فطرت خدا کا فعل ہے دونوں ایک ہیں ۔

کیا جناب الحاج کو اس سیں شک ہے ۔ کیا اُن کے نزدیک خدا کہتا کچھ ہے ۔

جناب سید الحاج میرا قول نقل کرتے هیں که طریقه لباس و اکل و شرب و اخلاق و عادات ایسی اختیار کرنی چاهئیں جس سے تہذیب یافته قوموں کی نظر میں حقارت نه هو ۔

کریا جنداب الحاج کی خواهش اس کے برخلاف ہے کیا اپنی قوم کو تہذیب یافتہ قودوں کے سامنے حقیر و ذلیل رکھنا چاہتے ہیں کیا آن کی مرضی ہے کہ مسلمان ہمیشہ ذلیل رہیں اور تربیت یافتہ قودوں کی نگاہ میں آن کی کچھ قدر و عزت نہ ہو۔

جناب سید الحاج میری نسبت الزام لگاتے هیں که میں ترقی قومی کو دیگر حسنات پر ترجیح دیتا هوں۔ دل و جانم فدائے ایں الزام جناب سید الحاج باد۔ بلاشبه میرا یه عقیده هے یمی مذهب هے اور یمی قول هے اور خدا اسی قول پر بیرا خاتمه کرے که بعد ادائے فرائض کے کوئی عبادت قومی بھلائی میں کوشش کرنے سے بہتر نہیں ہے اللہ م احیا علیه واستنا علیه آمین هاں البته خود غرض نفس کے بندے قومی بھلائی میں کوشش کرنے کو بے فائدہ سمجھتے هیں۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے هیں که میں نے توهین حرمین شریفین کی هے اور آس کے ثبوت پر میرا یه قول نقل کیا هے

کہ خواجہ سرا روضہ متبرکہ رسالت مآب صلعم پر اور خانہ کعبہ پر متعین کیے ہیں اور یہ ہیئے کے پھوٹے مسلمان اس کو باءث افتخار جانتے ہیں۔

ناظریں انصاف کریں گے کہ اس فقر سے سے توھین حرمین شریفین استنباط کرنا جناب سید الحاج کے علم و اجتماد اور دیانت اور دین داری کا کیسا بڑا ثبوت ہے کیا یہ استنباط دیدہ و دانستہ اتہام نہیں ہے مسلمانوں میں خواجه سراؤں کا رواج اسلام کو داغ لگانے والا ہے کیوں کہ سوائے مسلمانوں کے اور کسی قوم سیں یہ رواج نہیں ہے پھر جو فعل کہ حرام و ممنوع شرعی ہے اُس کے مرتکب هوتے هیں اور پهر آنهی لوگوں کو حفاظت روضه سطهره اور خانه کعبه پر متعین کرتے هیں اور ان هیئر کے پھوٹوں کو رسول خدا صلعم سے بھی شرم نہیں آتی اور آل حضرت کے حکم کے برخلاف کام کرتے ہیں اور پھر اُنھی کو روضہ سبارک کے ساسنر لے جاتے میں اور حیات النسی کا بھی اعتقاد رکھتے میں اگر غیرت اور خدا و رسول^م سے شرم ہوتی تو چپنی بھر پانی سی ڈوب م*ر*تے مگر اس سے بھی زیادہ تعجب ھم کو یہ ھے کہ ھارے مخدوم مبشر به بشارات عجيبه سيد الحاج جناب مولانا على بخش خال صاحب م.ادر سب آرڈینٹ جج گورکھ پدور اعنی قاضی القضاة شریعت انگریزیه فرماتے هیں که حرمین شریفین میں خواجه سراؤں کی تعیناتی کو برا جاننا توهین حرسن شریفین ہے ـ سبـحـان الله و بحمده سبحان الله و بحمده ـ

جناب سید الحاج ارقام فرماتے ھیں کہ میں نے تعلیم دینیات کی جو مروج ہے غیر مفید ٹھہرائی ہے اور اس کی دلیل میں میرا یہ قول نقل کیا ہے کہ '' زمانہ حال میں دینیات کی تعلیم بھی مسلمانوں میں مفید طریقے پر نہیں ہے اور کوئی علم مفید مروج نہیں ہے ۔''

اے مسلمانو! انصاف کرو کہ میرے اس قول کا یہ مطلب ہے جو جناب سید الحاج نے نکالا ہے کیا آن کا ایسا لکھنا اتہام نہیں ہے اور کیا دیدہ و دانستہ انھوں نے یہ غلط نہیں لکھا ہے۔ کجا طریقہ تعلیم کو غیر مفید کہنا اور کجا تعلیم دینیات کو غیر مفید کہنا۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے هیں که میں نے جو تمہید علامی کے آرٹیکل میں لکھی ہے اس سے سب و شتم انبیاء سابقین اور سحابه و اهل بیت و عام است مرحومه کی لازم آتی ہے۔

یه قول آن کا محض غلط هے قبل نزول امتناغ کسی فعل کے اس کے مرتکبین کو گنهگار اور مرتکب فعل حرام کا جاننا صرف جناب سید الحاج کا عقیدہ هے۔ ایک زمانے میں حقیقی بہن سے نکاح منع نه تها اور بعض نبی انبیاء سابقین میں سے اس کے مرتکب هوئے اسی طرح حقیقی دو بہنوں سے ایک ساتھ نکاح کرنا منع نه تها متعدد انبیاء اس فعل کے مرتکب هوئے۔ شراب کی حرمت تها متعدد انبیاء اس فعل کے مرتکب هوئے۔ شراب کی حرمت جب تک نه هوئی تهی تمام انبیاء سابقین اور اکثر صحابه آس کے مرتکب هوئے۔ پس اب اگر کوئی شخص یه بیان کرے که مرتکب هوئے۔ پس اب اگر کوئی شخص یه بیان کرے که بین سے نکاح کرنا حرام هے۔ دو بہنوں کو ایک ساتھ نکاح میں طحابه کرام پر سب و شتم کرتا هے ؟

جو کچھ میں نے نسبت غلامی کے لکھا ہے اول میری تحقیق دریافت کرنی چاھیے تھی میرا یہ عقیدہ نہیں ہے کہ کسی نبی نے انبیاء سابقین سے اور لاحقین سے جناب خاتم الانبیاء تک کسی عورت پر بغیر نکاح کے تصرف کیا ھو آئمہ اھل بیت علیم السلام نے اُن عورتوں سے جو لڑائی میں قید ہوئی تھیں نکاح کیا تھا

جس طرح که جناب سید الحاج آئمه اهل بیت پر تهمت لگانا چاهتر ھیں اُس طرح بغیر نکاح بطور لونڈی کے کسی کو تصرف میں نہیں لائے۔ سنی صرف اس مطلب سے کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالٰی عنه کی خلافت کا حق هونا شیعوں پر ثابت هو آئمه اهل بیت پر لونڈیوں کے تصرف کی ہمت لگاتے هیں ورنه وه ازدواج مطهرات منكوحه اهدل بيت علمهم السلام تهين صحابه و تابعين كي نسبت بھی کوئی کافی ثبوت اس بات کا نہیں ھے کہ قبدی عورتوں کو بطور لونڈیوں کے بلا نکاح آنھوں نے تصرف کیا ھو اور کچھ شبه نهس كه آية كريمه اسا سنا بعد و اسا فداء اخرالاية هي جو آساری کے حق میں نازل ہوئی اور جس سے غلامی معدوم ہو گئی پس جو شخص یه اعتقاد رکهتا هو اس کی نسبت یه کهنا که انبیاء و صحابه و اهل بیت پر سب و شتم لازم کیا ہے کیسا اتہام ہے ـ جب سلطنت سلاطین کے ہاتھ آئی پھر مفتیوں کو اور قاضیوں كوكيا دُر تها ـ آيت اسا سنا بعد و اسا فداء كو مثا ديا اور ُملا دو پیاذہ کے قاضی بنگئے قطع نظر اس کے بعد غزوات و انقراض زمانه خلافت خمسه حقه کون سی لڑائی جماد جائز خالصاً لله واسطے اعلاء کامة الله کے تھا جس کی بندی کو جناب قاضی و مفتی نے حلال کر دیا تها اور جس طرح که مکه معظمه سی لونڈی و غلام بیچے جاتے ہیں یہ کون سی شرع کی رو سے جائز ہیں شریعت محدیہ کی رو سے تو یقینی حرام هیں ـ

هاں ایک الزام میرے اوپر ٹھیک ہے کہ میں نے برخلاف جمہور مسئلہ استرقاق کا بیان کیا ہے مگر جب میں دل سے یقین کرتا هوں که خدا اور کتاب اللہ اور مجد رسول اللہ صلعم تینوں میرے ساتے ہیں اور یہ میرا یقین کاسل اور نہایت پختہ ہے تہ کے اس اختلاف سے کے ڈر نہیں ہے بہفرض محال

اگر میری سمجھ نے غلطی بھی کی ھو تو بھی اس اختلاف کا کچھ مضائقہ نہیں ہے کیوں کہ مجھ کو کامل یقین ہے کہ معدومی استرقاق منصوص قرآنی ہے اور عین مرضی خدا اور رسول کی پس مکن ہے کہ جناب سید الحاج یا اور مسلمان کہیں کہ میں غلطی پر ھوں الا ان امور کے سبب کافرکہنا اور سب و شتم انبیاء و صحابه و آئمہ اھل بیت علیمم السلام کا اتبام کرنا کچھ دیانت کی بات نہیں ہے یہ بھی یاد رہے کہ میری تحقیق میں غلامی کسی شریعت کا حکم شرعی نہ تھا فتدبر ولا تقل ما لیس لک بہ علم کیاب میناب سید الحاج میرا قول نقل کرتے ھیں کہ احکام نیچر ربعنی فطرت اللہ) کبھی نہیں ٹوٹنے کا اور پھر اس پر تفریع فرماتے ھیں کہ معنمذا احکام حشر و نشر و فنا باطل ٹھہریں گے۔

مگر میں نہایت ادب سے عرض کرتا ھوں کہ جناب یہ میرا مطلب نہیں ھے حضور نے قصداً یا خطاء علطی فرمائی ھے حشر و نشر و فنا خود نیچر و فطرت اللہ میں داخل ھے اور جب وہ ھوگا عین نیچر ھوگا افسوس ھے کہ جناب کو نہ قرآن کے لفظ فطرت اللہ کی تحقیق ھے اور نہ انگریزی لفظ نیچر کی مگر قلم پکڑ کر جو دل میں آتا ھے ٹکرلیس تحریر فرما دیتے ھیں ۔

جناب سید الحاج مجھ پر اتہام فرماتے ہیں کہ میں کُل احادیث کی صحت کا انکار کرتا ہوں ۔

لا حول ولا قوة الا بالله العلى العظيم ـ يه محض غلط اتهام ميرى نسبت هے ميں خود بيسيوں حديثوں سے جو مير ح نزديک روايتا و درايتاً صحيح هوتى هيں، استدلال كرتا هوں ـ

جناب حضرت سید الحاج میری نسبت اتهام فرماتے هیں که قواعد صرف و نحو و معنی و بیان و اصول کے موافق معنی قرآن

و حدیث کے لینے جائز نہیں ۔

محض كذب و اتهام هے اور لفظ '' جائز نهيں '' ايک عجيب لفظ هے ۔ بهر حال ميں نے آس سے زيادہ نهيں كما هے جو شاہ ولى الله صاحب نے تفسير فوزالكبير ميں لكھا هے ۔ بلا شبه معنى قرآن كے موافق محاورہ عرب اول كے لينے چاھئيں جس زبان و محاورہ ميں قرآن محيد نازل هوا هے ۔

جناب سید الحاج مجھ پر یہ اتہام کرتے ہیں کہ اگر علوم جدیدہ میں مذہب اسلام کا چھوڑ دینا لازم ٹھہرایا ہے۔

سبحان الله کیا داد سخن فہمی دی ہے جناب یہ مطلب نہیں ہے بلکہ یہ مطلب ہے کہ مذھب اسلام ایسا پختہ ہے کہ کتنے هی علوم جدیدہ کیوں نه پڑھے جاویں الا مذھب اسلام سے بد اعتقادی نہیں ھو سکتی ھاں ایسے لچر اصول مذھب کے جیسے کہ جناب سید الحاج نے اختیار فرملئے ھیں اور جن میں سے بڑے دو اصول جتان کرنا اور اتمام لگانا اور کلمه گوؤں کو کافر کمنا ہے آن کا چھوڑنا تو میں لازم ٹھہراتا ھوں ۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے هیں که میں نے اعتراض فلسفیانه قرآن شریف پر کیے هیں اور اُس پر میرے بیان کو بطور دلیل کے لائے هیں که هیئت جدیده کی تردید کسی کتاب میں نہیں ہے اور جو تفسیر عالموں نے نطفه سے انسان کے پیدا هونے کی لکھی ہے وہ فن تشریج سے غلط معلوم هوتی ہے ۔

اگر انصاف و دیانت دنیا میں باق ہے تو جناب سید الحاج منبع البہتان کے اتمام کو خیال کیا جاوے کہ کجا قرآن مجید پر اعتراض کرنا اور کجا عالموں کی تفسیر کو غلط بتانا یا یہ کمہنا کہ ھیئت جدیدہ کی تردید کسی کتاب میں نہیں ہے ۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے ہیں کہ میں نے ایڈیسن واسٹیل کو پیغمبر ٹھہرایا ہے ـ

مگر مجھ سے پہلے فردوسی و انوری و سعدی کو لوگ پیغمبر ٹھہرایا ٹھہرا گئے ھیں اگر میں نے اسٹیل و ایڈیسن کو پیغمبر ٹھہرایا تو کچھ گناہ نہیں کیا ۔

ھاں شاید جناب سید الحاج اس لیے خفا ھوئے ھوں گے کہ میں نے جناب ممدوح کو پیغمبر کیوں نہیں ٹھہرایا ۔ خیر معاف فردائیے اس لیے که میں جناب ممدوح کا مرتبه اس سے بھی زیادہ سمجھتا ھوں وہ تو پیغمبران سخن تھے الا میں جناب سید الحاج کو خدائے متان و اتمام جانتا ھوں ۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے هیں که میں نے به مقابله فلسفیات جدیدہ کے قرآن و حدیث کو بےکار قرار دیا ہے اور ادلّه ثلاثه شرعیه کا بطلان بیان کیا ہے۔

لعنة الله على قايله و علنى معتقده و على من ينسب هذا لقول الني من نم يعتقده و لم يقله اسى قدر كهنا بس هي كيا فائده هي ابسر اتهامات سے اور كيا نتيجه جناب سيد الحاج نے اس ميں سمجها هي ـ

جناب سید الحاج ارقام فرماتے هیں که میں نے خاتم الانبیاء صلعم کو نیچرل اسٹ ٹھہرایا ہے۔

میں نے تو یہ لفظ نہیں کہا اور اگر جناب سید الحاج نے به نظر تحقیر یہ لفظ جناب خاتم المرسلین کی نسبت ارقام فرمایا ہے تو اس کا مظلمہ خود جناب سید الحاج کی گردن پر رہے گا کیوں کہ سید الحاج کے ہم مشرب علماء کے فتووں سے پہلے ہی یہ ثابت ہو چکا ہے کہ نبی کی نسبت کلمہ تحقیر کا بلا قصد نقل کرنا بھی کفر ہے پس ایسے کلمہ کا ایجاد کر کے کہنا بطریق اولئی کفر ہوگا۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے هیں که میں نے مادہ عالم کو ازلی و ابدی ٹھہرایا ہے۔ اگر لفظ مادہ سے کوئی شئی علاوہ ذات باری کے مراد ہے تو ایسا اعتقاد کرنے والے پر تو میں لعنت بھیجتا هوں اور آس کو میں کافر سمجھتا هوں اور اگر مادہ سے عین ذات باری مراد هو (گو لفظ مادہ کا اطلاق آس پر غلط هوگا) جیسا که بڑے بڑے اکابر بزرگان دین اهل وجد وحدت وجود کا مشرب ہے تو میں کہتا هوں که بلا شبه خدا ازلی و ابدی ہے و تله درسن قال۔

فلولاه و لولانا له اكان الذي كانا فانا اعبد حقا و ان الله مولانا و انا عينه فاعلم اذا ما قلت انسانا فلا تحجب بانسان فقد اعطاك برهانا فكن حقا و كن خلقا تكن بالله رهانا وعد خلقه منه تكن روحا و ريحانا فاعطيناه ما يبدو به فينا و اعطانا فصارا الام مقسوساً باياه و ايانا فاحياه الدى يدرى بقلبى حين احيانا وكنا فيه اكوانا و ازمانا و اهيانا وليس بدايم فينا ولكن ذاكب احيانا

افسوس ہے کہ جناب سید الحاج کو ان مضامین پر غور کرنے کو ایک مدت درکار تھی مگر آنھوں نے بے سوچے سمجھے جو چاھا لکھ دیا ۔ ولا تقف ما لیس لک به علم ان السمع والبصر والفواد کل اولئک کان عنه مسئولا ۔

جناب سید الحاج فرماتے ہیں کہ میں نے لکھا ہے کہ شبہ دوسرے خدا کے وجود کا زائل نہیں ہو سکتا ۔

اس کا مطلب کیا ہے آیا یہ مطلب ہے کہ میں معتقد دوسرے

خدا کا هون تو میں لعنت بھیجتا هوں مشرک پر اور دو اور تین یا آس سے زیادہ خدا ماننے والے پر اور اگر یه مطلب نه هو تو جناب سید الحاج کا تحریف کر کر مطلب بیان کرنا ایک قسم کا اتهام ہے ۔ جو تقریر که میں نے آس مقام پر بیان کی ہے آس پر ایک شبه وارد کیا ہے اور لکھا ہے که هم ایسے شبهات پر شرعاً مکلف نہیں هیں ۔ جناب سید الحاج ارقام فرماتے هیں که میں نے لکھا ہے که

جناب سید الحاج ارقام فرماتے ہیں کہ میں نے لکھا ہے کہ اعتقادیات جو خلاف نیچر ہوں باطل ہیں اور عملیات معینہ فقہا باطل ہیں ۔

جناب سید الحاج آپ اس آرٹیکل کا جو میں نے فلسفیانه به مقابله ایڈیسن لکھا ہے مطلب نہیں سمجھے جو کچھ آپ نے لکھا ہے سب غلط ہے یہ اس کا مطلب نہیں ہے ۔

جناب سید الحاج فرماتے ہیں کہ میرے نزدیک علاوہ مذہب اسلام کے دوسرے مذاہب بھی سچے ہو سکتے ہیں ۔

میں نہیں جانتا کہ یہ مطلب سید الحاج نے کہاں سے استنباط فرمایا ہے میرا تو یہ مذہب ہے کہ مذہب اسلام ہی سچا مذہب ہے اور جو مذہب سچا ہوگا وہ اسلام ہی ہوگا ۔

جناب سید الحاج فرماتے ہیں کہ جہاد سے میری مراد اُس قسم کی لڑائی ہے جیسی مثلاً جرمن اور فرانس میں ہوئی تھی نہ واسطے قائم ہونے دین اور اعلاء کلمة اللہ کے ۔

یه تحریر جناب سید الحاج کی اتهام محض هے جب که وه دیده و دانسته اتهام کرنے پر مستعد هیں تو اُس کا علاج کیا هے بلا شبه میری دانست میں جہاد جبراً مسلمان کرنے کے لیے نہیں هے بلکه صرف اعلاء کلمة الله کے لیے هے جیسا که میری تحریروں سے ظاهر هے ۔

جناب سید الحاج ارقام فرساتے هیں که میرے نزدیک اسلام

صرف اسی قدر کا نام ہے کہ خدا کو ماننا اور بندوں کے ساتھ برادری برتنا اس پر میرا یہ قول سند لائے ہیں کہ '' سچے مذہب اسلام کا مسئلہ یہ ہے کہ خدا کو ایک جاننا اور انسان کو اپنا بھائی سمجھنا ۔'' اب صاحب تمیز خود غور کریں گے کہ جناب سید الحاج نے لفظ '' اسی قدر کا نام ہے '' اپنی طرف سے بڑھا کر اور میرے مطلب کو تحریف کر کر کیا عمدہ داد دین داری دی ہے ۔

گر مسلمانی همین است که واعظ دارد وائے گر در بس امروز بود فردائے

جناب سید الحاج ارقام فرماتے هیں که میرے نزدیک اهل سنت وغیرہ جو فرقے اسلام کے هیں سب باطل هیں صرف ملت نیچریه حق ہے ۔

میں چاہتا ہوں کہ جناب سید الحاج اور ہم دونوں مل کر کہیں کہ لعندت اللہ علی الکاذبین ۔ اور ہارے اور آن کے دوست پکار کر کہیں بیش باد ۔ معلوم نہیں کہ جناب سید الحاج نے ایسی لغو اور بے ہودہ باتوں سے کیا فائدہ سمجھا ہے ۔

جناب سید الحاج لکھتے ہیں کہ میرے نزدیک جو مسئلہ شرعیہ خلاف عقل و مخالف نیچر ہو وہ باطل ہے ۔

معلوم نہیں کہ جناب سید الحاج آلثی راہ کیوں چلتے ہیں یہ کیوں نہیں فرماتے کہ میرے عقیدہ میں کہوئی مسئلہ شریعت حقہ مجدیہ علی صاحبہا الصلوة والسلام کا خلاف عقل و خلاف فطرت اللہ یعنی نیچر کے نہیں ہے۔

ترسم نه رسی به کعبه اے اعرابی کیں راہ که تو میروی به ترکستان است

جناب سید الحاج فرماتے ہیں کہ میں نے حدیث صحیح کو

اپنے خلاف دیکھ کر باطل سمجھا ہے اور شیطنت سیکھنے کا کنایہ ابو ہریرہ پر کیا ہے ـ

جو حدیث ضعیف یا موضوع کہ جناب سید الحاج کے نزدیک صحیح هو یه کچه ضرور نهیں که سب لوگ اس کو صحیح سمجهیں ـ جناب سید الحاج کے نزدیک وہ حدیث صحیح ہوگی سیرمے نزدیک نہیں ہے اور شیطنت سیکھنر کی نسبت کا جناب حضرت ابو هریرہ رض کی طرف جناب سید الحاج نے محھ پر اتہام کیا ہے ۔ خود کیا ہے محھ پر لگایا ہے۔ میں تو اس حدیث ہی کو صحیح نہیں سمجھتا۔ حناب سید الحاج نے ارقام فرمایا تھا که حضرت ابو هریره رط نے عمل آیت الکرسی کا شیطان سے سیکھا (نعوذ باللہ منہا) آس پر میں نے لکھا کہ جناب مولوی علی مخش خاں صاحب بہادر سب آرڈینٹ جج گورکھ پور نے اپنر رسالہ '' شہاب ثاقب'' صفحہ ہم میں لکھا ہے کہ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰی عنہ شیطان کے شاگرد ہوئے اور عمل آیت الکرسی کا آس سے سیکھا ۔ اس عبارت کے بعد میں نے لفظ نعوذ بالله منها كا بھى لكھا ھے جس سے ظاهر ھے كه ميں قول جناب سيد الحاج كو غلط جانتا هول أس پر جناب سيد الحاج نے محھ پر یہ اتہام کیا ہے کہ س نے شیطنت سیکھنر کا کنایہ ابو هريره مِن پر كيا هے افسوس هے كه جناب سيد الحاج كو ايسى باتس لكهنر مس كچه لحاظ بهي نهس هوتا ـ

جناب سید الحاج ارقام فرساتے هیں که میرا یه بیان هے که مادہ عالم منجمله صفات باری هے للهذا وه عین ذات هے اور آس کا خالق الله تعاللی نہیں هے ورنه اپنی ذات کا خود خالق هوگا اور فنا هونا مادہ عالم کا بھی معتذر هے اور عالم پر تقدم ذات باری کو نہیں ہے اور ذات باری مادی ہے ۔

کیا عجیب سمجھ جناب سید الحاج کی ہے اور کیا عمدہ

مقدمات اس میں ترتیب دیے ھیں کہ شیخ آکبر کی روح خوش ھوگئی ھوگی۔ پھر جو کچھ لکھا ھے محض غلط لکھا ھے۔ جناب بلا شبہ صفات باری اُس کی عین ذات ھیں مگر یہ مسئلہ آپ کی سمجھ سے باھر ھے اس میں آپ کیوں دخل فرماتے ھیں الا اس قدر آپ کو معلوم کرنا چاھیے کہ جو کچھ آپ سمجھے ھیں وہ سب غلط ھے اور جو الفاظ آپ نے ارقام فرمائے ھیں وہ میرے نہیں ھیں یہ سب آپ کے دل کے بنائے ھوئے الفاظ ھیں ابھی تو آپ حاجی یہ سب آپ کے دل کے بنائے ھوئے الفاظ ھیں ابھی تو آپ حاجی ھی ھوئے ھیں مگر جب میصور کے رتبہ پر پہونچیے گا جب میرے میں نقروں کے معنی سمجھے گا جو میں نے صفات و ذات کی عنیت میں لکھر ھیں۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے هیں ہے که میرا بیان ہے که نکات بلاغت و اشارة النص و دلالة النص باطل هس ـ

غلط ہے۔ میرا یہ قول نہیں ہے بلا شبہ میری سمجھ ہے کہ قرآن مجید کے معنی اُسی طرح پر لینے چاھئیں جس طرح اعراب عرب سمجھے تھے اور جن کی زبان میں قرآن مجید نازل ہوا ہے بہی مشرب شاہ ولی الله صاحب کا ہے جیسا کہ اُنھوں نے تفسیر فوز الکبیر میں لکھا ہے یہاں تک کہ جو باتیں قواعد نحو مقررہ سیبویہ و فراء کے خلاف قرآن مجید میں ہیں اُن کی تاویل کو بھی،شاہ ولی الله صاحب نے ہے جا قرار دیا ہے اور عرب اول کے محاورہ کو خلاف قاعدہ مقررہ نحو قرآن مجید میں تسلیم کیا ہے اور اُسی کو صحیح مانا ہے مگر مجھ کو شبہ ہے کہ جناب سید الحاج مولانا شاہ ولی الله صاحب کو بھی مسلمان جانتے ہیں یا نہیں کیوں کہ اہل بدایوں اُن کی بھی تکفیر کرتے ہیں۔

جناب سید الحاج ارقام فرماتے ہیں کہ میں نے اصول و فروع اسلام سے اپنے اختلاف کا اقرار کیا ہے ۔

یه الفاظ تو جناب سید الحاج کے دل کے بخارات هیں مگر بلا شبه اس زمانه میں جو مسائل مسلمانوں میں رائج هیں آن میں سے چند مسائل سے مجھ کو اختلاف هے اس لیے که میری دانست میں وہ مسائل خلاف شرع هیں اصول و فروع سے اختلاف هونا جو جناب سید الحاج تحریر فرماتے هیں یه محض اتهام هے ـ

اب میں آن چند عقیدوں کا ذکر کرتا ھوں جو جناب سید الحاج مولوی علی مخش خاں صاحب نے اپنی طرف سے گھڑ کر لکھے ھیں اور اتہاماً میری طرف منسوب کیے ھیں ۔

عقيده اول

جناب سید الحاج نے اس عقیدہ کو میری طرف منسوب کیا ہے اور لکھا ہے کہ میں نے ایک مادہ اور ایک ذات باری دو چیزوں کو ازلی ٹھہرایا ہے اور لکھا ہے کہ تقدم ذات باری کا مادہ وجود عالم پر نہیں ہے اور پھر لکھا ہے کہ ذات باری خالق مادہ اصلی عالم کی نہیں ہے اور نہ اس کے فنا پر قادر ہے۔

ان میں سے ایک بھی میرا عقیدہ نہیں ہے اور ند میں نے کہیں ید باتیں بیان کی ہیں جو آنھوں نے لکھی ہیں محض بہتان اور اقترا ہے۔

ذات اور صفات باری کی نسبت تین مذهب مسلانوں میں قدیم سے چلے آتے هیں ۔ ایک یه که صفات باری عین ذات هیں ۔ دوسرے یه که غیر ذات هیں ۔ تیسرے یه که نه عین هیں نه غیر هیں ۔ میں مذهب اول کو صحیح سمجھتا هوں اور اسی قدر میں نے بیان کیا هے اور اس سے زیادہ جس قدر بیان هے وہ سب افترا اور بہتان هے اور نه وہ میرے الفاظ هیں جو جناب سید الحاج نے لکھے هیں ۔

عقيده دوم

جناب سید الحاج اس عقیدہ کو میری طرف منسوب فرماتے ہیں کہ ذات باری علت تامہ وجود ہر شے کی نہیں ہے۔ ذات باری تعالٰی کو خالق کل شے کہنا حقیقت میں غلط ہو جاوے گا گو محازاً صحیح ٹھہرہے۔

جناب سید الحاج نے مجھ پر یہ سب افترا اور بہتان کیا ہے۔ میرا یہ عقیدہ نہیں ہے میں نے صرف اس قدر لکھا ہے کہ ذات باری تمام کائنات کی علت العلل ہے ۔

عقيده سوم

جناب سیدالحاج نے اتہاماً میرا یہ عقیدہ ٹھہرایا ہے کہ مادہ عالم کا قیامت کے روز فنا ہو جانا ممتنع بالذات ہوگا و کل من علمہا فان صحیح نہ ٹھہرے گا۔

جناب سید الحاج نے محض اتہام کیا ہے سیرا یہ عقیدہ نہیں میں نے لکھا ہے کہ اگر تمام موجودات کے عوارض نوعیہ یا شخصیہ معلوم ہو جاویں تو جو کچھ باقی رہے گا وہ ناقابل عدم ہوگا و قد قبال اللہ تبار ک و تعالی کی سن علیہ افان و یبقی و جہہ دبک ذوالہ جلال و الاکرام اس قول کی حقیقت جناب سید الحاج نہیں سمجھے آن کو شیخ اکبر کی کتابیں پڑھنی چاھیں اور مسئلہ وحدت وجود کو سمجھنا چاھیے جب سید اکبر کے قول کو سمجھی گے۔

عقيده چهارم

پھر جناب سید الحاج نے اس عقیدے کا سیری نسبت اتہام کیا ہے کہ ذات ِ باری مادی ہے یا یوں کہوکہ مادہ اور غیر مادہ سے مرکب ہے یا محل مادہ کا ہے ـ افسوس ہے کہ جناب سید الحاج کو بہتان پر بہتاں لگانے میں کچھ لحاظ نہیں ہوتا ۔ میرا یہ عقیدہ نہیں ہے بلکہ ایسا اعتقاد رکھنےوالے کو میں کافر سمجھتا ہوں ۔

عقيده ينجم

بلا شبه میں ذات اور صفات باری کی عینیت کا قائل ہوں مگر اس عقیدہ میں جناب سید الحاج نے یه نتیجه اپنی طرف سے نکالا ہے که یه کہنا غلط ٹھہرے گا که مفہوم صفات کا باہم متمیز اور متغایر ہے اور اس صورت میں حقیقت علم و قدرت وغیرہ متحدالحقیقت هوں گے مگر یه سمجھ خود آن کی ہے میری نہیں وہ مسئله عینیت ذات و صفات کو سمجھے ہی نہیں اس کا علاج یه ہے که کسی سے سیکھیں فاسئلوا اہل الذکر انکنتم لا تعدلمون ۔

عقيده ششم

جناب سید الحاج نے بغیر سوچے سمجھے ان الفاظ سے میرا عقیدہ بیان کیا ہے کہ ذات باری کو قانون فطرت کے توڑنے یا تبدیل اور تغیر کرنے پر اختیار نہیں ہے بلکہ ممتنع با لغیر ہوگیا ہے۔ یہ بالکل اتہام محض ہے قانون فطرت کبھی نہیں ٹوٹتا کیوں کہ جو کچھ خدا کرتا ہے وہی قانون فطرت ہے۔

نیچر ایک انگریزی لفظ هے اور وہ ٹھیک ٹھیک مراوف هے لفظ فطرت اللہ اور قانون قدرت کے ابھی بہت مدت چاھیے کہ جناب سید الحاج ان لفظوں کے معنی سمجھیں ۔

عقيده هفتم

میری ایک تقریر کا جناب سید الحاج نے یہ نتیجہ نکالا ہے کہ دوسرا علت العلل کسی دوسرے عالم کا ممتنع عقلی نہیں ہے ۔

اس میں بھی جناب سید الحاج نے تحریف کی ہے اور مطلب کو آلٹا بیان کیا ہے۔ میں نے بیان کیا ہے کہ مذھب اسلام کا عتید، یہ ہے کہ '' وہ هستی جس کو هم اللہ کہتے هیں واحد فی الذات ہے یعنی مثل اُس کے دوسری هستی نہیں اور اُس کے ثبوت میں ایک تقریر کی ہے اور ایجاد عالم سے اُس پر استدلال کیا ہے اور پھر تسلیم کیا ہے کہ اس تقریر پر وہ شبہ جو ابن کمرنه کا ایک مشہور شبه ہے اور جس کے حل کرنے میں بڑے بڑے علاء عاجز رہے هیں وارد هوتا ہے مگر وہ ایک خیالی اور وهمی شبه ہے اور یقین وارد هوتا ہے مگر وہ ایک خیالی اور وهمی شبه ہے اور یقین خیس اور مذهب اسلام میں ایسی باتوں پر تکلیف خیس ہے۔ کجا یہ تقریر اور کجا وہ اتہام جو جناب سید الحاج نے کیا ہے ایسر لفظوں سے جو نیک دل سے نہیں نکل سکتے۔

عقيده هشتم

اس عقیدہ میں میری نسبت متعدد اتہام خلط ملط کر کے آس کی آنھوں نے جمع کیے ھیں اس لیے ھم قولہ قولہ کر کے آس کی تفصیل کریں گے۔

قولہ ۔ سوائے عقل کے کوئی رہ نما نہیں ۔ بے شک عقل رہ نما ھے اور اسلام اور نفر میں جو تمیز کرنے والی ھے وہ بھی عقل ھے ۔ جناب سید الحاج نے اس کتاب میں عقل سے کام نہیں لیا اسی واسطے غلطی میں بڑے اور آگر دیدہ و دانستہ اتہام کیا ھے تو بھی عقل سے کام نہیں لیا ۔

قوله ـ حسن و قبح تمام اشياء اور احكام كا عقلي هے نه شرعى ـ متقدمين اهل اسلام كے اس كى نسبت دو مذهب هيں ـ ايک يه كه حسن و قبح تمام چيزوں كا عقلى هے ـ دوسر _ يه كه شرعى هے مير ـ نزديك بلا شبه پهلا مذهب صحيح هے ـ

قولہ ۔ لہذا باوجود قانون قدرت کے یعنی نیچر کے بعثت

انبیاء کی ضرورت نہیں ہے ۔ غالباً یہ عقیدہ اور یہ سمجھ خود جناب سید الحاج کی ہوگی ۔ نہ میرا یہ عقیدہ ہے نہ میں نے یہ کہا بلکہ بعثت انبیاء نیچر کی رو سے ضروری ہے ۔

قوله ـ لاكهوں نيچرل اسٹ موجود هيں اور وہ خود پيغمبر هيں ـ ميرا تو يه عقيدہ نہيں هے شايد جناب سيد الحاج آن كو پيغمبر جانتے هوں كے ـ

قوله _ لندن کے پیغمبروں میں ایڈیسن اور اسٹیل تھے _ جس طرح که کسی شخص کامل کی نسبت کہا جاتا ہے که وہ خدائے سخن ہے یا پیغمبر سخن جیسے که اس شعر میں ہے :

در نظم سه کس پیمبر اند فردوسی و انوری و سعدی

اسی طرح ایک مقام پر میں نے اسٹیل اور ایڈیسن کو لنڈن کے پیغمبر کہا ہے مگر جو کہ جناب سید الحاج عقل کو رہ نما نہیں سمجھتے اس لیے وہ سمجھ گئے کہ وہ سچ مچ کے پیغمبر ھیں جو خدا کی طرف سے مذھب لاتے ھیں یا دانستہ اتہام کیا ہے۔

قوله ـ اس صورت میں ختم هونا نبوت کا نبی آخر الزمان پر صحیح نه هوگا ـ

یه عقیده کیفریه سیرا تو نهیس هے کیوں که سی تو تقلید موجوده کو بهی شرک فی النبوت سمجهتا هوں مگر غالباً جناب سید الحاج کا یه عقیده هوگا کیوں که وه تقلید موجوده یعنی شرک فی النبوت کو جائز سمجهتے هیں ۔ غرض که جو اس میری نسبت جناب سید الحاج نے منسوب کیا هے میں تو کهتا هوں لعنت الله عملی قایله و معتقده ۔ آمید هے که جناب سید انحاج فرماویں که بیش باد ۔

عقده نهم

اس عقیدہ کے اتہامات کو بھی ہم قولہ قولہ کر کے بیان کریں گے ۔

قولہ ۔ قانون فطرت یعنی نیچر کے خلاف کوئی امر ظہور میں آنا ممكن نهس هے للهذا معجزات انبياء پر يقين لانا صحيح نه هوگا۔ یه قول جناب سید الحاج کا محض غلط هے جو شخص که فطرت اللہ اور قانون قدرت اور نیچر کے سعنی ھی نه جانتا ھو آس کو دخل در سعقولات کیا ضرور ہے ۔ جناب سید الحاج نے خود اپنی غلطی سے سمجھ لیا ہے کہ معجزات انبیاء خلاف فطرت اللہ یا خلاف نیجر هیں حالاں که کوئی سعجزہ کسی نبی کا خلاف نیچر اور خلاف فطرت اللہ نہیں ہے صرف ثبوت اس کے وقوع کا درکار ہے اور جب ثابت هو که فلاں امر واقع هوا تو بلا شبه آس پر يقين کيا جاوے ً کَا اور یہ بھی یقین کیا جاوے دکھ فطرت اللہ یعنی نیچر کر مطابق ھے گو کہ آس کی ماھیت ھاری سمجھ میں نہ آوہے کیوں کہ ہزاروں کام نیچر کے ایسر میں جن کی ماہیت ہاری سمجھ سے باہر ہے ۔ سید الحاج صاحب نے بڑی غلطی کی ہے جو یہ لکھا ہے کہ سب باتی یعنی معجزات انبیاء قانون فطرت کے توڑنے والر ہس حالاں کہ وہ قانون فطرت کے پورا کرنے والر ہس اوریه بهی غلطی کی هے جو یه لکھا هے که اگر معجزات انبیاء مان لیر جاویں تو تمام عقلیات کے خلاف اقرار کرنا یؤتا ہے حالاں که یه محض غلط هے ـ

قولہ ۔ لا محالہ انبیاء کو اسی قدر سمجھنا چاھیے کہ وہ نیچرل اسٹ حکیم تھے بلکہ سب سے زیادہ مجد رسول اللہ صلعم نیچرل فیض کے جاری کرنے والے تھے اور آمی ھونا اسی واسطے تھا کہ سوائے نیچر کے اور کسی طرح کا میل نہ ھونے پاوے ۔

معلوم نہیں جناب سید الحاج نے الفاظ نیچر اور نیچرل اسٹ کس ارادہ سے لکھر میں اگر ان الفاظ سے آن کا ارادہ انبیاء کی شان میں اور جناب رسول خدا صلعم کی شان میں کچھ حقارت کرنے کا ھے تو اس کے مجرم اور گناہ گار خود جناب سید الحاج ہیں میں اس سے بری ہوں انبیاء کو میں نیچرل اسٹ حکیم نہیں کہتا مگر بے شک وہ اُس فیض کے جاری کرنے والے ہیں جس کا ذکر خدا نے فرمايا هے فيطرت الله التي فيطرت النياس عيليها ـ مي تو پيغمس اور نیچرل اسٹ حکم سی ایسا فرق سمجھتا ہوں جیسا کہ راعی اور غنم میں ۔ سرے اعتقاد میں خلقت انبیاء کی دیگر انسانوں سے ایک نوع جداگانہ ہے بشر صرف آس کی جنس ہے اور صاحب الوحی ہونا اس کی فصل ہے اور یہ ایک ملکه ہے جو خلقت انبیاء میں پیدا کیا ہے پس جس طرح کہ حیوان اور انسان میں ناطق فصل ہے اسي طرح انسان اور انبياء من ذوالوحي هونا فصل هي كما قبال الله تعاللي بلسان نبينا عليه الصلواة والسلام أنا بشر مشلكم يوحي الى المالهكم اله واحد پس ايسر شخص كى نسبت (جس كا اعتقاد نسبت انبياء وه هے جو جناب سيد الحاج کے وہم و گان میں بھی نہ گذرا ہوگا اور غالباً اب بھی جناب ممدوح اس نکتہ کو نہ سمجھیں گے کیوںکہ اس نکتہ کے سمجھنر کو نور سینه مجد رسول الله صلی الله علیه وسلم سے روشنی ملنی چاہیر جب سمجھ میں آتا ہے) کیسا بہتان اور کتنا بڑا اتہام ہے۔ بلا شبه رسول خدا صلعم کے آمی ہونے میں بڑی حکمت یہی تھی که خاص ذات باری کا فیض پہنچے نه اور کسی کا مگر اس فیض کا لطف تانچشی نه دانی ـ

عقيده دهم

اس عقیده میں بھی معری نسبت کسی قدر اتہام به تحریف مراد

جناب سید الحاج نے ارقام فرمائے هیں جن کو میں بیان کرتا هوں۔ قوله ۔ ملائکه سے مراد قوائے انسانی هیں ۔ میرا یه قول هے که ملک کے لفظ کا قوائے انسانی پر بھی اطلاق هوا هے اور میں نے کسی ایسے وجود کا جو علاوہ انسان کے هو اور ملک کا اطلاق جس پر کیا حاوے انکار نہیں کیا ہے۔

قوله ـ شیطان کا وجود نہیں - سی شیطان کے وجود کا قائل هوں سگر انسان هی سیں وہ سوجود هے خارج عن الانسان نہیں اگرچه سیرا ارادہ هے که سی اس عقیدہ سے رجوع کروں کیوں که اس زمانه میں بہت سے شیطان مجسم دکھائی دیتے هیں سگر مشکل یه هے که اور اکابر بھی وجود شیطان خارج عن الانسان کے منکر هیں ـ سولانا روم فرماتے هیں :

نفس شیطاں ہم ز اصل واحدے بود آدم را حسود و ساجدے

عقيده يازدهم

اس عقیدہ میں عجیب خلط مبحث کیا ہے اور ایسا معلوم ہوتا ہے کہ گویا قصداً لوگوں کو دھو کہ میں ڈالنا چاھا ہے مگر ھم آن کے قولوں کو نقل کرتے ھیں۔

قوله _ بغیر لحاظ اصول تفسیر اور بدون اعتبار اقوال جمهور مفسرین و شان نزول کے قرآن کے سعنی اپنی رائے سے کہنے جائز هیں _ جناب سبد الحاج کا یه قول تمام تر اتہام هے اور اصلی مطلب کو تحریف کیا هے اصول تفسیر کو میں انسانوں کے بنائے هوئے قاعدہ سمجھتا هوں خدا کی طرف سے وہ قاعدے نہیں اتر ہے اقوال مفسرین اور شان نزول آیات کی جن کی سندیں موجود هیں وہ سعتبر هیں _ جن کی سندیں نہیں هیں _ پس یه سیدهی بات هے جن کی سندیں نہیں هیں _ پس یه سیدهی بات هے جس کو جناب سید الحاج نے تحریف کیا هے _

قوله _ اور قرآن کے معنی جس قدر نیچر اور فلسفه کے خلاف هوں اُس کو خواه نیچر اور فلسفه کے اقوال سے ملا دینا چاهیے _ یه ایسی تقریر هے جیسا که ایک جلا هوا کسی شخص کی اچهی بات کو بهی برا کرکے دکھاتا هے _ فلسفه قدیم تو ایک لغو چیز هے اُس کے مطابق تو قرآن کا هے کو هو نے لگا مگر فطرت الله بے شک نهایت عمده اور مستحکم چیز هے اور میرا یه عقیده هے که نه قرآن اُس کے برخلاف هے اور نه وه قرآن کے برخلاف _ مگر جناب سید الحاج نے جلے کئے لفظوں میں اُس کو بد صورت کر کر دکھایا هے _

قوله ـ مقدم تر واسطے یقین لانے کے قول فلاسفه یورپ کا هے اس کے موافق جو آیت قرآن کی نه هو وه جس طرح هو سکے مطابق کر دینی چاهیے ـ یه ایسی بات هے جیسے کوئی کسی کا منه چڑائے اور یه نه سمجھے که چڑانے والے هی کا منه ٹیڑها هوتا هے واقعیت اور حقیقت وه شے هے جو قابل تقدم هے اور قرآن مجید کا اس سے مخالف هونا محالات سے هے اور اسی کی تطبیق کرنا هارا طریقه هے ـ جناب سید الحاج جو چاهیں اس کا نام رکھیں آئنده دیکھ کر منه چڑائے سے کسی دوسرے کا نقصان نہیں هے ـ

عقيده دوازدهم

اس عقیدہ میں جناب سید الحاج نے تین باتیں میری نسبت کہی ھیں ۔ ایک یہ کہ توریت اور انجیل پر مضبوط اعتقاد ھے ۔ ان لفظوں کے معنی میں نہیں سمجھا آگر یہ مطلب ھے کہ جبسا قرآن مجید میں آن پر اعتقاد رکھنے کا حکم ھے ایسا اعتقاد ھے تو یہ صحیح ھے اور اگر کوئی اور معنی آنھوں نے قرار دیے ھیں تو غلط ھے ۔ میں دوسری تحریف لفظی آن میں نہیں ھوئی ۔ ھاں یہ سچ ھے ۔ میں تحریف لفظی کا قائل نہیں بلکہ تحریف معنوی کا قائل ھوں مگر

جد اساعیل بخاری بھی تحریف لفظی کا قائل نہیں۔ تیسرے اور وہ سب صحیح اور درست ہے۔ اگر اس سے یہ مطلب ہے کہ بائبل میں جو کچھ لکھا ہے وہ سب صحیح اور درست ہے تو جناب سید الحاج کا یہ اتہام ہے اور اگر اور کچھ مطلب ہو تو وہ میں سمجھا نہیں۔

عقيده سيز دهم

اس عقیدے میں نعیم جنت اور وعید دوزخ کو بیان کر کر میرا یه عقیده لکھا ہے۔ که یه سب چیزیں اپنی حقیقت پر محمول نہیں ھیں۔ جناب سید الحاج کے نزدیک اگر حور کی یہی حقیقت ہے جیسے که ایک خوب صورت لونڈی اور غلمان کی یه حقیقت ہے جیسے که ایک خوب صورت لونڈا ۔ تو بلاشبه میں کہتا ھوں که اس حقیقت پر وہ محمول نہیں ھیں اور اگر اور کوئی حقیقت ھو تو اس کو جناب سید الحاج نے بیان نہیں کیا میرا اعتقاد نعیم جنت کی نسبت اور علی ھذا القیاس وعید جہنم کی نسبت یه ھے که لا عین رأت ولا آذن سمعت ولاخطر علی قلب بشر۔

قـولـه ِ ـ علوم عقلیه کے خلاف کوئی حکم معاد قابل تسلیم نہیں ہے ـ اس قول میں بھی آلٹی راہ چلے ہیں ـ میر بے نزدیک دسی حکم معاد کی صحت پر امتناع عقلی نہیں ہے ـ

عقيده چهاردهم

جناب سید الحاج ارقام فرماتے هیں که میرا یه عقیده هے که بنده اپنے هر فعل کا مختار هے ـ مسئله بین الجبر والاختیار کا غلط هے ـ اس مطلب کو بهی بگاڑ کر بیان کیا هے ـ بے شک میرے نزدیک بین الجبر والاختیار تو کوئی چیز نہیں هے بلکه انسان اپنی جبلت اور فطرت میں مختار هے خدا کرے که ان لفظوں کا مطلب جناب سید الحاج سمجھ لیں ـ

عقيده بانزدهم

کوئی حدیث قابل یقین نہیں ھے للہذا عمل کرنا کسی حدیث پر یا سنت نبوی قرار دینا غلطی ھے ۔ اس عقیدے میں تحریف اور اتہام دونوں کو دخل دیا ھے ۔ کوئی حدیث قابل یقین نہیں ۔ اس کی جگہ یہ کہنا چاھیے کہ خبر احاد مفید ظن ھے مفید یقین نہیں اور پچھلا فقرہ بالکل اتہام ھے ۔ میں عمل احادیث پر بلحاظ مراتب آن کے ثبوت کے لازم سمجھتا ھوں ۔

عقيده شانزدهم

جناب سید الحاج ارقام فرماتے هیں که میرا عقیدہ ہے که المجاع امت یا اتباع جمہور مسلمین کا یا سند لانی کسی عالم کے قول سے بیجا ہے اجاع قابل حجت نہیں۔ اس عقیدے میں بھی سچائی کو تبدیل کیا ہے یوں کہنا چاهیے که اجاع امت یا اتباع جمہور مسلمین یا اجاع جس کی سند قرآن مجید اور حکم پیغمبر صلعم سے نه هو قابل حجت نہیں اگرچه کوئی مسئله غیر منصوصه ایسا نہیں ہے جس پر اجاع آمت یا اتفاق مسلمین یا اجاع هوا هو بلکه تمام مسائل غیر منصوصه مختلف فیه هیں۔

عقيده هفتدهم

اس عقیدے میں بھی جناب سید الحاج نے اپنی معمولی کارسازی کی ہے جیسے کہ تفصیل ذیل سے ظاہر ہوتی ہے۔

قبولیہ ۔ اصول فقہ و اجتہادیات مجتہدین و قیاسات آئمہ دین و مسئلہ رجم کو صحیح سمجھنا غلط اور ظلمت اور ضلالت ہے ۔ میرا یہ قول ہے کہ اصول فقہ علماء کے بنائے ہوئے قاعدے ہیں منزل من اللہ کے ہیں اجتہادیات اور قیاسات آئمہ دین کے محتمل الخطا والصواب ہیں آن کا درجہ مثل وحی منزل من اللہ کے نہیں ۔ مسئلہ رجم قرآن محید

میں نہیں ہے اگر ہو تو جناب سید الحاج دکھلاویں بشرطیکه یکتبون الکتاب بایدیہ شم یقولون هذا سن عندالله پر عمل نه فرماویں ۔

قوله _ تقلید کرنا کسی بشر کی کفر اور شرک هے صحابه هوں خواه اهل بیت رضیالله عنهم اجمعین خواه آئمه اربعه کسی کی تقلید کرنا نه چاهیے _ جو الفاظ تشدد کے جناب سید الحاج نے ارقام فرمائے هیں یه سب دل کے بخارات هیں جو آمنڈتے هیں میرا تو صرف یه عقیده هے که سوائے رسول خدا صلعم کے کسی کی تقلید واجب نہیں هے اور سوائے رسول خدا صلعم کے کوئی شخص ایسا نہیں هے جس کا قول و فعل دینیات میں بلا دلیل حجت هے اور جو شخص کسی کے ایسا سمجھے وہ مشرک فی النبوت هے _

عقيده هزدهم

جناب سید الحاج نے جو تحریفات اس عقیدے میں کی ہیں وہ حسب تفصیل ذیل ہیں:

قولہ ۔ کوئی مسئلہ شرعیہ قابل قبول نہیں ہے جو نیچر کے مطابق اور علوم جدیدہ عقلیہ کے موافق نہ ہو ۔ یہاں بھی جناب سید الحاج نے الٹی راہ اختیار کی ہے میرا یہ قول ہے کہ کوئی مسئلہ شرعی یعنی فطرت اللہ کے برخلاف نہیں ہے اور علوم حقہ اور اسلام مس اختلاف نہیں ہے ۔

قولہ ۔ بغیر وحی کے جو کچھ رسول خدا صلعم اپنی رائے سے فرماتے تھے وہ بھی قابل اتباع نہیں اس عقیدہ میں ایسی تحریف کی ہے کہ زمین کو آسان اور آسان کو زمین بنا دیا ہے ۔ میرا یہ عقیدہ ہے کہ احکام دین سے جو کچھ کہ رسول خدا صلعم نے فرمایا یا کیا وہ سب وحی سے فرمایا اور وحی سے کیا اور وہ سب

اجب الاتباع هے اور نسبت امور دنیا کے خود رسول خدا صلعم نے فرمایا که انتم اعلم با امور دنیا کم اس سے زیادہ اور کوئی میں۔

استرقاق یعنی غلامی کا جو ذکر جناب سید الحاج نے کیا ہے اُس کے ابطال کو تو وحی منزل من اللہ کتاب اللہ میں موجود ہے۔

عقيده نوزدهم

اس عقیدہ میں جناب سید الحاج نے ارقام فرمایا ہے کہ غزوات اور جہاد سے مراد یہ ہے کہ ایک قوم دوسری قوم سے قتال کرے جیسا کہ مثلاً جرمن اور فرانس میں لڑائی ہوئی ۔ یہ تحریر میرے عقیدہ کی نسبت جناب سید الحاج کی غلط اور بالکل غلط اور سرتا سر اتہام ہے کمام غزوات صرف اعلاء کلمۃ اللہ کے لیے ہوئے تھے نہ لونڈیوں اور لونڈوں کی لالے سے جس کے اثبات کے در پے جناب سید الحاج ہو رہے ہیں ۔

عقيده بستم

جناب سید الحاج ارقام فرماتے ہیں کہ میرے نزدیک سیرت ہشامی اور ابن اسحاق وغیرہ سب واہیات اور الف لیلنی اور سہا بھارت کے برابر ہیں ۔ بلا شبئہ میں ان کتابوں کو نہایت غیر معتبر جانتا ہوں ہزاروں روایتیں غلط اور بے سند آن میں مندرج ہیں اور کچھ روایتیں صحیح بھی ہیں ۔

عقیده بست و یکم

جناب سید الحاج نے میرا یہ عقیدہ بیان فرمایا ہے کہ جس قدر کتب حدیث و تفسیر و فقہ و اصول فی زماننا پرڑھائی جاتی ہیں ن سے سوائے فساد مذہب اور بد تہذیبی اور خرابی دنیا اور عقبلی کے کچھ فائدہ نہیں ۔ لہذا آن کی تعلیم قطعاً سوقوفی کے لائق ہے ۔

جو کلمات که جناب سید الحاج نے اس عقیدہ میں ارقام فرمائے هیں وہ تو سب آن کے دل کے بخارات میں وہ الفاظ سرے نہیں میں ماں میرے نزدیک یہ بات مسلم ہے کہ علم کلام جو حکمت یونان کے مقابل میں بنایا گیا تھا اس زمانہ میں محض بے کار ہے اور علماء پر فرض ہے کہ علم کلام کو از سرنو اس طرح پر تدوین کریں کہ وہ به مقابلہ حکمت اور علوم جدیدہ کے جو اس زمانہ میں رامج ھیں بے کارآمد ھو۔ کتب تفسیر میں جو بے سند حدیثیں اور بے سند قصر اور کہانیاں لکھ دی ہیں آن میں جون جون سی غلط اور موضوع ہیں آن کی تنقیح ضرور ہے ۔ س کہتا ہوں کہ قرآن محید اور احادیث کا پڑھنا صرف عمل کرنے کے لیر مقصود ہے۔ مگر اس زمانہ میں آس پر عمل کرنے کے لیر نہیں پڑھا جاتا کیوں که به سبب آس تقلید کے جس کو سی ضلالت کمتا هوں کوئی حکم كيسا هي صاف اور روشن قرآن و حديث من موجود هو مگر تقليديه آس پر عمل نہیں کریں گے تو پھر اُن کے پڑھنر سے کیا فائدہ ہے۔ بخاری طاق میں نه رکھی رھی کسی کے سینه میں رکھی رھی دونوں برابر میں ۔ دیکھو مثلاً جو حدیثیں حنفی مذھب کے خلاف بخاری میں هیں حنفی اس پر عمل کرنے کو بدعت یا ضلالت سمجھتر هیں اور زبان سے بخاری کو اصح الکتب بعد کتاب اللہ کہتر ھیں ۔ پس ھم آن سے پوچھتر ھیں کھ بخاری کی جن حدیثوں پر تم نے یا تمھارے امام صاحب نے عمل نہیں کیا آیا آن کو امام صاحب نے یا تم نے کیا سمجھا۔ حدیث رسول اللہ سمجھا یا نہیں۔ اگر حدیث رسول الله سمجها اور پهر عمل نه کیا تو یه کیسا انمان هے اور اس کو حدیث رسول الله هی نهس سمجها بلکه اس کو یوں هی ایک ضعیف قول سمجھ لیا یا حدیث تو سمجھا مگر نا قابل عمل تو پھر صرف میرا ھی کیا قصور ہے میں نے تو سیرت هشامی کو ھی ضعیف کہا تھا۔ تم نے اور تمھارے امام صاحب نے تو بخاری کو رطب و یابس اقوال کا مجموعہ سمجھ لیا ھے پھر آس کو زبان سے اصح الکتب کہنا اور در حقیقت اپنی رائے کو بخاری کی حدیثوں پر راجح سمجھنا کیسی بے ھودہ بات ھے اسی لیے میں یہ کہتا ھوں کہ قرآن و حدیث عمل کرنے کے لیے پڑھو اور جو مسئلہ آس میں پاؤ آس پر عمل کرو خواہ وہ شافعی کے مطابق ھو خواہ حنفی کے اور اگر عمل کرنے کے لیے نہیں پڑھتے تو آن کا پڑھنا محض بے فائدہ اور اگر عمل کرنے کے لیے نہیں پڑھتے تو آن کا پڑھنا محض بے فائدہ ھے اور میں کچھ شک نہیں کرتا کہ جس کا دل نور ایمان سے منور ھے وہ یقینی میرے اس قول کو حق سمجھے گا۔

عقیده بست و دوم

جناب سید الحاج نے جو خدا ناترسی اس عقید ہے کے بیان کرنے میں کی ہے میں سمجھ نہیں سکتا کوئی انسان کسی پر کیوں کر ایسا اتہام کر سکتا ہے خیر جو اُن کے قول ہیں وہ لکھتا ہوں ۔

قوله ـ جب علوم جدیده کے یا انگریزی کے پڑھنے سے معلوم ھو که مذھب اسلام میں ضعف پیدا ھوگا تو مذھب اسلام کا ترک کر دینا لازم ہے ۔ میں اُس کے جواب میں کہتا ھوں که جس شخص نے یه بات کہی ھو اور جس کا یه اعتقاد ھو اُس پر خدا کی لعنت ھو اور اتہام کرنے والے سے خدا مواخذہ کرے جس مواخذہ کے وہ لائق ہے ۔ ھزاروں آدمیوں کو یه خیال ہے که انگریزی پڑھنے سے اور علوم جدیدہ سیکھنے سے عقیدہ اسلام میں ضعف آ جاتا ہے یا دھریا اور لا مذھب ھو جاتا ہے ۔ میں نے کہا کہ اگر مذھب اسلام تمھارے نزدیک کوئی ایسا بودا مذھب ہے کہ علوم جدیدہ پڑھنے سے آس میں ضعف آتا ہے تو اُس میں ضعف آتا ہے تو اُس

مذهب هی کو چهوڑ دو جس کا علانیه یه مطلب ہے که مذهب اسلام ایسا نہیں ہے مذهب اسلام نهایت سچا ہے اور آس کے اصول نهایت پخته هیں نه انگریزی پڑهنے سے آس میں ضعف آتا ہے نه علوم جدیدہ پڑهنے سے اتحاد پیدا هوتا ہے ، مگر جو که هارے جناب سید الحاج کا دل کفر کی طرف زیادہ مائل ہے اس لیے آنھوں نے اس عمدہ مطلب کو برعکس بیان کیا ہے ۔

قولہ ۔ کتب دینی کا پڑھانا واسطے قائم رکھنے عقائد کے نہیں چاھیے ۔ جناب سید الحاج نے محض غلط کہا ہے اور میرے مطلب کو بالکل بدل دیا ہے میری یه رائے ہے که جو اختلاف که مسائل مذھبی اور علوم جدیدہ میں بظاھر معلوم ھوتا ہے اور جس کے سبب لوگ مذھب سے بد عقیدہ ھو جاتے ھیں اُس کی حفاظت کے لیے کتب موجودہ کافی نہیں ھیں بلاشبہ علم کلام ازسر نو تدوین ھونا چاھیے جو علوم جدیدہ کے مقابلے میں بکار آمد ھو۔

عقیده بست و سوم

اس عقیدے کے بیان میں بھی جناب سید الحاج اپنی کارسازی سے نہیں چوکے ۔ آنھوں نے لکھا ھے کہ صرف قرآن کے احکام منصوصہ قابل تسلیم ھو سکتے ھیں بشرطیکہ نیچر اور علوم جدیدہ کے ساتھ مطابق ھوں جو شرط کہ جناب سید الحاج نے لگائی ھے غالباً وہ خود آن کا عقیدہ ھوگا ۔ میرا تو یہ عقیدہ ھے کہ قرآن مجید میں کوئی ایسی چیز نہیں ھے جو فطرت اللہ یعنی نیچر اور آس کے کرخانہ قدرت کے برخلاف ھو ۔

قولہ ۔ بہشت میں جانے کے واسطے قید عمل الصالحات کی نگانی باطل ہے ۔ میں تو کسی قید کو باطل نہیں کہتا مگر تین باتیں بلاشبہ کہتا ہوں ۔ ایمان لانا بلاشبہ ذریعہ نجات ہے ۔ بخشش کے لیے اعال پر گھمنڈ نہیں چاہیے ۔ خدا کی رحمت پر بھروسا ہے ۔

سوائے شرک کے سب گناھوں کو خدا معاف کرے گا۔ غالباً کوئی مسلمان سوائے جناب سید الحاج کے ایسا نه ھوگا جو ان تیوں باتوں پر اعتقاد نه رکھتا ھوگا۔ قال رسول اللہ صلعم سن قال لا الله الااللہ مستیقنا بھا قلبه فدخل الجنة و ان سرق علی رغم انف ابی ذر۔

عقیده بست و چهارم

اس عقیدے میں تو جناب سید الحاج نے قیامت هی کر دی هے کیوں که جھوٹ لکھنے اور اتہام کرنے کی کوئی حد باق نہیں رهی اور نه خدا کا خوف کیا هے نه رسول سے شرم کی هے اس لیے هم آن کے الفاظ موٹے قلم سے لکھتے هیں اور آس کے قائل پر لعنت بھیجتے جاتے هیں تاکه جو آس کا مستحق هو آس کے اوپر پڑے ۔

قولہ ۔ کوئی فعل اگرچہ شعار کفر ہی میں سے کیوں نہ ہو مثلاً ۔

انكار كرنا نبوت انبياء سابقين كا ـ

لعنت الله عللي قائله وعلى معتقده -

یا کتب ساویه سابقه کا ـ یا وجود ملائکه کا ـ

لعننت الله عللي قائله و على سعتقده ـ

لعنت الله على قائله و على سعتقده ـ

یا معاذ الله قرآن شریف کا عمداً بول و براز میں آلودہ کر دینا یا پھینک دینا ۔

لعنت الله عللي قائله و على معتقده ، ـ

یا حلال کو حرام اور حرام کو حلال ٹھہرانا باوجود قطعیت نص کر۔

لعندت الله عللي قائله وعلى

یا کسی نبی کو معاذ اللہ گالی دینا ۔

لعنت الله على قائله و على معتقده ـ يا بهشت و دوزخ اور قيامت آنے كا منكر هو جانا ـ لعنت الله على معتقده ـ

یا ضروریات دین کا انکار کرنا ـ

لعنت الله عملٰی قائمله و بمملٰی سعتـقـده ٕ ـ کسی آدمی کو کافر نهیں بناتا ـ

کہاں ھیں میرے یہ اقوال اور کہاں ھیں میری یہ تمثیلیں جو جناب سید الحاج نے ____ کو بھی مات کر کر میری نسبت منسوب کیے ھیں۔ میرا قول وھی ھے جو امام ابو حنیفہ رحمۃاللہ علیہ کا ھے لا نکفر اھل القبلة۔ میرا وھی قول ہے جو تمام اکابر دین کا ھے کہ اصل ایمان تصدیق قلبی ھے اور جب تک کہ وہ تصدیق انسان کے دل میں ھے کوئی فعل اس کا اس کو بیاب سید الحاج بیاب ہید الحاج برابر کفر کا اتمام کرتے ھیں مگر ھم بدستور آن کو مسلمان اور برائر کو مسلمان اور میدالحاج سمجھتے ھیں اور آن کے کسی فعل سے آن کو کو خور نہیں کہتے۔

نسبت سجدہ بت و قشقہ کے میں نے کچھ نہیں لکھا ہے۔ زنار کی نسبت بہ تحت بیان حدیث من تشبہ ہم بقوم فیھو منہ منابت فی کے یہ لکھا ہے کہ بعض عالموں نے مشابهت سے مشابهت فی خصوصیات الدین مراد لی ہے مثلاً زنار پہننا یا صلیب رکھنا یا ٹیکہ لگانا یا اعیاد کفار کو بطور عید اختیار کرنا یا اُس میں شریک ہونا ۔ اگرچہ یہ رائیں کسی قدر عمدہ معلوم ہوتی ہیں مگر میں اُن کو پسند نہیں کرتا اور نہ حدیث کی یہ مراد قرار دیتا ہوں اس لیے کہ میرے نزدیک قطعیات سے یہ بات ثابت ہے کہ جو شخص اس لیے کہ میرے نزدیک قطعیات سے یہ بات ثابت ہے کہ جو شخص

لا الله الا الله مجد رسول الله پر دل سے یقین رکھتا ہے اس کا کوئی فعل یقین مذکور کے اس کو کافر نہیں کر سکتا۔ پس اگر اس قول پر جس پر ابو جہل کی نجات منحصر تھی اس کو یقین ہے تو گو وہ کسی قوم کے ساتھ تشابه کرنے ولو فی خصوصیات المدین و شعایدرالکفر کالزنار والصلیب والاعیاد وہ کافر نہیں ہو سکتا۔ کیا ہم دیوالی دسہرہ میں اپنے ہندو دوستوں سے اور بڑے دن میں اپنے عیسائی دوستوں سے اور بڑے دن میں اپنے عیسائی دوستوں سے مل کر اور معاشرت و تمدن کی خوشی حاصل کر کر کافر ہو جاویں گے۔ نعوذ باتھ منہا۔

'بت کو سجدہ کرنا ، سبتلا کے تھان کو سجدہ کرنا ، مدار صاحب کی چھڑیوں کو پوجنا ، اولیاء اللہ کی قبروں کو سجدہ کرنا ، آن کا طواف کرنا سب برابر ھیں ۔ ھزاروں مسلمان یہ باتیں کرتے ھیں میں تو آن کو کافر نہیں جانتا کیوں کہ مسجود میں جب تک اله ھونے کا یقین نہ ھو آس وقت تک آن کے سجدہ سے آدمی کافر نہیں ھوتا ۔ ھاں بلاشبہ نہایت سخت گناہ کبیرہ ہے اور ہی تحیق علمائے محققین کی ہے ۔ خدا کرمے کہ ھارے زمانے کے جناب سید الحاج نیک دلی سے ان امور پر غور کریں ۔

عقیده بست و پنجم

جناب سید الحاج نے اس عقیدے میں جو اتھام کیے ہیں وہ بھی قولہ کرکے بیان کیے جاویں گے ۔

قدوله ـ ترک دنیا و زهد و کسر نفسی و شب بے داری و روزه داری ـ کثرت نماز نفل وغیره اذکار و اشغال و وظائف جس قدر که معمول اور مرسوم هیں سب بے فائده هیں ـ اگر جناب سید الحاج نے یه عقیده اپنا بیان کیا هے تو خیر جو عقیده آن کا هو وه هو اور اگر میرا عقیده بیان کیا هے تو میرا تو عقیده

یہ ہے کہ رھبانیت اسلام میں ممنوع ہے۔ لا رھبانیۃ فی الاسلام اور سوائے اوراد ما ثورہ کے اور سوائے اس زھد و تقویل کے جس کی ھدایت جناب رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم نے فردائی ہے اور سب بدعت ہے۔

قوله - مثلاً روزه تیس روز کا بالخصوص رمضان میں وہ بھی گرمی کے موسم میں فرض نه ٹھہرے گا - لعنت الله علیٰی قائله و علیٰی سعتقدہ میں میں ایه قول اور عقیدہ نہیں ہے - جتنے روزے که فرض اور سنت ھیں وہ بالکل نیچر کے مطابق ھیں - ھال بدعتیوں نے جو بغیر الله روزے نکالے ھیں جیسے سوا پہر کا روزه علی مشکل کشاکا اور تین دن کا طے کا روزه اور مثل آس کے آن کو بدعت اور خلاف نیچر جانتا ھوں -

قوله - تهوڑی سی شراب جو پکا متوالا نه کر دے یا اس قدر جوا کھیلنا جو بے قید نه بناوے حرام اور ممنوع نه هوگا - لعنت الله علیٰ قائیله و عالٰی معتقده - میرا یه عقیده نہیں هے - قوله - تصویر مجسم بنانا جو واسطے یادگاری کے هو حرام اور ممنوع نه هوگا - میں نے اس امر کی نسبت که تصویر مجسم یا غیر مجسم شرعاً جائز هے یا غیر جائز کبھی کچھ نہیں کہا - غیر مجسم شرعاً جائز هے یا غیر جائز کبھی کچھ نہیں کہا اللہ میں اس قسم کی یادگاریوں کو پسند کرتا هوں اگر وہ شرعی گناه هیں تو میرا آن کو پسند کرنا ایسا هی شے جیسا که میں شامت اعال سے اور گناه کی باتوں کو پسند کرتا هوں:

آں کس کہ گنہہ نکرد چوں زیست بگو قران کی کہ فارد ہے قرآن شریف میں صرف لفظ صلّٰوۃ و زَکلٰوۃ کا وارد ہے اس کی زیادہ تصریح نہیں ہے اللٰی قـوله ـ اسی طرح نماز مرسوم اور معمول کو اختیار کیا جاوے تو وہی ظلمت اور ضلائت تقلید کی اور

کفر محض کا اختیار کرنا ہوگا ۔ لعنت اللہ عللی قائلہ و عللی معتقدہ نه میرا یه قول ہے اور نه میرا یه اعتقاد ہے ۔

قوله ـ صلّوة سے مراد مطلق دعا پڑھ لیتی ہوگی اور وہی واسطے ادائے فرض کافی ہے باقی جو ترکیب صلّوة پنج گانه کی مقرر ہے وہ اصول مخترعه و فقه محدثه و احادیث موضوعه و اجاع مردود کا اتباع ہے اور آسی کا نام کفر ہے ـ لعنت الله علی قائله و علیٰی معتقدہ ـ نه میرا یه قول ہے اور نه میرا یه اعتقاد ـ

قوله _ باقی زکاوة _ آس کی مقدار بقدر چالیسویں حصه مال کے مقرر کرنی اور آس کے مسائل سے فتاو ھائے فقیمه کا معمور ھونا وھی ظلمت اور ضلالت _ کفر اور شرک ھے _ لعنت الله علیٰ قائله و علیٰ معتقده _ نه میرا یه قول ھے نه میرا یه اعتقاد ھے _

توله'۔ حج خانه کعبه الخ۔ حج خانه کعبه کو میں فرض سمجھتا هوں من استطاع الیه سبیلا مگر سودی روپیه قرض لے کر مکه جانے سے لنڈن کا جانا بہتر جانتا هوں اور حاجی جی کہلانے کی خوشی حاصل کرنے کو اور اُس خوشی میں پھولنے کو اور جھوٹی بشارات بیان کرنے کو اور کسی خادم کے فریب میں آکر سند اور خطاب لینے کو اور اُن جھوٹی باتوں پر ناز کرنے کو البته میں حرام سمجھتا هوں۔

جو بدعات کہ مکہ معظمہ میں ھوتی ھیں اور جو خلاف شرع رسول خدا صلعم ھیں وہ اس وجہ سے کہ سکہ والے کرتے ھیں جائز نہیں ھو سکتیں ۔ لونڈی اور غلام جس طرح کہ سکہ میں بیچے جاتے ھیں اور مکہ معظمہ اور وضہ منورہ جناب رسول خدا صلعم میں خواجہ سراء معین ھیں یہ سب خلاف شرع ھیں اور جو مسلمان ھیئے کے پھوٹے اور دل کی

آنکھوں کے اندھے آن کو اچھا جانتے ھیں محض جاھل ھیں۔ روضہ مطہرہ رسول خدا صلعم پر خواجہ سراؤں کا متعین کرنا میری دانست میں ایسی بے ادبی نہیں میں ایسی بے ادبی نہیں ھو سکتی ۔ و للناس فی سا یعشقون سذاھب ۔

عقیده بست و ششم

آیت خملق سبع سموات طباقا سے مراد سات آمان نہیں ہیں بلکہ وہ آیت عملوم جمدیدہ کے خلاف ہے ۔ یہ اعتقاد جناب سید الحاج کا میرے اعتقاد میں تمو علموم جدیدہ بالکل اس آلت کے مطابق ہیں ۔

عقیده بسث و هفتم

جو ترتیب پیدائش انسان کے نطفہ سے بچہ تک قرآن شریف میں وارد ہے اور مفسرین نے معنی اس کے بیان کیے ہیں۔ وہ علوم جدیدہ کے خلاف ہے للہذا نا قابل تسلیم ہے۔ لعنت الله عللی قائلہ و عللی معتقدہ ۔ میرا تو یہ قول ہے کہ قرآن مجید میں جو کچھ وارد ہے وہ بالکل تشریج اور علوم جدیدہ کے مطابق ہے مگر مفسرین نے اس کے معنی بیان کرنے میں غلطی کی ہے معلوم ہوتا ہے۔ کہ جناب سید الحاج خدا کو اور مفسرین کو یا پیغمبر صلعم کو اور مفسرین کو یا پیغمبر قرآن اور تفسیر میں کچھ فرق نہیں کرتے۔

عقیده بست و هشتم

منخنقه کی حرمت قرآن میں منصوص نہیں ہے لہذا حلال ہے۔
لعنت الله علیٰی قائله و علیٰی سعتقدہ ۔ یه لعنت اس
واسطے کہی ہے که اس عقیدہ میں جو عام لفظ بیان کیے ہیں وہ
کذب اور اتہام ہے ۔ میرا ہرگز اعتقاد نہیں ہے که عموماً منخنقه

حلال ہے۔ یہ بھی میں نے نہیں کہا کہ حرمت منخنقہ منصوص نہیں ہے صرف ایک خاص آیت کے معنوں میں بحث کی ہے کہ خاص آیت میں طیور منخنقہ کی حرمت منصوص نہیں ہے اس کی ایسی مثال ہے کہ اگر کوئی شخص یہ بات کہے کہ آیتہ کریمہ اهدنا الصراط الدمت علیہم غیر الصراط الذین انعمت علیہم غیر المخضوب علیہم و لا الضالین ۔ میں حرمت زنا منصوص نہیں اور آس شخص کا عقیدہ جناب سید العاج یہ قرار دیں کہ آس کے عقیدہ میں زنا کی حرمت قرآن میں منصوص نہیں ہے جناب سید العاج کو مسلانوں پر اتہام کرنے میں ذرا خدا کا بھی ڈر کرنا چاھیے۔

عقيده بست ونهم

ایک سے زیادہ ازواج منع ہیں۔ لعنت اللہ عالمی قائلہ و عالمی سعتقدہ۔

عقیده سی ام

معراج جسانی بے اصل ہے صرف خواب میں مسجد اقصلی نظر آ گئی تھی دگر ھیچ اور شق صدر آن حضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا بھی بے اصل ہے ۔ ضد سے ایک شخص دوسرے کی بات کو بگاڑ کر اور اصلیت چھپا کر دوسرے پیرایہ میں بیان کر سکتا ہے ۔ اصل اس کی صرف اتنی ہے کہ نسبت معراح جناب رسول خدا صلعم کے تین مذھب ھیں:

اول : مذهب حضرت عائشه صدیقه ^{رط} اور بعض صحابه کا جو اسبات کے قائل هی*ں ک*ه معراج روحانی تهی نه جسانی ـ

دوسرا ۔ مذہب چند اکابر دین کا ہے اور وہ یہ ہے کہ معراج بیت المقدس تک جسانی تھی اور وہاں سے ملاء اعلیٰ تک روحانی ۔

تیسرا: مذهب عام جو سب میں مشہور هے که تمام معراج جسانی تھی۔ میری یه رائے هے که جہاں تک اس مسئله پر اور قدرآن مجید و احادیث پر غور کیا جاتا هے تو مذهب عائشه صدیقه رخ کا ٹھیک اور درست معلوم هوتا هے وهی مذهب میں نے اختیار کیا هے۔ پس جو شخص اس معامله میں جو الفاظ طنز میری نسبت کہتا هے در حقیقت حضرت عائشه صدیقه رخ اور بعض صحابه کی نسبت کہتا هے جن کا وہ مذهب هے۔

شق صدر کی نسبت بھی چند مذھب ھی ۔ بعضوں کا قول ھے كه پايخ دفعه شق صدر واقعه هـوا اكثرون كا قول هے كه ایک دفعه ایام طفولیت میں واقع ہوا۔ پادریوں نے ان روایات ضعیفه غیر معتبره کی بنا پریه استدلال کیا هے که نعوذ بالله آں حضرت صلعم کو صرع کی بیاری تھی اور حالت صرع میں جو کیفیت واقع ہوتی تھی آسی کو راویوں نے شق صدر تعبیر کیا ہے۔ میں نے ان تمام روایتوں کی بقدر اپنی طاقت کے تحقیقات کی اور معلوم هوا نه وه روایتس محض نامعتبر هس ـ تیسرا مذهب محققین کا یہ تھا کہ واقعہ شق صدر ایک حزو ہے آن تمام واقعات کا جو شب معراج کو واقع ہوئے تھر یہی روایت مرے نزدیک صحیح و معتبر تھی ۔ یہی مذہب میں نے اختیار کیا ہے۔ پس اب جناب سید الحاج اپنر دل کے مخارات نکالنر کو جو چاهیں سو لکھیں ۔ خدا آن سے سمجھر گا اور جو که وہ دلوں کا حال جاننر والا ہے آس کے سامنر ریا کاری کسی کی پیش نہ جاوے گی ۔ میں اپنر اعمال و نیت کی ضرور جزا یا سزا پاؤںگا اور جناب سید الحاج اپنر اعال و نیت کی ضرور جزا یا سزا پاویں گے۔ نه وه معری قبر میں سوویں کے نہ میں آن کی قبر میں سوؤں گا۔ پس اتنی بات

کو جتنا وہ چاھیں بڑھا کر لکھیں ۔

مھر آمید ہے کہ جو کوئی میری اس تحریر کو دیکھر گا تعجب کرے گا کہ جناب سید الحاج نے کیوں ایسے سخت اور محض غلط مهتان محھ پر کیر ہیں ، مگر ظاہرا اس کے دو سب معلوم ہوتے ہیں ۔ اول صرف اُس خیالی اور بے اصل خوشی کا حاصل کرنا که لوگ جناب سید الحاج کو کمیں که واہ کیا مسلمان هیں ۔ حضرت مسلمان عالم ایسے هی هوتے هیں ۔ جب بدایوں میں تشریف لر حاتے ہوں گے تو دو چار محله کے آدمی آن کر کہتر ہوں گے کہ واہ کیا لکھا ہے اور جناب سید الحاج خوش هوتے هوں گے ، دگـر هيچ ـ دوسرا سبب يه هـ كه جناب سید الحاج نے جب یه رساله لکھا هے قریب اسی زمانے کے حج کو تشریف لے جانے والے تھے ۔ آنھوں نے خیال کیا ہوگا کہ لاؤ حج کو جاتے ہی ہیں ۔ جتنے گناہ کرنے ہیں سبکر لیں۔ حج کے بعد تو سب پاک ہو ہی جاویں گے ۔ جیساکہ بعض آدمی جب مسمل لینا چاهتر هس تو خوب بد پرهیزی کرتے هس اور سمجھتر ھیں کہ مسہل سے سب نکل جاوے گی ، مگر جناب سید الحاج کو معلوم کرنا چاہیے کہ حج و زیارت میں جو بشارتیں آپ کو ملی هوں ملی هوں اور جو خطاب آپ کو ملا هو ملا هو جن کا تذکرہ آپ دن رات فرمایا کرتے ہیں اور حج سے آپ کے سب گناہ معاف ہو گئے ہوں اور شبلی و جنید کے مرتبہ پـر یہنچ گئے ہوں بلکہ اس سے بھی اعالٰی ، مگر حق العباد کبھی نه حج سے بخشے جاتے ھیں اور نہ کسی بشارت سے ۔ پس آپ نے جو انہام مجھ پر کیے هیں جب تک میں هی نه معاف کروں معاف نهیں هو سکتر ـ یس مقتضائے ایمان داری یہ ہے کہ آپ حج در احمد کا احرام باندھیے

اور گناهوں کی معافی چاهیے ورنه روز جزا کو آپ کو اپنی کرتوتوں کا مزا معلوم هو جاوے گا۔ واللہ یے دی من یے اللی صراط المستقیم ۔

خدا، رسول اور قیامت کے متعلق سرسید کے عقائد

اخبار صدق جدید لکھنؤ بابت ے اکتوبر ١٩٦٠ع)

لندن سے واپس آنے کے بعد جب سرسید نے اپنا اصلاحی کام شروع کیا اور قوم کی زبون اور ابتر حالت کو بہتر بنانے کا ارادہ کیا اور علی گڈھ میں مسلمانوں کی تعلیم کے لیے ایک مدرسہ کے قیام کا اعلان کیا ، تو قوم نے اس مفید کام میں آن کی مدد کرنے کی بجائے هر طرف سے آن پر نہایت زور شور کے ساتھ کفر کے فتووں کی بارش ہونے لگی اور مکہ معظمہ تک سے سرسید کے کفر کے فتوے منگوائے گئر ۔ غریب سید کو کافر ، ملحد ، بے دین بنانے والے علمائے کرام نے سارمے ہندوستان کا دورہ کیا اور نہایت کوشش سے ہر جگہ کے مشہور علماء سے سرسید کے کفر پر مہریں لگوائیں۔ اسی سلسلر میں مومنین حضرت مولانا محد قاسم نانوتوسی بانی مدرسه دیو بند کے پاس بھی پہنچے اور اُن سے درخواست کی کہ آپ بھی مرسید کے کفر کی تصدیق فرما دیجیے تاکہ کسی مسلمان کو اسے کافر سمجھنے میں کوئی شک و شبہ نہ رہے ۔ (اُس زمانہ میں کفر کے فتووں میں یہ دفعہ لازمی ہوتی تھی کہ جس شخص کے متعلق کفر کا فتویل دیـا جا رہا ہے ـ جو شخص آسے کافر نہ سمجھے وہ بھی کافر ہے اور اس کی بیوی پر طلاق ہے) خبر جب علمائے کرام نے اس یقین و اعتاد کے ساتھ سرسید کے کفر کا فتوی حضرت مولانا

مجد قاسم کی خدمت میں پیش کیا که حضرت مولانا بلا چوں و چرا اور بلا تامل اس فتوے پر مہر تصدیق ثبت فرماویں گے ۔ کیوں که آس وقت یه متفق حلیه مسئله تھا که : مصرع

سید احمد خاں کو کافر جاننا اسلام ہے

لیکن علائے کرام کی حیرت کی انتہا نه رهی اور آن کا سنه کھلا کا کھلا رہ گیا جب آن کی توقع اور آسید کے بالکل برخلاف حضرت مولانا نے نہایت سنجیدگی سے فرمایا که ٹھہریے! پہلے میں ذاتی طور پر اس امر کی تحقیق تو کر لوں که سید احمد واقعی کافر ہے ؟ یا لوگوں نے آسے ''کافر'' بنا دیا ہے ؟

اس گفتگو کے بعد حضرت مولانا نے حسب ذیل سوالات لکھ کر سرسید کو بھیجے اور آن کو لکھا کہ ان کے مختصر جوابات لکھ کر بھیج دیں ۔ یہ سوال اور آن کے جوابات ذیل میں نقل کیے جاتے ھیں :

(۱) سوال: خداکی نسبت آپ کا جو عقیده هو وه بهت مختصر طور پر چند لفظوں سی لکھ دیں ۔

جواب: خدا تعالی ازلی ، ابدی ، مالک اور صانع تمام کائنات کا ہے ۔

(۲) سوال: حضرت نبی کریم مجد مصطفلٰی صلی الله علیه وسلم کے متعلق آپ کیا اعتقاد رکھتے ہیں ''

جواب: بعد از خدا بزرگ توئی قصه مختصر ـ

(٣) سوال: قياست كى بابت آپ كے خيالات كيا هيں ؟ جواب مختصر هو ؟

جواب: قیامت برحق هے -

سرسید کی طرف سے هر سه امور کے متعلق یه جواب موصول

ھونے پر حضرت مولانا نے علمائے کرام سے فرمایا ہے کہ ''کیا تم ایسے شخص کے کفر پر مجھ سے دستخط کرانا چاہتے ہو جو پکا مسلمان ہے ؟ جاؤ سیں قیامت تک اس فتوے پر دستخط نہیں کروں گا ۔''

استجابت دعا اور سرسید

(از ۱٬ آخری مضامین سرسید٬۰)

مرزا غلام احمد صاحب قادیانی نے جو اشتہار ۲۵ جون ۱۸۹۵ء کو جاری کیا ہے۔ آس میں لکھا ہے کہ '' ایک فرقہ نیچریه مسلمانوں کی گردش ایام سے پیدا ہو گیا ہے۔ یہ لوگ قبولیت دعا سے منکر ہس۔''

هم جناب مرزا صاحب سے عرض کرتے هیں که یه خیال آپ کا صحیح نہیں ہے جس کو آپ نیچریه فرقه بناتے هیں۔ وہ تو هر ایک شخص کی دعا کے قبول هونے کا اعتقاد رکھتا ہے اور وہ هر ایک وہ یقین کرتا ہے که خدا مستجاب الدعوات ہے اور وہ هر ایک بندے کی دعا کو قبول کرتا ہے ، مگر دعا کے قبول هونے کا مطلب وہ یه بتاتے هیں که اگر مسئول عنه مقدر میں ہے تو هو جاتا ہے اور اگر اس کا هونا مقدر میں نہیں ہے۔ تو خدا دعا قبول کرکے دعا مانگنے والے کو ثواب آخرت دیتا ہے مگر کسی کی دعا کو وہ رد نہیں کرتا ۔ پس آن کے عقیدہ کے موافق هر شخص کی دعا قبول هوتی ہے ۔ کسی کی دعا رد نہیں هوتی ۔ آپ کا یه لکھنا که یه لوگ قبولیت دعا کے منکر هیں ۔ اس لائق ہے که اس پر کسی وقت خاص میں آپ دوبارہ غور فرماویں گے ۔

دعا اور اس کی قبولیت

(منقول از رساله " الدعاء والاستجابه")

اس مضمون میں سرسید نے بہت واضح طور پر بتایا ہے کہ دعا کے متعلق آن کا خیال اور عقیدہ کیا ہے اور وہ دعا کی قبولیت کے کسیا معنی لیتے ہیں اور اس باب میں قرآن محید کی آیات کی کیا تاویل کرتے ہیں ۔ همیں اس سے بحث نہیں کہ سرسید کا یہ عقیدہ درست ہے یا نہیں ۔ هم تو اسے سرسید کے ایک مضمون کی حیثیت سے یہاں درج کر رہے ہیں ۔ (شیخ محد اساعیل پانی پتی)

دعا اور ندا دو لفظ مترادف هیں اور آن کے لغوی معنی پکار نے

کے هیں ۔ حضرت ذکریا علیه السلام کے حال میں ایک جگه خدا

نے فرمایا ۔ و ذکریا اذ نادی ربه اور یه کافی ثبوت اس بات کا

ھے که دعا اور ندا دو مترادف لفظ هیں ۔ خدا کو پکارنا اس کی
طرف متوجه هونا اور اس کو حاضر سمجھنا اور اس کے اله اور
معبود برحق هونے کا اقرار کرنا هے ۔ پس جو شخص که اس طرح
پر خدا کو پکارتا هے خدا اس کو قبول کرتا هے قال الله تعاللی
و قال ربکم ادعونی استجب لکم ۔ (آیت ۲۰، المومن ۵۰)
اور دوسری جگه فرمایا هے و ا ذا سئالک عبادی عنی
فانی قریب آجیب دعوۃ الداع ا ذا دعان فالیستجیبولی

غرض که لفظ دعا اور ندا میں بلحاظ اُس کے حقیقی معنی کے امر مسئول عنه داخل نہیں هوتا ۔ بلکه وه علیحده بیان کیا جاتا ہے جیسے که ان دو آیتوں میں ہے پہلی آیت یه ہے ۔ هنالک دعا زکریا ربه عال رب هب لی سن لدنک ذریة طیبة انک سمیع الدعا ہے ۔ (آیت سس ، آل عمران س)

اور دوسری آیت یه هے۔ و ذکریا اذنا دی رابه و رب کریا اذنا دی رب کریا ادنا دی راب کا رب کا تذرنی فرداً و انت خیر الوارثین ۔ (آیت ۲۹) بہت جگه قرآن مجید میں بغیر لفظ دعا کے سوال کیا گیا هے اور حاجت چاهی گئی هے جیسے حضرت ابراهیم علیه السلام نے کہا

رب هب لى من الصالحين فبشرناه بغلام حلم ـ (آيت ٩٨ و ٩٩ ، الصافات ٢٧)

اور سورة النمل ميں جو آيت هے اسن يجيب المضطر اذا دعاه و يكشف السوء - (آيت ٣٠، النمل ٢٥) اس ميں بهى لفظ دعا آنهيں معنوں ميں آيا هے - جو اور آيتوں ميں آيا هے اور مسئول عنه پر بولا نهيں گيا هے بلكه اس كا مطلب هے كه اذا دعاه بكذا و كذا -

لیکن اگر خدا سے کچھ مانگا جائے اور سوال کیا جائے تو اس حالت میں بھی خدا کی طرف متوجه ھونا اور اُس کو معبود برحق سمجھنا لازم آتا ہے اور لفظ ندا لفظاً یا معناً اُس پر مصدر ھوتا ہے اس لیے دعا کا لفظ مسئول عنه پر بھی بولا جاتا ہے اور لفظ دعا کے معنی الا بتہال الی الله بالسوال کے ھو جاتے ھیں ۔ یعنی عاجزی کے ساتھ خدا سے کچھ مانگنے کے اور یہی سبب ہے کہ دعا کو بمعنی اول لو یا بمعنی ثانی عبادت کہا گیا ہے ۔

ر- کام جس کی بابت سوال کیا گیا ۔

چناں چه اس آیت میں و قال ربکم ادعونی استجب لکم ان الذین یستکبرون عن عبادتی سیدخلون جہنم داخرین ـ (آیت ۲۰) المومن .م)

عبادت کا لفظ مترادف دعا کے آیا ہے۔ اس لیے که شروع آیت میں اُدعونی کا لفظ ہے تو اُس کی مناسبت سے یستکبرون کے بعد عن دعائی آتا۔ مگر وہاں عن عبادتی آیا ہے جو کافی ثبوت ہے کہ دعا اور عبادت مترادف لفظ ہیں۔

اسى آیت کے مطابق دو حدیثیں مشکواۃ شریف میں موجود هیں پہلی حدیث یه هے۔ عن النعمان بن بشیر قال قال رسول الله صلى الله علیه و سلم الدعاء هو العباد ثم قراء و قال ربکم ادعونی استجب لکم (رواہ احمد و الترمذی و ابو داؤد و النسائی و ابن ماجه)۔

دوسرى حديث ية هـ عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم الدعاء مخ العبادة _ (رواه الترمذي)

باقی رهی استجابت دعا اگر استجابت دعا کے معنی اس سوال کا پورا کر دینے کے قرار دیے جاویں تو اس میں دو مشکلیں پیش آتی هیں: اول یه که هزاروں دعائیں نهایت عاجزی اور اضطراری سے کی جاتی هیں۔ مگر سوال پورا نہیں هوتا۔ جس کے معنی یه هوتے هیں که دعا قبول نهیں هوئی۔ حالاں که خدا نے استجابت دعا کا وعده کیا ہے۔ دوسرے یه که جو آمور هونے والے هیں ، وہ مقدر هیں۔ یعنی علم اللهی میں هیں اور جو نہیں هونے والے هیں وہ بھی علم اللهی میں هیں۔ آن مقدرات کے برخلاف هرگز نہیں هو سکتا۔ پس اگر استجابت دعا کے معنی سوال کا پورا هونا قرار دیے جاویں تو خدا کا یه وعده که آدعونی استجب لکم ان سوالوں پر جن کا هونا مقدر نہیں ہے کسی طرح صادق نہیں آ سکتا۔

تقدیر کی دو قسمیں مبرم اور معلق مرار دینا بچوں کی باتیں هیں اور اس پر بھی کوئی فائدہ مترتب نہیں هوتا کیوں کہ جس کو تقدیر معلق قرار دیا جاتا ہے وہ بھی بمنزلہ اسی کے هو جاتی ہے جس کو تقدیر مبرم کہا جاتا ہے ۔ معہذا ادعونی استجب لکم کا وعدہ عام ہے اور اس میں کوئی چیز اور کوئی شخص مستثنی نہیں ہے اور جب کہ یہ ثابت ہے کہ حصول سوال منحصر مقدر پر ہے تو استجابت دعا جس کا وعدہ خدا نے کیا ہے وہ اور کوئی معنی رکھتا ہے ۔

هال اس ميل شبه نهيل كه بعض آمور جن كا هونا مقدر ميل هي اور آن كے ليے بهى دعا مانگی جاتی هے وہ حاصل هو جا۔ هيل اور آن پر استجابت كا مجازاً اطلاق كيا جا سكتا هے جيسے كه اس آيت ميل هنالك دعا ذكريا ربه و قال رب هب لى من لدنك ذرية طيبة أنك سميع الدعاء فنادته الملئكة و هو قائم يصلى في المحراب ان الله يبشرك بيحيلى مصدقاً بكامة من الله و سيداً و حصوراً و نبياً من الصلكين ـ رايت سم و سم ، آل عمران س)

اور جیسے که اس آیت سی هے و زکریا اذ نادی ربه رب لا تذرنی فرداً و انت خیر الوارثین ۔ فاستجبنا له و و هبنا له کی یکی و اصلحنا له وجه انهم کانوا یسارعون فی الخیرات و یدعوننا رغباً و رهباً و کانو لنا خاشعین ۔ (آیت و و و و و ، الانبیاء ۲۱)

حضرت ذکریا علیہ السلام کے بیٹا پیدا ہونے کو مجازاً

[۔] محکم و استوار ، ابرام مصدر ہے جس کے معنی ہیں محکم کرنا ۔ ۲۔ لٹکائی گئی ، یعنی التوا میں ڈالی گئی ۔ اس کا مصدر تعلیق ہے ۔

استجابت دعا کہا جاوے گا ۔ کیوں کہ بیٹا ہونا مقدر میں تھا وہ ضرور ہونا تھا ۔

اسى طرح حضرت ابراهيم عليه السلام كى اس دعاكى نسبت رب هب لى من الصالحين فبشرناه بغلام حليم ـ (آيت ٩٨ ـ ٩٩ ، الصافات ٣٠) مجازاً استجابت دعا كها جاتا هـ ـ كيون كه بيٹا هونا مقدرات مين سے تھا ـ

اور جب که یه بات محقق هوئی که دعا عبادت هے ۔ جو دل سے اور خضوع و خشوع سے هو اس کے قبول کرنے کا خدا نے وعده فرمایا هے اور وه کبهی ناقبول نہیں هوتی ۔ تو استجابت دعا کی ٹھیک مراد عبادت کے مقبول کرنے اور انسان کے دل میں جو حالت که صدق دل سے عبادت کرنے میں پیدا هوتی هے ۔ اس کے پیدا هو۔ کی هوئی ۔ و هذا سا وعدالله و ان الله کا خلف المیعاد ۔

قال الله تعالى - ان الله لا يضيع اجرالمحسنين - (آيت ١٢١، الوبه و) وقال واصبر فان الله لا يضيع اجرالمحسنين - (آيت ١١٤، هود ١١)

انی لا آضیع عمل عامل سنکم سن ذکر او آنثلی بعضکم سن بعض _ (آیت ۱۹۳ _ آل عمران ۳)

جو معنی استجابت دعا کے میں نے بیان کیے اُس کے مناسب مشکواۃ میں ایک حدیث ہے۔ عن ابی سعید الخدری ان النبی صلی اللہ علیہ و سلم قال ما من مسلم یدعوا بدعوۃ لیس فیہا اثم ولا قطیعۃ رحم الا اعطاہ اللہ بھا احد ثلث اما ان یجعل له دعوته و اما ان یدخرها له فی الا خرۃ و اما ان یحمرف عنه من السوء مثلها۔ قالوا اذا فک ثر قال اللہ اکثر رواہ احمد۔ قولہ اما ان یجعل له

اس کا سی مطلب ہے کہ اگر وہ اس مقدر ہے تو وہ ہو حاومے گا وقوله اما ان يدخرها فى الآخرة يه أن هي امور پر اشاره ہے جو مقدر نہیں ہیں اور دعا کے عبادت ہونے کے سبب اس کا ثواب آخرت سی ملے گا۔ و هذا هو قوله تعالیٰ ادعونی استجب لكم و قوله اسا ان يصرف عنه من السوء كما فال الله و يكشف السوء اس سع می مراد ہے کہ وہ دعا اس قوت کو تحریک کرنے والی هوتی ہے جس سے اس ریخ و مصیبت و اضطرار میں جو مطلب نہ حاصل ھونے سے ھوتا ہے، تسکین دیتی ہے اور جب که دعا دل سے اور اپنر تمام فطرتی قواء کو متوجہ کرکے کی جاتی ہے اور خدا کی عظمت اور ہے انتہا قدرت کا خیال اپنر دل میں جایا جاتا ھے تو وہ قوت تحریک میں آتی ھے اور آن تمام قوتوں پر جن سے اضطرار پیدا ہوا ہے اور اس مصیبت کا رہخ برانگیختہ ہوا ہے۔ آن سب پر غالب هو جاتی هے اور انسان کو صدر و استقلال پیدا هو حاتا هے اور ایسی کیفیت کا دل میں پیدا هونا لازمهٔ عبادت هے اور می دعا کا مستجاب هونا ہے۔

انسان کی فطرت میں یہ بات داخل ہے کہ جب اُس پر کوئی مصیبت آتی ہے اور اُس کے دل کو اضطرار ہوتا ہے تو وہ کسی کی طرف استمداد اور استعانت کے لیے رجوع کرتا ہے۔ اگر وہ امر ایسا ہو کہ کوئی انسان اُس کی مدد کر سکتا ہے تو وہ انسان کی طرف رجوع کرتا ہے اور اگر وہ امر کسی انسان کی مدد سے بالاتر ہے تو کسی ایسی ہستی سے امداد چاہتا ہے جو اُس کے بزدیک اُس امر میں مدد کر سکتی ہے ، مگر خدا نے ہم کو ایاک نعید و ایاک نست عین کی تعلیم دی ہے اور اُس کا لازمہ یہ ہے کہ ہم کسی امر میں سوائے خدا کے اور کسی سے

مدد نه چاهیں ۔ وہ امر کیسا هي بڑا يا کيسا هي چهوڻا هو۔

مشکواة میں یه حدیث حضرت انس رضیاللہ تعالیٰی عنه سے مروی ہے۔ قال قال رسول اللہ صلی الله علیه و آله وسلم لیسال احدکم ربه حاجته کلها حتی یسال شسع نعله ادا نقطع یعنی هر شخص اپنی تمام حاجتیں خدا هی سے مانگے یہاں تک که اگر آس کی جوتی کا تسمه ٹوٹ جاوے تو آس کو بھی خدا سے مانگے۔ پس دعا سے مقصد یه ہے که هر حال میں بندے کو خدا سے تعلق اور هر امر میں آسی کی طرف رجوع رہے نه کسی غیر کی طرف۔

حو لوگ که حقیقت دعا سے اور حو حکمت اُس میں ہے اُس سے ناواقف هیں وہ کہد سکتر هیں که جب یه امر مسلم ہے که جو مقدر نہیں ہے وہ نہیں ہونے کا تو دعا سے کیا فائدہ ہے ، مگر اس میں چند نا سمجهیاں هیں ۔ اول تو یه معلوم نہیں که وہ مقدر هے یا نہیں ۔ دوسرے یہ کہ وہ ایسا کہنر میں فطرت انسانی کو بھول جاتے ھس کہ انسان کی فطرت مس یہ امر داخل ہے کہ حالت اضطرار میں یا حصول مطلب کے لیے دوسرے سے استمداد کی خواهش رکھتا ہے۔ بلا خیال اس کے که وہ هوگا یا نہیں اور انسان کی یہ فطرت اُس سے جدا نہیں ہو سکتی اور بمقتضائے اس کی فطرت کے اُس کو کہا گیا ہےکہ خدا ہی سے مانگو جو مانگو ۔ والله يعلم انها مقدر ام لا فان لم يكن مقدرا يعطيك ثوابها و يدخرها لك في الاتخرة فاما في الدنيا يصرف عنك من السوء مثلها ـ فانظر ما تفعل في امور دنياك انت تسعى بكمال جهدوا وابتهال في حصولها وتعلم انها لا تحصل ان لم يكن مقدراً فاف لك ان قصرت فى الدعاء الى الله سع ان الله عزوجل وعدك احدى ثلث

اما ان يعجل لک دعوتک و اما ان يدخرهالک في الاتخرة ـ و اما ان يصرف عنک من السوء مشلها و لهذا قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من لم يسال الله يغضب عليه ـ (رواه ابو هريره) مشكواة

و هـذه دعـائي الى الله

ربنا تقبل سنا انك انت السميع العلم ـ (آيت ١٠١، البقره ٢)

ربنا واجعلنا مسلمين لک و من ذريتنا آسة مسملة لک و ارنا مناسکنا و تب علينا انک انت التواب الرحيم، (آيت ١٢٢ ـ البقره ٢) ـ

ربنا آتنا فى الدنيا وساله ، فى الاخرة سن خلاق ـ (آيت ١٩٦ ، البقره ٢)

ربنا آتنا في الدنيا حسنة و في الاتخرة حسنة وقنا عناب النار - (آيت ١٩٥ ، البقره ٢)

ربنا لا توأخذنا ان نسينا او اخطانا ربنا ولا تحمل علينا اصراً كما حملته على الذين من قبلنا ربنا ولا تحملنا ما لا طاقة لنا به واعف عنا واغفرلنا وارحمنا انت مولانا فانصرنا على القوم الكافرين - (آيت ٢٨٦ - البقره ٢)

ربنا لا تزغ قلوبنا بعد اذ هدیتنا و هب لنا من لدنک رحمة انک انت الوهاب - (آیت به ، آل عمران به) ربنا اننا آسنا فاغفرلنا ذنوبنا و قنا عذاب النار- (آت بهر ، آل عمران به)

ربنا آمنا بما انزلت واتبعنا الرسول

مع الشاهدين - (آيت ٢٨ - آل عمران ٣)

ربنا اغفرلنا ذنوبنا و اسرافنا في امنا و ثبت اقدامنا وانصرنا على القوم الكافرين ـ (آيت ١٣١، آل عمران م) ربنا ما خلقت هذا باطلاً سبحانك فقنا عذاب النار ـ (آيت ١٨٨، آل عمران م)

ربنا اننا سمعنا منادیاً ینادی للایمان ان آمنوا بربکم فامنا و ربنا فاغفرلنا ذنوبنا و کفر عنا سیآتمنا و توفنا مع الابرار - (آیت ۱۹۹۹ و ۱۹۹۱ آل عمران ۳) ربنا و آتنا ما و عدتنا علی رسلک و لا تخزنا یوم القیامة انک لا تخلف المیعاد - (آیت ۱۹۹۱ آل عمران ۳) ربنا آمنا فاکتبنا مع الشاهدین - (آیت ۲۸۱ الهائده ۵) ربنا آنزل علینا مائدة من السماء تکون لنا عیداً لا اولنا و آخرنا و آیة منک وارزقنا و انت خیر الرازقین - (آیت ۱۹۸۱ و الهائده ۵)

ربنا ظلمنا انفسنا و ان لم تغفرلنا وترحمنا لنكونن من الخاسرين - (آيت ٢٢ - اعراف)

ربنا لا تجعلنا سع القوم الظالمين ـ (آيت ٣٥، اعراف ع)
ربنا افتح بيننا و بين قومنا بالحق و انت خير الفاتحين ـ (آيت ٨٤)

ربنا افرغ علینا صبراً و توفنا مسلمین ـ (آیت ۱۲۳ ، اعراف ے)

ربنا لا تجعلنا فتنة للقوم الظالمين - (آيت ٨٥ - يونس ١٠) ربنا آتنا من لدنك رحمة و هيئى لنا من امرنا رشداً (آيت و ، كمف ١٨)

ربنا آمنا فاغفرلنا وارحمنا وانت خير الراحمين

(آیت ۱۱۱ - الموسنون ۲۳) -

ربنا هب لنا من ازواجنا و ذریاتنا قرة اعین واجعلنا لاحتقین اماساً - (آیت می ، فرقان ۲۵)

ربنا اغفرلنا ولا خواننا الذين سبقونا بالإيمان ولا تجعل في قلوبنا غلاً للذين آسنوا ربنا انك رؤف الرحيم - (آيت ، ، ، الحشر و ۵)

ربنا عليك توكلنا واليك انبنا واليك المصر (آيت م الممتحنه)

ربنا لا تجعلنا فتنة للذين كفروا واغفرلنا ربنا الك انت العزيز الحكيم - (آيت ٥ الممتحنه ٦٠)

ربتا اتمم لنا نورنا واغفرلنا انک علی کل شئی قدیر ـ (آیت ۸ ، التحریم ۲۰) ـ

وحى اللهى اور نبوت كى حقيقت

وحی تو وهی هوتی ہے جو خدا سے پیغمبر کو دی جاتی ہے مگر اگلے مفسروں نے اس کا بیان که وہ کیوں کر دی جاتی ہے ٹھیک طور پر نہیں کیا ۔ انہوں نے خدا و رسول کو دنیا کے بادشاہ اور وزیر کی مانند اور وحی کو بادشاہ کے کلام یا حکم یا پیغام کی مانند سمجھا ہے اور جبرئیل کو ایک مجسم فرشتہ ۔ بادشاہ و وزیر میں ایلچی پیغام لے جانے والا قرار دیا ہے ۔

امام فخرالدین رازی تفسیر کبیر میں ارتبام فرماتے هیں که آسان پر جبرئیل خدا کا کلام سن کر آنحضرت پر آن کو یه مشکل پیش آئی اور وہ پیغام کہ دیتے تھے پھر اس تقریر پر آن کو یه مشکل پیش آئی که خدا کے کلام میں تو حروف اور آواز نہیں ھے ۔ پھر جبرئیل نے وہ کیوں کر سنا ہو گا پھر اس کا جواب یه دیا ہے که نمکن ہے که خدا تعالیٰی نے جبرئیل میں ایسی ساعت پیدا کی ہو جو خدا کا کلام سن لیتا ہو ۔ پھر اس میں یه قدرت رکھی ہو که وہ عبارت میں اس کی تعبیر کر سکے اور یه بھی ہو سکتا ہے که خدا نے لوح محفوظ میں اسی ترتیب سے قرآن پیدا کر دیا ہو اور جبرئیل نے اس کو پڑھ کر یاد کر لیا ہو ۔ یا یه ہوا ہو که اللہ تعالیٰ کو کر نکالی ہوں اور جبرئیل نے بھی اسی کے ساتھ آواز ملا لی ہو ۔ پھر اللہ تعالیٰ نے جبرئیل کو بتا دیا ہو که یہی وہ عبارت ہے پھر اللہ تعالیٰ نے جبرئیل کو بتا دیا ہو که یہی وہ عبارت ہے جو ہارے کلام قدیم کو پورا ادا کر دیتی ہے ۔

یه تقریریں ھارے علمائے قدیم کی آسی قسم کی تقریریں ھیں جن

پر آج لوگ هنستر هی اور قرآن محید اور مذهب اسلام کو مثل اس تقریر کے لغو سمجھتر ھیں۔ امام صاحب نے اس بات پر غور نیس فرمایا هے که خدا تعالیٰ نے آنحضرت هی مس ایسی ساعت یا لوح محفوظ میں سے پڑھنے کی قدرت یا جس جسم میں سے وہ اُونچی نیچی آوازیں نکلتی تھیں اُن سے کلام سمجھ لینر کی طاقت کیوں نہیں پیدا کی جو خدا کا کلام سن لیتر اور سمجھ لیتر تاکہ اس تکلیف کی کے جبرئیل سنس پھر اس کی عبارت بنائس پھر آنحضرت کو آکر سنائین حاجت نه رهتی اس کی بھی تشریج امام صاحب نے تہیں فرمائی کہ اُن اُونچی نیچی آوازوں سے آواز ملا لینے کے بعد جبرئیل کو خدا نے کیوں کر بتایا کہ یہ وہی عبارت ہے۔ آیا انھی نیچی اونچی آوازوں سے ، ان سے تو جاننا محال تھا کیوں کہ دور لازم آتا ہے ۔ پھر اورکسی طرح بتایا ہوگا ۔ مگر پہلے ہی اسی طرح بتايا هوتا ـ ولا شك ان هذا صفوات ليس لها في الاسلام نصیب ۔ نبوت کو بھی علماء متقدمین نے ایک عہدہ سمجھا ہے کہ خدا جس کو چاهتا ہے یا جس کو منتخب کرتا ہے ، دے دیتا ہے جیسر بادشاہ اپنر بندوں میں سے کسی کو وزیر کسی کو دیوان کسی کو مخشی کر دیتا ہے اور وہ کسی منصب کو لر کر وہ کام شروء کرتا ہے اور سعوث ہونے کے ٹھیک سی معنی آنھوں نے سمجھے ھیں ـ

مگر میری سمجھ یه نہیں ہے۔ میں نبوت کو ایک فطری چیز سمجھتا هوں ۔ نبی گو اپنی ماں کے پیٹ هی میں کیوں نه هو نبی هوتا ہے ۔ الدندبی ندبی ولوکان فی بطن اسه ۔ جب پیدا هوتا ہے ۔ جب مرتا ہے تو نبی هی مرتا ہے ۔

نبي كا لفظ يهوديون سين زياده تر مستعمل تها وه اس كو لفظ

نباہ سے مشتق کرتے تھر ۔ جس کے معنی خبر دینر کے ھیں ۔ وہ اس بات کے قائل تھر کہ انبیاء مثل نجومیوں کے دنیا کی باتوں میں سے غیب کی بات یا آئندہ ہونے والی باتس بتا دیتر ہیں ۔ شاید اتنا فرق سمجھتر ہوں کہ نجو سی ستاروں کے حساب یا شیطانوں کے اسرار بتاتے تھر اور انبیاء ربانی کرشمہ سے ۔ پس جو شخص که پیشین گوئی نہیں کرتا تھا اس کو نبی یا پیغمبر نہیں کہتے تھے ۔ مگر اسلام میں اور مسلانوں میں یہ خیال نہیں ہے وہ آن سب کو جن پر خدا نے وحی نازل کی ہے نبی جانتے ہیں اور پیغمبر مانتے ھیں ۔ اُلو کہ اس نے کوئی بھی پیشین گوئی نہ کی ھو۔ بلکہ مذھب اسلام تو یه بتاتا ہے که لا یعلم الغیب الا هو ـ یهی سبب ہے که قرآن مجید میں ہر ایک صاحب وحیکو نبی یا پیغمبرکہا گیا ہے۔ جن سیں سے اکثر کو جیسے داؤد و سلیہان کو یہودی نبی نہیں کہتے ـ مرحال اس لفظی بحث کو جانے دو ۔ نبوت در حقیقت ایک فطری چیز ہے جو انبیاء میں تقتضائی ان کی فطرت کے مثل دیگر قواے انسانی کے هوتی هے۔ جس انسان میں وہ قوت هوتی هے وہ نبی هوتا ہے اور جو نبی هوتا ہے اس سیں وہ قوت هوتی ہے جس طرح که تمام ملکات انسانی اس کی ترکیب و اعضاء دل و دماغ و خلفت کی مناسبت سے علاقه رکھتے ہیں ۔ اسی طرح سلکہ نبوت بھی اس سے علاقہ رکھتا ہے۔ یہ بات کچھ ملکۂ نبوت ھی پر سوقوف نہیں ہے۔ ہزاروں قسم کے جو سلگات انسانی ہیں بعضی دفعه کوئی خاص ملکه کسی خاص انسان میں از روئے خلقت و فطرت کے ایسا قوی ہوتا ہے کہ وہ اسی کا امام یا پیغمبر کہلاتا هے لوهار بھی اپنے فن کا امام یا پیغمبر هو سکتا ہے۔ شاعر بھی اپنے فن کا امام یا پیغمبر ہو سکتا ہے۔ ایک طبیب بھی اپنے فن طب کا امام یا پیغمبر ہو سکتا ہے ۔ مگر جو شخص روحانی امراض

کا طبیب هوتا ہے اور جس میں اخلاق انسانی کی تعلیم و تربیت کا ملکه بمقتضائے اس کی فطرت کے خدا سے عنایت هوتا ہے وہ پیغمبر کہلاتا ہے اور جس طرح که اور قواے انسانی بمناسبت اس کے اعضاء کے قوی هوت جاتے هیں اسی طرح یه ملکه بھی قوی هوتا جاتا ہے اور جب اپنی پوری قوت پر پہنچ جاتا ہے تو اس سے وہ ظہور میں آتا ہے جو اس کا مقتضی هوتا ہے جس کو عرف عام میں بعثت سے تعبر کرتے هیں۔

جـو حالات و ارادت ایسے دل پرگزرتے هیں وہ بھی بمقتضائے فطرت انسانی اور سب کے سب قانون فطرت کے پابند هوتے هیں ۔ وہ خود اپنا کلام نفسی ان ظاهری کانوں سے اسی طرح پر سنتا ہے جیسے کوئی دوسرا شخص اس سے کہہ رہا ہے ۔ وہ خود اپنے آپ کو ان ظاهری آنکھوں سے اس طرح پر دیکھتا ہے جیسے دوسرا شخص اس کے سامنر کھڑا ہوا ہے ۔

ان واقعات کے بتلانے کو اگرچہ یہ قول یاد آتا ہے کہ قدر ایں بادہ ندانی بخدا تا بہ بخشی ۔ مگر هم بطور تمثیل کے گو وہ کیسی هی کم رتبہ هو اس کا ثبوت دیتے هیں ۔ هزاروں شخص هیں جنہوں نے مجنونوں کی حالت دیکھی هوگی ۔ وہ بغیر بولنے والے کے اپنے کانوں سے آوازیں سنتے هیں ۔ تنہا هوتے هیں مگر اپنی آنکھوں سے اپنے پاس کسی کو کھڑا هوا باتیں کرتا هوا دیکھتے هیں ۔ وہ سب آنھی کے خیالات هیں جو سب طرف سے بے خبر هو کر ایک طرف مصروف اور آس میں مستغرق هیں اور باتیں سنتے هیں اور باتیں کرتے هیں ۔ کرتے هیں ۔ پس ایسے دل کو جو فطرت کی رو سے تمام چیزوں سے بے تعلق اور روحانی تربیت پر مصروف اور اس میں مستغرق هو ۔ ایسی واردات کا پیش آنا کچھ بھی خلاف فطرت انسانی نہیں ہے ۔ هاں ان دونوں میں اتنا فرق ہے کہ پہلا مجنوں ہے اور بچھلا پیغمبر ۔ گو ان دونوں میں اتنا فرق ہے کہ پہلا مجنوں ہے اور بچھلا کو بھی مجنوں بتاتے تھے ۔

پس وحی وہ چیز ہے جس کو قلب نبوت پر بسبب اسی فطرت نبوت کے مبدء فیاض نے نقش کیا ہے۔ وہی انتعاش قلبی کبھی مثل ایک بولنے والی آواز کے انھیں ظاہری کانوں سے سنائی دیتا ہے اور کبھی وہ نقش قلبی دوسرے بولنے والے کی صورت میں دکھائی دیتا ہے۔ مگر بجز اپنے آپ کے نه وهاں کوئی آواز ہے نه بولے والا۔ خدا نے بہت سی جگه قرآن میں جبرئیل کا نام لیا ہے۔ مگر مسورۃ بقر میں اس کی ماهیت بتا دی ہے جہاں فرمایا ہے که جبرئیل نے تیرے دل میں قرآن کو خدا کے حکم سے ڈالا ہے۔ اس دل پر آتارنے والی یا دل میں قرآن کو خدا کے حکم سے ڈالا ہے۔ خود انسان کی فطرت میں ہو۔ نه کوئی دوسری چیز ہو قطرت سے خود انسان کی فطرت میں ہو۔ نه کوئی دوسری چیز جو قطرت سے خارج اور خود اس کی خلقت سے جس کے دل ڈالی گئی ہے جداگانه

١٠ فانه نزله على قلبك باذن الله -

ھو۔ اس سے ثابت ھوتا ھے کہ اُسی ملکہ ' نبوت کا جو خدا نے انبیاء میں پیدا کیا ھے جبرئیل نام ھے۔ یہی مطلب قرآن کی بہت سی آیتوں سے پایا جاتا ھے۔ جیسے کہ سورۃ قیاسۃ میں فرمایا ھے کہ '' ان علینا جمعہ و قرآنہ' ' یعنی ھارا ذمہ ھے۔ وحی کو تیرے دل میں آکٹھا کر دینے اور اُس کے پڑھ دینے کا ۔ فاذا قراناہ فاتبع قرآنہ' پھر جب ھے اس کو پڑھ چکیں تو اُس پڑھنے کی پیروی کر ۔ ثم ان علینا بیانیہ' پھر ھارا ذمہ ھے اُس کا مطلب بتانا ۔ ان آیتوں سے ثابت ھوتا ھے کہ خدا اور پیغمبر میں کوئی واسطہ نہیں ھے خود خدا ھی پیغمبر کے دل میں وحی میں کوئی واسطہ نہیں ھے خود خدا ھی پیغمبر کے دل میں وحی کم اُسی فطری قوت نبوت کے ھیں جو خدا تعالیٰ نے مثل دیکر جمع کرتا ھے۔ وھی پڑھتا ھے۔ وھی مطلب بتاتا ھے اور یہ سب کام اُسی فطری قوت نبوت کے ھیں جو خدا تعالیٰ نے مثل دیکر قوائے انسانی کے انبیاء میں بمقتضائے ان کی فطرت کے پیدا کی ھے اور وھی قوت جبرئیل پیغامبر۔

کو ایک عہدہ مل گیا ہے جو ممکن تھا کہ ان میں سے بھی کسی کو مل جاتا اور کچھ فرق نہیں سمجھا اور اسی لیے اشاعرہ وما تریدیہ نے نبی اور است کی مثال سلطان و رعیت کی سمجھی ہے ۔ مگر میری سمجھ میں یہ مثال ٹھیک نہیں ہے ۔ نبی اور است کی مثال راعی و غنم کی سی ہے ۔ گو نبی و است انسانیت میں شریک ہیں ۔ جیسے کہ راعی و غنم حیوانیت میں ۔ مگر نبی و است میں فطرت نبوت کی ایسی ھی فصل ہے جیسی که راعی و غنم میں ناطقیت کی ۔

قرآن محید کا نجماً نجماً نازل ہونا بھی بڑی دلیل اس بات کی ہے کہ وہ ہمقتضائے آسی فطرت کے نازل ہوا ہے ۔ ہم ہمقتضائے فطرت انسانی یه بات دیکهتر هس که تمام ملکات انسانی کسی محرک یعنی کسی امر کے پیش آنے پر اپنا کام کرتے ہیں۔ اسی طرح ملکہ نبوت بھی جبھی اپنا کام کرتا ہے جب کہ کوئی امر پیش آتا ہے ھارے دل میں سینکڑوں مضمون ھوتے ھیں ۔ سینکڑوں نصیحتیں ہوتی ہیں ۔ اشعار یاد ہوتے ہیں ۔ دوستوں کی صورتیں اور سکانوں ، باغوں اور جنگلوں کی تصویریں دساغ میں سوجود ہوتی ہیں۔ مگر جب تک آن پر متوجه هونے کا کوئی سبب نه هو وه سب بے معلوم رہتی ہیں۔ یہی حال ملکہ ٔ نبوت کا ہے۔ نبی مع اپنے ملکہ ٔ نبوت کے سوجود ہوتا ہے کھاتا ہے ، بیتا ہے ، سوتا ہے ، جاگتا ھے ۔ دنیوی باتس جن کو نبوت سے کچھ تعلق نہیں اسی طرح پر کرتا ہے جس طرح کہ اور تمام انسان کرتے ہیں ۔ مگر جب کوئی ایسا امر پیش هوتا ہے جو آس ملکہ نبوت کی تحریک کا باعث هو آس وقت وه ملكه نبوت الناكام كرتا هے ـ اسى باريك دقيقه كى طرف خدا نے اشارہ کرنے کو اپنے نبی کی زبان سے یہ کہوایا کہ انا بشر مشلكم يتوحلي الى انميا اللهكم الله واحد اور

خود آنحضرت نے فرمایا که ۔ انما انیا بسر اذا امرتکم بسئی من امر دینکم فیخذوا به و اذا امرتکم بسیئی من رای فیانمیا انیا بسر ۔ (رواه مسلم) یعنی میں بھی تبو انسان هی هوں جب تم کو تمهارے دین کی کسی بات کا حکم دوں تو اس کو مان لو اور جب میں کوئی بات اپنی رائے سے کموں تبو بے شکمیں بھی انسان هوں ۔

نبوت ایک اسر فطری ھے

یہ بھی ایک دقیق مسئلہ ہے ہم نے جا بجا بیان کیا ہے کہ نبوت بطور ایک ایسے منصب کے نہیں ہے جسے کہ کوئی بادشاہ کسی کو کوئی منصب دے دیتا ہے بلکہ نبوت ایک فطری امر ہے اور جس کی فطرت میں خدا نے ملکۂ نبوت رکھا ہے وہی نبی ہوتا ہے اور اس بات کو ہم نہیں مانتے کہ سب انسان ایک سے ہوتا ہوتا ہے نبی اور پیغمبر موت ہیں سے جس کو خدا چاہتا ہے نبی اور پیغمبر کر دیتا ہے ۔

یه تحقیق کچه هاری پیدا کی هوئی نہیں ہے بلکه اس باب میں قدیم سے علماء کی دو رائیں هیں بعض علماء کی یه رائے ہے که سب انسان برابر هیں آن میں سے الله جس کو چاهتا ہے درجه نبوت دے دیتا ہے اور بعض علماء کی یه رائے ہے که نبی از روئے فطرت و خلقت کے نبی هوتا ہے۔ چناں چه اسی آیت کی تفسیر میں امام فخر الدین رازی نے تفسیر کبیر میں یه دونوں قول نقل کیے هیں مناسب معلوم هوتا ہے که هم بهی اس مقام پر آن دونوں قولوں کو نقل کر دیں وہ لکھتے هیں که و اعلم ان الناس اختلفوا فی هذه المسئلة فقال بعضهم النفوس والارواح متساویة فی تمام الماهیة فحصول النبوة والرسالة وقال الاخرون بل النفوس البشریة مختلفة بجواهر ها و قال الا خرون بل النفوس البشریة مختلفة بجواهر ها و ماهیا تها فبعضها خیرة ظاهرة من علایق الجسانیات

مشرقة بالانوار الهية مستعلية منورة و بعضها خسيسة كدرة محبة للجسمانيات فالنفس ما لم تكن من القسم الاول لم تصلح لقبول الوحى والرسالة ثم ان القسم الاول يقع الاختلاف فيه بالزيادة و النقصان والقوة والضعف اللي مراتب لانهاية لها فلا جرم كانت مراتب الرسل مختلفة فمنهم من حصلت له المعجزات القوية والتبع القليل و منهم من حصلت له معجزة واحدة او اثنتان و حصل له له تبع عنظم و سنهم سن كان الرفق غالبا عليه و منهم من كان التشديد غالبا عليه (تفسير كبير) یعنی یہ بات جاننی چاہیے کہ اس سشلہ سیں لوگوں نے اختلاف کیا ہے بعضوں نے کہا ہے کہ نفوس اور ارواح تمام ماہیت میں سب برابر ہیں پس نبوت اور رسالت کا ایک کو ملنا اور دوسرے کو نہ ملنا خدا کی طرف سے شرف دینا اور احسان کرنا اور بزرگی دینا ہے اور بعضوں نے کہا ہے کہ نہیں بلکہ نفوس بشری اپنے جوہر اور اپنی اور ماہیت میں مختلف ہیں ۔ بعضے ان میں سے برً گزیدہ اور علائق جسانیات سے پاک اور انوار الیمہ سے روشن اور بلند درجہ پر منور ہوتے ہیں ۔ اور بعضر آن میں سے خسیس اور گدلر جسانیات سے محبت کرنے والے ہوتے ہیں۔ پس نفس جب تک که قسم اول سے نہ ہو وہ وحی اور رسالت کے قبول کی صلاحیت نہیں رکھتا ۔ پھر قسم اول میں زیادتی اور کمی اور قوت اور ضعف کے آن درجوں تک جن کی کچھ انتہا نہیں ہے اختلاف واقع ہوتا ہے اور اسی وجہ سے رسولوں کے درجر مختلف ھوتے ھیں پھر آن میں سے بعضر ھیں جن کو معجزات قویہ حاصل ہوتے ہیں اور آن کے پیرو ہت تھوڑے ھوتے میں اور بعض آن میں سے وہ ہوتے ہیں جن کو ایک یا دو معجزے حاصل ہوتے ہیں اور ان کے پیرو بہت سے ہو جاتے

ھیں اور ان میں سے بعضوں پر نرمی غالب ھوتی ہے اور ان میں سے بعضوں پر تشدد غالب ھوتا ہے۔

كو اس تقرير مين ماهيت نفوس بشرى مين تفرقه كرنا شايد غلطی هو خصوصاً ان لوگوں کی رائے میں حو تمام نفوس حیوانی کی ماهیت کو متحد مانتر هی اور تفاوت مدارج کا اُس کی صورت نوعیہ پر قرار دیتر هیں جس سے وہ نفس سعلق هے تاهم حاصل اس تقریر کا جو امام صاحب نے لکھی ہے ہی ہے کہ انبیاء میں از روئے خلقت و پیدائش و فطرت کے ایبک ایسی چیز ہوتی ہے جس کے سبب سے وہ نبی ہوتے ہیں اس لیے خدا نے فرمایا که " الله اعلم حيث يجعل رسالة" غرض كه اس مطلب كو امام صاحب نے کسی تقریر سے بیان کیا ہو اور ہم نے کسی تقریر سے۔ مطلب دونوں کا متحد ہو جاتا ہے۔ اگر فرق رہتا ہے تو اس قدر رهتا ہے کہ ھارے نزدیک جو ملکۂ نہوت فطرت میں رکھا گیا ہے وہ اہنر وقت معین پدر اسی طرح ظہور کرتا ہے جس طرح درخت میں سے پھول پھل اپنر وقت میں اس کے قوی ھو جانے کے بعد پیدا ھوتے ھیں جو بعثت سے تعبیر کیا جاتا ہے اور امام صاحب کی تقریر کے مطابق با وصف فطرت کے موجود ہونے کے وہ فطرت رسالت دیے جانے کی محتاج رہتی ہے۔اسی سبب سے ہم تو كهتر هين كه النبي نبي في بطن اسه اور امام صاحب يون كهي كے كه يعض الانسان قابل للنسوة في بطن امه اسا ان يه تي اولا ـ

شا، ولی اللہ صاحب بھی تفہیات میں اسی رائے کے موید معلوم ہوتے ہیں انھوں نے صاف لکھ دیا ہے کہ یہ رائے کہ نبوت محض خدا کا فضل ہے قرون اولئی کی نہیں ہے چناں چہ شاہ صاحب کا قول یہ ہے کہ :

حقيقة النبوة أن يريدالله بعباده أصلاحا فيتدللي اليهم بوجود يشبه الوجود العرضي قام برجل زكي الفطرة تام الاخلاق نتهمه سنه اللطيفة الانسانية لا يعال ذهب علياء اهل السنة اللي ان النبوة محنض فضل سن الله تعاللي من غبر خصوصية من العبد وانت تشبت لهم خصوصية في استعدادهم لانا نقول هذا قول نشاء بعد القرون المشهود لها بالخمر فأن مدلول الكتاب والسندة وما اجمع عاليه السلف هو ان الخصوصية التي ترجع اللي كشرة الهال وصاحبة الوجه وغس ذالك من صفات التي يفتخربها العامة لا دخيل لها في الندوة وكان الكفار يقولون اماكان الله محدر رحلا لرسالة سوى يتم الى طالب لولا انزل القرآن على رجل سن القريتين عظيم فكشف الله تعاللي الشبه واشبع في الرد واسا الصفات الباطنية التي يتكلم فيها فلا شبهة أن الانبياء اتم الخلق فيها واقواهم اخلاقا و واذكاهم نفسا من انكر ذالك لا يستحق ان يتكم به لعبده عن سرالا نبياء واسا الاترى ان هرقل كيف قال وكذالك الانسياء تعث في نسب قومها و بالجملة فلا لرسالة ركنان ركن قابلية من الرسول و ركن تدل و تدبير من المرسل (تفهيات) یعنی ۔ نبوت کی یه حقیقت ہے که اللہ تعالیٰی اپنے بندوں کی اصلاح کا ارادہ کرے اور ان کی طرف ایک خاص توجہ اور عنایت مائل کرے (تدلی کے لغوی معنی هیں ڈول کا کنوئیں میں لٹکانا) به سبب وجود کے جو قائم ہو ایک انسان کامل اور پاک طینت عمده خصلت میں جس کا لطیفه انسانی بیدار اور خبر دار هو ـ

يه شبه نه كيا جاوے كه سب علمائے اسلاميه كا يه قول هے

(که نبوت محض خدا کا فضل هے بنده کی خصوصیت کو اس مس کچھ دخل نہیں ہے اور اس تمہاری تقریر سے ان کے لیر ایک خصوصیت استعداد کی ثابت هوتی هے اس لیر که هم یه کمتر هیں کہ یہ قول ہت پیچھر بعد انقضائے قرون مشہور لہا بالخبر کے پیدا ہوا ہے کہ کتاب اللہ اور حدیث اور اجماع سلف سے بہ ثابت ہے کہ خصوصیت کثرہ مال اور خوبی چہرہ اور ایسی ہی اور صفات جن کو عام لوگ موجب فخر جانتر هیں) نبوت میں کچھ دخل نہیں ہے کفاریہ کہا کرتے تھے کہ خدا کو اس ابو طالب کے یتیم کے سوا کوئی آدسی رسالت کے لیے نہ ملا کیوں نہ اتارہ گیا یہ قرآن آن دونوں شہروں کے کسی بڑے آدسی پر خدا تعالیٰ نے اس شبہ کو کھول دیا اور صاف طرح سے ان کے قول کو رد کر دیا اور صفات باطنیه جن میں هم کلام درتے هیں وه بلا شبه انبیا میں ہت زیادہ تھیں انبیا سب خوبیوں کے پوری طرح سے جامع تھے ۔ آن کے اخلاق بہت اچھے تھے وہ نہایت پاک ذات تھے جو اس کا منکر ہے وہ کسی طرح اس لائق نہیں ہے کہ اس سے کلام کیا جاوے کہ وہ انبیا کے خصائل اور خوبیوں سے بالکل دور ہے۔ کیا نہیں معلوم ہے کہ ہرقل نے کہا تھا کہ انبیاء ایسر ہی ہوتے ھیں اپنی قوم کے عمدہ خاندان س سے بھیجر جاتے ھیں۔ حاصل کلام یه هے کر رسالت کے دو رکن هیں ایک رکن استعداد اور قابلیت نبی کا اور دوسرا رکن توجه اور عنایت اور تدبیر اللهی کا۔

معجزه كي حقيقت

هم اس مضمون میں معجزہ کی حقیقت کے متعلق اپنے خیالات کا کچھ اطہار کرنا چاھتے ھیں مگر جب تک لفظ معجزہ کی تعریف اور مراد متعین نه ھو جاوے اُس وقت تک اس پر بحث نہیں ھو سکتی ۔ علامه سید شریف نے شرح مواقف میں لکھا ھے که "المعجزة عدمدنا ما یقصدبه تصدیق مدعی الرسالة و ان لم یکن خارقاً للعادة (شرح مواقف) یعنی ھارے نزدیک معجزہ وہ چیز هے جس سے مدعے رسالت کی تصدیق ھو جاوے اور گو وہ امر بطور خرق عادت کے نبه ھو ۔'' اس کا نتیجہ یہ ھے کہ مثلاً کسی شخص نے مدعی رسالت سے کہا کہ اس وقت مینه برس جاوے تو میں تم کو نبی برحق مان لوں گا چناں چہ بادل آیا اور مینه برسنے لگا ۔ سید شریف کے قول کے مطابق یہ مینه برسنا معجزہ ھوا ۔ مگر اس پر کوئی دلیل نہیں ھے کہ اس طرح ہر متصل یا متعاقب واقع ھونا دو قدرتی واقعوں کا سوائے سچے نبی کے اور متعلقب متعاقب واقع ھونا دو قدرتی واقعوں کا سوائے سچے نبی کے اور

علاوہ اس کے عام علمائے اسلام نے معجزہ کی تعریف میں اس کا خارق عادت ہونا ضروری سمجھا ہے اور خود سید شریف کو بھی جب کہ یہ فرماتے ہیں کہ '' گو وہ خارق عادت نہ ہو'' تو وہ بھی معجزات کا خارق عادات ہونا تسلیم کرتے ہیں صرف خارق عادت ہونا لازمی نہیں قرار دیتر ۔

عادت سے مراد یہ ہے کہ ایک کام ہمیشہ ایک طرح ہوتا رہتا ہو اور اس کے اسباب بھی یکساں طریقہ پر جمع ہوتے رہتے هوں اور جب وہ اسباب جمع هو جاویں تو بلا تفاوت آس امر کا ظہور هو جاوے ۔

خرق عادات کے دو معنی هو سکتے هیں: اول یه که جو امر همیشه بطور عادت مستمرہ کے یکساں طور پر هوتا رهتا هے اور بطور عادت مالوفه کے هو گیا هے اس کے برخلاف کوئی امی وقوع میں نه آوے ۔ مثلآ آسان پر سے خون کے مشابه کوئی شے برسے یا پتھر کا ٹکڑا گرے گو که ایسا هونے کے لیے کوئی سبب امور طبعی میں سے هو ۔

دوسرے یہ کہ سپر نیچرل ہو یعنی خارج از قانون قدرت یعنی اللہ تعالیٰ نے جو قاعدہ اور قانون وقوع واقعات اور ظہور حوادث کا مقرر کیا ہے اور عادت اللہ اسی کے مطابق جاری ہے اس کے برخلاف وقوع میں آوے ۔

پہلے معنوں پر بطور اصطلاح یا مجاز کے خرق عادت کا اطلاق نہیں کیا جانا ممکن ہے مگر حقیقة اس پر خرق عادت کا اطلاق نہیں ہو سکتا اس لیے اس کا وقوع بھی اس کے اسباب کے اجتاع پر منحصر ہے اور عادت میں داخل ہے نه خرق عادت میں کیوں که جب اس کے اسباب جمع ہو جاویں گے تو یکساں طریقه پر اس کا وقوع ہو ۔

مثلاً عادت یہ ہے کہ جب شیشہ ایک بلندی سے جس سے اس کو پورا صدمہ پہنچے ہاتھ سے چھوٹ ہڑتا ہے تو ٹوٹ جاتا ہے ایک دفعہ ہارے ہاتھ سے شیشہ چھوٹ پڑا اور نہ ٹوٹا ۔ تو ظاہر میں خرق عادت نہیں ہے اس لیے میں خرق عادت نہیں ہے اس لیے کہ اس کے گرنے پر تو وہ اسباب جمع نہ تھے ۔ جن سے اس کو ٹوٹنے کے لائق صدمہ پہنچتا یا ایسے اسباب موجود تھے جنھوں نے اس کو اس قدر صدمہ پہنچنے سے باز رکھا ۔ پس اس کا نہ ٹوٹنا

در حقیقت موافق عادت کے ہے نه بطور خرق عادت کے ۔ کیوں که جب اس طرح کے اسباب جمع هو جاویں گے تو کوئی شیشه بھی هاتھ سے چھوٹ کر گرنے سے نہیں ٹوٹنر کا ۔

یا مثلاً ایک شخص نے ایک شخص کو آنکھ بھر کے دیکھا اور وہ بہوش ہوگیا یا اُس نے بہرے کے کانوں میں انگیاں ڈال دیں یا اندھے کی آنکھوں پر ھاتھ پھیرا اور وہ بہرا سننے اور وہ اندھا دیکھنے لگا۔ پس اگر اس کا سبب کوئی ایسی قوت ہے جو انسانوں میں موجود ہے اور اسی قوت کی قوت سے اُس نے یہ کام کیا ہے تو اُس پر خرق عادت کا اطلاق نہیں ہو سکتا کیوں کہ جو انسان اپنی قوت کو کام میں لانے کے لائق کر لے گا وہ بھی ویسا ھی کر دے گا۔ پس یہ بات حقیقتاً کچھ خرق عادت نہ ہوئی بلکہ عین عادت ہوئی۔

علاوہ اس کے اگر ہم مجازاً ایسے واقعات پر خرق عادت کا اطلاق بھی کریں تو وہ معجزہ کی تعریف میں داخل نہیں ہو سکتا کیوں کہ معجزے یا کرامات کو انبہاء اور اولیاء کے ساتھ مخصوص ہونا لازم ہو ًہ ۔ مگر جب آن واقعات کا وقوع اجتاع اسباب پر منحصر ٹھیرا تو اس کی تخصیص شخص دون شخص باقی نہیں رہتی ۔

واقعات اور حادثات ارضی و ساوی موافق آس قانون قدرت کے جو خدا تعالیٰی نے آن میں رکھا ھے یکے بعد دیگرے واقع ھوتے رھتے ھیں ۔ پس کسی امر کے بعد کسی واقعہ یا حادثه ارضی و ساوی کا ظاھر ھونا کسی معجزہ میں شامل نہیں ھو سکتا کیوں کہ آس کا ظہور آسی عادت پر ھوتا ھے جو خدا تعالیٰ نے قانون قدرت کے موجب آس میں رکھی ھے ۔

بعض عالوں نے کہا ہے کہ جو معجزات اور کرامتیں انبیاء اور اولیاء سے ظہور میں آتی ہیں وہ بغیر موجود ہونے اسباب کے

ظہور میں نہیں آتیں مگر خدا تعالی به سبب اپنی مہربانی کے جو آن بزرگوں پر رکھتا ہے فی الفور اس کے ظہور کے اسباب مہیا کر دیتا ہے کیوں که وہ اسباب مہیا کرنے پر قادر ہے کے ما قبل ' اذا اراد شیئا ہیئا اسبابہ ' بعضوں کا یہ عقیدہ ہے کہ خدا تعالی کو کسی چیز کے پیدا کرنے کے لیے اُس کے اسباب کے مہیا کرنے کی ضرورت ہی نہیں ہے ۔ '' ان اللہ عالی کر شئی مہیا کرنے کی ضرورت ہی نہیں ہے ۔ '' ان اللہ عالی کر شئی قدیر ' اذا اراد شیئا ان یقول له کن فیکون ' ہاں یه جو سب سچ ہے مگر وہ اِن سب چیزوں کو اُسی طرح پر کرتا ہے جو اُس نے قانون قدرت کا قاعدہ بنایا ہے اور اِن الفاظ سے یه ثابت نہیں ہوتا کہ وہ اِس قانون قدرت کے قاعدہ کے برخلاف کرتا ہے۔

شاه ولى الله صاحب حو حجة الله البالغه مس به تحت باب الابداء و الخلق و التدبير اول تو اس بات کے قائل ہوئے ہيں که خدا نے جو خاصیت جس چیز میں رکھی ہے اس کو نہیں بدلتا حیث قال ـ و جرت عاة الله تعالى ان لا تنفك الخواص عما جعلت خواص لیھا ۔ مگر آس کے بعد کہتر ھی کہ اللہ تعالیٰ نے به لحاظ تــدبیر عالم کے اور شر کے رفع ہونے کے آن قوی یعنی خاصیتوں میں قبض و بسط و احاطه و المهام سے تصرف کرنا بندوں پر مقتضائے رحمت کا قرار دیا ہے۔ بعض کی مثال اُنھوں نے یہ دی ھے کہ جب دحال آوے کا تو ایک مسلمان کو قتل کرنا چاہے گا اور باوحود آلہ قتل کے درست ہونے کے وہ قتل نہ ھو سکر گا۔ بسط کی مثال آنھوں نے یہ دی ھے کہ زمین پر یاؤں مارنے سے خدا نے حضرت ایوب کے لیر ایک چشمہ پیدا کر دیا جس میں نہانے سے آن کے بدن میں جو بیاری تھی جاتی رھی !!! احاله کی مثال یه دی هے که خدا نے حضرت ابراهم پر آگ کو ٹھنڈی ہوا کر دیا اور الہام کی مثال میں کشتی کے توڑنے اور الڑکے کے مار ڈالنے اور دیوار بنانے کا قصہ لکھا ہے!!

مگر یہ استدلال صحیح نہیں ہے اول تو اس کے لیے اس کے ثبوت پر کوئی دلیل نہیں ہے۔ علاوہ اس کے ان میں سے ایک مثال تو ابھی واقع ھی نہیں ھوئی باقی مثالوں کی نسبت ثبوت باقی ہے کہ وہ اسی طرح واقع ھوئی تھیں جس طرح کہ مثال میں پیش ھوئی ھیں اور اگر بالفرض اسی طرح واقع ھوئی تھیں تو آن میں بہ تحقیق باقی ہے کہ آیا وہ اس استدلال کی مثالیں ھو سکتی ھیں با آں کہ وہ بلا کسی بسط کے اور بغیر کسی المام کے برک مطابق عام قانون قدرت کے واقع ھوئی تھیں ۔

پس جب تک که خرق عادت کے دوسرے معنلی یعنی خلافت قانون قدرت کے نه لیے جاویں آس وقت تک کسی واقع کا وقوع بطور معجزہ و کرامت کے تسلیم نہیں ہو سکتا۔ مگر ہم اس کے انکار پر مجبور ہیں کیوں که خدا تعاللی نے ہم کو صاف صاف بتلایا ہے که جو قانون قدرت آس نے بنا دیا ہے آس میں کسی طرح تبدیل نہیں ہو سکتی نه خدا آس میں کبھی تبدیل کرتا ہے۔ اور نه تبدیل کرے کا ۔ خدا کا بنایا ہوا قانون قدرت اس کا عملی وعدہ ہے که اسی طرح ہوا کرے گا ۔ پھر اگر اس کے برخلاف ہو وعدہ ہے که اسی طرح ہوا کرے گا ۔ پھر اگر اس کے برخلاف ہو تو خلف وعدہ اور کذب خدا کی ذات پاک پر لازم آتا ہے جس سے اس کی ذات پاک و بری ہے ۔

خدا نے فرمایا ہے کہ '' انا کل شی' خلقناہ بقدر'' (سورہ قمر آیت ہم) یعنی هم نے هر چیز کو ایک انداز پر پیدا کیا ہے اور فرمایا ہے '' وکل شئی عندہ' بمقدار' (سورۂ رعد آیت ہ) یعنی هر چیز خدا کے نزدیک ایک اندازہ پر ہے ۔ تفسیر کبیر میں امام فخر الدین رازی نے لکھا ہے کہ ''فمعناہ بقدر و حد لا یجادز ولا یہ نقص عنہ ''' یعنی اس کے معنی یہ هیں کہ ایک اندازہ

اور ایک حد پر که نه آس سے بڑھتی ہے نه کم هوتی ہے اور فرمایا ہے و خطق کل شئی فقدرہ تقدیرا (سورہ فرقان آیت ،) یعنی اللہ نے هر ایک چیز کو پیدا کیا پھر مقرر کیا اس کا اندازہ ، اور یہی اندازہ قانون قدرت ہے۔

دوسری حگه خدا نے فرمایا ہے لا تمدیل لخلق الله (سورہ روم آیت ۲٫) یعنی اللہ کی پیدا کی هوئی چیزوں کے لیے بدل حانا نهس هے اور ایک حگه فرمایا که '' فیلن تحد لسند الله تحديلا ولن تحد لسنة الله تحدويلاً (سوره ملائكه آيت رم و جم) یعنی تو هرگز نهس پانے کا اللہ کی سنت میں ادل بدل ھونا اور نہ پاوے گا تو اللہ کی سنت میں آلٹ جانا اور اسی طرح فرمايا هي ''سنت الله التي قد خلمت سن قبل ولن تجد لسنة الله تــمـديــ لا '' ، (سورة فتح آيت ٣٠) اور ايک جگه فرمايا ''قــل كل يعدمل على شاكلة " (سوره اسرى آيت ٨٦) اى على طريقة التي جبل عليها ـ يعني هر ايك اسي طريقه پر عمل كرتا ہے جو آس کی جبلت میں بنایا گیا ہے پس کسی کا مقدور نہیں ہے کہ حو قانون قدرت نے بنایا ہے اس کے برخلاف کوئی کر سکر ۔ یہ کہا جاتا ہے کہ خدا جو ہر چیز پر قادر ہے اور جس نے خود قانون قدرت بنایا ہے وہ کیوں نہیں اگر چاہے تو اس کے برخلاف کر سکتا ۔ بلاشبہ خدا قادر مطلق ہے اگر وہ چاہے تو تمام دنیا کو اور تمام قانون قدرت کو معدوم کرکے اور ھی دنیا اور ھی قانون قدرت پیدا کر دے سگر جو قانون قدرت که وہ بنا چکا ہے ان کی صداقت کے لیر ضرور ہے کہ ان میں تبدیل نہ ہو یا ان میں تبدیل نه کرمے اور اس سے اس کی قدرت کامله میں کچھ نقصان نہیں آتا۔ جیسر کہ جو وعدہ خدا نے کبا ھے اُس کے برخلاف نہیں کرتا اور اس کے سبب سے اس کی قدرت کاملہ میں نقصان لازم نهس آتا ـ

هاں یہ بات سچ ہے کہ تمام قوانین قدرت هم کو معلوم نہیں اور جو معلوم هیں وہ نہایت قلیل هیں اور آن کا علم بھی پورا نہیں ہے بلکہ ناقص ہے ۔ اس کا نتیجہ یہ ہے کہ جب کوئی عجیب واقعہ هو اور آس کے وقوع کا کافی ثبوت بھی موجود هو اور اس کا وقوع معلومہ قانون قدرت کے مطابق بھی نه هوسکتا هو اور یہ بھی تسلیم کر لیا جاوے کہ بغیر دھوکا و فریب کے فی الواقع واقع هوا ہے تو یہ تسلیم کرنا پڑے کا کہ بلاشبہ اس کے وقوع کے لیے هوا ہے تو یہ تسلیم کرنا پڑے کا کہ بلاشبہ اس کے وقوع کے لیے کوئی قانون قدرت ہے مگر اس کا علم هم کو نہیں کیوں کہ یہ ثابت هوچکا ہے کہ خلاف قانون قدرت کوئی امر نہیں هوتا اور جب وہ کسی قانون قدرت کے مطابق واقع هوا ہے تو وہ معجزہ نہیں کیوں کہ هر شخص جس کو وہ قانون معلوم هو گیا هو گا اس کو کہ سکر سکر گا۔

یه کہنا که پیغمبر یا کسی بزرگ کی دعا یا آن کا ارادہ جن کو ایک خاص راہ خدا کے ساتھ ہے اس کے وقوع کے لیے تانون قدرت ہے تسلیم نہیں ہو سکنے کا اس لیے کہ اس کے ثبوت کے لیے یا تو یه لازم ہوگا کہ جب وہ بزرگ کسی امر کے لیے دعا یا ارادہ کریں تو ہمیشہ واقع ہو جایا کرے اور کم سے کم یه که وهی خاص امر جو واقع ہوا ہے آس کے وقوع اور ان کی دعا میں لزوم ہو اور اگر یه نہیں ہے (جیسے که معتقدین معجزہ و کرامات بھی اس کے قائل نہیں ہیں) تو وہ قانون قدرت بھی نہیں ہے ۔

شاہ ولی اللہ صاحب نے حجہ اللہ البالغہ میں تحت باب حقیقة النبوۃ و خواصہ الکھا ہے کہ معجزات اور استجابت دعا اصل نبوت سے خارج ہے مگر آکثر اس کو لازم ہے (جب آکثر کا لفظ استعال کیا ہے تو لزوم کے کچھ معنیٰی نہیں رھتے) بعد اس کے وہ فرماتے ھیں کہ بڑے بڑے معجزوں کے ظاہر ھونے کے تین سبب ھوتے ھیں۔

اول یه که وه شخص جس سے معجزه هوا مفہمین میں سے ہے کیوں کہ آس کا ایسا ہونا باعث ہوتا ہے بعض حوادث کے انکشاف کا اور سبب هوتا ہے ۔ استجابته دعا اور ظہور برکات کا ۔

دوم یہ کہ ۱۸ء اعلٰی اس کے حکم بجا لانے کو موجود ہو اور آس کو المهام اور احالات اور تقریبات ہوتے ہوں جو پہلے نہ ہوتے تھے ۔ پس وہ اپنے احباب کی مدد کرتا ہے اور دشمنوں کو مخدول کرتا ہے اور خدا کا حکم ظاہر ہرتا ہے اگرچہ کافر اس کو نا پسند کرتے ہوں ۔

تیسرے یہ کہ دنیا سیں جو واقعات بوجہ اپنے خارجی اسباب کے ہوتے ہیں اور آسان و زمین کے بیچ میں جو حوادث ظمہور پاتے ہیں خدا تعالیٰی آنھی کو کسی وجہ سے آس کا معجزہ قرار دے دے۔ (انتہائی)

تعریف معجزہ و کرامات میں جب لفظ '' خرق عادت '' کو جس کے معنی بجز خلاف قانون قدرت کے اور نہیں ہو سکتے جیسے که ہم نے اوپر تشریج کی ہے محفوظ رکھا جاوے تو یہ تینوں صورتیں جو شاہ صاحب نے بیان فرمائی ہیں داخل معجزہ و کرامات نہیں ہو سکتیں ۔

پہلی صورت میں شاہ صاحب نے مفہمین سے کسی امر کا ظاہر ہونا معجزہ یا کرامت قرار دیا ہے۔ مفہمین کے معنی انہوں نے یہ لکھے ہیں کہ ان کا ملکہ نہایت اعلیٰ ہو ممکن ہو کہ وہ ایک بہت بڑے نظام مطلوبہ کے قائم کرنے کو سچے دعوی سے برانگیختہ ہوں اور آن پر ملاء اعلیٰ سے علوم اور احوال الہیہ کی پھوار پڑتی ہو۔ معتدل المزاج ہوں آن کی شکل و صورت درست اور خلق اچھا ہو ان کی رائے میں اضطراب و عدم استقلالی نہ ہو نہ آن میں بے انتہا کی ذکاوت ہو جس سے کلی سے جزئی تک اور مغز سے

پوست تک رسته نه هو اور نه ایسے سخت غبی هوں که جزئی کلی تک اور پوست سے مغز تک نه پہنچ سکیں سب سے زیادہ سنت کے پابند هوں نہایت عابد هوں معاملات میں لوگوں کے ساتھ ٹھیک هوں عام بھلائی کی تدبیروں کو دوست رکھتے هوں نفع عام میں شوق رکھتے هوں بلا سبب کسی کو نه ستاویں همیشه عالم غیب کی جانب متوجه رهیں آس کا اثر آن کے کلام سے آن کے منه سے ظاهر هوتا هو اور ان کی تمام شان سے معلوم هوتا هو که موید من الغیب هیں آن کو ادنلی ریاضت قرب و سکینه کی وہ باتیں کھل جاتی هیں جو اوروں کو نہیں کھلتیں پس ایسا شخص باعث هوتا هے بعض حوادث کے انکشاف کا اور سبب هوتا هے استجابت دعا اور ظہور برکات کا۔

برکت کے معنیٰی شاہ صاحب نے یہ بتلائے ہیں کہ جس شے پر برکت دی جاوے یا تو اس کا نفع زیادہ ہو جاوے مثلاً تھوڑی سی فوج دشمن کے خیال میں بہت سی معلوم ہونے لگے اور وہ بھاگ جاوے یا تھوڑی غذا میں طبیعت تصرف کرکے ایسا خلط صالح پیدا کرے کہ اس سے دو چند غذا کھانے کی برابر ہو یا خود وہ شے ہی بہ سبب منقلب ہو جانے ، مادہ ہوائی کے آس شے کے زیادہ ہو جاوے ۔

اس تمام بیان میں شاہ صاحب مفہمین سے آس امر کے ظہور کو قانون قدرت کے ماتحت کرنا چاہتے ہیں پس جب کہ وہ قانون قدرت کے ماتحت ہے اور متخیلہ تھوڑی فوج کو بہت تصور کر سکتا ہے اور طبیعت قلیل غذا سے کثیر غذا کا فائدہ دے سکتی ہے اور مادہ ہوائی با فرض کوئی شے بن جا سکتا ہے تو وہ نفس انسانی کے خاصوں میں سے ایک خاصہ ہے شخص مردون شخص پر موقوف نہیں ہے اور اس لیے کسی کا معجزہ نہیں ہو سکتا ۔

دوسری صورت جو شاہ صاحب نے لکھی ہے وہ المهامات اور

احالات اور تقریبات کی قسم سے ہے اور جب که یه نہیں بیان کیا که وہ المهامات و احالات و تقریبات بمقتضائے فطرت انسانی نہیں هیں تو انهوں نے آن سب کو داخل فطرت انسانی سمجھا ہے اور جب وہ فطرت انسانی میں داخل هیں تو قانون قدرت کے ماتحت هیں اور اس لیے معجزہ قرار نہیں پا سکتے ۔

تیسری صورت تو نہایت ضعیف ہے اُس کا نتیجہ یہ ہے کہ دو امروں کا جن کا وقوع موافق قانون قدرت کے ہوتا ہے ایک دوسرے کے متصل واقع ہونا معجزہ ہے ۔ مثلاً ایک شخص مر گیا اور اسی کے قریب سورج گہن لگا یا ایک پیغمبرکو لوگوں نے ستایا اور اس کے بعد کوئی واقعہ مثل طوفان یا وبا کے واقع ہوا پس پچھلے واتعه كا اقتران بهلر واقعه كے ساتھ معجزہ ہے حالاںكه يه تمام اسور وہ ھیں جو قانون قدرت کے موافق واقع ھوتے رھتر ھیں اور ان کا اقتران کسی واقعہ کے ساتھ صرف اتفاق ہے اور وہ بھی مطابق قانون قدرت کے پس بموجب اُس اصول کے جس کی بناء پر ہم نے معجزہ و کراست سے انکار کیا ہے ۔ اس اصول کے مطابق شاہ ولی اللہ صاحب بھی معجزہ و کرامت کے منکر ہیں شاہ صاحب نے اس سے بھی زیاد، وضاحت سے ایک جگہ تفہیات میں تمام معجزات کو اسباب پر مبنی کیا ھے اور جب وہ اسباب مبنی ھیں تو تا بع قانون قدرت ھی اور جب تابع قانون قدرت ه می تو معجزه سی اس لیر كما جا سكتا هي كه در اصل شاه صاحب به ي هارك اصول کے موافق منکرین معجزات سے هس انھوں نے تفہیات میں لکھا ھے كه "ان سواطن نفس الام متفاوتة سنهما سوطن الاسباب و فيه العلة والمعلول والسبب والمسبب فحسب ومن المتحقق عندنا انه لم يترك الاسباب قط ولن يتركب ولن تجد لسنة الله تبديه انما المعجزات

والکرامات اصور اسبابیة غلب علیه السبوع فیا ینت سائسر الاسبابیات (تفهیات) " یعنی بے شک مقامات نفس الام کے متفاوت هیں ان میں سے مقام اسباب هے اور اس مقام میں فقط علت و معلول کا سلمله هے اور صرف سبب اور مسبب کا اور هارے نزدیک یه بات محقق هے که اسباب کبهی نہیں چهوٹتے اور نه چهوٹیں گے اور نه کبهی تو پاوے گا الله کی سنت میں ادل بدل هونا ۔ اس کے سوا اور کوئی بات نہیں هے که معجزے اور کرامتیں امور اسبابیه هیں (یعنی اسباب پر سبنی هیں) مکمل هونا آن پر غالب هو گیا هے اس لیے تمام اور اسبابیات سے جدا هو گئے هیں ۔

غرض که هم نے معجزہ و کراست کے مفہوم میں اس امر کو داخل کیا ہے کہ اس کا وقوع خلاف قانون قدرت ہو اور اسی اصول پر معجزہ و کراست سے انکار کیا ہے ۔ مشرکین عرب بھی اسی قسم کے معجزے آنخضرت صلی اللہ علیه وسلم سے طلب کرتے تھے جن سے جا بجا قرآن مجید میں انکار ہوا ہے لیکن اگر وقوع خلاف قانون قدرت کو مفہوم معجزہ سے خارج کر دیا جاوے اور امورات اتفاقیه یا نادر الوقوع پر جو قانون قدرت کے مطابق واقع ہوتے ہیں معجزہ کا اطلاق کیا جاوے تو ایسی حالت میں صرف اصطلاع قرار دینے کا اختلاف ہوگا اور جو اصطلاع ہم نے قرار دی ہے اس کے مطابق اس پر معجزہ و کراست کا اطلاق نه ہوگا۔

تمام فرق اسلامیه معجزات کو حق بیان کرتے هیں اور سوائے معتزلیوں اور استاد ابو اسحاق اسفرانی کے جو اهل سنت والجاعت میں سے هیں تمام فرقے کرامات اولیاء کے بھی قائل هیں اور شیعه صرف دوازدہ اسام علیہم السلام میں حصر درامت کرتے هیں معتزلے اس وجه سے کرامات کے منکر هیں که آگر اولیاء سے بھی کرامتیں هوں تو آس میں اور معجزہ میں کچھ تمیز باقی نہیں رهتی اور پھر معجزہ ثبوت میں کچھ تمیز باقی نہیں رهتی اور پھر معجزہ ثبوت

نبوت کی دلیل نہیں ھو سکتا ۔ لیکن محقیقین علماء معجزوں کا بیان اس طرح پر کرتے ھیں کہ گویا آن کا وقوع قانون قدرت کے مطابق ھوا ھے پس اگر میرا یہ خیال صحیح ھو تو میں کہہ سکتا ھوں کہ تمام علمائے فرق اسلامیہ اس مسئلہ میں میرے ساتھ متفق ھیں اور صرف اصطلاع کا فرق ھے اور جس اصطلاع مقررہ کے ھم نے معجزات و کرامات کا انکار کیا ھے وہ سب بھی اس کے منکر ھیں اور اگر علمائے متقدمین اس بات کے مقر ھوں کہ معجزہ و کرامت کا وقوع علمائے متقدمین اس بات کے مقر ھوں کہ معجزہ و کرامت کا وقوع خلاف قانون قدرت بھی ھو سکتا ھے خلاف قانون قدرت بھی ھو سکتا ھے تو بلا شبہ وہ ھم سے اور ھم آن سے بالکل مختلف ھیں۔

حکماء و فلاسفہ نے معجزات یا کرامات کا انکار کسی وجہ سے کیا هو مگر هارا انکار صرف اس بناء پر نہیں ہے که وہ مخالف عقل کے هیں اور اس لیے ان سے انکار کرنا ضرور ہے بلکہ هارا انکار اس اس بناء ہر ہے کہ قرآن محید سے معجزات و كرامات يعنى ظهور اموركا بطور خرق عادت يعنى خلاف فطرت یا خلاف حبلت یا خلاف خلتت یا خلاف قدر التی قدرها الله کے امتناع پایا جاتا ہے جس کو هم مختصر لفظوں میں یوں تعبیر کرتے هیں که کوئی امر خلاف قانون قدرت واقع نہیں هوتا اور اس لیر معجزات و کرامات سے جب کہ ان کے معنوں میں غیر مقید ھونا قانون قدرت کا مراد لیا جاوے تو انکار کرتے ھیں اور اگر ان کے مفہوم میں یہ بھی داخل کیا جاوے کہ وہ مطابق قانون قدرت کے واقع ہوتے ہیں تو صرف نزاع لفظی باقی رہ جاتی ہے کیوںکہ جو امر کہ واقع ہوا اور جس شخص کے ہاتھ سے واقع ہوا اس کو ہم دونوں تسلیم کرتے ہیں مگر وہ اس کا سعجزہ یا کراست نام رکھتے هی هم اس کا یه نام نهی رکهتر ـ

اس اختلاف کا نتیجه تشریج سندرجه ذیل سے بخوبی واضح هؤد ـ

ایک عجیب امر جو عام طور پر نہیں ہوا کرتا کسی پیغمبر یا ولی سے منسوب ہوا یا کسی پیغمبر کے زمانے میں ہونا بیان ہوا۔ تو اول ہم اس کے فی الحقیقت واقع ہونے کا ثبوت تلاش کریں گے اور غالباً معتقدین معجزہ و کرامت بھی اس میں مختلف نہ ہوں گے ہاں شاید انجام کو اس بات میں اختلاف ہو کہ ان کے نزدیک اس کے شاید انجام کو اور ہارے نزدیک نہ ہو لیکن بغرض تسلیم وقوع کا کافی ثبوت کے ہم دونوں اس کے وقوع میں متفق ہوں گے۔

اس کے بعد ہم غور کریں گے کہ اسکا وقوع آیا کسی قانون قدرت کے مطابق ہوا ہے جو ہم کو اب تک معلوم ہیں اگر اس کا وقوع کسی معلومہ قانون قدرت کے مطابق ہم کو معلوم ہوا تو ہم اس کو اس کی طرف منسوب کریں گے ۔ معتقدین معجزہ کرامت امر مذکورہ پر غور و فکر کیے بغیر اس کو معجزہ یا کرامت قرار دیں گے ۔

اور اگر کوئی قانون قدرت اس کے وقوع یا ظہور کا هم کو معلوم نه هو تو جو که هم کو قرآن مجید نے یقین دلایا ہے که تمام امور موافق قانون قدرت کے واقع هوتے هیں هم کہیں گے که ضرور اس کے لیے بھی کوئی قانون قدرت ہے جو هم کو معلوم نہیں ہے اور معتقدین معجزہ و کرامات بغیر مذکورہ بالا خیال کے اس کو معجزہ یا کرامت قرار دیں گے اور اس صورت میں صرف نزاع لفظی یا اصطلاحی یا عقل و بے عقلی باقی رہ جاتی ہے ۔

هاری سمجھ دیں کسی شخص میں ،عجزے یا کراست کے ہونے کا یتین کرنا ذات باری کی توحید فی الصفات پر ایمان کو ناقص اور نا مکمل کر دینا ہے اور اس کا ثبوت پیر پرست و گور پرست لوگوں کے حالات سے جو اس وقت بھی موجود ہیں اور صرف معجزہ و کراست کے خیال نے ان کو پیر پرسنی و گور پرستی کی رغبت دلائی

ه اور خدائ قادر مطلق کے سوا دوسرے کی طرف ان کو رجوع کیا ھے اور منتیں ماننا اور نذر و نیاز چڑھانا اور ان کے نام کے نشانات بنانا اور جانوروں کو بھینٹ دینا سکھایا ھے بخوبی حاصل ھے۔
اسی وجه سے ھارے سچے ھادی مجد رسول الله صلی الله علیه وسلم نے اور ھارے سچے خدا وحدہ کلا شریک نے صاف صاف معجزات کی نفی کر دی تاکہ توحید کامل بندوں کو حاصل ھو اور بندے خدا پر اس طرح یقین لاویں که لا الله الله هـو واحد فی ذاته لا شریک له لا الله الله هـو واحد فی خاته لا شہیمه ولا شریک له لا الله الله هـو المسحق للعبادت شہیمه ولا شریک له کو الله الا الله هـو المسحق للعبادت تعالیٰی لحبیمیه مجد رسول الله الیوم اکملت لکم دینکم تعالیٰی لحبیمیه مجد رسول الله الیوم اکملت لکم دینکم و الحمد الله الذی و هـنا اکمن و رضیت لکم الاسلام دینا و الحمد الله الذی و هـب لی هـذا الایمان ایماناً کاملا و الحمد الله الذی و هـب لی هـذا الایمان ایماناً کاملا و الحمد الله الـدی می ربی والصـلوۃ عـلی مجد و آلـه -

کیا معجزہ دلیل نبوت ھے ؟

معجزہ نبوت کے ثبوت کی کیوں کر دایل ہو سکتا ہے۔ اثبات نبوت کے لیے اول خداکا وجود اور اس کا متکلم ہونا اور اس میں اپنے ارادہ سے کام کرنے کی قدرت کا ہونا اور اس کا تمام بندوں کا مالک ہونا ثابت کرنا چاھیے۔ پہر اس کا ثبوت چاھیے کہ وہ اپنی طرف سے رسول و پیغمبر بھیجا کرتا ہے پھر یہ ثابت ہونا چاھیے کہ جو شخص دعوی نبوت کرتا ہے وہ درحقیقت اس کا بھیجا ہوا ہے۔ ہم پہلی دو باتوں سے قطع نظر کرتے ھیں کیوں کہ کہا جا سکتا ہے کہ قرآن مجید میں ایسے مقامات پر آکثر اہل کتاب مخاطب ھیں جو ان دونوں پہلی باتوں کو مانتے تھے اور اس لیے معجزات سے صرف تیسری بات کا ثابت کرنا مقصود ہوتا ہے۔

مگر وہ تیسری بات بھی معجزہ سے ثابت نہیں ھو سکتی ۔ قاضی الولید محد بن رشد نے اپنی کتاب میں جس کا نام '' کتاب الکشف عن مناهج الادلہ فی عقائد الملہ '' هے بعثت انبیا پر نہایت لطیف مباحثہ لکھا هے ۔ جس کا ماحصل ھم بھی اس مقام پر لکھتے ھیں ۔ انھوں نے لکھا هے کہ خدا کی طرف سے رسولوں کے آنے میں دو چیزیں غور طلب ھیں ۔ اول رسول کے ھونے کا ثبوت دوسرے وہ چیز جس سے ظاھر ھو کہ یہ شخص جو رسول ھونے کا دعوی کرتا ہے رسولوں میں سے ایک رسول ہے اور وسول ھونے دوسرے میں جھوٹا نہیں ہے انسان کے دیا کے حالات پر قیاس کر کر استدلال کیا ہونے پر متکامین نے دنیا نے حالات پر قیاس کر کر استدلال کیا

ھے۔ وہ کہتے ھیں کہ یہ بات تو ثابت ھو چکی ھے کہ اللہ تعالیٰی متکلم ھے اور صاحب ارادہ اور بندوں کا مالک اور دنیا میں دیکھا جاتا ھے کہ ایسا شخص مجاز ھے کہ اپنے مملوک بندوں کے پاس اپنا ایلچی یا رسول بھیجے تو خدا کی نسبت بھی ممکن ھے کہ اپنے بندوں پاس ایک اپنا رسول بھیجے اور یہ بات بھی دنیا میں دیکھی جاتی ھے کہ اگر کوئی شخص کہے کہ میں بادشاہ کا ایلچی ھوں اور بادشاھی نشانیاں اس کے پاس ھیں تو واجب ھوتا ھے کہ اس کا ایلچی ھونا قبول کیا جاوے متکامین کہتے ھیں کہ یہ نشانیاں رسولوں کے قبول کیا جاوے متکامین کہتے ھیں کہ یہ نشانیاں رسولوں کے ھاتھ سے معجزوں کا ھونا ھے۔

این رشد فرماتے هیں که یه ذلیل عام لوگوں کے لیر کسی قدر مناسب هو ۔ مگر غور سے دیکھا جائے تو ٹھیک ہی ھے ۔ کیوں کہ جو شخص بادشاہ کے ایلچی ہونے کا دعوی کرتا ہے اس وقت تک آس کو سجا نہیں مانا حا سکتا ۔ حب تک که یه نه معلوم هو که جو نشانیاں وہ دکھاتا ہے وهی نشانیاں بادشاہ کے ایلچی ہونے کی ہیں اور یہ بات دو طرح سے ہو سکتی ہے یا تو خود بادشاہ نے اپنی رعیت سے کہہ دیا ہو کہ جس شخص کے پاس تم ممری ان خاص نشانیوں کو دیکھو تو اس کو میرا ایلچی یا رسول جانو یا بادشاہ کی عادت <u>سے</u> یہ بات معلوم ہو گئی ہو کہ وہ ایسی نشانیاں بجز اپنے ایلچی یا رسول کے اور کسی کو نہیں دیتا جب که یه بات هے تو کوئی کہد سکتا ہے که یه بات کہاں سے معلوم ہوئی کہ بعض اتسان کے ہاتھ سے معجزوں کا ہونا رسول ہونے کی خاص نشانی ہے ۔ کیوں کہ دو حال سے خالی نہیں ۔ یا یہ بات شرع سے جانی گئی ہو گی یا عقل سے ۔ شرع سے جاننا تو غیر ممکن ہے ۔ کیوں کہ شرع تو رسول ثابت ہونے کے بعد ٹھہرے کی اور اب تک رسول ہونا ہی ثابت نہیں ہوا ہے اور عقلاً بھی اس

بات کا قرار دینا که یه نشانیاں مخصوص رسولوں کی هیں غیر ممکن ھے ھاں اگر وہ نشانیاں بہت سی دفعہ انہی لوگوں سے ظاہر ہوتیں جو رسول ہونے کا دعوی کرتے میں اور ان کے سوا اور کسی سے نہ ہوئی ہوتیں ۔ تو جو لوگ رسولوں کے ہونے کو مانتر ہیں ان کے لیے دلیل ہو سکتی اور اُس وقت یہ کہا جا سکتا کہ اس شخص نے جو ہونے رسول کا دعوی کرتا ہے معجزمے دکھائے ھیں اور جو شخص کہ سعجزے دکھاتا ہے وہ رسول ہوتا ہے اور اس لیے یہ شخص بھی رسول ہے ۔ مگر یہ مانناکہ اس شخص نے جو رسول ہونے کا دعوی کرتا ہے معجزے دکھائے ہیں ، اسی وقت هو سكتا هے جب كه اول تسليم كر ليا جاوے كه ايسى باتيں انسان سے ہو سکتی ہیں اور در حقیقت آن کا ہونا مخوبی محسوس ہوا ہو اور یقین ہو گیا ہو کہ وہ کسی لاگ سے اور کسی حکمت سے اور خواص اشیاء سے نہیں ہوتیں اور جو دکھائی دیا ہے وہ ٹھٹ بندی نه تھی بلکه حقیقت میں واقع ہوا ہے اور یه کہنا که جو شخص معجزے دکھاتا ہے وہ رسول ہوتا ہے جب صحیح ہوگا کہ پہلے رسولوں کا وجود اور یہ بات کہ وہ سعجزے بجز رسولوں کے اورکسی نے نہیں دکھائے مان لیا جاوے کیوں کہ اس قسم کی منطقی دلیل کا جس سیں دو مقدسے ملا کر نتیجہ نکالا جاتا ہے یہ خاصہ ہے کہ وہ دونوں مقدمے مان لیے گئے ہوں ۔ مثلًا جس شخص کے سامنے یه دلیل کی جاوے که '' العالم محدث '' تو ضرور ہے که اس کو یه بات معلوم ہو کہ عالم موجود ہے اور محدث بھی ہے پس اب ایک معترض کہہ سکتا ہے کہ یہ بات کہ جو شخص معجزمے د کھاتا ہے وہ رسول ہوتا ہے کہاں سے ثابت ہوئی ہے ۔ کیوں کہ اب تک رسالت کا ہی وجود ثابت نہیں ہوا ہے اور دو مقدموں کو ملا کر نتیجہ نکالنے کے لیے اول ان دونوں کا ثابت ہونا ضرور تھا

اور یه بات نہیں کہی جا سکتی کہ جب رسولوں کا ہونا عقلاً ممکن ھے تو ان کے ھونے پر عقل دلالت کرتی ھے کیوں که وہ اسکان اس قسم کا امکان نمیں ہے جو سوجودات کی طبیعت میں پایا حاتا ہے جس طرح که هم کہتے هیں که ممکن ہے که سینه برسے اور نه برسے اس لیر کہ جو امکان موجودات کی طبیعت میں مانا حاتا ہے وہ اس لیر مانا جاتا ہے کہ وہ شر کبھی موجود ہوتی ہے اور کبھی نہیں ہوتی حیسر کہ مینہ کا حال ہے کہ کبھی برستا ہے اور کیھی نہیں برستا اور اس لیر عقل بطور قاعدہ کلیہ کے یہ بات کیتی ہے کہ سینہ کا برسنا ممکن ہے اور واجب کا حال اس کے برخلاف ہے اور وہ وہ ہے جو ہمیشہ موجود اور محسوس ہو اور اس لیر اس کی نست عقل بطور قاعدہ کلیہ کے یہ بات کہتی ہے کہ اس کا متغیر ھونا اور بدلا جانا ممکن نہیں ۔ پس جو شخص کسی ایک رسول کے ھونے کا بھی قائل ھو گیا تو اس کے مقابل میں کہا جا سکتا ھے کہ رسولوں کا هونا ممکن هے ۔ مگر جو شخص رسول هونے کا قائل ھی نه ھو تو اس کے مقابل میں اس کا امکان کہنا جہالت ہے اور لوگوں کی طرف سے ایلچی کا ہونا ممکن مانا گیا ہے تو اس سب سے مانا گیا ہے کہ ان کے ایلچیوں کا وجود ہم نے پایا ہے ۔ اگر یہ کہا جاوے کہ لوگوں کی طرف سے ایلچیوں کے وجود کا ہونا اس بات کی دلیل ہے کہ خدا کی طرف سے بھی رسولوں کا ہونا ممکن ہو جیسے که عمرو کے ایلچی کا هونا اس بات کی دلیل هے که زید کی طرف سے بھی ایلچی کا ہونا ممکن ہے ۔ تو ید بھی ٹھیک نہیں ہوگا ۔ اس لیر که ایسی صورت میں عمر و زید دونوں کی طبیعتوں کا مساوی ھونا ضرور ہے اور یہ مساوات خدا اور بندوں سیں نہیں ہے اور اگر آئندہ کے لیے رسول ہونے کا امکان فی نفسہ مان لیا جاوے تو یہ تسلیم ایک امکانی امرکی تسلیم ہوگی ۔ نہ اس کے وقوع کی ۔ اور یہ

نه معلوم هوگا که اس نے بھیجا بھی ہے یا نہیں ۔ جیسے که اس بات میں شک ہوتا ہے کہ عمرو نے کسی گذشتہ زمانے میں ایلچی بھیجا ہے یا نہیں اور آئندہ زمانے میں بھیجنر میں شک کرنا کہ آئندہ بھی وہ بھیجے گا یا نہیں۔گذشتہ زمانے کے شک کرنے سے بالكل مختلف هے پھر جب كه هم كو يه بات معلوم نہيں هے كه زيد گذشتہ زمانے میں کوئی ایلچی بھیجا ہے یا نہیں تو ہم کو یہ نے کہنا صحیح نه هوگا که جس کے پاس زید کی نشانیاں هوں وہ زید کا ایلچی ھے ۔ جب تک کہ هم يه نه جان لس که يه نشانياں اس كے ايلچى ھونے کی نشانیاں ھیں اور یہ بات جب ھوگی جب ھم جان چکر ھوں کہ اس نے اپنا ایلچی بھیا ہے۔ پس جب کد ھم نے یہ بھی تسلم کر لیا کہ رسالت ہوتی ہے اور سعجزے بھی ہوتے ہی تو کس طرح ہم کو یہ بات معلوم ہوگی کہ جس نے معجزمے دکھائے ھیں وہ رسول ھے کیوں کہ آس کے رسول ھونے کا ثبوت خدا کی طرف سے آس وقت تک تو نہیں هو سکتا جب تک که اس کا رسول هونا ثابت نه هو لے ورنه تصحیح الشے بنفسه لازم آتی ہے جو باطل ہے اور تجربہ اور عادت سے بھی اس کے رسول ہونے کا ثبوت نہیں ھو سکنر کا محبز اس کے کہ معجزمے رسول ھی دکھایا کریں اور كوئى نه دكها سكر حالان كه خرق عادت جس كا ايك نام معجزہ بھی ہے ۔ رسول اور غیر رسول دونوں دکھا سکتر ہیں۔ ان تمام مشکلات کے سبب متکامین نے ان سب باتوں کو چھوڑ کر صرف یہ بات کہی کہ جس شخص کے پاس معجز یعنی عاجز کرنے والی چیز ہو وہ رسول ہے مگر یہ بھی صحیح نہ ہوگا بجز اس کے کہ وہ شے معجز فی نفسہ رسالت اور رسول پر دلالت نہ کر ہے اور عقل میں یه قوت نہیں که وہ جب کوئی عجیب خرق عادت دیکھر تو جان لر کہ وہ ربانی ہے اور رسالت پر دلیل قاطع ، ھاں

یہ ہو سکتا ہے کہ دیکھنر والا یہ اعتقاد کریے کہ حس شخص سے مه خرق عادت هوئي هے وہ ایک بڑا شخص هے اور بڑا شخص جهوث نہیں بولر گا بلکہ اس کے رسول ماننر کو یہ بھی کافی نہ ہوگا جب تک که یه بهی نه مان لیا حاوے که رسالت در حقیقت ایک چیز ھے اور ایسی خرق عادت بجز رسول کے اورکسی بڑے شخص سے نہیں ھوتی ۔ شے معجز بھی رسالت پر دلالت نہیں کرتی ۔ کیوں کہ عقل نہیں جان سکتی کہ رسالت اور شر معجز میں کیا علاقہ ہے۔ جب تک یہ نہ مان لیا حائے کہ اعجاز ، رسالت کے افعال میں سے ایک فعل ہے ۔ جیسر کہ بیار کا اچھا کرنا طب کے افعال میں سے ایک فعل هے اور حو شخص بیار کو اچها کر دیتا هے تو معلوم هوتا هے کہ طب کا وحود ہے اور یہ شخص طبیب ہے ۔ یس یہ تمام دلیلیں بودی ہیں اور اگر ہم بطور تنزل کے رسالت کے اسکان امری کو امکان وقوعی فرض کر لس اور معجزہ کو بھی اس شخص کے سچا ھونے کی دلیل مان لی جو رسالت کا دعوی کرتا ہے تو بھی ان لوگوں کے نزدیک جو کہتر ہیں کہ رسول کے سوا بھی شر معجز ظاہر ہوتی ہے۔ رسالت پر معجزہ کی دلالت لازمی نہیں ہونے کی ، اور متکامین اس بات کے قائل ہیں کہ شر معجز کبھی جادوگر سے اور ولی سے بھی ظاہر ہوتی ہے اور اس مقام پر جو انہوں نے یہ شرط لگائی ہے کہ شر معجز آسی وقت رسالت پر دلالت کرتی ہے جب کہ وہ رسالت کے دعو ہے کے مقارن ہو اور جو شخص رسول نہیں ہے اور وہ یہ دعوی کرکے کہ سی رسول ہوں شے سعجز کو دکھانا چاہے تو نہ دکھا سکر گا۔ یہ ایک ایسی بات ہے جس پر کوئی دلیل نہیں ۔ نه تو اس کا نشان منقولات میں پایا حاتا ہے اور نه عقل سے معلوم ہو سکتا ہے اور یہ کہنا کہ شر معجز ایک بڑے شخض سے ظاہر ہوتی ہے اور جو شخص جھوٹا دعوی کرے وہ اِڑا شخص نہیں ہے اور اس لیے اس سے ظاہر نہ ہوگی اس لیے غلط ہو جاتا ہے کہ متکامین جادوگر سے شے معجز کا ظاہر ہونا تسلیم کرتے ہیں اور جادوگر بڑا شخص تسلیم نہیں کیا جا سکتا۔

ان سب خرابیوں پر خیال کر کے بعض لو گوں نے یہ کہا ہے۔ کہ یہ اعتقاد ٹھیک ہےکہ خرق عادات محز انبیاء کے اور کسی سے نہیں ہوتا اور سحر صرف ایک ڈھٹے بندی ھے ۔ نہ قلب عین شر ۔ یعنی معجزے سے لکڑی سچ مچ کا سانپ بن جاتی ہے اور سحر سے سانب نہیں بنتی ۔ بلکه لوگوں کو سانپ دکھائی دیتی ہے اور اسی وجہ سے ان لوگوں نے کرامات اولیاء سے انکار کیا ہے ـ (واضح ہو کہ اسی خیال پر شاہ ولی اللہ صاحب نے بھی حج اللہ بالغہ سیں کرامات اولیاء سے انکار کیا ہے) مگر قاضی ابن رشد اس اعتقاد کی بھی تردید کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ تم کو رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم کے حال سے ظاہر ہوگا کہ آنحضرت نے نہ کسی ایک شخص کے اور نہ کسی ایک گروہ کے ایمان پر دعوت کرتے وقت یہ نہیں کیا ، کہ اس سے پہلر اس کے سامنر کوئی خرق عادت کی هاو اور ایاک چیز کسو دوسری چیز سی بادل دیا هاو ـ یعنی لک ڈی کا سانپ اور سانپ کی لکڑی اور سونے کو مٹی اور مٹی کو سونا بنا دیا ہو اور اسلام لانے کی دعوت کے وقت کوئی کرامات اور کوئی خوارق عادات آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے ظاہر نہیں ھوئی ۔ اگر ظاھر ھوئی ھے تو معمولی حالات میں ۔ بغیر اس کے که کرامات اور خرق عادت کا دعوی کیا هو اور اس کا ثبوت خود قرآن محید سے پایا حاتا ہے حہاں خدا نے آنحضرت صلی اللہ علیه وسلم سے فرمایا ہے کہ ''کافر کہتر ہیں کہ ہم تجھ پر ایمان نہیں لانے کے ، جب تک که تو زمین پھاڑ کر ھارے لیے چشمے نه نکالے یا تیرے پاس کجھور و انگورکا باغ نہ ہو جس کے بیچ میں تو بہتی

ھوئی نہریں نہ نکالے زور سے بہتی ۔ یا تو ھم پر آسان کے ٹکڑے نہ
گالے یا خدا اور فرشتوں کو اپنے ساتھ نہ لاوے یا تیرے لیے تیرے
کوئی سُزین گھر نہ ھویا تو آسان پر چڑھ نہ جاوے اور ھم تو تیرے
منتر بر ھرگز ایمان نہیں لانے کے ، جب تک کہ ھم پر ایسی کتاب
نہ اترے جو ھم پڑھ لیں ۔ اس پر خدا اپنے پیغمبر سے کہتا ھے
دہ تو ان سے کہہ دے کہ پاک ھے میرا پروردگار میں تو کچھ نہیں
عوں سگر رسول (اور خدا نے فرسایا که) نہیں روکا ھم کو آیات کے
بہیجنے سے مکر یہ کہ جھٹلایا آن کو اکموں نے ۔

غرض که قاضی ابن رشد نے معجزات کو مثبت نبوت قرار نہیں دیا اور اس کے بعد صرف قرآن کو مثبت نبوت قرار دیا ہے اور قریباً قریباً وہی لکھا ہے جو اس بحث میں ہم لکھ چکے ہیں۔ مگر وہ بحث اس مقام سے متعلق نہیں ہے۔ قاضی ابن رشد نے جو اتنی بڑی بحث لکھی ہے اس کا حاصل یہ ہے که آگر خدا کو موجود و مرید و متکم و قادر و مالک عباد تسلیم بھی کر لیا جاوے اور یه مان لیا جاوے که وہ رسول بھیجا کرتا ہے اور معجزات کا بھی وقوع من لیا جاوے که وہ رسول بھیجا کرتا ہے اور معجزات کا بھی وقوع من کر لیا جاوے کہ وہ رسول بھیجا کرتا ہے اور معجزات کا بھی وقوع منے کہ قبول کر لیا جاوے ۔ تب بھی معجزات کے وقوع سے یہ بات ثابت نہیں ہوتی ۔ کہ وہ شخص خدا کا رسول ہے ، مختصر طور پر اس کی یہ نہیں ہیں ہیں ۔

- (۱) جو امر که واقع هو اس کی نسبت اس امر کے لزوم کا ثبوت نہیں هوتا که جس شخص سے ود واقع هو وه رسول هوتا هے ـ
- (۲) کوئی خرق عادت ایسی معلوم نہیں ہے جو بطور خاصه رسولوں سے مخصوص هو ۔
- (٣) کچھ ثبوت نہیں ہےکہ خرق ِ عادت سے رسالت کو کیا تعلق ہے ـ

- (س) اس کا ثبوت نہیں ہوتا کہ اس کا وقوع قانون قدرت کے مطابق نہیں ہوا کیوں کہ بہت سے عجائبات اب بھی ایسے ظاہر ہوتے ہیں جو فی الحقیقت ان کا وقوع قانون قدرت کے مطابق ہوتا ہے مگر وہ قانون ابھی لا معلوم ہے ۔
- (۵) اس کا کچھ ثبوت نہیں ہوتا کہ جو امر واقع ہوا وہ خواص نفس انسانی سے جو ہر ایک انسان میں ہے کچھ تعلق نہیں رکھتا ۔
- (٦) غیر انبیاء سے جو امور خرق عادت کے واقع ہوتے ہیں اور جو انبیاء سے واقع ہوتے ہیں ان دونوں میں کوئی مابه الامتیاز نہیں ہے۔
- (2) یہاں تک که اهل هنر سے جو امور واقع هوتے هیں آن میں اور خرق عادت میں امتیاز نہایت هی مشکل هوتا هے ۔
 کوئی معترض غلطی سے کہہ سکتا هے که قرآن مجید میں جس طرح آیات بینات کا اطلاق قرآن کی آیتوں یا احکام و نصائح و مواعظ قرآنی پر هوا هے اور دو آیتیں قرآن کی غلط فہمی سے اس کی دلیل میں پیش کر سکتا هے بس مناسب هے غلط فہمی سے اس کی دلیل میں پیش کر سکتا هے بس مناسب هے کمه هم اس مقام پر بتا دیں که آن آیتوں میں سے آیات بینات سے معجزے مراد نہیں هیں ۔

پهلی آیت سورة مائده کی هے جهاں خدا تعالی نے حضرت عیسلی کی نسبت فرمایا هے که " اذا ایدک بروح القدوس تکلم الناس فی المهد و کهلا و اذ علمتک الکتاب والحکمة والتورة و الانجیل و اذ تخلق من الطین کهئیة الطیر باذنی فتنفخ فیها فتکون طیراً باذنی و تبری الاکمه والابرص باذنی و و اذ تخرج الموتلی باذنی و و اذ کففت

كفرا و سنهم ان هذا الا سحر سبين ـ

اس آیت میں مفسرین کے نزدیک حضرت عیسلی کے معجزات کا بیان ہے اور پھر کہا گیا ہے کہ کفروں نے کہا کہ یہ تو کھلا ھوا جادو ہے ۔ اس سے صاف ثابت ھوتا ہے کہ بینات سے جو اس آیت میں ہے معجزے مراد ھیں جن کو کافروں نے جادو کہا ۔ صاحب تفسیر بیضاوی نے بھی ھذا کا اشارہ '' الذی جئت بہ '' کی طرف کیا ہے جس سے صاحب بیضادی کے نزدیک بھی اس جگہ بینات سے معجزے مراد ھیں ۔

مگر یه استدلال صحیح نهیں هے ، اول تو "ان هذا" کا مشار الیه الذی جئت به هو نهیں سکتا کیوں که وه ظرف واقع هوا هے - " که خفد صاحب بیضاوی نے بهی اس کو تسلیم کیا هے - پس " ان هذا " کا مشار الیه مابه کفف هے ، نه " الذی جئت به " کیوں که " اذ جیہم" ظرف اور جزو زائد هے جو کلام میں مقصود بالذات نہیں هوتا اور کفف خود فعل مسند هے جو مقصود بالذات هے اور اس لیے هذا کا اشاره اسی کی طرف اولئی هے -

غرض کہ حضرت عیسلی کا نبی اسرائیل کے حملہ سے بچ جانے کو جو اُنھوں نے اُن کے قتل کے ارادے سے اس وقت کیا تھا جب کے وہ احکام خدا ان کو سنا رہے تھے کافروں نے کھلا ہوا جادو بتایا۔ بینات کے لفظ سے اس کو کچھ تعلق نہیں ہے۔

دوسرے یہ کہ جب سادے طور سے تمام اس آیت پر نظر ڈالی جاوے تو معلوم ہوتا ہے کہ خدا تعالیٰ نے حضرت عیسلی پر جو اکرام کیے تھے ان کو اذ اذ کرکر بیان کیا ہے اور اخیر کو جو قول کافروں کا تھا اس کا ذکر کیا ہے پس وہ قول انھی چیزوں سے متعلق ہے جن سے کہ وہ متعلق ہو سکتا ہے نہ یہ کہ اس سے

کوئی خاص معنی لفظ بینات کے ثابت ہو سکتے ہیں۔

دوسری آیت سورة بنی اسرائیل کی هے جہاں خدا نے فرمایا هے '' و ما منعنا ان نرسل بالا یات الا ان کذب بها الاولون و اتینا ثمود الناقة مبصرة فضلموا بها و ما نرسل بالا یات الا تخویفا''۔ اس آیت سے قاضی ابن رشید نے استدلال کیا هے که آنحضرت صلی الله علیه وسلم نے ادائے نبوت کے ساتھ کوئی معجزہ کسی کو نہیں دکھلایا جیسے که اوپر بیان هوا کے ور اس سے بایا جاتا ہے که قاضی ابن رشد نے اس آیت میں جو لفظ '' آیات'' هے اس سے معجزات مراد لیے هیں۔ صاحب تفسیر بیضاوی نے بھی یه سمجھا ہے که جو معجزات قریش نے طلب بیضاوی نے بھی یه سمجھا ہے که جو معجزات قریش نے طلب کیے تھے اس آیت میں لفظ بینات سے و هی معجزے مراد هیں۔

مگر اس تفسیر میں چند نقصان هیں ۔ اول تو یه سمجھ میں نہیں آ سکتا کہ خدا نے لوگوں کے نه ماننے یا جھٹلانے سے کیوں معیجزوں کا بھیجنا بند کر دیا ۔ دوسرے یہ کہ آدم سے عیسنی تک برابر کیوں بھیجتا رہا اور کیوں ایسی بےرحمی سے اگلوں کو غارت کرتا رہا ۔ اس لیے میری سمجھ میں اس مقام پر بھی آیات کے معنی معجزات کی لینا صحیح نہیں ۔ یہاں بھی احکام کے معنی هیں ۔ جو حکم خاص کسی کو یا کسی قوم کو دیا گیا هے وہ بھی آیت کے لفظ سے تعبیر کیا گیا هے جیسے که سورة آل عمران سے ثابت ہوتا ہے کہ حضرت ذکریا سے جب که خدا نے کہا کہ تیرے بیٹا هوگا ۔ تبو آنھوں نے عرض کیا ۔ " رب اجعل کی آیت ، یعنی اے پروردگار میرے لیے خاص آیت یعنی حکم مقرر کر ، خدا نے کہا ! آیتک الا تکام الناس ثلث ایام الا کر ، خدا نے کہا ! آیتک الا تکام الناس ثلث ایام الا رسزا ۔ یعنی تیری آیت ۔ یعنی تیرے لیے یه حکم هے که تین دن رسزا ۔ یعنی تیری آیت ۔ یعنی تیرے لیے یه حکم هے که تین دن

احكام حضرت صالح نے نسبت ناقه كے بتائے أن كے سبب سے اس پر بھى آیت كا اطلاق هوا هے جہاں خدا نے فرمایا هے ۔ "هذه ناقدة الله لكم آیة" كیوں كه وه اونٹنی فی نفسه كوئى معجزه نه تهى ۔

کیا معجزات باعث ایمان موتے میں؟

اکثر لوگوں کا خیال ہے کہ انبیاء پر ایمان لانا به سبب ظہور معجزات باہرہ کے ہوتا ہے مگر یہ خیال محض غلط ہے انبیاء عليه مالسلام پر ياكسي هادئ باطل پر ا مان لانا بهي انساني فطرت میں داخل اور قانون قدرت کے تابع ہے بعض انساں از روئے فطرت کے ایسے سلم الطبع پیدا ہوتے ہیں کہ سیدھی اور سچی بات اُن کے دل مس بیٹھ جاتی ہے وہ اس پر یقین کرنے کے لیر دلیل کے محتاج نہیں ہوتے باوجودیکہ وہ اس سے مانوس نہیں ہوتے مگر ان کا وجدان صحیح اس کے سچ هونے پر گواهی دیتا هے۔ آن کے دل میں ایدک کیفیت پیدا هوتی هے جو اس بات کے سچ هونے پر آن کـو يقين دلاتي هے يہي لوگ هيں جو انبيائے صادّقين پر صرف آن کا وعظ و نصیحت سن که را بمان لاتے هیں نه معجزوں اور کرامتوں کے دیکھنے کے بعد۔ اسی فیطرت انسانی کا نیام شارع نے ھدایت رکھا ھے مگر جو لوگ معجزوں کے طلب گار ھوتے ھس وہ کبھی ایمان نہیں لاتے اور نبه معجزوں کے دیکھنر سے کوئی ا بمان لا سکتا ہے ۔ خود خدا نے اپسنر رسول سے فرمایا کہ '' اگر تو زمین میں ایک سرنگ ڈھونڈ نکالے یا آسان میں ایک سیڑھی لگا لے تب بھی وہ ایمان نہیں لانے کے'' اور ایک جگہ فرمایا کہ '' اگر هم کاغذوں پر لکھی هوئی کتاب بھی بھیج دیں اور آس کو وہ اپنر ہاتھوں سے بھی چھو لیں تب بھی وہ ایمان نہیں لانے کے اور كهس كے يه تو علانيه جادو هے'' پس ايمان لانا صرف هدايت

(فطرت) پر منحصر هے جیسے که خدا نے فرمایا '' اللہ یا دی من یشاء اللہ صدراط مستقیم''۔

ھادی ٔ باطل پر جو لوگ انمان لاتے ھیں آن کے دل میں بھی غالباً اسی قسم کی کیفیت پیدا هوتی هے اور اس کا سبب کبھی ان کی فطرت ہوتی ہے جو کجی کی طرف مائل ہے اور سیدھی طرف مائل ھی نہیں ھوتی اسی طرف خدا نے اشارہ کیا ھے جہاں فرمایا هے '' من يشاء اللہ يـضـلـلـه و من يشاء مجـعـله عـلى صراط مستقم'' (الانعام) اور اکثر یه هاوتا هے که دین آبائی کا اور سوسائٹی کا ایسا بوحھ آن کی طبیعتوں پر هوتا هے که سیدهی بات سے دل مس آنے کی جگہ ھی نہیں رھتی اور کبھی یہ ھوتا سے کہ مخالی بالطبع ھو کر اُس بات پر غور نہیں کرتے اور اسی کی طرف خدا نے اشارہ كيا هے جہاں فرمايا هے كه " فحن يرد الله ان يهديه يشرح صدره للاسلام و من يرد ان ينضله عجعل صدره ضيقاً حرجا كانما يصعد في الساء كدذالك مجعل الله الرجس على الذين لا يوسنون" (الانعام ، آيت ١٢٥) يعني جس كو خدا چاہتا ہے کہ ہدایت کرے اس کا دل اسلام کے لیر (یعنی سیدھی راہ پر چلنے کے لیے) کھول دیتا ہے اور جس کو خداگم راہ کرنا چاھتا ھے اس کے دل کو ایسا تنگ کر دیتا ھے که وہ سیدھی بات اختیار کرنے کو آسان پر چڑھنے سے زیادہ مشکل سمجھتا ہے اسی طرح خدا آن پر برائی ڈالتا ہے جو ایمان نہیں لاتے '' ان آیتوں میں خدا تعالیٰی نے ہدایت پانے یا گم راہ ہونے کو اپنا فعل قرار دیا ہے اس کا سبب یہ ھے کہ خدا جو فاعل حقیقی ہے همیشه تمام چیزوں کو جو ظہور میں آتی ہیں اپنی طرف نسبت کرتا ہے۔ اسی طرح ان آیتوں میں بھی انسان کے فطرقی افعال کو اپنی طرف نسبت کیا ہے مگر درحقیقت یہ بیان انسان کی فطرت کا ھے اور بس ۔''

آنحضرت اور صدور معجزات

قرآن کریم کی ایک آیت ہے و قالوا لولا نزل علیہ آیة من ربه (سورة انعام ۔ آیت ہے) یعنی کافر کمتے ہیں کہ پیغمبر کو اس کے رب کی طرف سے معجزہ کیوں نہیں دیا گیا ۔

اس آیت سے بعض لوگوں نے استدلال کیا ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیه وسلم کے پاس کوئی معجزہ نه تھا یعنی جس کو کفار یا عام لوگ معجزہ سمجھتے ہیں۔ کیوں که اگر کوئی معجزہ ہوتا تو کفار یه نه کہتے که کیوں آنحضرت صلی اللہ علیه وسلم پر کوئی معجزہ نہیں اتارا گیا۔

تفسیر کبیر میں ان آیتوں کی شان نزول میں ابن عباس کی روایت سے لکھا ہے کہ حرث بن عامی بن نوفل بن عبد مناف معہ چند قریش کے آنحضرت صلی الله علیه وسلم کے پاس آئے آن سب نے کہا کہ اے مجد الله کے پاس سے کوئی معجزہ لاؤ جیسے کہ انبیاء کیا کرتے تھے تو ہم تم پر ایمان لائیں مگر خدا نے معجزہ بھیجنے سے انکار کیا کیوں کہ خدا کے علم میں تھا کہ وہ ایمان نہیں لانے کے ۔

جن لوگوں نے مذکورہ بالا آیتوں سے یہ استدلال کیا ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس کوئی معجزہ ندہ تھا ان کو امام فخرالدین رازی نے ملحد قرار دیا ہے اور ان کا جواب اس طرح پر دیا ہے کہ خود قرآن ہی بہت بڑا معجزہ ہے کہ باوجودیکہ کافروں سے کہا گیا کہ مثل اس کے لاؤ اور وہ نہ لا سکے ۔ ممکن

ھے کہ یہ کہا جاوے کہ قرآن معجزہ تھا تو پھر کافروں نے یہ کیوں کر کہا کہ '' کیوں نہیں اتاری گئی پیغمبر پر کو ' نشانی'' تو امام صاحب فرماتے ھیں کہ ھم اس کا کئی طرح پر جواب دیں گے۔

اول ۔ یہ کہ لوگوں نے دشمنی سے قرآن کو معجزہ نہ ٹھہرایا ہوگا اور کہا ہوگا کہ یہ تو کتاب کی قسم سے ہے اور کتاب معجزات کی قسم میں سے نہیں ہے جسے کہ توریت و زبور و انجیل اور اسی شبہ کے سبب سے انھوں نے وہ کہا ہوگا۔

دوسرے ۔ یه که انہوں نے معجزات قاهرہ طلب کیے هوں گے جیسے که اور انبیاء کے پاس تھے مثل سمندر کے چیر دینے اور چاڑ کے سر پر معلق هو جانے اور مردوں کے زندہ کرنے کے ۔

تیسرے ۔ یہ کہ انہوں نے ضد سے علاوہ معجزات موجودہ کے اور معجزات طلب کیے ہوں گے ۔ جیسے فرشتوں کا اترنا یا آسان سے ٹکڑے کا ٹوٹ پڑنا ۔

چوتھے ۔ یہ کہ یا انھوں آسان پر سے پتھروں کا برسنا یا اور عذاب کا اترنا چاھا ھوگا کیوں کہ یہ سب باتیں آیت کے لفظ میں شامل ھیں ۔

پھر اسام صاحب کافروں کے مطلوبہ معجزات نہ نازل کرنے کی وجہ اس طرح بیان کرتے ھیں کہ جب خدا تعالیٰی نے قرآن مجید بہت بڑا معجزہ دیا تھا تو اس پر اور معجزہ طلب کرنا ضد اور خدا پر تحکم کرتا تھا اور نہ کرنے میں خدا اپنی مرضی کا مختار ہے وہ لوگوں کی خواہشوں کے مطابق نہیں کرتا ، چاھا آن کا سوال قبول کیا چاھا نہ کیا ۔ علاوہ اس کے اگر آن کے آن سوالوں کو پورا کر دیتا تو وہ ایک اور معجزہ چاھتے جب وہ بھی پورا ھو جاتا تو اور چاھتے اور اس کی کچھ انتہا نہ ھوتی اس لیے پہلی ھی دفعہ

سد باب کر دیا ۔ سوائے اس کے اگر خدا تعالیٰ آن کے مطلوبه معجزات کو نازل کرتا اگر وہ ایمان نه لاتے تو سب کو نیست و نابود کر ڈالتا پس خدا نے بمتقضائے رحمت کے آن کو نازل نہیں کیا ۔ اور یه بھی ہے که خدا جانتا تھا که وہ لوگ ان معجزات کو فائدہ کی غرض سے نہیں طلب کرتے تھے بلکہ ضد سے طلب کرتے تھے اور خدا کو معلوم تھا کہ وہ ایمان نہیں لانے کے ۔

مگر شاه ولی الله صاحب نے اپنی کتاب تفہیات الیه میں صاف صاف بیان کیا ہے که قرآن محید میں کسی معجره کا ذکر نہیں ہے اور شق القمر کی نسبت لکھا ہے که وہ معجزه نہیں چناں چه فرماتے ہیں که ۔ اما شق القمر فعند نالیس من العجزات انما هو من آیات القیامة کیا قال الله تعالیٰی اقترب الساعة و انشق القمر و لکنه صلی الله علیه وسلم اخیر عنه قبل وجوده فکان معیجزة من هذا السبیل ۔ ۔ ۔ و لم یذکر الله سبحانه شیئاً من هذه المعجزات فی کتابه و لم یشر سبحانه شیئاً من هذه المعجزات فی کتابه و لم یشر الیہا قط بسر بدیع و هو ان القرآن انما هو من الاسم فلا یذکر فیده ما هو من تحته (تفہیات الهیه)

ترجمه ـ یعنی هارے نزدیک شق قمر معجزات میں سے نہیں سے ھاں وہ قیامت کی نشانیوں میں سے ھے جیسے کہ خدا نے فرمایا ھے کہ قریب ہوئی ساعت اور پھٹ گیا چاند ـ لیکن آنحضرت صلی الله علیه وسلم نے اس کے ہونے سے پہلے اس کی خبر دی ہے اس راہ سے معجزہ ہے ـ اس کے بعد شاہ صاحب فرماتے ہیں کہ الله سبحانه نے ان معجزات میں سے کچھ بھی اپنی کتاب (یعنی قرآن) میں ذکر نہیں کیا اور نه مطلق اس کی طرف اشارہ کیا ہے اس میں نادر بھید یہ ہے کہ قرآن تو پرتوہ اسم ذات کا ہے (اور شاہ صاحب نے معجزات کو اشرافات میں داخل کیا ہے جو اسم ذات سے کم درجه

ھے اس لیے انھوں نے فرمایا کہ) پس جو چیز کہ اس کے ماتحت ھے اس کا ذکر آس میں نہیں ھو سکتا ۔

مگر تعجب یہ ہے کہ اگر شاہ صاحب کے نزدیک کسی معجزے کا ذکر قرآن مجید میں نہ ہوتا تو اس وقت آن کی دلیل صحیح ہو سکتی تھی لیکن جب کہ شاہ صاحب اور انبیاء کے معجزات کا ذکر قرآن مجید میں تسلیم کرتے ہیں جیسا کہ تفہیات کے متعدد مقاموں سے پایا جاتا ہے تو یہ بھید ٹوٹ جاتا ہے اور کوئی وجہ سمجھ میں نہیں آتی کہ قرآن مجید میں بلا لحاظ اس بھید کے اور پیغمبروں کے معجزوں کا ذکر ہو اور بلحاظ اس بھید کے اور پیغمبروں کے معجزوں کا ذکر نہ ہو۔

غرض که امام صاحب نے اس بحث کو اُسی طریقه پر کیا ہے جیسے که ہارے ہاں کے قدیم علماء کا طریقه ہے اور شاہ صاحب نے اُس کو تصوف کے سانچہ موہوم میں ڈالنا چاہا ہے ،گر اس زمانه کے لوگوں کو ایسی تقریروں سے تشفی نہیں ہوتی اور جب تک اصل حقیقت صاف نه بتائی جاوے دل کو طانیت نہیں رہتی ۔

قرآن مجید میں اس آیت میں اور اور متعدد آیتوں میں جو کچھ لکھا ھے سب سچ ھے اور نہایت صفائی سے اصل حقیقت کو بتا دیا ھے ۔ بزرگوں کے ساتھ کراست کا اور انبیاء کے ساتھ معجزہ کا خیال فیط رت کے ایک بڑے لمبے سلسلے سے مربوط ھے جب تک که آس سلسلے پر ابتداء سے بغور کامل نظر نه ذالی جاوے اور قرآن مجید کی آیتوں کے ساتھ اس کو نه تطبیق دی جاوے آس وقت تک نه معجزہ کی نه کرامت کی حقیقت ظاهر هوتی ھے اور نه اس آیت کی اور نه قرآن مجید کی اور آیتوں کی جو مثل اس کے هیں اصلی مراد و حقیقت کھلتی ھے اور نه ان لوگوں کے دلوں کو جو اصلی حقیقت کہ تلاش میں هیں تسلی هوتی ھے پس اول هم فطرت کے آس سلسله کی تلاش میں هیں تسلی هوتی ھے پس اول هم فطرت کے آس سلسله

کو مختصر طور پر بیان کریں گے اور اس کے بعد قرآن مجید کی آیتوں کے اس سے تطبیق دیں گے اور اسی کے ضمن میں انسان کے آن خیالات کی غلطی ظاہر کر دیں گے جو انبیائے علیهم السلام میں انسانوں سے بڑھ کر ملکہ نبوت کے سوا کسی اور چیز کا ھونا بطور دلیل آن کی نبوت کے ضروری سمجھتے ھیں ان سب باتوں کے سمجھانے کے لیے اولا فطرت کی ان باتوں کی طرف توجہ دلانا ضرور ھے جن سے مخلوقات کا سلسلہ نبوت کے سلسلہ تک ملا ھوا ھے۔

تمام مخلوقات میں انسان ہو یا حیوان شجر ہو یا ہجر سب میں خدا نے ایک فطرت رکھی ہے اور اس کے اثر بغیر کسی کے بتائے اور بغیر کسی سکھانے والے کے سکھائے آسی فیطرت کے مطابق ہوتے رہتے ہیں۔ اس ودیعت فطرت کو بعض علمائے اسلام نے المہامات طبعی کے نام سے موسوم کیا ہے۔ مگر خدا تعاللی نے اس کو وحی سے تعبیر کیا ہے جہاں فرمایا ہے '' و اوحی ربک الی الذحل ان اتخذی من الجبال بیوت و من الشجر و الی الذحل ان اتخذی من الجبال بیوت و من الشجر و اور کوئی فرشتہ شہد کی مکھی کے پاس لے کر نہیں گیا بلکہ خود خدا اس کے پاس لے جانے والا یا آس میں زالنے والا تھا۔

اب دیدکھو کہ وحی نے شہد کی مکھی میں کیا کیا ۔
کس طرح اس نے پہاڑوں کی چوٹیوں اور گھنے بلند درختوں کی
ٹہنیوں میں اور کس حکمت سے چھته لگایا اور کس دانائی سے
اس میں چھوٹے چھوٹے مسدس خانے بنائے پھر کس طرح عمدہ سے
عمدہ شفا بخش پھولوں سے رس چوس کر لائی اور کس طرح اس سے
میٹھا شہد نکالا ۔ جس کے مختلف رنگ ھیں پھر کس طرح آن
مسدس خانوں کو آس سے بھرا جس کی نسبت خدا فرمایا کہ

ایک چھوٹے سے زرد رنگ کے جانور بئے کو دیکھو کہ اس وحی یا فطرت نے اس میں کیا کر دکھایا ۔ کس حکمت سے وہ اپنا گھونسلا بنتا ہے ۔ دشمنوں سے محفوظ رکھنے کو کس قدر اونچے کانٹوں دار درختوں میں لٹکاتا ہے ۔ اندھیری برسات کی راتوں میں کس طرح پٹ بیجنے کا چراغ اپنے گھونسلے میں جلاتا ہے ۔ بجز اس وحی کے اور کس نے اس کو بتایا کہ وہ فاسفورس دار کیڑا صرف روشنی دیتا ہے اور گھونسلا نہیں جلاتا ۔

اس کے سوا اور برندوں کو دیکھو کس طرح جوڑا جوڑا ھو کر رھتے ھیں۔ اپنے انڈوں کو دونوں سل کے کس طرح سیتے ھیں۔ ایسی معتدل حرارت ان کو پہونچاتے ھیں کہ بڑے سے بڑے حکیم سے بھی نہیں ھو سکتی۔ پھر بچہ کس طرح انڈے کو کھٹک کر نکاتا ھے بھر کس طرح وہ دونوں اس کو پالتے ھیں جب بڑا ھو جاتا ھے تو آڑ جاتا ھے اور وھی کرتا ھے جو اس کے ماں باپ کرتے تھے۔

چرندوں کا بھی یہی حال ہے وہ بھی آسی وحی کے مطابق جو آن کو دی گئی ہے کام کرتے ھیں اپنا چارہ ڈھونڈھ لیتے ھیں پانی تلاش کر لیتے ھیں ۔ اونٹ بعید فاصلہ سے پانی کی بو سونگھ لیتا ہے حربہ کے جو اوزار آن کے پاس ھیں موقع پر کام آتے ھیں دشمن سے اپنی جان بچاتے ھیں بکری نے گو کبھی بھیڑیا نہ دیکھا ھو مگر پہلی ھی دفعہ دیکھ کر کانپتی ہے اور جان بچانے کو بھاگتی ہے یہ سب کرشمے آس وحی ربانی کے ھیں جو قادر مطلق ھمہ قدرت نے یہ سب کرشمے آس وحی ربانی کے ھیں جو قادر مطلق ھمہ قدرت نے ان کہ عطاکی ہے۔

انسان بھی مثل آن کے ایک مخلوق ہے وہ بھی آس وحی کے عطیہ سے محروم نہیں رہا مگر جس طرح مختلف قسم کے حیوانوں کو بقدرآن کی ضرورت کے آس وحی کا حصہ ملا ہے اسی طرح انسان کو بھی بقدر اس کی ضرورت کے حصہ عطا ہوا ہے ۔

انسان جس شکل و شائل اور ترکیب اعضاء پر پیدا هوا هے وہ بظاهر آن میں منفرد نہیں ہے بلکه اس سے کم درجه کی بھی ایسی مخلوق پائی جاتی ہے جو بظاهر آسی کی سی شکل و شائل رکھتی ہے ۔ اس سے مراد میری اس مخلوق سے ہے جو انسان کے مشابه ہے مگر انسانی تربیت کا مادہ نہیں رکھتی لیکن اس مقام پر میری بحث آس شکل و شائل کے انسان سے ہے جس میں انسانی تربیت کا مادہ بھی ہے کیوں کہ خدا کا خطاب بھی آن ھی سے ہے نه آن سے جو حقیقت میں انسان نہیں ھیں بلکه انسان سے کم درجه ھیں اور بندروں کے سلسله میں داخل ھیں ۔

آب و هوا اور ملک کی حالت سے جہاں انسان رهتا هے یا ایسے مقامات سے جہاں گو انسان پایا جاتا هے مگر درحقیقت عمرانات میں شار نہیں هو سکتے انسان کی ضروریات میں بہت کچھ تغیر تبدل هو جاتا هے مگر میں ان عارضی تبدیلات کو بھی اپنی اس بحث میں دخل نه دوں گا بلکه انسان من حیث الانسان سے بمقتضائے اس کی جبلت انسانی کی محث کروں گا۔

اب ہم انسان کا حیوان سے مقابلہ کرتے ہیں اور دیکھتے ہیں کہ انسان بمقابل حیوان کے اس وحی کا کس قدر زیادہ حصہ پانے کا مستحق تھا اور کن کن امور کے لیے ۔

هم انسان اور حیوان دونوں میں بھوک اور پیاس کی خواهش پاتے هیں ۔ مگر دونوں میں یه فرق دیکھتے هیں که حیوانوں کی آس خواهش کے پورا کرنے کا تمام سامان خود خدا نے آن کے لیے مہیا کر دیا ہے خواہ وہ جنگل میں رهتے هوں یا پہاڑ میں خواہ وہ گھاس کھاتے هوں یا دانه چگتے هوں ۔ زمین کے کیڑے مکوڑے کھاتے هوں یا نہایت عمدہ تیار و فربه جانوروں کا گوشت جہاں وہ هیں سب کچھ آن کے لیر مہیا ہے ۔

انسان کے لیے اُس کی اُن خواہشوں کو پورا کرنے کے لیے بغیر اس کی محنت و تدبیر کے کوئی چیز بھی مہیا نہیں یا یوں کہو کہ نہایت ہی کم مہیا ہے ۔ اس کو خود اپنی غذا پیدا کرنی چاہیے جب کہ وہ پانی کے چشموں سے دور ہے تو خود اس کو پانی بھی پیدا کرنا چاہیے ۔

جانوروں کو هم دیکھتے هیں که ان کا لباس خود آن کے ساتھ ہے جو جاڑے اورگرمی میں، تبدیل هوتا رهتا ہے ۔ چھوٹی سی چھوٹی تتریوں کا ایسا خوب صورت لباس ہے که بڑی سے بڑی شہزادی کو بھی نصیب نہیں ،گر انسان ننگا بیدا هوا ہے آس کو خود اپنی تدبیر سے اپنی محنت سے اپنے لیے آپ گرمی و جاڑہ کا لباس پیدا کرنا ہے ۔ سے اپنی محنت سے اپنے لیے آپ گرمی و جاڑہ کا لباس پیدا کرنا ہے ۔ یہ ضرورتیں انسان کی فردا فردا پوری نہیں هو سکتیں ارر اس لیے اس کو اپنے هم جنسوں کے ساتھ جمع هو کر رهنے اور ایک دوسرے سے مدد لینے کی ضرورت پڑتی ہے ۔ بہت قسم کے جانور بھی هیں جو ایک جگه جمع هو کر رهتے هیں مگر ان کو آپس کی استعانت کی حاجت نہیں انسان هی ایک ایسا مخلوق ہے جو اپنے استعانت کی استعانت کا محتاج ہے ۔

اس طرح پر باهم مل کر رهنے کی ضرورت اور بہت سی ضرورتوں کو پیدا کر دیتی ہے۔ اس بات کی ضرورت پیش آنی ہے کہ وہ مجمع آپس میں کس طرح پر برتاؤ اور معاشرت کرے۔ کس طرح اپنے گھروں کو آراسته کریں اور کس طرح آن کا انتظام کریں۔ آن کے قوعل کو جو خدا نے ان میں پیدا کیے ہیں اور جن سے توالد اور تناسل ہوتا ہے کس طرح پر کام میں لا ویں۔ آن مقاصد کے انجام کے لیے کس طرح سرمایه پیدا کریں اور جو پیدا کیا ہے اس کو کس طرح بغیر دوسرے کی مزاحمت کے اپنے صرف میں لا ویں جس سے دوسرے کو نقصان نه پہنچے۔ اس مجمع کا مجموع من حیث میں سے دوسرے کو نقصان نه پہنچے۔ اس مجمع کا مجموع من حیث میں سے دوسرے کو نقصان نه پہنچے۔ اس مجمع کا مجموع من حیث

المجموع کس طرح پر انتظام رہے کسی دوسرے ایسے ہی مجمع کی دست اندازی اور زیادتی سے کس طرح محفوظ رہے ـ

یه ضرورتی انسان میں ایک اور وحی کی دویعت هونے کی ضرورت کو پیش کرتی هیں جس کو عقل انسانی یا عقل کلی سے تعبیر کیا جا سکتا ہے۔ یه وهی دویعت ہے جس سے انسان چند واقعات وقوعی یا مقدمات ذهنی سے ایک نتیجه پیدا کرتا ہے اور جزئیات کی تتبع سے کوئی کلیه قاعدہ بناتا ہے یا قاعدہ کلیه سے جزئیات کو حاصل کرتا ہے۔ ابتداء سے یعنی جب سے که انسان نے انسانی جامه پہنا ہے وہ اس ودیعت کو کام میں لاتا رہا ہے اور جب تک که وہ ہے کام میں لاتا رہے گا۔

یمی ودیعت هے جس نے انسان کو نئی نئی ایجادوں اور حقائق اشیاء کی تحتیقاتوں اور علوم و فنون کے مباحثوں پر قادر کیا هے ۔ یمی وہ ودیعت هے جس سے انسان انبساط کی طرف مائل هوتا هے ۔ وہ غور کرتا هے که کن محسوسی اور ذهنی چیزوں سے وہ خوشی حاصل کر سکتا هے ۔ پهر وہ ان کے جمع کرنے اور ترتیب دینے یہ! ایجاد کرنے میں کوشش کرتا هے ۔ یمی ودیعت هے جس سے انسان کا دل هر ایک واقعه کی نسبت اس طرف مائل هوتا هے کہ یہ کیوں هوا اور پهر اس سےکیا هوگا ۔ یمی ودیعت هے جس کے سبب سے انسان کے دل میں خالق کا ، سزا و جزا کا ، اور معاد خیال پیدا هوتا هے ۔

وہ اپنے چاروں طرف اپنے سے بہت زیادہ قوی ، مہیب و زبردست مخلوقات کو دیکھنا ہے اور اس کے دل میں ایک اعلی اور قوی زبردست وجود کا خیال پیدا ہوتا ہے ۔ اس کے سامنے ایسے واقعات پیش آتے ہیں جن کا ظاہر میں کوئی کرنے والا معلوم نہیں ہوتا ۔ بیاریوں ، دباؤں ، قحطوں میں وہ مبتلا ہوتا ہے ۔ اچھا موسم اور

عمدہ فصلوں اور صحت و تندرستی کا زمانہ اس پر گذرتا ہے۔ اور اس اختلاف کے اسباب سے بہت کم واقف ہوتا ہے وہ اس کو کسی ایسے وجود غیر معلوم سے منسوب کرتا ہے جس کے اختیار میں ان کا کرنا تسلیم کرتا ہے۔ پھر اس غیر معلوم وجود سے خوف کھاتا ہے اور بھلائی کو اس کی خوشی اور برائی کو اس کی خفگی کا سبب فرار دیتا ہے۔ پھر اس غیر معلوم وجود کی خوشی حاصل کرنے اور اس کی خفگی سے بچنے کی تدایریں سوچتا ہے۔ وہ ذکر کرتا ہے کہ آس کی خفگی سے بچنے کی تدایریں سوچتا ہے۔ وہ ذکر کرتا ہے کہ میں کون ہوں اور اخیر میں کیا ہوں گا۔ اور آخرکار اعال کی جزا و سزا کا اور ایک قسم کی معاد کے یقین پر مائل ہوتا ہے۔

یه تمام خیالات جو بذریعه وحی کے یا فطرت کے انسان میں پیدا ہوتے ہیں زمانے کے گذرنے اور آئندہ نسلوں کے آنے اور برابر سنتے رہنے سے دلوں میں ایسے منقش ہو جاتے ہیں که بدیہات سے بھی اس کا درجه زیادہ ہو جاتا ہے۔ اور جس طرح انسان کی عالت کو ترقی ہوتی جاتی ہے آسی طرح آن باتوں کو بھی نسان کی عالت کو سکھائی ہیں ترقی ہوتی رہتی ہے ۔ بلکه آن

نطرتی باتوں کا ترقی پانا ھی انسان کی ترقی کہلاتی ہے ـ

پس جب اس طرح اس انسانی پتلے پر غور کیا جاوے تو سعاوم هوتا ہے کہ یه تمام چیزبی جن کو انبیاء علیه السلام اور حکمائے علیم الرحمه نے دنیا میں قائم کیا ہے اور جن کو هم علم معاش ، علم تمدن ، علم تدبیر منزل ، علم معاشرت ، علم المعاملات والاحکام ، علم الدین یا ادیان ، علم البرو والاثم ، علم المعاد والا خرت سے تعبیر کرتے هیں وهی هیں جن کی خود خدا نے انسان میں وحی ڈالی ہے یا آن کو خود اس کی فطرت میں رکھا ہے۔

یه حقیقت زیاده تر وضاحت اور تعجب انگیز طریقه سے منکشف

هوتی هے جب که تمام دنیا کے انسانوں کو جہاں تک که هم کو آن سے واقفیت هے باوجود آن کی زبان ، آن کی قوم ، ان کے ملک ، ان کی صورت ، ان کی رنگت کے اختلاف کے بہت سی باتوں ہیں متفق پاتے ہیں گو طریقۂ عمل میں کچھ اختلاف هو ۔ مثلاً معبود کا یقین ، اس کی پرستش کا خیال ، موت کے بعد اعہال کی جزا و سزا ، دوسرے جہان کا وجود ۔ کسی هادی یا رہ نمائے روحانی کا هونا دنیاوی معاملات میں تہزوج سرگہروہ کا مقررہ کرنا ۔ اور اس کے دنیاوی معاملات میں ، رحم دلی ، هم دردی ، سچائی کا اچھا سمجھنا ، تابع رهنا ۔ افعال میں ، رحم دلی ، هم دردی ، سچائی کا اچھا سمجھنا ، زنا ، چوری ، قتل ، جھوٹ کو برا جاننا ۔ یه اور اس کے مثل اور بہت سے امور هیں جن میں تمام دنیا کے انسانوں کو متفق پاتے هیں ۔ چند کا ان اتفاقوں میں سے مستثنی هونا ۔ جن کے اسباب بھی جدا هیں اس کلیه کے متناقض نہیں ہے ۔

یه خیال کرنا که ان سب نے ایک ایسے زمانے میں جب که سب یکجا هوں گے ان باتوں کو سیکھا هو کا اور متفق هو جانے کے بعد بھی وہ ان سب باتوں کو اپنے ساتھ لے کئے ایک ایسا خیال ہے جس کا ثبوت نہیں ہے بلکه یوں کہنا چاهیے که نامحن ہے اگر هم تسلیم بھی کر لیں که وہ سب کسی زمانے میں یکجا تھے تو بھی هم یه دیکھتے هیں که ان کی افتراق نے ان کی حالت کو (جو ضرور ہے که بے انتها زمانه کی مفارقت باعث هوئی هوئی) ایسا تبدیل کر دیا ہے که صورت میں ، رنگت میں ، طبیعت میں ، اعضا کی ساخت میں ، آن کے جوڑ بند میں ، آن کی زبان میں ، ایک تبدیل عظیم اقع هوگئی ہے تو یه کیوں کر تسلیم هو سکتا ہے که وہ خود تو بدل گئے مگر جو سبق آنھوں نے سیکھا تھا وہ نسل در نسل نه بمولے ۔ بلکه برخلاف اس کے وہ اس بات کی دلیل هو سکتی ہے بھولے ۔ بلکه برخلاف اس کے وہ اس بات کی دلیل هو سکتی ہے کہ یہ توافق آسی وحی یا فطرت کا باعث ہے جو خدا نے انسان

کو ودیعت کی ہے ۔

مگر خدا نے اس فطرت کو جس کو عم نے عقل انسانی یا عقل کلی سے تعبیر کیا ہے ایسا نہیں بنایا کہ سب میں برابر ہو یا سب میں ایک سا اس کا ظہور ھو بلکہ انسان کے پتلر میں اس کے اعضاء کی بناوٹ اس طور پر بنائی ہے کہ اس فطرت کا ظہور به تقاوت اور با نواع مختلف ہوتا ہے پس اس فطرت سے جس شخص کو اعللي درجه کا حصه اور جس نوع کا دیا جاتا ہے وہ اوروں کے لیے آس نوع کا ہادی اور پیشوا ہو جاتا ہے ۔ شاہ ولی اللہ صاحب نے ایسر شخص کو مفتہمون کے لقب سے ملقب کیا ہے۔ وہ حجته الله البالغه مس " تحت باب حقيقة النبوة و خواصها " ارقام فرماتے میں جس کا ماحصل یہ ھے کہ مفتهمون مختلف استعداد کے اور کئی قسم کے ہوتے ہیں جس کو اکثر خدا کی طرف سے بذریعہ عبادت کے تہذیب نفس کے علوم کا القا ھوتا ھے وہ کامل کہلاتا ھے۔ جس کو آکثر عمدہ اخلاق اور تدبیر منزل کے علوم کا القا ہوتا ہے وہ حکیم کہلاتا ہے جس کو سیاست کے امورکا القا ہوتا ہے اور وہ اُس کو عمل میں لا سکتا ہے وہ خلیفہ کہلاتا ہے۔ جس کو ملاء اعلیٰ سے تعلیم هوتی هے اور اس سے کرامتیں ظاهر هوتی هیں وہ سوئید بروح القدس کہ لاتا ہے۔ اور جس کے دل میں اور زبان میں نور ہوتا ہے اور اُس کی نصیحت سے لوگ فائدہ اُٹھاتے ہیں اور اس کے حواربوں اور مریدوں پر بھی نور و سیکته نازل ہوتا ہے وہ ہادی اور مزکی کہلاتا ہے ۔ اور جو قواعد ملت کا زیادہ جاننر والا ہوتا ہے وہ امام کہلاتا ہے۔ اور جس کے دل ہیں کسی قوم پر آنے والی مصیبت کی خبر ڈال دی جاتی ہے جس کی وہ بیش گوئی ۔ کرتا ہے یا قس وحشر کے حالات کا اس پر انکشاف ہوتا ہے اور وہ آس کا وعظ لوگوں کو سناتا ہے وہ سنذر کہلاتا ہے۔ اور جب خدا اپنی حکمت سے مفتهمین میں سے کسی بڑے شخص کو مبعوث کرتا ہے تاکہ لوگوں کو ظلمات سے نور میں لا وے تو وہ نبی کہلاتا ہے۔ "بہر حال شاہ صاحب نے اس مطلب کو کسی لفظوں سے اور ہم نے کسی لفظوں سے تعبیر کیا ہو نتیجہ واحد ہے کہ انسانوں ہی میں سے جس درجہ اور جس نوع کی فطرت یا وحی خدا نے جس انسان میں ودیعت کی ہے وہ اروروں نے لیے اس نوع کا هادی یا رهنا ہوتا ہے جس میں خدا نے اعلی درجہ کی تہذیب نفس کی فطرت پیدا کی ہے خواہ اس کو آنہی لفظوں سے تعبیر کرو خواہ " وما ینطق عن الهوی ان ہو الا وحی یو حی ۔ کے لفظوں سے وہ نبی ہوتا ہے گو کہ وہ اپنی ماں کے پیٹ ہی میں کیوں نہ ہو۔

پس اب ایسی مخلوق کی نسبت جس میں خدا نے اس قدر کاموں اور متعدد درجوں کی فطرت پیدا کی هو خیال کرو که وہ کیا کرے گی ۔ ضرور ہے کہ وہ اپنی تمدنی فطرت کے مفتضا سے ایک جگہ اکثنا ہو کر رہے گی ۔ اپنے مافیالضمیر کے اظہار کے لیے ایسی معین آوازیں ظاہر کرے گی جو اس کے مافیالضمیر پر دال ہوں ۔ جس طرح اس کو مافی الضمیر کے اظہار کی زیادہ ضرورت پیش آتی جاوے گی آن آوازوں کی بھی کثرت اور آن میں تنوع اور اشتقاق پیدا ہوتا جاوے گی ۔ رفتہ رفتہ وہ اس گروہ کی زبان قرار پاوے گی اور علم لغت اور علم اشتقاق اور صرف و نحو اور فصاحت پاوے گی ۔

وہ سب اپنی زندگی بسر کرنے کے سامان ممیا کرنے کی فکر کریں گے دریاؤں اور ندیوں اور چشموں کے مقامات کو پانی میسر آنے کے لیے تلاش کریں گے اگر وہ ایسا موقع نه پاویں گے تو زمین کھود کر پانی نکالیں گے ایک غریب بےکس عورت بھی اپنے

چه کے لیے بانی کی تلاش میں ادھر آدھر دوڑتی پھرے گی گو کہ چند روز جنگل کی اتفاقیہ پیداوار پر وہ اپنی زندگی بسر کریں مگر غله پیدا کرنے پر کوشش کریں گے زمین کو پھاڑیں گے اگر کدال میسر نه ھوگی تو درخت کے سوکھے نوک دار تنه ھی سے به ھزار مشقت زمین چیریں گے اور بیج ڈالیں گے ۔ بدن ڈھانکنے کی کوشش کریں گے ۔ درختوں کے پتے ھی لپیٹیں گے جانوروں کی کھالوں کے ته بند باندھیں گے اپنے کھیت سے میں دوسرے کو نه آنے دیں گے اپنے غله کی حفاظت چرند پرندے انسان سے ھر طرح پر کریں گے ۔ وقته رفته زراعت کے قواعد اور حقوق کی بنیاد اور اس کے قوانین قائیم شو جاویں گے اور جس طرح اس کو ترق ھوتی جاوے گی آسی طرح ان سب باتوں میں جو معاش کے ذریعے ھیں ترق ھوتی رھیگی یہاں تک کہ انگوری باغ لگا ویں گے اور اس سے شراب بناویں گے اور اس کے دریعے ھیں کر بدست ھو جاویں گے اور اس سے شراب بناویں گے اور اس

وہ اپنی بود و باش کی فکر کریں گے مکانات بنا ویں گے۔
کالا کمبل تان کر یا سرکنڈے اور بانسی جمع کر کے یا اینٹ اور
گرہ بنا کر اور اس طرح مجتمع ہو کر گاؤں اور قصبے اور شہر آباد
کریں گے رفتہ رفتہ اس میں ترقی کرتے جاویں گے یہاں تک کہ
قصر حمرا اور محل بیضا اور کرسٹل بیلس اور شیش محل بنا کر آس

وہ اپنے گھروں کی درستی اور آبادی کی تدبیریں سوچیں گے فرزندوں کی خواهش مونس غمگسار کی آرزو کو بورا کریں گے تزوج کے قواعد اولاد کی پرورش کے طریقے اُن کے حقوق اُن کے ساتھ سلوک کے ظریقے قرار دیں گے؛ جو رفتہ رفتہ ایسی ترقی پاویں گے کہ علوم کا درجہ حاصل کریں گے اور علم تدبیر منزل کے نام سے موسوم ہوں گے ۔

وہ اپنے گروہ میں راہ و رسم کے طریقے اخلاق اور درستی اور محبت اور ہمدردی کے قاعدے ایجاد کریں گے رسم و رواج قائم کریں گے خوشی اور انبساط حاصل کرنے کے سامان مہیا کریں گے اور وہ تمام چیزیں رفتہ رفتہ علم اخلاق و معاشرت کا درجہ حاصل کریں گی۔

وہ اس مجع کی حفاظت کی اور آس سیں انتظام قائم کرنے اور سب کے حقوق محفوظ رہنے کی فکر سیں پڑیں گے آس کے لیے قوانین تجویز کریں گے اور آس کے نفاذ کے لیے کسی کو اپنا سردار بناویں گے اور رفته رفته سلیان کی سی بادشاهت اور عمر کی سی خلافت قائم کریں گے اور وہی قوانین ترقی پاتے پاتے علم سیاست مدن کا رتبه حاصل کریں گے۔

فطرت کے تفاوت درجات کے موافق انہی میں سے وہ لوگ پیدا هوں گے جن کو شاہ ولی اللہ صاحب نے کاسل ، حکیم ، خلیفه ، موید بروح القدس ، هادی و مزکی ، امام منذر ، نبی ، کے لقب سے ملقب کیا ہے اور اس زمانے کے بے اعتقادوں نے رفارم ، ان کا نام رکھا ہے۔ اور انہیں کی نسبت خدا نے یہ فرمایا ہے ، ''هو الذی بعث فی الامین رسولا منہم ۔''

شاہ صاحب فرماتے ہیں کہ بعثت انبیاء کا کوئی نہ کوئی سبب ہوتا ہے یا تو یہ ہوتا ہے کہ ایک دولت (یعنی حکومت یا سلطنت) کے ابتدائے ظہور کا اور اس سے اور دولتوں کے زوال کا وقت آ پہنچتا ہے آس وقت خدا اس دولت کے لوگوں کے دین کو قائم رکھنے کے لیے کسی کو مبعوث کرتا ہے جس طرح کہ ہارے سردار مجد صلی اللہ علیہ وسلم کی بعثت ہوئی (نعوذ با للہ ولیس اعتقادی ہذا) یا خدا تعالیٰی کسی قوم کا بقا اور تمام انسانوں پر اس کا برگزیدہ کرنا چاہتا ہے آس وقت کسی کو مبعوث کرتا ہے

جو آن کی کجی کو سیدھا کرے اور کتاب آن کو سکھا وہے جس طرح کہ ھارے سردار موسلی علیہ السلام کی بعثت ھوئی یا کسی قوم کے منتظم کرنے کے لیے جس کی دولت و دین کی پائے داری قرار پا چکی ہے کسی مجدد کے مبعوث کرنے کی ضرورت ھوتی ہے جیسے کہ داؤود و سلیان اور تمام انبیائے بنی اسرائیل کی بعثت ھوئی جن کو خدا نے آن کے دشمنوں پر فتح دی ۔ شاہ صاحب نے جو کچھ فرمایا یہ آن کا استنباط ہے مگر ھارا یہ عقیدہ نہیں ہے ۔ میں یقین کرتا ھوں کہ بعثت انبیاء صرف تہذیب نفس انسانی کے لیے میں یقین کرتا ھوں کہ بعثت انبیاء صرف تہذیب نفس انسانی کے لیے ۔

بہر حال یہ تمام واقعات وہ هیں جو از روئے قاعدۂ فطرت انسان پر گزرتے هیں اور انسان هر ایک کام میں کسی نه کسی کو اپنا هادی اور بیشوا اور راہ تما قائم کرتا هے آس وقت هاری بحث آن لوگوں سے متعلق نہیں هے جو عموماً مختلف قسم کے علوم و فنون و سعارف و سکاسب میں هادی و پیشوا اور راہ نما قرار پاتے هیں بلکه صرف آسی هادی سے متعلق هے جو تہذیب نفس انسانی کے لیے پیشوا اور هادی هوتا هے ۔

ایسا هادی جس میں اس قسم کی هدایت کی کامل فطرت هوتی هے وهی نبی هوتا هے اور وهی فطرت ، ملکه نبوت ، مانوس اکبر ، جبرئیل اعظم کے لقب سے ملقب کی جاتی هے ۔ وه کسی بات کو سوچتا هے اور کچھ نہیں جانتا ۔ دفعة اس کے دل میں بغیر کسی ظاهری اسباب کے ایک القا هوتا هے اور قالب کو ایک صدمه اس کے القاء سے محسوس هوتا هے جیسے که اوپر سے کسی چیز کے گرنے سے صدمه هوتا هے یا اس قسم کا ایک انکشاف اس کے دل پر هوتا هے جو سچ مچ وه جانتا هے که تمام حجاب اٹھ گئے هیں اور جس کی میں تلاش میں تھا مثل سپیدۂ دم صحیح سیرے سامنے سوجود

هے شاید مختلف حالات و معاملات میں اوروں کو بھی ایسا ھوتا ھو مگر جب آس شخص میں دو صفتیں تسلیم کر لی گئی ھیں ایک فطرت کا کامل ھونا اور دوسرے آس فطرت کا تہذیب نفس انسانی سے مخصوص ھونا تو لازمی نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ اس کا وہ القا یا وحی خواہ جبرئیل لے کر آیا ھو یا خود وہ ملکۂ نبوت ھی آس میں اور خدا میں ایلچی بنا ھو اور فطرت اللہ کے مطابق ہے ۔ اگر بحث رہ جاتی خدا میں ایلچی بنا ھو اور فطرت اللہ کے مطابق ہے ۔ اگر بحث رہ جاتی ہے تو اسی قدر رہ جاتی ہے کہ وہ شخص فی الواقع ایسا ھی ہے کہ نہیں ۔

تہذیب نفس سے بلاشبہ مت امور متعلق هوں کے لیکن آن سب میں ضرور کوئی ایسا امر بھی ہوگا جو اصل اصول تہذیب نفس انسانی کا هو اور وہ اصول مقتضائے فطرت انسانی وہ ھے حس کے خود انسانی فطرت نے قائم کیا ہے بعنی وجود اعلمٰی اور قوی زبردست وجود کا۔ اس مقام پر ہم اس محث کو کہ اسی اس کو ہم نے کیوں اصل اصول تہذیب نفس انسانی قرار دیا ہے چھوڑ دیتر ھس تا کہ خلط محث نہ ہو جائے پھر کسی مقام پر اس سے محث کریں گے اور اس لیر یه تسلم امر سزکوره کهتر هس که ضرور اس هادی کا سب سے بڑا اور سب سے مقدم کام آس سب سے اعلٰیی اور سب سے قوی اور سب سے زبردست ہمہ قدرت وجود کی طرف ہدایت کرنا ہوگا اور حب که وه کامل فطرت سے هدایت هوگی تو تمام کامل فطرت ركهنر والر هاديوں كو اس سن اختلاف نه هوگا اور وهي فطرت الله اور دین اللہ ہوگا اور اور اسور جسو آس کے ستعلق ہیں طریقر یا اس میں رسمیں یا مصالح ہوں گے جن کو اب ہم شرائع کے نام سے موسوم کرتے ہیں پس تمام انبیاء کا جب سے انبیاء ہوئے دین واحد تھا اصل دین میں کچھ تفاوت نہ تھا ۔ خدا فرساتا ہے ، شرع لکم من اللدين سا وصلى به نوحاً والذي اوحينا اليك وسا

وصینا به ابراهیم و موسلی و عیسلی (الشوری آیت ، ،) اور ایک جگه فرمایا هے '' لکل جعلنا منکم شرعة و منهاجا''۔ (مانده آیت ۵۰)

بلحاظ آن فطرتوں کے جو خدا نے انسان میں پیدا کی ھیں شاہ ولی اللہ صاحب بھی اس بات کے قائل ھوئے ھیں کہ انسان کا ان کو ترک کرنا محال ہے اور بہت سے اسور میں ایک ایسے حکیم کے محتاج ھیں جو تمام ضرورتوں سے واقف ھو اور مصالح تدبیر جانتا ھو خواہ بذریعہ فکر و درآیت کے خواہ اس طرح پر کہ خدا تعالیٰ نے اس کی جبلت میں قوت ملکیہ رکھی ھو اور ملاء اعلیٰ سے اس پر علوم نازل ھوتے ھیں۔

پھر وہ لکھتے ھیں کہ انسانوں میں جو رسمیں قائم ھو جاتی ھیں ان میں اکثر بہ سبب قوم کے سرداروں کی نادانی سے خرابیاں پڑ جاتی ھیں اور نفسیاتی خواھشوں اور شیطانی حرکتوں تک پہنچ جاتی ھیں اور بہت سے لوگ اس کی پیروی کرنے لگتے ھیں اور اس لیے ایک ایسے شخص کی حاجت ھوتی ہے جو غیب سے موید ھو اور مصالح کلیہ کا پابند ھوتا کہ رسومات بد کو مٹا دے اور ایسا شخص موید بروح القدس ھوتا ہے ۔

پھر وہ ارقام فرماتے ھیں کہ انبیاء کی بعثت اگرچہ در اصل اور بالتخصیص عبادت کے طریقوں کی تعلیم کرنے کے لیے ھوتی ھے مگر بعد کو اس کے ساتھ رسومات بد کا دور کرنا بھی شامل ھو جاتا ھے ۔ یہ بات ذرا تفصیل طلب ھے اگر شاہ صاحب کی مراد آن رسوم بد سے ھے جو عبادت اور تہذیب نفس انسانی سے متعلق ھیں

ر حجة الله السالغه باب اقامة الاتنفاقات و اصلاح السرسوم ـ عد اگر شاه صاحب بجائے غیب کے فطرة اللہ کا لفظ استعمال فرواتے تو مطلب بالکل صاف ہو جاتا ـ (سید احمد)

تو سلمنا اور اگر مراد آن رسوم کی اصلاح سے بھی ہے جو محض دنیاوی امور سے متعلق ہیں تو ہم اس کو نہیں قبول کر سکتے کیوں که نبوت کو محض دنیاوی امور سے کچھ تعلق نہیں ہے اور قصه تابیر نخل اور یه الفاظ که "انتہ اعلم با مور دنیا کم" اور یه حدیث من احدث فی امرنا هذا سالیس منه فهو رد ایک بهت بڑی دلیل هاری اس مدعا پر ہے۔

تمام رسومات و عادات اور طریقے جو انسانوں میں بمقتضائے آن کی فطرت کے قائم ہو جاتے ہیں وہ چار اقسام پر منقسم ہیں۔

اول ۔ جو خدا کی ذات و صفات سے متعلق ہیں یعنی اس قوت اعلیٰ کے وجود سے جس کو انسانوں نے بمتنضائے اپنی فطرت کے تسلیم کیا ہے ۔

دوم ۔ اُس کی عبادت کے طریقوں سے جو لوگوں نے بمقتضائے فطرت انسانی اس کے لیے قرار دیے ہیں اور یہی امور وہ ہیں جن پر دین کا اطلاق ہوتا ہے ۔

سوم ـ وه امور هیں جو تهذیب نفس انسانی سے علاقه رکھتے هیں اور جن کو نوع انسانی نے بطور بدیهات کے حسن یا قبیح قرار دے رکھا ہے ـ مثلاً زنا ، قتل ، سرقه ، کذب ـ وغیره کے تمام نوع انسان کے نزدیک قبیح هیں گو که کسی فرقه نے زنا یا قتل و سرقه و کذب کی حقیقت قرار دینے میں غلطی کی هو یا جیسے صداقت ، رحم ، هم دردی کی تمام نوع انسانی کے نزدیک حسن هے گو که کسی سے اس کی حد صحیح طور پر بیان نه هو سکی هو ۔ آنهی اسور سه گانه کی نسبت جـو طریقے قرار پاتے هیں ان کا نام شریعت هے۔

چہارم ۔ وہ امور هیں جو محض دنیاوی امور سے تعلق رکھتے هیں وہ نه دبن هیں اور نه انبیاء که من حییث اللہ بموة آن سے کچھ تعلق هے ۔ اسی میں وہ تمام مسائل بھی داخل هیں جو علوم و فنون اور تحقیقات حقائق اشیاء سے علاقه رکھتے هیں گو که انبیاء نے

آن امورکا ذکر اس طرز یا الفاظ میں کـیا ہو جس طرح پر آس زمانہ کے لوگوںکا یقین یا آن کی معلومات تھیں ـ

شاہ ولی اللہ صاحب نے اس سبحث کی زیادہ تفصیل کی ھے اور ہت اچھی کی ھے وہ فرماتے ھس که وہ چیز حو انساء اس باب میں قاطبتہ خدا کے پاس سے لاتے میں وہ یہ ہے کہ دیکھا جاوے کہ کھانے پینر اور لباس اور مکان بنانے اور زیب و زینت کرنے اور نکاح شادی بیاہ کرنے اور خرید و فروخت کرنے اور گناہ گاروں کے سزا دینر اور تنازعات کے فیصل کرنے ، ی آس وقت کے لو گوں میں کیا عادتیں اور اس میں مروج ہیں بھر اگر وہ سب باتس عقل کنی کے مطابق و مناسب هیں تو ان کے ادل بدل کرنے کے کوئی سعنی نہیں ہیں بلکہ ضرور ہے کہ لوگوں کو آسی پر قانم رہنر کے لیر برانگیختہ کیا جاوے اور اُس باب میں اُن کی تصویب کی حاومے اور آن کی خوبیاں بتلائی حاویں اور اگر وہ مطابق نہ ہوں اور ان کے رد و بدل کی حاجت ھو کیوں کہ وہ دوسروں کو ایذا ہنچاتی هیں یا لذات دنیا میں ڈال دیتی هیں اور نیکی سے باز رکھتی ھی اور دین و دنیا سے بے فکر کر دیتی ھی آس وقت بھی کوئی ایسی بات نہیں نکالی جاتی جو بالکل ان کے مالوفہ اور کے برخلاف ہو بلکہ جو اگلی مثالی ان لوگوں کے ھاں ھیں اور جو اچھر لوگ آن لوگوں کے نزدیک گذرہے میں آن کی طرف آن کو پہیرا حاتا ہے اور جب وہ اُس طرف مائل ہوتے ہیں تو اُن کو ٹھیک بات بتائی جاتی ہے اور ان کی عقلی اس کو نا مقبول نہیں کرتیں بلکہ اُن کے دلوں کو طانیت ہو جاتی ہے کہ یہی سچ ہے ۔ اور یہی سبب ہے که انبیاء علیهم السلام کی شریعتین مختلف هیں ـ جـو لوگ راسخ فی العلم هیں جانتے هیں که شرع میں در باب نکاح اور طلاق اور معاملات اور زیب و زینت اور لباس اور الفصال مقدمات اور حدود

اور لوٹ مار کے مال کی تقسم کے کوئی ایسی بات نہیں آئی ہے جو اس وقت کے لوگ اس کو نہ جانتر ہوں یا اُس کے کرنے سے تردد میں پٹر جاویں جب اس کے کرنے کا حکم هو هاں یه هوا هے که جس میں جو خرابی تھی وہ درست کر دی گئی اور غلط کو صحیح کر دیا ۔ آن لوگوں سی سود خوری ہت تھی اس کو سنع کر دیا ۔ وہ پھل آنے سے پہلر صرف پھول آنے پر میوہ بیچ ڈالتے تھے اور پھر اس میں جھگڑا ہوتا تھا۔اس کو سنع کر دیا۔ دیت یعنی خون ہما عبدالمطلب کے وقت میں دس اونٹ تھر پھر قوم نے دیکھاکہ قتل سے باز نہیں رھتر تو سو اونٹ دیت کر دیے ۔ اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے آسی کو قائم رکھا ۔ پہلر پہل مال غنیمت کی تقسم ابی طالب کے حکم سے ہوئی اور رئیس قوم کے لیر بھی حصه قرار پایا ۔ آنحضرت صلی اللہ علیه وسلم نے خمس جاری کیا۔ شاہان فارس یعنی قباد اور اس کے بیٹے نوشیروان نے خراج اور عشر لوگوں پر مقرر کیا تھا شرع میں بھی یہی قرار دیا گیا۔ بنی اسرائیل زنا کے جرم میں رجم کرتے تھے چوروں کے ھاتھ کاٹتر تھے (ہودیوں میں ھاتھ کاٹنر کی رسم نہ تھی بلکہ عرب میں تھی) جان کے بدلر جان مارتے تھر ۔ قرآن میں بھی ہی حکم نازل ھوا (رجم قرآن میں نہیں ہے) اور اسی طرح کی بہت سی مثالیں ہیں جو تلاش کرنے والے سے مخفی نہیں ہیں بلکہ اگر تبو فطین یعنی پوری سمجھ کا ہے اور تمام احکام کے مراتب پر محیط ہے تو ُتو یہ بھی جانے گا کہ '' انبیاء علیہ السلام عبادات میں بھی اُس کے سوا جو قوم کے پاس تھا بعینہ اس کی نظیر کے اور کچھ نہیں لائے ''۔ لیکن انہوں نے جاہلیت کی تحریفات کو دور کر دیا اور جو سبھم تھا اس کو اوقات و ارکان کے ساتھ ضبط کر دیا اور حو ٹھیک تھا اس کو لوگوں سی پھیلا دیا (انتہلی)

يه مضمون شاه ولى الله صاحب كا قريب قريب ايسر مضمون کے ہے جو اس زمانہ کے لوگوں کے خیال میں ہے اور حن کو هارے زمانه کے علماء اور مقدس لوگ کافر و ملحد اور می تدو زندیق كهتر هي گو كه وه لا اله الا الله عدرسول الله و ساحاء به پر بھی یقین رکھتر ہوں مگر نہیں معلوم کہ وہ لوگ شاہ ولی اللہ صاحب کو کیا کہتر ہیں جو اس بات کے قائل ہیں کہ انبیاء عبادات میں بھی کوئی نئی چیز نہیں لائے ہر حال شاہ صاحب نے حو محض دنیاوی امور کو بھی مذھب یا شریعت میں شامل کر لیا ہے ہے اس کو تسلیم نہیں کرتے ۔ دین جیسا کہ اوپر بیان ہوا مرور ایام سے تبدیل نہیں ہو سکتا لیکن دنیاوی معاملات وقتاً فوقتاً تبدیل ھوتے رھتے ھیں اور وہ کسی طرح ابدی خدا کی جانب سے صورت خاص کے محکوم نہیں ہو سکتر اگر یہ کہو کہ جب اصول آن کے محفوظ میں تو حوادث جدید کے احکام علمائے اسلام جو کا انسباء بنی اسرائیل میں استنباط کر سکس کے تو مم یه کہی کے کہ علماء و قوہن ہود کے اور قسیس و رہبان عیسائی مذہب کے بھی علم س کچھ کے درجہ نہیں رکھتر تھر۔ اگر انھوں نے دنیاوی احکام مس غلطی کی توکیا وجه هےکه یه غلطی نه کریں گے۔ اور اگر دنیاوی احکام بھی داخل نبوت میں تو کیا وجه هوگی که آن غلطیوں کی وجہ سے تو انبیاء کے مبعوث ہونے کی ضرورت ہو اور ان کی غلطی کے سبب نه هو۔ خصوصاً ایسی صورت میں که توریت مقدس میں جس قدر دنیاوی امور کا تذکرہ ہے آس کا عشر عشیر بھی قرآن محید میں نہیں ھے ۔

یه مباحث نهایت طویل هیں اور یه مقام آن سب کے بیان کی گنجائش نهیں رکھتا مگر اس تمام بحث سے یه نتیجه حاصل هوا که انسانوں میں بموجب فطرت انسانی کے کوئی نه کوئی ان کا هادی

هو حاتا هے ۔ اگر خدا نے اس کو فطرت کامل اور وحی اکمل عطا فرمائی هے تو وہ سچا هادی هوتا هے جس کی نسبت خدا نے فرمایا هے '' لکل قدوم هاد'' يس حو گروه كسي شخص كو دين و شريعت كا هادی سمجهتی ہے اُس کی بزرگی و تقدس کا اعتقاد بھی اعلٰی درجه پر رکھتی ہے جس کا نتیجہ سوافق فطرت انسانی کے یہ ہوتا ہے کہ انسانوں سے اس کو برتر درجہ دیا جاتا ہے ہاں تک کہ ابن اللہ یا محیط ذات اله (یعنی اوتار) یتین کیا جاتا ہے اور کم سے کم یه ھے کہ آس میں ایسر اوصاف اور کے رامتیں اور معجزے تسلیم کیے جاتے میں جن سے نوع انسان سے آس کو برتری حاصل هو معمولی واقعات اور حادثات کر جو قانون فطرت کے مطابق واقع هوتے رهتر هيں ـ جب آس كي طرف منسوب هوتے هيں تو وه اس كي کرامت اور معجزہ قرار پاتے ہیں مثلاً اگر ایک عام آدسی کسی کو بد دعا دے کہ تجھ پر مجلی گرے اور اتفاق سے وہ مجلی سے مارا جائے تو کسی کو کچھ خیال بھی نه هو ۔ لیکن اگر وہ بدعا کسی ایسے شخص نے دی ہو جس کے تقدس کا خیال لو کوں کے دلوں میں هو تو اس کی کرامت یا معجزہ سے منسوب هے حاتی هے۔ ہت سی باتس ہوتی ہیں کہ آن لوگوں سے جن کے تقدس کا خیال ھوتا <u>ھے</u> اسی طرح سرزد ھوتی ھیں۔ جیسے کہ عام انسانوں سے۔ مگر مقدس لو کوں سے سرزد ہونے کے سبب آن کی قدر و منزلت زیادہ کی جاتی ہے اور سعجزے و کرامات کے درجہ پر پہنچا دیا جاتا ھے ۔ انسان میں بعض ایسی قوتیں ھیں جو خاص طریقه مجاھدہ سے قوی ہو جاتی ہیں اور کسی میں مقتضائے خلقت قوی ہوتی ہیں اور آن سے ایسر امور ظہور پاتے ہیں جو عام انسانوں سے جنھوں نے ان قوتوں کو قوی نہیں کیا ہے ظہور نہیں پاتے حالاں کہ وہ سب باتیں اسی طرح ہوتی ہیں جس طرح کہ اور امور حسب مقتضائے

فطرت انسانی واقع ہوتے ہیں مگر وہ بھی ان مقدس شخصوں کے معجزے و کـرامات شار ہوتے ہیں ہت عجیب باتیں افواہاً ایسر بزرگوں کی نسبت مشہور ہو جاتی ہیں جن کی درحقیقت کچھ اصل نہیں ہوتی ۔ سگر لوگ آن بزرگوں کے تقدس کے خیال سے ایسر موثر ھوتے ھیں کہ اس کی اصلیت کی تحقیق کی طرف متوجہ نہیں ھوتے اور بے تحقیق اس پر یقین کر لیتے هیں ـ یہی سبب هے که انبیائے سابقین علیهم السلام کے تمام واقعات کو لوگوں نے ایسر طور پر بیان کیا ہے جن کا واقع ہونا ایک عجیب طریقہ سے ظاہر ہو اور پھر انھی*ں کو اُن کے معجزے ق*رار دیے ھیں اور بعضی ایسی باتیں منسوب جن کا کچھ ثبوت نہیں ۔ انھی غلط خیالات کے سبب لوگوں نے انبیاء علیھم السلام سے انکار کیا ہے ۔ چناں چہ قوم نوح قوم عاد قوم ثمود نے انبیاء کے انکار کرنے کی یہی وجہ بیان کی ہے كه '' ان انتم الا بشر سشلنا '' پس انهى غلط خيالات كى وجه تھی کہ مشرکین عرب بھی آنحضرت صلی اللہ علیه وسلم سے معجزوں کے طلب گار ہوئے تھے کبھی یہ کہتے تھے کہ اگر یہ پیغمبر ہیں تو کیوں نہیں ان کے پاس فرشتر آتے ، کیوں نہیں ان کے پاس خزانه اتارا گیا ـ كبهى يه كهتے تهےكه يه تو عام انسانوں كى طرح کھاتے پیتے ہیں بازاروں میں پڑے پھرتے ہیں یعنی انسانوں سے زیادہ کوئی بیات ان میں نہیں ہے۔ کبھی آسان سے پتھر برسوانے چاہتر تھے۔ کبھی آسان کا ٹکڑا ٹوٹ کر گرنے کی خواہش کرتے تھے۔ وحدانیت ثلاثه کا ایک رکن جو توحید فی الصفات ہے اُس کی تکمیل کے لیر اس قسم کے خیالات کا مثانا ضرور تھا اس لبر جا مجا قرآن مجید میں معجزات کی نفی آئی ہے ۔ خدا تعاللی نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو حکم دیا کہ قال انما انا بشر مثلکم یوحلٰی التی انما الله كم اله واحد (سورة كهف آيت ١١٠) ترجمه ـ "يعني لوگوں سے کہد دے کہ اس کے سواکچھ نہیں کہ میں انسان ھوں

مثل تمہارے ، مجھ کو وحی دی گئی ہے کہ یہی ٹھیک بات ہے کہ تمہارا خدا خدائے واحد ہے'' اور دوسری جگه یه حکم دیا که ''قل لا املک لنفسی نفعا ولا ضرا الا ما شاء الله ولو کنت اعلم الغیب لاستکثرت من الخیر وما مسنی السوء ان انا الا نذیر و بشیر لقوم یومنون (سورۂ اعراف آیت ۱۸۸۰) ترجمه ۔ '' یعنی لوگوں سے کہه دے که میں مالک نہیں ھوں اپنے لیے کسی نفع یا ضرر کا بهجز اس کے که جو چاہے الله اور اگر میں غیب کا عالم ھوتا تو میں بھلائیوں کو به کثرت حاصل کر لیتا اور برائی مجھ کو چھوتی بھی نہیں ۔ میں تو به کثرت حاصل کر لیتا اور برائی مجھ کو چھوتی بھی نہیں ۔ میں تو ان لوگوں کو جو ایمان لائے ھیں ڈرانے والے اور خوش خبری دینے والے کے سوا اور کچھ نہیں ہوں'' ۔

کافروں نے آنح ضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے معجز سے طلب کیر اور صاف صاف كما كه '' و قالوا لن نـومن لك حتلي تفجرلنا من الارض ينبوعا او تكون لك حنة سن نخيل وعنب قتفجر الانهار خلالها تفجيرا او تسقط الماء كل زعمت علينا كسفا اوتاني بالله و سلائكته قبيلا ا و يكون لك بيتا من زخرف او تـرقى في السياء و لن نـو مـن لرقـيك حتى تــنزل عــليــنا كــتا بــا نقروه٬ قــل سبحان ربى هــل كنت الا بشرأ رسـولان (سـورهٔ بنی اسرائـیل آیت ۹۲–۹۵) ترجمه ـ یعنی هم هرگز تجھ پر ایمان نہیں لانے کے جب تک که تو زمین پھاڑ کر ھارے لیر چشمے نہ نکالے، یا تیرے پاس کھجور و انگور کا باغ ہو جس کے بیچ سی تو بہتی ہوئی نہریں نکالے زور سے بہتی ہوئی یا تو ہم پر جیسا که تو سمجهتا هے آسان کے ٹکڑے ڈالے ، یا خدا اور فرشتوں کو اپنے ساتھ لا وے یا تیرے لیے کوئی مزین کھر ہو ، یا تو آسان پر چڑھ جاوے اور ہم تو تیرے منتر پر ہرگز ایمان نہیں لانے کے جب تک که هم پر ایسی کتاب آترے جو هم پڑھ لیں ۔ مگر باوجود اس قدر اصرار کے جو کافروں نے معجزوں کے طلب میں کیا

اور بغیر ایسے معجزوں کے ایمان لانے سے شدید انکار کیا اُس پر بھی خدا نے اپنے پیغیر سے یہی فرمایا که '' تو اُن سے کہه دے که پاک ہے میرا پروردگار میں تو کچھ نہیں ھوں مگر ایک انسان بھیجا ھوا یعنی رسول ۔''

ایک اور جگه ہے که "الولا انزل علیه آیات من ربه قل انما الایت عند الله و انما انا ندنیر مبین (سورهٔ عنکبوت آیت هم) ترجمه بعنی کافروں نے کہا ،کیوں نہیں اتاری گئی اس پر یعنی پیغبر پر نشانیاں یعنی معجزے اس کے جواب میں خدا نے پیغبر سے کہا که تو یه کہه دے که بات یه ہے که نشانیاں یعنی معجزے تو خدا کے پاس هیں اور اس کے سوا کچھ نہیں که میں تو علانیه ڈرانے والا هوں ۔

آنحضرت صلى الله عليه وسلم کے پاس جو افضل الانبيائے و الرسل ھیں سعجزہ نه ھونے کے بیان سے ضمناً یه بھی ثابت ھوتا ھے که انبیائے سابقین علیہ السلام کے یاس بھی کوئی سعجزہ نہیں تھا اور جن واقعات کو لوگ معجزہ (متعارف معنوں میں) سمجھتے تھے درحقيقت وه معجزات نه تهر بلكه وه واقعات تهر جو مطابق قانون قدرت كو واقع هوئے تهر ـ خاتم النبين عليه الصلواة والسلام نے جو اس بات کو کھول دیا اور چھیا لکا نہیں رکھا اس کا اصلی سبب یہ ہے کہ بڑا جزو اسلام کا جس کے سبب اُس کو خطاب الـيـوم اكـملـت لـكم ديـنكـم "كاملا اور جس كى وجـه سے محد رسول الله صلى الله عليه وسلم خاتم النبين هوئے وہ صرف تكميل تلقین توحید ذات باری کی ہے جو توحید ثلاثه میں منحصر ہے۔ يعني تروحيد في الـذات تـوحـيد في الـصـفات، تـوحـيد في العبادت، انبيائے عليه السلام مس معجزات كا (على المعنى المتعارفته) يا اولیاء الله میں کرامت کا یقین کرنا (گو که اعتقاد کیا حاوے که خدا هي نے وہ قدرت يا صفت آن میں دی هے) توحيد في الصفات کو نا مکمل کر دیتا ہے۔ کوئی عزت اور کوئی بزرگی اور کوئی تقدس اور کوئی صداقت اسلام کی اور با نئے اسلام کی اس سے زیادہ نہیں ہو سکتی جو اس نے بغیر کسی لاؤلیٹ کے اور بغیر کسی دھوکا دینے کے اور بغیر کسی کرشمہ و کرتوت کا دعوی کرنے کے صاف صاف لوگوں کو بتا دیا کہ معجزے و عجزے تو خدا کے پاس ہیں میں تو مثل تمہارے ایک انسان ہوں ۔ خدا نے میرے دل میں جو وحی ڈالی ہے اس کی میں تم کو تلقین کرتا ہوں ۔ صلی اللہ علی جد خاتم النبین و حبیب رب العالمین ۔

قرآن کریم کس لحاظ سے معجزہ ھے

اس مضمون میں سرسید نے اس امر سے محث کی ھے که قرآن کری میں جو یه آیا ہے که اے لو گو اگر تمہیں اس بات میں شک ہے کہ مجد نے یہ کلام خود بنا لیا ہے اور خدا کی طرف سے نہیں ہے تو تم بھی فاتوا بـسـورة مـن مـشلـه _ ايسى هي ايك سورت بنا لاؤ _ سرسید کہتر میں کہ اس کا یہ سطلب نہیں ھے کہ فصاحت و بلاغت میں کوئی اس کی مثل نہیں لا سکرگا۔ بلکه مطلب یه هے که جیسی هدایت اور نصیحت کی باتس قرآن یاک میں موجود هیں ایسی اور کسی کتاب میں نہیں۔ مگر سرسید کا صرف خیال هی خیال ہے واقعہ نہیں۔ واقعہ يه هے که قرآن حکم فصاحت و بلاغت اور رشد و هدايت دونوں لحاظ سے بے نظر اور بے مثل ہے خدا نے عام بات كمي هے كه فاتوا بسورة من مشله _ يهال كوئي تخصیص فصاحت و بلاغت کی یا کوئی تخصیص رشد و هدایت کی نہیں ہے ۔ بلکہ یہ آیت دونوں حالتوں ہر حاوی ہے ۔ یعنی قرآن فیصاحت و بلاغت کے لحاظ سے بھی سعجزہ ہے اور رشد و ہدایت کے لحاظ سے بھی۔ سرحال (محد اساعيل پاني پتي) سرسید لکھتر ھی ۔

قرآن مجید کی سورہ بقرہ میں اللہ تعالی فرماتا ہے۔ وان کے نتم ریب مما نزلنا عللی عبد نا فاتوا بسورة صن سشله ـ

مطلب اس آیت کا یه هے که جو لوگ که قرآن پر خدا کی وحی سے هونے میں شبه کرتے تھے آن کا شبه مثانے کو خدا نے آن سے فرمایا که اگر تم اس کو خدا کی طرف سے نہیں سمجھتے تو تم بھی اُس کی مانند لاؤ ۔ یه مضمون قرآن کریم میں پایخ مقامات پر آیا هے :۔

- (۱) اس مقام پر تو یه فرمایا ہے که قرآن کے کسی ٹکڑے یا حصه کی مانند تم بھی لاؤ۔
- (۲) اسی طرح سورۂ یونس میں فرمایا ہے کہ ''کیا کافر قرآن کو کہتے ہیں کہ یوں ہی بنا لیا ہے تو اُتو آن سے کہہ کہ اس کے ٹکڑے یا حصہ کی مانند تم بھی بنا لاؤ''۔
- (۳) اور سورۂ هود میں فرمایا ہے کہ ''کیا کافر قرآن کو کہتے هیں کہ یوں هی بنا لیا ہے تو ُتو اَن سے کہہ کہ اس کے دس هی ٹکڑوں یا حصوں کی مانند تم بھی یوں هی بنا لاؤ''۔
- (س) اور سورهٔ السرئ سمی فرمایا هے که تو'' کہه دے که اگر جن و انس اس بات پر جمع هوں که اس قرآن کی
- ۱- ام یـقـولون افـتراه قـل فـاتـوا بـسورة مـشـلـه و ادعـوا مـن اسـتـعـطـتم مـن دون الله ان كـنـتم صـٰدقـین (سـوره یونس آیت ۹۳) ـ
- ب- ام يقولون افتراه قل فاتوا بعشر سوره مثله سفتريات و ادعوا سن استعطم سن دون ألله ان كنتم صلاقين (سوره هود آيت ١٦) -
- قبل لئن اجتمعت الانس والجن عبلي ان ياتوا بمثن هذا لقرآن لاياتون بمثله ولوكان بعضهم لبعض ظهيراً (حورة اسرى آيت . و) -

مانند بنا لاویں تو اس کی مانند نه بنا لا سکیں گے۔'' (۵) اور سورۂ قصص میں فرمایا ہے ''که تو ان سے کہه دے۔ که خدا کے پاس سے کوئی کتاب لاؤ جو توریت و قرآن سے زیادہ ہدایت کرنے والی ہو''۔

ان سب باتوں پر غور کرنے کے بعد اس بات کو سمجھنا چاھیے کہ قرآن کی مانند سے کیا مراد ہے۔ ھارے تمام علما و مفسرین نے یہ خیال کیا ہے کہ قرآن نہایت اعلی درجہ فصاحت و بلاغت پر واقع ھوا ہے اور اس زمانہ میں اھل عرب کو فصاحت و بلاغت کا بڑا ھی دعوی تھا۔ پس خدا نے قرآن کے من اللہ ثابت کرنے کو یہ معجزہ قرآن میں رکھا ''کہ ویسا فصیح کلام کوئی بشر نہیں کہہ سکتا '' اور نہیں کہہ سکا۔ پس انھوں نے قرآن کی مانند سے فصاحت و بلاغت میں مانند ھونا مراد لیا ہے۔

مگر میری سمجھ میں ان آیتوں کا یہ مطلب نہیں ہے۔ اس میں کچھ شک نہیں کہ قرآن مجید نہایت اعلیٰ سے اعلیٰ درجه فصاحت و بلاغت پر واقع ہے اور جو کہ وہ ایسی وحی ہے ، جو پیغمبر کے قلب نبوت پر ، نه بطور معنی و مضمون کے بلکه بلفظه ڈالی گئی تھی ۔ جس کے سبب سے ہم اس کو وحی متلو یا قرآن یا کلام خدا کہتے اور یقین کرتے ہیں ۔ اس لیے ضرور تھا کہ وہ ایسے اعلیٰ درجه فصاحت پر ہو ۔ جو بے مثل و بے نظیر ہو ۔ مگر یہ بات کہ اس کی مثل کوئی کہہ سکتا ۔ اس کے من اللہ ہونے کی دلیل نہیں ہو سکتی ۔ کسی کلام کی نظیر نه ہونا اس بات کی تو بلا شبہ دلیل ہے کہ اس کی مانند کوئی دوسرا کلام موجود نہیں ۔ بلا شبہ دلیل ہے کہ اس کی مانند کوئی دوسرا کلام موجود نہیں ۔

ا- قبل فاتوا بكتاب من عند الله هو اهدى منه ان كنتم صدقين ـ

مگر اس کی دلیل نہیں ہے کہ وہ خدا کی طرف سے مے مت سے کلام انسانوں کے دنیا میں ایسے موجود ہیں کہ ان کی مثل فصاحت و بلاغت میں آج تک دوسرا کلام نہیں ہوا۔ مگر وہ سن اللہ تسلم نہیں ہوتے نه ان آیتوں میں کوئی ایسا اشارہ ہے جس سے فصاحت و بلاغت میں معاوضہ چاہا گیا ہو ۔ بلکہ صاف پایا جاتا ہے کہ جو ہدایت قرآن سے ہوتی ہے اس میں معاوضہ چاہا گیا ہے کہ اگر قرآن کے خدا سے هونے میں شبه هے تو کوئی ایک سورت یا دس سورتیں یا کوئی کتاب مثل قرآن کے بنا لاؤ ۔ جو ایسی هادی هو ۔ سورة قصص میں آنحضرت' کو صاف حکم دیا گیا ہے کہ '' تو کافروں سے کہہ دےکہ کوئی کتاب جو توریت و قرآن سے زیادہ ہدایت کرنے والی ہو آسے لاو ۔ ' توریت کی عبارت فصیح نہیں ہے بلکہ عام طور کی عبارت ہے اس لیر کہ علاوہ قومی دستورات و تاریخانہ سضامین کے جو اس کے جامع نے اس میں شامل کیر ھیں جس قدر مضامین وحی کے اُس میں ھیں ان کا القا بھی بلفظہ شاید بہجز احکام عشرہ توریت کے جن کو حضرت موسلی نے ہاڑ میں بیٹھ کر پتھر کی تختیوں پر کھود لیا تھا ، پایا نہیں جاتا ۔ پس ظاہر ہے کہ قرآن گو کیسا ہی فصیح ہو مگر جو معاوضہ ہے وہ اس کی فصاحت و بلاغت یا اس کی عبارت کے بے نظیر ھونے پر نہیں ہے۔ بلکہ اس کے بے مثل ھادی ھونے میں ہے جو بالتصریج سورہ قصص کی آیت میں بیان ہوا ہے۔ هاں اس کی فصاحت و بلاغت اس کے بے نظیر ھادی ھونے کو زیادہ تر روشن و مستحکم کرتی ہے ۔

ان آیتوں کے مخاطب اہل عرب تھے ۔ پس جب قرآن نازل ہوا تو اُس وقت جو عرب کا حال تھا اس کو ذرا اس طرح پر خیال میں لانا چاھیے کہ اس کا نقشہ آنکھوں کے سامنے جم جاوے ۔ وہ تمام قوم

ایک لٹسری ، چور ، قزاق ، خانه بدوش قوم تھی جو مثل کنجروں کے اینا ڈیرہگدھوں و خجروں پر لادمے پڑی پھرتی تھی ۔ غیر قوموں نے '' سارسين ، حو لفظ '' سارقين '' كا معرف هے خطاب ديا تھا۔ بغض و عداوت و کینہ جو بد ترین خصائص انسانی سے ہیں آن کے رگ و ریشه میں یوا هوا تھا۔ ہاں تک که وهاں کے حانور بھی کینه میں ضرب المثل هیں (شتر کینه) خون ریزی ، بے رحمی ، قتل اولاد ان میں ایسر درجه پر تھی جس کی نظیر کسی قوم کی تاریخ سیں نهس پائی جاتی ـ کنواری اور بیاهی عورتس زنا کو اپنا فخر سمجهتی تھیں۔ جس طرح مرد کسی نامی عورت یا مشہور خاندان کی عورت سے زنا کرنا فخریہ اپنی قوم میں بیان کرتا تھا۔ اسی طرح عورتیں کسی ناسی یا مشہور خاندانی مرد سے زنا کرنا فخریہ بیان کرتی تھیں ۔ قوم کی قوم جاھل و اسی تھی ۔ بهجز شراب خوری و بت پرستی کے کچھ کام نہ تھا اور قوسوں سے ایسر کونے سی پڑی ہوئی تھیں که کچه روشنی تعلیم و تربیت کی آن تک نہیں پہنچی تھی ۔ اسی قوم میں ایک شخص جس نے چالیس برس اپنی عمر کے انھیں کے ساتھ صرف کیر تھر ، رہانی روشنی سے جو خدا نے مقتضامے فطرت اس میں رکھی تھی سنور ہوا اور روحانی تربیت کے حقائق و دقائق ایسر الفاظ میں جو عالم اور حکم اور فلسفی اور نیچرلسٹ و دھریہ سے لر کر عام جاهلوں ، بدؤں ، صحرا نشینوں کی هدایت کے لیر بھی یکساں مفید تھر علانیہ بیان کیر جو مکن نہ تھا کہ بغیر اس کے کہ خداکی طرف سے ہوں بیان کیر جا سکتر ۔ فطرت کے قاعدہ کے مطابق ممکن نہ تھا کہ بغیر اس فطرت نبوت کے جو خدا اپنر انبیاء میں ودیعت کرتا ہے ۔ ایسی قوم کے کسی شخص کے اس طرح کے خیالات اور اقوال و نصائح ہوں جیسر کہ قرآن میں ہیں یا ایسی تاریک و خراب حالت کی قوم کا کوئی شخص بغیر آس نور کے جو

خدا نے اس کو دیا ایسی ہدایتیں بتاوے جیسی کہ قرآن میں ہیں یہ بہجز خدا سے ہونے کے اور کسی طرح ہو ہی نہیں سکتیں ۔ اسی امر کی نسبت خدا نے فرمایا کہ اگر تم کو اس کے خدا سے ہونے میں شک ہے تو فاتوا بسورة سن مشلم۔

ناسخ و منسوخ کی بحث

الله تعاللي فرساتا هي سا ننسخ سن آية او ننسهانات مخسر او سشلھا۔ اس آیت کی تفسیر میں ھارے ھاں کے مفسروں نے بے انتہا کج بحثیاں کی هیں اور مذهب اسلام کو بلکه خدا کو بدنام کیا ہے اور قرآن محید کو ایک شاعر کی بیاض بنا دیا ہے۔ انھی کج بحثیوں میں بعض مفسروں نے جن کو خدا نے ہدایت کی ہے سیدھی راہ بھی اختیار کی ہے ۔ ہر ایک شخص جس کے مزاج میں کج محثی نہیں ہے وہ اس آیت کہو اور اس سے ہملی آیت کو یڑھ کر سیدھا اور صاف مطلب سمجھ سکتا ہے ۔ اس آیت سے پہلی آیت میں خدا تعاللی نے فرمایا ہے کہ اہل کتاب اس بات کو دوست نہیں رکھتر کہ خدا کی طرف سے تم پر کچھ بھلائی اترے اور بھلائی سے اعلانیہ مراد قرآن اور احکام شریعت ہیں اہل کتاب جو اس بات کو دوست نہیں رکھتے تھے اس کی صاف صاف دو وجہیں تھیں اول یه که تمام انبیاء بنی اسرائیل میں گذرے تھے اور ان کو پسند نہیں تھا کہ بنی اساعیل میں جن کو وہ بالطبع حقیر بھی سمجھتے تھے کوئی نبی پیدا ہو۔ اس کی نسبت خدا نے فرمایا کہ اللہ مخصوص کرتا ہے اپنی رحمت سے جس کو چاہتا ہے ـ دوسری وجہ یہ تھی کہ احکام شریعت محدی کے موسوی شریعت کے احکام سے کسی قدر مختلف تھر اور پہودی اپنی شریعت کی نسبت سمجھتر تھر کہ وہ دائمی ہے اور کبھی کوئی حکم اس کا تبدیل نہیں ہونے کا ۔ اس کی نسبت خدا تعاللی نے فرمایا کہ جو آیت کہ ہم منسوخ کرتے ہیں

یا بھلا دیتے ھیں تو اس کی جگہ آسی کی مانند یا اس سے بہتر آیت دیتے ھیں ۔ اس سے صاف ظاھر ہے کہ اس مقام میں آیت کے لفظ سے قرآن کی آیت مراد نہیں ہے ۔ بلکہ موسوی شریعت کے احکام جو شرع مجدی میں تبدیل ہو گئے ۔ یا جن احکام شریعت موسوی کو بہودیوں نے بھلا دیا تھا وہ مراد ھیں ۔ ھارے آکثر مفسرین نے نہایت کج بحثی سے اس آیت میں جو لفظ آیت ہے اس کو قرآن مجید کی آیتوں پر محمول کیا ہے اور یہ سمجھا ہے کہ قرآن مجید کی ایک آیت دوسری آیت سے منسوخ ہو جاتی ہے اور اسی پر بس نہیں کیا بلکہ '' نہنسہا'' کے لفظ سے یہ قرار دیا کہ پیغمبر خدا صلی اللہ بلکہ '' نہنسہا'' کے لفظ سے یہ قرار دیا کہ پیغمبر خدا صلی اللہ یعنی نہنسخ اور نہسہا کی بناء پر جھوٹی اور مصنوعی روایتوں کے یعنی نہنسخ اور نہسہا کی بناء پر جھوٹی اور مصنوعی روایتوں کے مگر ان میں کی ایک روایت بھی صحیح نہیں ہے انہی جھوٹی روایتوں کی بناء پر انہوں نے قرآن کی آیتوں کو چار قسم کی آیتوں پر تقسیم کیا ۔

اول : وه آیتیں جن کی تلاوت اور احکام دونوں بحال ہیں اور وه سب آیتیں قرآن میں موجود ہیں ـ

دوم: وہ آیتیں جن کی تلاوت بحال ہے اور احکام منسوخ ہو گئے ہیں ۔ ان آیتوں کی نسبت بھی کہتے ہیں کہ قرآن میں موجود ہیں ۔

سوم: وه آیتیں جن کی تلاوت سنسوخ هو گئی هے مگر احکام ۔ محال هیں ـ

چہارم: وہ آیتیں جن کی تلاوت اور احکام دونـوں منسوخ هو گئے هیں اور تیسری اور چوتھی قسم کی آیتوں کی نسبت کہتے هیں که قرآن میں موجود نہیں هیں ۔ مگر

ان جھوٹی روایتوں میں ان کا موجود ھونا بیان کرتے ھیں ـ

هم ان باتوں پر اعتاد نہیں رکھتے اور یقین جانتے هیں که جو کچھ خدا کی طرف سے اترا وہ بے کم و کاست موجودہ قرآن میں جو در حقیقت آنحضرت صلی اللہ علیه وسلم کے زمانۂ حیات میں تحریر هو چکا تھا موجود هے اور کوئی حرف بھی اس سے خارج نہیں ہے اور نہ قرآن محید کی کوئی آیت منسوخ هے ۔ بلکه احکام ادیان سابقه کی نسبت بھی لفظ نسخ کا مجازی معنی میں استعال هوا هے نه حقیقی معنی میں ۔ اس کی تشریج کے لیے هم کو ننسخ کے معنوں سے بحث کرنی میں ۔ اس کی تشریج کے لیے هم کو ننسخ کے معنوں سے بحث کرنی پڑے گی اور جو احکام که تبدیل هو گئے هیں ان کی بھی حقیقت بیان کرنی هوگی لیکن قبل اس کے هم کو ان مفسروں کی رائے کا بیان کرنا مناسب هے ۔ جنھوں نے آیت کے لفظ سے جو اس آیت میں هے قرآن کی آیتیں مراد نہیں لی هیں ۔

ابو مسلم ایک شخص ہے جو خلاف جمہور مفسرین کے ھاری رائے سے متفق ہے ۔ اس کا بھی یہی عقیدہ ہے کہ قرآن میں نسخ واقع نہیں ھوا اور اس کا قول ہے کہ آیات منسوخہ سے مراد وہ شریعتیں ھیں جو کتب متقدمہ یعنی توریت اور انجیل میں تھیں جیسے کہ سبت کا ماننا اور مشرق اور مغرب کی طرف نماز کا پڑھنا اور اسی قسم کے حکموں کی مانند جو اللہ نے ھم سے دور کر دیے ھیں اور ھم بغیر اس کے عبادت کرتے ھیں ۔ یہود اور نصاری کہتے تھے کہ بجز اس کے جو ھارے دین کا تابع ھو اور کسی پر ایمان نه لاؤ ۔ پس اللہ نے اس آیت سے اس کو باطل کر دیا ۔

بعض آدمیوں نے اس کا یہ جواب دیا ہے کہ آیت کا لفظ جب کہ اطلاق کیا جاتا ہے تو اس سے قرآن عی کی آیتیں مراد ہوتی ہیں ۔ کیوں کہ ہارے نزدیک وہی آیتیں مقرر ہیں ۔

لیکن کوئی شخص اس کا جواب دے سکتا ہے کہ ہم یہ بات ہمیں مانتے کہ آیت کا لفظ قرآن کی آیتوں سے مخصوص ہے بلکہ وہ عام ہے اور ہر دلیل پر بولا جاتا ہے ۔

امام فخرالدین رازی نے یہ بات تسلیم کر لی ہے کہ قرآن مجید میں منسوخ آیتیں ہونے پر اس آیت سے استدلال کرنا ٹھیک نہیں ہے اور اس لیے اُنھوں نے اور آیتوں سے استدلال کیا ہے ـ چناںچہ تفسیر کبیر میں وہ لکھتر ھیں کہ ھم نے کتاب محصول میں جو اصول فقه میں ہے ۔ تمام بحثیں جو عدم نسخ پر دلالت کرتی ہیں ۔ بیان كرك هم نے وقوع نسخ پر اسى آيت ' سا ننسخ ' پر استدلال کیا ہے ۔ مگر اس آیت پر استدلال کرنا ٹھیک نہیں ہے اس لیر که ما کا لفظ اس جگہ بطور شرط اور جزا کے ہے ۔ جیسر کہ تم کسی کو کہو کہ جو شخص تیرے پاس آئے تو اس کی تعظیم کر۔ تو یہ کہنا کسی شخص کے آنے پر دلالت نہیں کرتا۔ بلکہ صرف اتنا نکلتا ہے کہ جب کوئی آوے تو اس کی تعظیم کرنی واجب ہے۔ اسی طرح یه آیت بهی حصول نسخ پر دلالت نہیں کرتی ۔ بلکه اس سے یہ نکاتا ہے کہ جب کہ کوئی آیت منسوخ ہو تو اس کے بدلے دوسری آیت جو اس سے اچھی ہو لانی واجب ہے۔ پس ٹھیک بات یہ ہے کہ نسخ کے ثبوت میں ہم اور آبتوں کو اختیار کریں یعنی اس آیت کو و اذا بـدلـنــا آیـــة سـکان آیـــة ـ اور اس آیت کو ـ یمحو الله ما يشاء ويشبت وعنده ام الكتاب ـ

هم امام فخرالدین رازی کا شکریه ادا کرتے هیں که انهوں نے اس قدر تو هم سے اتفاق کیا که اس آیت سے قرآن مجید میں آیت منسوخه کا وجود هونا ثابت نہیں هوتا ۔ مگر خدا نے چاها تو هم بتا دیں گے که ان آیتوں سے بھی جن پر امام رازی نے منسوخ هے کا استدلال کیا ہے حقیقتاً منسوخ هے ونا آیتوں کا ثابت نہیں هوتا ۔

ناسخ و منسوخ کی محث در حقیقت ایک لغو محث ہے۔ اس پر عث کرنے کی ضرورت صرف اس وجہ سے ہوگئی ہےکہ فقہا ہے اسلام نے نہایت غلط قیاس اور ہے جا استدلال سے اور صرف اپنر دل کے پیدا کیر ہوئے خیالات سے قرآن کی آیتوں کا اس طرح پر منسوخ ہونا قرار دیا ہے جو خدا کی شان اور قرآن کے ادب کے بالکل برخلاف ہے اور ہرگز مذہب اسلام کا وہ مسئلہ نہیں ہے اور نہ ان فقہا کے استنباط کے لیر کوئی دلیل ہے۔ انھوں نے جو آیات منسوخہ کو تين قسم يعني منسوخ الحكم و ثابت التلاوت اور منسوخ التلاوت و ثابت الحكم اور منسوخ التلاوت والحكم قرار ديا ہے۔ يه محض جھوٹی تقسم ہے اور خود ان کے دل کی بنائی ہوئی ہے اور مفسرین نے جھوٹی اور بے سند روایتیں اپنی تفسیروں میں بھر دی ہیں اور اگر ناسخ اور منسوخ کی بحث صرف اتنی بات پر منحصر رهتی که آیا شرایع سابقه میں کوئی ایسر احکام تھر جو اب شریعت اسلام میں نہیں رہے یا اُن کے عوض دوسرے احکام آئے اور شرایع سابقہ کے احکام منسوخ ہو گئے یا نہیں ـ یا یہ کہ خود اسلام میں کوئی ایسے احكام تھے جو بعد كو قائم نه رہے يا اس كے بدلے اور احكام آئے اور يهلر احكام منسوخ هـو گئے يا نهيں، تو يه محث البته دل چسپ اور ذی عقلوں کی سی بحث ہوتی اور اس پر ساحثہ کرنے کی کچھ ضرورت نه پڑتی کیوں که جو لوگ احکام کے منسوخ ہونے کے قائل ھیں اور جو ان کے سسوخ ھونے کے قائل نہیں ھیں جب آن دونوں کی بحثوں پر غور کیا جاوہے تو بجز نزاع لفظی کے یا ناسخ و سسوخ کو بطور ایک علمی اصطلاح کے قرار دینے کے اور کوئی نتیجہ نہیں نکاتا ۔ یس هم اس بات سے که قرآن کی آیتوں میں سے کوئی آیت منسوخ التلاوت و ثابت الحكم يا منسوخ التلاوت والحكم هے ـ انكار کرکے اس بات کی بحث پـر متوجه ہوتے ہیں ۔ که آیا قرآن میں ایسی آتیں جن پر ثابت التلاوت و منسوخ الحکم هونے کا اطلاق هو سکے موجود هیں یا نہیں ۔ نتیجه اس بحث کا صرف یه هوگا که آیا قرآن میں احکام منسوخه هیں یا نہیں یا ایک آیت کا حکم دوسری آیت کے حکم کو منسوخ کرتا هے یا نہیں اور نتیجه اس بحث کا بجز نزاع لفظی کے اور کچھ نه هوگا ۔

نسخ کے معنی لغت میں کسی شے کے دور کر دینے کے اور متغیر کر دینے اور باطل کر دینے کے ھیں ۔ خواہ اس کی جگہ کوئی دوسری چیز قائم ھوئی ھو یا نہ ھوئی ھو ۔ اور نقل و تحویل کے معنی ہی ھیں ، اور اس بحث سے کہ ان معنوں میں اصلی کون سے ھیں اور مجازی کون سے ھم کو چنداں فائدہ نہیں ھے مگر جب اس لفظ کو کسی خاص علم میں استعال کیا جاوے گا ۔ مثلاً شرع میں تو اس کی تعریف میں کچھ ایسے الفاظ بڑھانے ھوں گے جس سے وہ معنی اس علم کے مناسب ھو جاویں ۔ پس شرع میں نسخ کے معنی معنی اس علم کے مناسب ھو جاویں ۔ پس شرع میں نسخ کے معنی یہ ھوں گے کہ ایک شرعی حکم کا کسی دوسرے شرعی حکم سے زائل یا متغیر یا باطل ھونا ۔ پہلا حکم منسوخ کہلائے گا اور دوسرا حکم ناسخ ۔

ناسخ کے معنی علماء نے یہ قرار دیے ہیں کہ ناسخ سے مراد ایک ایسے شرعی قاعدہ سے ہے جو اس بات پر دلالت کرے کہ اس سے پہلے جو حکم بقاعدہ شرعی ثابت ہو چکا تھا اس کے بعد نہیں رہا ایسی حاات میں کہ اگر یہ پچھلا حکم نہ ہوتا تو وہ پہلا حکم تابت اور قائم رہتا ۔

اس تعریف میں جو قیدیں کہ علماء نے لگائی هیں اس کے یہ فائدے بتائے هیں که قاعدہ شرعی کی جو قید لگائی هے وہ اس لیے لگائی هے که اس میں خدا و رسول کے قول و فعل شامل هو جائیں اور احراع است علی احد القولین خارج هو جاوے ۔ کیوں که جو طریق

شرعی کی تفسیر یہاں بیان ہوئی ہے اس میں اجاع داخل نہیں ہوتا اور اس سے یہ بھی لازم نہیں آتا کہ شرع عقلی حکم کی ناسخ ہو۔ کیوں کہ حکم عقلی کا ثبوت شرعی قاعدہ پر نہیں ہوتا اور بہ بھی لازم نہیں آتا کہ معجزہ شرعی حکم کا ناسخ ہو کیوں کہ وہ معجزہ شرعی طریق سے ثابت نہیں ہوتا اور اس سے یہ بھی لازم نہیں آتا کہ حکم کسی مدت پر یا شرط یا استثناء پر مقید ہو۔ کیوں کہ ایسی حالت کی جہو شرط لگائی ہے اس سے یہ سب خارج ہو جاتی ہیں اور اس سے یہ بھی لازم نہیں آتا کہ اگر خدا نے ہم کو کسی ایک کام کرنے کا ایک دفعہ حکم دیا اور پھر اس کام کی مانند دوسرا کام کرنے کو منے کیا تو یہ حکم اس کا ناسخ ہوگا۔ کیوں کہ اگر یہ منع نہ ہوتا تب بھی وہ حکم ثابت کا ناسخ ہوگا۔ کیوں کہ اگر یہ منع نہ ہوتا تب بھی وہ حکم ثابت

یه تعریف ناسخ کی جو گویا ناسخ و منسوخ دونوں کی تعریف فی ظاهر ہے که منصوص نہیں ہے یعنی ظاهر ہے که یه تعریف ناسخ و منسوخ کی نه خدا نے بتائی ہے بلکه علماء نے خود اپنے قیاس اور خیال استنباط سے قائم کی ہے اور کسی مسلمان پر واجب نہیں ہے که خواه بخواه اس تعریف کو تسلیم کرے۔ هارے نزدیک جس وقت نسخ کو شرع سے متعلق کیا جائے گا تو اس وقت حیثیت کو اس کا جزو قرار دینا واجب اور لازم هوگا۔ کیوں که جس قدر احکام شرعی هیں وہ سب کسی نه کسی حیثیت کیر مبنی هیں پس اگر باوجود بقا اس حیثیت کے جس پے روہ حکم پر مبنی هیں پس اگر باوجود بقا اس حیثیت کے جس پے روہ حکم صادر ہوا تھا دوسرا حکم برخلاف پہلے حکم کے صادر کیا جاوے تو کہا جاوے گا که دوسرا حکم ناسخ ہے اور پہلا منسوخ اور اگر وہ حیثیت جس کی بناء پر پہلا حکم صادر ہوا تھا موجود نه رہے تو وہ حیثیت جس کی بناء پر پہلا حکم صادر ہوا تھا موجود نه رہے تو وہ حیثیت جس کی بناء پر پہلا حکم صادر ہوا تھا موجود نه رہے تو دوسرا حکم پہلے حکم کا حقیقتاً ناسخ نہیں ہے گو مجازاً ایک کا

دوسرے کو نامخ کہیں ـ

ذات باری کی تنزہ اور اس کے تقدس اور اس کے علم و دانش میں نقصان اسی وقت لازم آتا ہے جبکہ ایک حیثیت کے لحاظ سے کوئی حکم دیا ہو اور پھر باوجود موجود ہونے آسی حالت حیثیت کے دوسرا حکم اس کے مخالف دیا ہو لیکن آگر حالت اور حیثیت مختلف ہو گئی ہو تو دوسرا حکم دینا اس کے تقدس کو کچھ نقصان نہیں ہونچاتا ۔ بلکہ نه دنیا اس کے تقدس اور علم و دانش کو نقصان ہونچاتا ہے۔ پس هم قبول کرتے هس که ایسر احکام بھی موجود هیں جو شرائع سابقه میں ماموربه تھے اور شرائع مابعد میں ماموربه نہیں رہے ۔ یا بالفرض هم تسلیم کر لس که خود مذهب اسلام هی میں اول کوٹی حکم ماموریه تھا۔ اور پھر بعد کو ماموریه نهیں رہا ۔ اور یہ بھی ثانت ہو کہ حیثیت اور حالت متحد نہیں رہی تھی ۔ تو ہم ایک دوسرے کا ناسخ نہیں قرار دینے کے ۔ اور ہم کیا کوئی ذی عتل بھی ہندو ، مسلان ، ہودی ، عیسائی ، دہریہ آن میں سے کسی کو ناسخ و منسوخ نہیں کہنے کا۔ یہ دوسری بات ہے کہ ہم محازاً با به طور ایک اصطلاح کے اُن کو ناسخ و منسوخ المهر لکس ۔ هم نے تمام قرآن میں کوئی ایسا حکم نہیں پایا اور اس نے ہم کہتے ہیں کہ قرآن میں ناسخ و منسوخ نہیں ہے ۔ علماء اور نقمها نے جن آیتوں کو ایک دوسرے کے مخالف خیال کیا ہے اور ایک کو ناسخ اور ایک کو منسوخ ٹھیرایا ہے تو ہم ہر موقع پر ید : بت کریں گے کہ وہ باہم مخالف نہیں ہیں اور تفاوت حیثیت بھی جس کے بغیر لحاظ کے ناسخ و منسوخ کا قرار دینا

_@

ناسخ اور منسوخ کے بـاب میں لوگوں نے بہت سی بحثیں کی ہیں اور ابو مسلم نے جو ناسخ و منسوخ ہونے کا قائل نہیں ہے

متعدد دلیلیں اس کے امتناع پر پیش کی هیں اور اس کے مخالفین نے جو جمہور مفسرین هیں اس کی تردید کی هے اور اثبات نسخ پر دلیلیں پیش کی هیں۔ هاری سمجھ میں وہ سبب تشری بحثیں میں مغز سخن تک کوئی نہیں پہنچتیں اور جو اصل بات اتحاد حیثیت کی ناسخ و منسوخ میں تھی اس پر کسی کا خیال نہیں گیا هے۔ اور اس لیے هم آن بحثوں کا ذکر کرنا محض بے فائدہ سمجھتے اس لیے هم آن بحثوں کا ذکر کرنا محض بے فائدہ سمجھتے قرآن محید میں نسخ کا هونا قرار دیا هے آگرچہ ان سے بھی نسخ کا هونا ثابت نہیں هوتا۔ جیسا که هم ان دونوں آیتوں کی تفسیر میں لکھیں گے۔ لیکن هم آن سے نہایت ادب سے بوچھتے هیں که آپ نے اتحاد حیثیت کی شرط کو بھی ملحوظ فرمایا هے یا نہیں غالباً وہ فرماویں گے کہ نہیں۔ ترو هم آن سے عرض کریں گے کہ حضرت ناسخ و منسوخ هونے کا ثبوت بھی نہیں۔

ایک اور بات قابل لکھنے کے ھے کہ حدیث یعنی قول و فعل آنے فسرت صلی اللہ علیہ وسلم کا حکم قرآنی کا ناسخ ھے یا نہیں۔ اس میں علماء کے مختلف قول ھیں۔ مگر جب کہ ھم قرآن سے قرآن کا حقیقتا منسوخ ھونا تسلیم نہیں کرتے تو حدیث سے اس کا حقیقتا منسوخ ھونا آلیوں کر تسلیم کر سکتے ھیں۔ خواہ وہ حدیث خبر احاد کا درجه رکھتی ھو ، یا حدیث مشہور کا یا لوگوں نے معنا یا لفظا اس کو متواتر کے درجہ تک سمجھا ھو۔ باقی رھا یہ کہ جس طرح نوکوں نے مجازاً ناسخ و منسوخ ھونے کا اطلاق کیا ھے اس طرح بھی ھم حدیث کو بھی ناسخ قرآن سمجھتے ھیں یا نہیں۔ تو ھم اس طرح بھی نہیں سمجھتے ۔ بلکہ اس کو حدیث کی نا معتبری کی وجہ قرار دیتے ھیں ۔ ھاں احادیث صحیحہ کو جن کا درایتاً صحیح ھونا ثابت ھو گیا ھو مفسر قرآن سمجھتے ھیں۔

هم نے اس مضمون کے شروع میں امام فخر الدین رازی کا یه قول نقل کیا ہے کہ آیت سا نہ سخ سن آیۃ اوننسہانات بخیر منہا او سشلہا۔ سے قرآن مجید میں ناسخ و منسوخ هونا ثابت نہیں هوتا بلکه اور دو آیتیں هیں ان سے نابت هوتا ہے۔ پہلی آیت تو '' یمحوا الله سایشاء و یشبت عندہ ام الکتاب' ہے۔ دوسری آیت' اذا بدلنا آیۃ مکان آیۃ '' ہے اور هم نے لکھا تھا که ان دونوں آیتوں سے بھی قرآن مجید میں ناسخ و منسوخ هونا ثابت نہیں هوتا اور وعدہ کیا تھا کہ هم ان دونوں آیتوں کی تفسیر بعدمیں بیان کریں گے۔ اس لیے اب ان پر بحث کرتے هیں۔

پہلی آیت سورۂ رعد کی ھے اس میں خدا فرماتا ھے کہ ۔ ولقد ارسلنا رسلا من قبلک و جعلنا لیے م ازواجا و ذرید وسا کان الرسول ان یاتی با یہ الا باذن الله لکل اجل تتاب یمحوالله ما یشاء و یشبت و عندہ امر الکتاب '' یعنی بے شک هم نے تجھ سے پہلے رسول بھیجے ھیں اور ان کو بیبیاں اور اولاد دی ہے اور کوئی رسول نہیں کر سکتا کہ بغیر حکم خدا کوئی حکم لے آئے اور ھر ایک چیز کا وقت لکھا ھوا یعنی مقرر ھے ۔ خدا جو چاھے مٹائے اور جو چاھے قائم رکھر اور اس کے پاس اصل کتاب ھے ۔ مٹائے اور جو چاھے مٹائے اور جو چاھے اور اس کے پاس اصل کتاب ھے ۔

اس آیت سے صاف ظاهر ہے ۔ که جو کچھ اس آیت میں بیان هوا ہے وہ انبیائے سابق کی شریعت سے متعلق ہے نه قرآن مجید کی آیتوں سے ۔ نتیجه اس تمام آیت کا یه ہے که انبیائے سابق کی شریعت میں سے جن احکام کو خدا چاهتا ہے ، قائم رکھتا ہے اور جن احکام کو چاهتا ہے اٹھا دیتا ہے ۔ اور اس آیت سے کسی طرح سے یه بات نہیں نکلتی که قرآن مجید کی ایک آیت دوسری آیت سے منسوخ مونے پر مھوجاتی ہے ۔ پس یه آیت قرآن مجید میں ناسخ و منسوخ هونے پر کسی طرح دلالت نہیں کرتی ۔ مگر یہ بحث باقی رهتی ہے که

ام الكتاب كيا چيز هے اور اگر ام الكتاب سے لوح محفوظ مراد لى جائے تو لوح محفوظ كيا چيز هے ـ يه ايك بهت بڑى بحث هے جس كو هـم اپنى تصنيفات ميں متعدد جگه لكه چكے هيں ـ مگر اس مقام ميں اس كى بحث سے كچه تعلق نہيں ـ بلكه صرف يه بات ثابت كرنى تهى ـ كه '' يمـحـوا الله ما يشاء و يثبت' سے مقصود محو هونا ثابت رهنا ـ احكام شريعت انبيائے سابق كا هـ ـ نه محو عونا يا ثابت رهنا قرآن محيد كى آيتوں كا ـ اس ليے هـم اسى قـدر بيان پر اكتفا كرتے هيں ـ

دوسری آیت سورة نحل کی هے جس میں خدا فرماتا هے که "و اذا بدلنا آیه" سکان آیه" و الله اعلم بما ینزل قالوا انما انت مفتريل أكثر هم لا يعلمون" جب هم ايك حكم کی جگه دوسرا حکم بدلتر هیں اور خدا جو حکم نازل کرتا ہے اس کو خوب جاننا ہے ُتو تو کہتے ہیں کہ تو افترا ہی کرنے والا ھے ۔ حالاں کہ ان سی کے مت سے نہیں جانتر ۔ اس آیت کی نسبت سوال یہ ہے کہ قالو سے کون لوگ مراد هیں ۔ مفسدین لکھتر هیں که قالو کی ضمیر سے کفار مکہ مراد ہیں ۔ مگر یہ صحیح نہیں ہو سکتا ۔ اس واسطے که کفار مکه نه اس پہلی آیت کو جو بدلی گئی منزل من اللہ جانتر تھر اور نبہ دوسری آیت کدو جس نے بہلی آیت کو بدلا منزل من الله سمجهتر تهر ـ بلكه صرف مهود و نصاري جو ان احكام قدرآن محيد كـو جـو برخلاف احكام سابق توريت و انجيل کے تھے پیغمبر کا افترا سمجھتے تھے۔ پس قالو کی ضمیر انھیں سمود و نصاری کی طرف پھرتی ہے نه عام کفار کی طرف جو عموماً بت پرست تھر اور وہ نہ احکام سابق کو مانتر تھر نہ احکام لاحق کو ۔ پس صاف ظاهر هے که بدلنا آیته سکان آیته سے تبدیل شرائع انبیائے سابق مراد ہے نہ تبدیل آیتہ قرانی کی ۔ دوسری آیت سے ۔

تفسیر کبیر میں بھی ابو مسلم اصفہانی کا یہ قول نقل کیا ہے کہ آیت میں شرائع سابق انبیاء کا تبدیل ہونا مراد ہے نہ قرآن مجید کے احکام میں ۔ ایک سے دوسرے کا منسوخ ہونا ۔ اور امام صاحب نے لکھا ہے کہ ابو مسلم اصفہانی برخلاف دیگر مفسرین کے مذہب اسلام میں ناسخ و منسوخ کا بالکل قائل نہیں ہے ۔

اور اس میں کچھ شک نہیں ہے کد اگر ان تمام آیتوں کو جن سے مفسرین اور فقہا نے قرآن مجید میں ناسخ و منسوخ ہونے کا دعوی پیش کیا ہے - مجموعی طور پر سامنے رکھ لیا جاوے اور ان پر غور و تعمق کی نظر ڈالی جاوے اور ان کے سیاق و سباق کو مد نظر رکھا جاوے تو ان سے صاف طور پر معلوم ہو جاتا ہے کہ یہ آیتیں شرائع سابقہ انبیاء کے بعض احکام کے تبدیل ہونے سے تعلق رکھتی ہیں نه قرآن مجید کی آیتوں کے باہم ناسخ و منسوخ ہونے سے ۔

آیات هجکمات و متشایهات

محکمات اور متشابهات کی بحث بهت دقیق اور طویل هے۔ عابات اس کے بیان میں بهت بازی علمیت خرج کی هے۔ مگر مختصر بات یہ هے که عربی زبان کے محاورہ میں محکم اس بات کو کہتے هیں جو ایسی صاف هو جس سے ایک هی مطلب سمجھ میں آؤے اور دوسرے مطلب کو نه آنے دے۔ اور متشابه اس بات کو کہتے هیں جس نے کئی مطلب سمجھ میں آتے هوں اور بخوبی تمیز نه هو سکتی هو که کون سا مطلب مقصود هے یا جو معنی اس کے الفاظ سے متبادر هوتے هوں وہ مقصود نه هوں۔ بلکه وہ الفاظ بطور تمنیل با بطور محاز و استعارہ کے آئے هوں۔

اس پر لوگوں نے بحث کی ہے کہ قرآن مجید میں آیات متشابہات کیوں لائی گئی ہیں مگر ہر ایک سمجھ دار آدمی سمجھ سکتا ہے کہ جب قرآن مجید انسانوں کی زبان میں نازل ہوا ہے اور اس سے عوام و خواص سب کی ہدایت مقصود ہے تو اس میں آیات متشابہات کا نہ ہونا نا ممکن ہے ۔ قرآن مجید میں بہت سی ایسی باتیں بیان کی گئی ہیں جن کو انسان کے حواس خمسہ ظاہری و باطنی نے محسوس نہیں کیا ہے اور نہ آن کی کیفیات کو جانا ہے پس امکان نہیں ہے کہ وہ مطلب آیات محکہات میں بیان ہو سکے اور اس لیے ضرور ہے کہ وہ تمثیل کے پیرایہ میں آیات متشابہات کے ذریعہ بیان کیا جاوے ۔ علاوہ اس کے قرآن مجید تمام لوگوں کی ہدایت کے لیے نازل ہوا ہے اس کا مقصود یہ ہے کہ جس طرح ذی علم دانش مند آس

سے هدایت پاویں آسی طرح جاهل و نادان عوام بھیڑوں اور بکریوں اور اونٹوں کے چرانے والے بھی ویسی ہی ہدایت پاویں ۔ عوام اکثر حقائق امور کے سمجھنے کے قابل نہیں ہوتے ۔ بلکہ بلحاظ زمانہ اور بلحاظ من قدر ترقی علم و معلومات کے جو آس زمانه من هوئی هوتی هے آکثر ذی علم بھی حقائق اشیا یا حقیقة الامر کے سمجھنر سے عاری ہوتے میں ـ صاحب سذھب کو یا یوں کہو کہ روحانی هادی یا پیغمبر کو آن امور سے چنداں محث نہیں هوتی اس لیروه روحانی اصلاح و تربیت کو مد نظر رکھ کر آن مطالب کو ایسر الفاظ میں بیان کرتا ہے حن پر آیات متشامات کا اطلاق ہوتا ہے۔ اگر اس کے ایک ہلو پر خیال کرو تو اس سے وہ مطلب پایا جاتا ہے جو عوام کے خیالات یا اس زمانہ کے اہل علم کی معلومات کے سناسب هوتا هے لیکن اس میں ایک اور دوسرا مهلو بھی مخفی هوتا هے اور جب علم کی اور معلومات کی ترقی هوتی جاتی ہے ۔ جب سمجھ مس آتا ہے پس ایک ایسی کتاب سی جیسا که قرآن مجید هے آیات متشامات کا ھونا امر لازسی اور ضروری ھے بلکہ آن کا ھونا ھی دلیل اس کی صداقت اور سنزل سن اللہ ہونے کی ہے اور قرآن محید کا مہی ہت بڑا معجزہ ہے۔ اسی کے ساتھ بعض امور ایسے بھی ھوتے ھیں جو اصل اصول اور دار و مدار اس روحانی تربیت کے هیں جن کے بغیر روحانی تربیت کا ہونا جو مقصود اصلی ہے ناممکن ہے وہ امور بالضرور اس طرح پر بیان ہونے چاہئیں جن کا ایک ہی مطلب ہو اور نہایت صفائی سے سمجھ میں آ سکر اور دوسرے مطلب کو اس میں آنے کی گنجائش نه هو اور ہی مطالب وہ هیں جن پر آیات محکمات کا اطلاق ہوا ہے۔

سب سے بڑا اصول مسلمانی مذہب کا توحید ہے اور اس کے بعد اعال حسنہ ، وہ اس خوبی و عمدگی اور صفائی سے قرآن مجید کی

آیات محکات میں بیان هوئے هیں جن میں کسی طرح دوسرا احتال ھو ھی نہیں سکتا ۔ سورہ انعام میں فرمایا ہے کہ اس کے سوا کو معمود هی نہیں ۔ هر چیز کا وهی خالق هے اسی کی عبادت کرو ۔ دوسری حکه فرمایا که اے مجد اکہه دےکه اس کے سواکچھ نہیں ھے کہ وھی خدائے واحد ہے ایک اور جگہ فرمایا کہ خدا کے ساتھ كىيى دوسرے كو خدا ست بناؤ ـ سورة بقر سى كس صفائي سے بتلايا کہ جو شخص خدا پر ا ممان لایا ہے شک آس نے مضبوط ذریعہ یکو لیا جس کے لیے ٹوٹنا ہے ھی نہیں ۔ سورۂ نساء میں فرمایا کہ اللہ کی عبادت کرو اور کسی چیز کو اس کا شریک مت کرو ـ ماں باپ کے ساتھ ، رشته داروں کے ساتھ ، يتيموں کے ساتھ ، غريبوں کے ساتھ ، همسایه میں جو رشته مند رهتر هوں ان کے ساتھ ، ما همسایه هی جو اور لو ک رھتے ھوں ، ان کے ساتھ ، جو غیر لوگ ساتھی ھوں آن کے ساتھ، مسافر غریب الوطن کے ساتھ احسان کرو اور ایک حگه سورہ بقر میں فرمایا کہ غلاموں کے آزاد کرانے سیں مال خرچ کرو ۔ سورهٔ نساء میں کتنا صاف طور پر بیان کر دیا ہے کہ خدا صرف شرک کو نہیں بخشنے کا اور اس سوا کے جتنے کناہ ہیں آگر چاہے گا ان کو نخش دمے گا۔ ایک اور جگہ کس خوبی سے کلیہ قاعدہ بتایا ہے کہ حس نے تابعداری سے اپنا سنہ خدا کے سامنر کیا اور وہ نیکی کرنے والا ھے تو اس کا ثواب اس کے پرور دگار کے پاس ھے۔ ان کو کچھ خوف نہیں اور نہ وہ غمگین ہوں کے پس یہ تمام آیات اور آن کی مانند اور بہت سی آیتیں آیات محکمات ہیں جن کا مطلب سوائے ایک کے کوئی دوسرا ھو ھی نہیں سکتا۔

ذات باری کی تعبیر به جز اس کے که ، سوجود واحد لانهٔ ولاشریک له و لیس کمشله شئی ـ نه آیات کمات سے هو سکتی هے اور نه آیات متشابهات سے اس لیے قرآن مجید میں جا بجا اس

کی صفات کو بیان کیا ہے مگر جہاں جہاں صفت باری بیان ہوئی هیں وہ سب از قبیل آیات متشامات کے هیں - " حسى لا يموت" کے الفاظ سے ہم کو آسی زندگی اور سوت کا خیال آتا ہے جو ہم انسانوں اور حیوانوں میں دیکھتے ھیں ۔ حالان که ذات باری اس حیات و ممات سے جس کو ہم جانتے ہیں بری ہے ۔ سمیم و بصیر و علیم ہونے کی صفات کو بہ جز اُس قوت اور جس کے جو ہم کو بذریعہ کانوں اور آنکینوں اور بعد وجود سعلوسات کے ان کے ادراک سے حاصل هوتی هے اور کچھ نہیں جانتے ۔ حالاں که ذات باری اس قسم کی صفات سے بری ہے ۔ رحم اور غضب و قہر سے ہم آنہیں صفات کو سمجھتے ہیں جو ہارے دل کو کسی کی حالت زار دیکھ كر لاحق هوتي هين ـ اور هارا دل اس سے متاثر هو در مضطر و رقیق هو جاتا هے یا کسی مخالف کی مخالفت یا خلاف طبع امر سرزد ھونے کے سبب ھارے دل میں ایک جوش انتقام لینے کا اور ایسے فعل کے کرنے کا جس سے ہارے جوش قلب کو تسکین ہو پید! ہوتا ہے ۔ سگر ذات باری اس قسم کی صفات رحم و قہر سے پاک و مبرا ہے ۔ خدا کی نسبت عرش پر بیٹھنا اس کے ہاتھ ہونے آس کا منه هونا بیان هوا ہے ـ ان الفاظ سے به جز ایسے تخت کے جس کو ہم نے دیکھا ہے اور بہ جز آن ہاتھوں کے جو ہارے بدن سیں ہیں اور به جز اس منه کے جو زیادہ سے زیادہ شان و شوکت والا هم نے دیکھا ہے اور کوئی معنی ہارے خیال میں نہیں آ سکتے مگر خدا تعاللی اس طرح سے تخت پر بیٹھنے اور ایسے ھاتھوں اور ایسے منه کے ہونے سے مبرا ہے ۔ حشر اجساد، نعیم جنت ، عذاب دوزخ کا جن آیتوں میں بیان ہواہے وہ سب آیتیں متشابہات میں سے ہیں جسد کے سوجود ہونے کا خیال بہجز اس طریقہ کے جسکو ہم دیکھتے ہیں اور کسی طرح پر آ هی نهیں سکتا اور اس سیں کچھ شبہ نہیں ہے کہ

حشر اجساد سے اسی معمولی و عرفی طریقه پر محشور هونا مقصود نہیں ہے اور نه موجوده اجسام کا بعینها محشور هونا مراد ہے۔ نعیم جنت و عذاب دوزخ کے لذیذ و آلام جو قرآن مجید میں بیان هوئے هیں ان کی کیفیت به جز اس کے جو هم اپنی جسانی حالت میں پاتے هیں اور کچھ سمجھ نہیں سکتے اور اس میں کچھ شبه نہیں که وه حالت اس جسانی حالت سے مغائر هوگی پس وه تمام آیات متشابهات هیں جن کے کئی مطلب سمجھ میں آتے هیں اور اصلی مقصود متعین نہیں هو سکتا یا ان میں ایسے مطالب هیں جو انسان کی حس سے نہیں هو سکتا یا ان میں ایسے مطالب هیں جو انسان کی حس سے محارج هیں اور بطور تمثیل کے بذریعه آیات متشابهات بیان هوتے هیں جن لو لوں کے دلوں میں کجی ہے۔ وہ خرابی ذالنے کے لیے آن کے پیچھے پڑے رهتے هیں اور ان کی غلط تاویل کرتے هیں اور جو لو د علم میں راسخ هیں وہ کہتے هیں کہ جو کچھ بیان هوا ہے وہ سب خدا کے پاس سے آیا ہے اس لیے وہ اس قسم کی تاویلوں کے دریے نہیں ہوتے اور کہتے هیں که ۔

وہ علمة العلل جس كو خدا كہتے هيں وحده الا شريك هے وهى علمة العلل كم وهى علمة العلل كمام چيزوں كى خالق هے ـ ايسى علة العلل كے ليے ضرورى هے كه اس ميں ايسى چيز بهى هو جس كو هم زندگى كہتے هيں ايسى چيز بهى نه هو جس كو هم موت كہتے هيں اس ميں كوئى ايسى چيز بهى هونى ضرور هے جس كو هم لفظ سمع و بصر و علم و رحم و غضب و قہر سے تعبير كرتے هيں آس ميں كوئى ايسا امر بهى هونا ضرور هے كه جن كاموں كو هم هاته پاؤں منه وغيره كے ساته منسوب كرتے هيں اس ميں بهى منسوب كرتے هيں اس ميں به على اس ميں به على اس ميں هونا لير جميع اشياء كے هونے كو ايسى چيزوں كا اس ميں هونا لازم هے اس ليے هم اس كے حيى لا يموت ، سميع ، بصير ، عليم ، لازم هے اس ليے هم اس كے حيى لا يموت ، سميع ، بصير ، عليم ،

رحان و رحیم ، قہار و جبار هونے پر یقین کرتے هیں مگر اس امر کی که اس کی حیات کیا ہے اور عدم موت کیا ہے اس کا سمیع و بصیر و علیم و رحان و رحیم و جبار و قہار هونا کیا ہے اور کیسا ہے کچھ تاویل نہیں کرتے ۔ لا یعلم تاویلہ الااللہ ۔ هاں اس قدر کہ سکتے هیں که هارا سا نہیں ۔ پس هارے نزدیک آیات متشابهات پر ایمان لانے کے یہی معنی هیں اور فطرت انسانی کا یہی مقتضلی ہے ۔

جبرئیل و میکائیل اور فرشتوں کا وجوں

جبرئیل و میکائیل یمودیوں نے فرشتوں کے لیے نام مقرر کیے تھے اور ان کے ھاں سات فرشتے نہایت مشہور فرشتوں میں ھیں۔ مگر اس کا ثبوت نہیں ھے کہ کسی نبی نے ان کو بتایا تھا کہ یہ فرشتوں کے نام ھیں ۔ بلکہ ایسا معلوم ھوتا ھے کہ صحف انبیاء میں کوئی صفت صفات باری میں سے کسی خاص لفظ کے ساتھ تعبیر کی گئی تھی اور پھر رفتہ رفتہ وہ لفظ فرشتہ کا نام متصور ھونے لگا۔ قرآن مجید میں ان کا استعال اسی طرح پر ھوا ھے جس طرح کہ یہودیوں کی تقلید سے ان کو فرشتوں کے نام قرار دیے ھیں ۔ قرآن مجید میں صرف دو فرشتوں یعنی جبرئیل و سیکائیل کا نام آیا ھے ۔ وہ دونوں صرف دو فرشتوں کے ھاں بھی اسی نام سے مشہور ھیں '' صرف تلفظ فرشتے یہودیوں کے ھاں بھی اسی نام سے مشہور ھیں '' صرف تلفظ فرشتے یہودیوں کے ھاں بھی اسی نام سے مشہور ھیں '' صرف تلفظ فرشتے یہودیوں کے ھاں بھی اسی نام سے مشہور ھیں '' صرف تلفظ

(جبریل) عبری زبان میں اس لفظ کے معنی قوۃ اللہ یا قدرۃ اللہ کے هیں یہ لفظ دانیال پیغمبر کی کتاب میں آیا ہے۔ حضرت دانیال نے سینگ دار مینڈھے اور سینگ دار بکرے کی لڑائی کا ایک خواب دیکھا تھا اُسی خواب میں ایک شخص نے دریا کے کنارہے سے پکار کر کہا کہ اے جبرئیل اس شخص یعنی دانیال کو اس کے خواب کی تعبیر سمجھا دے اور ایک دفعہ وهی شخص جس کا نام

۱- دانیال باب ۸ ورس ۱۹ ، باب ۹ ورس ۲۱ -

خواب میں حضرت دانیال نے جبرئیل سنا تھا ان کا خواب سمجھانے کو ان کے پاس آیا تھا۔ لوقا نے جو انجیل' لکھی ہے اس کے ملر باب میں جبرئیل کا ذکر ہے جس نے الشیع حضرت ذکریا کی بیوی کو حامله هونے کی بشارت دی اور پھر حضرت مرجم کو بھی بیٹا ھونے کی خوش خبری سنائی ۔ علمائے ہود کے نزدیک جبرئیل بنی اسرائیل کے لیے قابض الرواح ہیں اور آن کی روحیں انھی کے پاس رهتی هس ، تالمد مس ان كو ملك النار كما هے اور يه لكها ھے کہ رعد یہ ان کی حکمرانی ہے اور میووں کا پکانا آن سے متعلق ھے ۔ علم نے ہود یہ بھی سمجھتر عس که جس ئیل بڑے زبان داں عس اور بابل میں جو لو کوں کی زبانیں ستر قسم کی هو گئی تھیں آن سب کو یه حانتر عس اور حضرت یوسف کو وه سب زبانس انهس نے سکھا۔ دی تھیں اور کدانی اور سریانی زبان سوائے حدرئیل کے اور کسی فرشته کو نہیں آتی ۔ غالباً زبان دانی سی آن کے مشہور ہونے کے سبب مسلانوں نے تصور کیا ہے کہ یہی خداکی وحی یعنی قرآن کی آیتیں خدا سے سن کر یاد کر لیتر تھر اور آنحضرت کو آکر سناتے تھر ۔ (میکٹیل) کے عبری معنی میں '' سن کا لله '' کے هیں دانیال

(میکئیل) کے عبری معنی میں ''سن کا تھ '' کے هیں دانیال کی کتاب میں اور آن کے خوابوں میں یہ لفظ بھی آیا ہے۔ مشاهدات یوحنا میں بھی یہ لفظ ہے اور لکھا ہے کہ آسان پر لڑائی هوئی ۔ میکائیل اور اس کے فرشتے اژدھے سے لڑے اور اژدھے اس کے فرشتوں سے لڑے پس غالب نہ ہوئے اور ان کے لیے آسان پر جگہ نہ رهی اور بھودا نے میکائیل کی نسبت لکھا ہے کہ '' جب

١- لوتا باب ١ ورس ١٩ ، ٢٦ -

۲- دانیال باب ، ر ورس سر -

سـ مشاهدات يوحنا ، باب ١٢ ، ورس ١ -

⁻⁻ سودا

بڑے فرشتہ میکائیل نے شیطان کے ساتھ موسلی کی لاش کے حق میں تکرار کرکے گفتگو کی تب اس نے بدنامی کی نالش کرنے میں دلیری نه کی ۔ لیکن کم اللہ تجھے ملامت کرے ''۔

بہر حال هم کو اس میں کچھ شبہ نہیں ہے کہ جو الفاظ صفات باری پر مستعمل هوئے تھے آخر کو انہی الفاظ کو فرشتوں کا نام سمجھنے لکے ۔ یہودی خیال کرتے تھے کہ سیکٹیل قوم بنی اسرائیل کا محافظ اور نگہبان ہے اور جبرئیل کو سمجھتے تھے کہ وہ بنی اسر ئیل کا مخالف ہے ۔ اس سبب سے جبرئیل کو اپنا دشمن مجھے تھے اور اس سے عداوت رکھتے تھے آسی کی نسبت خدا نے فرسایا ہے کہ جو کوئی جبرئیل کا یا میکٹیل کا دشمن ہے بےشک خدا آس کا دشمن ہے ۔ مگر جبرئیل و میکٹیل کا دشمن ہے بےشک حکایة اس کا دشمن ہے ۔ مگر جبرئیل و میکٹیل کا اس آیت میں حکایة نام ہونے سے ان کے ایسے وجود واقعی پر جیسا کہ یہودیوں نے اور ان کی ہیروی سے مسلمانوں نے تصور دیا ہے استدلال نہیں کے اور ان کی ہیروی سے مسلمانوں نے تصور دیا ہے استدلال نہیں کے وہرین گے ۔

(ملائکہ) فرشتوں کی نسبت بھی جو بحث ہے وہ نہایت ہی غور طلب ہے قرآن مجید میں فرشتوں کا ذکر آیا ہے اور اس لیے ہر ایک مسلمان کو جو قرآن پر یقین رکھتا ہے فرشتوں کے موجود اور ان کے مخلوق ہونے پر یقین کرنا ضرور ہے۔ مگر جہاں تک بحث ہے اس پر بحث ہے کہ وہ کیسی مخلوق ہے۔ عام خیال مسلمانوں کا اور علمائے اسلام کا یہ ہے کہ جس طرح انسان و حیوان جسم و صورت و شکل رکھتے ہیں اسی طرح وہ بھی جسم اور صورت و شکل رکھتے ہیں اور ان کے پر بھی ہیں جن سے وہ آڑ کر آسان پر جاتے ہیں اور زمین پر آتر آتے ہیں اور خدا کا پیغام پیغمبروں تک پہنچاتے اور دنیا کے کام جو آن سے متعلق ہیں کرتے پھرتے ہیں اور حیوانات

کے جسم اور ان کے جسم میں اتنا ھی فرق ہے کہ ان کا جسم میں سے ماتھ کو لگتا ہے، نہ دیکھنے محسوس نہیں ھوتا۔ نہ چھونے سے ھاتھ کو لگتا ہے، نہ دیکھنے سے آنکھ کو دکھائی دیتا ہے اور باوجود اس قدر نازک ھونے کے وہ بہت بڑے بڑے اور نہایت مشکل مشکل کام کرتے ھیں، پہاڑ اٹھا لیتے ھیں۔ زمین کو آلٹ دیتے ھیں اور آن میں یہ بھی طاقت ہے کہ کبھی اپنے جسم کو ایسا کر لیتے ھیں کہ ان کی اصلی صورت جو بہت بڑی خیال کی گئی ہے دکھائی دے جاتی ہے اور آن میں یہ بھی قدرت ہے کہ جس شخص کی صورت چاھیں بن جاویں میں یہ بھی قدرت ہے کہ جس شخص کی صورت چاھیں بن جاویں اور انسانوں کے پاس آکر باتیں کریں ھیں۔

ھارے پاس کسی ایسی مخلوق کے ھونے سے جو کسی قسم کا جسم و صورت بھی رکھتی ھو جو ھم کو نه دکھائی دیتی ھو انکار کی کوئی وجه نہیں ہے ۔ پس ھم کہتے ھیں که شاید ایسی مخلوق ھو ۔ مگر ھم ایسی مخلوق کے ھونے کا دعوی بھی نہیں کرتے اور جو افعال ایسی مخلوق کی نسبت منسوب کیے جاتے ھیں ان کا بھی اقرار نہیں کرتے کیوں که ان باتوں کے اثبات کے لیے ھارے پاس کوئی دلیل نہیں ہے ۔ قرآن مجید سے فرشتوں کے اس قسم کے وجود کا اور ان کے اس قسم کے جسم کا اور ان کے ان افعال کا جن کا اور دکر ھوا کچھ ثبوت نہیں ہے ۔

فرشتوں کے اس قسم کے وجود اور افعال کا ثبوت ضرور ہے کہ دلیل نقلی سے ہو کا اور اس لیے قبل شروع کرنے اس بحث کے ہم کو مناسب معلوم ہوتا ہے کہ علمائے علم کلام نے جو بحث نسبت دلیل نقلی کے کی ہے اس مقام پر اس کو نقل کریں ۔

شرح مواقف میں اس بات پر ایک بحث لکھی ہے ، کہ دلائل نقلیہ جن سے مطالب پر استدلال کیا جاتا ہے مفید یقین ہیں اور معتزلہ یا جمہور اشاعرہ کا یہ مذہب بیان کیا ہے کہ مفید نہیں اور

اس کی وجه یه لکھی ہے که جن الفاظ سے استدلال کیا جاتا ہے آن کی نسبت جاننا چاھیے که وہ انھی معنوں کے لیے وضع کیے گئے ھیں۔ جو معنی آن سے لیے جاتے ھیں اور اس بات کوبھی جاننا چاھیے که یہی معنی آن سے مراد بھی ھیں۔ پہلی بات کے جاننے کے اصول تین ھیں لغت ، صرف ، نحو اور یه تینوں اصول روایت احاد سے ھم تک پہنچے ھیں۔ مثلاً اصمی اور خلیل و سیبویه سے اور اگر وہ صحیح بھی ھوں تو ممکن ہے کہ خود اھل عرب نے اس میں غلطی کی ھو۔ اس لیے که امراء القیس جو سب سے بڑا شاعر زبانه جاھلیت کا تھا۔ آس نے کئی جگه ان باتوں میں غلطی کی ہے اور ان اصول کی فروعات آس نے کئی جگه ان باتوں میں غلطی کی ہے اور ان اصول کی فروعات قیاس پر سبنی ھیں اور روایت احاد اور قیاس دونوں ظنی دلیاں ھیں۔

دوسری بات اس پر موقوف ہے کہ جن معنوں کے لیے وہ لفظ وضع ہوئے تھے اُن معنوں سے کسی دوسرے معنی میں مستعمل نہیں ہوئے اور نیز وہ لفظ مشترک المعنی بھی نہیں ہیں کیوں کہ اگر مشترک المعنی ہوں تو ہو سکتا ہے کہ جو معنی ہم نے سمجھے ہیں اُن سے وہ معنی مراد نہ ہوں بلکہ دوسرے معنی مراد ہوں اور نیز یہ بھی معلوم ہو کہ وہ مجازی معنوں میں بھی نہیں بولے گئے ہوں تو ان سے وہی معنوں کہ اگر مجازی معنوں میں بولے گئے ہوں تو ان سے متبادر موت ہیں اور یہ بھی معلوم ہو کہ کلامیں کوئی مضمر بھی نہیں ہوتے ہیں اور یہ بھی معلوم ہو کہ کلامیں کوئی مضمر بھی نہیں ہوا کیوں کہ اگر کوئی شے مضمر بھی نہیں ہوا اور نیز وہاں کوئی تخصیص بھی نہ ہو ، کیوں کہ اگر کوئی تخصیص بھی نہ ہو ، کیوں کہ اگر کوئی تخصیص بھی نہ ہو ، کیوں کہ اگر کوئی تخصیص ہوں تا خر بھی نہ ہو ۔ ہوں گے ہوں گے اور نیز وہاں کوئی تخصیص بھی نہ ہو ، کیوں کہ اگر کوئی تخصیص بھی نہ ہو ، کیوں کہ اگر کلام میں تقدم و تاخر بھی نہ ہو ۔ کیوں کہ اگر کلام میں تقدم و تاخر بھی نہ ہو ۔ کیوں کہ اگر کلام میں تقدم و تاخر بھی نہ ہی بلئ

جاویں کے اور ان باتوں میں سے ہر ایک بات ایسی ہے جو فی الواقع کلام میں ہوتی ہے اس لیے ضرورۃ ً نقل سفید یقین نہیں ہوتی ۔

ان سب باتوں کے هونے کے بعد اس بات کا حاننا بھی ضرور ھے کہ جس بات پر نقلی دلیل دلالت کرتی ہے اس پر کوئی عقل سعاوضہ بھی نہیں ہے ۔ کیوںکہ آگر کوئی عقلی معاوضہ پایا جاوے گا تو ضرور نقلی دلیل پر اس کو ترجیح هوگی اور اُس نقلی دلیل کو ضرور دوسرے معنّوں میں تاویل کرنا پڑے گا مثلاً یہ حو خداکا قول هے که '' الدرحمن على العدرش استدوى '' يه صاف دلالت كرتا هي كه خدا تخت ير بيٹها هوا هي مگر دليل عقل اس كي معارض هے اور خدا کا تخت بر بیٹھا ہوا ہونا عقل دلیل سے محال ہے اس لیر آس نقلی دلیل کی غلبہ یا بادشاہت سے تاویل کی کئی اور أَذَر يون نه كيا جاوے تو اجتاع نقيضين يا ارتفاء نقيضين لازم آتا هے اور اگر دلیل نقلی کو عقل پر ترجیح دبی تو فرع سے اصل کا ابطال لازم آتا ہے ۔ کیوں کہ جو چیزیں نفلی ہیں آن کا اثبات بھی بہ جز عقل کے اور کسی طرح ممکن نہیں ۔ پس نقل کے لیے بھی عقل ہی اصل ہے۔ اس لیے انمل کو ترجیح دینے سے اصل سے فرع کا ابطال لازم آتا ہے اور فرع بھی آس سے باطل ہو جاتی ہے کیوں کہ صحت آغل تو متفرع تهی عقل بر جس میں نساد هونا مانا گیا تو نقل بھی متماوع الصحت نه رهي ـ عنلي معاوضه کا هونا بهي يقيني نهين هے ـ کیوں کہ خایت الغایت یہ ہے کہ باوجود تلاش کے 'کوئی معارض عقلی نہیں ملا ۔ لیکن معارض عقلی کے نہ ملنر سے اس کے نہ ہونے پرِ یقبن نہیں ہو سکتا اور اس سے ثابت ہوا کہ دلالت نقلی بلکہ عقلی بھی امور ظنی پر موقوف ہے اور اس لیر دلالت نقلی اپنر مدلولات ہر مفہد یقیں نہیں ھے ۔

صاحب شرح مواقف نے ان دلیلوں کے لکھنے کے بعد یہ

نکھا ہے کہ یہ دلیلیں ٹھیک نہیں ھیں۔ بلکہ حق یہ ہے کہ دلائل نقلی شرعیات میں آن قرائن سے جو منقول ھیں مشاھدہ ھوتی ھیں اور بنطور تو اتر کے ھم تک پہنچی ھیں اور جن سے تمام احتالات مذکورہ بالا جانے رھتے ھیں۔ مفید یہ قین ھوتی ھیں۔ کیوں کہ تمام اھل لغت کے بیان سے ھم جانتے ھیں کہ جن معنوں میں لفظ ارض و ساء کا اور اسی کی مانند جو اور مستعمل لفظ ھیں رسول خدا علیهالسلام کے وقت میں آنھی دعنی میں مستعمل تھے جو معنی کہ اب ان سے کے وقت میں آنھی دعنی میں مستعمل تھے جو معنی کہ اب ان سے فیل کے وقت میں کچھ شک شبہ نہیں اور معارض عقلی کا نہ ھونا کیا کو یعنی پیغمبر کو صادق ماننے سے جانا جاتا ہے کیوں کہ انر معارض عقلی کا ھونا خیال کیا جاوے تو قائل کا کذب لازم معارض عقلی کا ھونا خیال کیا جاوے تو قائل کا کذب لازم اللے ہے۔ (ھذا محصل مانی شدر حالہ واقی)۔

مکر جو کچھ نسبت دلیل نقلی کے مفید یقین ھونے کے شارح مواقف اور صاحب مواقف ہے لکھا ھے وہ کسی قدر زیادہ غور کے اسل ھے ۔ اس لیے کہ انفاظ مستعملہ کے جو معنی بطور تواتر اور به نقل اهل لغت عمر تک پہنچے ھیں وہ مسمیات آن الفاظ کے ھیں بلالحاظ آن کی ماعیت کے ۔ مشلا ارض و ساء جو سب سے زیادہ مشہور مستعمل الفاظ هیں آن کے معنی جو هم تک بطور تواتر کے پہنچے میں وہ اسی قدر ھیں کہ جس چیز پر هم رهتے هیں وہ ارض هے اور کچھ جو چبز هم کو اپنے سر ہر دکھائی دیتی ہے وہ آسان ہے اور کچھ شبہ نہیں ہے کہ عرب قدیم اس قدر سے زیادہ اور کوئی معنی ان لفظوں کے نہیں سمجھتے تھے ۔ مگر اهل کلام نے اور فقہا اور فقہا اور عبائے الملام نے صرف اسی قدر پر تناعت نہیں کی بلکہ ان کے معنوں میں وہ باتیں بھی شامل قرار دی ھیں جن کا غالباً خیال بھی عرب میں وہ باتیں بھی شامل قرار دی ھیں جن کا غالباً خیال بھی عرب فدیم کو نہیں تھا۔ اور اس صورت میں آن الفاظ کی دلالت آن معنوں پر فقعی نہیں ہے ۔

الفاظ مشترک المعنی کی نسبت کوئی قرینه ایسا نہیں ہے کہ جس سے آن کا کسی ایک معنی پر مستعمل ہونے کو قطعی دلیل موجود ہو ـ

الفاظ کا مجازی معنوں میں مستعمل ہونا ایک ایسا وسیع امر ہے جس کی نسبت نہ نقل سے اور نہ اہلِ لغت کے تواتر نقل سے تصفیہ ہو سکتا ہے اور یہی حال اضار اور تخصیص اور تقدیم و تاخیر کا ہے۔

ان سب سے زیادہ ایک اور اس ہے جس پر شارح مواقف اور صاحب مواقف بلکہ اور کسی نے بھی غور نہیں کیا اور وہ کلام غیر مقصود ہے ۔ مثلاً ایک شخص یہ بات کہے کہ جب آفتاب مغرب سے نکلے یا اونٹ سوئی کے ناکے میں سے نکل جاوے تب یہ ام واقع ہوگا اور مخاطب اس کو یہ جواب دے کہ آفتاب کے مغرب سے نکلنے اور اونٹ کے سوئی کے ناکے میں سے کل جا۔ پر بھی یہ امر واقع نہ ہوگا ۔ اس کلام میں آفتاب کا مغرب سے نکلنا اور اونٹ کا سوئی کے ناکے میں سے نکل جانا کلام مقصود نہیں ہے بلکہ عدم وقوع اس امر کا جس کے وقوع کا قائل مدعی تھا ، مقصود ہے اور اس کلام سے نکلے گا یا اور اونٹ سوئی کے ناکے میں سے نکل جانا کلام مقصود ہے اور اس نات کی در حقیقت کبھی آفتاب مغرب سے نکلے گا یا اونٹ سوئی کے ناکے میں سے نکل جاوے گا لازم نہیں آتی ۔ پس دلیل اونٹ سوئی کے ناکے میں سے نکل جاوے گا لازم نہیں آتی ۔ پس دلیل نقلی میں اس بات کا علم بھی کہ وہ کلام غیر مقصود نہیں ہے اشد ضروریات میں سے ہے اور بغیر اس کے کوئی نقلی دلیل مفید یقین نہیں ہو سکتی ۔

قرآن مجید میں اس قسم کا کلام غیر مقصود نہایت کثرت سے ہے ۔ مشرکین و اہل کتاب کے عندیہ میں بہت سی ایسی باتیں سائی ہوئی تھیں جن کا در اصل کچھ وجود نه تھا ، یا وجود تھا ۔ مگر اس کی جو حقیقت که وہ سمجھے ہوئے تھے دراصل وہ نه تھی ،

یا وه بات ظاهر مین دکھائی دیتی تھی اور بطور غلط العام یا باعتبار مشاهده اسی کو واقعی سمجهتر تهر ـ حالان که حقیقت اور اصلیت ب خلاف اس کے تھی اور قرآن محید کو اس سے محث مقصود نه تھی اس لیے اس کو اسی طرح بیان کیا ۔ جس طرح مشرکین اور اہل کتاب خمیال کرتے تھے اور کبھی اسی پر بطور حجت الزامی کے کلام متصود کی بناء پر قائم کی اور کبھی اس کو بطور تظہیر مسلمہ مخالف کے اور کبھی بطور ایک مسئلہ غلط العام کے اور کبھی بلحاظ مشاہدہ ظاہری کے اس کو بیان کیا اور کلام مقصود سمجھا گیا یس کلام مقصود کے سوا جس قدر کلام ھے وہ سب کلام غیر مقصود ھے اور اس سے کوئی ثبوت کسی امر کی واقعیت کا حاصل نہیں ہوتا اور نه وہ کسی امر کے لیر مفید یقین ہوتا ہے اور اس لیر دلیل نقلی کے مفید بالیقین ہونے کو قطع نظر ان تمام باتوں کے جو شارح مواقف اور صاحب مواقف نے بیان کی ہیں۔ اس بات کا علم کہ وہ كلام غير مقصود نهي هے، واجب ضرور هے ـ يه اس جو هم نے بیان کیا اس کو کچھ کلام اللہ ہی سے خصوصیت نہیں ہے۔ بلکہ عام کلام کا اور خود ہاری روز مرہ گفتگو کا بلکہ تمام دنیا اور تمام قوموں کی باہمی گفتگو و کلام کا یہی طریقہ ہے کہ جو امر بحث سے اور مقصود سے خارج ہے اس کے صحیح یا غیر صحیح هونے سے قطع نظر کر کبھی بطور حکایت اور کبھی بطور تسلیم فرضی اور کبھی بغیر کسی خیال کے اس کا ذکر اور بیان آ جاتا ہے اور اس سے بہ جز اس کے کہ اس کے بعد کلام مقصود بنایا جاوے گا اور کچھ مقصد نہیں ہوتا یہی سبب ہے کہ بعض اشخاص غلطی سے سمجھتے ھیں کہ قرآن محید میں بعض ایسی ہاتیں بیان ھوئی ھیں کہ جو حقائق موجودہ کے برخلاف ہیں اور بعضر اس سے بھی زیادہ غلطی یه کرتے هیں که اس کو کلام مقصود سمجھ کر اس بات ہر اصرار

کرتے ھیں کہ وھی در اصل حقائق موجودہ ھیں اور دراصل دونوں غلطی پر ھیں قرآن مجید بلاشبہ کلام اللہ ہے مگر انسانوں کی زبان اور انسانوں کے کلام کے طرز پر۔ پس اس کلام کو مثل ایک انسان کے کلام تصور کرنا چاھیے اور اس سے معانی و مطالب و احکام و مقاصد اخذ کرنے اور اس سے دئیلیں قائم کرنے میں اس کو انسان کے کلام سے زیادہ کچھ رتبہ دینا نہیں چاہے۔

اب هم کو ملک اور ملائکہ کے لفظ سے اور جس طرح پر کہ فرشتوں کا خیال انسانوں کے دل میں بیدا هوا اور جس طرح کا خیال عہودیوں اور عیسائیوں میں فرشتوں کی نسبت تھا اور جس طرح سے کہ ان کا بیان قرآن مجید میں هوا هے اُس بر بحث کرنی چاهیے ۔ قدیم زمانه کی تمام دنیا کی قوموں کا یہ حال تھا کہ جو امور عجیب و غریب ان کے سامنے ایسے پیش آتے تھے جس کی علت ان کی سمجھ غریب ان کے سامنے ایسے پیش آتے تھے جس کی علت ان کی سمجھ سے باهر تھی ۔ اس کو کسی ایسی قوت یا ایسے شخص سے منسوب کرتے تھے جو انسان سے برتر اور خدا سے کم تر تھی اسی خیال سے کم تر تھی اسی خیال سے تمام بت پرست قوموں نے اپنے هاں فرشتر نام کر لیر ۔

ملک کے لفظ کی اصل اہل لغت ملائک بتاتے ہیں اور اس کے معنی رسول یا پیغمبر یعنی پیغام پہنچانے والے کے کہتے ہیں مگر اس لفظ کا اطلاق آس شے پر ہوتا ہے جس کو خدا تعاللی نے اپنے مقاصد کے انجام کے واسطے یا اپنے وجود یا قدرت کے اظہار کے واسطے معن کیا ہو۔

توریت اور صحف انبیاء اور انجیل سی فرشته کے لفظ کا استعال نهایت وسیع معنوں میں آیا ہے۔ کتاب دوم شموئیل باب ۲۸ ، ورس ۲۸ میں اور کتاب دوم ملوک باب ۱۹ ورس ۳۵ میں اور زبور داؤد باب ۸۵ ورس ۲۸ میں وبا پر فرشته کا اطلاق ہوا ہے۔

اور زبور داؤد باب م.،،،، ورس م سی هواؤں پر فرشته کا اطلاق کیا گیا ہے ۔

کتاب ایوب باب ، ورس س، و کتاب اول شموئیل باب ، ، ورس س اور انجیل لوقا باب ے ورس س، باب و ورس ، ، ، ، هی فرشته کا لفظ عام ایلچیوں پر بولا گیا هے ۔ کتاب اشعیاه باب س میں ورس و کتاب ملاکی باب س میں فرشته کا لفظ پیغمبر یعنی انبیا کے معنوں میں آیا هے اور کتاب واعظ باب م ورس ہ و کتاب ملاکی باب س ورس ے میں فرشته کا لفظ بمعنی کاهن یا امام کے مستعمل هوا هے ۔ مشاهدات یوحنا باب لفظ بمعنی کاهن یا امام کے مستعمل هوا هے ۔ مشاهدات یوحنا باب ورس ، سی اور انجیل کے اور چند مقاموں ، میں فرشته کا لفظ حضرت عیسلی کے رسولوں پر بولا گیا هے ۔

توریت میں بہت جگہ فرشتوں کو اس طرح بیان کیا ہے جیسے کہ ایک انسان اور دوسرے انسان کے پاس آئے اور ملاقات کرے اور باتیں کریں ۔ توریت کی پہلی کتاب مسملی یہ کتاب پیدائش باب ہم میں فرشتہ کا بطور ایک شخص کے تمام رات حضرت یعقوب سے کشی لڑنے کا اور اخیر کو ان کی ٹانگ مڑوڑ ڈالنے کا ذکر لکھا ہے ۔ اور ظاہر ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اس سے حضرت یعقوب کو بیاری نقرس یا وجع الورک کا ہونا مراد ہے ۔ پس اگر یہ خیال محیح ہو تو کہا جا سکتا ہے کہ مرض پر بھی فرشتہ کا اطلاق ہوا ہے اور اسی کتاب کے باب ہ، میں حضرت لوط کے پاس دو فرشتوں کے آنے کا ذکر ہے جو مسافر آدمیوں کی صورت میں آئے فرشتوں کے آنے کا ذکر ہے جو مسافر آدمیوں کی صورت میں آئے فرشتوں کی اور نان فطیری ان کے لیے پائی اور انہوں نے کہائی فیافت کی اور نان فطیری ان کے لیے پائی اور انہوں نے کہائی فیافت کی اور نان فطیری ان کے لیے پائی اور انہوں نے کہائی فیافت کی اور نان فطیری ان کے لیے پائی وجود ہائے روحانی یا عقول فلکی کی نسبت مستعمل ہوا ہے جو خدا تعالٰی کی طرف سے اس کے.

احکامات بجا لانے کے واسطے مامور ہیں ۔

ارواح کی نسبت قدیم یہودیوں کا خیال اس زمانہ کے خیال سے کسی قدر مختلف تھا اس زمانہ میں روح سے غیر مادی چیز خیال کی جاتی ہے اور مادہ کو ضد روح اور روح کو ضد مادہ سمجھا جاتا ھے ۔ مگر ہودی عبری لفظ ، مروح سے غیر مادی شے مراد نہیں لیتر تھے بلکہ غیر مرئی جسم سمجھتے تھے اور ان کے جوہر کو خالص هوا یا رقیق آک تصور کرتے تھے اور اس لیے جب قدیم ہودی فرشتوں کو ارواح کہتے تھے تو آن کے ذی جسم ہونے سے آن کو انکار نه تها بلکه صرف ماده غلیظ کی نجاستوں سے مبرا هونا سمجھتے تھے ۔ سنٹ پال نے جو اپنے نامه اول موسومه کرنتھیاں باب ١٥ ورس مهم ميں لکھا هے، اس سے پايا جاتا هے كه وہ بھى روحانی اجسام کو تسلیم کرتے تھے۔ یہودیوں اور عیسائیوں کی کتب مقدسه میں روحانی عقول کا اکثر ذکر پایا جاتا ہے جن کی حالت وجود جدا کانه ہے اور ایک آسانی جاعت قرار دی گئی ہے جس کا سردار خود خدا ہے۔ کتاب دانیال باب ے ورس ١٠ و انجيل متى باب ٢٦ ورس ٥٥ و انجيل لوقا باب ٢ ورس ١٦ و نامه عبرانیاں باب ۱۲ ورس ۲۲،۳۲ سے کڑوڑھا بلکہ کڑوڑھا در کڑوڑھا فرشتوں کا ھونا معلوم ھوتا ھے اتنے بڑے جم غفیر کے اندر مختلف درجے اور مختلف صفتیں سوجود ہونی ضرور ہیں۔ تاکہ انسان سے لے کر خدا تک ایسا سلسلہ وجود فائم ہو جاوے جو خالق اور کمترین ذی عقل مخلوق کی تفاوت کو مربوط کر دے ـ ہودیوں کی مقدس کتابوں میں فرشتوں کا ایسی جاعتوں میں منقسم هونا سذکور ہے جن کی عزت اور قوت اور صفت غیر مساوی ہے اور آن پر سردار اور حکام بھی ھیں ۔

اس سین کچھ شبه نہیں ہے که یهودیوں کی قدیم کتب مقدسه

میں یعنی آن کتابوں میں جو قید بابل سے پیش تر لکھی گئی ھیں یہ خیال صاف صاف بیان نہیں ھوا۔ بلکہ جو کتابیں جلا وطنی کے زمانہ میں اور اس کے بعد کو لکھی گئی ھیں ان کتابوں میں اس خیال نے صورت پکڑی ھے اور خصوصاً حضرت دانیال اور حضرت ذکریا کی تحریرات میں اس خیال کا پتہ ملتا ھے ،کتاب ذکریا باب ، ورس ، امیں ایک فرشتہ سب سے اعلیٰ درجہ کا ھے جو خدا کے روبرو کھڑا رھتا ھے اور فرشتوں سے بطور اپنے کارندوں کے کام لیتا ھے - حضرت دانیال نے حضرت میکائیل فرشتہ کو بہت بڑے بڑے لقب عطا فرمائے ھیں ، نامہ بہودہ ورس ہ اور اول نامہ تھسلینی کے باب ، ۲ فرمائے ھیں ، نامہ بہودہ ورس ہ اور اول نامہ تھسلینی کے باب ، ۲ فرمائے ھیں صرف بہودیوں کے ساتھ ھی مخصوص نہ تھی۔ بلکہ رکھتے ھیں صرف بہودیوں کے ساتھ ھی مخصوص نہ تھی۔ بلکہ حضرت عیسلی کے حواریوں کا بھی بہی خیال تھا ھاں اس قدر ٹھیک حضرت عیسلی کے حواریوں کا بھی بہی خیال تھا ھاں اس قدر ٹھیک ھے وہ حواریوں کے وقت میں نہ تھی۔

یمودیوں کی کتب مقدسه میں فرشتے همیشه مجسم هو کر انسانی صورت میں دکھائی دیتے تھے اور کسی جگه اس بات کا اشارہ نہیں ملتا که یه اجسام حقیقی نه تھے۔ متقدمین یمودی بیشک یه جانتے هیں که ان اجسام کا مادہ هارے اجسام کے مادہ کی مانند نہیں هے۔ کیوں که فرشتوں میں یه قدرت هے که جب چاهیں اپنے تئیں لوگوں کو دکھلا دیں اور جب چاهیں نگاهوں سے غائب هو جاویں۔ عیسائی بھی اس سے انکار نہیں کر سکتے۔ کیوں که وہ یقین کرتے هیں که جب حضرت عیسیٰی مصلوب هونے کے بعد اٹھے ، کرتے هیں که جب حضرت عیسیٰی مصلوب هونے کے بعد اٹھے ، تو کبھی ان کا جسم حواریوں کو دکھائی دیتا تھا اور کبھی نگاہ سے غائب هو جاتا تھا۔ اگرچه وہ همیشه انسان کی صورت پر دکھائی دیتے تھے مگر یمودیوں نے اس سے یه بات لازم نہیں تصور کی تھی ،

که فرشتے انسان هی کی صورت رکھتے هیں۔ بلکه متقدمین ہمودی یه اعتقاد رکھتے تھے که جو چیز خالص روح نہیں ہے کوئی نه کوئی شکل ضرور رکھے گی۔ ممکن ہے که ان کی صورت انسان کی سی هو یا اور کسی شکل کی۔

یمودیوں کی کتب مقدسه میں اناث ملائکه کا ذکر نہیں پایا جاتا اور عیسائی بھی بدلیل انجیل متی باب ۲۲ ورس ۱۳ بطور استنباط کے یہی سمجھتے ھیں که فرشتوں میں مذکور اور اناث کی کچنج تمین نہیں ھے۔ کتب مقدسه میں غالباً اس وجه سے که مذکر کا صیغه زیادہ معزز ھے۔ فرشتوں کی نسبت مذکر کا صیغه استعال ھوا ھے۔ مگر اکثر بت پرست قومیں فرشتوں کو ذکور اور اناث قرار دیتی ھیں اور دیوتا اور دیبی کا ماننا آن خیالات کو ظاھر کرتا ھے۔

عیسائی اور یہودی دونوں فرشتوں سی ان صفات کو تسلیم کرتے ھیں ۔ انسان سے ان میں عقل کا زیادہ ھونا اور ان کا قوت اور قدرت میں زیادہ ھونا ۔ ان کا پاک اور برگزیدہ ھونا اور یہ بات کہ فرشتے خدا تعاللی کے منشاء اور مرضی کے اظہار کے ذریعے ھیں کتب مقدسہ یہودیوں اور عیسائیوں سے بخوبی معلوم ھوتی ھے اور اسی سبب سے بعض کاموں کو آن کتابوں میں بالکل فرشتوں ھی کی طرف منسوب کیا ھے ۔ انسانوں کے مقسوم کے متعلق امورات کی طرف منسوب کیا ھے ۔ انسانوں کے مقسوم کے متعلق امورات میں بھی آن کی وساطت ھوتی ھے یہودی اور عیسائی یہ بھی خیال کرتے ھیں کہ گو فرشتوں کی وساطت ھاری نظروں پوشیدہ ھو تب بھی گان کی وساطت تسلیم ھو سکتی ھے ۔ کیوں کہ عبرانیوں کے خط کے باب اول ورس یہ و زبور داؤد باب یہ ورس ے و باب ۹۱ ورس ۱۱ فرانوں کو نجات کے وارثوں کی خدمت کے لیر بھیجتا ھے ۔

قدیم عیسائی سمجھتے تھے کہ ہر فرد و بشر کے ساتھ ایک

فرشته هے جو اس کی حفاظت پر متعین هے ۔ مشرکین کا بھی اسی کے قریب قریب عقیدہ تھا ۔ یونانی اپنے محافظ دیوتا کو '' ڈیمن '' اور روسی جینیس کہتے تھے اور یہودی اور قدیم عیسائی یه بھی سمجتے تھے هر انسان پر دو فرشتے متعین هوتے هیں ایک نیکی کا ایک بدی کا ۔ عام یہودی بھی فرشتوں کی نسبت یہی اعتقاد رکھتے هیں ۔ مگر ایک فرقه یہودیوں کا جو صدوق نام سے مشہور تھا وہ فرشتوں کا منکر تھا ۔

بعض لو کوں کا یہ بھی خیال تھا کہ یہودیوں کا یہ دستور ہے کہ خدا کی عظمت اور قدرت کے ہر ظہور کو فرشتوں کی وساطت کی طرف منسوب کرتے ہیں اور اس لیے وہ فرشتوں کے وجود اصلی کو نہیں مانتے اور یہ سمجھتے ہیں کہ خدا کی قدرت کی غیر معلوم قوتوں کا نام فرشتہ رکھ دیا ہے۔ جیسے کہ مشرک ہر چیز کو جو عجیب و غریب ہوتی ہے اور جس کی علت آن کے فہم سے باہر ہوتی ہے۔ دیوتاؤں کے کاموں کی طرف منسوب کرتے ہیں۔ مگر عیسائی مذہب کے عالم اس کی تردید میں یہودبوں کی کتب مقدسہ اور انجیل کی وہ آیتیں پیش کرتے ہیں جن میں فرشتوں کے ایسے کام بیان کیے گئے ہیں جو کسی طرح اس رائے کے مطابق نہیں ہو سکتے بیان کیے گئے ہیں جو کسی طرح اس رائے کے مطابق نہیں ہو سکتے وہ بڑی دلیل یہ پیش کرتے ہیں کہ حضرت عیسلی کی نسبت کہا گیا ہے کہ وہ فرشتوں سے برتر ہیں ، پس اگر فرشتوں کا کوئی وجود اصلی ہو تو یہ کہنا مہمل ہو جاتا ہے۔

اب ہم کو اس بات کی تلاش کرنی ہے کہ قدیم مشرکین عرب کا یعنی اس زمانہ کے عربوں کا جب کہ یہودیوں کا میل جول عرب

۱- کتاب پیدایش باب ۱۹ - ورس ۱، ۱۹ - کتاب قضاة باب ۱۹ - ورس ۱، ۱۹ انجیل ستی باب ۲۸ - ورس ۲، ۲۰ و باب ۲۱ ورس ۱۰ و عال باب ۱۸ ورس ۸ -

میں نہیں ہوا تھا فرشتوں کی نسبت کیا خیال تھا اور آیا وہ لفظ ملک اور ملائکہ کو انہیں معنوں میں خیال کرتے تھر جن معنوں میں کہ ہودی خیال کرتے تھر یا نہیں ۔ حہاں تک کہ ھم نے تفتیش کی ہے قدیم عربوں کا لفظ ملک اور ملائکہ کی نسبت ایسا خیال جیسا که مهودیوں کے ہے ثابت نہیں ہوا۔ مشرکین عرب بلا شبہ ارواح فلکی کو یا اوراح فرضی کو یا ارواح اشخاص متوفی کو بطور خـدا پوجتر تھر اور ان کو محسم و ستحیز سمجھتر تھر اور ان کے بت اور ان کے نام کے تھان اور ان کے نام سے ھیکل اور مندر بناتے تھر مگر ان پر کبھی لفظ ملک یا ملائکہ کا اطلاق نہیں کرتے تھر ۔ جہاں تک هم سے هو سکا هم نے اشعار جاهلیت پر بھی جس قدر که هم کو دست یاب ہوئے غور کی ۔ ہم کو کوئی شعر بھی ایسا نہیں ملا حس میں لفظ سلک یا ملائکہ کا ان ارواحوں پر جن کو وہ پوجتر تھر اطلاق کیا گیا ہو ۔ ہم کو قرآن مجید میں بھی کوئی ایسی سند نہیں ملی جس میں منقولاً بزبان مشرکین لفظ ملک با ملائکہ کا آن ارواحوں پر اطلاق کیا گیا ہو۔ ہاں یہ بات تو تسلیم کی حا سکتی ہے کہ لغت کی کتابوں میں لفط ملک کے معنی ایلچی یا رسول یا پیغامحی کے لکھر ہیں۔ مگر یہ تسلیم نہیں ہو سکتا کہ قدیم مشرکین عرب اس کا اطلاق اس قسم کے رسولوں پر کرتے ہیں جن کو ہمودی ملک یا ملائکہ کہتے تھے ۔ ھاں اس قدر بات تسلیم هو سکتی ہے که قدیم عرب اور نیز رسول خدا صلی اللہ علیه وسلم کے زمانہ کے عرب بھی ملائکہ کا اطلاق اُن قوا پر جن سے از روئے قانون قدرت دنیا کے امورات انجام پاتے ہیں کرتے تھے ، جیسر کہ ابو عبیدہ جاہلی کے اس شعر میں ہے ہے

لست لا نسى ولكن لملاك تنزل في جدو السماء بصوب

صوب کہتے ہیں مینہ کو اس لیے شعر سے پایا جاتا ہے کہ مینہ برسانے کی جو قوت ہے اس کو فرشنہ سمجھتے تھے ۔ یہ بھی معلوم ہوتا ہے کہ عرب فرشتوں کو متحیز بھی سمجھتے تھے جیسے کہ امیہ ابن صلت جاھلی کے اس شعر میں ہے

فكان برقع والملائك حولمه سدر تو اكله القوائم اجمرب

مگر اس بات کا که وه آنهی معنی اور مراد میں استعال کرتے تھے جن میں که یہودی استعال کرتے تھے هنوز ثبوت طلب ہے۔ اس خیال کے ثبوت پر ایک بڑی دلیل یه ہے که فرشتوں کا کوئی نام عربی زبان کا نہیں ہے اور جبرئیل و میکائیل یه دو نام جو قرآن میں آئے ھیں وہ عبری ھیں اور اسرافیل و عزرائیل اور اور نام جو مسلمانوں میں مشہور ھیں سب عبرانی زبان کے ھیں۔ پس انهی اصول پر جو شارح مواقف نے قرار دئے ھیں۔ اھل لغت کا یه لکھنا که '' الملائک الملکک الملک لانه ۔ یبلغ عن الله تعالی '' مفید یقین نہیں۔

فقه اللغة میں ملائکہ کی نسبت اهل عرب کا جو خیال لکھا ہے وہ بالکل ہارے اس بیان کے مطابق ہے اُس میں ابی عثان الجاحظ کا قول لکھا ہے ، که عرب جن کے درجے قرار دیتے تھے جب که وہ عام طور پر جن کا ذکر کرتے تھے تو صرف لفظ جن بولتے تھے ۔ اور جب ایسے جن کا ذکر کرتے تھے جو انسانوں کے ساتھ رہتا ھو تو اس کے لیے عامی کا لفظ بولتے تھے ۔ جس کی جمع عار ہے اور جب ایسے جن کا ذکر کرتے تھے جو بچوں کو ستاتا ہے تو اُس کے لیے ارواح کا لفظ بولتے تھے جو بچوں کو ستاتا ہے تو اُس کے لیے ارواح کا لفظ بولتے تھے اور جب که وہ خبیث ہوتا اور تکلیف دیتا تھا تو اس پر شیطان کا اطلاق کرتے تھے اور جب اس سے بھی دیتا تھا تو اس کو مارد کہتے تھے اور جو اس سے بھی

زیادہ قوی هوتا تھا اُس کو عفریت کہتر تھر اور اگر وہ پاک ستھرا ہوتا تھا اور بالکل بـھلائی اس سے پہنچتی تـھی تـو اس کـو ملک کہتر تھر اور ایک اور مقام میں لکھا ہے ، کہ حکم بن ایان نے عکرمہ سے اور انھوں نے ابن عباس سے روایت کی ہے '' کہ قریش جن کے سرداروں کو بنات الرحان یعنی خدا کی بیٹیاں کہتر تھر ۔ اس سے صاف ثابت ہوتا ہے کہ عرب اُن غیر مرئی چیزوں کو جن کو نیک و پاکیزہ سمجھتر تھر اور جن سے خلقت کو بھلائی اور نیکی ہچنر کا خیال کرتے تھر ان کو ملک کہتر تھر ۔ مگر وہ معنی اور مراد جو ملک کے لفظ سے ہودیوں نے مقرر کیر تھر یا جو زمانہ اسلام کی کئی صدی بعد کی مصنفہ کتب لغت میں لکھ دیے گئیر هیں اس معنی و مراد میں عرب لفظ ملک کو استعمال نہیں کرتے تھر ۔ قرآن محید مس کلام مقصود مس کسی جگه لفظ ملک یا ، لائکه کا اس مراد سے استعال نہیں ہوا ھے جو مرادکہ ہودیوں نے قرار دی تھی جس کی تفسیر هم هر ایک مقام پر لکھیں گے۔ بلکه برخلاف اس کے ملائکہ کا اطلاق آن قدرتی قوا پر جن سے انتظام عالم مربوط ہے اور ان شیون قدرت کاملہ پردِرد کار پر جو اس کی ہر ایک مخلوق میں به تفاوت درجه ظاہر هموتی هیں ملائلکه کا اطلاق هموا هے ـ '' سہورہ والنازعات'' سے اس کا نحوبی ثبوت ہوتا ہے ۔ اس کے بہلر چار جملوں کی نسبت منسرین میں اختلاف هے ۔ مگر پانچویں جمله " تالمد برات امرا" كي نسبت كسي كو اختلاف نبس اور حمله منسرین متفق هس که ' مدبرات ' سے ملائکه مراد هیں ـ پس اب غورکرنا چاهیر که ' مدبرات ' امور کون هیں ـ سی قوا هی جن کو خدا تعالیٰ نے اپنی حکمت کاملہ سے تمام امور عالم کا مدبر مخلوق کیا ہے ـ

ان آیتوں میں جن کی تفسیر هم لکھتے هیں کلام مقصود

صرف اس قدر ہے کہ جو شخص اس وحی کا عدو ہو جو خدا نے محد رسول الله صلى الله عليه وسلم كے دل ميں ڈالي ہے اور جوكوئي خدا اور اس کے فرشتوں اور اس کے رسولوں کا دشمن ہو تو سے شک اللہ آن کافروں کا دشمن ہے۔ ہودیوں نے اپنر عندیہ میں دو جداگانه فرشتر ٹهرا رکهر تهر۔ ایکجرئیل اور ایک میکائیل مچهلر کو اپنا دوست جانتر تھر اور پہلرکو اپنا دشمن اور جوکہ دین محدی کو اپنر برخلاف خیال کرتے تھر تو یہ سمجھتر تھر کہ جبرئیل حو هارا دشمن هے۔ وہ آنحضرت صلی الله علیه وسلم کو یه باتس سکھاتا ہے۔ خدا نے پیغمبر سے کہا کہ تو کہد دے کہ وہاں حبرئیل ھی اللہ کے حکم سے سرے دل سی یہ باتس ڈالتا ہے سگر جو کوئی که ان باتوں کا اور فرشتوں کا اور جرئیل اور سیکائیل کا اور رسولوں کا دشمن ھے خدا اس کا دشمن ھے ۔ فرشتوں کی دشمنی بیان کرنے کے بعد جبرئیل اور میکائیل کا بالتخصیص نام لینا گویا ہود کے خیالات کا اعادہ ہے اور وہ نام مقصود بالذات نہیں ھیں کیوں کہ اکر ہودیوں کا یہ خیال نہ ہوتا تو غالباً وہ نام نہ لیے جاتے ۔ پس آن دونوں کے نام قرآن محید میں آنے سے یہ بات ثابت نہیں هوتی که در حقیقت اس نام کے دو فرشتے سع تشخصها عليحده عليحده ايسي هي مخلوق هين جيسے زيد و عمر ـ بلکه انهي آیتوں سے پایا جاتا ہے کہ جس شر کو ہودی جبرئبل تعبیر کرتے تنہے وہ کوئی جداگانه مخلوق مع تشخصه نه تھی کیوں که خدا نے فرمایا ہے کہ '' بے شبہ اس نے (یعنی جبرنیل نے) ڈالا ہے۔ تر مے دل یر اللہ کے حکم سے (وہ کلام جو) سے بتاتا ہے اُس چیز کو جو اس سے پیش تر ہے۔ دل میں ڈالنے والی کوئی ایسی مخلوق جو آس شخص سے جس کے دل سیں ڈالا گیا ہے۔ جدا نه هوگا ۔ نہیں هوئی ۔ پس در حقیقت یہودی جس کو جبرئیل کہتے

تھے اور جس کا نام حکایتاً خدا نے بیان کیا ہے وہ ملکہ نبوت خود آنے ضرت میں تھا جو وحی کا باعث تھا۔ اس سے اگلی آیت میں خدا تعالئی نے بلا ذکر جبرئیل کے فرمایا ہے ''کہ بے شک ھم نے بھیجی ھیں تیرے پاس کھلی ھوئی نشانیاں '' ان وجوھات سے یہ بات کہ جبرئیل در حقیقت کسی فرشتہ کا نام ہے ثابت نہیں ھوتی۔ ھاں اس قدر تسلیم ھو سکتا ہے کہ آسی ملکہ نبوت پر جبرئیل کا اطلاق ھوا ہے۔ کیا یہ تعجب کی بات نہیں ہے ، کہ باوجودیکہ خدا کے پاس ان دو فرشتوں کے سوا اور بھی بہت سے فرشتے ھیں۔ مگر بہ جز دو فرشتوں کے اور سب بے نام ھیں۔ کیوں کہ کسی اور کا نام قرآن شریف میں نہیں آیا ۔ حضرت عزرائیل بھی بڑے مشہور فرشتے ھیں جو سب سے پاس آویں گے اور کسی کو بیں چھوڑیں گے اور آگرچہ آن کا ذکر بلفظ ملک الموت قرآن میں نہیں چھوڑیں گے اور آگرچہ نام نہیں بیان ھوا ہے۔ ان باتوں سے صاف بیا جاتا ہے کہ فرشتوں کے نام یہودیوں کے مقرر کیے ھوئے ھیں۔ پایا جاتا ہے کہ فرشتوں کے نام یہودیوں کے مقرر کیے ھوئے ھیں۔ پایا جاتا ہے کہ فرشتوں کے نام یہودیوں کے مقرر کیے ھوئے ھیں۔

"فرشتور اور شيطان كى حقيقت"

'' سلک'' کے معنی ایلچی یا پیغامجی کے ہیں ، عبرانی ، یونانی اور فارسی میں جو لفظ ملک کے لیر ہے آن سب کے معنی بھی ایلچی کے هل ۔ جو خدا کا پیغام نبیوں کو ہنچاتا ہے۔ توریت میں بعض جگه عام ایلچی کے لیے بھی بولا گیا ہے اور بعض جگه مذھبی پیشواؤں اور ابر اور ھوا اور وبا کے لیے۔ مگر فرشتوں کے وجود کی نسبت لوگوں کے عجیب عجیب خیالات میں ۔ انسان کی یه ایک طبعی بات ہے کہ جب کسی ایسی مخلوق کا ذکر ہو جس کو وہ نہیں جانتا تو خواہ نخواہ اس کے دل میں اُس مخلوق کے ایک جسانی جسم متحیز کا جس کے رہنر کی کوئی جگہ بھی ہو خیال جاتا ہے۔ پھر آن کے اوصاف پر خیال کرتے کرتے آن کی ایک صورت جو آن اوصاف کی مقتضی ہوتی ہے اُس کے خیال سیں قرار پاتی ہے اور پھر وہ اس بات کو تو بھول جاتا ہے کہ میں اس مخلوق کو نہیں جانتا نہ میں نے اس کو کبھی دیکھا ہے اور یوں جاننے لگتا ہے کہ وہ مخلوق وہی ہے جو میرے خیال میں ہے اور جب وہ خیال لوگوں میں نسل در نسل چلا آتا ہے تو ایسا مستحکم ہو جاتا ہے کہ گویا اس میں شک و شبہ مطلق ہے ہی نہیں۔ یہی حال فرشتوں کی نسبت ہوا ہے ۔ ان کو نوری سمجھ کر گورا گورا سفید برف کا رنگ ـ نوری شمع کی مانند باهیں ـ بلور کیسی پنڈلیاں : ھیرے جیسر پاؤں ، ایک خوب صورت انسان کی شکل مگر نه مرد نه عورت ، تصور کیا ہے۔ آسان ان کے رہنرکی جگہ قرار دی ہے آسان سے

زمین یہ آنے اور زمین سے آسان پر جانے کے لیر ان کے پر لگائے هیں ۔ کسی کو شان دار اور کسی کو غصه ور و غضب ناک کسی کو کم شان کا کسی کو صور پھوکتا ۔ کسی کو آتشیں کو زہے سے سینہ برساتا خیال کیا ہے ۔ بعض اقوام نے جو زیادہ غور و فکر كى هے تو ان كے لير نه جسم مانا هے نه أن كا متحيز هونا تسلم کیا ہے اور اس لیر فرشتوں کی نسبت انسانوں کے دو فرقر ہوگئر ھیں ۔ ایک وہ جو فرشتوں کے وجود اور آن کے متحیز ھونے دونوں باتوں کے قائل میں اور ایک وہ کہ ان کے متحیز مونے کے قائل نہیں ۔ بعض ُبت پرست سمجھترتھے کہ فرشتے سعد اور نحس کواکب کی روحی ہی محوسی اور بعض بت پرستوں کا یہ خیال تھا کہ عالم کی ترکیب نور و ظلمت سے ھے اور نور و ظلمت دونوں سوجود حقیقتس ہیں مگر آیس میں مختلف اور ایک دوسر ہے کی ضد۔ نور کے بھی بال بچے ہوتے ہیں اور ظلمت کے بھی بال بچر ہوتے ہیں۔ مگر نہ اس طرح جیسے کہ انساں اور حیوان جنتر جناتے ہیں بلکہ اسطرح جیسر حکیم سے حکمت اور روشن چیز سے روشنی اور ا**حمق س**ے حاقت نور کی اولاد تـو فرشتر هیں اور ظلمت کی اولاد شیطان ـ حکم عقول ہی جن کو انہوں نے تسلم کیا ہے فرشتہ کا اطلاق كرتے هيں اور كہتر هيں كه فرشتر حقيقت موجوده غير ستحيزه ھیں اور آن کی حقیقت نفوس انسانی کی حقیقت سے زیادہ تر قوی ہے اور انسان کی بہنسبت ان کو علم بھی زیادہ ہے ۔ آن میں سے کچھ تو آسانوں سے اس قسم کا علاقه رکھتر ھیں جیسر که ھارمے بدن سے ہاری روح اور کچھ بجز استغراق کے ذات باری میںکسی چیز سے علاقه نهس ركهتر اور وهي ملائكه مقربين هي اور بعض فلاسفه کہتر ہیں کہ ان کے سوا دو قسمی اور میں اور وہ زمین کے فرشتر ھس اور دنیا کے امورات کو درست کرتے ھس۔ جو نیک کام

کرنے والے هیں وہ تو فرشتے هیں اور جو بد کام کرنے والے هیں وہ شیطان هیں ۔

یہودی فرشتوں کو آدمی کی صورت پر مجسم مانتے تھے اور ان کو اجسام حقیقی سمجھتے تھے ۔ البتہ اُن کے جسم کے مادہ کو مثل انسان کے جسم کے مادہ کے نہیں مانتے تھے بلکہ یہ کہتے تھے کہ اُن کا جہم مادۂ غلیظ سے مرکب نہیں ہے ۔ وہ اپنے تئیں انسانوں کو دکھلا بھی دبتے ھیں ۔ اُن سے بات چیت بھی کرتے ھیں ۔ اُن سے بات چیت بھی کرتے ھیں ۔ ان کے ساتھ کھانا بھی کھاتے ھیں اور غائب بھی ھو جاتے ھیں ۔ پھر کوئی ان کو نہیں دیکھ سکتا ۔ ان کے کھانا کھانے کے بب میں کہتے ھیں کہ ظاهر میں کھاتے ھوئے معلوم ھوتے ھیں مگر انسانوں کی خوراک نہیں کھاتے بلکہ اُن کا کھانا اور ھی کہ انسانوں کی خوراک نہیں کھاتے بلکہ اُن کا کھانا اور ھی کہ تھا ۔ عیسائیوں کا بھی یہی خیال تھا کہ فرشتے جسم رکھتے ھیں اور مقدس ھیں ۔ انجیل میں حضرت عیسنی کو فرشتوں سے برتر کہا گیا ہے اور بہشتبوں کی نسبت کہا ہے کہ وہ فرشتوں کی مانند

عرب کے 'بت پرست فرشتوں کو ایک مجسم اور متحیز چیز سمجھے تھے اور جانتے تھے کہ وہ کھاتے پیتے نہیں اور نہ کچھ بشری ضرورت ان کو ھے ۔ وہ آسانوں پر رھتے ھیں اور زمینوں پر آتے جاتے ھیں ۔ وہ یہ سمجھتے تھے کہ انسان بھی فرشتوں کو زمین پر رھتے چلتے پھرتے دیکھ سکتا ھے ۔ اسی خیال سے وہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی نسبت کہا کرتے تھے کہ اگر وہ پیغمبر ھیں تو ان کے ساتھ فرشتے کیوں نہیں ھیں ۔ عام مسلانوں کا بھی ہی عقیدہ ہے جو عرب کے بت پرستوں کا تھا ۔ وہ فرشتوں کو ھوا کی مانند لطیف اجسام سمجھتے ھیں اور مختلف شکلوں میں بن جانے کی آن میں اجسام سمجھتے ھیں اور مختلف شکلوں میں بن جانے کی آن میں اجسام سمجھتے ھیں اور مختلف شکلوں میں بن جانے کی آن میں

قدرت جانتے هیں اور خیال کرتے هیں که وہ آسانوں پر رهتے هیں.
اور پر دار هیں که اڑ کر زمین پر اترتے هیں اور زمین پر سے اڑ کر
آسان پر چلے جاتے هیں اور چیلوں کی طرح آسان اور زمین کے بیچ
میں منڈلاتے هیں غرض که تمام اقوام میں فرشتوں کی نسبت انسانی
نقائص سے پاک هونے کا اور ایک اعلاٰی تقدس کا خیال تھا۔ اسی خیال
کی وجه سے نیک اور اچھے آدمی کو بھی مجازاً فرشته کہتے تھے۔
جیسے که حضرت یوسف کو زلیخا کی سمیلیوں نے کہا:
''ما هذا بشراً ان هذا الا ملک کریم''۔

میں کہتا ہوں کہ جس طرح انسان سے فروتر مخلوق کا ایک سلسله هم دیکھتر هیں اسی طرح انسان سے برتر مخلوق هونے سے انکار کرنے کی کوئی دلیل نہیں ہے ۔ شاید کہ ہو ۔ گو وہ کیسی ہی عجیب اور ناقابل یقین ہو ۔ مگر ایسی خلقت کے در حقیقت موجود ھونے کی بھی کوئی دلیل نہیں ھے کیوں کہ اس بات کا ثبوت کہ ایسی خلقت ہے ، نہیں ہے ۔ قرآن محید سے فرشتوں کا ایسا وجود جیسا کہ مسلمانوں نے اعتقاد کر رکھا ہے ثابت نہیں ہوتا۔ بلکہ برخلاف اس کے پایا جاتا ہے۔ خدا فرماتا ہے۔ ''و قالوا لولا انزل علیه ملک و لوانزلنا سلکا نقضی الام ثم لاینظرون ـ ولو جعلنه رجلا و لابسنا عليهم ما يلبسون" ـ يعني کافروں نے کہا کہ کیوں نہیں بھیجا ـ پیغمبر کے ساتھ فرشتہ اور اگر هم فرشته بهیجتے تو بات پوری هو جاتی اور ڈهیل میں نه ڈالے جاتے اور اگر هم فرشته هي پيغمبر کرتے تو اس کو آدمي هي بناتے اور بلاشبہ آن کو ایسے ہی شبہ میں ڈالتے جیسے کہ اب شبه میں پڑے هیں ۔ اس آیت سے پایا جاتا ہے که فرشتر نه کوئی جسم رکھتر ھیں اور نه دکھائی دے سکتر ھیں۔ اُن کا ظہور بلاشمول مخلوق موجود کے نہیں ہو سکتا ۔ لجعلنا رجلاً ۔

قید احترازی نہیں ھے ۔ اس جگه انسان بحث میں تھا ۔ اس لیے لیجعدلنا رجلا ۔ فرمایا ورنه اس سے مراد عام موجود مخلوق ہے ۔

ان باریک باتوں پر غور کرنے سے اور اس بات کے سمجھنے سے کہ خدا تعالیٰ جو اپنے جاہ و جلال اور اپنی قدرت اور اپنے افعال کو فرشتوں سے نسبت کرتا ہے تو جن فرشتوں کا قرآن میں ذکر ہے ان کا کوئی اصلی وجود نہیں ہو سکتا ۔ بلکہ خدا کی بے انتہا قدرتوں کے ظہور کو اور اُن قویٰل کو جو خدا نے اپنی تمام مخلوق میں مختلف قسم کے پیدا کیے ہیں۔ ملک یا ملائکہ کہا ہے ۔ جن میں سے ایک شیطان یا اہلیس بھی ہے ۔ پہاڑوں کی صلابت ۔ پانی کی رقت درختوں کی قوت جذب و دفع ۔ غرض کہ تمام قویٰل جن سے مخلوقات موجود دوئی ہیں اور جو مخلوقات میں ہیں وہی ملائکہ و ملائکہ ہیں ۔ جن کا ذکر قرآن مجید میں آیا ہے ۔ وہی ملائک و ملائکہ ہیں ۔ جن کا ذکر قرآن مجید میں آیا ہے ۔ انسان ایک قوائے ملکوتی اور قوائے بیہمی کا ہے ۔ ان دونوں قوتوں کی بے انتہا دُریات ہیں جو ہر ایک قسم کی نیکی اور بدی میں ظاہر ہوتی ہیں اور وہی انسان کے فرشتے اور ان کی ذریات اور میں نسان کے شیطان اور اس کی دریات ہیں ۔

بعض اکابر اسلام کا بھی ہی د ذھب ہے جو سیں کہتا ھوں اور اسام محی الدین ابن عربی نے نصوص الحکم سیں ہی مسلک اختیار کیا ہے ۔ شیخ عارف بالله موید الدین ابن محمود المعروف بالجندی نے جو مریدان خاص شیخ صدر الدین قونوی ۔ مرید امام محی الدین ابن عربی سے ھیں ۔ شرح فصوص الحکم سیں فرشتوں کی نسبت بہت بڑی بحث لکھی ہے ' ۔ شیخ رحمت الله علید اپنی اصطلاح

رضى الله عنه فى ونصول الكميم و كانت الملئكة من بعض قبوى تبلك البصورة البتى هى صورة العالمه (بقيه حاشيه الله صفحه پر)

میں تمام عالم کو مجموع انسان کبیر کہتے ہیں اور انسان کو انسان صغیر۔ مقصود ان کا اس اصطلاح سے یہ ہے کہ انسان عالم کا ایک فرد ہے اور جس قدر قوی السان میں ہیں وہ جزئیات ہیں اور

(بقیه حاشیه گذشته صفحه)

المعبر عنه في اصطلاح القوم بالانسان الكبير ـ قال الشيخ مويد الدين ابن محمود الجندى الذي اخذ الطريق من الشيخ صدر الدين قونوى وهو عن الشيخ مى الدين ابن العربي صاحب الفصوص اعلم ان الملئكة هي ارواح القوى القائمة بالصور الحمية و الارواح النفسية و العقلية القدية و تسميتها ملائكة لكونها روابط و موصلات الاحكام الربانية و الانار الالهية الى العواء الجسمانية فان الملك في اللغة هو القوة و الشدة فلما قويت عذا الارواح بالانوار الرباني و تايدت و اشتدت بها وقويت النسب الربانية و الاسماء الالهية ايضاً على ايقاع احكامها و آثارها ابصال انوارها و اظمهارها سميت ملائكة و هم ينقسمون الى على يوحاني و سفلي و طبعي و عنصرى و مشالي و نوراني فمنهم المهتمون و منهم المسخرون و منهم المساون و العالون اللي آخرما قال -

قال الشيخ وفر فكانت الملئكة كالقوى الروحانية و الحسية التى في نشات الانسان وكل قوة منها محجوبة بنفسها لا ترئ فضل من ذاتها قال الشارح ، القوى الحسية التى في نشات الانسان هي التى متعلقاتها المحسوسات كالابصار والسماع والشم و اللوق و اللبمس ما تعت هذه الخدمات من الواع و الشخصيات و اما المعوى الروحانية فكالمتخيلة و المتفكرة و الحانضية و الذاكرة و العائمة و الناطفة و هذه الفوى الحبات و شخصياتها في حبيطة الروح النسان و فشامها و مجارى تتبرفاتها و احكامية و الحابية و الحابية و الحابية و المحاربة و المحاربة و المحاربة و مناهها المرابة و المناهة و الم

جو اس کے کلیات ھیں وہ انسان کبیر ہے اور فرماتے ھیں کہ اس عالم یعنی انسان کبر کے جو قوی هیں انهی میں بعض کا نام ملائک ہے ۔ شیخ رحمة الله علیه ارقام فرساتے دیں که وہ قوی جن کو ملائک کہتر میں انسان کبیر یعنی عالم کے لیے ایسے میں جیسے انسان کے لیے قوی هیں۔ شارح کہتر هس که دیکھنا اور سننا اور سونگھنا اور چکھنـا اور ُچھونا جو انسان میں ہے وہ سب آنھی قویل ملکوتی حسیہ کے ماتحت ہیں ۔ اور قوت متخیلہ اور متنکرہ اور حافظہ اور ذاکرہ اور عاقاہ و ناطقہ آنھی قوائے ملکوتی روحانیہ کے تابع هي اور جاذيه اور ماسكه اور هاضمه اور غاذيه اور منميه اور مربيه اور مصوره آنهي قوائے ملكوتي طبيعه ميں داخل هيں اور

(بقیه حاشیه گذشته صفحه)

الماسكة والهاضمة والغاذية والمنيمة والمربة والمصورة و شخصياتها ـ راجعة الروح الطبعي وكالحلم و العلم و الوقار والغناة والشجاعة والعدالة والسياسة والنخرة والرياسة وغيرهما مماتحتها من الشخصيات و الانواء بالمماثلة و المثاكلة والمبائنة والمنافرة عائدة الى روم الحيواني و الفساني وكما ان هذا لقوى سنبشة في اقطار نشاة الانسان والكان لكل جنس وصف و نوع سن هذا لقوى محلا حصيصابها هو محل ظمهور احكامة و اثبار و منشاه حقايقه و اسراره و لكن حكم جميعة الانسان سار في الكل بالكل فلذلك العالم الذي هو الانسان الكبير في زعمهم شيات هذا لقوى و اسهاتها بجزئياتها والواعها وشخصياتها سنتشرة ولمشذفي فضاء السملوات والارض و سا بينهما وسا فوفها سن العوالم و تعينات هذا لقوى و الارواء في كل حال بما نياسبذ و بوانفة على الوجمه الذي بلائم بطابقه و بها ملاك الامر النازل سن حضرات الربوبية _

حلم اور علم اور وقار اور سمجه اور شجاعت اور عدالت اور سیاست اور ریاست انهی قوائے ملکوتی حیوانیه میں شامل هیں اور یه تمام قوی آسان و زمین اور آن کی فضا میں پھیلے هوئے هیں ـ

پس شیخ اور ان کے متبع بھی ملائکہ کا اطلاق صرف قوامے عالم پر کرتے ھیں۔ ھارے استنباط اور شیخ رحمت اللہ علیہ کے استنباط میں صرف اتنا فرق ہے کہ شیخ کے نیزدیک تمام قوا جو اجسام مرتبہ و غیر مرتبہ اور اشیائے محسوسہ و غیر محسوسہ میں ھیں۔ وہ جزئیات ھیں اور جو ان کے کلیات ھیں وہ ملائک ھیں اور یہ جزئیات آن کے ذریات ۔ شیخ رحمۃ اللہ علیہ نے اپنے مکاشفہ سے ان جزئیات کے کلیات کو جانا ھوگا۔ مگر جو کہ ھم کو وہ مکاشفہ حاصل نہیں ہے ۔ اس لیے ھم انھیں قویل کو جن کو شیخ اور ان کے متبع ذریات ملائکہ قرار دیتے ھیں ملائکہ کہتے ھیں ۔ مطلب ایک متبع ضرف لفظوں یا جاننے نہ جاننے کا پھیر ھے۔

شیطان کی نسبت ' تو قیصری شرح خصوص میں نہایت صاف صاف وهی بات لکھی ہے کہ جو هم نے کہی ہے ، اُس میں لکھا ہے '' بعضوں نے یہ بات کہی ہے کہ انسان کبیر یعنی عالم میں جو قوت وهمیه کلیه ہے وهی ابلیس ہے اور ہر ایک انسان میں جو

و في القيصرى شرح الخصوص في ذيل ببان ابليس " قيل ابليس هو قوة الوهمية التي في العالم الكبير و القوى الوهمية التي في الانتخاص الشتانية و الحيوانية افرادها لعما رضتها مع العقل الهادي طربق الحق و فبه نظر لان نفس المنظبعة هي الاسارة بالسوء والرحم من سدنتها و تحت حكمها لانها من قواها في اولني بذلك كما قال تعالى و تعلم ما تسوس به نفسه و قال ان النفس لاسارة بالسوء و قال عليه السلام اعداء عللاك نفسك التي بين جنبيك و قال عليه السلام الشيطان يجزى من نبي آدم بجرى الدم و هذا" شان النفس ـ

قوت وهمیه هے وهی ابلیس کی 'ذریات هیں''۔ مگر شارح کہتا ہے که یه ٹھیک نہیں ہے۔ وهم نہیں بلکه نفس امارہ جو انسان میں ہے وهی ُذریات ابلیس ہے۔ خدا نے بھی فرمایا ہے که جو وسوسے دل میں آتے هیں ان کو هم جانتے هیں۔ اور فرمایا ہے که نفس هی برائی کرنے کو کہتا ہے۔ آنحضرت صلی الله علیه وسلم نے بھی فرمایا ہے که '' سب دشمنوں سے زیادہ دشمن تیرا نفس ہے جو فرمایا ہے که '' سب دشمنوں سے زیادہ دشمن تیرا نفس ہے جو تیر کہ نہیں ایک علیه وسلم نے یه بھی فرمایا ہے که '' شیطان انسان میں خون کی طرح چلتا ہے اور ٹھیک یه حالت نفس کی ہے۔ غرض که تمام محققین اس بات کے قائل هیں حالت نفس کی ہے۔ غرض که تمام محققین اس بات کے قائل هیں خوائے بہیمیه تعمیر کرتے هیں یہی شیطان ہے۔

شيطان كا وجود أور انبياء

قرآن مجيد سي خدا فرماتا هے:

خُذُ النَّعَهُ وَ وَ امْ بِالنَّعُرُفُ وَ اعْرَضُ عَنَ النَّجَلَهِ لِمِيْنَ لَوَ اعْرَضُ عَنَ النَّجَلَهِ لِمِيْنَ لَوَ الْمَا يَنَوْزُ غَنْدَكَ مِنَ السَّيْطَانَ نَزْعٌ فَ السَّتَعَدِدُ بِاللهِ اللَّهُ سَمَيْعٌ عَلَيْمٌ لَ

یعنی در گذر کو اخیتار کر اور اچھے کاموں کے کرنے کا حکم کر اور منه پھیر جاہلوں سے اور اگر بھڑکاوے تجھ کو شیطان کا بھڑکانا تو پناہ مانگ اللہ سے بیشک وہ سننے والا ہے جاننے والا ۔

واسا یسنزغنک کی تفسیر مین مفسروں کو بڑی دقت پڑی هے کیوں که وہ شیطان کو ایک جداگانه مخلوق خارج از انسان اور خدا تعالیٰی کا مخالف اور لوگوں کو بدی و نافرمانی پر رغبت دینے والا اور بہکانے والا کفر و شرک میں ڈالنے والا قرار دیتے ہیں ۔ مگر یہ بات مسلم هے که انبیاء علیم السلام کو شیطان بہکا نہیں سکتا اور اس کا بد اثر ذرا سا بھی انبیا پر نہیں ہوتا ۔ پھر کیوں کر خدا نے آخضرت صلی اللہ علیه وسلم کی نسبت کہا هے که '' و اسا ینزغنک من الشیطان نزغ '' مفسرین نے اس کے جواب میں بہت سی تقریریں اور تاویلیں کی هیں جو نہایت بے سر و پا اور لغو هیں ۔ لیکن اگر ٹھیک ٹھیک مطلب سمجھا جاوے تو آیت کی تفسیر میں کوئی مشکل و دقت نہیں ہے ۔

یه بات مذهب اسلام کے هر فرقه میں مسلم هے که انبیا علمه السلام بھی انسانوں کی مانند بشر ھس جیسر که خدا نے آنحضرت صلی الله علیه وسلم کی زبان سے فرمایا ہے کہ '' انی بـشـر مـــُـلـکـم یــوحــی الى " پس جو مقتضائے بشریت هے آس سے انبیاء علیهم السلام بھی خالی نہیں ہیں ۔ انبیاء میں اور عام انسانوں میں یہ فرق ہےکہ انبیاء اس تقاضائے بشری کو روک لیتر هیں اور اس پر غالب آ جاتے هیں اور عام انسان آس سے مغلوب ہو جاتے ہیں اور وہ آن پر غالب ہو جاتا ہے۔ اس آیت سے اوپر کی آیت میں خدا تعالیٰ نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو فرمایا تھا کہ حاهلوں سے در گزر کر اور **آن سے** اپنا سنہ پھیر لیے یعنی کافر جو نالائق باتس کرتے ہیں آن <u>سے</u> در گزر کرنا چاھیر ۔ مگر ایسی باتوں سے رہخ ھونا یا غصہ آنا ایک امر طبعی و مقتضائے بشری ہے اس لیر خدا نے فرمایا کہ اگر تجھ کو ایسا امر پیش آوے تو خدا کو یاد کر اور خدا کی طرف متوجه هو تاكه وه رنج يا غصه جو بمقتضائے بشريت آيا تھا ـ دب جاوے اور غالب نه هونے پاوے ۔ اس آیت میں اور اس کے بعد کی آیت میں شیطان کے لفظ سے صاف اشارہ آس قوت غضبیہ کی طرف ہے جو انسانوں میں اور انبیاء میں بھی مقتضائے خلقت بشری سوجود ہے کون کہہ سکتا ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو کبھی ریخ نه هوتا تها یا کبهی غصه نه آتا تها مگر آنحضرت صلی الله علیه وسلم اینر کال نفس سے خدا کی طرف توجہ کرنے سے ریخ دور فرماتے تھر اور غصه کو دبا دیتر تهر اور قوت غضبیه کو اپنر پر غالب نه هونے دیتر تھر ۔ یہ آیت علانیہ ثابت کرتی ہے کہ قرآن محید میں شیطان کا لفظ آنھی قوا پر جو مقابلہ قوائے ملکوتیہ کے انسانوں مس ممقتضائے فطرت و خلقت انسانی کے ہیں اطلاق ہوا ہے نہ کسی ایسے وجود خارجی پر جو خدا کے مقابل اور اُس کا مہ مخالف

ھو پس آیـت میں کـوئی ایسی مشکل نہیں ہے جس سے ذات پـاک رسول مقبول پر کوئی منقصت آ سکے ـ

شكر هي كه بعض مفسرين نے بهى قريباً قريباً اسى مطلب كى طرف رجوع كى هي ـ امام فخر الدين رازى تحرير فرماتے هيں كه ـ انه تعالىٰي لحا امره بالمعروف فعند ذالك ربما يہهيج سفيه و يظهر السفاهة فعند ذالك امره تعالىٰي بالسكوت عن مقابلة فقال واعرض عن الجاهلين و لحا كن سن العلوم ان اقدام السفيه قديهيج الغضب والغيظ ولا يبقى الانسان على حالة السلامة وعند والغيظ ولا يبقى الانسان على حالة السلامة وعند تلك الحالة يجد الشيطان سجالا في حمل ذالك الانسان على ما ينبغى لا جرمه بين تعالىٰي ما يجرى حجرى العلاج لهذ المرض فقال فاستعذ بالله ـ (تفسير كبير حلد سوم صفحه وجم)

یعنی جب خدا نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو اچھے کاموں کا حکم دیا تو کبھی یہ ھوتا ہے کہ ایک بیوقوف اپنی بیوقوف ظاہر کر کے طبیعت کو بھڑکا دیتا ہے ایسے وقت کے لیے خدا نے اس کے مقابلہ کرنے کے عوض سکوت اختیار کرنا فرمایا اور کہا منہ پھیر لے جاھلوں سے اور یہ بات ظاہر ہے کہ بےوقوف کا اس طرح پیش آنا غصہ اور غضب کو بھڑکا دیتا ہے اور انسان کا اس طرح پیش آنا غصہ اور غضب کو بھڑکا دیتا ہے اور انسان درست حالت ہیں رھتا ۔ ایسی حالت میں شیطان کو موقع ملتا ہے آنسان کو نہ کرنے کی باتوں کے کر بیٹھنے پر بر انگیخته کرنے کا ۔ اس لیے خدا تعالیٰ نے ایسی بات بتا دی جو اس مرض کے علاج کی جگہ ہے اور کہا کہ پناہ مانگ اللہ سے ۔

یه تمام تقریر امام صاحب کی وهی هے جو هم نے لکھی هے

صرف وہ فقرہ اس تقریر کا جس پر ہم نے لکیر کر دی ہے مہمل ہے اگر وہ خارج کر دیا جاوے تو امام صاحب کی تحریر اور ہاری تقریر میں کچھ فرق نہیں ہے ۔ تعجب یہ ہے کہ جب خود امام صاحب نے لکھا ہے کہ غصہ کی حالت میں انسان درست حالت پر نہیں رہتا تو پھر شیطان کو بلانے کی کیا حاجت رہی تھی۔

استوی علی العرش سے کیا مراد ھے

عرش کے معنلی نعت میں تخت رب العالمین کے ، اور تخت بادشاہ کے ، اور عزت کے اور جس سے کوئی امر قائم ہو ، اور گھر کی چھت کے ۔ اور سردار قوم کے اور آس چیز کے جس پر جنازہ اٹھایا جاتا ہے لکھر ہیں ۔

تمام مفسرین عرش سے تخت رب العالمین مراد لیتے هیں۔ اور اس کو موجود فی الخارج سمجھتے هیں۔ تفسیر کبیر میں لکھا هے که تمام مسلمان اس بات پر متفق هیں که آسانوں کے اوپر ایک جسم عظیم ہے اور وہ تخت رب العالمین ہے۔

قرآن مجید میں جہاں عرش کا لفظ آیا ہے وہ دو قسم کی آیتیں ہیں ایک وہ جن دیں صرف عرش کا ذکر ہے اور دوسری وہ که جن میں استوی علی العرش کا ذکر ہے اول ہم ان دونوں کی قسم کی آیتوں کو اس مقام پر لکھتر ہیں۔

(۱) آیات قسم اول جن میں صرف عرش کا ذکر ہے

لا أله الا هو عليه توكلت و هو رب العرش العظم - و - توبه ١٣٠٠ -

قل لوكان سعه آلهة كا يقولون اذا لا يبتغوالى ذي العرش مبيلا - 12 - اسرى - 87 -

فسبحان الله رب العرش عما يصفون - ٢١ - الانبياء - ٢٢ -

قل من رب السماوات السبيع و رب العرش العظيم - ٢٣ -

فتعالى الله المملك الحق لا اله الا هورب العرش الكرم - ٢٣ - الموسنون - ١١٧ -

الله لا اله الا هدو رب العدرش العنظيم - ٢٥ - النحل - ٢٦ -

و ترى الملائكة خافين من حول العرش يسبحون بحمد ربهم وقضى بينهم بالحق و قيل الحمد لله رب العالمين - ٣٩ - زم - ٢٥ -

رفيه الدرجات ذوالعارش - ٠٠٠ - سوسن - ١٥ -

سبحان رب السموات والارض رب العدرش عما يعصفون م

عند ذي العرش سكس - ٨١ تكوير - ٠٠ -

ذو العرش المحيد فع ال لها يبريد ـ ٨٥ ـ بنزج ـ ١٥ - و المدلك عبدتى ارجا لديهها و يحدمل عبرش ربك فوقهم يوسئذ ثمانيه ـ ٩٥ ـ الحاقم ـ ١٥ -

الدنين محمد ون العرش و سن حوله يسبحون بحمد ربهم و يوسدون به ما يستغفرون الدنين اسنوا من مرون عوسدون ما م

و هـو الـذى خـلـق السمـٰوات والارض فى ستـة ايـام وكان عـرشـه عـلى الـاء ليـبـلـوكـم ايـكـم احـسـن عـمـلا ـ ١١ - هـود ـ ٩ -

(۲) آیات قسم ثانی جن میں استوی علی العرشکاذکر ہے

ان ربكم الذي خلق السموات والارض في ستة ايام

على العرش _ - الا عراف - ٥٠ - و سوره - ١٠ - يونس - ٣ الذى خلق السماوات والارض وسا بينها في ستة ايام
ثم الستوى على العرش الرحمان فستل به خبيرا - ٢٥ فرقان - ٠٠ -

الله الذى خلق السملوات والارض و ما بينها في ستة ايام ثم الستوى على العرش ما لكم من دونه من ولى ولا شفيع افلاتـزكـرون يدبر الامر من الساء الى الارض ثم يعرج اليه في يوم كان مقداره الف سنة مما تعدون ـ ٣٢ ـ السجده ـ ٣ - ٣ - ٣ -

هـو الـذى خلق السملوات والارض فى ستـة ايـام ثم الستـوى عـلى الـعـرش ـ ٥٥ - حـديـد ـ م ـ

الله الدى رفع السملوات والارض بغمير عمد ترونها ثم استوى على العرش - ١٣ - رعد - ٢ -

الرحمن على العرش استوى ـ ٢٠ ـ طه ـ ٨ ـ

هـوالـذى خـلق لـكـم سا فى الارض جـمعـيـا ثم استـوى الى الـساء فـسـواهـن سبع سملوات و هـو بـكل شـئى عـليم ـ بقـر ـ ٢٨ -

قبل انكم لتكفرون با الذى خلق الارض في يوسين و تجعلون له اندادا ذالك رب العالمين و جعل فيها رواسي سن فوقها وبارك فيها و تدر فيها اقواتها في اربعة ايام سواء للسائلين - ثم استوى الى الساء و هي و خان فقال لها والارض آميتا طوعاً اوكرهاً قالتا اتينا طاعين فقضا هن سبع سماوات في يوسين و او حي في كل ساء امها و زينا الساء الدنيا بمصابيح و حفظا ذالك تقدير العلم - ١١ - فصلت - ١١ -

باوجود اس کے تمام مسلمان عرش رب العالمین کے ایک

جسم عظيم موجود في الخارج فوق السملوات مانتے هيں مگر لفظ استویل سے تخت پر بیٹھنا مراد نہیں لیتے ۔ بلکہ وہ یقین کرتے ہیں که نه کبهی خدا آس تخت پر بینها اور نه کبهی آئنده بینهر گا ـ اور نه تخت پر اس کا بیٹھنا ممکن ھے ۔ تفسیر کبیر میں لکھا ھے ، فاعلم انه لا ممكن أن يكون المدراد سنه كو نه مستقرا على العرش -کیوں کہ اگر خدا تخت پر بیٹھر یا بیٹھا ہوا ہو تو وہ متناہی ہو جاوے گا اور جب متناهی هوگا تو حادث هو جاوئے ًا ۔ اور حیز معین اور حہت خاص میں محدود ہوگا اور حیز اور سکان کی اس کو احتیاج ہوگی پھر وہ مقدار میں عرش سے بڑا ہو ًکا یا عرش اس سے بڑا ہوگا یا دونوں برابر ہوں گے ہر طرح سے خدا پر مشکل لازم آتی ہے ـ بڑی مشکل یــه پڑتی ہے کــه زمین یا دنیا تو کروی ہے اور جب خدا ایک تخت پر بیٹھا تـو ایک طرف کی دنیا کے لوگوں سے تو وہ اوپر ہوگا اور دوسری طرف کی دنیا کے لوگوں سے نیچر تو سب سے اوپر ہونا اس کا متحقق نبه رہے گا۔ اسی قسم کی سولہ دلیلیں خدا کے تخت پر بیٹھنے کے امتناع میں تفسیر کبیر میں مندرج هين _ غرض كه تمام اهل سنت والجاعت بلكه تمام فرق اسلاميه سوائے بعض کے خدا تعالیٰ کے جلوس کو ممتنع بیان کرتے ہیں جس کا نتیجہ یہ ہے کہ عرش جب سے بنا ہے خالی پڑا ہے اور ہمیشہ خالی پڑا رہے گا ۔ مگر کسی نے یہ نہ بتلایا کہ پھر وہ بنایا کیوں ہے اور کس لیر ۔

جب ہارہے علماء اس مشکل میں پڑے تو انھوں نے استوی اور عرش دونہوں کے معنی بدلے اور کہا کہ ان آیتوں میں جن میں استوی علی العرش کا ذکر ہے وہ چوڑا چکلا جسم عظیم جس کو تخت رب العالمین موجود فی الخارج فوق السماوات قرار دیا ہے مراد نہیں ہے بلکہ عرش سے بادشاہت اور مملکت اور استوی سے

اس پر استعلا یعنی غلبه و قدرت مراد هے چناں چه تفسیر کبیر میں لکھا ہے که:

فيقال (اي القفال رحمة الله عليه) العرش في كلامهم هو لسرير الذي مجلس عليه الملوك ثم جعل العرش كناية عن نفس الملك يقال ثل عرشه أي انتقض ملكه و فسدوا اذا استقام له سلكه و اطرد امره و حكمه قالو استوى عالى عارشه واستقار عالى سريار ملكه هذا ساقاله اقفال و اقول ان الذي قاله حق و صدق و صواب و نظيره قولهم للرحل الطويل فلان طويل النجاد و الرجل الذي يكثر الضيافة كشير الرسادو للرجل الشيخ فللان اشتغل راسه شيبا وليس المراد في شي سن هذا الالفاظ احراءها على ظواهر ها انما المراد منها تعريف المقصود على سبيلا الكناية فكذا هلهنا يمذكر الاستواء على العرش والمراد نفاذ القدرة وحريان المشيئه ثم قال اقفال رحمة الله تعالي عادل على ذاته وعلى صفاته وكييفية تدبيره العالم على الوجه الذي الفوه من ملوكهم و روسائهم استقر في قلوبهم عظمة الله و كمال جلالمه الا ان كل ذالك مشروط بنفي التشبيه فهاذا قال انه عالم فهواسنه انه لا يخفلي عليه تعالىٰ شي م علموا بعقولهم انه لم محصل ذالك العلم بفكرة ولا روية ولا باستعال حاسة و اذا قال قادر علموسنه انه ستمكن سن امجاد الكائنات و تكوين الممكنات ثم علموا بقولهم انه غنى في ذالك الا يجاد و والتكوين عن الات والادوات وسبق الهادة والمددة والفكرة والروية و هكذا لقول في كل صفاته و اذا اخبران له بيتا بجب على عباده

حجه فهوامنه انه نصب لهم موضعا يقصدونه لمسلة ربهم وطلب حوائجهم كما يقصدون بيوت الملك و الروساء لهذا للمطلوب ثم علموا بعقول لهم نفي التشبيه و انه لم مجعل ذالك البيت مسكنا لنفسه ولم ينتفع به في دفع البحر والمرد بعينه عن نفسه فاذا امرهم بتحميده وتمجيده فهدو اسنة انه امل هم بنهاية تعظيمه ثم علم و لمعقولهم انه لا يفرح بذالك التحميد والتعظم ولا يقتم بتركمه والاعراض منه اذا حرفت هذا المقدصة فنقول اله خلق السملوات والارض كما اراد شاء من غير منازع ولا سدافع ثم اخبر الله استوى على البعيرش اي حبصل لله تندبير النمخلوقات عبلني ساشاء و اراد فكان قنوليه ثم استوىل على العرش اى بعد ان خلقها استوي على عرش المك والبجلال ثم قال اقفال والديل على ان هذا هو المراد من قبوليه في صبورة يبونس ربكم البذي خيليق السملوات و الارض في ستة ايام ثم استوى على العرش يبدير الام فقوله بدبر الأمر جبري محبري التفسير لقوله استويل على العرش و قال في هذا الاية التي نحن في تفسير ها ثم استوياعلي المعرش يغشى البيل والنهار يطلبه حشيشا والشمس والقمر ولنجوم مسخرات بامره الاله الخلق والامر وهذا يبدل على ان نوله ثم استوى على العرش اشارة الى سا ذكرنا فان قبل اذا حملتم قوله ثم استوى على العرش على أن المراد استوى على الملك وجب ان يقال الله لم يكن مستويا قبل خلق السماوات والارض قلنا انه تعاللي كان قبل خلق العالم قادر اعللي تخلية ها وتكوينها اما ساكان مكونا ولا موحدا الاشياء باعيانهما الان احياء زيدو اماتة عمرو والطعام هذا امر وارواء ذالك لا يحصل الاعند هذه الاحوال فاذا افسرنا العرش بالملك والملك بهذه الاحوال منح ان يقال انه تعاللي انما استوى على ملكه بعد خلق السموات والارض و هذا جواب حق صحيح في هذا لموضع (تفسر كبر ، جلد س ، صفحه ٢٣٨)

"يعني قفال نے كہا ہے كه عرش كلام عدرب سى وہ نخت ہے جس پر بادشاہ بیٹھتا ہے پھر عرش سے ملک اور سلطنت سمجھی جاتی ھے کہا جاتا ھے (ثل عرشه) حب که سلطنت میں خرابی آ جاوے اور جبكه سلطنت درست هو اوركام اچها چلتا هو اور حكم نافذ هو تو کہتر ہیں کہ (استویل عللی عرشہ و استقر علی سریر ملکہ) یعنی اچھی طرح اپنی سلطنت پر قائم ہے اور اپنے سریر مملکت پر مستقر ہے یہ وہ ہے جو قفال نے کہا ہے اور صاحب تفسیر کبیر کہتر ھیں کہ میں کہتا ھوں کہ یہ حق اور سچ اور صواب ہے اور یہ ایسا ہے جیدا کہ طویدل قامت کے لیے عدرب کا یہ قول ہے (طویل ننجاد) یعنی لمبی پر تله و الا اور بهت زیاده ضیافت کرنے والے کے لیے (کثیر الرماد) بہت خاکستر والا اور بوڑھے آدمی کے لیے یہ كمهنا كــه آس كا سر بڑهاپا سے روشن هـ و گيا (اشتعل راسه شيبا) ــ ان سب الفاظ سے یہ مراد نہیں ھے که وہ اپنر ظاهری معنلی میں جاری هیں بلکه ان سے یہی مراد ہے کمه اصلی مقصود کو بطور کنایہ کے سمجھا دیا جاوے ایسا ھی اس موقع پر کہا جاتا ہے (استوى على العرش) اور مراد هي أس كي قدرت كا نافذ هونا اور اس کی خواہش کا جاری ہونا ۔ قفال نے کہا اللہ تعالی نے جب که سمجهایا اپنی ذات اور اپنی صفات اور اپنی کیفیت تدبیر عالم کو آس طرح پر جس طرح که انهوں نے اپنے بادشاهوں اور سرداروں کو پایا تھا تو اللہ تعاللی کی عظمت آن کے دلوں میں۔

آسي طرح پر قائم هوئي مگر ان سب ميں يه شرط هے كه الله تعاللي كو تشده نه دے حب اللہ نے فرمایا ہے که وہ عالم ہے تو اس سے یه سمحهر که اُس سے کچھ مخفی نہیں ہے ۔ پھر اپنی سمجھ سے یہ جانا کہ یہ علم اللہ تعاللی کو فکر اور غور سے نہیں حاصل ہوا اور نہ حواس کے استعال سے اور جب فرسایا ہے کہ وہ قادر ہے تو جانا کہ وہ پیدا کرنے عالم پر ممکنات کے پیدا کرنے پر قادر ہے پھر اسی سمجھ سے یہ جانا کہ اللہ تعاللی اس ایجاد اور پیدا کرنے میں اوزاروں وغیرہ کا محتاج نہیں ہے اور اس کا بھی محتاج نہیں ہے کہ کچھ مادہ ہ۔و لے اور پھر آس میں کچھ مدت غور کرکے کام آئے اور ایسا ھی قول ہے سب صفات اللہ تعدالٰی میں جب کہ آس نے خبر دی کہ اس کا ایہ کہ گھر ہے اس کا حج آن پر واجب ہے ۔ اس سے انھوں نے سمجھا کہ اس نے ایک جگہ کو مقرر کر دیا ہے خدا تعالنی سے سوال کرنے کے لیے اور اس سے اپنی حاجتیں طلب کرنے کے لیے تاکہ اس کا قصد کریں جیسے که بادشاهوں اور سرداروں کے گھروں کا اس غرض سے قصد کرتے ھیں پھر اپنی عقل سے سمجھا کہ وہ تشبیہ سے پاک ہے اور اسانے یہ گھر اپنر رھنے کے لیے نہیں بنایا ہے اور اس گھر سے اس کو یه فائدہ نہیں ہے کہ وہ اپنے سے گرمی یا سردی کو دفع کرمے پھر جب کہ ان کو حکم کیا کہ اُس کی حمد کریں اور اس کی بزرگی سانیں تو اُس نے نہایت درجه کی تعظیم کا حکم دیا ہے۔ پھر سمجھے که خدا تعاللی اس تحمید اور تمجید سے نه خوش هوتا هے اور نه اس کے ترک کرنے سے رنجیدہ هوتا ہے جب که یه مقدمات تو نے سمجھ لیے توہم کہتے ہیں کہ اللہ تعالٰی نے زمین و آسان کو جس طرح چاھا پیدا کیا بغیر کسی جھگڑا کرنے اور تکرار کرنے والر کے پھر آس نے خبر دی (انبه استوی علی البعرش) یعنی

وہ اپنی سلطنت پر قائم ہوا مراد یہ ہے کہ حاصل ہوئی اس کو تدبیر مخلوقات جس طرح که اس نے چاها تھا اور ارادہ کیا تھا پس یه قبول که عرش پر قائم هوا ایسا هے که بعد پیدائش عالم کے: اپنر عرش حکومت اور عظمت پر قائم ہوا پھر فقال نے کہا کہ اس بات کی دلیل که ہی معنلی مراد هیں اللہ تعالیٰ کے قول کے حو سورة يونس مي هے كه بيشك هارا يروردگار وه الله تعاللي هے جس نے پیدا کیا آسانوں اور زمین کو چھ دن میں پھر قائم ہوا اینر عرش یر که تمام کاموں کی تدبیر کرتا ہے پس یه قول که ور يدبر الامل " بمنزله تفسير كے هے حو قول " استوىل على العرش" کے مطلب کو صاف کھولتا ہے اور اس آیت میں جس کی ہم تفسیر میں هیں یوں فرمایا هے ثم استوی علی العدرش یغشی الليل النهار يطلبه حشيشا پهر قائم هوا عرش پر که چهپاتا هـ رات سے دن کو که تلاش کرتے تھر اس کو دوڑ کر والشمس والنقيمير مسخرات بامره ـ الاليه التخليق والامر، اور چاند اور سورج فرمان بردار ھی اس کے حکم کے جان لو کہ اسی کے لیر پیدا کرنا اور حکم کرنا یه اسی پر دلالت کرتا هے که اس کا یه کہنا که ثم استوی علی العرش اسی کی طرف اشارہ ہے جو ھم نے ذکر کیا اگر یہ اعتراض کیا جاوے کہ تم نے قول (استویل علی العرش) کو اس پر قیاس کیا که مراد هے که اپنی حکومت پر قائم ہوا تو یہ لازم آیا کہ ہملر پیدائش آسان اور زسن کے اس پر قائم نه تها تو هم اس کا یه جواب دیں گے که قبل پیدائش عالم کے وہ اس کے پیدا کرنے اور تکوین پر قادر تھا لیکن نہیں تھا پیدا کرنے والا اور موجودہ اشیاء معینه کا اس لیرکہ زید کا زندہ کرنا اور عمر کا مارنا اُس کو کھانا دینا اور اُس کو پانی دینا یه تمهس حاصل هوتا ۔ اگر آن احوال کے ساتھ پس جب که هم نے

عرش کی تفسیر ملک سے کی اور ملک خود یہی احوال ھیں تو صحیح ہے کہ یہ کہا جاوے کہ اپنے ملک پر قائم ھوا بعد پیدا کرنے آسان اور زمین کے اور یہ جواب صحیح ہے اس موقع پر ۔''

اب میں نہایت ادب سے آن بزرگوں کی خدمت میں جنھوں نے آن آیتوں میں عرش کے لفظ سے سلطنت اور مماکت مراد لی ہے عرض کرتا ہوں که جن آیتوں میں صرف لفظ '' رب العرش '' کا یا '' دب العرش '' کا یا '' دب العرش العظیم '' کا یا '' ذی العرش '' کا یا '' دب العرش کا الکریم '' کا یا '' ذوالعرش المجید '' کا آیا ہے وہاں بھی عرش کے کے معنٰی سلطنت و مملکت کے کیوں نہیں لیے جاتے ۔ جو ایک چوڑے چکلے تخت موجود فی الخارج کے جس کا بنانا بھی ظاہرا بیکار معلوم ہوتا ہے جس پر نہ کبھی خدا بیٹھا ہے نہ بیٹھے گا اور نہ بیٹھ سکتا ہے ، لیے جاتے ہیں ۔

ھاری اس تقریر کے برخلاف شاید چار آیتیں پیش ھو سکتی ھیں اور بیان کیا جا سکتا ہے کہ آن آیتوں میں ایسے مضامین ھیں جن کے سبب عرش کو مثل سریر بادشاھی موجود فی الخارج تسلیم کرنے کی ضرورت پڑتی ہے۔

پہلی آیت سورۂ زم کی ہے جہاں قیاست کے حالات میں خدا نے فرمایا ہے کہ '' تو فرشتوں کو عرش کے گرد کھڑے ہوئے دیکھے گا پاگیزگی سے یاد کرتے ہیں ساتھ تعریف کے اپنے رب کو ۔ دوسری آیت سورہ الحاقہ کی ہے جہاں خدا نے قیاست کے حال میں فرمایا ہے اور اٹھاویں گے تیرے پروردگار کے تخت کو اپنر اوپر آج کے دن آٹھ ۔

تیسری آیت سورۂ موسن کی ہے جہاں خدا نے فرمایا ہے کہ '' وہ جو اُٹھاتے ہیں عرش کو اور وہ جو اُس کے گرد ہیں پاگیزگی سے یاد کرتے ہیں تعریف کے ساتھ اپنے پروردگار کو اور

آس پر ایمان لاتے هیں اور معافی چاهتے آن لوگوں کے لیے جو امان لائے هس ۔"

چوتھی آیت سورۂ ھود کی ہے جہاں خدا نے فرمایا ہے که "
'' وہ وہ ہے جس نے پیدا کیا آسانوں اور زمین کو چھ دن میں اور اُس کا عرش تھا پانی پر ۔''

سورۂ زمر کی آیتیں جن میں عظمت و جلال خدا کا بیان هوا هے وہ سب تمثیلی هیں ، فسرین بھی آن کا تمثیلی هونا قبول کرتے هیں ۔ مثلاً اس میں فرمایا هے ، و الارض جمیعاً قبضة یہوم القیامة و السموات مطوبات بعیده ، پس ظاهر هے که خدا کی نه مٹھی هے اور نه آس کا دایاں هاته ، یه ایک تمثیل یا استعاره یا حجاز هے جس سے مقصود خدا کی عظمت و قدرت کا ظاهر کرنا هے نه یه که حقیقة تخدا زمین کو مٹھی میں لے لے گا اور آسانوں کو هاته پر لپیٹ لرگا۔''

صاحب كشاف نے كها كه قال صاحب الكشاف الغرض من هذا الكلام اذا اخدتة كما هو بجملة و مجموعه، تصوير عظمة و التوفيق عللى كيه جلاله من غير ذهاب بالقبضه ولا باليمين اللى جهة حقيقة او جهة مجاز و كذالك حكم ما يُرى ان جبريل عليه السلام جاء الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا اباالقاسم ان الله يمسك السموات يوم القيامة على اصبح والارقين على اصبع والجبال على اصبع والشجر على اصبع والثرى على اصبع و ساير الخلق على اصبح ثم يهزهن فيقول ان لملك فضحك رسول الله على الله عليه وسلم تعجبا مما قال ثم قرء تصد يتاله وما قدرو الله حق قدره الاية قال صاحب الكشاف و انما ضحك افصح

علماء البيان من غير تبصور امساك ولا اصبع ولا هز ولا شي من ذالك ولكن فهم وقع اول كل شي و آخره على الذبده و الخلاصة التي هي الدلالة على القدرة الباهرة و ان الا فعال الغطام التي تتحير فيها الافهام ولا تكتنيها الاوهام هينه عليه هوانا لا يوصل السامع الى الوقوف عليه الاجراء العبارة في مثل هذا الطريقة من التخيل قال ولا نرى بابا في علم البيان ادق ولاراق ولا الطف من هذا الباب (نفسر كشاف صفحه ١٢٦٥) -

یعنی غرض اس کلام سے جب که اس سب کو یوری طرح سمجھ لر جیسا که وہ سبھی اللہ تعاللی کی عظمت کی تصویر ہے اور کنه حلال اللهی کے سمجھنر میں توقف کرنا ہے نه که قبضه اور دائس ھاتھ کے حقیقی اور محازی معنوں کی طرف جانا اور ایسا هی هے حکم اس روایت کا که جبرئیل آئے رسول اللہ صلی الله علیہ وسلم کے پاس اور کہا اے ابوالقاسم اللہ تعاللی اٹھائے گا آسانوں کو قیاست کے دن ایک انگلی پر اور سب زمینوں کو ایک انگلی پر اور بہاڑوں کو ایک انگلی پر اور درختوں کو ایک انگلی پر اور جو زسینوں کے نیچر ہے ۔ اُس کو ایک انگلی پر اور سب خلقت کو ایک انگلی پر پھر ان کو ہلاوے گا پھر کہر گا کہ میں بادشاه هوں پس هنسے رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم تعجب کرکے آس کے قول پر پھر بطور تصدیق اس بات کے یہ آیت پڑھی و سا قدر والله حق قدرة الايد كها صاحب كشاف نے كه صرف اس وجه سے ہنسے افصح العرب اور تعجب کیا کہ آنھوں نے اس سے مجز اس کے اور کچھ نہیں سمجھا جو کہ علمائے علم بیان سمجھتر ھیں۔ بغیر خیال کرنے اٹھانے اور انگلی اور حرکت کے معنوں کے اور نہیں سمجھا کچھ اس میں سے بلکہ سمجھا واقع ہونا اول

هرشے کا اور آخر هرشے کا بطور خلاصه اور انتخاب کے که وه دلالت هے الله تعالیٰ کی قدرت کامله پر اور اس پر که وه بڑے کام جن میں سب عقلا کی عقلیں حیران هیں اور ذهن ان کو نہیں سمجھ سکتے الله تعالیٰ پر آسان هے نہایت آسان سننے والا اس سے واقف هونے تک پہنچ نہیں سکتا بجز اس کے که کلام کو اسی طریقه پر خیال میں لانے کو بلایا جاوے کہا صاحب کشاف نے کہ هم علم بیان میں کوئی باب اس سے زیادہ دقیق اور لطیف نہیں پاتے هیں۔

علاوہ اس کے صاحب تفسیر کشاف نے ان لفظوں کی مراد اس طرح بیان کی ہے کہ قیل قبضہ مللہ بلا مدافع ولا منازع و یمینه قدرته (کشاف جلد دوم ۱۲۹۷) یعنی الله تعالیٰی کا قبضه اس کا ملک ہے جس میں کوئی تکرار کرنے والا اور جھگڑنے والا نہیں ہے اور دائیں ھاتھ سے مراد اس کی قدرت ہے۔

صاحب تفسير كبير منصف كشاف كى اس تحرير سے كسى قدر خفا هو گئے هيں اور ارقام فرماتے هيں كه اقول ان حال هذا الرجل فى اقدامه على تحسين طريقته و تنفتيح طريقة القدما ، عجيب جد فائه ان كان مذهبه انه يجوز ترك ظاهره اللفظ و الحصير الى المجاز من غير دليل فهذا طعن فى القرآن و اخراج له 'من ان يكون حجة فى شى و ان كان مذهبه ان الاصل فى الاصل فى الكلام الحقيقة و انه لا كان مذهبه ان الاصل فى الاصل فى الكلام الحقيقة و انه لا يجوز العدول عنه الا له ليل منفصل فهذا هو الطريقة التى اطبق عليها جمهور المتقدمين فاين كلام الذى يزعم انه وقع فى التاويلات العسيرة و الكلمات الركيكة بعرفه غيره مع انه وقع فى التاويلات العسيرة و الكلمات الركيكة فان قالوالمراد انه لما دل الدليل على انه ليس المراد

من لفظ القبضة و اليمين هذه الاعضاء وجب علينا ان نكتفى بهذا القدر ولا نشتغل بتعين المراد بل نفوض علمه الى الله تعالى فنقول هذا هو طريق الموحدين الذين يقولون انا نعلم انه ليس مراد الله من هذا الا لفاظ هذه الاعضا فاما تعين المراد فانا نفوض ذا لك العلم الى الله تعالى وهذا هو طريق السلف ذا لك العلم الى الله تعالى وهذا هو طريق السلف المعرضين عن التاويلات فثبت ان هذا لتاويلات التى اتى بها هذا لرجل اليس تحتها شئى من الفائدة (تفسير كبير) -

یعنی میں کہتا ہوں کہ اس آدمی کا یہ حال کہ وہ متوحہ ہے اینر طریقہ کی خوبی بیان کرنے پر اور ہلوؤں کے طریقہ کی برائی بیان کرنے پر نہایت ھی عجیب ہے اگر اس کا یہ مذھب ہے کہ لفظ کے ظاہری معنی کا چھوڑنا اور محازی معنیٰ کی طرف جانا بغیر کسی دلیل کے جائز ہے تو یہ تو قرآں میں طعن کرنا ہے اور قرآن کو دلیل کے درجہ سے خارج کرتا ہے کہ وہ کسی امر میں حجت نہیں ھو سکے گا اور اگر اس کا یہ مذھب ھے کہ کلام مس اصل یه هے که معنیٰ حقیقی مراد هوں اور معنی حقیقی سے بغیر کسی جداگانه دلیل کے پھرنا نہیں چاھیے پس یه وھی طریقه ھے جس پر سب بہلر علماء نے اتفاق کیا ہے پس کہاں ہے وہ علم جس کو وہ خاص اپنا علم بیان کرتا ہے اور کہاں ہے وہ علم جس کو دوسرا نہیں جانتا ہے با وصف اس کے یہ بھی تنگ تاویلات میں پھنسا ہے اور اور بہت رکیک کلمات کہے ہیں اگر یوں کہیں که مراد یه هے که جب دلیل سے یه ثابت هو گیا که لفظ قبضه اور ممن سے یہ اصلی اعضاء مراد نہیں ھیں تو ھم پر واجب ہے کہ هم اسی پر اکتفا کریں اور جو کچھ مراد ہے اُس کے معین

کرنے میں نه مشغول هوں بلکه اس کے علم کو الله تعالیٰ پر چهوڑ دیں ۔ پس هم کہتے هیں که یہی ہے طریقه موحدین کا جو یه کہتے هیں که یہی الله نعالٰیٰ کی ان الفاظ سے به اعضا خاص لیکن الله کی مراد کو معین کرنا پس هم اس کو الله تعالٰیٰ پر چهوڑتے هیں یہی ہے طریقه علمائے سلف کا جو که تاویلات میں الگ رہے هیں ۔ پس ثابت ہوا که تاویلات میں کو یہ شخص لایا ہے آن میں کچھ فائدہ نہیں ہے ۔

صاحب تفسیر کبیر کا اس قدر ناراض هونا بے فائدہ هے کیوں که هر شخص جو ظاهر لفظ کو چهوڑ کر مجاز کی طرف لے جاتا هے آس کے نزدیک دلیل قاطع اس بات کی هوتی هے که اس مقام پر اس لفظ سے حقیقت مراد نہیں هے باقی رهی یه بات که اتنے هی پر اکتفا کیا جاوے اور آس کی تاویل و مراد کو خدا کے علم پر چهوڑ دیا جاوے ایک ایسی بے معنلی بات هے جس سے قرآن مجید کی صدها آیات کا نازل هونا لغو اور بے کار هو جاتا هے نعہوذ بالله منها اور صرف لغو و بے کار هی نہیں هوتا بلکه ایسا کرنا نعوذ بالله قرآن مجید کو مضحکه بنانا هے ۔ هم قرآن مجید میں پڑھتے هیں ۔ ید الله وجه الله قبضة یمینه اور کہتے هیں که ان فظوں سے خدا کا هاته ، خدا کا منه ، خدا کی مٹھی ، خدا کا دایاں هاته مراد نہیں هے ۔ جب پوچھتے هیں که اور کیا مراد هے تو کہا حاتا هے که خدا هی کو معلوم هے ۔ اربے میاں اگر یمی مقصود تھا که خدا هی کو معلوم هے ۔ اربے میاں اگر یمی مقصود تھا که خدا هی کو معلوم هے تو ان الفاظ کا نازل کرنا مقصود تھا که خدا هی کو معلوم هے تو ان الفاظ کا نازل کرنا ور بندوں کو پڑھوانا هی کیا ضرور تھا ۔

اصل منشا اس غلطی کا یه هے که قرآن مجید جو بلاشبه کلام اللہی هے سگر بعضے وقت لوگوں کو یه خیال نہیں رہتا که وہ انسانوں کی زبان میں بولا گیا ہے پس آگر وہ درحقیقت انسانوں

کی زبان میں بولا گیا ہے اور درحقیقت ایسا ہی ہے تو جس طرح ایسے موقع پر انسان کے کلام کے معنی و مراد قرار دیے جاتے ہیں آسی طرح قرآن مجید کے الفاظ کے بھی معنی و مراد قرار دیے جاویں گے ۔ اس طرح معنی قرار دینے کو تاویل کہنا ہی غلطی ہے کیوں کہ درحقیقت آس میں کچھ تاویل نہیں ہے بلکہ ہم کو یقین ہے قائل نے اسی مراد سے وہ الفاظ استعال کیر ہیں ۔

اب میں کہتا ہوں کہ سورہ زمر میں صرف یہی دو لفظ ہیں جو مجازاً استعال کیے گئے ہیں ـ بلکہ اور بھی بہت سے ہیں مثلاً نفخ صور کہ وہ صرف استعارہ ہے وقت معمن کے آ جانے سے ''مقالید السماوات و الارض" كا استعال مجازاً هوا هم اخمر سوره كا تمام مضمون بطور خطابیات کے زبان حال اهل دوزخ و اهل مهشت سے بیان کیا گیا ہے جیسر کہ سورہ فصلت میں زمین و آسان کی زبان حال سے بيان هـوا هـ ـ حمال فرمايا هـ "تح استـوى الى السمـاء و هـى دخان فقال لها و الارض ايتاطوعا اوركرها قالتا اتينا طائعین'' دوزخ و مهشت سی دروازوں کا هونا اور دوزخیوں اور ہشتیوں کے لیر ان کا کھولا جانا دوزخ پر چوکیداروں کا ہونا اور دوزخ میں جانے والوں کو طعنہ دینا ہشت پر دربانوں کا ہونا اور مشت میں جانے والوں کو مبارک باد دینا یہ سب بطور تمثیل کے بیان ہوا ہے۔ خدا تعاللی ہمیشہ معاد کے معاملات کو دنیوی حالات کی تمثیل کے بیان کرتا ہے اور اس تمثیل سے وه چیزیں مجنسه مقصود نہیں هوتس بلکه صرف ماحصل اس کا مقصود ہوتا ہے۔ دوزخ کو دنیا کے جیل خانوں کی مانند سمجھنا جس پر چوکیدار اس غرض سے متعین ہوتے ہیں کہ قیدی بھاگ نہ جاویں یا ہشت کو دنیا کے باغوں کی مانند سمجھنا جس پر دربان اس غرض سے ہوتے ہیں کہ کوئی غیر آس میں نہ چلا جاوہے آس کے پھل نہ توڑ لے خدا کی قدرت اور عظمت اور حکمت پر بٹہ لگانا ہے جو اس کی شان کے شایاں نہیں اور یہی دلیل اس بات کی ہے کہ ان الفاظ سے آن کے ظاہری معنی مراد نہیں ۔

اسی طرح سورہ زمر کی اس آیت میں کہ '' تو فرشتوں کو عرش کے گرد کھڑے ھوئے دیکھے گا پاکیزگی سے یاد کرتے ھیں ساتھ تعریف کے اپنے رب کو'' جو کہ دنیا میں بادشاھوں کا طریقہ اپنی عظمت و جلال دکھانے کا یہی ہے کہ تخت پر بیٹھتے ھیں تخت کے چاروں طرف ھالی موالی کھڑے ھیں بادشاہ کا ادب بجا لا رھے ھیں اس کی تعریف کر رہے ھیں اس کی تمثیل میں خدا نے بندوں کو سمجھانے کے لیے اپنے جلال و عظمت کو بتایا ہے اس سے بندوں کو سمجھانے کے لیے اپنے جلال و عظمت کو بتایا ہے اس سے یہ مقصد نہیں نکالا جا سکتا کہ در حقیقت وھاں کوئی تخت ھوگا اور در حقیقت وھاں کوئی مجسم فرشتے بطور حالی موالی کے اس کے گرد کھڑے ھوں گے اور خدا کی تعریف میں جو تخت پر بیٹھا ھوگا قصید نے پڑھ رہے ھوں گے اور خدا کی تعریف میں جو تخت پر بیٹھا ھوگا قصید نے پڑھ رہے ھوں گے نہایت تعجب ھوتا ہے آن علماء سے کہ خدا کا نخت بیٹھنا تو محال و محتنع قرار دیتے ھیں اور پہر تخت کو خدا آن کے سامان جلوس کو حقیقی اور واقعی سمجھتے ہیں۔

سورۂ الحاقه کی جو آیت ہے آس سے پہلی آیتوں میں خدا تعالی نے قیاست کا اور تمام دنیا کے برباد ہو جانے کا اس طرح پر ذکر کیا ہے کہ ۔ صور پھونکی جاوے گی اور زمین اور پہاڑ ریزہ ریزہ ہو جاوبی گے اور آسان کے برخچے آڑ جاویں گے اور فرشتے اس کے کناروں پر هٹ جاویں گے ۔ یه سن کر انسان کے خیال میں آتا ہے کہ جب سب چیزیں برباد ہو جاویں گی تو خدا کی بادشاہت کس پر ہوگی کیا خدا کی بادشاہت ہی ختم ہو جاوے گی ؟ اس شبه کے رفع کرنے کو خدا نے اسی کے ساتھ فرما دیا که رفع کرنے کو خدا نے کو خدا نے اسی کے ساتھ فرما دیا که رفع کرنے کو خدا نے بیوسئذ شمانیہ ،' یعنی جب که سب کچھ برباد ہو جاوے گا آس دن بھی تیرے پروردگار کی بادشاہت سب کچھ برباد ہو جاوے گا آس دن بھی تیرے پروردگار کی بادشاہت

بے انتہا چیزوں پر جو اس کی مخلوق ہیں اسی طرح پر قائم رہے گی ۔ " حسمل " کے معنی اٹھانے کے هس مگر اس کا استعال شر مادی موجود فی الخارج کی نسبت بھی ہوتا ہے اور شرعقلی غیر مادی غیر سوجود فی الخارج پر بھی ہوتا ہے۔ جیسر کہ خدا تعاللی نے توریت کے عالموں کی نسبت فرمایا ہے '' الذی حملو التوراة ثم له محملو ها '' اور جيسر كه حافظان قرآن كو حاملان قرآن يا قاضیوں اور مفتیوں کو حاملان شریعت اور کناہ گاروں کی نست گناهوں کا اٹھانا '' حملنا اوزارها '' کہا جاتا ہے۔ پس حمل کے لفظ سے آسی چیز کا اٹھانا مراد نہیں ہوتا جو سوجود فی الخارج ہو۔ جب کسی کو کسی شرکا حامل کہتر میں اس سے اس کا ظہور لازمی تصور کیا جاتا ہے ۔ حاسلان تورات اسی لیر کمتر تھر که آن سے احکام تورات ظاہر اور معلوم ہوتے تھر اور حاملان شریعت سے احکام شریعت۔ پس جس شے سے جو چیز ظاہر ہو آس کو آس کا حامل کہتر ہیں ۔ خدا کی مخلوق سے جو خدا کی سلطنت و بادشاہت ظاہر ہوتی ہے آن پر حاملان عرش کا اطلاق ہو سکتا ہے پس خدا فرماتا هے که جب یه سب چیزیں جو تم دیکھتر هو برباد ھو جاویں گی تب بھی خدا کی بادشاہت اس کی اور نے انتہا مخلوقات آٹھائے ہوئے ہوگی۔

ثمانیه کا لنظ صرف فصاحت کلام کے لیے آیا ہے اس سے کوئی عدد خاص مقصود نہیں ہے اور اس میں بہت برٹی بلاغت یہ ہے که اس کے دو رکن کے یعنی اس کے مضاف اور مضاف الیه کے بیان کے مخذوف کرنے سے عدد غیر متناهی اور اجناس غیر محصور کا اظہار ہوتا ہے۔ جیسے که ثمانیه الاف باثمانیه الاف الی غیر النہایة من المخلوقات الخیر المحصور ۔ پس اس آیت سے عرش کا وجود فی الخارج ثابت الخیر المحصور ۔ پس اس آیت سے عرش کا وجود فی الخارج ثابت نہیں ہوتا ۔ بلکہ صرف اس قدر پایا جاتا ہےکہ بعد فنا ہونے اس تمام

موجودات کے بھی خدا کی بادشاہت بدستور قائم رہے گی ۔

تفسیر کشاف میں جو قول حسن بصری اور ضحاک کا نقل کیا ہے آس سے بھی ٹھیک ٹھیک یہی مراد معلوم ہوتی ہے جو ہم نے بیان کی ہے آس میں لکھا ہے کہ ۔

وعن المحسن الله اعلم كم هم اثمانية ام ثمانية الاف وعن المضحاك ثمانية صفوف لايعلم عدد هم الا الله و مجوزان يحكون ثمانية من الروح او سن خلق اخرفهو القادر على كل خلق سبحان الذي خلق الازواج كلها سماتنبت الارض و سن نفسهم و مما لا يعلمون ـ (تفسير كشاف صفحه ١٥٢١) -

یعنی حسن بصری سے مروی ہے کہ اللہ خوب جانتا ہے کہ وہ کتنے ہیں آٹھ ہیں یا آٹھ ہزار ہیں اور ضحاک سے مروی ہے کہ آٹھ صفیں ہیں اور یہ کہ آن میں کتنے ہیں اللہ تعالیٰی کے سوا اور کوئی نہیں جانتا اور جائز ہے کہ مراد ہو آٹھ روحیں یا اور مخلوق خدا کی پس اللہ تعالیٰی ہی قادر ہے سب کی پیدائش پر پاک ہے اللہ جس نے پیدا کیا ہے سب جوڑوں کو جن کو اگاتی ہے زمین اور جو خود ان کے ہیں اور جن کو وے نہیں مانتے ۔

سورہ مومن میں جو آیت ہے وہ نہایت غور طلب ہے۔ اُس کے شروع میں ہے '' الذین محملون العرش '' پس بحث یہ ہے کہ الذین '' کا اشارہ کس کی طرف ہے۔ تمام مفسرین کہتے ہیں کہ '' الذین '' کا اشارہ فرشتوں کی طرف ہے۔ صاحب تفسیر کبیر اس کی وجہ یہ بیان کرتے ہیں کہ اس آیت سے پہلے خدا تعالیٰ نے ایمان والوں کے ساتھ کفار کی عداوت کا حال بیان کیا ہے اس کے بعد بطور تسلی کے کہا کہ اشرف طبقات مخلوقات فرشتے ہیں اور خصوصاً حملة العرش وہ ایمان والوں سے نہایت محبت رکھتے ہیں پس ان کمینہ لوگوں کی

عداوت پر کچھ التفات کرنا نہیں چاھیے ـ

مگر تعجب یه هے که کفار دنیا میں ایمان والوں کے ساتھ عداوت کرتے تھے اور ایذا پہنچاتے تھے اگر اس کے مقابل کوئی ایسی چیز بیان کی جاتی جو اس دنیاوی ایذا میں معاونت کر سکتی تو البته ایک تسلی کی بات تھی ۔ مگر اُس دنیاوی تکلیف کے مقابله میں یه کمنا که فرشتے هارے گنا دوں کی معافی چاه رهے هیں کس طرح پر تسلی دے سکتا هے علاوہ اس کے اُس مقام پر فرشتوں کا کچھ ذکر نہیں آیا هے اور جب که عرش سے سلطنت مراد لی جاوے نه ایک شے مجسم موجود فی الخارج تو کوئی قرینه بھی نہیں جس سے نه ایک شے مجسم موجود فی الخارج تو کوئی قرینه بھی نہیں جس سے نه ایک شے عسم موجود فی الخارج تو کوئی قرینه بھی نہیں جس سے نه ایک شے عسم موجود فی الخارج تو کوئی قرینه بھی نہیں جس سے نه ایک شے عسم موجود فی الخارج تو کوئی قرینه بھی نہیں جس سے نه ایک شے عسم موجود فی الخارج تو کوئی قرینه بھی نہیں جس سے نه ایک شے عسم موجود فی الخارج تو کوئی قرینه بھی نہیں جس سے نه ایک شے عسم موجود فی الخارج تو کوئی قرینه بھی نہیں جس سے نه ایک شرح بی انتحار کی طرف سمجھا جاوے ۔

قرآن مجید کا مطلب نہایت صاف ہے۔ اس سے پہلی آیتوں میں خدا نے فرمایا ہے کہ خدا تعاللی کی نشانیوں (یعنی احکام) میں کوئی جھگڑا نہیں کرتا بہ جز کافروں کے پھر آن کا شہروں میں پڑے پھرنا آن کی خوش حالی تجھ کو دھو کہ میں نہ ڈالے۔ ھرایک آست نے اپنے رسول کے پکرڑنے و مار ڈالنے کا قصد کیا ہے۔۔۔ اور آن لوگوں کی نسبت جو کافر ھیں خدا کا حکم ھو چک ہے کہ وہ دوزخ میں جانے والے ھیں۔

اس کے بعد خدا نے فرمایا '' الذین محملون العرش'' کفار کے مقابلے میں ایمان والے تھے پس صاف ظاھر ہے کہ '' الذین '' سے اھل ایمان انسان مراد ھیں نہ فرشتے ۔ عرش کے معنی سلطنت کے ھم ابھی ثابت کر چکے ھیں پس آیت کے معنی صاف ظاھر ھیں کہ '' جو لوگ خدا کی سلطنت کو اٹھائے ھوئے ھیں یعنی وہ جو '' انعمت علیہم'' میں داخل ھیں اور جو اس کے قریب ھیں یعنی صلحا و خیار آمت پاکیزگی سے اللہ تعالیٰ کی تعریف کرتے ھیں اور اس پر ایمان لاتے ھیں اور معافی چاھتے ھیں ان لوگوں کے لیے اور اس پر ایمان لاتے ھیں اور معافی چاھتے ھیں ان لوگوں کے لیے

جـو ایمان لائے ہیں'' الـلی اخـرہ اس کے بعد پھر کافروں کا ذکر کیا ہے ـ پس قرآن مجید میں تو اُس مقام پر فرشتوں کا پتہ بھی نہیں اور نه '' الـذیـن '' کے وہ مشار الیه ہیں ـ

سورہ هدود میں جو آیت ہے جس میں چھ دن میں آسان و زمین کے پیدا کرنے کے ساتھ یہ بھی آیا ہے کہ ''و کان عدرشہ علی الباء'' کچھ زیادہ بحث طلب نہیں ہے ہم اوپر ثابت کر چکے ہیں کہ ستة ایام میں آسان و زمین کا پیدا کرنا اخبدار عن المخلقت نہیں ہے نه کلام مقصود بلکہ نقلا اعتقاد یہود کا بیان ہے ۔ یہود کا یہ بھی اعتقاد تھا کہ خدا کی روح پانی پر چھائی ہوئی تھی چناںچہ توریت میں آیا ہے ۔ و روح الوہیم می حدفت علی فدنی ہائے۔م ۔

یعنی خدا کی روح چھائی ہوئی تھی پانیوں کے منہ کے اوپر '' مرحفت'' کے ٹھیک معنی مرغی کے انڈے سینے کے ہیں یعنی جس طرح مرغی تمام انڈوں کو آپروں کے اندر لے کر ان کو گھیر کر بیٹھ جاتی ہے آسی طرح خدا کی روح پانیوں پر تھی اس آیت میں آسی اعتقاد یہود کی نقل ہے روح کی جگہ خدا کا عرش یعنی خدا کی سلطنت یا غلبہ بیان ہوا ہے پس کوئی لفظ اس آیت کا عرش کے وجود خارجی ہونے کا مثبت نہیں ہے۔

لفظ سموات قرآن مجيد ميس

''سمٰوات'' جمع ہے ساء کی جس کے سعنی اونچے کے ہیں -یه لفظ عربی میں اور یہودیوں کی زبان میں آس زمانه سے بولا جاتا ہے ۔ جب کہ یونانی علم ہیئت کا وجود بھی نہ نہا ۔ قرآن مجید میں بھی اس لفظ کا اطلاق اسی محاورہ میں ہوا ہے جو آس زمانہ میں تھا ۔ مگر قرآن محید کے نازل ھونے کے زمانہ میں اور اس کے بعد بالتخصيص مسلمانوں ميں يوناني علم هيئت كا بڑا رواج هو گيا تھا یونانیوں نے آسان کو ایک جسم شفاف صلب کر وی السکل سقعہر و سحدب کا محیط زمین کے جس میں ستارے جڑے ہوئے هیں تسلیم کیا تھا۔ یونانی مسئلے مسلمانوں میں بہت رایخ هو گئے تھے اور سب (الا شاذ و نادر) بطور سچے مسئلوں کے تسلیم کیے جاتے تھے ہاں تک کہ قرآن کے بیانات کو بھی آن کے مطابق کیا جاتا تھا۔ البته علمائے علم کلام نے یونانیوں کے چند مسائل میں ترمیم اور بعض میں اختلاف کیا تھا جن کو وہ صریح مذھب کے خلاف سمجھتے تھے اور اس کے سوا باقی مسائل کو بطور سچ کے تسلیم کسرتے تھے ہے۔ آسانہوں کا مسئلہ بھے ایسا ہی تہے جس سی علم نے اسلام نے کچھ تھوڑی ترسیم کی تھی ۔ اور اس کے جسم کر وی محیط ارض کے ہونے اور ستاروں کے اُس میں جڑے ہوئے ہونے اور آسانوں کے زمین کے گرد چکر کھانے کو ویسا ھی تسلیم کیا تھا جیسا کہ یونانیوں نے بیان کیا تھا۔ اس لیر تفسیروں میں اور مذھبی کتابوں میں آسان کے وہی معنی یا اس کے قریب قریب مروج

ھو گئے جو یونانی حکیموں نے بیان کیے تھے اور بہت بڑی غلطی یہ پڑ گئی کہ لفظ تو لیا قرآن کا اور اس کے معنی نے یونانی حکیموں کے اور رفتہ رفتہ وہ معنی ذھن میں ایسے راسخ ہو گئے کہ ان کا انکار کرنا گھیر گیا ۔ مگر ایسا سمجھنا بناء فاسد علی الفاسد ہے ۔

اس لیے میں ان معنوں سے جو آکثر مفسرین سمجھتے ھیں ، انکار کرتا ھوں اور میں سمجھتا ھوں کہ جن جن چیزوں پر قرآن مجید میں ساء یا سماوات کا اطلاق آیا ہے۔ وہی معنی ساء سماوات کے ھم قرار دیں گے۔ نہ وہ معنی جو علمائے اسلام نے یونانی حکیموں کی پعروی سے قرار دیے ھیں۔

قرآن مجید میں اس وسعت پر بھی اساء کا اطلاق ہوا ہے جو ہر شخص اپنے سر کے اوپر دیکھتا ہے اور اس نیلی نیلی چیز پر بھی ہوا ہے جو گنبدی چھت کے مانند ہر شخص کو اُس کے سر کے اوپر دکھائی دیتی ہے ۔ اور آن چمکتے چمکتے جسموں پر بھی ہوا ہے جن کو ہم ستارے یا کواکب کہتے ہیں ۔ بادلوں پر بھی ہوا ہے جو مینہ برساتے ہیں مگر قرآن نے آسان کے وہ معنی جو یونانی حکیموں نے بیان کیے ہیں کہیں نہیں بتلائے ۔ اس لیے ہم اُن سے مکیموں نے بیان کیے ہیں کہیں نہیں بتلائے ۔ اس لیے ہم اُن سے انکار کرتے ہیں اور جو معنی قرآن نے بتائے ہیں اُنھی معنوں میں سے کوئی معنی ساء کے لفظ کے سمجھتر ہیں ۔

اس مقام پر ساء کے لفظ سے وہ وسعت مراد ہے جو هر شخص اپنے سر کے اوپر دیکھتا ہے پس آیت کے معنی یه هیں که خدا آس وسعت کی طرف متوجه هوا جو انسان کے سر پر بلند دکھائی دیتی ہے اور ٹھیک آس کو سات بلندیاں کر دیں ۔ سات سیارہ کواکب کو هر کوئی جانتا تھا۔ عرب کے بدو بھی آن سے به خوبی واقف تھے ۔ وہ ستارے اوپر تلے دکھائی دیتے ہیں یعنی ایک سب سے

نیچا ۔ دوسرے اس سے اونچا اور تیسرا اس سے اونچا اور علی هذالقیاس اوو ان کواکب کے سبب جو بطور روشن نشانوں کے اس وسعت میں دکھائی دیتے ہیں ۔ اس وسعت کے ساتھ جدا جدا حصے یا درجے یا طبقے ہو جاتے ہیں پس اسی کی نسبت خدا تعالیٰ نے فرمایا کہ اس کو ٹھیک سات آسان کر دیے ۔

یه معنی جو هم نے بیان کیے اگرچه لوگوں کو ایک نئی یات معلوم هوتی هوگی ۔ مگر بہی معنی بعض معتبر مفسروں نے بھی سمجھے هیں ۔ تفسیر ایبضادی میں لکھا ہے که ''ساء سے یه اجرام علوی (جن میں کواکب بھی شامل هیں) مراد هیں یا اوپر کی طرفین'' پس انھی مجمل لفظوں کی یه تفصیل ہے جو هم نے بیان کی ہے ۔

آسیان کے برجوں کا بیان اور رجم شیاطین کی تحقیق

الله تعالی قرآن شریف میں فرماتا ہے۔ و لقد جعلنا فی السماء برو جاو زبت الها لنظرین و حفظنها سن کل شیطن رحیم الا سن استرق السمع فاتبعه شهاب سبین ۔ یعنی اور بےشک هم نے ییدا کیے هیں آسانوں میں برج آن کو محفوظ خوش نما کیا ہے دیکھنے والوں کے لیے اور هم نے آن کو محفوظ رکھا ہے هر ایک شیطان راندے گئے سے۔ مگر جس نے چرایا سننے کو یعنی کوئی بات معلوم کر لی تو پیچھے پڑتا ہے اس کے شعله روش۔

بروج صیغه جمع کا ہے اور برج اس کا واحد ہے۔ برج کے معنی اُس شے کے ہیں جو ظاہر اور اپنے ہم مثل چیزوں سے ممتاز ہو عارت کا وہ حصه جو ایک خاص صورت پر بنایا جاتا ہے گو وہ جزو اُس عارت کا ہوتا ہے مگر عارت کے اور جزوں سے ممتاز اور نمایاں ہوتا ہے اُس کو برج کہتے ہیں۔

اهل هیئت نے جب ستاروں پر غور کی اور ان کو دیکھا که کچھ ستارے ایسی طرح پر متصل واقع هوئے هیں که باوجود که وہ اوروں سے بڑے اور اوروں سے کچھ زیادہ روشن نہیں هیں مگر ایک خاص طرح پر واقع هونے سے وہ اور سب سے علیحدہ دکھائی

دیتے هیں اور نمایاں هیں ۔ پھر آن کے نمایاں هونے کی ایک بڑی وجہ یه هوئی که انهوں نے دیکھا که سورج دولابی چال پر چلتا هوا نہیں معلوم هوتا بلکه حائلی طور پر چلتا هوا معلوم هوتا هے اور یه اس کا چلنا انهیں ستاروں کے نیچے نیچے معلوم هوتا هے اس وجه سے وہ ستارے اور ستاروں سے زیادہ ممتاز و نمایاں هوگئے ۔

اس کے بعد اہل ہیئت نے دیکھا کہ اس طرح پر اور ایسے موقع سے جو اوروں سے ممتاز ہوں متعدد مجمعے ستاروں کے واقع ہیں مگر آن میں بارہ مجمعوں کو اس طرح پایا کہ وہ ایسی ترتیب سے واقع ہیں کہ اگر آن سب پر ایک دائرہ فرض کیا جائے تو کرہ پر دائرہ عظیمہ ہوگا ۔ پھر ان کو سورج بھی اس طرح پر چلتا ہوا دکھائی دیا اور آسی طرح پر سورج کے چلنے سے اختلاف فصول کی کو متحقق ہوا ۔ پس انھوں نے آن ستاروں کے بارہ مجمعوں کی تعداد کے موافق آسان کے بارہ مساوی حصے فرض کیے اور ہر ایک تعداد کے موافق آسان کے بارہ مساوی حصے فرض کیے اور ہر حصہ کا مرح رکھا کیوں کہ اپنے ستاروں کے خاص مجمع سے وہ علیحدہ عمر نام برج رکھا کیوں کہ اپنے ستاروں کے خاص مجمع سے وہ علیحدہ عمر نام برج رکھا کیوں کہ اپنے ستاروں کے خاص مجمع سے وہ علیحدہ عمر نام برج رکھا کیوں کہ اپنے ستاروں کے خاص مجمع سے وہ علیحدہ عمر نام برج رکھا کیوں کہ اپنے ستاروں کے خاص مجمع سے وہ علیحدہ عمر نام برج رکھا کیوں کہ اپنے ستاروں کے خاص مجمع سے وہ علیحدہ عمر نام برج رکھا کیوں کہ اپنے ستاروں کے خاص مجمع سے وہ علیحدہ عمر نام برج رکھا کیوں کہ اپنے ستاروں کے خاص مجمع سے وہ علیحدہ عمر نام برج رکھا کیوں تھا ۔

اس کے بعد اہل ہیئت نے چاہا کہ ہر ایک برج کے جدے جدے نام رکھے جائیں تاکہ اُس نام سے اس حصے اور ستاروں کے مجمع کو بتا سکیں انھوں نے خیال کیا کہ اگر ان ستاروں کے مجمع میں سے جو ستارے کناروں پر واقع ہیں اگر ان کو خطوط سے ملا ہوا فرض کریں تو کیا صورت پیدا ہوتی ہے اس طرح خیال کرنے سے کسی کی صورت انسان کی بن گئی کسی کی کسی جانور کی وغیرہ وغیرہ اس لیے انھی ناموں سے انھوں نے اس حصے کو اور اس مجمع ستاروں کو موسوم کیا اور اس کے یہ نام قرار دے:

حمل ، ثور ، جوزا ، سرطان ، اسد ، سنبله ، میزان ، عقرب ، قوس ، جَدّی ، دنو ، حـّوت ـ

غالباً به تفتیش اولا مصریوں نے کی هوگی حن کا آسان همیشه ابر وغمرہ سے صاف رہتا تھا اور ہمیشہ ان کو ستاروں کے دیکھنر کا اور ان کو پہچاننے کا مجوبی موقع ملتا تھا ۔ مگر یہ نام اور یہ تقسم تمام قوموں میں اور بہت قدیم زمانہ کے عرب جاہلیت میں عام ہوگئر تھے اور آسان کے اس حصہ کو برج سے اور اس کے کل حصوں کو جو تعداد میں بارہ تھر بروج سے نامزد کرتے تھر اسی کی نسبت خدا نے فرمایا و لقد جعلنا فی السماء بروجا و ذینا للناظرين ـ مفسرين نے بروجا كى تفسير قصورا سے لى هے بلا شبه یہ ان کا قصور ہے خدا نے تو آسی چیز کو بروج کہا ہے جس کو اهل عرب بلکه تمام قومس بروج سمجهتی تهیں اور نہایت نادانی ہے اگر ان بروج کی تفسیر میں سورہ نساء کی یہ آیت پیش کی جاوے کہ۔ اين ما تكونو يدرككم الموت و لوكنتم في بروج مشيدة اس کے بعد کی آیت یہ مے کہ ۔ او حفظنا ھا من کل شیطان رجیم ۔اس آیت کے تو یہ معنی ہیں کہ ہم نے اس کو یعنی آسان کو یا ان کو یعنی برجوں کو محفوظ رکھا شیطان پھٹکارے گئر سے اور سورہ صافات میں اسی کی مانند ایک آیت ہے کہ ۔

انازبنا السماء الدینا بزینة الکواکب و حفظا من کل شیطان مارد (۳۹ مافات - ۹ و ے) جس کے معنلی یہ هیں که هم نے خوش کما کیا دنیا کے آسان کو ستاروں کی خوش کمائی سے اور محفوظ کیا هر شیطان سرکش سے - شاه رفیع الدین صاحب نے حفظا کو جو سورہ صافات میں ہے مفعول له قرار دیا ہے ۔ زینا کا اور اس کا یه ترجمه کیا ہے که "واسطے حفاظت کے هر شیطان سرکش سے" جس کا یه مطلب ہے که حفاظت کے هر شیطان سرکش سے" جس کا یه مطلب ہے که

ستاروں سے آسان کو محفوظ کیا ہے ۔ یہ ترجمہ صحیح نہیں ہے اور ابن عباس کے نام سے جو تفسیر مشہور ھے اس میں حفظا کی تفسر کی ہے کہ " حفظت بالنجوم " یعنی میں نے آسان کی ستاروں سے اس تفسیر سے بھی حفظا مفعول له پایا جاتا ہے یه تفسیر بھی صحیح نہیں ہے۔ 'حفظا' کے بہار دوار عاطفہ ہے اورعطف حمله کا حمله پر ہے مگر باوجود سوجود ہونے واؤ کے '' حفظا '' کو مفعول قرار دینا در حال کہ اس کے ما قبل کوئی مفعول له جس پر اس کا عطف هو سکر نہیں ہے۔ صحیح نہیں هو سکتا۔ پس صاف بات ہے کہ یہ جعلہ علیحدہ ہے اور بقرینہ علحیدہ ہونے جملہ کے حفظا مفعول ہے ۔ فعل مخدوف حفظنا کا ۔ یس شاہ ولی اللہ صاحب نے جو فارسی ترجمہ کیا ہے وہ صحیح ہے کہ '' و نگاہ داشتہ از ھر شیطان سرکش '' مگر انھوں نے اُس کے مفعول کو ظاھر نہیں کیا که ''که انگاه داشتیم ـ پس اگر آس کا مفعول بنا دیا جائے تو مطلب صاف هو جاتا ہے ۔ یعنی و نگاہ داشتیم آسان را یا کواکب را'' مگر جب هم قرآن محید کی ایک آیت کی تفسیر دوسری آیت سے کریں تو صاف یه تفسیر هوتی هے که خدا تعالمی نے سورۂ حجر کی آیت میں صاف فرمایا ہے که '' و حفطنا ها'' پس سورہ صافات میں جو الفاط حفظاً آئے ہیں ان کی تفسیر اسی کی مطابق یہ ہے کہ و حفظنا ہا حفظا سن کل شیطان سارد ـ یعنی ہم نے آسان یا ستاروں کو ہر طرح کی حفاظت میں شیطان سرکش سے محفوظ رکھا ھے ۔

سورهٔ ملک میں جو خدا نے یہ فرمایا ہے کہ ''و ذینا الساء الدنیا بمصابیح و جعلنا هارجو سا للشیاطین ـ یرجوسا کے معنی مارنے یا پتھر مارنے کے اور شیاطین سے جن یا اور کوئی وجود غیر مرئی سمجھنا رجعاً بالغیب بات کہنی ہے صاف بات یہ

ھے کہ شیاطین شیاطین الانس مراد ھیں اور رجوما سے آن شیاطین کا رجعاً بالغیب یعنی ان کی اٹکل بچو باتیں سانا مراد ہے چناں چہ مفسرین نے بھی کیا ہے کہ شیاطین سے مراد شیاطین الانس ھیں جو کہتے تھے کہ ھم کو آسانی چیزیں مل جاتی ھیں اور ستاروں کے حساب سے ان کو سور و نحس ٹھیرا کر پیشین گوئی کرتے تھے ۔ تفسیر کبیر میں بھی اسی کے مطابق ایک قول نقل کیا ہے کہ ۔

رجوما للشياطين اى انا جعلنا هاظنونا ورجوما للغيب للغيب الانس وهم الاحكاميون من المبتجمين ـ (تفسير كبير متعلق سورة الملك صفحه ٣٠٠) ـ

یعنی ۔ ہم نے آسان کے ستاروں کو ایک ظن اور غیب کی الکمل پچو بات کہنے کو آدسیوں کے شیطانوں کے لیے بنایا ہے اور یہ وہ لوگ ہیں جو نجوم سے احکام بتاتے ہیں ۔

پسخدا تعاللی کے اسکلام ۔ و حفظنا ها من کل شیطان رجیم و حفظا سن کل شیطان سارد کے معنی یه هیں که هم نے آسان کے برجوں کو یا آسان کے ستاروں کو شیاط ین الانس سے محفوظ رکھا ہے اور اسی لیے وہ ان سے کوئی سچی یا صحیح پیشین گوئی۔ حاصل نہیں کر سکتے به جز ظن اور رجماً للغیہ ب کے ۔

یه اعتقاد جو کفار عرب کا تھا که ـ لا یـسـمـعـون الی الـمـلاء الا عـلی و یـقـذفـون سن کل جـانـب وحـورا ولـهم عـذاب و اصب الا سن خـطف الـخطفة فـاتـبـعه شـهـاب ثـاقـب ـ (حـم صافات ۸، ۹، ۰،) ـ

یعنی ۔ جن آسانوں پر جاکر ملاء اعلیٰ کی باتیں آتے سن ھیں ۔ اور کاھنوں کو خبر کر دیتے ھیں اس کی نفی خدا نے سورہ صافات میں فرمائی ہے جہاں کہا ہے نہیں سن سکتے ھیں سلاء اعلیٰ کو مگر اور ڈالا جاتا ہے آن پر شہاب ھر طرف سے ۔ مردود ھونے کو مگر

جس نے اچک لیا آچک لینا اس کے پیچھے پڑتا ہے شہاب روشن ۔

اور اس صورت میں فرمایا ہے الا سن استراق السمع فاتبعہ شہاب مبین ۔ یعنی هم نے محفوظ کیا ہے آسان کے برجوں کو هر ایک شیطان رجم سے مگر جو چرا لیوے سننے کو پهر پیچھے پڑتا ہے اس کے شہاب روشن ۔ اس آیت کے مطلب میں اور سورہ صافات کی آیت کے مطلب میں کچھ فرق نہیں ہے سورہ صافات میں آیا ہے خطف الدخطفة یعنی اچک لیا ۔ آچک لینا اور یه نہیں بتایا کہ کیا آچکا اس سے سمع کا اچک لینا تو نہیں هو سکتا اس لیے کہ اس کی نفی کی گئی ہے ۔ نہایت شدت سے سمع کا سین اور می کو مشدد کر کے پس کسی اور امر کا اچک لینا سوائے سمع کے مراد ہے ۔

مگر سورۂ حجر میں استراق سمع بیان کیا ہے تو ظاہر ہے کہ اس جگہ لفظ سمع کا کفار کے خیال کی مناسبت سے بولا گیا ہے نہ حقیقی معنوں میں اس کو یوں سمجھنا چاھیے کہ مثلاً لوگ کسی کی نسبت کہیں کہ فلاں شخص بادشاہ کے دربار کی باتیں سن سن کر لوگوں کو بتا دیا کرتا ہے اس کے جواب میں کہا جاوے کہ نہیں وہ بادشاہ کے دربار کب تک پہونخ سکتا ہے یوں ھی ادھر آدھر سے کوئی بات اڑا لیتا ہے یا سن لیتا ہے تو اس سے ھرگز یہ سطلب نہیں ہوتا کہ وہ شخص در حقیقت دربار کی باتیں سن لیتا ہے اسی طرح ان دونوں آیتوں میں الفاظ خطف الخطفة اور استراق السمع کے واقع ہوئے ہیں جو کسی طرح واقعی سننے پر دلالت نہیں کرتے کے واقع ہوئے ہیں جو کسی طرح واقعی سننے پر دلالت نہیں کرتے خصوصاً ایسی حالت میں کہ سمع سے بتاکید نئی آئی ہے بات یہ ہے کہ کہ کا کہ کفار پیشین گوئی کرنے کے دو حیلے کرتے تھے ایک یہ کہ جن ملاء اعلی کی باتوں کو سن کر ان کی خبر کر دیتے ہیں دوسرے ملاء اعلی کی باتوں کو سن کر ان کی خبر کر دیتے ہیں دوسرے ستاروں کی حرکت اور بسوط عروج اور منازل بروج اور کواکب کے ستاروں کی حرکت اور بسوط عروج اور منازل بروج اور کواکب کے

مور و نحس هونے احکام دیتے تھے وہ سب غلط اور جھوٹ تھے مگر بعض صحیح بھی هوتے تھے مثلاً کسوف و خسوف کی پیشین گوئی یا کواکب کے افتران اور هبوط و عروج کی پیشین گوئی اسی امر کو جو در حقیقت ایک حسابی امر مطابق علم هیئت کے ہے خدا تعالٰی نے دو جگه ایک جگه بلفظ استراق السمع اور دوسری جگه بلفظ خطف الدخلطفة سے تعبیر کیا ہے اور آسی کے ساتھ فاتبعة شہاب ثاقب سے اس سے زیادہ کی پشین گوئی کو معدوم کر دیا ہے۔

فاتب عدة شمهاب سبم ین ۔ شمهاب کے معنی هیں شعلهٔ آتش کے اور اس انگارے کو جو بھڑکتا ہوا ہو اس کو خدا نے شماب مبین سے تعبیر کیا ہے جیسا کہ سورۂ نمل میں بیان ہوا ہے ۔

شہاب یا شہاب ثاقب یا شہاب مبین کا اس آتشی شعله پر اطلاق هوتا هے جو کائنات الجو میں اسباب طبعی سے پیدا هوتا هے اور جو کسی جہت میں دور تک چلا جاتا هے اور جس کو اردو زبان میں تارہ ٹوٹنا بولتے هیں ۔

اب یه بات دیکھنی چاھیے که عرب جاھلیت میں تاروں کے ٹوٹنے سے یعنی جب که کائنات الجو میں کثرت سے شہاب ظاھر ھوتے تھے آن سے کیا فال لیتے تھے یاکس بات کی پیشین گوئی کرتے تھے کچھ شبه نہیں که وہ اسے بدفالی اور کسی حادثۂ عظیم کے واقع ھونے کا یقین کوتے تھے جس طرح که تطہیر سے بدفالی سمجھتے تھے۔

تفسیر کبیر میں زهری سے روایت لکھی ہے کہ چند آدسی رسول خدا کے ساتھ بیٹھے تھے کہ ایک تارہ ٹوٹا آنحضرت نے پوچھا کہ تم زمانۂ جاھلیت میں اس میں کیا کہتے تھے انھوں نے کہا کہ هم کہتے هیں کہ کوئی بڑا شخص می جاوے گا یا حادثہ عظیم پیدا هوگا ۔ غرض کہ اس کو زمانہ جاھلیت میں فال بدد یا شگون بد

سمجھتے تھے اس زمانہ کے لـوگ کـثرت سے تـاروں کے ٹـوٹنے کـو شگون بد سمجھتے ھیں ۔ پس شیاطین الانس کے اعتقاد کی ناکاسی کو آن کے کسی شگون بد سے تعبیر کرنے کے لیے خدا نے فرمایا کہ فاتب عـه شـمهاب ثاقب جو نهایت ھی فصیح استعارہ هے منجمین کے وبال کے بیان کرنے کو اور جس کا مقصود یہ هے که فاتب عـه م الشوم والخسران والحرمان فیا اسلوا۔

سورة جن میں انا لـمسـنا الـساء کا لفظ هے تفسیر کبیر میں الکھا هے که مس سے استعارہ طلب کیا جاتا هے اور یه قول منجمین کا هے پس معنی یه هوئے که هم نے دُهوندها آسان کو اس کو پایا بهرا هوا حفاظ یعنی موانع شدید اور شهب یعنی وبال سے جن کے سبب هم اپنے مقصد کو حاصل نہیں کر سکتے ۔پهر انهوں نے کہا که هم ملاء اعلیٰ کی باتوں کے سننے یعنی دریافت کرنے کو بیٹھتے تھے مگر اب قرآن سننے کے بعد اس کے لیے جو کوئی سنے یعنی دریافت کرنا چاهیے هم اس کے لیے شهاب یعنی وبال معین پاتے هیں پس کرنا چاهیے هم اس کے لیے شہاب یعنی وبال معین پاتے هیں پس وجود بھی قرآن مجید سے ثابت نہیں هے کس قدر بے اٹکل اور وجود بھی قرآن مجید سے ثابت نہیں هے کس قدر بے اٹکل اور

حقيقته الروياء

(حضرت یوسف شاہ مصر اور دو قیدیوں کے خواب اور ان کی اصلی کیفیت)

اذ قبال يموسف لابيمه يها ابيت اني رايبت احدد عشر كوكمها و الشمس و القمر رائييتهم لي سجدين ـ

یه حضرت یوسف کا خواب ہے ۔ خواب کی نسبت بہت کچھ کہا گیا ہے اور لکھا گیا ہے ۔ مگر اُس زمانه میں علم فزیالوجی اور سیکالوجی نے بہت ترق کی ہے اور اعضائے انسانی کے خواص و افعال کو بہت تحقیقات کے بعد منضبط کیا ہے اس لیے ہم کو دیکھنا چاھیے که خواب کی نسبت اُس تحقیقات سے کیا امور ثابت ہوتے ہیں اور ھارے ھاں کے علاء اور حکاء نے اس کی نسبت کیا لکھا ہے اور در حقیقت خواب ہے کیا چیز چناں چہ ہم ان سب امور کو اس مقام پر مختصراً بیان کرتے ہیں ۔

یه امر مسلم هے اور هر شخص یقین کرتا هے که تمام اعضائے انسانی پر دماغ حکومت کرتا هے ۔ انسان کا سر چند هڈیوں سے جسے کھوپڑی کہتے هیں جڑا هوا هے ۔ کھوپڑی کی بناوٹ اور اس کے جوڑوں اور جوڑوں کی درزوں کی ترکیب جو هر انسان میں کسی نه کسی قدر مختلف هوتی هیں جداگانه خاصیتیں رکھتی هیں بھر کھوپڑی کے اندر بھیجا هوتا هے جسے سخ کہتے هیں جس میں بھر کھوپڑی کے اندر بھیجا هوتا هے جسے سخ کہتے هیں جس میں ایک شاخ گردن سے بے انتہا باریک ریشے یا رگیں هوتی هیں آسی میں ایک شاخ گردن سے

ریڑھ کی ھڈی کے فقرات میں چلی گئی ہے اور دماغ ھی سے نکلے ھوئے پٹھے اور رگیں اور ریشے سینہ میں اور تمام اعضا میں پھیلے ھوئے ھیں تمام حس و حرکت جو انسان کرتا ہے وہ دماغ کے سبب سے کرتا ہے آن پٹھؤں اور ریشوں اور رگوں میں بعض تو ایسے ھیں کہ شے محسوس کا اثر دماغ پر پہنچا دیتے ھیں جب انسان اس کو حس کرتا ہے اور اگر ان کے ذریعہ سے اثر نہ پہنچے تو انسان کسی شے کو حس نہ کرے ، نہ روشنی کو جان سکے ، نہ کسی شے کو دیکھ سکے ، نہ آواز کو سن سکے ، نہ ذائقہ کو پہچانے ، نہ کسی چیز کے چھونے کو جانے ۔

جب ان محسوسات کا اثر دماغ پر پہنچتا ہے تو دماغ میں آن پٹھوں اور رگوں اور ریشوں کو تحریک ھوتی ہے جو محرک کہلاتے ھیں اور آن سے ایک قسم کا تغیر دماغ میں پیدا ھوتا ہے اور جب تک وہ تغیر رهتا ہے وہ شے محسوس بھی سامنے رهتی ہے اور انھی محسوسات کے ذریعہ سے انسان کے اعضا حرکت کرتے ھیں جو حرکت قصد و ارادہ سے ھو وہ حرکت ارادی ہے مگر جب وہ حرکت دفعة یا بلا قصد و بلا سوچے سمجھے ھو تو وہ حرکت طبعی کہلاتی ہے جیسر خوف کی حالت میں ھو جاتی ہے۔

علاوہ اس کے دماغ میں ایک قوت ہے جس میں تمام خارجی چیزوں کی جن کو هم نے دیکھا ہے تصویریں بطور نقش کے محفوظ هوتی هیں اور اس لیے وہ سب هم کو یاد رهتی هیں اور یہی سبب ہے که باوجود موجود نه هونے آس شے کے آس کی صورت کا بعینه هم تصور کر لیتے هیں اور اگر آن محفوظ نقشوں میں کچھ دهندلا پن آ جاتا ہے تو ان چیزوں کو بھول جاتے هیں یا یاد دلانے سے یاد آتی هیں اور جب منقش نہیں رهتیں تو بالکل یاد نہیں آتیں ۔

علاوہ اس کے دماغ میں یہ قوت بھی ہےکہ جس شےکو ہم نے

دیکھا ہے اس کے اجزا کو علیحدہ کرکے اپنر خیال کے سامنر لر آویں مثلاً ھاتھی کی صرف سونڈ ھی کا یا صرف اس کے کانوں ھی کا تصور خیال کے سامنے لے آویں اور یہ بھی قوت ہےکہ متعدد چیزیں جو ہم نے دیکھی میں ان کے اجزا کا علیحدہ علیحدہ تصور کرکے ایک کے احزا کو دوسرے میں یا چند کے اجزا کو ایک میں جوڑ دیں ۔ مثلاً هم نے بکری اور مور اور انسان کو دیکھا ہے تو وہ قوت بکری کے سر کو علیحدہ اور مور کے دھڑ کو علیحدہ تصور کرکے مور کے دھڑ پر بکری کا سر لگا ہوا تصور کرکے خیال کے روبرو لر آویں گی یا انسان میں مور کے بازو لگر ہوئے تصور کرکے پر دار انسان یا پر دار فرشتہ اپنر خیال میں بنا لرگی۔ اسی طرح مختلف اور عجیب عجیب صورتیں جن کا کھبی وجود دنیا میں نہیں ہوا بنا کرخیال میں حلوہ نما کرتی ہے۔ وهی قوت کبھی ایسا کرتی ہے کہ اجزائے مختلفہ کی ترکیب تو نہیں دیتی بلکه چھوٹی چیز کو اس قدر بڑا بنا کر خیال میں لر آتی ہے کہ ایک نہایت سہیب صورت بن جاتی ہے مثلاً آدمی کے قد کو تاڑسے بھی لمبا ، اس کے سر کو گنبد سے بھی بڑا ، اس کے ھاتھوں کو کھجور کے درخت سے بھی زیادہ ، اُس کے دانتوں کو

یه تمام اعضا انسان کے اوقات معینه تک کام کرتے رهتے هیں اور زمانه معین تک آرام کرتے هیں یا کسی اور غیر طعبی سے معطل هو جاتے هیں اور انسان بے هوش هو جاتا هے ـ حالت مرض میں جب یه حالت طاری هوتی هے تو بے هوشی اور غشی کہلاتی هے اور حالت صحت میں اس کو نیند کہتے هیں ـ

عجیب بے ہنگم طور کی بنی ہوئی خیال کے سامنر حاضرکر دیتی ہے۔

مگر جو که دماغ میں تمام ادراکات کے لیے جداگانه حصے معین هیں اس لیے حالت غشی و نیز حالت نیند میں دماغ کے بعض حصے معطل یا آرام میں هوتے یا سو جاتے هیں اور بعض حصے

کام کرتے یا جاگتے رہتے ہیں اور یہی وجہ ہوتی ہےکہ بعضی دفعہ ہے هوشی طبعی غمر طبعی میں بھی انسان ایسی باتیں یا کام کرتا ہے حو حالت هوش یا بیداری می کرتا مگر اس کو کچه نهی معلوم هو تا کہ آس نے کیا کیا ۔ لوگوں کی باتس سنتا ہے مگر جواب نہیں دیتا یا اور باتون کا ادراک کرتا ہے مگر ظاہر نہیں کر سکتا اور وہ اداراکات مختلف پیرایه میں اس کو محسوس هوتے هیں جن کا کچھ وجود نہیں ہوتا اور کبھی وہی خیالات اور صورتیں جو اس کے دماغ میں منقش ھیں مختلف قسم سے اس کو محسوس ھوتی ھیں اور جب یه امور نوم طبعی میں واقع هوتے هیں تو ان کو خواب کہتر میں طبعی یا غیر طبعی بے هوشی س بھی امورات خارجی دماغ کے آس حصہ پر جو جاگ رہا ہے اثر کرتے ہیں اور وہ اس کے عجیب پہرایہ سے خواب س دکھائی دیتر ہیں۔ شلا آدمی سوتا ہو اور ساعت کا حصہ جاگتا ہو اور سونے والے کے قریب کوئی شخص کسی چیز کو کوٹتا ہو تو دماغی قوت جو چھوٹی چیز کو بڑھا کر پیش کرتی ہے آس آواز کو نہایت مہیب آواز بنا دیتی ہے اور اس آواز کے سلسلر سے توپوں کا خیال پیدا کر دیتی ہے اور سونے والا خواب میں یہ سمجھتا ہے کہ توہیں چل رہی ہیں یا مثلاً سونے والرکا بستر ٹھنڈا یا نم ہو گیا ، قوت حساسہ ، جو جاگتی تھی آس نے اس کا حس کیا اور بستر کی نمی سے بانی کے خیال کو اور اس سے دریا کے یا تالاب کے یا حوض کے خیال کو پبدا کیا اور سونے والا خواب میں دیکھ سکتا ہے کہ وہ دریا میں یا تالاب میں پڑا تیر رہا ہے۔ اگر کوئی لمی چیز آس کے بستر ہـر پڑی ہو یا کوئی شخص رسی کو اس طرح پـر ڈالےکہ سونے والا جاگ نہ آٹھے اور قوت حساسه جاگتی هو تو خـواب میں دیکھ سکتا ہے کہ سانپ اس کہو چمٹ گیا ہے اسی قسم کے بہت سے اسباب خارجی سے

عجیب عجیب خواب دیکھ سکتا ہے۔

بعضے لوگ خواب دکھانے کی ایسی مشق کر نیتے ہیں کہ سونے والے کے پاس بیٹھ کر ایسی آسانی اور سہولت سے کہ وہ جاگ نہ آٹھے اسکی قوت حساسہ یا سامعہ کو اس طرح پر اثر مطلوبه پہنچاتے ہیں کہ وہ سونے والا وہی خواب دیکھ سکتا ہے جس کا دکھانا ان کو مطلوب ہے۔

جس طرح که یه امور خارجیه خواب دیکهنے پر موثر هیں آس سے بہت زیادہ خود سونے والے کے اسور ذهنی جو اس کے خیال میں بس گئے هیں اور دماغ میں نقش پزیر هو گئے هیں خود اپنی طبعیت سے یا کسی واقعه سے یا کسی کے اعتقاد کامل هونے سے یا محبت عشقی و اعتقادی سے خواب دیکھنے پر موثر هوتے هیں اور وہ انهی امور ذهنی کو بعینه یا کسی دوسرے پیرایه میں جس کو توت دماغی پیدا کر دیتی هے عجیب عجیب طرح سے خواب میں دیکھ سکتا ہے۔

بعض لو کوں کے وابسی مشق هے جاتی هے که جو خواب آن کو دیکھنا منظور هو سوتے وقت اس کا ایسا قوی تصور کرتے هیں اور دماغ میں اس کا نقش جا لیتے هیں که سوتے میں وهی خواب دیکھتے هیں ۔

بعض امور ایسے هوتے هیں جو بالکل بھول گئے هیں اور کبھی ان کا خیال بھی نہیں آتا مگر وہ دماغ میں سے محو نہیں هوتے اور سوتے وقت مطلق ان کا خیال بھی نہیں هوتا مگر دماغ میں ایک ایسا سلسله خیالات کا پیدا هوتا هے که ان بھولے هوئے امور کو پیدا کر دیتا هے اور سونے والا آسی کا خواب دیکھنے لگتا ہے۔ اس کی ایسی مثال هے که جاگنے میں باتوں کا سلسله رفته رفته اس طرح بہنچ جاتا ہے که بھولی باتیں یا بھولے ھوئے کام یاد آ جاتے هیں۔

بعضی دقعہ بسبب کسی مرض کے یا بسبب غلبہ کسی خلط کے دماغ پر ایسا اثر پیدا ہوتا ہے کہ سونے والا آسی حالت کے مناسب اور عجیب عجیب پیرایہ میں مختلف قسم کے خواب دیکھتا ہے۔ مگر جب تک کہ انسان کا نفس آن ظاہری باتوں سے جن سے حالت بیداری میں مشغول ہوتی ہے بسبب بے ہوشی کے یا سو جانے کے یا استغراق کے بے خبر نہ ہو آس وقت تک مذکورہ بالا حالت اس پر طاری نہیں ہوتی دوسری بات یہ ثابت ہوتی ہے کہ کوئی شخص ایسا خواب کبھی نہیں دیکھ سکتا یعنی ایسی چیزیں اور ایسے امور آس کو خواب میں نہیں دکھائی دیتے جن کو اس نے کبھی نه دیکھا ہو نہ سنا ہو اور نہ کبھی آس کا خیال اس کو ہوا ہو ۔ یہ باتیں جو بیان ہوئیں ایسی ہیں جن سے کوئی اختلاف ہیں کر سکتا اور ہر ایک شخص پر یہ حالتیں گزرتی ہیں اور جاھل اور عالم سب آن کو جانتر ہیں۔

شبخ ہو علی سینا نے اشارات میں لکھا ہے کہ

الحس المشترك هو لوح النقش الذي اذا تمكن منه صار النقش في حكم المشاهدة و ربمازال الناقش الحسى من الحس و بقيت صورته و هيئة في الحس المشترك فبقى في حكم المشاهددون المبتوهم وليحضر ذكرك ما قيل لك في امر القطر النازل خطا مستفيا انتقاش المنقطة الجوالة محيط دائرة فاذا تمثلت الصورة في لوح الحس المشترك صارة مشاهدة سواء كان في ابتداء حال ارتسامها فيه من المحسوس الخارج او بقائها مع بقاء المحسوس او ثبا تها بعد زوال المحسوس او وقوعها فيه المن قبيل المحسوس ان امكن (اشارات شيخ)

یعنی حس مشترک میں جو انسان کے دماغ کے ایک حصه کا نام

ھے جب کسی چیز کا نقش جم جاتا ہے تو ایسا ہوتا ہے کہ گویا اس چیز کو دیکھ رہا ہے گو کہ وہ چیز سامنے نہ رہی ہو مگر اس کی صورت حس مشترک میں موجود رہتی ہے اور وہ توہم نہیں ہوتا بلکہ دیکھنے ہی کی مانند ہوتا ہے۔ بوندیں لگا تار جو ابر سے گرتی ہیں وہ بوندیں نہیں معلوم ہوتیں بلکہ پانی کی سیدھی دھار معلوم ہوتی ہے یا کسی چیز کے ایک سرے کو جلا کر زور سے پھراویں تو ایک گول روشن چکر معلوم ہونے لگے گا۔ غرض جب کسی چیز کی صورت اس کے دیکھنے کے وقت حس مشترک میں جم جاتی ہے تا دیکھنے کی سانند ہو جاتی ہے خواہ وہ چیز سامنے موجود رہے یا نہ رہے یا یہ ہوتا ہے کہ کوئی چیز سامنے تو نہیں آئی کہ دکھائی دے مگر اس کی صورت جس کا آنا میکن ہو حس مشترک میں آ جاتی ہے۔

امام فخر الدین رازی شرح اشارات میں لکھتے ھیں کہ حس مشترک میں صورت جم جانے کی نسبت جو کچھ شیخ نے لکھا ھے اُس کی چار صورتیں ھیں اول یہ کہ اس چیز کو دیکھنے کے وقت اس کی صورت حس مشترک میں جمی ھوئی ھے اور وہ چیز سامنے بھی اُس کی صورت حس مشترک میں جمی ھوئی ھے اور وہ چیز سامنے بھی موجود ھے۔ تیسرے یہ کہ اُس کی صورت تو حس مشترک میں جمی ھوئی ھے مگر وہ چیز سامنے موجود نہیں رھی۔ چوتھے یہ کہ وہ چیز سامنے تو نہیں آئی مگر اُس کی صورت حس مشترک میں وہ چیز سامنے تو نہیں آئی مگر اُس کی صورت حس مشترک میں جم گئی۔ پھر امام صاحب لکھتے ھیں کہ پہلی تین صورتوں کی مثال تو بوندوں کے اوپر سے گرنے اور کسی چیز کے ایک سرے کو جلا کر چکر دینے سے ثابت ھوتی ھے مگر چوتھی صورت کی مثال اس طرح پر گئی۔ ھیں ہوتی اس لیے شیخ نے اُس کی مثال اس طرح پر

اشارة قد يشاهد قوم من المرضى و المحرورين صورا محسوسة ظاهرة حاضرة ولا نسبة لها الى محسوس خارج فيكون انتقا شها اذن من سبب موثر في سبب باطن والحس المشترك قد ينتقش ايضا من الصور الحايلة في معدن التخيل والتواهم كاكانت هي ايضا يتنقش في معدن التخيل والتواهم من لوح الحس المشترك وقريبا نما يجرى بين المرا بالمتقابلة (اشارات شيخ) ـ

بیار آدمی اور جو بخار سی مبتلا هوتے هیں کبھی ان کو ایسی چیزیں دکھائی دیتی هیں جن کو وہ سمجھتے هیں که در حقیقت موجود هیں حالاں که وہ چیزیں سوجود نہیں هوتیں ان چیزوں کی صورتوں کی حس مشترک سی متنقش هونے کا کوئی اندرونی سبب هوتا هے یا کوئی ایسا سبب جو اندرونی سبب سی اثر کرتا هے اور کبھی حس مشترک میں وہ صورتیں جم جاتی هیں جو خیال سی اور وهم سی هوتی هیں اور کبھی حس مشترک کی سوجودہ صورتیں خیال و وهم سی آ جاتی هیں اس کی مثال دو آئنوں کی سی هے جو خیال و وهم سی آ جاتی هیں اس کی مثال دو آئنوں کی سی هے جو ایک دوسرے کے مقابل رکھے هوں اور ایک سی جو عکس هے وہ دوسرے میں پڑے۔

غرض کہ سب لوگ متفق ہیںکہ خواب دیکھنا صرف انسان کے دماغی افعال سے متعلق ہے ـ

اسى طرح شاه ولى الله صاحب تفهيات مين ايك مقام پر لكهتے هين ـ
اعلم ان النبوة تحت الفيطرة كما ان الانسان قد يدخل في صميم قلبه و جذر نفسه علم و ادراكات عليما و تبتنى ما يفاض عليه من روياه فيرى الامور مشجة بما اخذته دون غيرها ـ (تفهيات الهيه)

یعنی نبوت فطرت کے ماتحت ہے جیسا کہ کبھی انسان کے دل میں ہمت سے علوم اور باتیں جم کر بیٹھ جاتی ہیں اور انھی پر مبنی ہوتی

هیں وہ چیزیں جو اس کو رویا میں فائض هوتی هیں پھر وہ آن چیزوں، کی صورتیں دیکھتا ہے جن کو اس نے پیدا کیا ہے نه اس کے سوا اور کسی کو اس سے بھی اس بات کی تشریح هوتی ہے که جو انسان کے خیال اور دماغ میں ہے آس کو خواب میں دیکھتا ہے۔

مگر صوفیائے کرام اور علمائے اسلام یہ بھی سمجھتے ہیں کہ دماغ میں سوائے آن موثرات کے طبعی کے اور کوئی چیز ہے جو ملاء اعملی سے تعملق رکھتی ہے اور موثر ہوتی ہے اور اسی لیے شاہ ولی اللہ صاحب نے حجة اللہ البالغہ میں خواب کی پانچ قسمیں قرار دی ہیں چناں چہ انھوں نے لکھا ہے کہ ۔

واما لرويا فهي على خمسة اقسام بشرى سن الله و تمشل نوراني للحائدو الرذائل المندرجة في النفس على وحبهه سلكي وتخويف من الشيطان وحديث نفس من قبل العادة اللتي اعتادها النفس في اليقظة عفظها المتخيلة ويظهر في الحس المشترك سااختزن فيها وخيالات طبيعة لغلبة الاخلاط وتبنة النفس باذاها في البدن اما البشرى من الله فحقيقتها أن النفس الناطقة اذ انتهزت فرصة عن غواشي البدن باسباب خفية لا يكاد يتفطن ما الابعد تاسل واف استعدت لان بفيض عليها سن سنبع الخبر والجود كهال علمي فا فيف عليها شي على حسب استعداد هو سادته في العلوم المخزونة عنده وهذه الرويا تعليم الهي كالمعراج المنامي الذي راى النبى صلى الله عليه وسلم فيه ربه في احسن صورة فعلمه الكفارات والدرجات وكالمعراج المناسى الذي الكشف فيه عليه صلى الله عليه وسلم احوال الموتى بعد الفكاكمهم عن الحيوة الدنيا كما

رواه حابر ابن سمرة رضى الله عنده وكعلم سا سيكون سن الوقائع الايتة في الدنيا و اما الرويا الملكي فحقيقتها ان في الانسان ملكات حسنة و ملكات قديحة ولكن لا بعرف حسنها و قمحها الا المقدرد إلى الصورة الملكية فمن تجردا اليها فتظهرله حسناته وسياته في صورة مشالية فصاحب هذا يرى الله تعاللي واصله الانقياد للباري ويري الرسول صلى الله عليه وسلم واصله الانقياد للرسول المركوز في صدره ويرى الانوار واصلها الطاعات المكتسبه في صدره و حواره تطهر في صورة الاندوار والطيبات كالعسل والسمن واللين فمن راى الله اوالرسول والملائكة في صورة قبيحه او في صورة الغضب فليعرف ان في اعتقاده خللا و ضعفا و ان نفسه لم يتكمل وكذالك الاندوار اللي حصلت بسب الطهارة ينظهر في صورةالشمس والقمر و اسا المتخويف من الشيطان فوحشة وخوف من الحيوان الملعونه كالقردوا لفيل و الكلاب والسودان من الناس فاذا اراى ذالك فليتعوذ بالله وليتفل ثلثا عن يساره و يتحول عن حنيه الذي كان عليه اسا الشرح فلما تعبير والعمدة فيه معرفة الخيال اي شي مظنة لاي سعني فقد ينتقل الذهن من الممسمي الي الاسم كروية المنبى صلى الله عمليه وسلم انه كان في دار عقبة بن رافع فاتى برطب ابن طاب قال عليه الصلواة والسلام فاولت ان الرفعة لنما في الدنيا والعافية في الاخسرة و ان دينسما قد طاب و قد ينتقل الذهن من الملابس الى سايلابسه كالسيف للقتال وقد ينتقل الذهبن من الوصف الى جوهر سناسب له كمن غلب علبيه حب المال راه

النبى صلى الله على وسلم في صورة سواء من ذهب و بالجملة فلا انتقال من شي الى شي صورشتى وهذه الرويا شعبه من النبوة لانها ضرب من افاضه غيبيه و تدل من الحق الى الحق الى الحق الى الحق الى الحق الله الله المنابعة و اما سائر انواع الرويا فلا تعبير لها ـ (حجة الله البالغه) ـ

يعني روياكي پانچ قسميں هيں :

- (۱) بشارت خدا کی طرف سے اور نفس کی خوبیوں یا برائیوں کا نورانی تمثل ملکی طور پر ـ
 - (٢) شيطان كا خوف دلانا ـ
- (۳) دل کی باتیں جس طرح کی عادت بیداری کی حالت میں پڑی ھوتی ھے اس کو قوت متخیله یاد کر لیتی ھے اور وہ حس مشترک میں آکر ظاھر ھوتی ھیں ۔
- (س) اخلاط کے غلبہ کی وجہ سے طبعی طور پر خیالات کا آنا ۔
 - (۵) متنبه هو نا نفس کا بدنی اذیتوں سے ـ

لیکن بشارت النہی کی حقیقت یہ ہے کہ نفس ناطقہ کو جب بدنی حجابات سے فرصت سلتی ہے جس کے مخفی اسباب ہوتے ہیں اور بغیر پورے تاسل کے معلوم نہیں ہوتے تو اس وقت نفس اس بات کے قابل ہوتا ہے کہ اُس پر جود اور خیر کے مخزن سے یعنی ملاء اعللی سے کال علمی کا فیضان ہو پس اس پر اس کی لیاقت کے موافق جو اس کے علوم مخرونہ کا مادہ ہے کچھ فیضان ہوتا ہے اور یہ خواب تعلیم اللہی ہے جیسے کہ معراج کا خواب جس میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے خدا کو نہایت عمدہ صورت میں دیکھا تھا اور خدا نے علیہ وسلم نے خدا کو نہایت عمدہ صورت میں دیکھا تھا اور خدا نے اس میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر مردوں یا وہ معراج کا خواب جس میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر مردوں یا وہ معراج کا خواب جس میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر مردوں یا وہ معراج کا خواب جس میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر مردوں

کا حال منکشف هوا تھا بعد آن کے قطع تعلق کے دنیا سے جیسا کہ حابر بن سمرہ نے روایت کی ہے یا آئندہ واقعات دنیا کا علم اور ملکی خواب کی یه خقیقت ہے کہ انسان میں برمے اور بھلر دونہوں قسم کے ملکات ہیں لیکن اس حسن و قبح کو جب پہچان سکتا ہے کہ صورت ملکیہ کی طرف تجرد حاصل ہو ۔ پس جس کو تجرد ہونا ہے اس کو بھلائیاں اور برائیاں صورت مثالیه میں دکھائی دیتی ھی یس ایسا شخص خداکو دیکھتا ہے جس کی اصل خدا کی اطاعت ھوتی ہے اور رسول الله صلى الله عليه وسلم كو ديكهما هے اور اس كي اصل يبغمبر كي اطاعت هوتی هے حو آس کے دل میں می کوز هے اور انوار دیکھتا هے اور اس کی اصل وہ عبادتیں ہیں جو آس کے دل اور اعضاء نے حاصل کی هیں ـ یه سب چیزیں انوار اور پاک چیزوں مثلاً شہد ، گھی ، دودھ کی صورت میں متمثل ہوتی ہیں چو شخص خدا یا رسول یا فرشتوں کو بری صورت میں یا غصہ کی صورت میں دیکھتا ھے تو آس کو جان لینا چاہیر کہ اس کے اعتقاد میں ابھی خلل اور ضعف ہے اور یہ کہ آس کا نفس ہنوز کامل بھی نہیں ہوا ہے ۔ اسی طرح وہ انوار حو طہارت کی وحمہ سے حاصل ہوئے ہیں آفتاب اور ساھتات كى صورت مى ظاهر هوتے هى اور شيطان كا خوف دلانا تو يه وحشت اور خوف ہے سلعون حیوانوں سے مثلًا بندر ، ہاتھی ، کتر سے اور سیاہ آدسیوں سے پس جب آدمی ایسا خواب دیکھر تو چاھیر کہ خدا سے پناہ مانگر اور بائیں جانب تین بار تھو تھو کر دے اور آس کروٹ بدلر جس پر لیٹا هوا تھا اور خوش خبری والی خواب کی تعبیر ہوتی ہے اور عمدہ طریقہ اس کا خیال کا پہچاننا ہے یعنی کس چیز سے کیا چیز سمجھی جا سکتی ہے پس اگر مسملی سے اسم كي طرف ذهن سنتقل هوتا هے جيسے َ له آنحضرت صلى اللہ عليه وسلم عقبہ بن رافع کے گھر میں تھے اور خـواب دیـکھا کـہ آن کے پـاس

ابن طاب کی کجھوریں رکھی ھیں تدو آپ نے فرسایا کہ میں نے اُس کی تاویل کی کہ ھم کو دنیا میں بلندی اور قیاست میں عافیت ھوگی اور یہ کہ ھارا دین پاکیزہ ہے اور کبھی ملبوسات سے اُس کے متعلقات کی طرف ذھن منتقل ھوتا ہے جیسے تلوار سے لڑائی کی طرف اور کبھی کسی صفت سے ایک جوھر کی طرف جو اُس کے مناسب ہے مثلاً ایک شخص جو مال کو بہت عزیز رکھتا تھا آنحضرت صلی الله علیه وسلم نے اس کو سونے کے کنگن کی صورت میں دیکھا غرض کہ ایک شے سے دوسری شے کی طرف خیال منتقل ھونے کی مختلف صورتیں ھیں اور یہ خواب نبوت کی ایک شاخ ہے کیوں کہ جو فیض غیبی کی ایک قسم ہے اور حق کا خلق کی طرف قریب ھوتا ہے اور وہ نبوت کی مثل ہے ۔ باقی خواب کی اور اقسام کی کچھ تعبیر نہیں ۔

ایک جگه تفهیات میں شاہ ولی الله صاحب فرماتے هیں که:

ان حقیقة الرویا ظهرور سناسبة النفس الناطقة سبداء اعلیٰ علیٰ جهة خاسة و هیئة المعلوسه یقتضی فیضان علم خاص فیتعین العلم ویتمثل بصور و اشباح سخزونة فی خیال فیحضرر تلک الصور علی النفس حضورا فینتظم واقعة عند هذه الحواس الظاهرة و اقبال النسمة علی الحواس الباطنة فلا یتعین علم باشباح الا بمناسبة حجة بینها و بینه فلا یتعین علم باشباح الا بمناسبة حجة بینها و بینه (تفهیات الیه) ـ

رویا کی حقیقت ظاهر هونا مناسبت کا هے نفس ناطقه کو مبداء اعلی سے خاص طرح پر اور صورت معلومه میں که مقتضی هو علم خاص کے فیضان کی پھر متعین هو جاتا هے یه علم اور متمثل هو جاتا هے صورتوں اور شکلوں میں جو جمع هیں خیال میں پھر یه صورتیں.

نفس کے سامنے آ جاتی ھیں حاضر ھو کر اور پھر منتظم ھوتا ھے واقعہ ان حواس ظاھری میں اور متوجہ ھوتی ھے روح اندرونی حواس پر پھر علم شکلوں میں متعین نہیں ھوتا مگر بوجہ اس مناسبت کے جو اس علم اور شکل میں ھے ۔

شیخ بو علی سینا بھی اس بات کے قائل ھیں کہ بعض لوگوں کو خواب کی حالت میں عالم قدس سے فیضان ہوتا ہے اور وہ فیضان ایک صورت خاص میں متشکل ھو کر خواب میں دکھائی دیتا ہے چناں چہ شیخ نے اشارات میں لکھا ہے کہ:

اذا قلت الشواغل الحسية وبقيت شواغل اقل لم يبعدان يكون للنفس فلتات يخلص عن شغل التخيل الني جانب القدس فا نتقش فيها نقش من الغيب فساح الى عالم التخيل وانتقش في الحس المشترك وهذا في حال النوم اوفي حال مرض لم يشغل الحس ويومن التخيل فان التخيل قد يومنه المرض وقد يوهنه كثرة الحركته لتحلل الروح الذي هوالة فيسرع الى سكون ما و فراغ ما فينجدب النفس الى الجانب الاعلى بسهولة فاذا اطراعلى النفس نقش انزعج التخيل اليه و تلقاه ايضا و ذالك اما لتنبه من هذا الطارى و حركته التخيل بعد استراحة او وهنه فانه سريع الى مثل هذا التنبه و الاستخدام النفس الناطقه له طبعا فانه من معاد في النفس عند امثال هذه السواخ فاذا قبله التخيل حال تزحزح النفس الشواغل منها النقش في التخيل حال تزحزح النفس الشواغل منها النقش في الوح الحس المشترك _ (اشارات شيخ)

یعنی پس جب حسی اشغال کم ہو جاتے ہیں توکچھ بعید نہیں کہ نفس تخیل کے شغل سے فرصت سلر اور وہ قدس کی جانب جائے

پس اس میں غیب کا کوئی نقش سنتقش ہو جائے پھر وہ تخیل کے عالم کی سدر کرے اور حس مشترک میں نقش منتقش ہو جائے اور یہ خواب کی حالت میں هوتا هے يا مرض کی حالت میں جو حس کو غافل کر دے اور تخیل کو ضعیف کر دے کیوں کہ تخیل کو کبھی مرض سست کر دیتا ہے اور کبھی زیادہ حرکت ہوتی ہے کیوں کہ اس وقت روح جو تخيل كا آله هے تحليل هو جاتي هے پس متخيله کسی قدر سکون اور آرام چاہتی ہے اس لیر روح کو جانب اعلیٰی کی طرف توجه کرنے کا آسانی سے موقع ملتا ہے پس جب نفس میں کوئی نقش آتا ہے تو تخیل دوڑ کر اس کو لر لیتا ہے اور یہ یا تو اس وجہ سے هوتا هے که اس امر طاری کی وجه سے تنبه هوا هے اور تخیل نے آرام حاصل کے کے حرکت کی ھے۔ کیوں کہ تخیل ایسر تنبه کی طرف حلد مائل هوتا ہے اور یہ اس وجه سے نفس ناطقه کی هی قدرتی طور سے اس کی خدمت کر رہا ھے کیوں کہ نفس ناطقہ ایسر موقع پر نفس کے معاون ہوتا ہے پس جب اس کو تخیل قبول کہ لیتا ہے آس وقت کہ نفس اس کے شواغل کو ہٹا دیتا ہے تو حس مشترک کی لوح میں نقش اتر آتا ہے۔

غرض که صوفیائے کرام اور علمائے اسلام اور فلاسفه مشائیں میں سے شیخ ہو علی سینا اس بات کے قائل ہیں که بعض لوگوں کو جن کے نفس کامل ہیں یا زهد و مجاهده و ریاضات سے آن کے نفوس میں تجرد حاصل ہوا ہے ان کو خواب میں ملاء اعلیٰ سے ایک قسم کے علم کا فیضان ہوتا ہے اور وہ فیضان ان کے صور خیالیہ سے کسی صورت میں جو اس فیضان علم کے مناسب ہے متمثل ہوتا ہے اور وہ تمثل حس مشترک میں منقش ہو جاتا ہے اور اس کے مطابق ان کو خواب دکھائی دیتا ہے ۔ شاہ ولی اللہ صاحب کہتے ہیں که می خواب اس قابل ہوتا ہے کہ اس کی تعبیر دی جاوے اور اس

کے سوا کوئی خواب تعبیر کے لائق نہیں ہوتا ۔

ملاء اعلیٰ کے مفہوم کو متعدد لفظوں سے تعبیر کیا جاتا ہے کبھی تو ایک عالم مثال قرار دیا جاتا ہے جس میں اس عالم کی تمام باتیں ساکان وسا یہ کہون بطور مشال کے سوجود ہیں اور اس کا عکس مجملاً یا تفصیلاً خواب میں انسان کے نفس پر پڑتا ہے اور کبھی نفوس فلکیہ کو ساکان اور ما یہ کہون کا عالم سمجھا جاتا ہے اور اس سے نفس انسانی پر فیض پہنچنا مانا جاتا ہے اور کبھی عقول عشرہ مفروضہ حکاء کو عالم ساکان وسا یہون قرار دے کر اس کے فیضان کو تسلیم کیا جاتا ہے اور کبھی اس سے ملائکہ مقصود ہوتے ہیں۔

صوفیاء کرام نے چند اصطلاحات قرار دی ہیں جن کے مجموعه پر ملاء اعلیٰ یا منبع الدخیر وال جود یا مبداء الاعلیٰ یا حضرت القدس اطلاق ہوتا ہے اور اس کی یہ تفصیل ہے:

تدلیات ۔ جن سے مطلب ہے آن امور متعینہ کا جو قوائے افلاک میں مکنون ہیں اور جن کو حکماء نفوس فلکی سے تعبیر کرتے ہیں ۔

لاہوت ۔ اصطلاع فلاسفہ میں اس کو انانےیہ اولی سے تعمیر کیا جاتا ہے ۔

جبروت۔ فلاسفہ نے اس کو عقل سے تعبیر کیا ہے اور علمائے شرع نے سلائکہ سے۔

رحموت ۔ جس کو حکماء نفس کہتے ہیں ۔

ناسوت ۔ اس کو حکماء هیولنی قرار دیتے هیں ۔

لاهوت تو بمنزله ماهیت کے هے اور جبروت بمنزله اس کے لوازم کے اور رحموت بمنزله ایک کلی کے جو فرد واحد میں منحصر هو اور ناسوت کو ایسا قرار دیا هے جیسے نفس بدن کے لیے یا صورت هیوللی کے لیے۔

اس امر کو تفسیر کبیر میں اور زیادہ صاف طرح پر بیان کیا ہے آس میں لکھا ہے کہ

قد ثبت انه سبحانه خلق جوهر النفس الناطقة بحيث يمكنها الصعود الى عالم الافلاك و مطالعة اللوح المحفوظو المانع لها من ذالك اشتغالها بتدبر البدن و في وقت النوم يقبل هذا اتشاغل فتقوى على هذه المطالعة فاذا وقعت الروح على حالةه من الاحوال تركت آثارا مخصوصة مناسبة لذالك الادراك الروحاني الى عالم الخيال ـ (تفسير كبير) ـ

یعنی یه بات ثابت هو گئی هے که خدا تعالیٰی نے نفس ناطقه کو اس طرح کا پیدا کیا هے که اس کے لیے یه بات ممکن هے که عالم افلاک تک پہنچ جاوے اور لوح محفوظ کو پڑھ لے اس بات سے جو اس کو مانع هے وہ اس کا تدبیر بدن میں مشغول رهنا هے اور سوئے کے وقت اس کی یه مشغولی کم هو جاتی هے اور قوة لوح محفوظ کے پرٹره لینے کی قبوی هو جاتی هے پس جب روح کا کوئی ایسا حال هو جاتا هے تو وہ انسان کے خیال میں خاص اثر جو اس ادراک روحانی کے مناسب هوتا هے ذال دیتی هے مطلب یه هے که اثر آن ادراکات کا خیال میں متحشل هو کر بطور خواب کے دکھائی دیتا هے۔

اب هارا سوال یه هے که بلا شبه عقل انسانی بلکه مشاهده اور تجربه اس بات کو ضرور ثابت کرتا هے که ایک واجب الوجود یا علق العلل خالق صمیع کائنات موجود هے ۔ ولا نعلم ما هیته ولا حقیقة منافه الا ان نقول عالم حی قادر خالق لا تاخذه سنة ولا نوم له ما فی السموات وما فی الارض و ها ی کل شنی قادید در اور یه تمام الفاظ صفاتی جو اس

هال كمها جاتا هي كه بعد سلوك طريقت اور اختيار كرني زهد و مجاهده و رياضت كي يه رازكهلتا هي اور حجاب آله جاتي هيل اور حقيقت نفس وما بيسته مدلاء اعدلي ومنا فييمها منكسف هو جاتي في هي هم قبول كرتي هيل كه كچه منكشف هوا هي وه حقيقت هي هم كس طرح تميز كريل كه جو كچه منكشف هوا هي وه حقيقت هي يا وهي خيالات هيل جو متمثل هو گئي هيل جس طرح كه اور خيالات متمثل هو جاتي هيل الا عدندى كدبال الا نسسان ان يسكسون متمثل هو جاتي هيل الا عدندى كدبال الا نسسان ان يسكسون متمثل بدرضاته و رضاته مكنونه في مخلوقاته و قد شر حمها في كلام عدلي لسان رسوله مجد صلى الله عليه وسلم وهي مكتوبة في كنتابه في فيجسنا الله و رسوله و كتابه الذي ساء بقران المجيد الفرقان الحميد تبارك و تعالى شانه وما اعظم مهانه ـ

پس ہارے نزدیک بہ جز ان قواے کے جو نفس انسانی سی مخلوق ہیں اور کوئی قبوت خوابوں کے دیکھنے میں موثر نہیں ہے ۔ اور یوسف علیہ السلام کی خواب جن کا نفس نہایت متبرک اور ہاک تھا اور ان دونوں جوانوں کے خواب جو یوسف علیہ السلام کے ساتھ قید خانہ میں تھے اور کفر و ضلالت سیں سبتلا تھے اور

ان کے نفوس بسبب آلائش کفر پاک نه تھے اور اسی طرح فرعون کا خواب جو خود اپنے آپ کو خدا سجھتا تھا اور اس کا نفس مبداء فیاض سے کچھ مناسبت نه رکھتا تھا باینه سب کے خواب یکساں مطابق واقعہ کے اُسی ایک قسم کے تھاے اور اس سے صاف ثابت ھوتا ھے که بجز قوامے نفس انسانی کے اور کوئی قوت خوابوں کے دیکھنے میں موثر نہیں ھے گو که وہ خواب کیسے ھی مطابق واقعه کے ھوں ۔

اب حضرت یوسف علیه السلام کے خوابوں کو دیکھو۔ پہلا خواب آن کا یہ ہے کہ آنھوں نے گیارہ ستاروں کو اور سورج اور چاند کو اپنے تئیں سجدہ کرتے دیکھا۔

حضرت یوسف علیه السلام کے آن کے سوا گیارہ بھائی اور بھی تھے اور ماں اور باپ تھے ۔ باپ اور ماں کا تقدس اور عظم و شان اور قدر و منزلت آن کے دل میں منقش تھی بھائیوں کو بھی و، اپنے باپ کی ذریات جانتے تھے مگر اس سبب سے که ان کے باپ ان کو سب سے زیادہ چاھتے تھے اور خود ان کے باپ و ماں اور آن کے سبب سے ان کے بھائی آن کی تابعداری بسبب چاہ و محبت کے کرتے تھے اور اس لیے ان کے دل میں یہ بات بیٹھی ھوئی تھی کہ ماں اور بھائی سب میرے تابع و فرمان بردار اور میری منزلت و قدر کرنے والے ھیں ۔

یه کیفیت جو ان کے دماغ میں منقش تھی اس کو متخیله نے سورج اور چاند اور ستاروں کی شکل میں جن کو وہ ہمیشه دیکھتے تھے اور ان کا تفاوت درجات بھی ان کے خیال میں متمکن تھا متمثل کیا اور انھوں نے خواب میں دیکھا کمه گیارہ ستارے اور سورج اور چاند مجھ کو سجدہ کرتے تھے پس آن کی تعبیر حالت موجودہ میں یہ تھی کہ ماں باپ اور بھائی سب آن کے فرماں بردار ہیں ۔

سجدہ کے لفظ سے بعض مفسرین نے واقعی سجدہ کرنا مراد لی ہے اور بعض نے اطاعت و تواضع جیسا کہ تفسیر کبیر میں لکھا ہے المراد بالسجود نفس السجود و التواضع مگر میں قول ثانی کو ترجیح دیتا ہوں گو خواب میں یہ دیکھنا کہ سورج اور چاند اور ستارے زمین پر اتر آئے ہیں اور سجدہ کرتے ہیں کوئی تعجب کی بات نہیں ۔ مگر یہ روایت کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ فلاں فلاں ستارے زمین پر اتر آئے تھے محض ہے اصل اور غلط بلکہ جھوٹی ہے ۔

اس واقعه کے ایک مدت بعد حضرت یوسف علیه السلام کے ماں باپ اور بھائیوں کا مصر میں حانا اور موافق آداب سلطنت کے آداب مجا لانا اور حضرت يوسف عليه السلام كا فرمانا كه هذا تاويل رویای من قبل قد جمعلمها ربی حقا ایک امر اتفافی تها کیوں کہ یہ بات قرآن محید سے ہم پائی جاتی کہ حضرت یعقوب علیه السلام بھی جو نبی تھے اُس خواب سے یہ سمجھے تھے کہ حضرت یوسف ایسی سنزلت سی پہنچس کے کہ ماں باپ اور بھائی جا کر ان کو سجدہ کریں گے اور قرآن محید سے اس خواب کی حو کچھ تعبدر پائی جاتی ہے وہ صرف یہ ہے کہ حضرت یعقوب نے حضرت یوسف سے کہا کہ خدا تجھکو حوادث عالم کا آل تعلیم کرے گا اور اپنی نعمت تجھ پر اور یعقوب کی اولاد پر اسی طرح پوری کرے گ جس طرح کہ اُس نے ابراہیم اور اسحاق پر پوری کی ہے اور یہ تعبیر ایک عام تعبیر ہے جو ایک جوان صالح کے عمدہ خواب کی تعبیر میں بیان ہو سکتی ہے ۔ چاند سورج ستاروں کے سجدہ کرنے سے حوادث عالم کے علم کو تعبیر کرنا نہایت ُپر لطف قیاس تھا ۔

دوسرا اور تیسرا خواب آن دو جوانوں کا ہے جو حضرت

یوسف علیه السلام کے ساتھ قید خانہ میں تھے ان میں سے ایک نے دیکھا کہ میں شراب چھان رہا ھوں دوسرے نے دیکھا کہ اس کے سر پر روٹی ہے اور پرند اس کو کھا رہے ھیں۔ یہ دونوں شخص کسی جرم کے متہم ہو کر قید ھوئے تھے پہلا شخص جو غالباً ساق تھا در حقیقت ہے گناہ تھا اور اس کے دل کو یقین تھا کہ سے گناہ قرار پا کر چھوٹ جاوے گا وھی خیال اس کا سوتے میں شراب طیار کرنے سے جو اس کا کام تھا متمثل ھو کر خواب میں دکھاؤ، دیا۔

دوسرا شخص جو غالباً باورچی خانه سے متعلق تھا در حقیقت مجرم تھا اور اس کے دل میں یقین تھا کہ وہ سولی پر چڑھایا جاوے گا اور جانور اس کا گوشت نوچ نوچ کر کھاویں گے وھی خیال اس کا سوتے میں روٹی سر پر رکھ کر لے جانے سے جو اس کا کام تھا اور پرندوں کا روٹی کو کھانے سے متمثل ھو کر خواب میں دکھائی دیا حضرت یوسف علیه السلام اس مناسبت طبعی کو جو آن دونوں خوابوں میں تھی سمجھے اور اس کے مطابق دونوں کو تعمیر دی اور مطابق واقعه کے ھوئی ۔

چوتھا خواب وہ ہے جو خود بادشاہ نے دیکھا کہ سات سوٹی گائیں ہیں سات ُدبلی گائیں کھا رہی ہیں اور سات ہری بالیں ہیں اور سوکھی ۔

ملک مصر ایک ایسا ملک ہے جس میں مینہ بہت ہی کم برستا ہے ۔ دریائے نیل کے چڑھاؤ پر کھیتی ھونے یا قعط پڑنے کا مدار ہے ۔ چڑھاؤ کے موسم میں اگر بائیس فٹ چڑھ جاوے تو فصل اچھی ہوتی ہے اور چوبیس فٹ چڑھاؤ میں غرق ھو جاتی ہے اور اگر صرف اٹھارہ یا ساڑھے اٹھارہ فیٹ چڑھاؤ ھو تو قعط ھو جاتا ہے ۔ قدیم مصریوں نے دریائے نیل کے چڑھاؤ سے جس پر اچھی

فصل یا قحط کا ہونا منحصر تھا متعدد جگہ اور متعدد طرح سے پیانے بنا رکھے تھے اور ان کو بہت زیادہ اچھی فصل ہونے یا قحط ہونے کا خیال اور ہمیشہ آسی پر چرچا رہتا تھا ۔

مصر میں قحط ھونے کا یہ سبب بھی ھوتا ہے کہ دریائے نیل کی طغیانی چڑھاؤ کے بھاؤ کا رخ اس طرح پر پڑ جاوے کہ زراعت کی زمینیں پانی پھیلنے سے محروم رہ جاویں ۔ حضرت یوسف علیہ السلام کے زمانے میں اور اس سے پہلے بھی دریائے نیل بے اعتدالی کے طور پر بہتا تھا یعنی ملک مصر میں اس کے مناسب اور یکساں بہنے کے لیے کوئی انتظام نہیں کیا گیا تھا ۔

اس زمانے میں بھی جب کسی ندی یا دریا کا رخ بدلتا معلوم عوتا ہے تو لوک اندازہ کرتے ھیں اور آپس میں چرچا کرتے ھیں کہ اتنے دنوں میں دریا آس طرف بہنے لگے گا اور فلاں طرف کی زمین چھوٹ جاویں گی اسی طرح غالباً آس زمانے میں مصر کی نسبت اور قحط پڑنے کی نسبت چرچے ھوتے ھوں گے اور بادشاہ مصر کو اس کا بہت خیال رهتا ھوگا وھی خیال پیداوار کے زمانہ کا موٹی تازی گایوں اور ھری ھری بالوں سے اور قحط کے زمانہ کا دبلی گایوں اور سوکھی بالوں سے متمثل ھو کر فرعون کو خواب دکھائی دیا اور حضرت یوسف علیه السلام نے آسی حالت کے مناسب تعبیر دی جو مطابق واقع کے ھوئی ۔ کے ما قال الفارابی مناسب تعبیر ھو حدس من المعبدر یستخرج به الاهل

اگر عبری توریت کے حساب کو صحیح مانا جاوے تو یه قحط سنه ۲۲۹۹ دنیاوی یعنی سنه ۱۲۰۸ قبل مسیح میں شروع هوا تها اور سنه ۲۳۰۹ دنیاوی یعنی سنه ۱۲۰۸ قبل مسیح میں ختم هوا تها۔

مصرکا قحط افریقہ کے اکثر حصوں اور بالخصوص یمن میں

،ور تمام فلسطین میں نہایت شدید تھا مگر یه سمجھنا که آن برسوں، میں ان ملکوں میں مطلق کچھ پیدا نہیں ھوا تھا صحیح نہیں ھے بلکه جو حال عموماً قحط زدہ ملکوں کا ھوتا ھے ویسا ھی آن ملکوں کا تھا اور اسی لیے قرآن مجید میں سبعاً شداداً کا لفظ آیا ھے اور شدید قحط میں بہی ھوتا ھے که پیداوار ان ملکوں میں نہایت قلیل ھوتی ھے اور پھر متواتر قحط ھوتا ھے اور شدید ھو جاتا ھے کیوں که غله کا ذخیرہ موجود نہیں رھتا۔

خوابوں کی نسبت اب صرف ایک بحث باقی هے که اگر وهی چیزیں خواب میں دکھائی دیتی هیں جو دماغ میں اور خیال میں جمع هیں تو یه کیوں هوتا هے که بعضی دفعه یا آکثر دفعه وهی امر واقع هوتا هے جو خواب میں دیکھا گیا هے ۔

مگر اس باب میں خواب کی حالت اور بیداری کی حالت برابر هے ۔ بہت دفعہ ایسا هوتا هے که بیداری کی حالت میں آدمی باتیں سوچتا هے اور اپیے دل میں قرار دیتا هے که یه هوگا اور وهی هوتا هے یا کسی شخص کویاد کرتا هے اور وہ شخص آ جاتا هے اور بہت دفعه اس کے مطابق نہیں هوتا پس اس کی بیداری کے خیال کے مطابق واقعه کا هونا ایک امر اتفاقی هے ۔ اسی طرح خواب میں بھی جو باتیں وہ دیکھتا هے اور وہ وهی هوتی هیں جو اس کے دماغ اور باتیں وہ دیکھتا هے اور وہ وهی هوتی هیں جو اس کے دماغ اور خیال میں جمی هوئی هوتی هیں پس کبھی آن کے مطابق بھی کوئی واقعہ اسی طرح واقع هوتا هے جس طرح که بیداری کی حالت میں خیالات کے مطابق واقع هو جاتا هے ۔

ھاں اس میں شبہ نہیں کہ انبیاء اور صلحا کے خواب بہ سبب اس کے کہ آن کے نفس کو تجرد فطری و خمقی یا اکتسابی حاصل ہوتا ہے ان کے خواب بالکل سچے اور اصلی اور مطابق آن کی حالت نفس کے ہوتے ہیں اور آن سے آن کے نفس کا تقدس اور متبرک ہونا ثابت ہوتا ہے۔

مسئلہ جبر و اختیار

دینیات کا یه مسئله نهایت اهم اور مابه النزاع هے که انسان اپنے افعال میں مجبور هے یا مختار۔ هزاروں هیں جو کمہتے هیں که انسان اپنے اختیار اور مرضی سے کچھ بھی نہیں کر سکتا جو کچھ کرتا هے خدا کرتا هے۔ دوسرا فریق کمتا هے که نہیں الله تعاللی نے انسان کو بنا کر آزاد چھوڑ دیا ہے که چاھے نیکی اور فلاح کا راسته اختیار کرے چاھے گناه اور معصیت کا۔ نیک کام کرے گا جزا پاوے گا برے کام کرے گا سزا پاوے گا سرسید نے زیر نظر مضمون میں اسی مسئله پر اپنے خیالات کا اظہار کیا ہے۔ (مجد اساعیل پانی پتی)

جو لوگ کفر میں پڑے آن کی نسبت خدا نے فرمایا ۔

ختم الله علیٰ قلوبهم و علیٰ سمعهم و علیٰ ابصارهم غشاوه می مگر کسی مفسر نے اس کے حقیقی معنی مراد نہیں لیے کیوں که نه کسی انسان کے دل پر اور نه کان پر سچ مُچ کی مہر لگی هوئی هے اور نه کسی کی آنکهوں پر سچ مُنچ پرده پڑا هوا هے بلکه سچ بات کے نه سمجهتے اور حق بات کے نه سننے اور ٹھیک بات پر غور نه کرنے کو بطور استعاره دلوں پر اور کانوں پر مهر کر دینے اور آنکهوں پر پرده ڈالنے سے بیان کیا ہے ۔

بلا تشبیه یه ایسا هی کلام ہے جیسےکه ایک ناصح شفیق کسی کو افعال ضمیمه چھوڑنے اور اخلاق حمیدہ اختیار کرنے کی

نصیعت کرتا هو ۔ مگر وہ شخص اس کی نصیعت پر کان نه دهرتا هو اور ایک شخص فصیع و بلیغ اس حالت کو دیکھ کر کہے که بد ذاتوں نا اهلوں کو تم نصیعت کرو یا نه کرو وہ کبھی نہیں مانیں گے ۔ ان کے دل پتھر کے هیں اور آنکھیں اندهی اور کان بہرے ۔ خدا نے ان کے دلوں پر مہر لگا دی ہے اور ان کی آنکھوں پر پردہ ڈال دیا ہے ۔ پس جس محاورہ میں انسان اس طرح بات چیت کرتے هیں اسی انسانی محاورہ پر خدا نے بھی کہلام کیا ہے ۔

اس آیت سے اور آیتوں سے جو اس کی مثل ہیں ۔ جبر و اختیار کے مسئلہ پر بحث کرنا قرآن مجید کے بیان کلام کے منافی ہے ۔ قرآن مجید کی کسی آیت سے نه انسان کے اپنے افعال میں مجبور ہونے پر استدلال ہو سکتا ہے ، نه مختار ہونے پر ، نه بین الجبر و الاختیار ہونے پر ۔ مگر افسوس ہے که علمائے متقدمین نے اس پر بحث کی ہے اور غلطی سے اس کو ایک ایسا مسئلہ سمجھا ہے جو مسائل اسلام میں داخل ہے اور جو وحی یا قرآن سے ثابت ہے اور پھر آپس میں مختلف رائیں قرار دی ہیں ۔ ایک گروہ انسان کے اپنے افعال میں مجبور ہونے کا قائل ہے دوسرا گروہ مختار ہونے کا اور تیسرا بین الجبر والاخیتار کا جو بالفعل مذہب اہل سنت و جاعت کا ہے ۔

انسان اپنے افعال میں مجبور ھو یا مختار بین الجبر والاختیار یہ ایک جدا مسئلہ ھے جو انسان کی فطرت کی تحقیقات پر منحصر ھے اور اس کی فطرت پر مباحثہ کرنے کے بعد جو ثابت ھو ، ھو ۔ ھارا مقصد اس مقام پر صرف اس قدر کہنا ھے کہ قرآن مجید سے ان باتوں میں سے کسی پر استدلال کرنا اور اس کو ایک مسئلہ اسلام منزل من اللہ سمجھنا غلطی ھے ۔ قرآن مجید میں خدا تعالیٰ طرف نے جا بجا بندوں کے افعال کو بلکہ ھر ایک چیز کو اپنی طرف

منسوب کیا ہے۔ جو کام بندوں سے ھوتے ھیں آن کی نسبت فرماتا ہے کہ ھم نے کیا۔ یا جو چیزیں کہ اور اسباب سے پیدا ھوتی ہے آن اسباب کو بیچ میں سے نکال کر فرماتا ہے کہ ھم نے کیا۔ ھم نے کیا۔ ھم نے درخت لگائے ، ھم نے دریا بہائے ، ھم نے مینہ برسایا ، ھم نے درخت لگائے ، ھم نے آڑتے جانور ھوا میں تھائے ، پس اس طرز کلام سے واسطوں کا درحقیقت درمیان میں نہ ھونا یا آس شے کا آن افعال میں مجبور یا مختار ثابت کرنا مقصود نہیں ھوتا۔ بلکہ اپنی عظمت و شان اور اپنے علم العلل یعنی تمام چیزوں کی اخیر علت یا خالق ھونے کا بندوں پر اظہار مقصود ھوتا ہے اور اس لیے اس قسم کے کلام سے انسان پر اظہار مقصود ھوتا ہے اور اس لیے اس قسم کے کلام سے انسان کا اپنے افعال میں مجبور یا مختار ھونے کا استنباط و استدلال کرنا صحیح نہیں ھو سکتا۔ بلکہ ایسا کرنا داخل تفسیر القول بیما لا یہرضلی قائلہ کے ہے۔ کیوں کہ اس کلام سے اس بات کی حقیقت کا بیان کرنا کہ انسان اپنے افعال میں مجبور ہے یا مختار عقیقت کا بیان کرنا کہ انسان اپنے افعال میں مجبور ہے یا مختار یا بین الجبر والاختیار مقصود ھی نہیں ہے۔

خدا اپنے تئیں علة العلل جمیع کائنات کا بتاتا ہے۔ پس اگر کمام حوادث و افعال کو جو عالم میں تمام مخلوقات، انسان، حیوان، عناصر، قویل، وغیرہ سے ہوتے ہیں اپنی طرف نسبت کرے اور ہر چیزکی نسبت یہ کہےکہ ہم نے کیا تو یہ نسبت صحیح و درست ہوگی۔ علاوہ اس کے مصری اور یونانی حکاء کا یہ خیال تھا کہ دو چیزیں ازلی اور ابدی ہیں۔ ایک خدا اور ایک مادہ ۔ خدا نے اس قدیم اور ازلی مادہ سے تمام دنیا کو بنایا اور رچایا ہے اور ایک گروہ زردشتیوں کا یہ عقیدہ تھا کہ دو مقابل کے وجود ہیں۔ ایک یزدان یعنی خدا۔ دوسرا اهرمن یعنی شیطان، وجود ہیں۔ ایک یزدان یعنی خدا۔ دوسرا اهرمن یعنی شیطان، نیک کام خدا کرتا ہے اور بد کام شیطان، اور یہ مذہب اس ریگستان

میں بھی پھیل گیا جہاں ان غلطیوں کا اصلاح کرنے والا پیدا ھوا تھا۔ خدا تعالی کو قرآن مجید میں آن دونوں عقیدوں کا مثانا اور اپنی ذات واحد کو خالق جمیع کائنات بتانا اور اپنے تئیں وحد لا شریک له' جتانا مقصود تھا۔

پس سب سے علیحدہ طریقہ اس باریک مسئلہ کے سمجھانے کا یہی تھا کہ تمام افعال کو ان کے تمام واسطوں کو دور کر کر خاص اپنی طرف منسوب کرے اور کبھی ان واسطوں کی طرف ۔ تاکه لوگ سمجھ لیں کہ علة العلل صرف ایک ذات وحدہ 'لا شریک ہے اور جو واسطے ہم کو دکھائی دیتے ہیں ۔ بلاشبہ وہ واسطے ہیں ۔ مگر علة العلل ان سب کی وهی ایک ذات وحدہ 'لا شریک ہے ۔ یس جس کلام کا یہ موضوع ہو اس سے اس مطلب لا شریک ہے ۔ یس جس کلام کا یہ موضوع ہو اس سے اس مطلب کو نکالنا کہ انسان اپنے افعال میں مجبور ہے یا مختار یا بین الجبر والاختیار اس کلام کو غیر ما وضع له ' میں استعال کرنا ہے ۔ ہس پر انسان کی خلقت کے لحاظ سے بحث اور غور ہو سکتی ہے جس کر ہم کو خصراً بیان کرتے ہیں ۔

آن علماء اور حکماء نے جنھوں نے السانی فطرت پر غور کی ہے دو طرح پر انسان کو اپنے افعال میں مجبور پایا ہے۔ ایک امور خارجیہ کے سبب سے جب کہ قومی و ملکی و تمدنی امور کی الف و موانست کا اور بچپن سے کسی امر کی محارست و تربیت و صحبت کا اس پر ایسا قوی اثر ہوتا ہے کہ وہ انھی افعال کو مستحسن سمجھتا ہے اور انھیں کے کرنے پر اس کا دل اس کو مجبور کر دیتا ہے گو یہ مجبوری اکثر اس کی سمجھ میں نہیں آتی ۔ کیوں کہ بظاہر اس پر کسی کا جبر نہیں ہوتا۔ مگر درحقیقت انھی قومی و ملکی و تمدنی اور بچپن سے کسی امر کی محارست و تربیت و صحبت

کا اثر رفته رفته بے معلوم آس میں ایسا سرائت کر جاتا ہے کہ جس سے آن افعال کے کرنے پر جن کو وہ کرتا ہے مجبور ہوتا ہے اور جن باتوں کو وہ سمجھتا ہے کہ میں اپنی مرضی سے کرتا ہوں درحقیقت وہ اسی قوی اثر کے سبب سے بمجبوری کرتا ہے۔

دوسری قسم کی مجبوری اپنے افعال میں خود انسان کو اپنی خلقت کے سبب سے هوتی هے هم تمام دنیا کی چیزوں میں ان کی ایک فطرت پاتے هیں جس کے برخلاف هرگزنہیں هوتا ۔ هم دیکھتے هیں که معدنی چیزیں هوا میں نہیں آڑتی پھرتیں ، پانی هوا کے اوپر نہیں رهتا ، مچھلی زمین پر زندہ نہیں رهتی ، درندے جانوروں سے درندگی ، پرندے جانوروں سے پرواز ، آبی جانوروں سے شناوری ، کبھی زائل نہیں هوتی ۔ پس وہ سب ان افعال کے سرزد هونے میں جو آن سے منسوب هیں بمقتضائے اپنی خلقت کے محبور هیں ۔ جو آن سے منسوب هیں بمقتضائے اپنی خلقت کے محبور هیں ۔

اسی طرح هم انسانوں میں بھی دیکھتے هیں که وہ بھی اپنے افعال میں بمقتضائے اپنی فطرت کے مجبور هیں۔ جن کی آنکھ خدا نے ایسی بنائی ہے جس سے دور کی چیزیں دکھائی دیتی ہے۔ تو وہ دور کی چیز دیکھنے میں مجبور ہے۔ اسی طرح انسانوں کی بناوٹ ایسی ہے که جو افعال ظاهری و باطنی آن سے سرزد هوتے هیں وہ ان میں مجبور محض هیں۔ اگر بالفرض ایک نہایت رحم دل نیک طبیعت شخص کے اعضاء دل و دماغ کی بناوٹ۔ ایک نہایت شقی القلب بے رحم بد ذات آدمی کی سی هوتی ۔ تو اس سے بھی وهی افعال صادر هوتے جو اس بد ذات سے هوتے هیں۔ اگر ایک بے وقوف آدمی کے اعضاء کی بناوٹ ایک عقل مند آدمی کے اعضاء کی بناوٹ سے تو اس عقل مند آدمی کے اعضاء کی بناوٹ سے اس عقل مند آدمی کے اعضاء کی بناوٹ سے اس عقل مند آدمی کے اعضاء کی بناوٹ سے اس عقل مند کے سے اعضاء کی بناوٹ سے اس عقل مند کے سے افعال سرزد ہونے لگیں گے ۔ غرضیکہ تشریج ابدان سے ثابت

هوگیا ہے کہ جس قسم کی بناوٹ انسان کی هوتی ہے اسی کے مناسب افعال خواہ نخواہ آس سے سرزد هوتے هیں ۔ نهایت بے رحم سفاک قاتلوں کی کھوپڑی میں ایک خاص قسم کی بناوٹ ہے اور تحقیقات سے ثابت هوا ہے کہ هر قاتل سفاک کی کھوپڑی اسی بناوٹ کی هوتی ہے ۔ پس جس کی کھوپڑی اس بناوٹ کی هوگی وہ ضرور سفاک اور قاتل و بے رحم هوگا اور جو بے رحم سفاک قاتل هوگا اس کی کھوپڑی آسی بناوٹ کی هوگی ۔ پس ان افعال میں جو خلقت انسانی سے علاقہ رکھتے هیں انسان مجبور ہے اور یہ ایسی بدیہی باتیں هیں جن سے کوئی بھی جب کہ وہ اس علم میں واقفیت حاصل کرے جن سے کوئی بھی جب کہ وہ اس علم میں واقفیت حاصل کرے انکار نہیں کر سکتا ۔

اس کو اور صاف طرح سے غور کرو جس کو ھر کوئی سمجھ سکے بعض لوگ ایسے ھیں جن کا حافظہ بہت قوی ھوتا ھے۔ بعضے ایسے ھیں جن کے قوی قوی ھیں بعضے نہایت ضعیف القوی ھیں۔ بعضے ایسے ھیں کہ کسی کام کو ایسا عمدہ کرتے ھیں کہ اوروں سے باوصف کوشش کے ایسا نہیں ھو سکتا ۔ کسی کا ھاتھ خوش نویسی کے گوشش کے ایسا نہیں ھو سکتا ۔ کسی کا دماغ علم و ادب کے لائق ھوتا ھے کسی کا ریاضی کے ۔ کسی کی بناوٹ کسی خاص مناسب ھوتا ھے ۔ کسی کا ریاضی کے ۔ کسی کی بناوٹ کسی خاص امر کے ایسی مناسب ھوتی ھے کہ اس کی مثل دوسرا نہیں ھو سکتا امر کے ایسی مناسب ھوتی ہے کہ اس کی مثل دوسرا نہیں ھو سکتا افعال کہ اس فطرت پر مبنی ھیں اور جو افعال کہ اس فطرت پر مبنی ھیں ان کے صادر ھونے میں وہ عجور ھیں ۔

بایں همه هم انسانوں میں ایک اور چیز بھی پاتے هیں جو نیک و بد میں تمیز کر سکتی ہے یا ایک بات کو دوسری بات پر ترجیح دے سکتی ہے ۔ یه قوت بھی کبھی بلکه اکثر قومی

و ملکی و تمدنی امورکی الف و موانست سے اور بچپن سے کسی امر کی محارست و تربیت و صحبت کے اثر سے موثر هو جاتی هے اور اس قوت کی ایسی حالت کو تمام اهل مذاهب کا نشنس یعنی نور ایمان و نور دهرم سے تعبیر کرتے هیں مگر در حقیقت وہ قابل اعتاد اور لائق طانیت کے نہیں هے ۔ کیوں که اس کا دوست و غیر دوست دونوں قسم کے اثروں سے موثر هونا اور مخالف اثروں سے ایک هی نتیجه حاصل هونا ممکن هے ۔ ایک مسلمان کے لیے کسی بت کو سجدہ کرنا جس قدر اس کے نور ایمان کے برخلاف هے ویسا هی ایک بت پرست کے نور دهرم کے مواقی هے ۔ پس ایک شے دو میاف نتیجر پیدا کرتی هے ۔

مگر اس کے سوا ایک اور قوت بھی انسان میں پائی جاتی ہے جو ان تمام اثروں پر غالب ہو جاتی ہے اور جس کو میں نور قلب یا نور فطرت کہتا ہوں۔ ہارے پاس بہت سے لوگوں کی نسبت تاریخی شہادت موجود ہے۔ جنھوں نے بچپن سے ایک خاص قوم کی رسم و عادات میں تربیت پائی اور انھی ملکی و تمدنی باتوں کے سوا اور کوئی خیال ان کے دل میں نہیں گذرا اور زمانه دراز تک اسی قومی و اور تمدنی امور کی الف و موانست میں رہے اور ایک ھی قومی و اور تمدنی امور کی الف و موانست میں رہے اور ایک ھی نے اپنی سوچ سمجھ اور غور و فکر سے جس کو الہام کہنا چاھیے آن تمام بندوشوں کو توڑا اور ان کے عیبوں کو جانا اور اپنے تئیں اس سے آزاد کیا اور لوگوں کے آزاد کرنے میں کوشش کی۔

یه قوت فکری کم و بیش تمام انسانوں میں فطری ہے۔ هر شخص خود اپنے حال پر فکر کر کر سمجھ سکتا ہے که وہ اس کے کام میں لانے پر قادر ہے اور یہی وہ قوت ہے جو حق و باطل میں تمیز کرتی ہے اور اصلی سچ کو پرکھ لیتی ہے اور انسان کو

اپنی حالت کی اصلاح پر متوجه کرتی ہے اور تمام بوجھوں کو جو انسان پر به سبب اس کے ملکی و تمدنی و آبائی رسم و رواج کی الف و موانست سے هوتے هیں ان کو اٹھا دیتی ہے ۔ اسی قوت کے زندہ رکھنے اور کام میں لانے کی اور اس بوجھ یعنی ملکی و تمدنی و آبائی رسم و رواج کی الف و موانست کے اٹھانے کی جا بجا قرآن میں هدایت هوئی ہے اور یہی قوت ہے جس کے باعث انسان مکلف هوا ہے اور دیگر حیوانات سے افضل کہا گیا ہے ۔

یه سچ هے که یه قوت بھی انسانوں میں بمقتضائے ان کی خلقت کے قوی اور ضعیف هے مگر معدوم نہیں اور جن میں معدوم هے وہ مکلف نہیں بلکه مرفوع القلم هے ۔ کبھی یه قوت پند و نصیحت اور سمجھانے بجھانے اور دلیلوں اور نشانیوں کے بتانے اور صحبت کے اثر سے تحریک میں آ جاتی هے جیسے که ان لوگوں کا حال هوتا هے جو سچی راہ بنانے والوں کی هدایتوں کو سمجھ کر اور یقین کر کر پیروی کرتے ہیں بشرطیکه آس پیروی کی اور کوئی ایسی وجه نه هه و جس نے انسان کو خفیه خفیه اپنے افعال پر مجبور کر دیا هو اور اس نے اس فطری قوت کو بغیر کام میں لائے اس خدھیه بجبوری سے وہ پیروی نه کی هو اور حیں وہ توی هوتی هے که خود بخود اس میں سے وہ روشنی اٹھتی هے اور حق و باطل میں فرق دکھاتی هے میں سے وہ روشنی اٹھتی هے اور حق و باطل میں فرق دکھاتی هے اور ملکی و تمدنی و آبائی رسم و رواج کی الف و موانست کے بوجھ اور ملکی و تمدنی و آبائی رسم و رواج کی الف و موانست کے بوجھ اور تمدنی اصطلاع میں رفامی کہلاتے ہیں ۔

یمی قوت تھی جس نے ایک جوان کے دل کے خود اپنی روشنی سے روشن کر دیا ۔ جو '' اور کلدانیاں '' میں رہتا تھا اور جس کا نام ابراہیم تھا ۔ بچین سے اس نے اپنے پیارے باپ کی گود

میں پرورش پائی ۔ به جز بتوں کے اس کی آنکھ نے کچھ نہیں دیکھا اور به جز بتوں کی پرستش کے نغموں کے اس کے کانوں نے کچھ نہیں سنا اور پھر سمجھا تو یہ سمجھا کہ ھائے میرا پیارا باپ اور میری پیاری قوم بڑی گمراھی میں ھے ۔ یہ سوچ کر گھبرایا اور چاروں طرف دیکھنے لگا کہ پھر سچ کیا ھے ۔ چاند کو روشن دیکھ کر خیال کیا کہ شاید یہ سچ ھے ۔ سورج کو چمکتا دیکھ کر سوچا کہ شاید یہ سچ ھو ۔ مگر اس نور فطرت نے بتایا کہ یہ سب جھوٹ ھے ۔ اس نے سب سے منہ موڑا اور سچی بات پکار اُٹھا کہ انی وجہت وجہت وجہی للذی فیطر السموات والارض حنیفا و من انے میں الے مشرکبن ۔

اس کے ساتھ ھی ایک یتیم بن باپ کے بچے کا حال سنو ۔ جس نے نہ اپنی ماں کے کنار عاطفت کا لطف اٹھایا اور نہ اپنے باپ کی محبت کا مزہ چکھا ۔ ایک ریگستان کے ملک میں پیدا ھوا اور اپنے گرد بہجز اونٹ چرانے والوں کے غول کے کچھ نہ دیکھا اور بہجز لات و منات و عزی کو ہکارنے کی آواز کے سوا کچھ نہ سنا مگر خود کبھی نہ بھٹکا اور کہا تو یہ کہا '' افرا یہ سے الات والری و منات الشائلة الاخری''۔

پس یه تمام روشنیاں اس نور فطرت کی خود آپ هی روشن هوئی تهیں اور جنهوں نے نه صرف ان کو بلکه تمام جہان کو منور کر دیا۔

مسئلہ متعہ کی تحقیق

متعه کے یه معنی هیں که ایک مرد ایک عورت سے معیاد معین کے لیے مثلاً ایک شب کے لیے بعوض مال معین کے مثلاً دس روپے کی آجرت ٹھیرا لے اور اس سے اُس میعاد تک مباشرت کرے ۔ جیسا که اس زمانے میں بے حیا عورتوں سے بے حیا مردوں کا عام دستور ہے ۔

علماء كا اتفاق هے كه "ابتدائے اسلام ميں متعه جائز تها اور اس باب ميں كه وه بدستور جائز هے يا ممنوع يا مسنوخ هو گيا هے اختلاف هے ـ، گروه كثير امته كا يه قبول هے كه قبرآن ميں تبو بلاشبه جواز متعه كا حكم تها ليكن يه حكم منسوخ هوگيا هے ـ مگر جن آيتوں سے اس كے نسخ كا استدلال كرتے هيں وه استدلال ميرى دانست ميں نهايت ضعيف هے ـ

اور گروہ قلیل است کا یہ قول ہے کہ جواز متعہ بدستور بحال و غیر منسوخ ہے۔ ابن عباس سے اس میں مختلف روایتیں ہیں۔ ایک روایت تو جواز متعہ کی ہے بلا کسی قید کے اور ایک روایت میں اس کا جواز بحالت اضطرار بیان ہوا ہے جیسے کہ مردار و سور کا گوشت حالت اضطرار میں کہا لینا جائز ہے اور ایک روایت میں بیان ہوا ہے کہ ابن عباس نے تسلیم کیا کہ حکم جواز منسوخ ہوگیا ہے۔ عمران بن حصین اس کے جواز کے قائل تھے اور کہتے تھے کہ جواز متعہ کی آیت قرآن میں موجود ہے اور اس کے بعد کوئی ایسی آیت سے جس سے حکم جواز متعہ منسوخ ہوا ہو نازل کہیں ہوئی اور شیعہ حضرت علی مرتضلی سے جواز متعہ کی ہت سی

روایتیں بیان کرتے ہیں۔ سگر اہل سنت والجاعت کے ہاں حضرت علی مرتضی سے کوئی معتبر روایت جواز متعه پر منقول نہیں ہے۔ مجد بن حریر الطبری نے اپنی تفسیر میں حضرت علی سے یہ روایت لکھی ہے کہ '' اگر عمر لوگوں کو متعہ کرنے سے منع نہ کرتے تو محز کسی بد خت کے کوئی زنا نہ کرتا اور مجد بن الحنفيه سے جو حضرت علی کے بیٹر ہس یہ روایت ہے کہ حضرت علی مرتضلی ابن عباس پاس گئر جو جواز متعه کا فتویل دیتر تھر اور فرمایا که آنحضرت صلی الله علیه وسلم نے متعه سے منع کیا ہے۔ سر مے نزدیک علاء مفسرین کا اس آیت سے حکم حواز متعہ پر استدلال کرنا محض غلط ہے بلکہ اس آیت سے علانیہ متعہ کے امتناع کا حکم پایا جاتا ہے۔ تمام تاریخوں اور قدیم کتابوں سے پایا جاتا ہے کہ هر ایک قوم میں قدیم زمانه سے اس قسم کی عورتین تھیں جو ہی پیشہ کرتی تھیں کہ لوگوں سے آجرت ٹھیرا کر ان کو اپنے ساتھ ساشرت کرنے دیتی ھیں ۔ جیسے کہ اس زمانہ میں بھی ایسی عورتیں پائی جاتی ہس ۔ جن کو بلحاظ ان کے حالات کے خانگیاں اور کسبیاں کہتے ہیں۔ پہودیوں میں فارسیوں میں بلکہ تمام قوسوں میں اس قسم کی عورتیں تھیں۔ عرب میں بھی قبل اسلام اور ابتدائے اسلام سی اور شاید اس کے بعد بھی ایسی عورتوں کا وجود تها اور شاید اب بھی هوں یا اُس کی ظاهری صورت میں کجھ تبدیلی واقع هوئی هو ـ یه طریقه اور یه فعل صرف اس وجه سے نکلا تھا کہ مردوں کو اپنی مستی جھاڑنے کا موقع ملے ۔ تزوج میں اور اس طرح پر ستعہ یعنی آجرت سے کام چلانے میں فی نفسہ کوئی فرق نه تھا۔ اس لیےکہ سہر اور آجرت حقیقتاً ایک ہی شے ہے۔ رضا و معاهده دونوں حالت میں ایک هی حقیقت رکھتا ہے ۔ متعه میں معیاد کا سعین ہو جانا اور تزوج میں تعین معیاد کا اختیار زوج کے ہاتھ میں

رهتا ، یا معیاد کا معلوم هونا مگر آس کی تعداد کا نا معلوم هونا که کب موت آئے گی حقیقت معاهده میں کوئی معتدیه تبدل نہیں کرتا۔ یس ان دونوں میں جو حقیقة ا فرق تھا وہ سی تھا کہ تزوج سے مقصود در اصل احصان یعنی پاک دامنی اور نیکی تھی اور متعه سے صرف مسی جھاڑنی ، کیوں کہ اس سے اس کے مرتکب کو بجز سفح منی کے اور کوئی مقصود نہیں ہوتا ۔ پس اسی کو خدا تعاللی نے منع کیا جمال فرمایا که " ان تبتغوا باسوالکم محصنین غیر مسافحین " یعنی تم بعوض اپنر مال کے آزاد عورتوں کو نکاح کرنے کے لیے تلاش کرو اور اُن سے نکاح کرنا پاک داسی رکھنر کی غرض سے ہو نہ ستی جھاڑنے کی غرض سے۔ مطلب آیت کا صرف ، محصنین ، کے لفظ پر ختم ہوگیا تھا ۔ غیر مسافحین کا لفظ صرف آسی طریقہ ستعہ کے سنع کرنے کو کہا گیا ہے جو نہایت ے حیائی اور بد اخلاق سے رائج تھا ، '' انہ کان فـا حـشة و مقتاوساء سبيـ لا. '' پس اس آيت سے متعه كا امتناء پايا جاتا ہے نہ آس کا جواز ۔ جیسر کہ غلطی سے علمائے اسلام نے خیال کیا ۔ باق رهی روایتس ، روی ان النبی صلی الله علیه وسلم

لما قدم مكة في عمرته تنزين نساء مكة فشكا اصحاب الرسول صلى الله عمليه وسلم طول العنزوبة فقال استمتعوا من هذا النساء ـ (تفسيركبير)

جن میں سے بعض سے بجز اس کے اور کچھ نہیں پایا جاتا که مکه کی عورتیں بن سنور کر بیٹھتی تھیں جیسے اب بھی اس قسم کی عورتیں میلوں اور مجمعوں میں بنا و سنگھار کر کر بیٹھتی ھیں اور ان سے متعه کرنے کی آنحضرت صلی الله علیه وسلم نے اجازت دی تھی اور وہ سب روایتیں محض بے ھودہ و لغو ھیں۔ جس قدر حدیثیں جواز متعه پر بیان ھوئی ھیں اور جس قدر که اس کی منسوخی یا جواز متعه پر بیان ھوئی ھیں اور جس قدر که اس کی منسوخی یا

بحالی کی نسبت منقول هیں آن میں سے ایک بھی لائق التفات اور قابل تسلیم نہیں ہے ۔ کیوں کہ آن میں سے کوئی بھی صحیح نہیں ہے ۔ ستعہ پر جو بحث شروع ہوئی ہے وہ اسی آیت کی بناء پر ہوئی ہے کہ علمائے مفسرین نے غلطی سے سمجھا کہ اس آیت سے جواز متعه نکلتا ہے ۔ پھر ایک گروہ اس کا مخالف ہوا اس نے اس کی سنسوخی ثابت کرنے پر توجہ کی ، اور اس کی تائید پر ناسخ حدیثیں موجود ہوگئیں اور اس کے مویدین نے اس کے جوازکی حدیثیں پکڑ بلائیں۔ شیعه کی پشت پناه تو جناب علی مرتضیی هیں هی انهوں نے سچ جهوث جو چاها اب المظلوم عليها السلام پر تهمت دهردي ـ البته اگر اس آیت سے حکم امتناع متعه تسلیم کیا جاوے جو اس زمانه سین عرب مین مروج تها تو وه روایتین جن مین بلا ذکر نسخ صرف حكم امتناع متعه هے بتائيد اس آيت كے قابل ترجيح يا لائق اعتهاد متصور ہو سکے گی اور خیال ہو سکتا ہے کہ بعد نزول اس آیت کے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے متعدمر وجہ کا امتناع کیا ۔ جب که هم روایات متعلق متعه کو صحیح تسلیم نہیں کرتے تو ضرورة ً یه لازم آتا ہے که هم اس بات کو بھی متعه کی نسبت آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے جواز کا حکم دیا اور ابن _شعباس اور عمران بن حصین نے یہ کہا اور علی مرتضنی نے یہ فرمایا تسلیم نہیں کرتے اور جو تفسیر اس آیت کی ہم نے بیان کی اس کی نسبت یہ نہیں کہا جا سکتا کہ ان بزرگوں کے اقوال کے برخلاف ہے هاں یہ کہا جا سکتا ہے کہ سوائے ہارے تمام مفسرین و علمائے . متقدمین آیت کے معنی الٹے سمجھے ، مگر اس کہنے کی ہم کو کچھ پرواہ نہیں ہے ۔ غرض کہ ہاری تحقیق یہ ہے کہ متعہ کا طریقہ اسلام نے پیدا نہیں کیا بلکہ وہ قدیم سے جاری تھا۔ اسلام نے

اس کو منع کیا گو که ابتدائے زمانه اسلام میں بھی جاری رہا ہو۔ بہت سے رواج زمانه ابتدائی اسلام میں رائج تھے بعد کو ممنوع ہوئے متعه بھی اس میں سے ہے۔

تعدد ازواج کا مسئله

لکاح در حقیقت دو شخصوں میں ایک معاهدہ هے مثل دیگر معاهدوں کے ۔ مگر یه ایک ایسا معاهدہ هے که اس کے مثل کوئی دوسرا معاهدہ نہیں هے اور ایک ایسا معاهدہ هے جو فطرت انسانی کا متنضی هے اور اس سے بالتخصیص ایسے احکام بمقتضائے فطرت انسانی متعلق هیں ۔ جو دوسرے کسی معاهدہ سے متعلق نہیں هیں اور وہ احکام ایک نوع کے مذهبی احکام هو دی اس لیے نکاح عام معاهدوں سے خاص هو کر ایک مذهبی معاهدہ میں داخل هو گیا هے اور بلحاظ اس کی خصوصیات کے ٹھیک ٹھیک ایسا هی هونا لازم تھا ۔

عورت به نسبت مرد کے اس معاهدہ کے نتائج کے لیے محل ہے اس لیے وہ مجاز نہیں ہو سکتی کہ ایک سے معاهدہ کرنے کے بعد اور آس معاهدہ کے فسخ ہونے کے قبل دوسرے سے معاهدہ کرے اسی وجہ سے اسلام نے بمقتضائے فطرت انسانی عورت کو ایدک وقت میں تعداد ازواج کی اجازت نہیں دی ۔ مگر مرد کی حالت آس کے برخلاف ہے اور علاوہ اس کے مرد کے ساتھ اور اقسام کے ایسے تمدنی امور متعلق نہیں جو عموماً عورت سے متعلق نہیں ہیں ۔ اس کو بھی کے وہ عدم جواز مرد سے بعینہ متعلق نہیں ہو سکتا تھا بس مرد کے ساتھ اور اواج سے روکے مجاز رکھنا بمقتضائے فطرت نہایت مناسب تھا تعداد ازواج سے روکے مجاز رکھنا بمقتضائے فطرت نہایت مناسب تھا ان تمام دقائق کی رعایت مذهب اسلام نے اس عمدگی سے کی ہے جس سے یقین ہوتا ہے کہ بلاشبہ وہ بانئے فطرت کی طرف سے ہے۔

مگر افسوس ہے کہ مسلمانہوں نے اس کہ نہایت بری طرح پر استعال کیا ہے ۔

فطرت اصلی جب که اس میں کوئی اور عوارض داخل نه هوں تو آس کا مقتضلی یہ هے کہ مرد کے لیے ایک هی عورت هونی چاهیے ۔ مگر مرد کو جسے اسور تمدن سے به نسبت عورت کے زیادہ تر تعلق هے ایسے اسور پیش آتے هیں جن سے بعض اوقات آس کو اس اصلی قانون سے عدول کرنا پڑتا هے اور حقیقت میں وہ عدول نہیں ہوتا ۔ بلکه دوسرا قاعدہ قانون فطرت کا اختیار کرنا هوتا هے ۔ اگر یه قاعدہ قرار پاتا که جب تک ایک عورت سے قطع تعلق نه هو جائے تو دوسری عورت ممنوع رهے تو آس میں ان عورات پر اکثر حالت میں نہایت بے رحمی کا برتاؤ جائز رکھا جاتا اور اگر آس قطع تعلق کو آس کی صورتوں میں منہیات پر رغبت قطع تعلق کو آس کی صورتوں میں منہیات پر رغبت پر سنحصر رکھا جاتا تو مرد کو بعض صورتوں میں منہیات پر رغبت دلانی هوتی اور بعض صورتوں میں آس کی ضرورت تمدن کو روکنا دلانی هوتی اور بعض صورتوں میں آس کی ضرورت تمدن کو روکنا فطرت انسانی کے مطابق عمدہ فوائد پر مبنی تھا۔

اگر ایک عورت ایسے امراض میں مبتلا هـو جاوے کـه اس کی حالت قابل رحم هو مگر معاشرت کے قابل نه رهے ـ کوئی عورت عقیمه هو جس کے سبب مرد کی خواهش اولاد پوری نه هو سکـتی هو (اور جو ایک ایسا امر هے که انبیا بهی اُس کی تمنا سے خالی نه تھے) ـ تو کیا یه مناسب هو اُل که ایک بے رحانه طریقه اُس سے قطع تعلق کا اختیار کئے بغیر دوسری عورت جائز نه هو یـا اُس کی موت کے انتظار میں مرد کو اُن امیدوں کے حاصل کـرنے سیں جو بلحاظ تمدن اس کے لیے ضروری هیں روکا جاوے ـ یه ایسے امور هیں بلحاظ تمدن اس کے لیے ضروری هیں روکا جاوے ـ یه ایسے امور هیں که بمقتضائے فطرت انسانی رک نہیں سکتے اور جب روکے جاتے هیں

تو اس سے زیادہ خرابیوں میں مبتلا کرتے ہیں ـ

ھاں تعدد ازواج کے جائز رکھنر کے ساتھ اس بات کی روک ضرور تھی کہ سوائے حالت ضرورت کے که وہ بھی مقتضائے فطرت انسانی ھو اس جواز کو خواھش نفسانی کے پورا کرنے کا ذریعہ نه بنایا جائے (جیسا کہ مسلمانوں نے بنایا ہے) ۔ پس اسلام نے نہایت خوبی اور بے انتہا عمدگی سے اس روک کو قائم کیا ہے جہاں فرمايًا هي كه " فان خفتم الا تعدلوا فواهدة " يعني اكر تم کو ڈر ہو کہ عدل نہ کر سکو گے تو پھر ایک ہی جورو چاہیے لفظ '' ان خفتم '' زیادہ تر غور کے لائق ہے کیوں کہ کوئی انسان ایسا نہیں ہے کہ حس کو کسی وقت اور حالت سس بھی خوف عدم عدل نه هو ـ پس قرآن كى رو سے تعداد ازواج كى اجازت اسی حالت میں یائی حاتی ہے جب که محل عدل مقتضائے فطرت انسانی باقی نه رهے ـ کیوں که صحیح طور سے اسی وقت عدم خوف عدل صادق آ سکتا ہے ۔ ایسی حالت میں بھی اسلام نے تعداد ازواج کے بلکہ نفس نکاح کو بھی لازم نہیں کیا کیونکہ اس مقام پر '' فــانـکــحــوا '' صيغه امر کا (جيسا که اور مفسر بــهـی تسلیم کرتے ہیں) وجوب کے لیے نہیں ہے بلکہ جواز کے لیے ہے۔ اس آيت مين جس لفظ پر محث هو سکتي هے وه لفظ '' عدل'' ھے ۔ علمائے اسلام نے عدل کو صرف اپنے میں باری باندھنے اور نان و ننقه دینے میں مخصوص کیا ہے اور میل قـلمی یعـنی محـبت و موانست میں اور اس امر میں جو خاص زوجیت سے متعلق ہے عدل کو متعلق نہیں کیا ۔ انھوں نے ایک حدیث سے اس کا استنباط کیا ھے جس کے لفظ یہ میں '' ان النہ بی صلی الله عملیه وسلم کان يقسم بين نسائه فيعدل و يقول اللهم هذا قسمي فيها اسلك فلا تلمني فيها تملك ولا اسلك " يعني

آن حضرت صلی الله علیه وسلم باری باندهتے تھے اپنی بیویدوں سیں اور عدل کرتے تھے اور فرساتے تھے که اے خدا یہ سیری تقسیم ہے جس میں میں مالک هوں پهر تو مجھ کو ملامت مت کر آس میں جس میں تو مالک ہے اور میں مالک نہیں هوں ۔ ترمذی نے لکھا ہے که بعض علماء نے بیان کیا ہے که ان اخیر لفظوں سے محبت و مودت مراد ہے اور لمعات میں اس امر کو بھی جو خاص زوجیت سے متعلق ہے آسی میں داخل کیا ہے ۔

مگر هم كو اس ميں كلام هے ـ اول تو اس حديث كى صحت قابل بحث هے اس حديث كے دو سلسلے هيں ايك حاد بن سلمه سے اور ايك حاد بن زيد اور اور لوگوں سے حاد بن سلمه نے اپنے سلسلے كو حضرت عائشه تك ملا ديا هے اور حاد بن زيد اور اور لوگوں نے صرف ابی قلابه تك چهوڑ ديا هے يعنى آن كى حديث مرسل هے ـ ترمذى نے پہلے سلسلے كو كافى اعتبار كے لائتى نهيں مسمجها اور كها كه دوسرا سلسله يعنى حاد بن زيد كا زياده صحيح همگر جب كه وه خود مرسل هے تو كافى اعتبار كے لائق نهيں هے ـ

دوسرے یه که الفاظ '' فیلا تبلمنی فیما تد ملک ولا اسلک '' سے کسی امر کی طرف کنایه هے اس کو میل قلبی یعنی محبت و موانست پر مخمصوص و متعین کر لیننے اور بالتخصیص اس امر سے بھی متلعق کر دینے کی جو خاص زوجیت سے متعلق ہے کوئی وجه نہیں ہے بلکه انبیاء علیهم السلام کی عظمت و شان اور ان کی نیک طینت و پاکیزگئے طبیعت کے بالکل برخلاف ہے ۔ کیا یه انبیاء کی شان سے ہے جو وہ یه کمیں که اے خدا جس پر میرا دل آ جاوے کی شان سے ہے جو وہ یه کمیں که اے خدا جس پر میرا دل آ جاوے تو اس میں تو مجھکو معاف کر یا جس کے ساتھ وہ امر نه کروں جو خاص زوجیت سے متعلق ہے تو 'تو مجھکو ملامت مت کر افسوس ہے خاص زوجیت سے متعلق ہے تو 'تو مجھکو ملامت مت کر افسوس ہے خاص زوجیت کو بھول جاتے

هیں اور اپنے نفوس پر قیاس کر کے وهی خفیف و نازببا باتیں جو آن کے نفوس میں هیں نفوس قدسیه انبیاء کی طرف منسوب کرتے هیں ۔ و شان الا انبیاء اعلیٰی و اجل و ارادع مما یظنون ۔

اگر اس حدیث کو واقعی تصور کر لیا جاوے اور اس کے الفاظ بھی وھی تسلیم کیے جاویں جو رسول خدا صلی الله علیه وسلم کی زبان مبارک سے نکلے تھے۔ جس کا یقیناً تسلیم کر لینا نہایت مشکل ھے تو ممکن ھے که ان الفاظ سے آن امور کی طرف اشارہ ھو جو قضا و قدر اللہی سے واقع ھوتے ھیں اور جن میں انسان کا کچھ اختیار نہیں ھے۔ مثلاً امراض میں سے کسی کہو کسی مرض کا لاحق ھو جانا ، یا ایک کا ذی ولد اور ایک کا لا ولد ھونا '' وغیر ذالک '' نه اُن امور کی طرف جو خواھش نفسانی سے علاقه رکھتے دالک '' نه اُن امور کی طرف جو خواھش نفسانی سے علاقه رکھتے ھیں کیوں کہ انبیاء کی قدر و منزلت کا ادنئی درجہ اُن کا خواھش نفسانی کے مطیع نه ھونے کو یقین کرنا ھے۔

تیسرے یہ کہ باری کی اور نان و نفقہ کی تقسیم میں مساوات جس کو ایک حریص علی الازواج کر سکتا ہے کوئی ایسا امر مشکل اور مبہم بالشان نہ تھا جس کی نسبت لفظ '' فان خففہ ہم'' استال ہوتا ۔ یہ لفظ خود اس بات پر دلالت کرتا ہے کہ اس سے کوئی ایسا امر عظم الشان مراد ہے جس کی بجا آوری بہ جز آن نفوس قدسیہ کے جو فی الحقیت نفسانی خواہشوں کے مطبع نہیں ہیں نفوس حالت میں جب کہ بمقتضائے فطرت انسانی محل عدل باق نہیں ہے اور کسی طرح پر نہیں ہو سکتی ۔

چوتھے یہ کہ ۔ عدل کے لفظ میں میل قلبی کو داخل نه سمجھنا ایک بڑی غلطی ہے ۔ بلکه جو تعلقات که باہم زن و شوھر کے هیں ان سیں میل قلبی سب سے مقدم امر ہے اور اس لیے لفظ عدل بدرجه اولئی اسی امر مقدم سے متعلق ہوتا ہے اور وہ

امر مقدم کسی طرح آس سے خارج نہیں رہ سکتا اور اس اسے حدیث سذکورہ بالا کے الفاظ '' لا تلمنی فیما تملک ولا املک '' سے میل قلمی کی طرف اشارہ سمجھنا سراسر غلطی ہے ۔

خود خدا تعالى نے موانست و محبت كو تعلقات زن و شوهر ميں امر مقدم قرار ديا هے جمال فرمايا هے كه "ومن آياته ان خلق لكم من انفسكم ازواجاً لتسكنوا اليها وجعل بينكم مودة و رحمة ان في ذالك لايات لقوم يتفكروں ـ (سورة روم)

یعنی اللہ کی نشانیوں میں سے ہے کہ تمھارے لیے تم ھی میں سے جوڑا یبداکیا تاکہ تم دلی میلان اس سے کرو اور تم دونوں میں محبت و پیار پیدا کیا ۔ پس جو امر کہ تعلقات زن و شوھر سے مخصوص ہے وہ کیوں کر عدل سے جو ایسے موقع پر بولا گیا خارج رہ سکتا ہے ۔ پانچویں یہ کہ جن کے پاس پہلے سے یعنی اس کے آنے کے قبل سے متعدد جوروئیں تھیں آن کی نسبت حکم بیان کرتے وقت خود خدا نے عدل کو میل قلی سے متعلق کیا ہے ۔

جہاں فرمایا ہے کہ '' ولن تستطیعوا ان تعدلو بین النساء و لو حرصتم فلا تمیلوا کل المیل '' (سورہ نساء) یعنی هرگز تم عدل نه کر سکو کے عورتوں میں اور گو که تم کو حرص هو پهر ست جهک پڑو (یعنی ایک پر) بالکل جهک پڑنا '' اس مقام پر فرمایا ہے که تم عدل نہیں کر سکنے کے '' اگر عدل سے صرف مساوات نان و نفقه و باری معین کرنے سے مراد هوتی تو یه بات ایسی نه تهی جس کی نسبت کہا جاتا که تم هرگز نه کر سکو کے ایسی نه تهی جس کی نسبت کہا جاتا که تم هرگز نه کر سکو گو که اس کے کرنے کی حرص بهی کرو اس کے بعد میل قلی کو ذکر فرمایا ہے جس سے صاف پایا جاتا ہے کہ عدل میل قلی کو

شامل تھا۔ ممکن ہے که حدیث مذکورہ بالا اس آیت سے متعلق ہو۔

غرض کہ قرآن مجید سے جو حکم پایا جاتا ہے وہ یہی ہے کہ ایک جورو ہونی چاہئے ۔ تعداد ازدواج کی اجازت آسی وقت ہے کہ جب بمقتضائے فطرت انسانی و ضروریات تمدنی کے عـقل و اخـلاق و تمدن اس کی اجازت دے اور خوف عدم عدل باقی نہ رہے ۔

مسئله طلاق

اسلام کے مخالفین نے ضد سے یا کج بحثی و ناسمجھی سے جو الزام اسلام پر لگائے ھیں آن میں سے طلاق کا بھی ایک مسئلہ ھے۔ یہودی تو یہ الزام لگانہیں سکتے کیوں کہ موسلی نے تو یہ حکم دیا ھے، کہ جب کوئی طلاق دینی چاھے تو طلاق نامه لکھ دے۔ بعض بت پرست قومیں جن کے ھاں طلاق نامه لکھ دے۔ بعض بن پرست قومیں جن کے ھاں طلاق میں ھے اور کسی قدر عیسائی جن کے ھاں بجز زنا کے اور کسی حالت میں طلاق جائز نہیں اس مسئلہ پر الزام دے سکتے ھیں۔ الزام کی بناء یہ ھے کہ یہ مسئلہ رحم و محبت و ھمدردی کے بر خلاف ھے۔ جان برٹن نے اس سے اختلاف کیا ھے اور نہایت عمدہ دلیلوں سے ثابت کیا ھے کہ جب شوھر و زوجہ میں ایسی نا موافقت ھو جائے جو تمدن و حسن معاشرت کے منافی ھو تو انجیل کے احکام کی رو سے طلاق ناجائز نہیں ھے۔

بہرحال اس وقت تین شریعیتیں طلاق کے معاملہ میں ھارے سامنے موجود ھیں: اول یہویوں کی جس میں بغیر کسی سبب قوی کے مرد کو طلاق دینا جائز قرار دیا گیا ہے اور ایسا کرنے میں کوئی گناہ یا الزام مرد پر عائد نہیں کیا گیا ۔ بلاشبہ یہ شریعت ایک نا پسندیدہ شریعت ہے اور رحم و محبت اور حسن معاشرت و تمدن کے برخلاف ہے ۔ ایسی شریعت سے نکاح کی وقعت گھٹ جاتی ہے اور مرد کی محبت کا عورت کے ساتھ اور عورت کی وفاداری کا مرد کے ساتھ اعتبار نہیں رھتا ؛ دوم بت پرستوں اور حال کے زبانہ کے عیسائیوں کی جن میں طلاق جائز نہیں یا بجز زنا کے اور زبانہ کے عیسائیوں کی جن میں طلاق جائز نہیں یا بجز زنا کے اور

کسی حالت میں جائز نہیں ۔ اس شریعت میں اس مقدس رسم کا بلاشبه نهایت ادب کیا گیا هے مگر جس طرح که یهودی شریعت میں افراط تھی اس شریعت میں تفریط ہے اور دونوں فطرت انسانی کے برخلاف ہیں۔ اگر کسی سبب و حالت سے ایسی خرابیاں مرد و عورت میں پیدا ہو جاویں جو کسی طرح اصلاح کے قابل نه هوں تو ان کا بھی کچھ علاج هونا چاهیے اور وہ علاج طلاق ہے۔ پس کچھ شک نہیں کہ ایسی حالت میں بھی طلاق کا جائز نہ ہونا حسن معاشرت اور انسانی فطرت کے برخلاف ہے ـ تیسری شریعت محدیده هے جس کا ذکر قرآن شریف کی ستعدد آیتوں میں اور آنچضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی نصیحتوں اور ہدایتوں میں هے اس شریعت حقه نے اس خوبی اور اس اعتدال سے اس مسئله کو قرار دیا ہے جس سے زیاد، عمدہ نہیں ہو سکتا اور نہ اس سے زیادہ تمدن اور حسن معاشرت کی حفاظت انسانی فطرت کے مطابق ہو سکتی ہے ، شریعت محدیہ نے طلاق کو ایسی حالت میں جائز قرار دیا هے جب که زن و شوهر سی مرض نا موافقت و عدم محبت کا ایسے درجه پر پہنچ جاوے جو علاج کے قابل نه هو یا یوں کہو کہ بجز طلاق کے دوسرا کوئی علاج اس کا نہ ہو مگر زن و شوھر کا معاملہ ایک ایسا نازک اور ایک عجیب قدم کے ارتباط و اختلاط کا ہے کہ اس میں جو خرابی پیدا ہو سوائے انھی دونوں کے اور کوئی تیسرا شخص اس بات کا اندازہ نہیں کر سکتا کہ آیا وہ اس حد تک پہنچ گئی ہے جس کا علاج بجز طلاق کے اور کچھ نہیں اس لیے اس شریعت حقہ کے بانی نے اس حد کی تعین انھی کی رائے اور انھی کی طبیعت پر منحصر کی ہے اور اسی کے اخلاق کو اُس کا قاضی بنایا ہے جس کی تسلی و موانست کے لیے ابتدا میں عورت بطور انیس دلنواز و مونس و غمگسار کے پیدا هوئی تھی اور اس بات کا کہ وہ علاج بے محل و بے موقع بد اخلاق اور بد خواهش نفسانی سے نه کیا جاوے جہاں تک که انسانی فطرت کر مناسب حال تھا۔ انسداد کیا ھے۔ مردوں کو فہائش کی ہےکہ ہمیشہ عورتوں کے ساتھ محبت رکھیں اور ان کے ساتھ مہربانی سے پیش آئیں۔ اُن کی سختی و بد مزاجی کو تحمل سے برداشت کریں ۔ عورتوں کو فہائش کی که اپنے مردوں کی تابعداری کریں ۔ ان کے ساتھ محبت رکھیں ، آن کی وفادار ھوں ، یھ, طلاق کی نسبت فرمایا کہ گو طلاق جائز کی گئی ہے سگر کوئی چیز زمین کے پردہ پر طلاق سے زیادہ خدا کو غصہ دلانے والی پیدا نہیں ھوئی ۔ عورت کی نسبت فرمایا کہ جو عورت بغیر لاعلاج ضرورت کے اور بغیر سخت حالت کے اپنر شوھر سے طلاق کی خواہاں ہو اُس پر جنت کی خوشبو حرام ہے۔ ہارے پیغمہر صلی اللہ علیه وسلم طلاق سے ایسر ناراض ہوتے تھر کہ بعض دفعہ صحابه کو شبہ ہوا کہ طلاق دینے والے نے ایسا جرم کیا ہے کہ قتل کرنے کے قابل ہے پھر ان ہدایتوں اور تہدیدوں ہی پر طلاق کے روکنر میں بس نہیں کیا۔ بلکہ نکاح اور ملاپ کے قائم رکھنر کی اور بھی تدبیریں فرسائیں ۔ یعنی پاوری تفریق واقع هونے کو تین دفعه طلاق دینا معتبر رکھا ہے اور یہ اجازت دی که پہلی طلاق کے بعد اگر آپس میں صلح ہو جاوے اور رنجش سٹ جاوے اور دونوں کی محبت تازہ ہو جاوے تو پھر بدستور جورو خصم رهیں ۔ دوسری طلاق کے بعد بھی اس طرح وہ آپس سیں بدستور جورو خصم ہو سکتے ہیں۔ لیکن اگر پھر تیسری دفعه طلاق دی حاومے تو ثابت هو گیا که په بیل منڈھے چڑھنے والی نہیں ہے۔ ہتر ہے کہ پوری تفریق ھو جاوے ایسی حالت میں که عورت کو مرد سے کنارہ کش رهنا پڑتا ہے طلاق

دینے کو منع فرمایا اس امید پر که شاید زمانه مقاربت میں محبت و الفت کی ایسی تحریک هو که خیال طلاق کا دل سے جاتا رہے پس یه تمام احکام نہایت خوبی و عمدگی و اعتدال سے فطرت انسانی کے مطابق هیں ۔ خدا نے آن احکام کی نسبت فرمایا هے که یه الله تعالیٰ کی بنائی هوئی حدیں هیں ان کو توڑنا نہیں چاهیے هر شخص سمجھ سکتا هے که یه حدیں کچھ دیوارین یا خندقیں نہیں هیں بلکه یه حدیں فطرت انسانی کی حدیں هیں جن کو توڑنا انسانیت کی حد سے خارج هونا هے ۔ پس جو لوگ مسئله طلاق پر معترض هیں جب وہ اس کو بخوبی سمجھیں گے اور فطرت انسانی ہر غور کریں گے تو بالیتین جانیں گے که بلاشبه یه حکم آسی کا حکم هے خس نے فطرت انسانی کو بنایا هے ۔

جهاد کا قرآنی فلسفه

(و قاتلوا فی سبیل الله) اس آیت میں اور جو آیتیں که اس کے بعد هیں ان میں کافروں یا دشمنوں سے لڑنے کا حکم هے ۔ مگر صاف بیان کیا گیا هے که جو تم سے لڑیں ان سے لڑو اور زیادتی مت کرو ۔

اکثر لوگ مذھب اسلام پر طعنہ دیتے ھیں کہ اس میں تحمل اور برد باری اور عاجزی اور مذھب کے سبب سے جو تکلیفیں کافروں کی طرف سے پہنچیں ان کی صبر سے برداشت نہیں ہے اور یہ باتیں مذھب کی سچائی اور نیکی اور اخلاق اور خدا کی راہ میں تکالیف برداشت کرنے کے برخلاف ھیں ۔

مگر یه ایک بڑی غلطی اور نا سمجھی ہے۔ اس میں کچھ شک نہیں کہ قرآن محید میں جو احکام لڑائی کے نہایت نیکی اور انصاف پر مبنی تھے آن کو مسلمانوں نے جو خلیفوں یا بادشاھوں کے نام سے مشہور ہوئے دین داری کے بہانے سے اپنی خواہش نفسانی کے پورا کرنے اور ملک گیری کے لیے نہایت بد اخلاق اور نا انصافی سے برتا اور وحشی درندوں سے بھی بد تر کام کیے اور علمائے اسلام نے ان کی تائید کے لیے ایسے مسئلے بیان کیے جو اسلام کی روحانی نیکی کے برخلاف تھے۔ مگر ان کے ایسا کرنے سے جو برائی با عیب قرار دیا جاوے وہ انھی پر محدود ہے جنھوں نے ایسا کیا نہ اسلام پر۔ ہر ایک منصف مزاج کا اور ہر ایک معترض اور نکتہ چس کا یہ قرض ہے کہ آن ظالموں کے کردار کو انھی نکتہ چس کا یہ قرض ہے کہ آن ظالموں کے کردار کو انھی

پر محدود رکھے نہ یہ کہ آن کے کردار سے سذھب اسلام پر نکتہ چینی کرمے ۔

مذهب اسلام میں اگرچه جا بجا عفو و صبر و تحمل کی خوبیاں بیان کی گئی هیں اور لوگوں کو اس پر رغبت دلائی گئی هے ۔ مگر اسی کے ساتھ بدلا لینے کی بھی بغیر زیادتی کے اجازت دی هے کیا یہ قانون دنیا کے پیدا کرنے والے کے قانون قدرت کے مناسب نہیں هے اور کیا اس قانون سے زیادہ عمدہ اور سچا کوئی قانون هو سکتا هے انسان جب اخلاق کی باتوں پر گفتگو کرتا هے تو بہت سی ایسی باتیں اور ایسے اصول بیان کرتا هے جو کان کو اور دل کو نہیں باتیں اور ایسے اصول بیان کرتا هے جو کان کو اور دل کو نہیں کہ یہی اصول اخلاق کے اور یہی اصول اعلی درجه کی نیکی کے هیں ۔ مگر در حقیقت وہ هوا کی آواز سے زیادہ کچھ رتبہ نہیں رکھتے هیں ۔ مگر در حقیقت وہ هوا کی آواز سے زیادہ کچھ رتبہ نہیں رکھتے اور جو کہ وہ اصول فطرت انسانی کے بلکہ قانون قدرت کے برخلاف هوتے هیں کبھی ان پر عملدرآمد نہیں هـو سکتا ۔ ایسا قانون بنانے سے جس پر کبھی عملدرآمد نہ هو سکے کوئی نتیجه اور فائدہ مترتب نہیں هوتا ۔ بلکہ دل میں اُس قانون کی حقارت بیٹھتی هے مترتب نہیں هوتا ۔ بلکہ دل میں اُس قانون کی حقارت بیٹھتی هے مترتب نہیں هوتا ۔ بلکہ دل میں اُس قانون کی حقارت بیٹھتی هے کہ وہ قانون قدرت کے برخلاف هے ۔

کوئی کتاب دنیا میں انجیل سے زیادہ انسان کو نرم مزاج اور برد بار اور متحمل کرنے والی اور اخلاق کو ایسی چمک سے دکھلانے جس سے آنکھوں میں چکا چوند آ جاوے نہیں ہے۔ گو اس کے مقولے ایسے نہیں ہیں کہ سب سے پہلے اسی میں بیان کیے گئے ہوں۔ بلکہ بہت سے ایسے ہیں جو اس سے پہلے لوگوں نے بھی جن کے پیرو اب بت پرست اور کافر گنے جاتے ہیں بیان کیے هیں۔ مگر هم کو دیکھنا چاھیے کہ ان کا لوگوں میں کیا اثر ہوا تھا۔ مگر هم کو دیکھنا چاھیے کہ اگر کوئی تیرے ایک گال پر طانچہ

مارے تو دوسرا کال بھی اس کے سامنر کر دے ۔ بلا شبہ یہ مسئلہ اخلاق کے خیال سے تو بڑا عمدہ معلوم ہوتا ہے مگر کیا کسی زمانه کے لوگوں نے اس پر عمل کیا ہے ۔ اگر دنیا اس پر عمل کرے تو دنیا کا کیا حال ہو۔ اسی طرح آباد رہے اور اسی طرح لوگوں کی جان و مال امن میں رہے ۔ نہایت دل چسپ حواب دیا جانا ہے کہ جب سب ایسے ہی ہو جائیں تو دنیا سے شر آٹھ جائے۔ سگر پوچھا جاتا هے که کبھی ایسا هوا هے یا کبھی ایسا هو ٔ ۵ - یه سب ناشدنی باتس مس جو خیال مس شدنی قرار دے کر انسانی خیالی اور حهوٹی خوشی حاصل کرتا ہے۔ انجیل سی لکھا ہے کہ '' تو اپنر کل کے کھانے کی فکر ست کر خدا کل کی روزی ہنچانے کی فکر كرنے والا هے''۔ دلكو يه مقوله نهايت هي پيارا اور آس پيارے خدا یر اعتاد لانے والا معلوم هوتا هے ـ مگرکبهی کسی نے اس پر عمل کیا ہے ؟ یا آئندہ کبھی اس پر عمل ہوگا اگر ہم اس ناشدنی امر کو ایک لمحہ کے لیر شدنی تصور کرکے تمام دنیا کے لو کوں کو اسی مقوله پر عمل کرتا هوا سمجه لین ، تو دنیا کا کیا حال هوگا ـ پس اس قسم کی تمام باتس انسان کو دھوکا دینر والی ھی اور قانون قدرت کے برخلاف ہونے سے خود اپنی سچائی کو مشتبه کرتی هیں۔

عیسائی مذهب جس کی جڑ ایسی نیکی اور نرمی اور اخلاق میں لگائی گئی تھی وہ پھولا پھلا اور سرسبز و شاداب هوا۔ اس کو چھوڑ دو که وہ کس سبب سے بڑھا اور سرسبز هوا۔ مگر دیکھو که اس نے کیا پھل پیدا کیا۔ ایک بھی نصیحت اس کی کام نه آئی اور خود مذهب نے خون ریزی اور بے رحمی اور نا انصافی اور درندوں سے بھی زیادہ بد تر خصلت دکھلائی۔ وہ شاید دنیا میں بے مثل هوگی اور جس نیکی میں اس کی جڑ لگائی گئی تھی اس نے

کچھ پھل نہیں دیا کیوں کہ قانون قدرت کے بر خلاف لگائی گئی تھی ۔ جو خوبی کیا روحانی کیا اخلاق اور کیا تمدنی اب ھم بعض عیسائی ملکوں میں دیکھتے ھیں ۔ کیا یہ پھل آسی درخت کا ھے جس کی جڑ ایسی نیکی میں لگائی گئی تھی جو خلاف قانون قدرت تھی ؟ حاشا و کلا ۔ بلکہ یہ اس کا پھل ھےکہ اس درخت کو وھاں سے اکھاڑ کر دوسری زمین پر نگایا ھے جو قانون قدرت کی زمین ھے اسی اور جس قدر کہ پہلی زمین کی سٹی اس کی جڑ میں لگی ھوئی ھے آسی قدر آس میں نقصان ھے ۔

اس سے بھی زیادہ رحم مذھب کا حال سنو جس نے ایک چھوٹے سے چھوٹے جانور کی جان کہو بھی مارنا سخت گناہ قرار دیا ہے۔ خون کا مهانا آدمی کا هو یا درندے یا ایک پشه کا۔ خدا کی صنعت کو ضائع کرنا سمجھا ہے۔ مگر تاریخ اور زمانہ موجود ھے ۔ اس اصول نے جو قانون قدرت کے مخالف تھا کیا نتیجہ دیا ۔ قتل و خون ریزی ویسی هی رهی اور ویسی هی هے جیسی قانون قدرت سے ہونی چاہیے ۔ وہی جو ایک پشہ کا مارنا گناہ عظیم سمجهتر تھر ۔ ہزاروں آدسیوں کو اپنر ہاتھ سے قتل کرتے تھر اور قتل کرتے ھیں ۔ پس کوئی قانون گو وہ ظاہر ، س کیسا ھی چمکیلا اور خوش آئندہ هو جب که قانون قدرت کے برخلاف هے محض نکا اور ہے اثر ہے ۔ اسلام میں جو خوبی ہے وہ یہی ہے کہ اس کے تمام قانون قانون قدرت کے مطابق اور عمل درآمد کے لائق هس ـ رحم كى جگه جمهال تك كه قانون قدرت اجازت ديتا <u>هے</u> رحم هے ۔ معافی کی جگه اسی کے اصول پر معافی هے بدار کی جگه اسی کے مطابق بدلا ہے۔ لڑائی کی جگه اسی کے اصولوں پر لڑائی ہے ۔ ملاپ کی جگہ اسی کی بناء پر ملاپ ہے اور یہی بڑی دلیل اس کی سچائی کی اور قانون قدرت کے بنانے والر کی طرف سے

ہونے کی ہے۔

اسلام فساد اور دغا اور غدر و بغاوت کی احازت نہیں دیتا ۔ حس نے ان کو امن دیا ہو ۔ مسلمان ہو یا کافر اس کی اطاعت اور احسان سندی کی ہدایت کرتا ہے ۔ کافروں کے ساتھ جو عہد و اقرار ھوئے ھوں آن کو نہایت ا ہمان داری سے پورا کرنے کی تاکید کرتا ہے ۔ خود کسی پر ملک گیری اور فتوحات حاصل کرنے کو فوج کشی اور خون ریزی کی اجازت نہیں دیتا ۔ کسی قوم یا ملک کو اس غرض سے کہ اس میں بالجبر اسلام پھیلایا حاومے حمله کرکے مغلوب و محبور کرنا پسند نہیں کرتا۔ ہاں تک کہ کسی ایک شخص کو بھی اسلام قبول کرنے پر محبور کرنا نہیں چاھتا صرف دو صورتوں سی اس نے تلوار پکڑنے کی احازت دی ھے۔ ایک اس حالت میں جب کہ کافر اسلام کی عداوت سے اور اسلام کے معدوم کرنے کی غرض سے ۔ نہ کسی ملکی اغراض سے مسلمانوں پر حمله آور هوں ۔ کیوں که ملکی اغراض سے جو لڑائیاں واقع هوں خواه مسلمان مسلمانون مین خواه مسلمان و کافرون مین وه دنیاوی بات ھے مذھب سے کچھ تعلق نہیں ھے دوسر مے جب کہ اس ملک یا قوم میں مسلمانوں کو اس وجہ سے که وہ مسلمان هیں ان کے جان و مال کو اس نه سلے اور فرائض مذھبی کے ادا کرنے کی اجازت نه هو ۔ مگر اس حالت میں بھی اسلام نے کیا عمدہ طریقه ا بمان داری کا بتایا ہے کہ حو لوگ اس ملک میں جہاں بطور رعیت کے رہتر ہوں ۔ یا امن کا علانیہ یا ضمناً اقرار کیا ہو اور گو صرف ہوجہ اسلام آن پر ظلم هوتا هو تو بھی ان کو تلوار پکڑنے کی اجازت نہیں دی ۔ یا اس ظلم کو سم س یا هجرت کریں ۔ یعنی اس ملک کو چھوڑ کر چلر جاویں ہاں جو لوگ خود مختار ہیں اور اس ملک میں اس لیر ہوئے یا بطور رعیت کے نہیں ہیں بلکہ

دوسرے ملک کے باشندے ہیں۔ ان کو ان مظلوم مسلمانوں کے بھانے کو جن پر صرف اسلام کی وجہ سے ظلم ہوتا ہے یا ان کے لیے امن اور ان کے لیے ادائے فرض مذہبی کی آزادی حاصل کرنے کو تلوار پکڑنے کی اجازت دی ہے۔ لیکن جس وقت کوئی ملکی یا دنیوی غرض اس لڑائی کا باعث ہو اس کو مذہب اسلام کی طرف نسبت کرنے کی کسی طرح اسلام اجازت نہیں دیتا۔

یمی بات ہے جس پر اسلام نے تلوار پکڑنے کی اجازت دی ہے یمی لڑائی ہے جس کے کرنے کی ترغیب دی ہے ۔ یمی لڑائی ہے جس کا نام جہاد رکھا ہے ۔ یمی لڑائی ہے جس کے بقولوں کو روحانی ثواب کا وعدہ دیا ہے ۔ یمی لڑائی ہے جس کے لڑنے والوں کی فضیلتیں ایان ہوئی ہیں ۔ کون کہہ سکتا ہے کہ اس قسم کی لڑائی نا انصانی اور زیادتی ہے ؟ کون کہہ سکتا ہے کہ یہ لڑائی اخلاق کے برخلاف ہے ، کون کہہ سکتا ہے کہ اس لڑائی کا حکم فطرت کے مخالف ہے ۔ کون کہہ سکتا ہے کہ اس لڑائی کا حکم خدا کی مرضی کے برخلاف ہے کون کہہ سکتا ہے کہ اس لڑائی کا حکم سی سی بھی لڑائی کا حکم نہ ہونا بلکہ دوسرا گل پھیر دینا خدا کی مرضی کے مطابق ہوگا ۔

لڑائی شروع ہونے کے بعد تلوار ہر ایک کی دوست ہوتی ہے۔
اس میں بجز اس کے کہ دشمنوں کو قتل کرو ، لڑائی میں بہادری کرو ء
دل کو مضبوط رکھو میدان میں ثابت قدم رھو ۔ فتح کرو یا مارے
جاؤ اور کچھ نہیں کہا جاتا ہی قرآن نے بھی کہا ہے ۔ یہ دوسری
بات ہے کہ کوئی شخص اس موقع اور محل کو جس کی نسبت قرآن
میں لڑنے والوں کے دلوں کو مضبوط کرنے کی آیتیں نازل ہوئی
ہیں چھوڑ کر ان آیتوں کو عموماً خون خواری اور خون ریزی پر
منسوب کرے ۔ جیسا کہ آکثر نادان عیسائیوں نے کیا ہے تو یہ

خود اس کا قصور هوگا نه اسلام کا ـ

لڑائی میں بھی جو رحم قانون قدرت کے موافق ضرور ہے اسلام نے آس میں بھی فرو گذاشت نہیںکیا عورتوں کو، مچوں کو، بوڑھوں کو جو لڑائی میں شریک نہ ھوئے ھوں ان کو قتل کرنے کی ممانعت کی ۔ عین لڑائی میں اور صف جنگ میں جو مغلوب ہو جاوے اس کے قتل کی اجازت نہیں دی ۔ صلح کو معاهدہ اس کو ، قبول کرنے کی رغبت دلائی ۔ باغ کو ، کھیتوں کو جلانے کی ممانعت کی قیدیوں کو احسان رکہ کریا فدیہ لر کر چھوڑ دینر کا حکم دیا ۔ نہایت ظالمانه طریقه جو لڑائی کے قیدیوں کو عورت هوں یا مرد غلام اور لونڈی بنا لینر کا تھا اس کو معدوم کیا ۔ اس سے زیادہ لڑائی کی حالت میں انصاف اور رحم کیا ہو سکتا ہے ہاں یہ سے ہے کہ مسلمانوں نے اس میں سے کسی کی بھی پوری تعمیل نہیں گی۔ بلکہ برخلاف اس کے بے انتہا ظلم و ستم کیے ۔ مگر جب کہ وہ اسلام کے حکم کے برخلاف تھے تو اسلام کو اُس سے داغ نہیں لگ سکتا ـ وہ بھی تو مسلمانوں ہی میں سے تھے جنھوں نے عمر^{رز} کو ، عثمان ^{ردز} کو ، علی ^{ردز} کو ، حسین ^{روز} کو ذبح کر ڈالا تھا ۔کعبہ کو جلایا تھا۔ پس آن کے کردار سے اسلام کو کیا تعلق ہے۔

مشرکین مکہ نے ان لوگوں پر جو مسلمان ہو گئے تھے صرف اسلام کی عداوت سے اور خود رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم پر بہت سے ظلم کیے تھے اور تکایفیں پہنچائی تھیں قتل کے دربے تھے۔ یہاں تک کہ ایک دفعہ مسلمانوں نے حبشہ میں جا کر بناہ لی اور آخرکار آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم اور سب مسلمان مکہ کو چھوڑ کر مدینہ چلے آئے پھر انھوں نے وہاں بھی تعاقب کرنا چاھا اور مکہ میں حج کے آنے سے روکا لڑائی پر آمادہ ھوئے۔ تب اسلام نے بھی آن سے لڑنے کا حکم دیا۔ پس جس قدر احکام قتل اسلام نے بھی آن سے لڑنے کا حکم دیا۔ پس جس قدر احکام قتل

مشرکین کے هیں وہ سب آنهی لڑنے والرں سے متعلق هیں وہ بھی آسی وقت تک کہ فتنہ و فساد رفع هو جاوے جیسے خود خدا نے فرمایا کہ ''و قاتلہ وا هم حتی لا تکون فیتنہ و یہکون الدین تھ '' امام فخر الدین رازی نے تفسیر کبیر میں لکھا ہے کہ مشرکین کا فتنہ یہ تھا کہ وہ مکہ میں مسلمانوں کو مارتے تھے اور ایذا دیتے تھے ۔ تنگ هو کر مسلمان حبشہ کو چلے گئے ۔ پھر بھی وہ برابر ایذا اور تکلیف دیتے رہے ۔ یہاں تک مسلمان مدینہ میں هجرت کر گئے اور مشرکین کی غرض ایذاؤں اور تکلیفوں سے یہ تھی کہ مسلمان اپنا اسلم چھوڑ کر پھر کافر ھو جاویں ۔ اس پر یہ آیت نازل ھوئی اور اس کے معنی یہ هیں کہ کافرورں سے ناؤہ جب تک کہ ان پر غالب هو جاؤ ۔ تاکہ وہ تم کو تمہارے دین سے پھیرنے کے لیے ایذا نہ هو جاؤ ۔ تاکہ وہ تم کو تمہارے دین سے پھیرنے کے لیے ایذا نہ دے سکس اور تم شرک میں نہ پڑو ۔

'' یکون الدین شد ''کا فقرہ بھی انھی آیتوں کے ساتھ ہے جو مشرکین عرب کے حملہ کے رفع کرنے کو لڑنے کی بابت نازل ہوئی ھیں ۔ اس کے یہ معنی سمجھنے کہ اتنا لڑنا چاھیے کہ اسلام کے سوا کوئی دین نہ رہے یہ تو محض نادانی کی بات ہے جو سلف سے آج تک نہ کبھی ھوئی نہ ھونے کی توقع ھو سکتی ہے ۔ اس کے معنی صاف صاف یہ ھیں کہ اس قدر لڑنا چاھیے کہ اللہ کے دین کے بجا لانے سیں جو کافر حرج ڈالتے ھیں وہ نہ رہے اور اللہ کے لیے دین ہو جاوے کہ مسلمان خدا کے لیے اس کے دین کے دین ہو جاوے کہ مسلمان خدا کے لیے اس کو بے ایذا کے دین ہو جاوے کہ مسلمان خدا کے لیے اس کو بے ایذا کے حیا لا سکس ۔

نفخ صوركى حقيقت

یه مضمون قرآن مجید میں بہت جگه به تبدل الفاظ آیا ہے۔
سورہ انعام میں ہے '' یوم بنفخ فی الصور '' (سے) سورۂ کہف
میں ہے '' و نیفخ فی الصور و فیجمعنا ہم جمعا'' (مم)
سورۂ طه میں ہے '' یوم ینفخ فی الصور و نیحشر المحجر میں
یوسئند رزقا '' (س. ۱) سورۂ مومنون میں ہے ''یوم ینفخ فی الصور
قفزع من فی السموات و من فی الارض '' (م) سورۂ یاسن میں ہے
'' و نیفخ فی الصور فاذا ہم سن الاجداث اللی ربہم
ینسلون '' (۵۱) سورۂ زمر میں ہے '' و نیفخ فیالصور فیصعی
من فی السموات و سن فی الارض'' (م) سورۂ ق میں ہے '' و نیفخ
فی الصور ذالک یوم الوعید '' (م) سورۂ قامی ہیں ہے

'' فاذا نیفخ فی الصور نیفخه واحدۃ '' (م) سورۂ نباء میں ہے
'' فاذا نیفخ فی الصور فیاتون افواجا'' (م) سورۂ مدثر میں ہے
'' فاذا نیفخ فی الناقور فیذالک یومیئذ یوم عسر '' (م) ۔

اس میں کچھ شک نہیں کہ تمام آیتیں قیاست کے حال سے متعلق ہے اور ان میں اس دن کا ذکر ہے جب کہ تمام دنیا اللہ پلٹ اور درهم برهم هو جائے گی مگر ابوعبیدہ کا قول ہے کہ صور جمع صورة کی ہے اور اس سے مراد مردوں میں روح پہونکنے سے ہے اگر اس رائے کو تسلم کیا جاوے تو ان آیتوں میں سے اکثر جگہ صور کے لفظ کے متعارف معنوں کے لینے کی ضرورت باقی نہیں رهتی مگر هم تسلم کرتے هیں کہ ان سب آیتوں میں صور کے لفظ سے وهی آله مراد ہے جس کو بھونپو ، نرسنگھا ، سنکھ ، ترئی ، قرنا ،

ترم ، بگل ، کہتے ہیں اور جس میں پھونکنے سے نہایت سخت و ِ شدید آواز نکلتی ہے ـ

تاریخ کے مطالعہ سے معلوم ہوتا ہے کہ نہایت قدیم زمانہ میں،
یعنی حضرت موسلی کے وقت سے بھی پیش تر لڑائی کے لیے لوگوں
کو جمع کرنے کو آگ جلانے کا رواج تھا ۔ پہاڑوں پر اور اونچے
مقامات پر آگ جلاتے تھے اور گویا وہ پیغام تھا کہ سب آکر
جمع ہو گویا وہ علامت حشر لشکر کی تھی اب بھی بعض بعض
ہاڑی قوموں میں یہ رسم پائی جاتی ہے۔

لڑائی کے میدان میں غولوں کے کسی خاص طرف جمع ھونے با حملہ کرنے کے لیے محشور کرنے کا حکم پہنچانے میں دقت پڑتی ھوگی ۔ معلوم ھوتا ھے کہ مصریوں نے اس کام کے لیے مشعلوں کا جلانا اور مشعلوں کی روشنی کے ذریعہ سے لڑائی کے میدان میں غولوں کا حکم پہنچانا ایجاد کیا ۔

غالباً دن کو مشعلوں سے بخوبی کام نه نکاتا هوگ ۔ اس لیے ایک ایسی چیز کی تلاش کی ضرورث پیش آئی جس کی بہت بڑی آواز هو اور وہ آواز لڑائی کے سیدان میں حکم بھیجنے کا ذریعہ هو مصری هی اس کے موجد هوئے اور انھوں نے دریائی جانوروں کی عدی کے خول سے جس میں مشل گھونگے کے پیچ در پیچ هوتے تھے اور جس میں پھونکنے سے نہایت سخت و شدید آواز نکاتی تھی ۔ یہ کام لینا شروع کیا چنانچہ اب تک هندو اسی کا استعال کرتے هیں جو سنکھ کے نام سے مشہور ہے ۔

بنی اسرائیل جب مصر میں تھے تو آنھوں نے مصریوں سے اس کو اخذ کیا تھا اور جب وہ جنگل میں آوارہ و پریشان ھوئے اور ہاڑی اور جنگلی ملک میں دریائی جانوروں کے خول میسر نہ تھے انھوں نے صحرائی جانوروں خصوصاً مینڈھے یا دنبہ یا ہاڑی

بکرہ کے سینگوں سے جو ٹیڑھے اور پیچ دار ھوتے تھے اور جن میں پھونکنے سے ویسی ھی سخت شدید آواز نکاتی تھی یه کام لینا شروع کیا ۔ صور کے معنلی قرن یعنی سینگ کے ھیں ۔ بعد اس کے جب زمانے نے ترق کرنا شروع کیا تو اس کو اور اشیاء مثل چاندی ، پیتل اور تانبے وغیرہ سے اور نہایت عجیب و پیچدار طور سے بنانے لگے ۔

توریت سفر خروج باب دھم میں لکھا ہے کہ خدا تعالیٰی نے حضرت موسلٰی کو حکم دیا کہ تو اپنے لیے چاندی کے دو قرنا بنا جب تو ان دونوں کو بجاوے تو تمام لوگ خیمہ کے دروازہ پر جمع ھو جایا کریں اور جب ایک کو بجاوے تو بنی اسرائیل کے سردار تیرے پاس آ جایا کریں اور جب زور سے بجائی جاوے تو جن کے خیمے جانب مشرق ھوں وہ کوچ کرنا شروع کریں اور دو دفعہ زور سے بجائی جاوے تو جن کے خیمے جنوب کی جانب ھوں وہ کوچ کرنا شروع کریں اور جب سب کو ایک جگہ ٹھہرانا مقصود ھو تو دھیمی آواز سے بجایا جاوے ۔ اگر اپنے ملک میں مقصود ھو تو دھیمی آواز سے بجایا جاوے ۔ اگر اپنے ملک میں کو بہت زور سے بجاؤ اور خوشی کے دنوں میں اور عیدوں کے دن اور ھر مہینے کے شروع میں قربان گاھوں میں بجایا کرو اور ھارون کی اولاد اس کو بجایا کرے ۔

یرمیاه اور عهد عتیق کی اور کتابوں سے پایا جاتا ہے که شهروں اور سلکوں سے لڑائی کے لیے لوگوں کو جمع کرنے کو قرنا بجائی جاتی تھی چناں چه یرمیاه نبی کی کتاب میں لکھا ہے که 'علم را در زمیں برپا دارید کرنا را در میان طوائف بنوازید در برابرش اقوام را زبده نمائید و بر ضدش ممالک آرا راط و متی و اشکناز را آواز دھید و بر خلافش سرداراں را نصب نموده اسپ ها را مثل ملخ بر آورید '' (باب ۵۱ ورس ۲۷) ۔

اور ایک مقام میں لکھا ہے کہ ، در یہوداہ اخبار نمودہ و در اور شلیم مسموع گردانیدہ بگوئید کہ در زمین قرنا را بنوازید بآواز بلند ندا کردہ بگوئید کہ جمع آیند تا آنکہ در شہر ہائے مشید در آئیم '' باب م ورس ۵) ۔

یہودیوں نے اپنے خیال میں خدا تعالیٰی کے پاس بھی فرشتوں کی فوج کا ھونا اور اس میں درجہ بدرجہ سرداروں کا ھونا تسلیم کیا تھا اور اسی خیال سے فوج میں کام لینے کو فرشتوں کے پاس بھی صور یا قرنا کا ھونا خیال کیا اور صور پھونکنے والے فرشتے قرار دیے جن میں سب کا سردار اسرافیل فرشتہ ھے۔

عیسائیوں نے بھی اس خیال میں یہودیوں کی پیروی کی یوحنا حواری اپنے مشاہدات میں لکھتے ہیں کہ انھوں نے تیں فرشتوں کو ترئی پھونکنے پر متعین دیکھا ۔ (باب ۸ ورس ۱۳) ۔

ہودی اور عیسائی دونوں حشر اجساد کے اور سب مردوں کے ایک جگہ جمع ہونے کے قائل تھے اُس حشر اور اجتاع کے لیے اُسی خیال کے مطابق جس طرح وہ لوگوں کو جمع کیا کرتے تھے انھوں نے صور کا پھونکا جانا تصور کیا اشعیاہ نبی کی کتاب سے یہ خیال کہ قیاست کے شروع میں صور پھونکی جاوے گی جا بجا پایا جاتا ہے اور سینٹ پال نے اپنے پہلے خط کے باب پندرھویں میں جو کارنتھیوں کو لکھا ہے اس خیال کو بہ خوبی ظاہر کیا ہے ۔ جہاں لکھا ہے کہ '' ہم سب ایک دم میں ایک پل مارنے میں چھلی ترئی پھونکنے کے وقت مبدل ھو جاویں گے کہ ترئی پھونکی جاوے گی اور مردے آٹھیں گے اور ہم مبدل ھو جاویں گے ۔

ھارے ھاں کے علماء نے حسب عادت اپنے اس امر میں یہودیوں کی پیروی کی ہے اور نفخ صور کے لغوی معنلی لیے ھیں اور جب انھوں نے لغوی معنلی لیے تو ضرور ھوا کہ صور کو

بمشکل بعینه موجود اور اس کے بجانے کے لیے فرشتے قرار دیں ۔ بعض بزرگوں نے بہاں تک بھودیوں کی پیروی کی ھے کہ جس طرح توریت میں لکھا ھے کہ خدا نے موسلی کو چاندی کی دو صوریں بنانے کا حکم دیا تھا انھوں نے بھی صور کو جوڑا قرار دیا ھے کہ ایک کے بجانے سے ایک طرح کی اور دونوں کو ساتھ بجانے سے دوسری طرح کی آواز نکلے گی اور اس پر حاشیہ یہ چڑھایا کہ صور میں بقدر تعداد ارواحوں کے چھید ھیں جیسے بانسری میں ھوتے ھیں اور جب مردوں کو زندہ کرنے کے لیے صور پھونکی جاوے گی تو ارواحیں صور کے چھیدوں میں سے نکل پڑیں گی (دیکھو تفسیر کبیر ارواحیں صور کے چھیدوں میں سے نکل پڑیں گی (دیکھو تفسیر کبیر ارواحی مدثر آیت میں ۔

مگر قرآن مجید میں جس طرح تنزہ ذات باری کا اور اس کے کاموں کا بیان ہے وہ اس قسم کے خیالات سے کلیۃ مانع ہے ۔ نفخ صور صرف استعارہ ہے بعث و حشر کا اور تبدل حالت کا جس طرح لشکر میں صور بجنے سے سب مجتمع ہو جاتے ہیں اور لڑنے کو کھڑے ہو جاتے ہیں اور لڑنے کو کھڑے ہو جاتے ہیں اور گروہ در گروہ آ موجود ہوتے ہیں اسی طرح بعث و حشر میں ارادۃ اللہ سے جس طرح کہ اس نے قانون قدرت میں مقرر کیا ہوگا وقت موعود پر سب لوگ آٹھیں گے اور جمع ہو جاویں گے ۔ اس حالت نفخ صور سے استعارہ کیا گیا ہے پس اس آیت سے یا قرآن مجید کی اور آیتوں سے یہ بات کہ فی الواقع کوئی صور بعنی متعارف موجود ہے یا موجود ہوگی اور فی الواقع وہ مثل صور متعارفہ کے پھونکنے کے پھونکی جاوے گی اور فی الواقع اس کو ضور متعارفہ کے پھونکنے کے پھونکی جاوے گی اور فی الواقع اس کو فرشتے لیے ہوں گے اور وہ اس کو پھونکیں گے ثابت نہیں ۔

گو کہ تمام علمائے اسلام صور کو ایک شے موجود فی الخارج اور اس کے لیے پھونکنے والے فرشتے یقین کرتے ہیں اور عموماً مسلمانوں کا اعتقاد ہمی ہے مگر بعض اقوال اُنھی علماء کے ایسے پائے

جاتے هيں جن ميں صاف بيان هے كه نفخ صور صرف استعاره اور تكشيل هے ـ تفسير ميں لكها هے كه واللہ تعمال الله تعمال

ان الدفخ فی الصور استعارة والمراد سنه البعث والحشر (سوسنون) - یعنی الله تعالی لوگوں کو آخرت کی باتیں آن چیزوں کی مثالوں سے بتلاتا ہے جو دنیا میں دیکھی جاتی میں اور لوگوں کی عادت ہے که کوچ کے وقت اور لشکروں میں بھونپو یعنی بوق یعنی صور بجاتے ہیں اور سورۂ مومنوں کی تفسیر میں لکھا ہے که یجوزان یکون تمشیلاً لدعاء الموتی فان خروجہم سن قبورهم کخروج الجیش عند ساع صوت خروجہم سن قبورهم کخروج الجیش عند ساع صوت الاله (نمل) یعنی - نفخ فی الصور استعاره ہے اور اس سے مراد بعث و حشر ہے - سورۂ نمل کی تفسیر میں لکھا ہے که جائز ہے بعث و حشر ہے - سورۂ نمل کی تفسیر میں لکھا ہے که جائز ہے میں سے نکانا لشکر کے نکانے کی مائند ہے جب که وہ صور کی آواز میں سے نکانا لشکر کے نکانے کی مائند ہے جب که وہ صور کی آواز بھی مثل ہارے نه صور کے لغوی معنی لیتے ہیں اور نه صور کے بھی مثل ہارے نه صور کے لغوی معنی لیتے ہیں اور نه صور کے پھو کنے والوں کی ضرورت جانتے ہیں -

معال کے حالات حقیقت کی روشنی میں

معاد کا ذکر قرآن محید میں جا مجا آتا ہے مگر یہ ایک ایسا مسئله هے که حب تک یه را سلسله اس کا بیان نه هو خیال میں نهس آتا اور نه یه سمجها حاتا هے که قرآن محید مس حو کچه آس کی نسبت بیان ہوا ہے اُس کا کیا منشاء ہے۔ پس مناسب ہے که هم اس مقام میں اس یار بقدر امکان محث کے بی مگر ان مطالب پر محث کرنے سے پہلر اس بات کا بیان کرنا ضرور ہے کہ ان مسائل پر محث کرنے کی نسبت اگلر عالموں نے کیا کہا ہے قاضی ابو الولید ابن رشد نے اپنر رسائل میں لکھا ہے کہ "شرع کا مقصود علم حق اور علم حق کی تعلیم ہے اور تعلیم کی دو قسمیں ہیں : (۱) ایک کسی شرکا خیال کرنا (۲) دوسرے اُس پر یقین کرنا جس کو اہل علم تصور اور تصدیق سے تعبیر کرتے ہیں ۔ تصور کے دو طریق ہیں: (۱) یا تو خود اسی شرکو تصور کرنا ہے (۲) یا آس کی مثال کو تصور کرنا ہے اور تصدیق کے الريق جو انسانول مس هس وه تن هس (١) برهاني معنى دلائل قطعی کے سبب سے یقین کرنا (۲) جدلی یعنی مخالفانہ اور مخاصانه دلیلوں کے ٹوٹ جانے کے بعد یقین لانا ۔ (۳) خطبی یعنی ایسی باتوں سے جن سے انسان کے دل اور وجدان قلبی کو تسکین ہو جاوے آس پر یقین لانا ـ

اکثر آدمی ایسے هیں جن کو دلائل خطبیه یا جدلیه سے تصدیق حاصل هوتی هے اور دلائل برهانیه خاص چند آدمیوں کے سمجھنے کے لائق هوتی هیں۔ شرع کا مقصود سب سے اول عام لوگوں کو سمجھانا هے اور خواص سے بھی غافل نه هوتا۔ پس شرع نے تعلیم کے لیے مشترک طریقه اختیار کیا هے اور اُس کے اقوال چار طرح پر هیں۔

اول یه که _ جن اسور کی نسبت وه کیم گنے هیں آن کے تصور اور تصدیق دونوں پر یقین کرنا ضرور هے گو که ان کی دلیلیں خطبیه هوں یا جدلیه اور جو نتیجے آن سے نکالے هیں وهی نتیجے بعینها مقصود هیں بطور تمثیل کے نہیں کیمے گئے هیں ۔ ابن رشد فرماتے هیں که ایسے اقوال کی تاویل کرنی نہیں چاهیے اور جو شخص آن سے انکار کرے یا آن کی تاویل کرے وہ کافر هے ۔ دوم یه که _ جو اقوال بطور مقدمات کے کیمے گئے هیں گو که آن کی صرف شهرة هی هو اور گو که وہ مظنون هی هوں گو که آن کی صرف شهرة هی هو اور گو که وہ مظنون هی هوں مگر آن پر یقین کرنا لازمی ٹهیمرا هو اور نتیجے جو آن سے نکالے هوں وہ بطور مثال آن نتیجوں کے هوں جو مقصود هیں ۔ ابن رشد فرماتے هیں که صرف آن مثالی نتیجوں کی نسبت البته البت البته تاویل هو سکتی هے ۔

سوم یه که _ جو نتیجے آن اقوال سے نکالے گئے هیں وهی بعینها مقصود هیں اور جو آن کے مقدمات بیان هوئے هیں وه مشهور هوں یا مظنون مگر آن پر یقین کرنا لازمی نه ٹههرا هو تو آن نتائج میں بهی تاویل نهیں هو سکتی البته صرف آن مقدمات میں تاویل هو سکتی هے _

چہارم یه که _ جو مقدمات آس میں بیان هوئے هیں وه صرف مشهور هوں یا مظنون اور ان پر یقین کرنا بھی لازمی نه

ٹھہرا ھو اور جو نتیجے آن سے نکالے گئے ھیں وہ بطور مثال آن نتیجوں کے ھوں جو مقصود ھوں ان میں تاویل کرنا خاص لوگوں کا کام ہے اور عام لوگوں کا فرض ہے کہ وہ بلا تاویل کے آن کو ویسا ھی مانتے رھیں۔ (انتہلی ملخصاً)

اس کے بعد ابن رشد فرماتے ھیں کہ آدمی تین قسم کے ھیں (۱) ایک وہ جو مطلقاً تاویل کرنے کی لیاتت نہیں رکھتے وہ تو خطبیون ھیں یعنی دل کو تسلی دبنے والی باتوں پر یتین لانے والے اور اسی قسم کے لوگ بہت کثرت سے ھیں ۔ (۲) دوسرے جدلی ھیں جو بالطبع یا بطریق عادت مخالفانہ اور مخاصحانہ دلیلوں کے ٹوٹ جانے کے بعد یتین لاتے ھیں ۔ (۳) تیسرے اھل تاویل حقہ یتینہ ھیں اور وہ برھانیون صاحب علم و حکمت ھیں ۔مگر برھانیون جو تاویل کریں آس کو آن پہلی دو قسموں کے سامنے بیان کرنا نہیں چاھیے اور اگر یہ

تاویلیں آن لوگوں کے سامنے بیان کی جاویں جو اس کے اھل نہیں ھیں تو بیان کرنے والے اور سننے والے دونوں کو کفر تک پہنچا دیتی ھیں۔ کیوں که تاویل کرنے والے کا مقصود ظاهری معنوں کو باطل کرنے اور تاویلی معنوں کے ثابت کرنے کا ھوتا ھے پس جب عام آدمیوں کے نزدیک جو صرف ظاهری بات کو سمجھ سکتے ھیں ظاھری معنی باطل ھو گئے اور تاویلی معنی آس کے نزدیک ثابت نہ ھوئے کیوں کہ آن کے سمجھنے کی اس کو عقل نہ تھی پس آئر یہ بات ایسے اقوال کی نسبت تھی جو اصول شرع میں داخل ھیں تو کفر تک نوبت پہنچ گئی۔ پس اس اس کے نزدیک ثابت کے سمجھنے کی اس اس کے نزدیک تابی ہیں تو کفر تک نوبت پہنچ گئی۔ پس اس کے اس کے نوبات ہیں جو کفر تک نوبات پہنچ گئی۔ پس اس کے اس کے اس کے تابین ھیں آن میں کاھر کرنا اس جام لوگوں کی تعلیم کے لیے جو کتابین ھیں آن میں لکھنا نہیں چاھیے اور آن کو سمجھا دینا چاھیے کہ یہ خدا کی باتیں ھیں خدا ھی ان باتوں کی حقیقت خوب جانتا ھے۔ لایہ علم تاویہ خدا ھی ان باتوں کی حقیقت خوب جانتا ھے۔ لایہ علم تاویہ خدا ہی ان باتوں کی حقیقت خوب جانتا ھے۔ لایہ علم تاویہ کو اللہ تھا۔ (انتہایی ملخصاً)

اس کے بعد ابن رشد اسی قسم کی تاویلوں ھی کو عام لوگوں پر ظاھر کرنے کو سنع نہیں فرماتے بلکہ ھر چیز کی حقیقت کو جو عام لوگوں کے سوائے راسخین فی العلم کی سمجھ سے باھر شے ظاھر کرنے کو سنع کرتے ھیں چناں چہ وہ لکھتے ھیں کہ اسی کی مانند جواب سوالات امور غامضہ کے ھیں جو جمہور کے سمجھنے کے لائق نہیں ھیں جیسے کہ خدا نے فرمایا ھے و یاسٹ لوند کے عن الروح قبل الروح من امر رہی وسا اوتیت من العلم الاقلاملا فی ویالا کافر ھے۔ کیوں کہ وہ ان باتوں کو بھی غیر اھل پر بیان کرنے والا کافر ھے۔ کیوں کہ وہ لوگوں کو کفر کی طلب بلاتا ھے خصوصاً جب کہ تاویلات فاسدہ اصول شریعت میں ھونے لگیں جیسے کہ ھارے یعنی ابن رشد کے زمانہ میں لوگوں کو یہ بیاری لگ گئی ھے۔ (انتہای ملخصاً)

نتیجه اس تقریر کا یه هے که کوئی بات بھی شریعت کی جو بیان حقیقت یا تاویلات کی قسم سے ھو سوائے راسخین فی العلم کے کسی کے سامنے بیان نه کی جاوے جس قسم کے لوگوں کو ابن ایشد نے راسخین فی العلم میں قرار دیا ہے اس زانه میں تو ویسا شخص کوئی نہیں ہے بلکه اگرے زمانه میں بھی دو ایک کے سوا کوئی نہیں ہے بلکه اگرے زمانه میں بھی دو ایک کے سوا کوئی نه تھا پس ضرورہ ً لازم آتا ہے که تمام مقدم باتیں شریعت کی بطور ایک معا و چیستاں یا مشل راز فریمشن کے غیر معلوم رهنی چاھئیں ۔

اگر هارا مذهب اسلام ایسا هو که اس کے اصول لوگوں کو نه سمجها سکیں جو آن کو سمجها چاهتے هیں یا آن لوگوں کی تشفی نه کر سکیں جن کے دل میں شبہات پیدا هوئے هیں بلکه آن سب کو اس پر مجبور کریں که ان باتوں کو اسی طرح مان لو تو هم اپنے مذهب کی صداقت فی نفسه اور بمقابله دیگر مذاهب غیر حق کے کیوں کر ثابت کر سکتے هیں ۔ ایک عیسائی کمہنا هے کم تثبیت کا مسئله که تین تین بهی هیں اور ایک بهی هیں ایک اللی مسئله هے ۔ اس پر بے سمجھے یقین کرنا چاهیے پس اگر هم مذهب اسلام کے بہت سے مسئلوں کی نسبت ایسا هی کہنا قرار دیں مذهب اسلام کے بہت سے مسئلوں کی نسبت ایسا هی کہنا قرار دیں تو کیا وجه هے که اس کی تکذیب اور اس کی تصدیق کریں ۔

ایک اور بات غور کے لائق ہے کہ جب کسی کے دل میں مذھب اسلام کے کسی مسئلہ کی نسبت شک پیدا ھوا خواہ وہ عالم ھو یا جاھل اور ھم آس کی حقیقت یا تصریح یا تاویل بیان کر کے آس کے دل کے شبہ کدو تو رفع نہ کریں اور بعوض اس کے کہیں کہ تم راسخین فی العلم میں نہیں ھو بلا تفتیش اس کو تسلیم کرو اور اسی پر یتین رکھو تو اس کا ایمان ایسا رہے گا جس کا اثر حلق سے نیچے نہ اتر ے گا آس کی زبان کہے گی ھاں اور دل کہر گا ناہ

علاوہ اس کے یقین ایسی چیز نہیں کہ کسی کے کہہ دینے سے آجاوے بلکہ یقین ایک امر اضطراری ہے کہ جب تک وہ شبہ جس نے یقین میں خلل ڈالا ہے نہ مٹ جاوے یقین آ ہی نہیں سکتا۔

اصل بات یہ ہے کہ دنیا میں عالم ہوں یا جاھل دو قسم کے لوگ ہیں ایک وہ جو دل سے تمام باتوں پر جو اسلام میں ہیں اور گو وہ کیسی ہی خلاف عقل اور خلاف سمجھ اور محال و نا نمکن ہوں بلکہ خلاف واقع سب بر یقین رکھتے ہیں اور اس قسم کے لوگوں کے لیے کسی قسم کی دلیل کی ضرورت نہیں دوسرے وہ جن کو آن باتوں پر شبہ ہے یا آن کا وقوع غیر ممکن سمجھتے ہیں یا آن کے غلط ہونے پر صحیح یا غلط دلیلیں رکھتے ہیں بلا لحاظ اس کے غلط ہونے پر صحیح یا غلط دلیلیں رکھتے ہیں اور عالم ہیں بات کے کہ وہ منجملہ راسخین فی العلم ہیں یا نہیں اور عالم ہیں یا جاھل آن کے سامنے ہر ایک چیز کی جو اسلام میں ہے اس کی یا جاھل آن کے سامنے ہر ایک چیز کی جو اسلام میں ہے اس کی اور جو آس کے بیان کی قدرت رکھتا ہے اور بیان نہیں کرتا وہ کافر حقیقت بیان کرنے والوں اور جو آسی دلیل سے جس دلیل سے کہ ابن رشد نے حقیقت بیان کرنے والوں اور تاویل کی تصریح کرنے والوں کو کافر بتایا ہے۔

هم فرض کر لیں که آن مشککین کو اس قدر لیاقت نہیں ہے که وہ آن حقیقتوں اور تاویلوں کو سمجھیں مگر اتنی بات تو ان پر ثابت هوگی که اس کے لیے دلیلیں اور اس کی صداقت کے ثبوت کے لیے وجوهاتیں اور اس کی حقیقت کے لیے بیانات هیں مگر هم آن کو سمجھانے کا جو سمجھ نہیں سکتے ادنئی درجه یه ہے که ان کے سمجھانے کا جو فرض هم پر تھا اس کو بلا شبه هم ادا کریں گے ۔ بہت لوگوں نے پیغمبروں کی نصیحتوں کو نہیں سمجھا مگر پیغمبر اس خیال سے کہ وہ ان کے سمجھانے کے لائق نہیں هیں نصیحتوں کے سمجھانے سے باز نہیں رہے بلکه طرح طرح سے سمجھایا اور کوشش کی کہ ان کو باز نہیں رہے بلکه طرح طرح سے سمجھایا اور کوشش کی کہ ان کو

آن کے سمجھنے کے لائق کریں ۔

اس خوف سے کہ ان لوگوں کے نزدیک جب ظاہری معنلی باطل ہو جاویں گے اور اصل حقیقت یا تاویل کے سمجھنے کے لائق نہ ہونے کے سبب ود اس کو نہ سمجھیں گے تو اصول شرع سے منکر ہو جاویں گے اور کفر تک نوبت پہنچا دیں گے ۔ ہم کو حقیقت اور صداقت کے بیان سے باز نہیں رہنا چاھیے اگر یہ الزام صحیح ہو (کما نسب بعض اخلائی الی) تو قرآن مجید بھی بایں ہمہ خوبی اس الزام سے بری نہیں رہ سکتا ۔ خود حق تعاللی فرماتا ہے ۔ حدیی بہ کشیرا و یہضل به کشیرا ۔

تاویلات فاسدہ بھی اگر ہوں تو کچھ نقصان نہیں پہونچا سکتیں اس لیے کہ جو چیز غلط ہے آس کی غلطی بہت دیر پا نہیں ہو سکتی دوسروں کو آس کی غلطی بیان کرنے کا اور غلط کو صحیح کرنے کا موقع ملتا ہے اور اگر وہ بیان ہی نه کی جاویں تو سچ بات کے ظاہر ہونے کا موقع ہی نہیں ہوتا۔

ھاں یہ بات سے ہے کہ بہت سے حقائق ایسے ھیں جن پر انسان کو یقین کرنے کے لیے دلیل ہے مگر آن کی حقیقت جاننا انسان کی فطرت سے خارج ہے مگر اس قسم کے حقائق ھارے استدلال میں کچھ نقص ڈالنے والے نہیں ھیں کیوں کہ دلیل سے ثابت ھوتا ہے کہ ان کا جاننا یا سمجھنا انسان کی فطرت سے خارج ہے۔ اور بہی عدم علم آن کی معرفت کے لیے کہال معرفت ہے۔

اصل یہ ہے کہ قدیم زمانہ میں جب کہ علماء نے اس قسم کی رائیں لکھیں علم ایک نہایت محدود فرقہ میں تھا جس کو وہ بجز اپنے خاص لوگوں کے اوروں میں شائع کرنا ھی پسند نہیں کرتے تھے اور آمام لوگ اعلمٰی و ادنیٰی علوم کے ادنیٰی ادنیٰی مسائل سے بھی ہے جہرہ تھے اور ان کے دل شہات و تشکیکات سے پاک تھے اور

ہی باعث ہوا کہ آن علماء نے ایسی رائے قائم کی تھی مگر وہ زمانہ گیا علوم و حکمت اب اس قدر عام هو گئی که ایک مت برا حصه دنیا کا اس سے واقف ہوگیا طفل دہستاں بھی اپنر مکتب میں ارسطو اور افلاطون کی غلطیوں کا جہاں جہاں انہوں نے کی ھی ذکر کرتا ہے ہزاروں آدمی ہر شہر و قصبہ میں ایسر موجود ہیں جو خود کچھ نہیں جانتر مگر بہت سے مسائل علوم و حکمت کے سن سن کر آن کے کان آشنا ہو گئر ہیں اور اکثر الناس وہ ہیں جن کے دل شہات و تشکیکات سے مملو ہ س اس زسانہ سس جو ذی علم هس آن کا ایمان بھی حلق کے نیچر تک نہیں ھے منہ سے کہتے هیں کہ حو کچھ قرآن و حدیث ہیں آیا ہے آس پر یقین کرنا چاهیر مگر دل میں شہات بھرے پڑے ھی اس بات کو بھول جاتے ھیں کہ یتن کرنے سے نہیں ہوتا بلکہ ہونے سے ہوتا ہے پس اب یہ زمانه ہے کہ حو کوئی بقدر اپنی طاقت کے ان تمام حقائق اور تاویلات کو نه کھولر اور لـوسة لا یـم سے ندر هو کر اگر علماء کی أَن غلطيون كو جو مقتضائے أس زمانه كے نامكمل علوم اور نامكمل تحقیقات کے حقائق کی بیان حقیقت اور قرآن محید کی تفسیر میں راہ پا کئی میں عام طور سے سب کے سامنر بیان نه کرے وہ اپنے فرض سے ادا کرنے سے قاصر ہے و اسن یافعال فیھو یاودی حق الله وحق دينه وحق اهل دينه وقوسه والله المستعان _

الـمسئلة الاولــلى الـروح هــه حــه اهــر عــرص

اس امر کی تنقیح کو که روح کا وجود ہے یا نہیں ہم کو اُر اُدِ اُجسام موجود فی العلم پر نظر کرنی چاہیے پس جب ہم اُن پر

غور کرتے ھیں تو ابتدائے نظر میں ان کو دو قسم کے پاتے ھیں۔
ایک بطور تھوے کے کہ وہ جہاں ھیں وھیں ھیں اپنی جگہ سے
حرکت نہیں کر سکتے ممکن ھے کہ وہ بے انتہا بڑے ھو جاویں اگر
کوئی ایسا سبب جو آن کے بڑے ھونے کو روکنے والا نہ ھو اس
قسم کے اجسام صرف نہایت چھوٹے چھوٹے مشابہ اجزاء سے بنے
ھوئے ھیں اور آس کے ھر ایک جزو میں وھی اوصاف ھیں جو
اس کے کل میں ھیں جیسے پتھر اور لوھا۔ اگر آن میں سے کوئی
ٹکڑا توڑ لیں تو آس میں بھی وھی اوصاف ھوں گے جو آس کل میں
ھیں اور جب کہ وہ بالکل خالص بغیر کسی ملاوٹ کے ھو تو آس
میں ایک سی طرح کے پرت ھوں گے۔

دوسری قسم کے اجسام ایسے هیں که آن کا جسم باختلاف آن کی انواع کے ایک معین حد تک بڑا هوتا هے اور اس کے اجزا غیر متشابه اور مختلف الالوان هوتے هیں اور ان میں باریک باریک رگیں اندر سے خالی مثل نلی کے هوتی هیں جی میں بہنے والا مادہ پهرتا رهتا هے اور اسی طرح الگ الگ پردے بھی هوتے هیں جن کے بیچ میں خالی جگه هوتی هے اور پهر کہیں آکٹھے هو جاتے هیں اور اس نسا جال کو آس جسم کے اعضا کہتے هیں اس لیے پہلی قسم کے اجسام کو اجسام کو عضویه اور دوسری قسم کے اجسام کو عضویه کہتے هیں ۔

اجسام عضوی میں پرت نہیں ہوتے اور اُس کا نمو آسی قسم کی دوسری چیزوں سے ہوتا ہے اور جب وہ جوان ہو جاتا ہے تو اُس میں مختلف طرح کا بیج پیدا ہوتا ہے ۔

غیر عضوی جسم دفعة پیدا هو جاتا هے جس وقت اس کا مادہ جمع هو جاوے اور عضوی جسم رفته رفته نمو پاتا هے اور جب اُس کے بیح کو بوؤ تو وهی جسم اُس سے پیدا هوتا هے جس کا

بیح ہے اور بونے والا جب زمین میں ڈالتا ہے تو جانتا ہے کہ وہ کب پھوٹے گا اور کب اس میں مادہ چوسنے کی طاقت آوے گی اور اس کے پتے اور ٹہنیاں ہوا میں سے غذا بھی لیتی رہتی ہیں جس کے سبب آن کا قد بڑھتا ہے اور رنگ بدلتا جاتا ہے۔

اور ایک فرق ان دونوں جسسوں میں یہ ہے کہ جسم عضویہ میں غذا آن کے اعضاء کے اندر جاتی ہے اور اندرونی غذا سے بیرونی جسم بڑھتا ہے اور جب تک یہ قوت رهتی ہے ہمو هوتا رهتا ہے اور ایک زمانہ کے بعد آس میں ضعف آ جاتا ہے اور غذا کم هو جاتی ہے اور ہمو نہیں هوتا اور آخرکار می جاتا ہے ۔ عضوی جسم کی حالتیں علانیہ بدلتی رهتی هیں ۔ وہ پبدا هوتا ہے پھر بڑھتا ہے پھر آس کا بڑھنا موقوف هو جاتا ہے پھر بڑھا ہے کے سبب گھٹنے لگتا ہے پھر می حاتا ہے ۔

جسم غیر عضوی پیدا هوتا هے اجتاع سادہ سے اور اس طرح بڑھتا ہے کہ آسی قسم کے اور اجزاء سادی آس کے اوپر کی سطح پر آکر جڑتے جاتے هیں اور اجسام عضوبه کا نمو اندر سے هوتا هے اور جسم غیر عضوی کا حجم بے انتہا باڑھ سکتا ہے اگر کوئی امر سانع نه هو اور جسم عضوی کا حجم ایک مقداد معین سے زیادہ نہیں بڑھ سکتا ۔

جسم عضوی اور غیر عضوی میں یہ فرق بھی ہے کہ پہلے جسم میں مختلف قسم کا مادہ ہوتا ہے اور دوسری قسم میں صرف ایک قسم کا ۔ اگرچہ اس کے سوا اور بھی اختلافات ہیں مگر مختصر طور پر مقدم اختلافات کو ذیل میں لکھتے ہیں ۔

۱- اجسام عضوی کا وجود تناسل سے ہوتا ہے اور غیر عضوی
 کا جذب و اتحاد سے ـ

ہ۔ بقا اجسام عضوی کا محدود ہے اور غیر عضوی کا محدود نہیں ۔

۔ اجسام عضوی کے اجزا کروی شکل پر ہوتے ہیں اور غیر عضوی کے زاویہ کے طور پر ـ

سہ نمو اجسام عضوی کا سنحصر ہے غذا کے اندر جانے پر اور وہ نمو اندر سے باہر کو ہوتا ہے اور غیر عضوی کا اس کے برخلاف ہے آن کا حجم باہر سے اجزا سل جانے سے بڑا ہو جاتا ہے۔

۔ بناوٹ جسم عضوی کی مختلف اجزا سے ہوتی ہے اور جسم غیر عضوی کے اجزائے متحد الصفت سے ـ

جسم عضوی کی ترکیب اجزا متضاعقه متحرکه سے هوتی
 هے اور غیر عضوی کی بسیط ـ

اس بیان سے ظاہر ہوتا ہے کہ اجسام غیر عضوی میں تمام معدنیات مثل نمک اور پتھر وغیرہ کے اور مئی کے داخل میں اور اجسام عضویہ میں نباتات اور حیوانات ۔

مگر نباتات و حیوانات سی جو فرق ہے وہ بہت ظاہر ہے۔ حیوانات کی بناوٹ میں نباتات کی بناوٹ سے تضاعفات بہت زیادہ ہیں اور حیوان ستحرک ہے ایک جگہ سے دوسری جگہ جا سکتا ہے اور وہ مدرک ہے اور ذی اختیار ہے کہ جس کام کو چاہے کرے اور جس کو چاہے نہ کرے اور آس میں حواس مخصوصہ ہیں کہ آن کے سبب آواز کو بوؤں کے مزے کو چھونے کو جانتا ہے اور غذا آس کے پیٹ میں ایک ایسی آس کے پیٹ میں جاتی ہے اور بالتخیص آس کے پیٹ میں ایک ایسی ہنڈیا ہے جو غذا کو اس طرح پکا دیتی ہے کہ اعضاء کے تغذیہ اور شدی کے لائق ہو جاتی ہے۔

نباتات آس کے برخلاف ھیں وہ جہاں ہویا ھے وھاں سے دوسری جدّ نہیں چل سکتا آس میں حرکت کرنے کی قوت نہیں ھے اور نہ اِس میں اختیار ھے وہ اپنی جڑوں کے ذریعہ سے جو زمین میں ھیں

اور ٹہنیوں اور پتوں کے ذریعہ سے جو ہوا میں ہیں غذا کو جذب کر لیتا ہے آس میں کوئی ہنڈیا یا غذا پکانے کی نہیں ہے بلکہ جو غذا آس میں جاتی ہے آسی وقت غذا کے قابل ہوتی ہے ۔

نباتات و حیوانات میں بہت بڑا اختلاف یہ ہے کہ حیوان میں پٹھوں کا بھی ایک سلسلہ ہے اور نباتات میں نہیں ہے اور یہی اعصاب جب کہ حیوانات میں ایک مرکز سے تعلق رکھتے ھیں اس سبب سے حیوان میں قابلیت احساس ھوتی ہے اور یہ بات نباتات میں نہیں پائی جاتی ۔ علاوہ اس کے حیوانات میں اور بھی جھلیاں اور پردے اور ہے اور عضلے اس قسم کے ھوتے ھیں جو نباتات میں نہیں ھوتے ۔

ایک عمده فرق دونوں میں یہ ہے کہ حیوانات کی غذا اجسام عضوی سے هوتی ہے اور نباتات کی غذا اجسام غیر عضوی سے جیسے پانی اور هوائیں اور نمک ۔ نباتات کے بننے کا ماده در اصل ایک کسیلا ماده هوتا ہے اور تحلیل کیمیاوی سے ثابت هوتا ہے کہ وہ مرکب ہے کاربن اور هائیڈروجن اور آکسیجن سے یہ تینوں ایک هوائی سیال عنصر هیں اور نباتات میں نوٹریجن نہیں ہے جس کو ازوٹ بھی کہتے هیں مگر حیوانات مُیں ہے اور یہ بھی ایک هوائی سیال جسم ہے مگر اس کی یہ خاصیت ہے کہ اگر کسی جگہ صرف نائٹروجن بھری هو اور وهاں آدمی جاوے تو فی الفور مر جاتا ہے جیسا کہ غلہ کی کھیتی میں یا کسی پرانے اندھے کنوئیں میں دفعة آترنے سے آدمی مر جاتے هیں۔

یه تمام امور جو هم نے بیان کیے هیں امور محققه میں سے هیں جو علم زوالوجی یعنی علم الحیوانات اور علم کمسٹری یعنی کیمیا میں بخوبی ثابت هیں مگر جو فرق که جسم نباتی اور جسم حیوانی میں اوپر بیان هوا هے اُس پر هم زیادہ غور کرنی چاهتے هیں۔ هم کو

بالتخصیص اس بات پر غور کرنی ہے کہ حیوانات میں جو حرکت اور ارادہ اور اختیار اور ادراک اور خیال اور ایک قوت نتیجہ نکالنے کی ہے اس کا کیا سبب ہے ۔

هم تسلیم کرتے هیں که نباتات کے جسم کے مادہ میں تین عنصر هیں۔ کاربن ، آکسیجن ، هائیڈروجن اور حیوانات کے جسم کے مادہ میں ایک چوتھا عنصر نوٹریجن بھی هے مگر یه تمام عنصر آن کے جسم کی بناوٹ کا مادہ عیں آس سے یه ثابت نہیں هوتا که وہ آن افعال کے بھی باعث هیں جو حیوانات سے بالتخصیص علاقه رکھتے هیں اور جن پر هم غور کرنی چاهتے هیں کمسٹری سے ثابت هوا هے که نائٹروجن میں کچھ کیمیاوی قوت نہیں هے اور نه وہ معاون زندگی هے صرف اتنی بات هے که جانوروں کے گوشت کے ریشوں میں بائی جاتی هے۔

یه سچ هے که حیوانات کے اعضاء میں ایک ایسا عضو هے جو غذا کو اس طرح پکا دبتا هے که اعضاء کے تغذیه اور نمو کے لائق هو جاو نے نباتات میں ایسا کوئی عضو نہیں هے اور اس کی وجه ظاهر هے که نباتات اپنی جڑ کے ریشوں سے اور آس کے پتے اور شیاں هوا سے وهی ماده جذب کرتے هیں جو غذا و نمو کے لائق هے اور اس لیے آن میں کسی ایسے عضو کے هونے کی ضرورت نہیں۔ برخلاف حیوانات کے که وہ ایسی غذا کہاتے هیں جن میں علاوہ مادہ تغذی و نمو کے اور فضول مادہ بھی شامل هوتا هے اور اس لیے مادہ تغذی و نمو کے اور فضول مادہ بھی شامل هوتا هے اور اس لیے جدا کر دے مگر اس کے جدا هو جانے کے بعد حیوان کی وهی حالت هوتی هے جو نباتات کی شروع تغذیه میں تھی اور اس لیے یه نصور نہیں هو سکتا که حیوان میں آس عضو کا هونا آن افعال کا نصور نہیں هو سکتا که حیوان میں آس عضو کا هونا آن افعال کا باعث هے جو بالتخصیص حیوانات سے علاقه رکھتر هیں۔

حیوانات کے جسم کی بناوٹ میں ایک بہت بڑا نسا جال اعصاب
کا ھے جس کا مربع ایک مرکز عام یعنی دساغ کی طرف ھے اور وہ
تمام افعال حیوانات کے جن پر ھم غور کرنا چاھتے ھیں آسی کی طرف
منسوب کیے جاتے ھیں لیکن یہ افعال آن سے صرف بحثیت آن کے
اعضاء ھونے کے تو منسوب نہیں ھو سکتے اور نہ صرف بحیثیت
آن کے مادہ کے کیوں کہ تمام جسم حیوانات میں وھی عناصر
موجود ھیں مگر مختلف ترکیب پانے سے مختلف مادہ اور مختلف
صورت پیدا ھوئی ھے پس صرف بحیثیت مادہ جو اختلاط عناصر سے
پیدا ھوتا ھے وہ افعال منسوب نہیں ھو سکتے ۔

اب هم کو یه دیکهنا هے که عناصر یعنی کربن آکسیجن ، ہائیڈروجن ، نائیڈروجن کی ترکیب سے کیا حالت بیدا ہو کہکتی ہے۔ عناصر آیس میں مل کر ایک دوسری صورت کا جسم پیدا کر لیتر ھیں مثلاً جب آکسیجن اور ھائیڈروجن مقدار معینہ سے باھم مل جاویں تو ایک دوسری صورت کا جسم رقیق سیال بیدا هو جاتا ہے جس کو پانی کہتر ہیں۔ مگر آس میں کوئی ایسی صفت حو مادہ کی حیثیت سے بڑھ کر ہو پیدا نہیں ہوتی ـ عناصر کی ترکیب سے ایک جسم غیر میں یا آسی جسم سی جو ان عناصر سے بنا ہے حرارت پیدا هو جاتی هے اور جب تک وہ ترکیب قائم رہے وہ حرارت بھی قائم رہتی ہے عناصر کی ترکیب سے جسم سی ایک خاص قسم کے سادہ کی یا دوسرے جسم کے جذب کرنے کی قوت پیدا ہو جاتی ہے جیسے که متناطیس میں لوہے کی کشش اور نباتات و حیوانات میں دیگر اقسام کے عناصر اور مادہ کے جذب کی قوت پیدا ہوتی ہے۔ عناصر کی ترکیب سے ایک ایسا جسم پیدا ہو جاتا ہے جو جوش میں (یعنی متحرک) رہے یعنی خود آسی کے اجزا حرکت میں رہیں جب تک کہ وہ ترکیب آس میں باقی رہے جیسے کہ تیزابوں کے

ساتھ دوسری چیزوں کے ملانے سے پیدا ھوتی ھے۔ عناصر کی ترکیب سے ایک قوت مخفیہ جو اجسام میں ھے ظاھر ھو جاتی ھے اور دیگر اجسام سے جذب کر کے ایک جگه لے آتی ھے جیسے که اعال برق سے ظہور اور اجتاع برق کا ھوتا ھے۔ ترکیب عناصر سے یا آن اجسام کی ترکیب سے جو عناصر بنے ھوئے ھیں ایک جسم ھوائی سیال پیدا ھوتا ھے جو دکھائی دیتا ھے اور کبھی ایسا لطیف ھوتا ھے جو دکھائی دیتا ہے اور کبھی ایسا لطیف ھوتا ھے جو دکھائی دیتا ہے اور کبھی ایسا

اکثر اطباء اور حکاء کا یه خیال هے که جسم حیوانی سی جو ترکیب عناصر سے بنا هے اور جس میں مختلف قسم کے اعضاء هیں اس ترکیب کے سبب ایک جسم هوائی پیدا هوا هے جو باعث تهیج هے جو سبب هے حیوانات میں ارادہ پیدا هونے کا اور ترکیب اعضا سے حرکت کے ظہور میں آنے کا اور یہی جسم سیال هوائی باعث هے انسان کی زندگی کا اور اسی کو بعضوں نے روح حیوانی اور بعضوں نے مطلق روح اور بعضوں نے نسمه سے تعبیر کیا هے اور بعضوں نے نسمه سے تعبیر کیا هے اور بعضوں نے نسمه سے تعبیر کیا ہے اور تیجہ اس کا یه سمجھا هے که جب ترکیب جسم حیوانی کی اس جسم سیال کے قابل نہیں رهتی تو وہ حالت موت سے تعبیر کی جاتی هے اور اس کا صریح نتیجہ یه هے که جسم کے معدوم هونے یا اس کی حالت قابل قائم رکھنے اس جسم سیال کے معدوم هونے کے ساتھ وہ جسم سیال بھی معدوم هو جاتا هے یعنی وہ روح بھی فنا هو جاتی هے ۔

مگر هم کو اس میں یه کلام هے که تمام آثار جو ترکیب عناصر سے پیدا هوتے هیں وه سب یکساں هوتے هیں مثلاً مقناطیس اس میں به سبب عناصر کے لوهے کے جذب کی قوت پیدا هوئی هے تو اب یه نہیں هو سکتا که کبهی اس کو جذب کرے اور کبهی جذب نه کرے یا جب هم نے ایسے عناصر کو یا اجسام مرکب عناصر نه کرے یا جب هم نے ایسے عناصر کو یا اجسام مرکب عناصر

کو آپس میں ترکیب دیا جو برق کے مہیج ھیں تو یہ نہیں ھو سکتا کہ کبھی برق مہیج ھو اور کبھی نہ ھو ۔ یا اجسام نباتی جب که وہ اپنی ٹھیک حالت میں ھیں ان سے یہ نہیں ھو سکتا کہ مادہ غذائی کو اپنی جڑوں اور ٹہنیوں اور پتوں سے جب چاھیں جذب کریں اور جب چاھیں جذب نہ کریں غرض کہ جو آثار جس جسم کریں بوجہ ترکیب عناصر پیدا ھوتے ھیں وہ آثار آس جسم سے کبھی منفک نہیں ھوتے اور آس جسم کے اختیار میں یہ بات نہیں ھوتی کہ جب چاھے آن آثار کو ظاھر ھونے دے اور جب چاھے آن کو ظاھر ھونے دے اور جب چاھے آن کو ظاھر ھونے دے۔

اس کا ثبوت زیادہ تر آس قسم کی نباتات پر غور کرنے سے بخوبی حاصل ہوتا ہے جس کو جاندار نبات خیال کیا جاتا ہے۔ ایک درخت جو چھوئی موئی یا نجائی کے نام سے مشہور ہے ۔ صرف چھونے سے آس کے پتے سکڑ جاتے ہیں اور ٹمنی گر پڑتی ہے اور تھوڑی دیر کے بعد پھر پتے کشادہ اور ٹمنی اپنی اصلی حالت پر آجاتی ہے امریکہ میں ایک اور درخت پایا گیا ہے جس کو ندبنہ کہتے ہیں آس کے پھول کی پنکھڑیوں جب مکھی یا بہنگا آ کر بیٹھتا ہے تو پنکھڑیاں بند ہو جاتی ہیں اور آس جانور کو پکڑ لیتی ہیں تو پنکھڑیاں بند ہو جاتی ہے مگر آن سے یہ کبھی نہیں ہوتا کہ آس کو چھوئیں اور پتے نہ سکڑیں اور ٹمنی نہ گرے یا مکھی یا آس کو چھوئیں اور پتے نہ سکڑیں اور ٹمنی نہ گرے یا مکھی یا آس پھول کی پنکھڑی پر بیٹھے اور وہ اس کو نہ پکڑ لے۔

بعض پانی کی نباتات ایسی معلوم هوتی هے جن پر شبه حرکت ارادی کا پیدا هوتا هے چناں چه ایک قسم کی نبات تا گے کی مانند هے وہ ایک دوسرے سے ملنے کو حرکت کرتی هے تاکه آن سے ملنے سے پیدائش آن کی هو مگر یه کیفیت صرف قوت جاذبه سے بھی پیدا هوتی هے آس پر حرکت ارادی کا اطلاق نہایت مشتبه هے

خصوصاً جب که وه پانی پر تیرتی هیں ـ

پانی میں پیدا ھونے والی ایک اور نبات ہے جب وہ اس نبات سے جس سے پیدا ھوتی ہے علیحدہ ھوتی ہے تو اور نبات کے پیدا کرنے پر مستعد رھتی ہے اور متحرک رھتی ہے اور جب اس میں قوت حرکت و نمو جاتی رھتی ہے تو اس میں سے اسی قسم کی نبات پیدا ھوتی ہے مگر نہایت مشتبہ ہے کہ اس کی حرکت کو حرکت ارادی تصور کیا جاوے ۔ اجتاع اور ترکیب عناصر سے تحرک پیدا ھوتا ہے جیسا کہ ھم نے اوپر بیان کیا اور جب کہ وہ جسم پانی پر ھو تو اس کا تحرک اس کو ایک مقام سے دوسرے متام پر بھی لے جا سکتا ہے مگر اس پر حرکت ارادی کا اطلاق یقینی طور پر نہیں ھو سکتا ۔

حیوان کے بعض افعال ایسے هیں جو صرف ترکیب عناصر کا نتیجہ نہیں هو سکتے مشلا ارادہ اور اختیار کہ جس کام کو چاهے کرے اور جس کو چاهے نه کرے اگر کسی کام کے کرنے کا ارادہ صرف نتیجه ترکیب عناصر کا هوتا تو اس کا کرنا امل طبعی هوتا اور اس لیے اس کا نه کرتا امل خلاف طبع هوتا جس کا محال هونا بدیمی هے۔ علاوہ اس کے حیوانات میں بہت سے ایسے انکشافات هیں جن کا صرف ترکیب عناصر سے هونا نا ممکن هے مشلاً حیوان کی آنکه کا ترکیب عناصر اور ترتیب طبقات سے بنا اور اس میں آن چیزوں کی صورت کا جو اس کے سامنے هوں شعاع کے سبب منقش هونا یتینی امل هو مگر اس کا ان اشیاء کو پہچاننا اور دوست و دشمن میں تمیز کرنا صرف ترکیب عناصر سے نہیں هو سکتا ۔ علاوہ اس کے خیال ایک صرف ترکیب عناصر سے نہیں هو سکتا ۔ علاوہ اس کے خیال ایک ایسا امل هے که کوئی دلیل اور کوئی ترکیب کیمیاوی کا اصول ایس بات پر قائم نہیں هو سکتا که صرف عناصر کی ترکیب کیمیاوی

کا وہ نتیجہ ہے بلاشبہ صانع نے ان کاموں کے جدا جدا اعضاء بنائے ہیں جو عناصر کی ترکیب کیمیاوی سے بنے ہیں مگر کوئی دلیل نہیں ہے کہ صرف وہی علت تمام آن امور کے ہیں۔ غرضکہ یہ سب امور جن کو ہم ایک مختصر لفظ تعقل سے تعبیر کرتے ہیں صرف ترکیب کیمیاوی عناصر کا نتیجہ نہیں ہے ہم عناصر میں فرداً فرداً کوئی ایسے آثار نہیں پاتے جس سے یہ امر ثابت ہو کہ عناصر میں تعقل اور اختیار ہے اور جب آن میں یہ صفت تو حالت ترکیب میں بھی وہ صفت آن سے پیدا نہیں ہو سکتی کیوں کہ اختیار اور عدم اختیار دو عالف صفتیں ہیں اور جبو صفت کیہ اجزاء میں نہیں ہے تو آن عناصل میں بھی نہیں ہو سکتی یعنی کوئی جنس جو غیر جنس طبیعت اجزاء ہو وہ آس شے میں جو آن اجزاء سے میں جو غیر جنس طبیعت اجزاء ہو وہ آس شے میں جو آن اجزاء سے می کہیں ہو عاصل نہیں ہوتی۔

جب کہ هم اس نتیجہ پر پہنچتے هیں که بہت سے افعال حیوانات کے ایسے هیں جو صرف عناصر معلومہ کی ترکیب کا نتیجہ نہیں هیں تو هم کو ضرور تسلیم آدرنا پڑتا ہے کہ حیوان میں کوئی ایسے شے جو تعقل کا باعث ہے اور اس نتیجہ پر هم لازمی طور پر پہنچتے هیں اور اس لیے حیوانات میں آس شے کے هونے کا لازمی طور پر یقین کررتے هیں اور آسی شے کو جو وہ هو هم روح کہتے هیں۔

اب یه سوال هوتا هے که وه کیا چیز هے مگر اس سوال کا جواب انسان کی فطرت سے باهر هے انسان کی فطرت صرف اس قدر هے که وه اشیاء کے وجود کو ثابت کر سکتا هے خواه وه اشیاء محسوس هوں یا غیر محسوس مگر آن کی حقیقت کا جاننا آس کی فطرت سے خارج هے کسی شے کی بھی حقیقت انسان نہیں جانتا آن اشیا کی بھی حقیقت نہیں جانتا جو هر دم آس کے سامنے یا آس کے استعال کی بھی حقیقت نہیں جانتا جو هر دم آس کے سامنے یا آس کے استعال

میں هیں مثلاً پانی ، انسان یه ثابت کر سکتا ہے که پانی موجود ہے مگر اس کی حقیقت نہیں بتا سکتا زیادہ سے زیادہ یہ ہے که اُس کے اجزاء کی اگر اس میں هوں تشریح کر سکتا ہے اور پھر اُن اجزاء کی حقیقت نہیں بیان کر سکتا وہ کہه سکتا ہے که پانی میں آکسیجن اور هائیڈروجن بیان کر سکتا وہ کہ آکسیجن اور هائیڈروجن کیا چیز ہے تو اُس کی حقیقت نہیں بتا سکتا پس جب که انسان اُن چیزوں کی حقیقت نہیں جان سکتا جو اس قدر عام هیں اگر و، روح کی ماهیت بھی بعد جان سکتا جو اس قدر عام هیں اگر و، روح کی ماهیت بھی بعد اُس کے کہ اُس کے وجود کو ثابت کر چکا ہے نہیں بیان کر سکتا تو کوئی تعجب کی بات نہیں ہے۔

جو چیز که هارے تجربه سے خارج ہے جیسے که روح اس کی نسبت بجز اس کے که دلیل یا قیاس سے کوئی امر کہیں حسب مقتضائے فطرت انسانی اور کچھ کر نہیں سکتے۔ مگر جب هم کو اس کا وجود حیوانات میں ثابت ہوا ہے اور وہ ایسا وجود ہے کہ جس سے تمام افعال جو حیوانی افعال میں اعلیٰی ترین افعال بلکه مخصوص بالحیوانات هیں۔ اسی کے سبب سے هیں تو هم کو تسلیم کرنا پڑتا ہے که ضرور ہے که وہ ایک شے الطف اور جوهر قدیم بالذات ہو اور اسی لیے هم روح کو ایک جسم لطیف جوهر قدیم بالذات تسلیم کرتے هیں۔ کیوں که هم کو یه بات ثابت نہیں بالذات تسلیم کرتے هیں۔ کیوں که هم کو یه بات ثابت نہیں اس کے ساتھ قائم ہے بلکه هم کو صرف روح کا وجود ہے اور روح بغیر وجود کے ساتھ قائم ہے بلکه هم کو صرف روح کا وجود ثابت ہوا ہے بغیر وجود کسی دوسرے وجود کے اور اس لیے لازم ہے که اس کو جوهر تسلیم کیا جاوے نه غرض۔

مذھب اسلام نے روح کا موجود ھونا بیان کیا مگر آس کی حقیقت بیان نہیں کی خدا تعالیٰی کے اس قول کی نسبت کہ '' قبل الدوح سن امر رہی '' علماء نے دو قسم کی گفتکو کی ہے۔

بعضوں کی رائے ہے کہ حقیقت روح سے بحث کرنا جائز نہیں رکھا گیا ہے اور بعضوں کی یہ رائے ہے کہ روح کے قدیم یا حادث یعنی مغلوق ہونے کی نسبت جو مباحثہ تھا اُس کا جواب ہے۔ بہرحال اس سے کوئی مطلب سمجھا جاوے مگر جو تفصیل کہ ہم نے اوپر بیان کی اُس سے ظاہر ہوتا ہے کہ حقیقت روح کا جاننا بلکہ ہر ایک شے کی حقیقت کا جاننا فطرت انسانی سے خارج ہے۔ قرآن مجید تمام اُن چیزوں کی حقیقت کے بیان سے جن کا جاننا فطرت انسانی سے خارج ہے انکار کرتا ہے۔ اسی طرح حقیقت روح کو بھی بیان نہیں کیا ۔ عام چیزوں کی نسبت کثرت استعال و مشاہدہ کے بیان نہیں کیا ۔ عام چیزوں کی نسبت کثرت استعال و مشاہدہ کے جیزوں کی حقیقت بھی کچھ نہیں جانتے اگر وہ لوگ جنھوں نے چیزوں کی حقیقت بھی کچھ نہیں جانتے اگر وہ لوگ جنھوں نے روح کی نسبت سوال کرتے روح کی نسبت سوال کرتے تو خدا تعالیٰ یہی فرماتا کہ میں اسر ربین کے عن الے اے والے طیب قبل الے ماء و الے طیب میں اسر ربین ۔ غرض کہ ماہیت اشیاء کا جاننا انسانی فطرت سے خارج ہے ۔

جب که هم روح کو ایک جوهر تسلیم کرتے هیں تو اس کے مادی یا غیر مادی هونے پر بحث پیش آتی ہے مگر جب که هم کو اس کی ماهیت کا جاننا نا ممکن ہے ۔ دنیا میں بہت سی بھی که وہ مادی ہے یا غیر مادی نا ممکن ہے ۔ دنیا میں بہت سی چیزیں موجود هیں جو باوجود اس کے که وہ محسوس بھی هوتی هیں اور آن کے مادی یا غیر مادی هونے کی نسبت فیصله نہیں هو سکتا ۔ مثلاً هم ایک شیشے کے پئے کے ذریعه سے الیکٹری سٹی یعنی بجلی نکالتے هیں اور وہ نکاتی هوئی محسوس هوتی ہے اور ٹھوس اجسام میں سرایت کر جاتی ہے ۔ انسان کے بدن سے گذر جاتی ہے ۔ بیا انسان کے بدن میں محبوس بعض ترکیبوں سے ایک بوتل میں یا انسان کے بدن میں محبوس بعض ترکیبوں سے ایک بوتل میں یا انسان کے بدن میں محبوس

هو جاتی ہے۔ بعض ٹھوس اجسام ایسے ہیں جن میں نفوذ نہیں کر سکتی سگر اس کی ماھیت کا اور یہ کہ وہ شے مادی ہے یا غیر مادی تصفیہ نہیں ہو سکتا طرفین کی دلیلیں شبہ سے خالی نہیں ، یہی حال روح کے مادی یا غیر مادی قرار دینے کا ہے لیکن اگر وہ کسی قسم کی مادی تسلیم کسی قسم کی مادی تسلیم کر لیں تو کوئی نقصان یا مشکل پیش نہیں آتی ۔ البتہ اس قدر ضرور تسلیم کرنا پڑے گا کہ جن اقسام مادوں سے ہم واقف ھیں اس کا مادہ آن اقسام کے مادوں سے نہیں ہے کیوں کہ اُن سے منفرداً یا مجموعاً اُن افعال کا صادر ھونا ثابت نہیں ہوتا ہے جو افعال کہ روح سے صادر ہوتے ھیں ۔

شاہ ولی اللہ صاحب نے حجة البالغه میں لکھا ہے کہ تمام حیوانات میں به سبب اختلاط اخلاط کے قلب میں بخار لطیف پیدا ہوتا ہے جس کو حرارت غریزی کہتے ہیں آسی سے حیوان کی زندگی ہے جب تک وہ پیدا ہوتا رہتا ہے ۔ حیوان زندہ رہتا ہے جب آس کا بیدا ہونا بند ہو جاتا ہے حیوان میں جانا ہے آس کی مشال ایسی ہے جیسے گلاب کے پھول میں تمی یا کوئلے میں مشال ایسی ہے جیسے گلاب کے پھول میں تمی یا کوئلے میں آگ (اس زمانه کے موافق ٹھیک مثال یہ ہے کہ جیسے اجسام میں الیکٹری سٹی) مگر یہ بخار متولدہ سن الاخلاط روح نہیں ہے بلکہ یہ بخار جس کو وہ نسمه قرار دیتے ہیں روح کا می کب ہے اور روح کو آس سے متعلق ہونے کے لیے مادہ ہے پس روح اس نسمه یے جسم سے ۔

اس دعوے کی دلیل وہ یہ لاتے ہیں کہ ہم ایک بچہ کو دیکھتے ہیں کہ وہ جوان ہوتا ہے اور بڈھا ہوتا ہے اور آس کے بدن کے اخلاط اور وہ روح یعنی نسمہ جو ان اخلاط سے پیدا ہوتی ہے اور ہزاروں دفعہ بدلتے رہتے ہیں۔ وہ بچہ چھوٹا ہوتا ہے پھر بڑا

هو جاتا ہے کبھی گورا رنگ نکاتا ہے کبھی کالا پڑ جاتا ہے۔ جاهل هوتا ہے پھر عالم هو جاتا ہے اسی طرح بہت سے اوصاف بدلتے رهتے هیں مگر وہ وهی رهتا ہے جو تھا۔ اگر کسی شخص میں هم آن اوصاف کے بقا کا یقین نه کریں تو بھی اُس شخص کے بقا کا یقین کرتے هیں پس وہ شخص اُس کے سوا ہے اور جو چیز که اُس کے سبب سے یه ہے وہ نه روح ہے یعنی نسمه اور نه یه تشخصات هیں جو ابتداء خیال میں آتے هیں بلکه وہ حقیقی روح ہے۔ وہ چھوٹ کے ساتھ بھی اسی طرح ہے جیسے که بڑے کے ساتھ ہے۔ کالے کے کاستہ بھی اسی طرح ہے جس طرح که گورے کے ساتھ ہے (انتہی سلخصا) غرض که جس قدر غور کی جاوے حیوان میں علاوہ عناصر می کبھ کے فرض که جس قدر غور کی جاوے حیوان میں علاوہ عناصر می کبھ کے اور جو نتیجہ اُس ترکیب سے هوتا ہے ایک اور شے بھی پائی جاتی اور جو نتیجہ اُس ترکیب سے هوتا ہے ایک اور شے بھی پائی جاتی صادر هوتی ہے اور اُسی شے کو هم روح کہتے هیں۔

بے شک میں اس بات کا قائل ہوں کہ انسان میں اور تمام حیوانات میں ایک ہی سی روح ہے۔ انسان میں به سبب ترکیب اخلاط کے ایک قسم کی روح حیوانی پیدا ہوتی ہے جس کو نسمہ سے تعبیر کیا ہے اور روح حقیقی جو ''سا نحن فیہ'' ہے اس سے متعلق ہوتی ہے۔ اسی طرح تمام حیوانات میں بھی ترکیب اخلاط سے روح حیوانی پیدا ہوتی ہے ہم حیوانات میں بھی تعقل اور ارادہ پاتے روح حیوانی پیدا ہوتی ہے ہم حیوانات میں بھی وح کا ہونا تسلیم میں پس کوئی وجہ نہیں ہے کہ ہم اُن میں بھی روح کا ہونا تسلیم نہیں اور کوئی دلیل ہارے پاس ایسی نہیں ہے جس سے ہم نہیں اور کوئی دلیل ہارے پاس ایسی نہیں ہے جس سے ہم انسان کی روح کو اور جنس سے اور حیوانات کی روح کو اور جنس سے انسان کی روح کو اور جنس سے

قرار دیں سکیں اور اس لیے ہم انسان میں اور حیوانات میں ایک ہی جنس کی روح کے ہونے کو تسلیم کرتے ہیں ۔

لم يصدر من سائير الحيوانات ما يصدر من الاخر من الانسان و لم احدهما مكلف و الاخر غير مكلف

جب که هم نے روح کو سبب تعقل و ارادہ تسلیم کیا ہے تو اس سے ضرور لازم آتا ہے کہ روح فی نفسه مدرک و ذی ارادہ اور مصدر افعال هے مگر یه بات ثابت نہیں هوئی که جب که وه محرد نسمه سے اور نسمه محرد جسم سے هو تب بھی اُس سے افعال صادر ہوتے ہیں مثلاً ہم کسی درخت کے تخم کو خیال کریں کہ آس سی مادہ مہنیوں اور پتوں اور پھلوں کا موجود ہے مگر حالت موجودہ میں اس سے کوئی چیز حاصل نہیں ہو سکتی ۔ اسی طرح روح سیں تعقل اور سادہ سوجود ہے الا جب تک کہ اس کا تعلق نسمه سے اور نسمه کا تعلق بدن سے نه هو آس سے وه افعال صادر نہیں ھو سکتر ۔ صدور افعال کے لیر جسم کی ضرورت ھے پس اس جسم کی جس قسم کی بناوٹ ہوگی آسی قسم کے افعال آس سے صادر هوں کے ۔ اُس کی مثال بعینہ ایسی ہے جیسر دخان اور دخانی کل ۔ دخانی کل کے تمام ہرزوں کو حرکت دینر والی صرف ایک چیز ہے یعنی دخان مگر جس قسم کے پرزے بنائے گئے ھس آسی قسم کے افعال آن سے صادر ہوتے ہیں ۔ اسی طرح کو انسان اور حیوان سیں ایک جنس کی روح ہے مگر ہر ایک سے ہمقتضائے اُس کی صورت نوعیہ کے افعال صادر ہوتے ہیں انسان کے اعضا کی بناوٹ میں بھی ایک دوسرے سے کچھ فرق ہے اور سی سبب ہے کہ بعض انسانوں سے ایسر افعال صادر ہوتے ہیں جو دوسرے سے صادر ہونے ممکن نہیں

هیں۔ ایک کی آواز نہایت دل کش ہے دوسرے کی نہایت سہیب نه وہ اپنی آواز کو سہیب کر سکتا ہے اور نه یه اپنی آواز کو دل کش بنا سکتا ہے۔ ایک کے دماغ کی بناوٹ علوم دقیقه کے ایجاد کرنے کے لائق ہے۔ دوسرے کے دماغ کی بناوٹ عام بات کے سمجھنے کے بھی لائق نہیں۔ پس روح سے افعال مطابق بناوٹ آس جسم کے صادر ہوتے ہیں جن سے وہ متعلق ہے اور یہی سبب ہے کہ جو کچھ انسان کر سکتا ہے وہ حیوان نہیں کر سکتا ؛ بلکه بہت سے ایسے امر میں که ایک انسان کر سکتا ہے دوسرا انسان نہیں کر سکتا ہے دوسرا انسان نہیں کر سکتا ہوتے ہیں اور جو حیوان کر سکتا ہے وہ انسان نہیں کر سکتا ہوتے ہیں یہ تفاوت آن آلات کا ہے جن کے وسیله سے افعال روح کے صادر ہوتے ہیں۔

هم دیکھتے هیں که حیوانات کی بناوٹ اس قسم کی ہے که اس سے نہایت محدود افعال صادر هو سکتے هیں اور وہ بھی اکثر ایسے هیں جو آن کی زندگی کے لیے ضرور هیں اور آس تمام نوع کے ایک هی قسم کے افعال هوتے هیں اور قریباً وہ سب افعال ایسے هوتے هیں آن کو حاصل هو جاتے هیں۔ آن سے کوئی افعال ایسے صادر نہیں هو سکتے جن سے روح کی ترق یا تنزل کو کچھ تعلق هو اور آن سے روح کو اکتساب سعادت یا تنزل کو کچھ تعلق هو اور آن سے روح کو اکتساب سعادت یا انسان کے که آس کی بناوٹ ایسی هے جس سے افعال غیر محدود صادر هو سکتے هیں آن میں ترقی هو سکتی هے آن میں تنزل آ جاتا صادر هو سکتے هیں آن میں ترقی هو سکتی هے آن میں تنزل آ جاتا شوتے هیں وہ علوم عقلیه اور النہیه کا انکشاف کر سکتا هے آس کے اداراکت اور انکشافات کی کوئی حد نہیں هے ۔ آس سے ایسے افعال صادر هوتے هیں وہ علوم عقلیه اور النہیه کا انکشاف کر سکتا هے آس کے صادر هوتے هیں جو روح کے لیے باعث اکتساب سعادت یا شقاوت صادر هوتے هیں اور یہی وجه هے که وہ مکلف هے۔

یہ مسئلہ بلاشبہ نہایت دقیق مسئلہ ہے اُس کے ثبوت کے لیے عینی دلیل کا ہونا قانون قدرت کے بر خلاف ہے مگر اُس کے لیے ایسی قیاسی دلیلیں سوجود ہیں جو اس بات پر یقین دلا سکتی ہیں کہ روح سعادت یا شقاوت کا اکتساب کرتی ہے

یه امر تسلیم هو چکا هے که تعقل اور اراده روح کا خاصه هے ۔ اب هم دیکھتے هیں که انسان آن چیزوں کو اکتساب کرتا هے جو آس میں پہلے نه تھیں وہ جاهل هوتا هے پھر علوم کا اکتساب کر کے عالم هو جاتا هے وہ حقائق اشیاء کو جہاں تک که آن کا جاننا قانون قدرت کی رو سے ٹمکن هے نہیں جانتا پھر تجربه اور تحقیقات سے آن کا اکتساب کر لیتا هے ۔ جب که وہ پیدا هوا تھا آس کے خیالات بالکل سادے حیوان کے مانند تھے رفته رفته وہ مختلف باتوں کو اکتساب کرتا جاتا هے جس سوسائیٹی میں وہ پرورش پاتا هے آس کی تمام مادی و غیر مادی عادتیں اور خیالات کو اکتساب لیتا هے ۔

هم دیکھتے هیں که انسان بعضی دفعه نہایت نجس اور نا پاک میلا کچیلا سور کی مانند زندگی اختیار کرتا ہے اور کبھی نہایت صفائی اور ستھرائی اور اجلے پنے سے زندگی بسر کرتا ہے ۔

یه بهی دیکهتے هیں که کبهی آس دیں نهایت سفاک اور بے رحم عادتیں هوتی هیں وه خونخوار هوتا هے مردم آزاری کرتا هے عام قوائے بہیمیه آس پر ایسا غلبه کرتے هیں که وه ایک حیوان درنده بصورت انسان هو جاتا هے ۔ کبهی آس میں ایسی صلاحیت اور نیکی رحم اور تواضع ، برد باری اور سب کے ساتھ محبت و همدردی پیدا هوتی هے ۔ که ایک فرشته بصورت انسان دکھائی دیتا هے ان تمام

فضائل و زرائل کو وهی شے اکتساب کرتی هے جس کا خاصه تعقل و اراده هے یعنی روح کیوں که انسان کا جسم اور تمام اعضائے اندرونی تو برابر تبدیل هوتے رهتے هیں اور اس لیے یه نہیں کہا جا سکتا که وہ تعقل و اراده آن اعضاء کا خاصه تها یه ایسی واضح دلیل هے جس سے ثابت هوتا هے که روح سعادت یا شقاوت کا اکتساب کرتی هے اور اس کی حالت بمناسبت اس کے جس کا اس نے اکتساب کیا هے تبدیل هو جاتی هے فسیعید ان اکتسب سعادة و شعی ان اکتسب شقاوة ۔

الـمـسـكـلـة الـخـامـسـة

ان لـلانسان مـوت فـمـا حـقـيـقـة الـمـوت و لـلـروح بـقـاء بـعـد مـفـارقة الابـدان

آمید ہے کہ ہم اور ہارے اس مضمون کے پڑھنے والے ضرور ایک دن اس کی واقعی حقیقت سے واقف ہونے والے ہیں مگر اس زندگی میں جس قدر کہ موت کا حال معلوم ہو سکتا ہے وہ یہ ہے کہ اخلاط کے تغیر یا کسی ایسے عضو میں نقصان پہنچنے کے سبب جس سے آن بخارات کی تولید یا بقا کو زیادہ تعلق ہے جو ترکیب اخلاط سے پیدا ہوتے ہیں اور جن کو نسمہ سے تعبیر کیا ہے آن کی تولید موقوف ہو جاتی ہے اور موجودہ مضمحل ہو جاتے ہیں آس وقت انسان یا حیوان می جاتا ہے اور روح جس کو ابدان سے تعلق آسی نسمہ کے سبب سے تھا جسم سے علیحدہ ہو جاتی ہے ۔

مگر غور طلب یه بات هے که جس قدر زمانه تک روح کو نسمه سے مصاحبت رهی هے اس سے کچھ تاثر روح میں هوتا هے یا نہیں اور اگر هوتا هے تو بعد مفارقت ابدان وہ تاثر اس میں باقی رهتا هے یا نہیں ۔ هم دنیا میں دیکھتے هیں که تمام اجسام لطیف

جب آپس میں ملتر ہیں تو ایک اور قسم کا جسم حاصل کر لیتر ھیں ۔ اگر کیمیاوی ترکیب پر خیال کیا جاوے تو تمام اجسام سخت سے سخت و ثقیل سے ثقیل کی ترکیب صرف احسام لطیف هوائی سے ہے جن کو علم کیمیا میں گیاس یا نخارات سے تعبیر کیا ہے ـ پھر کوئی وجہ نہیں پائی جاتی کہ روح کو نسمہ کے ساتھ سلنے سے تاثر نہ ہوا ہو اور اس نے کوئی جسم جو اس کے پہلر جسم سے کسی امر سیں مختلف ہو حاصل نہ کیا ہو۔ اس کے تسلم کے بعد کوئی وجہ نہیں پائی جاتی کہ بدن سے مفارقت کرنے کے بعد پھر فی الفور روح کا وہ جسم بھی جو آس نے نسمہ کی مصاحبت <u>سے</u> حاصل کیا ہے تحلیل ہو جاوے ۔ نتیجہ اس تقریر کا یہ ہے کہ روح نسمه کی مصاحبت سے ایک اور حسم لطیف حاصل کرتی ہے اور وہ جسم روح نسمہ سے ترکیب پایا ہوا ہوتا ہے اور بدن سے مفارقت کرنے کے بعد بھی وہ جسم علی حالہ باقی رہتا ہے گو بعد کو روح کا کسی وقت نسمہ سے علیحد، ہو جانا بھی ممکن ہو کیوں کہ جن اسباب سے وہ جسم لطیف آپس میں مل کر ایک نیا جسم پیدا کرتے ہیں وہ دیگر اسباب سے تحلیل بھی ہو جاتے ہیں ۔ یعنی ایک دوسرے سے علیحد، بھی ہو جاتے ہیں پس بہی حال روح و نسمه کا ھوتا ہے۔ ھوا میں پھولوں کے اجزائے لطیف ملنر سے تمام ھوا خوشبو دار اور غلیظ چیزوں کے اجزائے رقیق ملنے سے بد بودار هو جاتى هے اور پهر وه اجزا تحليل هو جاتے هي اور هوا على حاله صاف رہ جاتی ہے ۔ اسی طرح وہ اجسام جو ترکیب کیمیاوی سے م کب میں دیگر اسباب و تاثرات سے تحلیل ہو حاتے میں پس روح و نسمه میں ترکیب کیمیاوی هوئی هو یا غیر کیمیاوی اس کا تحلیل ہونا ممکن ہے۔

جب روح کو ایک جسم لطیف جوهر مستقل بالذات تسلیم کیا

جاوے جیسا کہ ھم نے تسلیم کیا ہے تو اس کا فنا ھونا محالات سے معدوم ہیں موبی ہوتی ہوتی ان میں سے معدوم نہیں ھوتی صرف تبدیل صورت ھوتی ہے پانی آگ سے یا دھوپ کی تیزی سے خشک ھو جاتا ہے مگر معدوم نہیں ھوتا صرف صورت کی تبدیلی ھوتی ہے۔ آکسیجن اور ھائیڈ روجن علیحدہ علیحدہ ھو جاتے ھیں آکسیجن آکسیجن میں ھائیڈروجن ھائیڈروجن میں مل جاتی ہے اور ایک ذرہ برابر بھی کوئی چیز معدوم نہیں ھوتی پس روح کے معدوم ھونے کی کوئی وجہ نہیں ہے غایت مانی الباب یہ ہے کہ جب کمام اشیائے موجود میں تبدیل صورت ھوتی رھتی ہے تو روح کمیں بھی تبدیل صورت ھوتی رھتی ہے تو روح میں بھی تبدیل صورت ھوتی ہوئی اس کی امتناع پر ھارے پاس کوئی مشکل میں بھی تبدیل صورت ھوتی ہوتی اس کی امتناع پر ھارے پاس کوئی مشکل مذھب اسلام میں پیش نہیں آتی بلکہ بعض خیالات کی جو اھل اسلام میں مروج ھیں اور میری تحقیق میں ان کی بنا کسی معتبر سند پر میں مروج ھیں اور میری تحقیق میں ان کی بنا کسی معتبر سند پر میں ھے تائید ھوتی ہے۔ غرض کہ روح کے وجود کو تسلیم کرنا بھی لازم آتا ہے۔

المسترلة السادسة

ان سلمنا البقاء للروح فما حقيقة البعث و الحشر و النشر

بعث و حشر و نشر کی حقیقت بیان کرنے سے پہلے یہ بیان کرنا چاھیے کہ قیامت کے دن کائنات کا کیا حال ہوگا اور قرآن مجید میں اُس کی نسبت کیا بیان ہوا ہے اور اس کا سطلب کیا ہے اس لیے اولا ہم قیامت کا ذکر کرتے ہیں۔

قیامت کے دن کائنات کا جو حال ہوگا وہ قرآن مجید کی مندرجہ ذیل آیتوں میں مذکور ہے ۔

ر يوم تبدل الارض غير الارض و السموات و برزوا لله الواحد القمار (م، سوره ابراهيم هم) -

۲- يـوم تـكـون السماء كالـمهل و تـكـون الـجـبـال كالـعـهـن (.٥ سورة المعارج ٨ و ٩)

س يوم يكون الناس كالفراش المبشوث و تكون المجال كالعلم المنفوش (١٠١ سورة القارعه ٣ و م

م. كلا اذا دكت الارض دكّا دكّا و جاء ربك و الملك صناً صفاً (مم سورة الفجر ٢٣-٣٢)

ه- واذا نفخ في الصور نفخة واحدة وحملت الارض و الجبال فدكتا دكته واحدة فيوسئذ وقعت الواقعة وانشقت السماء فيهي يوسئذ واهيه والملك عدلتي ارجائها ويحمل عرش

ر۔ اس دن بدل دی جاوے گی زمین سوائے آس زمین کے اور بدل دئے جاویں گے آسان اور حاضر ھوں گے ساسنے خدائے واحد قہار کے ۔

۲- جس دن هوگا آسان تیل کی تلچهٹ کی مانند اور هو ویں گے ہاڑ رنگ برنگ کے آون کی مانند ۔

۳- جس دن هو جاویں گے آدمی پراگندہ ٹڈیوں کی مانند اور هو جاویں گے پہاڑ رنگ برنگ کی دھنی ہوئی اون کی مانند ـ

ہ۔ جس وقت توڑی جاوے گی زمین ریزہ ریزہ اور آوے گا تیرا پروردگار اور فرشتے صف کے صف ۔

۵- پھر جب پھونکا جاوے گا صور میں ایک دفعہ کا پھوکنا اور اٹھائی جاوے گی زمین اور پہاڑ پھر توڑے جاویں گے ایک دفعہ کے توڑنے سے پھر آس دن ھو پڑے گی ھونے والی (یعنی قیامت) اور یھئے

ربک یـوسئـذ ثـمـانـیه ـ (۹۹ سورة الحاقه ۱۷-۱۷)

-- يوم ترجف الارض و الجبال و كانت الجبال كثيباً مهيلا - (سورة المزمل م، ۱)
-- يوسا يجعل الولدان شيبا ن لسماء منفطربه - (سورة منرسل

۸- ان يـوم الـفـصـل كان ميـقـا تـا يـوم يـنـفـح فى الـصـور فـتـاتـون افـواجـا و فـتـحـت السمـاء فـكانـت ابـوابـا و سيـرت الـجـبـال فـكانـت سرابـا ـ (۸ م سورة الـنـبـاء ٢٠ - ٢٠)

۹ و ا ذ السماء انشقت و اذا
 اذنت لربها و حقت و اذا
 الارض سدت و القت سا فيها
 و تخلت و اذنت لربها

جاوے گا آسان پھر وہ آس دن ھو جاوے گا ڈھیلا اور فرشتے ھوں گے اس کے کناروں پر اور آٹھا ویں گے تیرے پروردگار کے عرش کو آن کے اوپر آس دن آٹھ۔

۲- آس دن که کانپے گی زمین اور پہاڑ اور هو جاویں گے پہاڑ ٹیلے بھر بھری ریت کے ۔

۱- وہ دن که کر دے گا لڑکوں کو بڈھا آسان پھٹ گیا ھوگا آس دن میں ۔

۸۔ بے شک فیصلہ کے دن کا وقت مقرر ہے جس دن پھونکا جاوے گا صور سیں تو تم آؤ گے گروہ اور کھولا جاوے گا آسان اور وہ ہو جاوے گا دروازے دروازے اور چلائے جاویں گے پہاڑ پھر ہو جاویں گے چمکتی ریت کی مانند ۔

۹- جس وقت که آسان
 پھٹ جاوے گا اور کان لگائے
 رہے گا اپنے پروردگا کے (حکم پر)
 اور وہ اسی لائق ہے اور جب که

وحقت ۔ (ہم ساورة انشقاق (0-1

زسن پھیلائی حاوے گی اور ڈال دے گی حو کچھ اس سی ھے اور خالی هو حاوے گی اور کان لگائے رہے گی اپنے پروردگار (کے حکم) پر اور وہ اسی لائق هم۔

> . ر ـ فاذا إنشقت السماء فكانت وردة كالدهان ـ (مد ـ سورة الرحميٰن ، ٢٣)

رز - اذالسماء انفطرت واذا الكواكب انتشرت و اذالـمحار فيجهرت واذا القبور بعشرت علمت نفس ساقدست و اخرت ـ (۸۲ - سورة انفطار ، ۱۰۰۱)

١٠٠ و اذا الشمس كورت و اذا النجوم انكدرت و اذا الهجيال سرت واذا العشار عطلت و اذا الوحوش حشرت و آذا الــحار شجرت و اذا النفوس زوسمت و اذا المؤدة سللت باي ذنب قتلت و اذا الصحف نشرت و اذاالسماء كشطت و

٠١٠ پهر جب يـهـــ جاوےگا آسان تو ہوگا سرخ لعل رنگر ہوئے چمڑے کی مانند ۔ ١١٠ حب كه آسان يهث حاوے کا اور حب کے تاریح حهر یاهس کے اور حب که سمندر پھوٹ ہیں کے اور جب که قبرین پهاری حاوین کی حان لرگی هر جان جو کچه آگے بھیجا ہے اور پیچھر چھوڑا ہے۔ ١٠- جب که سورج لپيڻا حاوے گا اور حب که تاریح دھندلر ھو جاویں گے اور حب که بہاڑ چلائے جاویں گے اور جب که دس مهینر کی گابهن اوٹنی بیکار چھٹی رھیگی اور جب که وحشی جانور (آدمیوں کے ساتھ اکٹھے کیر جاویں کے اور جب که سمندر آگ کی سانند

اذالجحیم سعرت و اذا الجنة ازلفت علمت نفس ما احضرت ـ (۸۱ ـ سورة التكویر ـ ۱–۱۰

سرد اذارجت الارض رجاً و بست الجبال بسا فكانت هباء منبثاً (٥٦ ـ سورة الواقعه ـ ٣-٢)

مرا وسا قدروا الله حق قدره و الارض جميعا قبضة يوم القياسة والسموات سطويات بيمينه سبحانه و تعالى عما يشركون و نفيخ في الصور في السموات و نفيخ في الارض الا من في الارض الا من شاء الله

بھڑکائے جاویں کے اور جب کہ جانیں جوڑا جوڑا کی جاویں گی اور جب کہ جب کہ زندہ گاڑی ہوئی لڑکی پوچھی جاوے گی کہ کس گناہ کے بدلے وہ ماری گئی اور جب کہ اعال نیامے کھولے جاویں گے اور جب کہ آسان کی کھال بھیچی جباوے گی اور جس وقت دوزخ جاویں گے اور جست پاس دھکائے جاویں گے اور جست پاس دھکائے جاویں گے جان لے گی ہر جان کہ کیا حاضر لائی ہے۔

۱۳- جب که هلائی جاوے گی زمین زور کے هلانے سے اور ذره کرے جاویں گے پہاڑ بہت چھوٹے ذرہ پھر ھو جاویں گے پھیلے ھوئے غبار کی مانند ۔

ہے۔ اور نہیں قدر کی انھوں نے اللہ کی حق اس کی قدر کرنے کا اور ساری زمین اس کی مٹھی میں ھوگی قیامت کے دن اور آسان لیٹے ھوئے ھوں گے آس کے دائیں ھاتھ پر پاک ھے وہ اور برتر ھے آس کے شریک کرتے

ثم نفخ فيه اخرى فاذا عمم قياسا ينظرون و اشرقت الارض بنور ربها و وضع الكتاب وجئى بالنبيين والشهداء وقضى بينهم بالحق وهم لا يظلمون -(٣٩ سورة زمر - ٦٢-٣٩) -

هیں اور پھونکا جاوے گا صور میں پھر بہوش ھو جاوے گا جو آسانوں میں ھے سگر جس کو چاھے خدا ۔ پھر پھونکا جاوے گا صور میں دفعہ یکایک وہ کھڑے ھوئے ھوں گے دیکھتے اور روشن ھو جاوے گی زمین اپنے پروردگار کے نور سے اور رکھی جاویگی کتاب اور حاضر کیا جاوے گا۔ پیغمبروں کو اور گواھوں کو اور قواھوں کو اور فیصلہ کیا جاوے گا آن میں اور دینی لوگوں میں) ساتھ حق کے

10- جس دن آوے گا آسان دھواں ھو کر ڈھانک لے گا لوگوں کو که یه هے عذاب دکھ دینے والا۔

اور وہ نہ ظلم کیے جاوینگے ـ

۱۹- جس دن پهونکا جاوے گا صور میں تو گهبرا جاویگا جو کوئی آسانوں میں ھے اور جو زمین میں مگر جس کو چاھے اللہ اور ھر ایک اس کے سامنے آوینگے ذلیل ھر کر اور تو دیکھے گا پہاڑوں کو (جن کو) تو سمجھتا ہے جمے ھوئے کہ

۱۵- یوم تاتی السماء بدخان مبین یغشی الناس هذا عذاب الیم- سوره خان ۹ و ۱۰)

۱۹- و ينوم يننفنخ في النصور فنفرع من في السماوات و من في الارض الا من شاء الله و كل اتنوه داخرين و تدرى النجيبال تحسيبها جامدة و هي تنمر سر السحاب - (۲۷ سورة نمل ۹۸ و ۹۰) -

وہ چلے جاتے ہیں بادل کے چلنے کی مانند ۔

۱۰ جس دن پھٹ جاویگا آسان اچھی طرح کے پھٹنے سے اور چلنے لگیں گے پہاڑ ایک قسم کے چلنے سے ۔

۱۸- جب که تاری کے نورکئے جاویں گے ۔ جب که آسان پھاڑے جاویں گے اور جب که پہاڑ ریزہ ریزہ کیے جاویں گے ۔ جب که زمین هلائی جاوے گی اپنے هلنے سے اور خاکے گی زمین اپنے بوجھ ۔

۰۲۔ جو کوئی زوین پر ھے فنا ھونے والا ھے اور باقی رہے گی ذات تیرے پروردگار بزرگی والے اور اکرام والے کی ۔

اب دیکھنا چاھیے کہ ان آیتوں میں نسبت کائنات موجودہ کے کیا بیان ھوا ہے۔

زمین کی نسبت بیان ہوا ہے کہ بدل دی جاوے گی زمین سوائے اس زمین کے اور یہ بیان ہے کہ زمین ریزہ ریزہ کر دی جاوے گی صور پھونکنے کے ساتھ زمین اٹھائی جاوے گی اور ایک دفعہ میں توڑ دی جاوے گی ۔ قیامت کے دن زمین کپکپائی اور ھلائی جاوے گی ۔ قیامت میں زمین خدا کی مٹھی میں ہوگی ۔

۱۵ یسوم تسمور السماء
 ۱۵ و تسییر الجبال سیرا
 ۱۵ سورة الطور - ۹) -

مرد فاذا النجوم طمست و اذا السماء فرجت و اذالجبال نسفت (22 سوره مرسلات م-1)-

91- اذا زلىزلت الارض زلىزالها و اخرجت الارض اثقالها - (99 - سورة الزلزله - 1 و 7) -

. ۲- کل سن عـلمیـهـا فـان و یـبـقـلی وجـه ربـک ذو الـجـلال و الاکرام ـ (۵۵ ـ سورة الرحان ۲۶ و ۲۷) زمین کھینچی جاوے گی یا پھیلائی جاوے گی اور جو کچھ آس میں ہے وہ ڈال دے گی اور خالی ہو جاوے گی -

پہاڑون کی نسبت بیان ہوا ہے کہ وہ رنگ برنگ کی دھنی ہوئی اون کے مانند ہو جاویں گے ۔ صور پھو کنے پر پہاڑ آٹھائے جاویں گے اور توڑ دیے جاویں گے وہ ھلا دئے جاویں گے اور بھر بھری ریت کے ٹیلے کی مانند ہو جاویں گے ۔ وہ ذرہ ذرہ کیے جاویں گے اور غبار کی مانند ہو جاویں گے ۔ وہ جمے ہوئے دکھائی دیتے ہیں وہ بادلوں کی طرح چلے جاتے ہوں گے یا ایک طرح کے چلنے سے چلتے ہوں گے وہ سراب یعنی چمکتے ہوئے ریت کی مانند ہو جاویں گے ۔

سمندر کی نسبت بیان ہوا ہے کہ آگ کی مانند بھڑکائے جاویں گے ۔ اپنی جگہ سے پھوٹ بہیں گے ۔

آسانوں کی نسبت بیان ہوا ہے کہ آسان بدل دیے جاویں گے وہ سوائے ان آسانوں کے ۔ وہ تیل کی تلچھٹ کی سانند ہو جاویں گے وہ پھٹ جاویں گے سرخ رنگے ہوئے چمڑے کی مانند ہوں گے اور ڈھیلے و سست پڑ جاویں گے اور دروازے دروازے کی مانند ہو جاویں گے وہ خدا کے دائیں ہاتھ پر لپیٹ لیے جاویں گے وہ دھوئیں کی مانند ہوں گے وہ چلیں گے ناہم ہوں گے وہ پھٹ جاویں گے اور ایک طرح کے چلنے سے چلیں گے آن کی کھال کھینچی جاوے گی ۔

سورج اور تاروں کی نسبت بیان ہوا ہے کہ سورج لپیٹ لیا جاوے گا تارے جھڑ جاویں گے اور ایک جگہ آیا ہے کہ تارے دھندلے ہو جاویں گے بے نور ہو جاویں گے -

انسان اور نفوس کی نسبت بیان ہوا ہے کہ آدمی ٹڈیوں کی مانند پراگندہ ہو جاویں گے ۔ آدمی یا روحیں فوج فوج آویں گے ۔ وحشی جانور آدمیوں کے ساتھ اکٹھے ہو جاویں گے ۔

سورۂ رحان میں کہا ہے کو جو کوئی زمین پر ہے فنا ہونے ۔ والا ہے اور پروردگار کی ذات باقی رہے گی ۔

اب غور کرنا چاھیے کہ اگلے علماء نے ان آیتوں کی نسبت کیا کہا ہے اور کیا نتیجہ نکالا ہے۔ سورۂ ابراھیم میں جو یہ آیا ہے کہ قیامت میں زمیں آسان بدل جاویں گے آس کی نسبت تفسیر کبیر میں لکھا ہے کہ بدلنا دو طرح پر ھو سکتا ہے ایک اس طرح کہ اُس شے کی ذات باقی رہے اور اُس کی صفتیں بدل جاویں دوسرے اس طرح کہ اُس شے کی ذات فنا ھو جاوے اور اس کی حوجب جگہ دوسری موجود ھو جاوے اس کے بعد تفسیر کبیر میں بموجب محاورہ عرب کے اس کی مثالیں لکھی ھیں '' تبدیل کے لفظ کا استعال دونوں طرح پر ھوتا ہے اسی بناء پر ایک گروہ عالموں کی یہ رائے ہے کہ ب

ففى الايته قولان الاول ان المراد تبديل الصفة لا تبديل الذات قال ابن عباس رضى الله عشها هى تلك الارض الا انها تغيرت فى صفا تها فتسير عن الارض جبالها و تفير بحارها و تسوى فلا يرى فيها عوج ولا است و روى ابوهريره رضى الله عشه عن النبى صلىالله عليه وسلم انه قال يبدل الله الارض غير الارض فيبسطها ويمدها مدالاديم العكاظى فلا ترى فيها عوجا ولا استا وقوله والسموات اى تبدل السموات غير السموات وهو كقوله والسموات اى تبدل السموات غير السموات عهده ولا ذو وهو كقوله والمعنى ولا ذو عهد فى عهده بكافر ولا ذو عهد فى عهده بكافر و تبديل وخسوف قمرها وكوناها ابوابا و انها تارة تكون كالمهل و تارة تكون كالمهل و تارة تكون كالمهل و تارة تكون كالمهل و تارة تكون كالدهان و والقول الشانى ان المراده تبديل الذات قال ابن

مسعود تبدل بارض كالفضة البيداء

يسفك عليهادم ولم تعمل عليها خطيئة فهذا شرح التقوليين و من الناس من رجيح القول الاول قال لان قوله يوم تبدل الارض المراد وهذه الارض و تبدل صفة مضافة اليها وعند حصول الصفة لابدوان يكون الموصوف موجودا فلما كان الموصوف بالتبدل هو هذه الارض وحب كون هيذه الارض باقية عند حصول ذالك التبدل ولا يمكن ان تكون هذه الارض باقيه مع صفاتها عند حصول ذالك التبدل والاستنع حصول التبدل فوجب ان يكون الباق هو الذات فشبت ان هذه الاية تقتضى كون الذات باقيه والقائلون بهذا التول هم اللهذيان ياقولون عند قيام القيامة لا يعدم الله اللذوات والا جسام وانما يعدم صفاتها واحوالها واعدم انه لا يبعدان يقال المراد من تبديل الارض والسوات هو انه تعالى بجعل الارض جهنم و بجعل السموات الجنة والدليل عليه قوله تعاللي كلاً أن كتاب الابرار لفي عيلين وقوله كلاً ان كتاب الفجار لفي سجين ـ (تفسير كبير جلد م صفحه ٤٨) -

اس آیت میں تبدیل سے آسان و زمین کی صفات کا تبدیل هو جانا مراد ہے نه آن کی ذات کا ۔ ابن عباس نے فرمایا که زمین سے یہی مراد ہے مگر آس کی صفتیں تبدیل هو جاویں گی چاڑ زمین پر سے اڑ جاویں گے دریا پھوٹ نکلیں گے زمین ایسی برابر هو جاوے گی که کمیں اونچا نیچا نه دکھائی دے گا ۔ حضرت ابو هریره نے جناب رسول الله صلی الله علیه وسلم سے روایت کی ہے که خدا زمین کو بدل دے گا اور عکاظی چمڑے کی طرح اس کے پھیلا کر بچھائے گا

کہیں اُس میں اونچا نیجا نظر نے آئے گا۔ خدا کا دیہ قول، ''و السموات'' اس کے بھی یہی معنلٰی ہیںکہ آسان بدل کر اور اس طرح کا کر دیا حائے گا حیسا کہ اس حدیث کا سطلب ہے کہ مسلان کافر کے بدلر نہیں مارا حائے گا اور نه وہ کفر حس سے عہد و بیان ھے عہد و پیان کے زمانہ تک رو یعنی وہ شخص بھی کافر کے بدلر نه مارا جاوے گا جس سے معاهدہ هو چکا هے معاهدہ کے زمانه تک آسانوں کا بدلنا یوں ہوگا کہ ستارے متفرق ہو کر ٹوٹ یھوٹ حائس کے آفتاب لیپٹ لیا حائے گا جاند دھندلا ھو حائے کا ۔ آسان میں دروازے ہو جاویں کے اور وہ کبھی تو تیل کی تلجیہ کا سا ہوگا اور کبھی سرخ چمڑے کی مانند۔ دوسرا فرقہ کہتا ہے کہ تبدیل سے آسان و زمین کی ذات کا بدل حانا مراد ھے ۔ ابن مسعود کہتر ہیں کہ یہ زمین بدل کر چمکتی ہوئی چاندی بن جاوے گی جس پر نه کبھی خوں ریزی هوئی هے اور نه کبھی اس پر گناه کیا گیا ہے ـ بعضوں نے قول اولکو ترجیح دی ہے وہ یہ کہتے ہیںکہ آیت میں اسی زمین کی نسبت تبدیلی کا لفظ ہے اور چوں کہ تبدیل ایک صفت ہے تو ضرور ہے کہ اُس کے تحقق کے وقت یہی موصوف یعنی مہی زمین موجود ھو یہ بھی ظاھر ہے کہ تبدل کے وقت زمین کی صفتیں تو موجود ہونے کی نہیں تو اب ذات ہی کا باقی رہنا آیت سے لازم آیا جن لوگوں کا یہ مذھب ہے وہ کہتر ھیں کہ قیامت قائم ہونے کے وقت اللہ پاک جسموں اور ذاتوں کو سرمے سے معدوم نہ کر دے گا بلکہ صرف ان کی صفتیں معدوم ہو جاویں گی ممکن ہے کے زمین اور آسان کے بدلنے سے یہ مراد لی جہاوے کہ زمین خدا کو دوزخ بنا دے گا اور آسانوں کو مشت اور خدا کا یه قول "كلا ان كتاب الابرار لفي عيلين كلا ان كتاب الفجار لفي سجين " اس مطلب كي دليل هے ـ

ان تمام حالات سے جو اوپر مذکور ہوئے ثابت ہوتا ہے کہ قیامت کے دن اس دنیا کے تمام حالات بدل جاویں گے جو چیزیں کہ اب موجود ہیں وہ معدوم نہیں ہونے کیں ۔ اُن کے خواص و اوصاف تبدیل ہو جاویں گے ۔

شاہ ولی الله صاحب نے اپنی تفہیات میں واقعات قیاست کو وقائع جو سے تعبیر کیا ہے یعنی آن واقعات کا جو آسان و زمین کے درمیان میں ہوتے ہیں وہ لکھتے ہیں که "تعبود تلک البوقائع الی الانوار المحیطة فیقع ظلما فیستد العالم لواقعة عظیمة من وقایع الجو فتھلک البشر و الموالیدو یعود کل عنصر لمحلة" انتہای۔ یعنی واقعات قبل قیاست مثل عالم میں فسادات ہونے اور دجال کے آنے اور حضرت عیسلی کے تشریف فرسانے کے بعد انوار محیط اللہیه واقعه عظیمه کے ہونے پر متوجه هوں کے اور واقعات جو یعنی جو آسان و زمین کے بیچ میں واقع هوت کے بشر و موانید سب می جاویں کے اور هر ایک عنصر اپنی جگه پر چلا جاوے گا۔ خلاصه اس کا یه ہے که ایک عنصر اپنی جگه پر چلا جاوے گا۔ خلاصه اس کا یه ہے که به نظام آلٹ پلٹ ہو جاویے گا۔

تعقیقات جدیدہ کی رو سے جہاں تک معلوم ھو سکا ھے چاند کی نسبت معلوم ھوا ھے کہ کسی زمانہ میں آس میں آبادی تھی اور ھوا مثل کرۂ ارض کے آس کے محیط تھی ، پانی بھی آس میں تھا ۔ مگر اب محض ویران اور سو کھ کر کھنگر ھوگیا ھے کوئی ذی نفس آس میں نہیں ھے ۔ یہ بھی کہا جاتا ھے کہ بعض کواکب جو حقیقت میں بہت بڑے بڑے کرۂ زمین سے بھی سیکڑوں حصہ بڑے تھے منتشر ھوگئے اور اور کروں میں جا ملے یہ بھی خیال کیا جاتا ھے کہ زمین کا مدار جو گرد آفتاب کے چھوٹا ھوتا جاتا ھے کہ زمین کا مدار جو گرد آفتاب

نومانه ممتد کے بعد جس کا اندازہ نہیں ہو سکتا اور گو وہ لاکھوں کڑوروں برس کے بعد ھو جب زمین کا مدار ست چھوٹا ھو حاوے گا تو دنیا کا کیا حال ہوگا۔ کیا سمندر نہ آبل حاویں کے ۔ کیا ہاڑ ریت کی مانند نه هو جاویں گے ۔ کیا یه زمین نه بدل جاوے گی ۔ یه آسان جو هم کو ایسا نیلا نیلا خوب صورت دکھائی دیتا ہے کیا وہ تیل کی تلجہٹ کی مانند اور کبھی سرخ چمڑے کی مانند نظر نه آوے گا۔ کیا یہ ستارے بے نور نه دکھائی دیں گے۔ پس واقعه قیامت ایک ایسا واقعه ہے جو امور طبعی کے مطابق اس دنیا پر واقع هوگا اور ضرور واقع هوگا مگر یه کوئی نهیں کہہ سکتا کہ کب واقع ہوگا ۔ خدا تعالٰی نے اس طبعی واقعہ کو جا مجا اور مختلف تشبیہوں سے اس لیے بیان کیا ہے کہ بندوں کو خداکی تدرت کاسلہ پر وثوق ہو اور اس وحدہ لا شریک کے سوا کسی دوسری چیز کو اپنا معبود نه بنائس ـ دنیا مس ماڑوں کی پرستش ھوتی تھی ، سمندر پوجے جاتے تھے ، آگ کی پرستش کی جاتی تھ**ی ،** چاند سورج کی پرستش ہوتی تھی ۔ ستاروں کی پرستش کے لیے ہیاکل بنائی گئی تھیں اور آن کی پرستش ہوتی تھی اس لیے خدا نے اس طبعی واقع کو جتلایا که یه سب چیزیں ایک دن فنا یعنی متغمر ھونے والی ھیں اور آن میں کوئی بھی معبود ھونے کے لائق نہیں ھے پس قیاست کا ذکر جا بجا اسی غرض سے آیا ہے کہ عجائب مخلوقات خدا کی جن میں مخلوقات زمین اور آسان اور کواکب زیادہ تر عجیب دکہائی دیتے ہیں اور جن کی پرستش انواع و اقسام سے لوگوں نے اختیار کی تھی آس کو چھوڑیں اور صرف خدائے واحد کی جو آن سب چیزوں کا پیدا کرنے والا اور پھر فنا کرنے والا ہے پرستش اختیار کریں ـ

یه قیاست جس کا اوپر ذکر هوا یه تو کائنات پر گزرے گی

مگر اصلی قیامت جو انسان پر گزرے گی وہ وہ ہے جس کا ذکر سورہ قیامہ میں آیا ہے اور اُس کا خلاصہ ان دو لفظوں میں ہے کہ '' من سات فقد قیامت قیامتہ '' خدا تعالیٰی فرماتا ہے کہ ۔

يسئل ايان يوم القياسة فاذا برق البصرو خسف القحر و جدمع الشمس و القمر يقول الانسان يوسئذ اين المفر كلا لا وزراللي ربك يوسئذ المستقر ينبو الانسان يوسئذ يما قدم اخربل الانسان على نفسه بصيرة و لوالتي معاذير ـ (٥٥ سوره قياسه)

"انسان پوچھتا ہے کہ کب ہوگا قیاست کا دن پھر (وہ دن اس وقت ہوگا) جب کہ آنکھیں پتھرا جاویں گی چاند کالا پڑ جائے گا یعنی آنکھوں کی روشنی جاتی رہے گی اور آنکھیں اندر بیٹھ جاویں گے چاند سورج یعنی رات دن اکھٹے ہو جاویں گے کہ اس کو کچھ تمیز نہ رہے گی کہ دن ہے یا رات سب چیز دھندلی دکھائی دے گی اور اسی بناء پر کہا گیا ہے کہ انسان دن میں کسی وقت مرے اس کو شام کا وقت دکھائی دے گا۔"

وجوه يومئذ ناضرة اللى ربها ناظره و وجوه يومئذ باسرة تعظن ان يفعل بها فاقره كلا اذابلغت السراقي وقيل سن راق وظن انه الفراق و التفت الساق بالساق اللى ربك يومئذ المساق ـ (22 ـ سورة قيامه)

''انسان کہے 'ہ کہ اس دن بھاگ جانے کی کہاں جگہ ہے۔ ھرگز کوئی جگہ پناہ کی نہیں۔ تیرے پروردگار ہی کے پاس آس دن ٹھیرنے کی جگہ ہے۔ اُس دن جان لے گا انسان کہ اس نے کیا آگے بھیجا ہے اور کیا بیچھے چھوڑا ہے بلکہ انسان اپنے آپ کو خوب پہچانتا ہے گو کہ درمیان میں بہت سے عذر لا ڈالے۔''

اس دن کتنے منه تر و تازه هوں کے اپنے پروردگار کی طرف

دیکھتے ہوں گے اور اُس دن کتنے منہ تھوتائے ہوئے ہوں گے گان کریں گے کہ ان پر مصیبت پڑنے والی ہے۔ جس وقت کہ جان نرخرے میں پہنچتی ہے اور کہا جاتا ہے کون۔ پھر آواز نہیں نکلتی اتنا ہی کہہ کر چپ ہو جاتا ہے۔ پھر کہا جاتا ہے اور جان لیا کہ جھاڑنے پھونکنے والا۔ پھر چپ ہو جاتا ہے اور جان لیا کہ بے شک اب جدائی ہے اور لپیٹ لیا ایک پنڈلی کو دوسری پنڈلی سے۔ اُس دن تیرے پروردگار کے پاس چلنا ہے۔

یه تمام حالت جو خدا نے بتائی انسان پر مرنے کے وقت گزرتی ہے اور اس سوال کے جواب میں که قیامت کے دن کب ہوگا بتائی گئی ہے اور اس سے صاف ظاہر ہے کہ ہر انسان کی اصلی قیامت اس کا مرنا ہے اور '' مین سات فقد قامت قیامت اس کا مرنا ہے اور '' مین سات فقد قامت قیامت '' بہت صحیح و سچا قول ہے اگرچه اگلے علماء نے اس باب میں اختلاف کیا ہے کہ انسان کی ایسی حالت کب ہوگا بعثت کے وقت بعضوں نے کہا کہ موت کے وقت بعضوں نے کہا بعثت کے وقت بعضوں نے کہا دوزخ کو دیکھنے کے وقت مگر قرآن مجید کی بعضوں نے کہا دوزخ کو دیکھنے کے وقت مگر قرآن مجید کی عبارت سے صاف ظاہر ہے کہ یہ بیان موت کے وقت کی حالت عبارت سے صاف ظاہر ہے کہ یہ بیان موت کے وقت کی حالت کا ہے ، جس میں ذرا بھی شک نہیں ہو سکتا۔ جن عالموں نے خسف اس حالت کو وقت موت کے حالت قرار دیا ہے اُنھوں نے خسف قمر کے لفظ سے آنکھ کی روشنی کا جاتا رہنا مراد لیا ہے قسم کبیر میں ہے ۔

فاما سن يجعل برق البصر سن علامات الموت قال سعنى و حنف القمرائ ذهب ضؤالبصر عند الموت يقال عين خاسفة اذا فقت حتى غابت حد قتها في الراس و اصلحا سن خسف الارض اذا ساخت بما عليها و قوله جمع الشمس والقمر كناية عن ذهاب الروح اللى عالم الاخرة كالشمس فانه يظهر فيها المغيبات و تنفتح فيها المبهمات و الروح كالقمر كما ان القمر يقبل النور من الشمس فكذ الروح تقبل تقبل نور المعارف من عالم الاخرة ولا شك ان تنفسير هذالاية بعلامات القيامة اوللى من تنفسير ها بعلامات المموت و اشدا مطابقة لها ـ (تفسير كبير جلد ، مفحه ، م)

یعنی جو لوگ که آنکه کے چوندھیانے کو موت کی علامت قرار دیتے ھیں وہ ''حنف القصر'' کے معنی یه کہتے ھیں که نگاہ کی روشنی جاتی رہے گی۔ عرب میں جب آنکه پھوٹ جاوے یہاں تک که ڈھیلا سر میں بیٹھ جاوے تو کہتے ھیں ''عین خاسفه '' یہ معاورہ ''خسف الارض '' سے نکلا ہے جس کا استعال زمین کے دھنس جانے کے وقت ھوتا ہے اور خدا کا یه قول ''جمع الشمس والقصر'' روح کے عالم آخرت کی طرف چلے جانے سے کنایه ہے گویا وہ دوسری دنیا ایک آفتاب ہے کیوں که اس میں چھپی اور مبہم باتیں کھل پڑیں گی اور روح گویا چاند ہے جس طرح چاند آفتاب سے روشنی پاتا ہے اسی طرح روح بھی عالم آخرت سے معرفت کے انوار حاصل کرتی ہے اور کچھ شک نہیں که اس آیت کی تفسیر سے تواک علامتوں سے کرنی اس سے کہیں بہتر ہے کہ اُس کی قیامت کی علامتوں سے کرنی اس سے کہیں بہتر ہے کہ اُس کی قیامت کی علامتوں سے کرنی اس سے کہیں بہتر ہے کہ اُس کی قیامت کی علامتوں سے کرنی اس سے کہیں بہتر ہے کہ اُس کی

صاحب تفسیر کبیر کا یه کهنا که اس آیت کی تفسیر علامات قیامت سے کرنی به نسبت علامات موت کے بہتر ہے کسی طرح صحیح نہیں ہو سکتا ۔ الفاظ کلا اذا بلغت التراق و قیل من راق و ظن انه الفر اق و التفت الساق بالساق اللی ربک یوسئد المساق بالکل شاہد اس بات پر ہیں که اس تمام سورہ میں جو حالات مذکور ہیں وہ حالت عدد الموت کے ہیں۔

جمع الشمس و القمر كى جو توضيح تفسير كبير سين بيان هوئى هـ وه بهى دور ازكار هـ خسف قمر يعنى آنكهون كى روشنى جانے اور آنكهون كى روشنى جانے اور آنكهون كے بيان جمع الشمس و القمر كا لفظ صاف دلالت كرتا هـ آن دونوں سير تميز نه رهنے كا چاند كا تعلق رات سے هـ اور سورج كا دن سے اس ليے آن دونوں سے رات دن كا كنايه كيا گيا هـ اور مطلب يه هـ كه موت كے وقت اس بات كى تميز كه دن هـ يا رات كچه نه هوگى ـ

هارے اس بیان سے یہ مطلب نہیں ہے کہ جو واقعات کائنات پر ایک دن گذرنے والے ہیں اور جن کا بیان پہلے ہو چکا وہ نه هوں گے بلکه وہ اپنے وقت پر هوں گے اور جو کچھ آن میں هونا هے وہ هوگا اور اس زمانه کے انسان اور وحوش و طیور پر جو کچھ گذرنا هے گذرے گا اور آس وقت جو حال روحوں اور ملائکہ کا هونا هے وہ هوگا مگر جو لوگ اس سے پہلے مر چکے هیں آن کے لیے قیامت آسی وقت سے شروع هوتی هے جب که وہ مرے ۔

حشر اجساد

حشر اجساد کی نسبت جیسا که شرح مواقف میں لکھا ہے پانچ مذھب ھیں ـ

اعلم ان الاقوال الممكنة في مسئلة المعادلا تزيد عن خمسة (الاول) ثبوت المعاد الجسماني فقط و هو قول اكثر المتكلفيين النافيين النفس الناطقه (والشاني) ثبوت المعاد الروحاني فقط و هو قول الفلايفة الالهيين (والشالث) ثبوتهمامعاً و هو قول كثير من المحققين كالحليمي و ابغزالي و الراغب و ابو زيد الدبوسي و معمر من قدماء المعتزله و جمهور متاخري الاسامية وكشير من الصوقبة فانهم قالوالانسان بالحقيقة

هو النفس الناطقه و هي المكلف و المطيع و العاصى و المساب و المعاقب والبدن يجرى منها مجرا الالة و النفس باقيه بعد فساد البدن فاذا اراد الله حشر الخلايق خلق لكل واحد من الارواح بدنا بتعلق به و يتضرف فيه كماكان في الدنيا (الرابع) عدم ثبوت شي منهما و هذ قول القدماء من فلاسفة الطبعيين (و الخامس) المتوقف في هذه و هو المنقول عن جالينوس فانه قال لمريتبين لي ان النفس هيل هي المزاج فينعدم عند الموت فيستحيل اعادتها اوحي جوهر باق بعد فساد البينة فيمكن المعاد (شرح مواقف)

یعنی ـ معاد کے مسئلہ ہیں جو اقوال کہے جا سکتے ہیں وہ صرف پانخ ہیں :

- (۱) صرف معاد جسانی کا ثبوت اور یه آکثر آن متکلمین کا مذهب هے جو نفس ناطقه کا انکار کرتے هیں ـ
- (۲) صرف سعاد روحانی کا ثبوت یـه مذهب فلاسفه اللهیین کا هے ـ
- (۳) دونوں کا ثبوت اور یہی اکثر محققوں کا مذھب ہے مثلاً حلمی ، غزالی ، راغب ، ابوزید ، الادموسی معمر (جو که قدیم سعتزلیوں میں سے ہے) اور عموماً متاخرین شیعه اور اکثر صوفیوں کا ۔ یه لو ً گ کہتے ھیں که انسان حقیقت میں صرف نفس ناطقه کا نام ہے وھی مکاف ہے وھی عاصی اور سطیع ہے اسی پر ثواب عذاب ہوتا ہے اور بدن تو بجائے ایک آله کے کام دیتا ہے ۔ جسم خراب ھو جاتا ہے پہر بھی نفس باقی رھتا ہے پسر خدا قیامت کے دن مخلوقات کو اٹھانا چاہے گا

تو ہر ایک روح کے لیے ایک مخصوص جسم بنا دےگا جس سے روح کا تعلق ویسا ہی ہوگا جیسا کہ دنیا میں تھا ـ

- (س) ان دونوں میں سے کسی کا ثبوت نہیں فلاسفه طبعیین مدس سے قدما کا یہی مذہب ہے ۔
- (۵) بالکل سکوت اختیار کرنا یه مذهب جالینوس سے منقول هے اُس کا قول هے که مجھ دو یه نہیں ثابت هوتا که نفس آیا مزاج هے تو موت کے وقت معدوم هو جاوے کا تو اس کا اعادہ نا ممکن هوگا یا وہ ایک جوهر هے جو بدن کے خراب هونے پر باقی رهتا هے اس حالت میں معاد بھی ممکن هوگی۔

میرے نزدیک قول ثالث جو مذهب اکثر محققین کا هے صحیح هے صرف اس قدر اختلاف هے که میں آن بزرگوں کی اس رائے کو که جب خدا تعالی حشر کرنا چاهے کا تو هر ایک روح کے لیے ایک جسم پیدا کر دے گا جس سے وہ روح متعلق هو جاوے گی تسلیم نہیں کرتا میرے نزدیک یه بات هے که روح نسمه سے جب مل جا هے تو خود ایک جسم پیدا کر لیتی هے اور جب انسان می جاتا هے اور روح آس سے علیحدہ هوتی هے تو خود ایک جسم رکھتی هے اور روح آس سے علیحدہ هوتی هے تو خود ایک جسم رکھتی هے جیسے که مسئله خامسه میں هم نے بیان کیا هے پس حشر میں کوئی نئی زندگی نہیں هے بلکه پهلی هی زندگی کا تتمه هے ۔ شاہ ولی الله صاحب کا بھی یہی قول هے جیسا که آنهوں نے حجة الله البالغه میں کہا هے ۔

ان حشر الاجلساد واعلادة الارواح السلها يست حيواة ستانفة الما هي تتمة الشاة المتقدمة عنزلة التخمة لكثرة الاكل كيف ولولا ذالك لكانو

غير الاولين و لما اخذوا بما فعلوا ـ (حجة الله البالغه صفحه ٣٩)

یعنی جسموں کا اٹھنا اور روحوں کا آن میں پھر آنا یہ کوئی نئی زندگی نہیں ہے بلکہ آسی پہلی زندگی کا تتمہ ہے جس طرح زیادہ کھا جانے سے بد هضمی هو جاتی ہے اگر ایسا نه هو تو لازم آوے کہ یہ کوئی دوسری خلقت هو ان لوگوں کے کیے کا (یعنی جو دنیا میں تھے) کچھ بدلا هی نه هو۔

قرآن مجید سے بھی یہی بات ثابت ھوتی ہے بشرطیکہ تمام آیات ما سبق و سالحق پر بامعان نظر ایک مجموعی حالت سے غور کیا جاوے نہ فرداً فرداً اور ایک مضمون کو ٹکڑے ٹکڑے کرکے ۔ اول یہ بات قابل غور ہے کہ کون سے عقیدہ کے رد کرنے کے لیے قرآن مجید میں آیات حشر و نشر وارد ھوئی ھیں ۔ خود قرآن مجید سے پایا جاتا ہے کہ جن لوگوں کا عقیدہ یہ تھا کہ روح کوئی چیز نہیں ہے انسان پیدا ھوتا ہے اور میکر نسیاً منسیاً ھو جاتا ہے ۔ ھوا ھوا میں مٹی مٹی میں مل جاتی ہے اور کچھ نہیں رھتا اس عقیدہ کی تردید کے لیے آیات حشر و نشر نازل ھوئی ھیں ۔ چناں چہ ابتہ تعالٰی نے سورہ جاثیہ میں آن لوگوں کا قول نقل کیا ھے که :

و قالوا ماهى الاحياتنا الدنيا تموت و يخى وما يهلكنا الا الدهر ومالهم بذالك من علم ان هم الا يظنون و اذا تتلى عليهم آياتنا بينات ما كان حجتم الا ان قالوا ائتو با اباءنا ان كنتم صادقين ـ (٥٨ سوره جاثيه ٢٠٠ - ٢٠٠)

یعنی وہ کہتے ہیں کہ ہاری دنیا کی زندگی کیا ہے ہم مرتے ہیں اور ہم جیتے ہیں اور ہم کو زمانہ ہی مارتا ہے نه اور کوئی ۔

خدا نے کہا کہ ان کو اُس کا علم نہیں ہے وہ صرف ایسا ہن کرتے ہیں اور جب اُن پر ہاری واضح آیتیں پڑھی جاتی ہیں تو اُن کی حجت بہ جز اس کے اور کچھ نہیں ہوتی کہ وہ کہتے ہیں کہ ہارے باپ دادا کو لے آؤ اگر تم سچر ہو ۔

اسی کی مانند سورہ انعام میں بھی خدا تعالیٰ نے آن کا قول نقل کیا ہے کہ .

و قالوا ان حياتنا وسانحن بمبعوثين ولو ترى اذ و قفوالى ربهم قال اليس هذا بالحق قالوا بلى و ربنا ـ (٦ سوره انعام ٣٠٠ و ٣٠)

یعنی هاری یه کیا ها صرف دنیا کی زندگی ها اور هم پهر الهنے والے نہیں هیں دخدا نے فرمایا ها که جب تو دیکھے گا۔ آن کو اپنے پروردگار کے سامنے کھڑا هوا تو خدا آن سے کمے گا یه سپ نہیں ہے اس وقت وہ کہیں گے که هاں قسم هارے پروردگر کی یه سپ ھے ۔

سوره صافات میں ہےکہ ۔ ائدذاستنا و کننا تسرابا و عظاما ائدنا السمدینون ۔

یعنی - '' وہ لوگ کہیں گے کہ کیا جب ہم مر جاویں گے اور مٹی اور ہڈیاں ہو جاویں گے کیا بدلا دیے جاویں گے یعنی اعال کی سزا و جزا ہم کو دی جاوے گی '' پس اس سے صاف ثابت ہوتا ہے کہ آن لوگوں کو موت کے بعد جزا و سزا ہونے سے استبعاد تھا اور استبعاد کا سبب به جز روح کے اور کچھ نہیں ہو سکتا اور اس سے بخوبی روشن ہوتا ہے کہ اس مباحثہ کا موضوع در حقیقت س جسم کا جو ہم دنیا میں رکھتے ہیں دوبارہ پتلا بنا کر آٹھنے کا تھا ہی نہیں بلکہ جزا و سزاکا بعد موت ہونا موضوع تھا اور یہی ہے کہ ہم ان تمام آیتوں کا معدوم جسم کے دوبارہ موجود ہونے

کچھ تعلق ھی نہیں سمجھتے ۔

اب اس بات کو ذهن میں رکھ کر آیات حشر واسطر تردید عقیدہ عدم یقین روح کے نازل ہوئی ہیں قرآن مجید پر غور کیا جاوے تو ظاہر ہوتا ہے کہ موضوع اس بحث کا اس جسم کے جو ہم اس دنیا میں رکھتر میں دوبارہ اٹھنر کا ھے ھی نہیں اور نہ قرآن محید میں اس جسم کے دوبارہ آٹھنر کا ذکر ہے ۔ جب کہ وہ لوگ روح کے قائل نہ تھر تو ثواب و عقاب کا حال سن کر آن کو تعجب هوتا تھا کیوں کہ وہ جانتر تھرکہ جب آدسی مر گیا تو گل سڑ کر معدوم هو گیا ثواب و عذاب کیسا اور کس پر اور متعجب هو کر کہتے تھے کہ کیا ہم پھر زندہ ہوں کے ۔ کیا ہاری گلی ہوئی ھڈیاں پھر جی آٹھیں گی کیوں کہ وہ لوگ بغیر اس دنیا کی زندگی اور بدون اس جسم کے جو دنیا میں تھا انسان کا موجود ھونا حس پر عذاب ھو یا ثواب ملر نہیں سمجھتر تھر ۔ خدا نے متعدد طرح سے اس کو سمجھایا اور حشر کے ہونے پریقین دلایا اور اُس پر اپنر قادر ہونے کو متعدد مثالوں سے بتایا مگر یہ کہیں نہیں کہا که یهی جسم جو دنیا میں ہے پھر آٹھر گا اور اسی جسم میں پھر حان ڈالی جاوے گی ۔

شاہ ولی اللہ صاحب اس جسم کے جو دنیا میں ہے دوبارہ آٹھنے کے قائل نہیں ہیں چناں چه آنھوں نے تفہیات اللہیہ میں بعد بیان واقعات قیامت کے لکھا ہے کہ:

انفس ساقت وهی اشد ضهاسا بالجسد و بقیت عجب ذنبها اے الا ژالذی به تعرف انه بدن فلان فیلصق بالجسد و یجی جنس آخر ها یمة ولا کن لم یبق عجب ذینها فینفخ فی جسد سن الارض باعتدال هناک و جنس اخر بستوجب عند هیجان الارواح و انتفاخها

ان يتجسد بجسد سثالى كا الملائكه والشياطين - فلا يكون تلك الحياة سبتداة بل لتكميل سا فيها مجازاة فيتصعد تلك الاجساد و الى هيئة نسمية و تدخل فى حوادث الحشر - (تفهيات الهيه صفحه ٣٨٨)

یعنی '' آس کے بعد نفوس جو می گئے ھیں یعنی جو صاحب نفوس کہ می گئے ھیں آن کے نفوس کھڑے ھو جاویں گے اور ان کا تعلق جسم سے قوی تر ھوگا اور ریڑھ کی ھڈی باقی رہ جاوے گی یعنی ایک ایسا نشان جس سے پہچانا جاوے کہ یہ فلاں شخص کا بدن مے پھر وہ بدن سے مل جاوے گی ۔ ایک اور قسم کی روحیں آویں گی جو حیران ھوں گی کہ آن کی ریڑھ کی ھڈی کا نشان ھی باقی نہ رھا ھوگا تو وہ ایک ایسی زمین میں پھونکی جاویں گی جس سے آن کو کچھ مناسبت ھوگی ۔ ایک اور قسم کی روحین جس سے آن کو کچھ مناسبت ھوگی ۔ ایک اور قسم کی روحین آویں گی جن کو روحوں کے برانگیختہ ھونے اور صور کے پھوکنے آویں گی جن کو روحوں کے برانگیختہ ھونے اور صور کے پھوکنے کے وقت ایک مثالی جسم اختیار کرنا ھوگا ۔ فرشتوں اور شیاطین کے جسم مثالی کی مانند ۔ تو یہ زندگی کوئی ابتدائی زندگی نہ ھوگی بلکہ جسم مثالی کی مانند ۔ تو یہ زندگی کوئی ابتدائی زندگی نہ ھوگی بلکہ جسم ایک ھیئت نسمیہ میں اوپر کو چڑھیں گے اور حشر کے واقعات میں داخل ھوں گے ۔

اس مقام پر شاہ ولی اللہ صاحب نے تین قسم کی روحیں ٹھیرائی ھیں اور ان کے لیے متعدد قسم کے جسد قرار دیے ھیں مگر اس جسد کا جو دنیا میں قبل موت تھا اس کا دوبارہ آٹھنا اور آس میں روح کا آنا بیان نہیں کیا اس سے ثابت ھوتا ھے کہ شاہ صاحب بھی اس جسد کے جو دنیا میں ہے آٹھنے کے قائل نہیں ھیں بلکہ آنھوں نے بھی اسی قول ثالث کو اختیار کیا ہے جس کا ھم نے اوپر ذکر کیا ہے۔

شاہ ولی اللہ صاحب کے سوا اور مفسرین نے بھی اس قول کی تائید کی ہے چناں چہ تفسیر کبیر میں سورۂ قیامہ کی تفسیر میں یہ تقریر لکھی ہے کہ:

قوله ـ ايحسب الانسان ان لن نجمع عظامه ـ و تقريره ان الانسان هو هذا لبدن فاذا مات تفرقت اجزاء البدن و اختلطت تلك الاجزاء بسائر اجزاء التراب و تفرقت في مشارق الارض و مغاربها فكان تميزها بعد ذالك من غيرها محالا فكان البعث محالا و اعلم ان ذالك من غيرها مدالا فكان البعث محالا و اعلم ان هذه الشبهة ساقطة من و جهين - الاول لا نسلم ان الانسان هو هذا البدن فلم لا يجوزان يقال انه شي مدير لهذا البدن فاذا فسد هذا البدن بقي هوحيا كما كان و حينئذ يكون الله تعالى قادر اعلى ان يرده الى الي بدن شاء داراد و على هذا لقول يسقط السوال و في الاية اشارة الى هذا لانه اقسم بالنفس الدوامه ثم قال ايحسب الانسان ان لن نجمع عظامه و هو تصريج بالفرق بين النفس و البدن ـ (تفسير كبير جلد ٢ صفحه ٨٠٨)

یعنی ۔ جو اعتراض کیا جاتا ہے کہ انسان تو یہی موجودہ بدن ہے پھر جب انسان می گیا تو بدن کے اجزا متفرق ھو گئے اور مئی میں مل کر مشرق سے مغرب تک اور مغرب سے مشرق تک پھیل گئی اب ان اجزاء کا دوسری مئی کے اجزاء سے ممتاز ھونا ناممکن ہے تو قیامت بھی ناممکن ھوگی تو یہ اعتراض دو طور سے مندفع ھوتا ہے ۔

(۱) هم کو یه تسلیم نهیں که انسان اس بدن کا نام هے ممکن هے که وه ایک ایسی چیز هو جو اس بدن کی مدبر هو اور جب بدن خراب هو جاوے تو وه اپنی حالت پر زنده رهے ـ اب خدا کو

اس بات پر قدرت ہے کہ اس کو کوئی اور بدن دے دے چناں چہ اس آیت میں بھی اس بات کی طرف اشارہ کیا گیا ہے کیوں کہ خدا نے پہلے تو نفس لوامہ کی قسم کھائی پھر فرمایا کہ کیا انسان یہ خیال کرتا ہے کہ ہم اُس کی ہڈیاں نہ اکٹھی کریں گے ۔ اس سے صاف پیدا ہوتا ہے کہ نفس اور بدن دو چیزیں ہیں۔

اب هم یه بات ثابت کرتے هیں که قرآن مجید سے بهی اس موجوده جسم کا دوباره آٹهنا نہیں پایا جاتا بلکه ایک اور قسم کے جسم کا هونا ثابت هوتا هے خدا نے سورۂ واقعه میں فرمایا هے که:

نحن خلقنا کم فلو لا تصدقون افرئیتم ما تمنون انتما تخلقون افرئیت ما تمنون انتما کم نخلقون افرئیت ما تمنون انتما تخلقون اورئیت ما تمنون انتما المخالفون المخالفون المنالکم و المحات و سا نحن بمسبعوقین علی ان نبدل استالکم و ننشئکم فی سا لا تعلمون - (۵۹ سورۂ واقعه ۱۵۰ استالکم

یعنی - هم نے تم کو پیدا کیا پھر کیوں نہیں تم نہیں مانتے بھر کیا تم سمجھتے هو جو کچھ تم عورتوں کے رحم میں ڈالتے هو
کیا تم اُس کو پیدا کرتے هو یا هم پیدا کرنے والے هیں - هم نے
مقدر کی ہے تم میں موت اور هم اس بات سے پیچھے نہیں رہے یعنی
عاجز نہیں هیں که هم بدل دیویں اوصاف تمهارے اور هم تم کو
پیدا کریں اُس صفت میں جس کو تم نہیں جانتے ۔

اس آیت میں لفظ امثال کا جمع ہے لفظ مثل بفتح المدیم و الشا، کی اور تمام آیات سا سبق و سا لحق سے جو اس سورة میں هیں صاف ظاهر ہے که حالات حشر اس میں مذکور هیں۔ خدا فرماتا ہے که هم نے موت کو تم میں مقدر کیا ہے اور هم اس بات سے عاجز نہیں هیں که جو اس زندگی میں تمهارے اوصاف هیں ن کو بدل دیں اور پیدا کریں ایسے اوصاف میں جن کو تم نہیں جانتے۔ لفظ پیدا کرنے سے صاف پایا جاتا ہے که موجودہ اوصاف کے جانتے۔ لفظ پیدا کرنے سے صاف پایا جاتا ہے که موجودہ اوصاف کے

معدوم هونے کے بعد پیدا کرنا مراد ہے۔ جو لوگ روح کے قائل نہ تھے اور وهی نہیں تھے اور وهی لوگ حیات بعد الموت کے قائل نہ تھے اور وهی لوگ ان آیتوں میں مخاطب هیں۔ اسی بدن کو جو انسان دنیا میں رکھتا ہے انسان کے اوصاف سمجھتے تھے۔ طبویل البقامت بیادی البشرہ عبریض الاظفار بیاش علی قدمیه و غیر ذالک ۔ اب خدا نے فرمایا کہ ان اوصاف یعنی اس جسم کے فنا هونے کے بعد هم اس بات سے عاجز نہیں هیں کہ ان اوصاف کو بدل کرتم کو اور اوصاف میں یعنی دوسری قسم کے جسم میں جس کو تم نہیں جانتے پیدا کریں۔ پس یہ آیت صاف دلیل اس بات کی ہے کہ حیات بعد الموت میں روح کے لیے یہ جسم جو دنیا میں ہے نہ هوگا بلکہ ایک اور قسم کا جسم هوگا۔

یه وه حقائق هیں جو نه حکمت یونان میں پائے جاتے هیں اور نه فلسفه و علم کلام میں بلکه یه انوار هیں مشکواة نبوت محدی صلی الله علیه وسلم کے جو بلا واسطه سفینه سینه منوره مجدی سے سینهٔ احمدی میں پہنچے هیں ۔ گو که نابلدان کوچه حقیقت ان انوار مجدی کو نعوذ بالله کفرو زندقه سے تعبیر کریں ۔

و ما تلك الاشقشقة هدرت فلجاشت النفس يلما هجس لها ثم قرت مع ان لكل جواد كلبوه و لكل سيف نبوه

لمولفه

فلاطون طلفکے باشد به یونانے که من دارم سیحا رشک میدارد درمانے که من دارم زکفر من چه میخواهی زایمانم چه مے پرسی هماں یک جلوهٔ عشق است ایمانے که من دارم خدا دارم دلے بریاں زعشق مصطفی دارم ندارد هیچ کافر ساز و سامانے که من دارم

ز جبریل امیں قرآن به پیغاسے نمیخواهم همه گفتار معشوق است قرآنے که من دارم فلک یک مطلع خورشید دارد باهمه شوکت هزاران اینچنین دارد گریبانے که من داره واعظ ز برهان تابه ایمان سنگ ها دارد ره واعظ همچو برهانے که من درام

اب هم قرآن مجید کی اور آیتوں کو جو اس مضمون سے زیادہ تعلق رکھتی هیں اس مقام پر لکھتے هیں اور بتاتے هیں که جب با معان نظر آن کو دیکھا جاوے اور منکرین روح کے عقائد کو بھی مد نظر رکھا جاوے تو آن سے اس جسم کا جو دنیا میں ہے دوبارہ اٹھنا ثابت نمیں هوتا اور وہ آیتیں یہ هیں ۔ خدا نے سورہ نوح میں فرمایا ہے کہ :

۱- والله انبتکم سن الارض نباتا ثم یعید کم فیها و یخر جکم اخراجا - (۱۱ - سوره نوح ۱۹ و ۱۵) یعنی خدا نے آگایا تم کو زمین سے ایک قسم کا آگانا پهر تم کو پهر کر لے جاوے گا آس میں اور نکالے گا تم کو ایک طرح کا نکالنا ۔

انسان زمین سے مثل نباتات کے نہیں اُگا۔ اسی طرح و مثل نباتات کے دوبارہ زمین سے نکلے کہ پس یہ صرف تشبیہ معدوم ھونے کے بعد پھر پیدا ھونے کی ہے نه اس بات کی که انسان بعد مرنے کے مثل نباتات کے پھر زمین سے نکلیں گے۔ و یہ جکم اخراجا میں لفظ منہا کے ترک ھونے سے یعنی و یہ خرجکم منہا اجراجا نه کہنے سے اس مطلب کو جو ھم نے بیان کیا اور زیادہ تقویت ھوتی سے۔

خدا تعالیٰ نے سورہ اعراف میں اس طرح پر بیان فرمایا فرمایا فرکہ :

۲- هو الذى يرسل الرياح بشرا بين يدى رحمته حتى اذا اقلت سحا با ثقا لا سقناه بلدميت فانزلنا به الماء فاخرجنا به سن كل الشمرات كذالك نخرج الموتى لعلكم تذكرون ـ

یعنی وہ وہ ہے جو بھیجتا ہے ہواؤں کو خوش خبری دینے والیاں اپنی رحمت کے آنے کی یہاں تک کہ جب اٹھاتی ہیں بوجھل بادل تو ہم آن کو ہانک لے جاتے ہیں مرے ہوئے شہر کو پھر اس سے برساتے ہیں پانی پھر ہم آس سے نکالتے ہیں ہر طرح کے میوے اسی طرح ہم نکالیں گے مردوں کو۔

ادنئی تامل سے معلوم ہوتا ہے کہ اس آیت میں بھی صرف معدوم ہونے کے پھر موجود ہونے کا بیان ہے اس سے زیادہ اور کسی چیز کا بیان نہیں اور اس مطلب کو سورۂ ملائکہ کی آیت کو جو ابھی ہم لکھتے ہیں زیادہ صاف کر دیتی ہے۔

خدا نعالنی نے سورۂ ملائکہ میں فرمایا ہے:

س- و الله الذي آرسل الرباح فتبشر سجا با مستقناه اللي بلدميت فاحيينابه الارض بعدد سوتها كنذالك النشور ـ بدي مورة ملائكه . .)

یعنی اور اللہ وہ ہے جس نے بھیجا ہے ہواؤں کو پھر آٹھاتی ہیں بادلوں کو پھر ہم اس کو ھانک لے جاتے ھیں مرے ھوئے شہر کی طرف پھر آس سے زندہ کرتے ھیں زمین کو آس کے مر جانے کے بعد اسی طرح مردوں کا زندہ ھونا ہے۔ اس آیت میں '' نے خرج'' کا لفظ استعال نہیں ھوا بلکہ نشر کا لفظ استعال ھوا ہے جس سے صاف ظاھر ھوتا ہے کہ صرف مردوں کے پھر موجود

ہونے کی تشبیہ ہے نہ اُس جسم کی جو دنیا میں موجود تھا قبر میں سے نکانے کی ۔

ظاہر میں سورۂ 'طہ کی آیت اس امر کی جو ہم نے بیان کیا مخالف معلوم ہوتی ہے کیوں کہ اُس میں لفظ منہا کا بھی موجود ہے جو سورۂ اعراف کی آیت میں نہ تھا مگر ہرگز وہ آیت مخالف نہیں ہے ۔ سورۂ 'طہ میں تعاللی نے فرمایا کہ:

م. سنما خلقنا كم و فيها نعيد كم و سنما نخرجكم تارة آخري ـ (٠٠ طه - ٥٥)

ہم نے تم کو زمین سے پیدا کیا اور آسی میں پھر کر لے جاویں گے اور آسی سے تم کو دوسری دفعہ نکالیں گے ۔

انسانوں کو خدا نے زمین سے پیدا کیا ماں کے پیٹ سے پیدا کیا ہے پس آس کا زمین سے پیدا کرنا مجازاً بادنلی ملابست بولا گیا ہے اسی طرح اس کے مقابلے میں زمین سے دوسری دفعہ نکلنا بھی مجازاً بادنلی ملابست بولا ہے ۔ پس اس سے یہ مطلب کہ یہی جسم جو دنیا میں موجود تھا بھر دوبارہ زمین سے نکلے گا ثابت نہیں ہوتا ۔

ایک اور آیت بھی ہے جس کی تحقیق اسی مقام سے سناسب ہے اور وہ سورۂ ق کی آیت ہے خدا تعالنی یوں فرمایا ہے کہ:

و استمع ينوم نياوى التمناد و من كان قريب ينوم يسمعون التصيحة بالنحق ذالك ينوم التخروج ـ انانحن و لتميت و الينا المصير ينوم نشقق الارض عنهم سراعا ذالك حشر علينا يسير ـ (٥٠ سورة ق ٣٨-٣٨)

یعنی سن ایک دن پکارے کا پکارنے والا پاس کے مقام سے ایک دن سنے گئے زور کی آوازیہ ہے دن نکلنے کا یعنی اپنی اپنی جگہ سے روحوں کے معہ آن اجسام کے جو سفارقت بدن کے وقت آن کو حاصل ہوئی تھی نکانے کا اور ایک جگہ جمع

ھونے کا نہ یہ کہ آن اجسام کا جو دنیا میں موجود تھے دوبارہ پتلا بن کر نکانے کا ۔ آس کے بعد خدا نے فرمایا کہ بے شک ھم زندہ کرتے ھیں اور ھم مار ڈالتے ھیں اور ھاری طرف پھر آنا ھے جلدی کرتے ھوئے آس دن کہ پھٹ جاوے گی آن سے زمین یہ اکٹھا کرنا ھم پر آسان ھے ۔

اس جمله سے یه سمجھنا که زمین کا پھٹنا مردوں کے جسم کے نکلنے کا باعث ہوگا محض غلط خیال ہے بلکه یـوم تشقـق الارض سے یوم قیامت مراد ہے اور متعدد آیتوں میں یه مضمون اسی مراد سے آیا ہے نتیجه یه ہے که قیامت کے دن سب روحیں اکٹھی ہوں گی اس آیت کو اُن جسموں کے جو دنیا میں تھے دوبارہ اُٹھنے سے کچھ بھی، تعلق نہیں ہے۔

خدا تعاللي نے سورۂ نازعات میں فرمایا ہے کہ :

یـقـولـون آئـنـا لـمـردودون فی الـحـافـره آئـذا کـنـا عظاساً نخـره قالـوا تـلک اذاکـرة خاصره فانـما هـی زجـرة واحـدة فـاذا هـم بـالساهره ـ (و ح - سوره نازعات . ١ - ١٠٠٠)

یعنی کہتے ہیں کہ ہم لوٹائے جاویں گے آلٹے قدموں ۔ کیاجب ہوں گے ہم ہڈیاں کئی ہوئی کہتے ہیں کہ یہ (لوٹانا) اس وقت پہر آتا ہے نقصان کا ۔ اس کے سوائے کچھ نہیں کہ وہ ایک سخت آواز ہے پہر یکایک وہ ایک میدان میں ہوں گے جس میں نیند نه آتی ہو ۔ منکرین حشر کے جو یه الفاظ! ۔ آئنذا کنا عظاما نخرہ ۔ اس آیت میں اور مثل آس کے اور آیتوں میں آئے ہیں جیسے که ۔ ائذاکنا ترابا و عظاما ۔ اور من یحیی العظام و هورسیم اور ائذاکنا عظاما و رفاقا آئنا لمبعوثون ۔ یه آن کے اور ائذاکنا عظاما و رفاقا آئنا لمبعوثون ۔ یه آن کے اقوال آسی خیال پر مبنی ہیں کہ وہ انسان کو بجز اس جسم موجودہ کے اور کچھ نہیں جانتے تھے یعنی روح کے وجود کے قائل موجودہ کے اور کچھ نہیں جانتے تھے یعنی روح کے وجود کے قائل

نه تھے اور اسی سبب سے وہ تعجب کرتے تھے کہ اس جسم کے کل جانے اور معدوم ھو جانے کے بعد پھر کیوں کر وہ اٹھے گا اور اسی استبعاد کے سبب وہ اس قسم کے شبہات کرتے تھے۔ روح کی حقیقت وہ نہیں سمجھ سکتے تھے بلکہ اس کی ماھیت مثل دیگر اشیاء کی ماھیت کے انسان کی سمجھ سے خارج تھی اور خدا تعالی طرح طرح سے آن کے استبعاد کو دور کرتا تھا اور حشر کے ھونے پر یقین دلاتا تھا کبھی تمثیل میں اور کبھی اپنے قادر مطلق ھونے میں پس ان الفاظ سے جو منکرین روح استبعاد رکھتے تھے اور آن کے جواب تمثیلی یا اس کے مقابلہ میں اظہار قدرت کرنے سے یہ ثابت نہیں ھوتا کہ آسی جسم کا جو وہ دنیا میں رکھتے تھے اور جس کا مجواب تمثیلی اور معدوم ھو جانا کہتے تھے آسی جسم کو خدا پھر اٹھاوے گا۔

سورة سومن ، سورة صافات و سورة واقعه سير بالفاظ متحده خدا تعاللي نے يه فرمايا هے كه :

قالواائد استنا وكننا ترابا و عظاما آئنا لمبعوثون (انتهى) ـ

و كانو يقولون ائد استنا و كنا ترابا وعظاما آئنا لمبعوثون اواباء نا الاولون قل ان الاولين الاخرين لمجعون الى ميقات يوم معلوم ـ (٥٠ سورة واقعه ٥٠-٥٠)

کہتے ہیں کہ کیا جب ہم می جاویں گے اور ہم ہو جاویں گے مٹی اور ہڈیاں کیا ہم اٹھائے جاویں گے اور سورۂ واقعہ میں خدا نے فرمایا اور وہ کہتے تھے کہ کیا جب ہم می جاویں گے اور ہو جاویں گے مٹی اور ہڈیاں کیا ہم پھر اٹھائے جاویں گے کیا ہارے اٹمے باپ دادا بھی (اٹھائے جاویں گے) کہہ دے کہ بے شک اگلے اور

پچھلے ضرور اکٹھے کیے جاویں گے وقت دن سعین ہیں ـ

اس آیت میں سوال تھا کہ کیا ھم اور ھارے باپ دادا اٹھائے جاویں گے اس کا جواب یہ ملا کہ بے شک اکٹھے کیے جاویں گے اس سے صاف ظاھر ہے کہ جہاں جہاں قرآن مجید میں بعث کا لفظ آیا ہے اس سے جمع کرنا مراد ہے نہ اس جسم کو جہو ھم دنیا میں رکھتے ھیں بعد معدوم ھو جانے کے بھر پتلا بنا کر اٹھانا ۔ بعث کا اطلاق لشکر پر ان معنوں میں آتا ہے جب کہ اُن کو ایک جگہ جمع ھونے کا حکم دیا جاتا ہے پس اس آیت میں خود خدا نے بعث کے معنوں کی تشریج کر دی ہے اور اس لیے اس کے کوئی دوسرے معنی نہیں لیے جا سکتے ۔

سورة حج ميں خدا تعالى نے فرمايا هے كه: و تىرى الارض هامدة فاذا انزلنا عليها الماء اههزت و ربت و انبتت من كل زوج بهيج ذالك بان الله هو الحق و انه يحيى الموتى و انه على كل شئى قدير و ان الساعة اتية لا ريب فيها و الله يبعث من فى القبور - (٢٢ سورة الحج ٥ و ٦ و ١) -

یعنی اور دیکھتا ہے کہ زمین خشک ہو گئی پھر جب ہم برساتے ہیں آس پر پانی تو پھولتی ہے اور بڑھتی ہے اور آگاتی ہے ہر قسم کی خوش آیند چیزیں یہ اس لیے ہے کہ اللہ وہی برحق ہے اور یہ کہ وہ ہر شے پر قادر یہ کہ وہ ہر شے پر قادر ہے اور یہ کہ قیامت آنے والی ہے آس میں کچھ شک نہیں اور یہ کہ اللہ آٹھاوے گا آن کو جو قبروں میں ہیں۔

اور سورة يسين مين فرمايا هـ و نفخ في الصور فاذا هـم من الاجداث الذي ربهم ينسلون و قالوا با ويلنا من بعثنا من سرقدنا هذا ما وعدالر حمن وصدق المرسلون ان كانت الا صيحة واحدة فاذا هم جميع لدينا معضرون و سرق ١٠٥٠) -

یعنی پھونکا جاوے گا صور میں پس یکایک وہ قبروں میں سے اپنے پروردگار کے پاس دوڑیں گے کہیں گے اے وائے ھم پر کس نے اٹھایا ھم کو ھارے مرقد سے یہ وہ ہے جس کا وعدہ کیا تھا خدا نے اور سچ کہا تھا پیغمبروں نے یہ نہیں تھا مگر ایک تند آواز میں پھر دفعة وہ سب ھارے پاس حاضر ھونے والے ھیں۔

اگرچہ ان آیتوں میں خدا تعالیٰی نے ان لوگوں کا قبروں میں سے اٹھنا ان کو جو بعث کے بہ سبب نہ یقین کرنے روح کے منکر مض تھے زیادہ تر یقین دلانے کو بالفاظ '' سن فی الـقبور'' اور '' سن الاجداث'' کے بیان فرمایا ہے یعنی جن کو تم قبروں میں گڑا ہوا اور گلا سڑا خاک میں ملا ہوا سمجھتے ہو وهی قبروں میں میں سے اٹھیں گے ۔ مگر درحقیقت مقصود اور موضوع کلام کا یہ نہیں ہے کہ وہ کہاں سے آٹھیں گے کیوں کہ بہت سے ایسے ہیں نہیں ہیں آگ میں جلا دے گئے ہیں جانور کھا گئے ہیں بلکہ مقصود مردوں کا یعنی جن کو ہم مرا ہوا گئے ہیں اور جن پر مردے کا اطلاق ہوتا ہے قیاست میں آن کا موجود ہونا ہے لیکن اگر ہم کچھ غور نہ کریں اور یہی سمجھیں کہ جو لوگ قبروں میں دفن ہیں وہی اٹھیں گے تو بھی ان کہ جو لوگ قبروں میں دفن ہیں وہی اٹھیں گے تو بھی ان کہ جو لوگ قبروں میں دفن ہیں وہی اٹھیں گے تو بھی ان کہ جو لوگ قبروں میں دفن ہیں وہی اٹھیں گے تو بھی ان کہ بات کہ ان کا یہی جسم ہوگا جو دنیا میں رکھتے تھے آیتوں سے یہ بات کہ ان کا یہی جسم ہوگا جو دنیا میں رکھتے تھے

قرآن مجید میں دو اور عجیب آیتیں ھیں جن سے ثابت ھوتا ہے کہ قیامت کے دن نه کسی معدوم جسم کا دوبارہ پتلا بنا کر آٹھایا جاوے گا نه کوئی جدید جسم آن کو ملے گا بلکه وھی جسم ھوگا جو روح و نسمه کے اختلاط سے روح نے حاصل کیا تھا اور بعد مفارقت بدن روح نے جو آس جسم کے مفارقت کی تھی

پس جیسا که شاء ولی الله صاحب نے فرمایا که نشا آخرت تکمله اسی حیات کا هو گا نه حلق جدید بالکل تهیک معلوم هوتا هے ـ خدا تعاللی نے سورة الاسری میں فرمایا هے ـ

وقالو ائنا كنا عظاما و رفاتا ائنا لمبعو ثون خلقا جديدا وخلقا سما خلقا جديدا وخلقا سما يكبر في صدوركم فسيتولون من يعيدنا قل الذي فطركم اول سرة فسينقضون اليك رؤسهم ويقولون متى هو قل عسى ان يكون قريبا ـ (١٨ ـ سورة الاسرى ـ ٢٠ و ٥٠٠)

یعنی اور کہتے ہیں کہ جب ہڈیاں اور طے ہوئے ہو جاویں گے تو کیا ہم پہر آٹھائے جاویں گے۔ نئے پیدا ہو کر۔ کہہ دے کہ تم پتھر ہو جاؤیا لوہا یا آس قسم کی پیدائش جو تمھارے دل کو بڑی مستحکم لکتی ہو تب بھی تم کہو گے کہ کون ہم کو لوٹاوے کا ۔ کہدئے کہ وہ جس نے پیدا کیا تم کو پہلی دفعہ پھر جھکا دیں گے اپنے سروں کو تیری طرف اور کہنے لگیں گے وہ کب ہوگا کہدے کہ شایدیہ ہووے قریب ۔

اور سوره سجده میں خدا نے فرمایا ہے۔ و قالوا ائنا ضلنا فی الارض ائنا لنی خلق جدید بل هم بلقاء ربهم کافرون قبل یتوفا کیم سلک الموت الذی و کل بکم ثم اللی ربکم ترجعون ۔ (سورہ سجدہ و ۔ ۱۰) ۔

یعنی اور انھوں نے کہا کہ جب ہم زمین میں گم ہو جاویں گے (یعنی گل گلا کر مٹی ہو کر آس میں مل جاویں گے) تو کیا ہم ایک نئی پیدائش میں آویں گے - بلکہ وہ اپنے پرور دگار سے ملنے کے منکر ہیں کہ دے کہ تم کو ملک الموت مارے گا جو تم پر متعین ہے پھر اپنے پرور دگار کے پاس پھر جاؤ گے ۔

ان آیتوں میں باوجودیکہ سوال خلق جدید سے تھا مگر خدا نے اس کو قابل جواب نہیں سمجھا کیوں کہ خود سوال ھی باطل تھا ۔ خلق جدید خلق سابق کے اعال کی سزا و جزا کی مستحق نہیں ھو سکتی ۔ ایک جگہ تو یہ فرمایا کہ تم کو پھر وھی حشر میں لاوے گا جس نے تم کو اول مرتبہ پیدا کیا تھا اور لانے کی کچھ تفصیل نہیں بتلائی اور دوسری آیت میں فرمایا کہ آن کی یہ باتیں اس بناء پر ھیں کہ اپنے پرور دور دور سے ملنے کے منکر ھیں اور یہ جواب دیا کہ جب مرو کے تو اپنے پرور دور دار کے پاس جاؤ گے ۔ غرض کہ ان آیتوں سے بھی اس جسم کا جو دنیا میں ہے دوبارہ غرض کہ ان آیتوں سے بھی اس جسم کا جو دنیا میں ہے دوبارہ بتلا بن کر آٹھنا ثابت نہیں ھوتا ۔

دو آیتیں اور ہیں جن کا ہم اس مقام پر ذکر کریں گے ایک آیت سورۃ یـسـین کی ہے ـ خدا نے فرمایا کہ :

و ضرب لنا مشلا ونسيي خلقه قال من يحيي العظام و هي رسيم قبل يحبها الذي انشاء ها اول مرة و هو بكل خلق عليم - (٣٦ سورة يسين ٢٥ - ٥٥) -

یعنی ۔ ھارے لیے یہ مثال تو لاتے ھیں اور کہتے ھیں کہ کون زندہ کرے کا ھدیوں کو اور وہ تو گل گئی ھوں گی اور اپنے پیدا ھونے کو بھول جاتے ھیں کہدے کہ ان کو زندہ کرے گا وہ جس نے تم کو پیدا کیا پہلی دفعہ اور وہ ھر قسم کی آفرینش کو جانتا ھے ۔

اور سوره ویامه میں فرمایا ہے که: ایحسب الانسان ان لن نجمع غطاسه ـ بلی قادرین عللی ان نسوی بنانه (۵۵ موره قیاسه ۳ ـ ۳)

یعنی کیا گان کرتا ہےکہ ہم ہڈیوں کو آکنھا نہ کریں گے یہ بات نہیں ہے بلکہ ہم اس پر قادر ہیں کہ انظیوں کی پوریوں دو بھی درست کر دیں ۔

اور سورۂ جاثیہ میں خدا نے فرمایا ہے کہ قبل اللہ محسکہ م ثم سمستکم ثم مجسمعکم الی یوم القساسہ (۵م جاثیہ ۲۵) ۔ یعنی کہ اللہ تم کو جلاتا ہے پھر تم کو مار ڈالے گا پھر تم کو قیامت کے دن اکٹھا کرے گا۔

ان تینوں آیتوں میں سے پہلی دو آیتیں ایسی هیں جن پر متکلمین نافین نفس ناطقه استدلال کر سکتے هیں جیسا که شرح مواقف میں مذهب اول بیان کیا گیا هے اور کمه سکتے هیں که جب انهی گلی هوئی هڈیوں کے زندہ کرنے کا بیان هوا هے اور انگلیوں کے پوروں تک کا بنا دینا بتایا هے تو اس سے اسی جسم کا جو دنیا میں هے دوبارہ پتلا بن کر آٹھنا پایا جاتا هے ۔

مگر یہ خیال دو طرح پر غلط ہے ایک اس لیے کہ ہم پہلے بیان کر آئے ہیں کہ کسی سوال کے جواب میں صرف اظہار قدرت سے اس بات کا ثبوت کہ یہی جسم جو دنیا میں ہے۔ دوبارہ پتلا بنا کر اٹھایا جاوے گا لازم نہیں آتا۔ دوسرے یہ کہ آسی کے ساتھ بیان ہوا ہے کہ ہو و بکل خلق علیم ۔ یعنی وہ ہر قسم کے پیدا کرنے کو جانتا ہے کہ گلی ہوئی ھڈیوں کی زندگی کیا چیز ہے اور وہ کیوں کر ہوتی ہے۔ پھر اس سے یہ سمجھنا کہ وہ گلی ہوئی مڈیاں دوبارہ ایسی ہی ہو جاویں گی جیسے کہ اب اس زندگی میں ہیں ایک صریح غلطی ہے۔ ایک آیت کے معنی دوسری آیت سے حل ہوں ایک صریح غلطی ہے۔ ایک آیت کے معنی دوسری آیت سے حل موتے ہیں۔ سورۂ جاثیہ میں صاف لفظوں میں خدا نے فرما دیا ہے کہ اللہ تم کو جلاتا ہے پھر تم کو مارتا ہے پھر تم کو قیامت کے دن اکٹھا کرے گا پس یہ آیت نہایت صاف ہے اور اسی آیت کے دن اکٹھا کرے گا پس یہ آیت نہایت صاف ہے اور اسی آیت کے سباق سے تمام آیتوں کے معنی حل ہوتے ہیں۔

یہ مسئلے جو هم نے اس مقام پر بیان کیے معاد کے مشکله مسائل میں سے تھے اور جہاں تک هم سے هو سکا هم نے آن تمام

آیتوں کو جو آن سے علاقہ رکھتی تھیں ایک جگہ جمع کر دیا اور بقدر اپنی طاقت کے آن کو حل بھی کیا اور اس کی تائید میں علاء محققین کے اقوال بھی نقل کیے اب معاد کے متعلق کیفیت حساب و کتاب عذاب و ثواب کا بیان باقی ہے جس کو اگلے علاء نے اور خصوصاً امام عزالی اور شاہ ولی اللہ صاحب نے نہایت خوبی سے بیان کیا ہے ان کی کتابوں میں ان بیانات کو پڑھنا چاھیے۔

بهشت کی ماهیت

جنت یا بہشت کی ماہیت جو خود خدا تعالٰی نے بتلائی ہے وہ تو یہ ہے ''فدلا تعلم نفس ما اختفی لیھم من قدرة اعین جزاء ہما کانوا یعملون ۔ یعنی کوئی نہیں جانتا کہ کیا ان کے لیے آنکھوں کی ٹھنڈک (یعنی راحت) چھپا رکھی گئی ہے اس کے بدلے میں جو وہ کرتے تھے ۔

پیغمبر خدا صلی الله علیه وسلم نے جو حقیقت بہشت کی فرمائی جیسے که بخاری و مسلم نے ابو هریره کی سند پر بیان کیا ہے وہ یه است و الله تعالیٰی اعددت لعبادی الصالحین مالا عین رات ولا آذن سمعت ولا خطر علی قلب بشر " یعنی الله تعالیٰی نے فرمایا که تیار کی ہے میں اپنے نیک بندوں کے لیے وہ چیز جو نه کسی آنکھ نے دیکھی ہے اور نه کسی کان نے سنی ہے اور نه کسی انسان کے دل میں اس کا خیال گزرا ہے ۔ پس اگر حقیقت بہشت کے انسان کے دل میں اس کا خیال گزرا ہے ۔ پس اگر حقیقت بہشت کے مکن اور دودھ شراب اور شہد کے سمندر اور لذیذ میوے اور مکن اور دودھ شراب اور شہد کے سمندر اور لذیذ میوے اور خوب صورت عورتی اور لونڈے هوں ۔ تو یه تو قرآن کی آیت اور خدا کے فرمودہ کے بالکل مخالف ہے چوں که ان چیزوں کو تو انسان حدا کے فرمودہ کے بالکل مخالف ہے چوں که ان چیزوں کو تو انسان حان سکتا ہے اور اگر یه فرض کیا جاوے که ویسی عمدہ چیزیں نه آنکھوں نے دیکھی اور نه کانوں نے سنی تو بھی ولا خطر علی قلب بمشر سے خارج نہیں ہو سکتیں ۔ عمدہ ہونا ایک اضافی صفت قلب بمشر سے خارج نہیں ہو سکتیں ۔ عمدہ ہونا ایک اضافی صفت ہے اور جب که ان سب چیزوں کا نمونه دنیا میں موجود ہے تو آس

کی صفت اذانی کو جہاں تک کہ ترقی دیتے جاؤ انسان کے دل میں اس کا خیال گزر سکتا ہے حالاں کہ بہشت کی ایسی حقیقت بیان ہوئی ہے کہ لا خطر علی قلب بشر پس بہشت کی جو تمام چیزیں بیان ہوئی ہیں در حقیقت بہشت میں جو قرة اعین ہوگا۔ اس کے سمجھانے کو بقدر طاقت بشری تمثیلیں ہیں۔ نہ بہشت کی حقیقتیں۔

انسان مطابق ابنی فطرت کے انہیں چیزوں کو سمجھ سکتا ھے اور انھی کا خیال اس کے سی آ سکتا ھے حو اس نے دیکھی یا چھوئی یا چکھی یا سونگھی یا قوت سامعہ سے محسوس کی ھوں اور مشت کی جو '' قرة اعین '' یعنی راحت یا لذت هے ۔ اُس کو نه انسان نے دیکھا ہے ، نه جھوا ہے ، نه چکھا ہے ، نه سونگھا ہے ، نه قوت سامعہ نے اس کا حس کیا ہے ۔ یس فطرت انسانی کے مطابق انسان کو اس کا بتلانا نا ممکن ہے۔ اس کے سوا ایک اور مشکل در پیش ھے کہ جو کچھ انسان کو بتایا حاتا ھے وہ ان الفاظ سے تعسر ھوتا ھے جو انسان کی بول جال میں ھی اور حو جیز که انسان نے نه دیکھی ، نه چھوئی ، نه چکھی ، نه سونگھی ، نه قوت سامعه سے حس کی ۔ اس کے لیے کوئی لفظ انسان کی زبان میں نہیں ہوتا اور اس لیر اس کا تعبیر کرنا گوکه خدا هی تعبیر کرنا چاہے محالات سے ھے۔ اس کے سوا ایک اور سخت مشکل یہ ہے کہ کوئی انسان ان کیفیات کو بھی جو اس دنیا میں ہیں تعبیر نہیں کر سکتا نے کوئی شخص کٹھاس ، سٹھاس ، درد ، دکھ ، ریخ و راحت کی کچھ بھی کیفیت نہیں بتا سکتا ۔ یا اس کے لیر دوسرا لفظ بدل دیتا ہے یا کوئی مشامت اور نظیر اس کی لاتا ہے جو وہ بھی مثل پہلی کے محتاج بیان ہوتی ہے پس مہشت کی کیفیت یا لذت کا جس کو '' قرۃ اعین '' سے تعبیر کیا ہے بیان کرنا کہ خدا ھی اس کا بیان کرنا چاہے محال سے بھی بڑھ کر محال ھے ۔

مگر جب که انسان کو ایک بات کے کرنے کو اور ایک بات کے نہ کرنے کو کہا جاوے تو بالطبع انسان اس کی منفعت اور مضرت کے جاننے کا خواہاں ہوتا ہے اور بغیر جانے اس کے کرنے یا نہ کرنے پر راغب یا متنفر نہیں ہوتا اس واسطے ہر ایک پیغمبر کو بلکہ ہر ایک ریفارم یعنی مصلح کو اس منفعت و مضرت کا کسی تمثیل یا تشبیہ سے بتانا پڑتا ہے۔

''قرة اعین ''کی ماهیت یا حقیقت یا کیفیت یا اصلیت کا بتانا تو محالات سے هے اس لیے انبیاء نے آن راحتوں اور لذتوں یا رخ اور تکلیفوں کو جو انسان کے خیال میں ایسی هیں جو ان سے زیادہ نہیں هو سکتبی ۔ بطور جزا و سزا آن افعال کے بیان کیا هے اور غرض آن سے بعینه وہ اشیاء نہیں هیں بلکه جو رنج و راحت لذت و کلفت ان سے حاصل هوتی هے اس کیفیت کو '' قرة اعین '' سے تشبیها بیان کرنا مقصود هوتا هے۔ گو که وہ تشبیه کیسی هی ادنی اور نا چیز هو۔

موسیٰی نے اس '' قرۃ اعین '' کو اولاد پیدا ھونے ، مینہ برسنے رزق فراخ ھونے دشمنوں پر غلبہ پانے اور کلفت کو اولاد کے مرنے ، قحط پڑنے ، وبا پھیلنے ، شکست کھانے کی کیفیت کی تشبیم میں بیان کیا ھے ۔ یہ تشبیمیں اگرچہ بنی اسرائیل کے دل پر بہت موثر تھیں ۔ مگر در حقیقت ایسی نہ تھی کہ جو تمام انسانوں کی طبیعت پر حاوی ھوں ۔ بحد مصطفلٰی نے اس کو ایسی تشبیموں میں بیان کیا ھے کہ تمام انسانوں کی طبیعتوں پر حاوی ھیں اور کل انسانوں خلقت اور جبلت کے نہایت ھی مناسب ھیں ۔

تمام انسانوں کی خواہ وہ سرد ملک کے رہنے والے ہوں خواہ گرم ملک کے ، مکان کی آراستگی ، مکان کی خوبی ، باغ کی خوشنائی ہتے ہلک کے دل ربائی ، میوؤں کی تر و تازگی سب کے دل پر ایک عجیب

کیفیت پیدا کرتی ہے۔ اس کے سواحسن یعنی خوب صورتی سب سے زیادہ دل پر اثر کرنے والی ہے۔ خصوصاً جب کہ وہ انسان میں ھو اور اس سے بھی زیادہ جب کہ عورت میں ھو پس بہشت کی " قررة اعیدن " کو ان فطری راحتوں کی کیفیات کی تشبیہہ میں۔ اور دوزخ کے مصائب کو آگ میں جلنے اور لہو پیپ پلائے جانے اور تھور کہلائے جانے کی نمثیل میں بیان کیا ہے تاکہ انسان کے دل میں یہ خیال پیدا ھو کہ بڑی سے بڑی راحت و لذت یا سخت دل میں یہ خیال پیدا ھو کہ بڑی سے بڑی راحت و لذت و راحت یا رخ و کلفت وھاں ھے ان کو اس سے کچھ بھی مناسبت نہیں ہے یہ تی وصرف ایک اعلیٰی راحت احتفاظ یا رخ و کلفت کا خیال پیدا کرنے تی واس پیرایہ میں جس میں انسان اعلیٰی سے اعلیٰی احتظاظ و رنج کو خیال کر سکتا تھا بیان کیا ہے۔

یه سمجهنا که جنت مثل ایک باغ کے پیدا کی هوئی ہے۔ اس میں سنگ مر مر کے موتی کے جڑاؤ محل هیں ۔ باغ میں سر سبز و شاداب درخت هیں دوده و شراب و شهد کی ندیاں به رهی هیں ۔ هر قسم کا میوه کهانے کو موجود ہے ۔ ساقی و ساقنیں نهایت خوب صورت چاندی کنگن پہنے هوئے جو هارے هاں کی گهوسنیں پہنتی هیں شراب پلا رهی هیں ایک جنتی ایک حور کے کئے میں هاته ڈالے پڑا ہے ایک نے ران پر سر دهرا ہے ایک چهاتی سے لپٹا رها ہے ایک نے لب جاں بخش کا بوسه لیا ہے ۔ کوئی کسی کونه میں کچھ کر رها ہے کوئی کسی کونه میں کچھ ۔ ایسا بے هوده پن ہے ۔ کس پر تعجب هوتا ہے ۔ اگر بہشت یہی ہے تو بے مبالغه هارے خرابات اس سے هزار درجه بهتر هیں ۔

علمائے اسلام رحمۃ اللہ علیم اجمعین نے بسبب اپنی رقت قلبی اور توجہ الی اللہ اور خوف و رجا کے غلبہ کے جو آدسی کے دل پر

زیادہ اثر کرنے سے ایسے درجہ پہنچا دیتا ہے کہ اصل حقیقت کے بیان کرنے کی جرأت نہیں رہتی ۔ یہ طریقہ اختیار کیا تھا کہ جو امی الفاظ سے مستفاد ہوتا ہے ۔ اسی کو تسلیم کر لیں اور اس کی حقیقت اور اس کے مقصد کو خدا کے علم پر چھوڑ دیں ۔ اس واسطے وہ بزرگ تمام آن باتوں کو تسلیم کرتے ہیں جن کو کوئی بھی نہیں ماں سکتا اور وہ باتیں جیسی کہ عقل اور اصلی مقصد بانئے مذہب کے برخلاف ہیں ویسی ھی مذہب کی سچائی اور بزرگی اور تقدس کے خلف ہیں ۔

اس امر کے ثبوت کے لیر بانٹر مذھب کا ان چیزوں کے بیان کرنے سے صرف اعلی درجہ کی راحت کا بقدر فہم انسانی خیال پیدا كرنا مقصود تها نه واقعي أن چيزوں كا دوزخ و بهشت ميں موجود هونا ـ ایک حدیث کا ذکر کرنا مناسب سمجهتا هوں ـ حو ترمذی نے بریدہ سے روایت کی ہے۔ اُس میں بیان ہے کہ ایک شخص نے آنحضرت سے یوچھا کہ مشت میں گھوڑا بھی ھوگا۔ آپ نے فرمایا کہ تو سرخ یاقوت کے گھوڑے پر سوار ہو کر جہاں چاہے گا اڑتا پھرے گا پھر ایک شخص نے پوچھا کہ حضرت وہاں آونٹ بھی ہوًگا ۔ آپ نے فرمایا کہ وہاں جو کچھ چاہو گے سب کچھ ہوگا۔ پس اس جواب سے مقصود یہ نہیں ہے کہ در حقیقت مہشت میں گھوڑے اور اونٹ موجود ہوں کے بلکہ صرف آن لو دوں کے خیال میں اُس اعلنی درجہ کی راحت کے خیال کا پیدا کرنا ہے ۔ جو ان کے خیال میں اور آن کی عقل و فہم و طبیعت کے مطابق اعلیٰی درجہ کی هو سکتی تھی اسی کی مانند اور بہت سی حدیثیں ہیں اور اگر آن سب کو صحیح بھی مان لیا جاوے تب بھی کسی کا مقصود آن اشیاء کا بعینه بہشت میں موجود ہونا نہیں ہے به جز اس کے که جہاں تک انسان کی عقل و طبیعت کے موافق اعلنی درجہ کی راحت کا خیال پیدا ہو سکے وہ بیدا ہو۔

حکائے اللہی اور انبیائے رہانی دونوں ایک ساکام کرتے ہیں ۔ فرق یه هےکه حکاء صرف آن چند لو گوں کو تربیت کر سکتر هیں حن کا دل و دماغ تربیت پا چکا ہے ۔ برخلاف اس کے تمام انبیاء تمام کافیہ انام کو تربیت کرتے ہیں ۔ جن کا ہت بڑا حصہ قریب کل کے محض نا تربیت یافتہ ، جاہل ، وحشی ، جنگلی ، بدوی ، بے عقل و بد دماغ هوتا هے اور اسی لیے انبیاء کو یه مشکل پیش آتی هے که ان حقائق اور معارف کو جن کو تربیت یافته عقل بھی مناسب غور و فکر و تامل سے سمجھ سکتی ہے۔ ایسر الفاظ میں بیان کریں کہ تربیت یافتہ دماغ اور کوڑ مغز دونوں برابر فائدہ اٹھاویں ۔ قرآن محید میں جو بے مثل چیز ہے وہ سی ہے کہ اس کا طرز بیان ہر ایک مذاق اور دماغ کے موافق ہے اور باوجود اس قدر اختلاف کے دونوں نتیجر پانے مس برابر ہیں ۔ انھی آیات کی نسبت دو مختلف دماغوں کے خیالات پر غور كـرو ـ ايک تربيت يافته دماغ خيال كرتا ہے كه وعدہ وعيد دوزخ و بہشت کے جن الفاظ سے بیان ہوئے ہیں آن سے بعینہ وہی اشیاء مقصود نہیں بلکہ اس کا بیان کرنا صرف اعلیٰ درجہ کی خوشی و راحت کے فہم انسانی کے لائق تشبیہ میں لانا ہے ۔ اس خیال سے اس کے دل میں ایک بے انتہا عمدگی نعیم جنت کی اور ایک ترغیب اوام کے بجا لانے اور نواھی سے بچنے کی پیدا ھوتی ہے اور ایک كورُ مغز ملا يا شهوت پرست زاهد يه سمجهتا هے كه در حقيقت بهشت میں نهایت خوب صورت ان گنت حوریں ملس گی ـ شرابس پئیں گے ، میوے کھائس گے ، دودہ و شہد کی ندیوں نہاویں گے اور جو دل چاہے گا وہ سزے آڑاویں کے اور اس لغو بے ہودہ خیال سے دن رات اوامر کے بجا لانے اور نواھی سے بچنر میں کوشش کرتا

ھے اور جس نتیجہ پر پہلا پہنچا تھا اسی پر یہ بھی پہنچ جاتا ہے اور کافہ انام کی تربیت کا کام بہ خوبی تکمیل پاتا ہے ۔ پس جس شخص نے ان حقائق قرآن مجید پر جو فطرت انسانی کے مطابق ھیں غور نہیں کی ۔ اس نے در حقیقت قرآن کو مطلق نہیں سمجھا اور اس نعمت عظمیٰی سے بالکل محروم رھا ۔

(r)

مضامین متعلق به استفسارات

اخبارات کے اعتراضات اور اُن کے جوابات

(اقتباسات از رساله تهذیب الاخلاق جلد ے بابت ۱۲۹۳ه)

تهذیب الاخلاق کی ساتویی جلد بابت ۹۲ م س سرسید نے ایک نیا سلسلهٔ مضامین شروع کیا تھا اور وہ یہ تھا که هندوستان کے مختلف اخبارات جو اعتراضات سرسید یر کرتے یا ان کے متعلق کسی رائے یا خیال کا اظہار کرتے یا کوئی شخص سرسید کو خط لکھ کر کسی بات کی وضاحت چاہتا اور ان سے مسئلہ زیر محث کر متعلق ان کی رائے پوچھتا تو سید صاحب ان کے اعتراض یا رائے یا خیال کو محنسہ نقل کرنے کے بعد اس کا حواب دیتر یا ان کی تحریرات پر اپنی رائے یا خیال کا اظہار کرتے ۔ یہ مضامین تہذیب الاخلاق کی ساتو ہی جلد کے سعدد پرچوں سیں چھپر ھوئے سوجود ھیں اور اس وقت کے حالات و واقعات کا نہایت صحیح مرقع پیش کرتے میں ۔ هم تهذیب الاخلاق کے مختلف پرچوں سے انتخاب و اقتباس کر کے ہاں سرسید کے ان سب مضامین کو یک جا درج کرتے ہیں ۔ اخبارات کے اصل اعتراضات بھی شروع میں لکھ دیے گئے ھیں تاکہ ان کا جواب سمجهنر میں آسانی هو - (عد اساعیل پانی پتی)

البرث گزٹ لاہور ، ۲ جون ۱۸۲٦ء

به ذیل تغلیط خبر انهدام مسجد بنارس یه ارقام فرمایا هے که را مدهبی معاملوں میں جو (سید احمد خان) کی رایوں نے مشتہر هو کر تاثیر پیدا کی هے وہ بھی چھپی هوئی نہیں هے ۔ کہا جا سکتا هے که ان کی رایوں نے مذهب اسلام کے قائم اور بے حرکت دریا میں ایک طوفان عظیم برپا کر دیا هے ۔

گو آخر یه طوفان آنا هی تها مگر جب عام لوگ اس کے مقابله کے واسطے تیار هو جاتے اس وقت کوئی شخص اس کی پروا نه کرتا اور اس کو ایک معمولی تبدیل هوا کے سوا کچھ نه سمجھتا ۔ لیکن آج کل اُس کے ظاهر هونے سے جس طرح لوگ غوطے کھا رہے هیں سب پر هویدا هے ۔''

ریمار ک

هم نہیں سمجھتے کہ کیا تاثیر پیدا کی ہے اور نہ یہ سمجھے کہ آخر کو اس طوفان کے آنے کا کیوں یقین تھا اور عام لوگوں کا مقابلہ کے لیے تیار ہو جانے کا کون سا وقت تھا اور کون سی بات ہے جس میں لوگ غوطے کھا رہے ھیں۔ ھارا گان ہے کہ هم نے اسلام کی صحیح حقیقت بتائی ہے اور بہت سے دلوں کو جو اسلام کے حق ہونے میں متردد تھے آن کو اس کے حق ہونے کا یقین دلایا ہے اور علم اور مذھب اور قدرت کا مخرج ایک ھی اصل سے ثابت کیا ہے۔

اخبار رهبر هند لاهور ، مورخه ۳ جون ۱۸۷٦ء خبر انهدام مسجد بنارس کی تغلیط کے بعد ارقام فرماتے هیں که "کش جناب مولوی سید احمد خاں صاحب بهادر اور معزز

وقائع نگار سائنٹفک سوسائٹی اس کیفیت کو پہلے ہی اعتراضوں پر چھاپ دیتے تاکہ دوست و دشمن کو ان کی مخالفت میں موافق ہونے کا موقع نہ ملتا ۔''

ریمار ک

جب آپ کے دوست نے پہلی ہی دفعہ دشمنوں کے ساتھ موافق ہونے میں ذرا بھی تامل نہیں کیا تو پھر اصلی کیفیت کے چھاپنے سے کیا فائدہ تھا۔ اس مقام پر استعال لفظ دشمن درست نہیں ہے کیوں کہ میں اپنی دانست میں کسی کو اپنا دشمن نہیں سمجھتا۔ کیوں کہ میں اپنی دانست میں کسی کو اپنا دشمن نہیں سمجھتا۔ کفر است در طریقت ما کینہ داشتن آئین ما است سینہ حو آئینہ داشتن

اوده اخبار مورخه ۳۱ مئی ۱۸۲٦ء

انہدام مسجد بنارس کے باب میں ارقام فرماتے ھیں کہ جو مضامین نسبت لعن و طعن سید احمد خاں کے چھاپے گئے وہ ھارے پاس بھی آئے مگر ھم کو اعتبار نہ تھا۔

ریمار ک

اس اعتبار نہ ہونے کا بہت ہت شکر ہے ـ

پھر ارقام فرماتے ہیں کہ '' با وصف یہ کہ اس قدر جوش و خروش ہوا مگر تعجب تھا کہ سید صاحب نے کسی کا جواب نه دیا ۔''

ریمار ک

اس سے ھارے کے ملک اخباروں کی وقعت ثابت ھوتی ہے۔ افسوس ھزار افسوس پھر ارقام فرماتے ھیں که '' اخبار سین ٹیفک سوسائٹی میں یه مضمون نہایت دیر میں چھپا یعنی اس وقت جب که سید صاحب کی بد نامی تمام دنیا میں مشتمر ھو چکی ۔''

ریمار ک

اس کے عذر میں نہایت ادب سے اپنے شفیق کے سامنے حافظ کا یہ شعر پڑھتا ہوں ۔

> در کوئے نیک نامی ما را گذر ندادند گر تو نمـی پسندی تـغـییرکن قـضـا را

لیکن اگر ھارے دوست اس فقرہ کو یوں ارقام فرماتے کہ یہ مضمون نہایت دیر میں چھپا یعنی اس وقت جب که تمام اخباروں کی بدنامی دنیا میں ھو گئی تو شاید لفظ بدنامی کے صحیح معنی ھو سکتر ۔

هم کو امید ہے کہ خدا وہ دن بہت جلد لاوے گا جب کہ هاری قوم بدنامی کے صحیح معنوں کو سمجھے گی اور ھارے ملک کے اخبار خود اپنی عزت کی آپ قدر کریں گے جس کو انگریزی میں سلف آنر کہتے ھیں اور صرف یہی ایک امر ہے جس سے انسان کی اور قوم کی اور اس شئی کی جس کو بطور انسان کے تعبیر کرتے ھیں عزت ہے ۔

اخبار وكيل هندوستان، ١٠ جون ١٨٤٦ء

هم نهایت خوش هیں که اغلب صاحب نے جو اغلب هے که سلمان هیں هاری کارروائی پر اخبار مذکورہ بالا میں نکته چینی کی هے اول آنهوں نے بنگالیوں کی ترقی تعلیم اور تہذیب ظاهری اور اس کے اسباب بیان کیے هیں ۔ پهر وہ سلمانوں کی طرف متوجه هوئے هیں ۔ بعض باتیں جو ایسے عمدہ آرٹیکل میں هونی زیبا نه تهیں ان پر هم خیال نہیں کرتے ۔ جو بات که غور کرنے کے قابل اس میں هے وہ بلا شبه توجه کی مستحق هے ۔

وہ لکھتے ہیں کہ سید احمد خاں نے ہندوستانیوں کو عموماً اور مسلمانوں کو خصوصاً تہذیہ سکھلانی چاہی تھی ۔۔۔۔۔

ہذیب الاخلاق آنھوں نے جاری کیا اور اس میں صرف مسلانوں کی خراب حالت معاشرت ھی پر مضامین نہیں لکھے بلکہ نہایت عجلت کے ساتھ مسلمانوں کے مذھبی معاملات میں مداخلت کی اور اس دنیاوی تہذیب کے وعظ میں دینی و مذھبی باتوں کو بھی ملایا ۔ اس پر مسلمانوں نے بہت برا مانا ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ انجام یہ ھوا کہ ایک مذھبی مباحثہ چھڑ گیا جس سے نجم الهند سید احمد خاں کا اصل مقصد خاک میں سل کیا اور ان کی جلدی و عدم استقلال نے ان کو کام یاب نہ ھونے دیا ۔

ر يمارك

بلاشبه هم کو بهی افسوس هے که تهذیب الاخلاق میں به مجبوری مذهبی مضامین کے لکھنے کی زیادہ ضرورت پڑی اور اگر یه امر هاری عجلت اور بے استقلالی اور نا عاقبت اندیشی سے هوا تو بلا شبه هم کو سب سے زیادہ افسوس کرنا چاهیے ـ

مگر هم سمجهتے هیں که ایسا کرنے میں هم کو نہایت مجبوری تھی ۔ بنگالیوں یا تمام هندوستان کے هندوؤں کا اور مسلمانوں کا حال بالکل مختلف ہے ۔ بنگالیوں کے حال پر یا اسٹیل و اڈیسن کے اصول پر جو انہوں نے انکستان میں تہذیب پھیلانے میں برتا مسلمانوں کی حالت پر قیاس کرنا صحیح نہیں ہے بلکہ قیاس سع الفارق ہے ۔ اگلے بنگالی اور هندوستان کے تمام هندو قریباً کل کے ۔ مطلق اپنا

مذھب نہیں جانتے چند باتیں جو بطور رسم کے ان میں پڑ گئی ھیں آسی کو وہ اپنا مذھب جانتے ھیں۔ آن محدود رسموں کے محفوظ رھنے کے ساتھ کوئی قول یا فعل یا عقیدہ یا علم ایسا نہیں ہے کہ جس کے کہنے، کرنے ، یقین لانے ، سیکھنے کو وہ اپنے مذھب کے برخلاف سمجھتے ہوں اس لیے آنھوں نے نئی زبان ، نیا علم ، نئی تہذیب سیکھنے میں کبھی تا ل نہیں کیا ۔ جس زمانہ میں کہ ھندوستان

پر مسلانوں کی حکومت تھی آنھوں نے آنھیں کا علم ، آنھیں کی زبان ،
انھیں کی تہذیب سیکھی ۔ شاعر ھوئے ، منشی ھوئے ، صاحب
تصنیف ھوئے ۔ مسلانوں کی طرح اپنی تصانیف میں حمد و نعت
لکھی ۔ تاریخ کی کتابوں میں جو خود ھندوؤں نے تصنیف کی آنھیں
ھندوؤں کو کافر اور ان کے مقتولوں کو فی النار اور مسلمان فتح مندوں
کو غازی لکھا اور صرف بسبب محفوظ رھنے آنھیں محدود
رسموں کے ھندو کے ھندو ھی رھے ۔ مجھے اس وقت ایک برھمن
شاعر کا فارسی شعر یاد آیا جیسا کہ وہ اپنے مضمون میں عالی ھے
ویسا ھی اس مقام کے بھی مناسب ھے ۔

مرا دلے است بکفر آشنا که چندیں بار به کعبه بـر دم و بازش برهمن آوردم

ھاں بنگالیوں نے بعد تعلیم پانے کے اپنے قدیم مذھب کو چھوڑ دیا ۔ یہ نتیجہ قبل تعلیم و تربیت کے نہیں ھوا بلکہ بعد تعلیم کے ھوا ۔ سبب اس کا یہ تھا کہ جو موجودہ مذھب ان کاتھا وہ سچ نه اور ممکن نه تھا کہ وہ علم کی روشنی کے سامنے قائم رھتا ۔ یہ بات کچھ ھندوؤں کے مذھب پر موقوف نہیں ہے ۔ علم ایک روشنی ہے جو دل میں ڈالی جاتی ہے ۔ جیسا کہ حضرت عبداللہ بن عباس نے فرمایا ہے کہ '' العلم نور یہذف فی القلب'' پس جو مذھب کہ علم کے برخلاف ہے وہ کبھی قائم نہیں رہ سکتا ۔ مگر ان بنگالیوں کو علم کے حاصل کرنے اور تعلیم پانے اور تہذیب سیکھنے میں کوئی امی جس کو وہ مذھبی خیال کرتے ھوں مانع نه تھا گو میں بعد تعلیم کیسا ھی آس کے برخلاف ھوا ھو ۔

انگلستان میں جب تک پوپ کی ایسی ھی حکومت لوگوں پر رھی جیسے کہ اس زمانہ کے مولویوں کی مسلمانوں پر ہے اس وقت تک کسی چیز میں ترق یورپ میں نہیں ھوئی ۔ یہاں تک کہ

دو فرقے یورپ میں پیدا ہو گئے ایک وہ جو پوپ کی حکومت سے بالکل آزاد ہو گیا دوسرا وہ جو صرف روحانی باتوں میں پوپ کا تابع رہا اور دنیاوی باتوں میں پوپ کی حکومت سے نکل گیا ۔ مگر اس مقام پر یاد رکھنا چاھیے کہ ان کے نزدیک روحانی یعنی مذھبی امور بالکل جدا چیز ھیں اور دنیاوی اسور بالکل علیحدہ ۔ وہ ان دونوں کو ایک نہیں سمجھتے ۔ برخلاف مسلمانوں کے کیوں کہ مسلمان مروج مذھب کے بموجب ان دونوں میں کے چہ تفریق نہیں کرتے ۔

اسٹیل اور ایڈیسن کے وقت میں انگستان کی ترقی تہذیب دنیاوی امور میں کچھ مشکل نه تھی کیوں که اس کی ترقی کے لیے اس وقت میں کوئی مذھبی خیال مانع نه تھا۔ صرف یه بات کفی تھی که اُبری بات کا اُبرا ھونا اور اچھی بات کا اچھا ھونا لو دوں کے دلوں پر بٹھا دیا جائے ۔

اب دیکھو کہ مسلانوں کی حالت اس کے بالکل برخلاف ہے۔ اُن کا کوئی قول ، کوئی فعل، کوئی یقین روحانی ھو یا جسانی، دینی ھو یا دنیاوی مذھب سے خالی نہیں ۔ ان کے ھاں دنیاوی معاشرت اور مذھبی معاملات میں کچھ تفریق و جدائی نہیں ہے ۔ کوئی ام حسن معاشرت یا تہذیب کا ۔ فرض کر لو جو محض دنیاوی ھو اس پر ضرور بالضرور احکام عشرہ مذھبی میں سے کوئی نه کوئی حکم جاری ھوگا ۔ یعنی فرض ، واجب ، سنت ، مستحب ، مباح ، حلال ، حرام ، مکروہ ، کفر ، بدعت ۔ پس مسلانوں کی خراب حالت ، معاشرت کی تحرق بغیر اس کے که مذھبی بحث درمیان میں آوے کیوں کر ھو سکتی ہے ۔

جس قوم کی حالت ایسی ہو کہ وہ سپ کو بھی اگر ان کے مسلم عقیدہ کے برخلاف ہو سپ سمجھنا کفر سمجھتے ہوں تو اس

کی حراب حالت معاشرت کے درست کرنے کو کس طرح مذھبی بحث سے مچا جاوے ؟

میں ایک بہت برڑے عالم اور مقدس اور نیک فرشته خصلت کی مجلس کا ذکر کرتا ہوں جو ہارے شہر میں بلکہ هندوستان میں مقتدا تھے ان کے مدرسه میں ایک طالب علم نے پوچھا که حضرت تمام علاء علم هیئت نے تسلیم کیا ہے کہ زمین گول ہے اور بعض حدیثوں سے پایا جاتا ہے کہ مسطع ہے ۔ حضرت نے فرمایا کہ اگر تم اپنی آنکھ سے دیکھ لو کہ زمین گول ہے تو بھی یہی یقین رکھو کہ مسطح ہے ۔ لوگوں نے کہا سبحان اللہ! قوت ایمان کے یہ معنی میں ۔ اس وقت ھارے دل پر بھی ایسا ھی اثر ہوا جو اور لوگوں کے دلوں پر تھا مگر جب آدمی غور کرے تو سمجھ سکتا ہے کہ کے دلوں پر تھا مگر جب آدمی غور کرے تو سمجھ سکتا ہے کہ یہ کیا بات ہوئی ۔

اے جناب اغلب! جب که هاری قوم کا یه حال ہے که علوم کا پڑهنا ، طبیعات کا جاننا ، نیچرل فلاسفی پڑهنا ، علم هیئت کو میکھنا ، کافروں کی زبان کا سیکھنا ، آن کے علوم کو پڑهنا ، آن سے معاشرت اور دوستی کرنا ، آن کی چیز کو اچها کہنا ، آن کے کسی هنر کی تعریف کرنا ، کفر و بدعت ، خلاف دین داری اور خلاف اتقا سمجھتے هوں تو اب هم آن کی ترقی تہذیب و معاشرت کی بلا مباحثه مذهبی کیوں کر تدبیر کریں ۔ دو حال سے خالی نہیں ۔ یا تو هم قبول کریں که یه سب باتیں خلاف مذهب هیں اور ضرور مذهب اسلام میں منع هیں مگر آن کے کرنے کی رغبت دلائیں لیکن اگر در حقیقت هم آن کو مذهب اسلام کے برخلاف سمجھتے هوں اور پھر هم خود اپنے تئیں بھی مسلمان کہه کر آن پر رغبت دلائیں اور تو وائے بر حال ما اور اگر هم ان کو اپنے نزدیک مذهب اسلام کے برخلاف شمجھ غلط تو وائے برخلاف نہیں سمجھتے ۔ (فرض کرو که هاری یه سمجھ غلط

هی هو) تو هم کو ان پر رغبت دلانا ، ان کا اچها هونا ثابت کرنا هارے ایمان کے مطابق هوگا۔ مگر پهر کیوں کر هم بحث مذهبی سے بچ سکتے هیں کیوں که پهلا قدم هارا یه هے که جو هم کہتے هیں وہ ٹھیٹ مذهب اسلام هے اور یہی هارا یه یقین هے۔ پس اگر هارے شفیق اس لازم و ملزوم کے جدا کرنے کی کوئی تدبیر بتا دیں تو هم دل و جان سے اپنی غلطی کا اقرار کرنے کو حاضر و موجود هیں۔

اس بات پر هم البته یتین نہیں کر سکتے که هارا مقصد خاک میں مل گیا ۔ کیوں که هم اپنی اس کوشش کا اپنی دانست میں بہت کچھ نتیجه دیکھتے هیں ۔ تمام هندوستان کو اس بات کا خیال هو گیا هے که قوم کی حالت اچھی نہیں ہے ۔ اُس کے لیے کچھ کرنا چاهتے ۔ یہی تحریک اگر باقی رهی اور می نه گئی تو بہت کچھ کر دکھائے گی ۔ جس امر کو هم نے چھیڑا هے وہ مسلمانوں کے لیے ایک نئی بات موجودہ عام خیالات کے برخلاف موتی ہات ہو اول اول عام مخالفت کا هونا ضرور هوتا هے ۔ اُس خیال فرمائیں که اس سے زیادہ سچی بات کون سی تھی جو جدی مجد رسول الله صلعم نے کعبه کے رو برو کھڑے هو کر فرمائی ۔ هوالله احد الله الے صمد ۔ مگر یه قول اُس زمانه کے عام خیالات کے برخلاف تھا ۔ یهر آپ جانتے هیں که کیا هوا ۔ اُن هوئی هوئیں ۔ اور اُن سمنی سمنی پڑیں ۔

جس قدر مخالفت هارے ساتھ لوگوں نے کی اور هم کو سخت و سست برا بھلا کہا۔ هم کو دجال اول کا لقب دیا۔ هارے اجداد کو نعدوذ الله دجال کے اجداد قرار دیا۔ جن کا کامه روز پڑھتے هیں ان کو معاذ بالله دجال کا دادا سمجھا۔ حقیقت میں یہ بہت کم هوا۔ جب هم نے اس کام پر هاتھ ڈالا تو هم کو اس سے بھی بہت زیادہ مخالفتوں کا یقین تھا۔ مگر هم سچ کہتے هیں که

ہم کو اپنر محالفوں سے روز بروز زیادہ محبت ہوتی جاتی ہے اور اپنر دوستوں سے بھی زیادہ مخالفوں کی مخالفت سے خوشی ہوتی ہے کیوں که ھم کو یقین نہیں ہے کہ ھارے مخالف کچھ ھاری ذات سے دشمنی نہیں رکھتر ۔ کچھ میراث کا هم سے آن سے جھگڑا نہیں انھوں نے هم کو نہیں دیکھا ۔ هم نے ان کو نہیں دیکھا ۔ وہ صرف اس خیال سے مارے مخالف یا دشمن بنے میں که هم ان کی دانست میں برخلاف اسلام کجھ کرتے یا کہتر میں ۔ پس یہ ایک دلیل اسلام کی محبت کی ہے۔ پس ہم کو نہایت خوش ہونا چاہبر کہ لوگ اسلام کو دوست رکھتر ہیں ۔ باتی رہا آن کا یہ خیال کہ ہم برخلاف اسلام کے کچھ کرتے یا کہتر میں یہ ان کی ایک غلطی اور نـا سمجھی ہے ۔ جس وقت آن کی یہ غلطی رفع ہـو جائے گی اور وہ ہارے کاسوں کے سوچیں اور سمجھیں گے تـو وہی ہارے مخالف سب سے زیادہ ہارے دوست ہوں گے ۔ اس وقت ہارے دوست ایسے موجود هیں جو هم سے کال نفرت اور دلی عداوت رکھتے تھے مگر جب وہ سوچر اور سمجھر تو اب وہ سب سے زیادہ ہارے دوست هس ـ

البته هم كو اپنے خالفوں پر اس بات كا افسوس هے كه وه بهت كچھ جهوٹ اور اتهام اور دروغ هارى نسبت لكهتے اور كهتے هيں اور جس سبب سے هم سے خالف هونا خيال كرتے هيں خود اس ميں فى الحقيقت پڑتے هيں يا ان كے نزديك دروغ و كذب و تهمت امورات خلاف مذهب اسلام نهيں هيں ـ نعوذ بالله منها ـ تمام اهل مذاهب مذهبوں كے ايك بهت بڑے اور نهايت قومى دشمن سے غافل هيں جس كا نام علم يا حقيقت يا سچ هے ـ كوئى ايسا مسئله يا اعتقاد كسى مذهب كا جو اس كے برخلاف هو كبهى قائم نهيں ره سكتا ـ اس وقت ديكھ لو كه تمام مذاهب كے ايسے قائم نهيں ره سكتا ـ اس وقت ديكھ لو كه تمام مذاهب كے ايسے

مسئلے علم کے سامنے اس طرح پر جلتے چلے جاتے ہیں جیسے نورانی سفید پالہ سے چھوٹے اور کمزور بود ہے پود ہے۔ مذھب اسلام کے بہار باغ میں بھی لوگوں کی غلطی سے اس قسم کی بہت سی گھاس پھونس آگ کھڑی ہوئی ہے جو علم کے سامنے ایسی نیست و نابود ہو جاتی ہے جیسے کہ نور کے سامنے تاریکی ۔ جو شخص نہایت دوست اس باغ ہمیشہ بہار کا ہے اس کا فرض ہے کہ اس گھاس پھونس کو آکھاڑ ہے۔ ورنہ اس سے تمام باغ میں نقصان پہنچے گا۔ ناواقف آدمی سمجھتا ہے کہ باغ کے درخت آکھاڑ ہے جاتے ہیں مگر یہ خود اس کی غلطی ہے۔

هزاروں آدمی اس وقت مسلمانوں میں ایسے موجود هیں که اگر ان کا دل چیر کر دیکھو تو بہت سے مروجہ مسائل اسلام پر ان کو کامل یقین نہیں ھے۔ یا ان کے دل کو طانیت نہیں ھے۔ همیشه وہ مسئلے دل میں کھٹکتر ہیں مگر لوگوں کے ڈر سے منہ سے نہیں نکالتے ـ بہت سے ایسر ہیں جو اپنر دل کو اس طرح پر تسلی دیتر هیں کہ شریعت میں ہے اسے خواہ نخواہ تسلیم کرنا چاہیر ـ جو زیادہ بے وقوف ھیں وہ کہتر ھیں کہ میاں نقل میں عقل کا کیا کام ھے مگر وہ مسئلے سب کے دل میں ضرور کھٹکتے ہیں ۔ مسلمان نوجوان جو انگریزی دان هیں اور علوم جدیدہ اور تواریخ سے واقف هیں وہ تو یقیناً ان مسائل اور قصص اور روایات کو جهوٹ و لغو و بهوده جانتر میں اور چوں که مارے مذهب کے علماء نے اس طرح پر ان مسائل اور قصص اور حکایات کو بیان کیا ہے کہ گویا قرآن محید میں اسی طرح پر ہے اور پیغمبر خدا صلعم نے یوں ہی فرمایا ہے تو وہ نوجوان تعلیم یافتہ خیال کرتے ہیں کہ نعوذ باللہ قرآن محید ھی غلط ہے اور سرمے سے مذہب اسلام باطل ہے اور اس لیر بمجبوری ان کو لا مذهب هونا اور مذهب اسلام کو سلام کرنا پڑتا ہے۔ حالاں کہ اس کا وہال ان لوگوں کی گردن پر ہے جنہوں نے غلط مسائل اور لغو و سہمل ہے اصل روایتیں اسلام میں ملا دی ھیں۔ ھم ان اگلے بزرگوں پر جنہوں نے ایسا کیا کچھ الزام نہیں دیتے۔ وہ اس زمانہ میں مجبور تھے کیوں کہ تحقیقات کے ذریعے کافی نہ تھے اور جو باتیں اس وقت تحقیق هوئی ھیں اس وقت ناتحقیق اور بہت ھی لا معلوم تھیں اور ان لوگوں نے اس زمانہ کے خیالات کے موافق جو کچھ کیا نہایت نیک دلی اور سچائی اور اسلام کی محبت سے کیا۔ ھم کو جو کچھ افسوس ہے اس زمانہ کے لوگوں پر ھے جو ان باتوں کی تحقیق اور مذھب اسلام کی سچائی اور صداقت ثابت کرنے کے برخلاف ھیں۔ یہ نہیں اسلام کی سچائی اور صداقت ثابت کرنے کے برخلاف ھیں۔ یہ نہیں سمجھتے کہ جو کہڑے اندھیرے میں نہیں دکھلائی دیتے وہ روز روشن میں کبھی چھپ نہیں سکتے۔ جس روشنی سے دنیا روشن ھو گئی ھو اپنی آنکھ بند کر لینے سے وہ اندھیری نہیں ھو سکتی بلکہ خود ھی اندھ ھو جاتے ھیں۔

یه هاری هی قوت ایمانی هے اور یه هارا هی یقین اسلام پر هے که هم مثل ایک بیدر پہلوان کے میدان میں موجود هیں اور علانیه پکارتے هیں که بجز مذهب اسلام کے اور کوئی مذهب ایسا نہیں ہے که علم ، سچائی ، حقیقت ، قدرت کے مطابق هو ۔ یه هم هی هیں جو علانیه پکار کر کہتے هیں که مذهب اسلام بالکل بے عیبب اور بے داغ هے اور کسی کی غلطی اور کسی کی نا سمجھی سے اس پر دهبه نہیں لگ سکتا ۔ یه هم هی هیں جو اسلام کے مقابل اور بانی اسلام محد رسول الله صلی الله علیه وسلم کے سامنے دنیا میں کسی کی بھی کچھ حقیقت نہیں سمجھتے اور اسلام اور بانی اسلام کے قول و فعل کے غلط هونے کی پروا بانی اسلام کے سامنے کسی کے قول و فعل کے غلط هونے کی پروا بہی کرتے ۔ هم صرف قرآن و محد رسول الله صلی الله علیه وسلم بہی کرتے ۔ هم صرف قرآن و محد رسول الله صلی الله علیه وسلم

پر ایمان لائے هیں نه زید و عمر پر بے شک هارا یه طریقه نیا هے اور یہی ٹھیٹ اسلام هے ۔ عام خیال اس کے برخلاف هے اُنھوں نے مجد رسول اللہ کے سوا هزاروں معنوی پیغمبر مان رکھے هیں پس ضرور هے که وہ مخالف هوں گے جس کی ذرہ برابر بھی هم پروا نہیں کرتے ۔

اگر اغلب صاحب تحقیق فرماویں تو اغلب ہے کہ وہ بہت سے دل ایسے پاویں گے جن کو ھاری تحریروں سے تسکین ھوئی ہے اور ھاری ھی تحقیقاتوں سے آنھوں نے مذھب اسلام کے سچ ھونے پر یقین کیا ہے۔ اگر ھم نے ایک ھی مذہذب دل کو تحریروں سے تھام لیا ھو تو بلا شبہ ھم نے اپنی مراد پا لی ۔ دور اندیش اور عاقبت بین انسان کا یہ کام نہیں ہے کہ کوؤں کے کائیں کائیں سن کر پریشان ھو جاوے بلکہ اس کو غور کرنا چاھیے کہ مطلب سن کر پریشان ھو جاوے بلکہ اس کو غور کرنا چاھیے کہ مطلب کیا ہے ، منشاء کیا ہے۔ ورنہ کسی کی زبان کیا ہے ، منشاء کیا ہے۔ ورنہ کسی کی زبان پکڑی نہیں جاتی، قلم توڑا نہیں جاتا ۔ و ان اجری الا علی اللہ ۔ نوٹ : مندرجہ بالا اقتباسات تہذیب الاخلاق بابت یکم خادی اللہ جادی الثانی ہے ،

اخبار جریده روزگار ، ۸ جولائی ۱۸۷۹ء

اخبار مذکور میں ایک پکے مسلمان کا خدا کرے کہ وہ ٹھیٹ مسلمان بھی ہو جاویں ایک خط نسبت مدرسة العلوم کے چھپا ہے ۔ جس میں چند سوالات ہیں جن کا جواب امید ہے کہ بعد غور کے وہ خود دریافت فرما لیں گے ۔ مگر ایک سوال کے جواب سے سب مسلمان بھائیوں کو مطلع کرنا ضرور ہے ۔

وہ استفسار فرماتے ہیں کہ '' مدرسة العلوم تو خاص مسلمانوں کے لیے مقرر کیا گیا ہے اس میں ہندوؤں کے پڑھانے کی کیا، وجہ ؟ ''

اس کے جواب میں کوئی فیاض اور نیک دل مسلمان کہہ سکتا ہے کہ ھاں اس مدرسة العلوم کے قائم ھونے کی ضرورت خاص مسلمانوں کو تھی جن کے لیے قائم ھوا مگر مسلمانوں کو ایسا بخیل و تنگ دل نہ ھونا چاھیے کہ اگر دوسری قوم اس سے فائدہ اٹھانا چاھے تو اسے محروم رکھے بلکہ خوبی اور نیکی اسی سی ھے کہ مسلمانوں کے سبب سے اور لوگ بھی فائدہ اٹھاویں ۔

کوئی شیخی خورہ اور خود ستا شخص جس نے اپنی آنکھوں کو مسلانوں کی موجودہ حالت سے بند کر لیا ہے اور مچھلر زمانہ کے خواب دیکھ رہا ہے وہ یہ حواب دے گا کہ ہم ہمیشہ سے ایسر هی فیاض رهے هس ـ هارے دارالعلوموں میں تمام دنیا کے اور تمام قوموں کے لوگوں نے تعلم پائی ہے دیکھو ھارے اندلس کے دارالعلوم جہاں ھارے باب دادوں کی ھڈیاں زمن کے اندر پڑی ھی گو ان کے خلف اور ہارے سلف پھر نہایت ذلت اور خواری سے وہاں مے نکالر گئر۔کیسر فیاض اور نامی تھرکہ تمام فرنگستان میں آنھیں دار العلوموں نے علم کی روشنی پھیلائی ۔ مسلمان اور ہمودی اور عیسائی ان دارالعلوموں مس برابر تعلم باتے تھر اور ان دارالعلوموں کا ایک عیسائی طالب علم جو پڑھ کر انگلستان میں جاتا تها تو برا عالم اور قابل ادب سمجها جاتا تها ـ پس هارا یه مدرسة العلوم بھی ایسا ھی فیاض اور نے تعصب اور نامور ھونا چاهبر مگر شاید وه اس شعر کو پڑھ کر نادم هو جاتا هو تو هو حاتا هو _

> آدمی را بچشم حال نگـر از خیال پری و وے بگذر

نهایت سچ مقوله کسی کا ہے که دو چیز در دو چیز باور نیاید

ذکر جوانی در پیری و ذکر تونگری در فقیری ـ

مگر ھاں حب کوئی باغیرت اور قومی ھمدردی کرنے والا ٹھیٹ مسلمان اس سوال کو پڑھے گا تو بے اختیار رو دے گا اور اپنی قوم کی ذلت اور اپنی قوم کے ادبار، اپنی قوم کے جھوٹے تعصب ، اپنی قوم کی خود غرضی ، اپنی قوم کی جهوئی دین داری ، اپنی قوم کی ناسمجھی و ناعاقبت اندیشی پر افسوس کرمے گا اور یه حواب دے گا که هاری قوم اس لائق نه تهی که اپنی قوم کے لیے اور اپنی نسلوں کے لیے ، اپنی اولاد کے لیے ، اپنے مجوں کے لیے ایک ایسا مدرسه جس میں وہ تعلیم پاویں بنا سکے ۔ لاچار مدرسة العلوم کے بانیوں کو مسلمانوں کے اس قومی مدرسة العلوم کے لیر دوسری قوم کے آگے ھاتھ پھیلانا پڑا اور ھندوؤں نے نہایت فیاضی سے روپیہ و جاگر و انعام دیا اور تمام قوم کو اپنا ممنون اور زیر بار احسان کیا ۔ پس ایسی حالت سی یه سوال کرنا که ھندو کیوں پڑھائے جاتے ہیں کیسی شرم کی بات ہے ۔ قومی غیرت والركو ڈوب مرنے كا مقام هے نه ايسر سوال كرنے كا ـ خدا هاری قوم کو سچی عـزت ، سچی غیرت ، سچـی قوسـی همدردی عنایت کرمے ۔ آسن ۔

هاں ایک بات تو رہ هی گئی که اس کا یه جواب هو سکتا هے که یه بات اس لیے هوئی که ایک بے دین ملحد سید احمد اس کا بانی هوا هے ۔ مگر کیا یه بات سچ هے ؟ جو اپنے آپ کو بڑا دین دار سمجهتے هیں آنهوں نے اپنی قوم کے لیے کیا کیا هے!!! یه تمام جهوٹی باتیں هیں اور صرف بد اقبالی اور ادبار جو مسلمانوں پر هے وہ ایسی باتیں کہواتے هیں ۔ جهوٹ بولنا اور جهوٹی باتیں لوگوں کی نبست منسوب کرنا ۔ بات کو نه سمجهنا اور نه سمجهنا کا قصد کرنا یا دیدہ و دانسته کذب و افترا باندهنا اور

ایک بہت بڑی پکی مسلمانی رہ گئی ہے ۔ افسوس بریں دینداری و بریں مسلمانی ۔

آخیر کو هم ایڈیٹر صاحب کا شکر کرتے هیں که آنهوں نے مدرسة العلوم علی گڈھ کی ترق کی خواهش کی هے اور ایک کتاب کتب درسیه مدرسة العلوم کی ان کی خدمت میں بھیجتے هیں تاکه جس امل پر آنهوں نے اشتباها تاسف کیا هے آس کتاب کو پڑھ کر هی امید هے که یقینا ان نامه نگار صاحب کی تحریر پر تاسف فرماویں گے ۔

(مندرجه بالا اقتباسات تهذیب الاخلاق سورخه یکم رجب ۱۲۹۳ سے لیا گیا ہے)

أخبار رهبر هند، مطبوعه ۲۵ جولائی ۱۸۷٦ء

هارے شفیق بالتحقیق سید نادر علی شاہ سیفی نے مدرسةالعلوم کی سات مہینه سنه ۱۸۵۵ء کی کارروائی پر ایک نہایت عمدہ اور فصیح نکته چین ریویو لکھا ہے جس کی طرز ادا اور الفاظ عنایت آمیز اور مضامین نصیحت خیز کے هم ته دل سے شکر گذار هیں ۔ اگرچه هر هر لفظ اس کا دل پر نقش کرنے کے لائق ہے مگر هم اپنے اس نا چیز پرچہ میں صرف آس کے دو جملے نقل کرتے هیں ۔

مدرسة العلوم میں جو یورپین هیڈ ماسٹر مقرر هے اس کی نسبت ارقام فرماتے هیں که '' بڑی حقارت کی بات هے که مسلمانوں کے مدرسه کا منتظم ان کی قوم سے نه هو۔ جس سے یه بات نکلتی هے که مسلمان انتظامی طاقت نہیں رکھتے اور بڑے بے وقوف ، نا تجربه کار اور نا لائق هیں ۔''

ر يمارك

هم بھی جناب ممدوح کی اس رائے سے دل و جان سے متفق

هیں مگر آہ سرد بھرتے هیں۔ آنکھوں سے آنسو بہاتے هیں۔ آسان کی طرف نہایت مایوسی سے دیکھتے هیں۔ قوم کی صورت کو نہایت حسرت سے تکتے هیں اور کہتے هیں کیا کریں قوم کی حالت تو ایسی هی هے۔ لعل اللہ یحدث بعد ذالے اسرا ۔

لڑکوں کی تعداد کم هونے کی ذیل میں یه چند فقرے ارقام فرمائے هیں:

'' معلوم ہوتا ہے کہ مدرسہ کا انتظام عام بسند نہیں ہے اور جو لڑکے آئے ہیں جو عالم یا مولوی سید احمد خاں کے عقیدتا معین و سددگار ہیں ۔''

ريمارك

اس علی بخش خانی فقرہ کی هم دل سے شکر کزاری کرتے هیں اور آسید رکھتے هیں که هارے شفیق کبھی علی گڈھ میں تشریف لاویں کے جیسا که آنھوں نے اپنے ایک عنایت نامه میں لکھا بھی هے اور ان کے قدم کی برکت سے هارا کلبه احزان و مدرسة العلوم منور هوگا۔ تب ایسے امور پر ان کو رائے دینے کا موقع ملے گا۔ هم تو اس فقرہ کا ریمارک لکھنا خلاف ادب سمجھتے تھے مگر اس اندیشه سے که هم پر دوسرا طانچه مغرور هونے کا نه پڑے نہایت ادب سے اس قدر عرض کرتے هیں که آپ هونال صحیح میں هے۔

کم طالب علموں کے داخل ہونے کی ایک وجہ یہی خیال فرمائی ہے کہ '' بڑھ ہوئے خیال کے منتظمین مدرسہ نے طالب علموں کے داخل ہونے کے واسطے بڑی بڑی سخت قیدیں لگا رکھی ہیں جیسے سفید پوش ہونا۔ گراں قیمت کتابوں

کا خریدنا ، بورڈنگ میں داخل ہونا ، مدرسه اور بورڈنگ کا فیس دینا جو ہت زیادہ ہے ۔''

ريمارك

بلاشبه یه سب باتیں سچ هیں اور مسلانوں کو گو وہ ذی مقدور ھی ھوں اس طرح پر رھنا سناسب بھی نہیں ۔ کجا سلمان اور کجا سفید پوش هونا ـ کجا مسلمان اور کجا گراں قیمت پرکتابیں خریدنا ، کجا مسلان اور کجا بورڈنگ ہاؤس میں به صفائی رہنا۔ ان کو ضرور ہے کہ اپنی قدیمی چال کو نہ چھوڑیں ۔ ان کے مربی ناچ میں ، شادی میں ، پیر دیدار کے کونڈوں میں روپیه خرچ کریں ـ شرات میں میاں بیٹر کو آتش بازی منگا دیں ۔ میلوں میں جانے کو روپیه پیسه دیں ۔ چھوٹے میاں ، بڑے سیاں ، منجھلر میاں کی شادیوں میں ، گنڈے بڑھانے میں ، محرم میں ، فقیر بنانے میں قرض پر قرض لیں مگر ان کی تعلیم پر کچھ خرچ نه کریں ۔ هارا ارادہ ہے کہ مدرسة العلوم کی کمیٹی کو ایک صلاح دیں کے که علی گڈھ میں مہت مسجدیں ہیں ، آن کے حجروں میں طالب علم بھیج دیے جاویں ۔ اس شہر میں قصائی ہت رھتر ھیں چودھری سے کہہ کر آن کے لیے ریزگی مقرر کی جاوے ۔ اب امیروں کی سواری کی ضرورت نہیں ہے۔ سڑکوں پر بہت لال ٹینیں جلتی ہیں ان کے گرد (مگر سڑک چھوڑ کر ورنہ کانسٹیبل ڈنڈا مارے گا) بیٹنے کرکتاب کا مطالعہ کر لیا کریں اور تمام اخراجات بورڈنگ ہاؤس کے تخفیف کر دیے جاویں ۔ ہم کو نہایت قوی اسید ہے کہ اس طرح پر طالب علم تربیت پا کر بڑے بڑے مولوی اور فاضل نکلیں کے اپنے باپ دادا کا نام روشن کریں گے ۔ نہایت سیر چشم اور فیاض اور با غرت ہوں گے جن سے قوم کو عزت اور اسلام که فخر هه گا ـ شفیق من جس طرح پر هم قوم کو قوم بنانا چاهتے هیں اور ان میں علم و کال و عزت اور آدمیت اور فخر و مباهات پیدا کرنا چاهتے هیں اگر هم وه نه کر سکیں تو خدا کی مرضی مگر چند بهک منگے ملا بنا دینے سے تو ان کا جاهل رهنا بہتر ہے ۔ ایسے ملانوں کی اب کون سی کمی ہے جو اوروں کے بنانے کی فکر هو ۔

پھر وہ ارقام فرماتے ھیں کہ '' ھم کو افسوس ہے کہ اسلامی محبت اور قوسی مساوات خاک میں مل گئی اور روپیہ والوں نے غریبوں کو قوم سے خارج کر دیا ۔ لازم ہے کہ امیروں سے لیا جاوے اور غریبوں کی کمیٹی کی طرف سے پرورش ھو ۔ یہ تقاضائے ھمدردی اور ھم قومی ہے ۔ صرف دولت والوں کے لڑکوں کو لینا بڑے ھرج کی بات ہے ۔''

ریمارک

هارے شفیق نے هم کو نهایت عمدہ نصیحت قوسی همدردی کی کی ہے جس کا هم دل سے شکر ادا کرتے هیں۔ اس قسم کی قوسی همدردی لفظوں میں بہت خوشنا اور دل چسپ معلوم هوتی ہے مگر برتاؤ میں نہیں آ سکتی۔ هم نے لائیکر گس کے قانون تو سنے تھے کہ اس نے تمام امیروں کا مال و دولت زر زمین سب قوم میں برابر بانٹ دینا چاها تھا جو اس وحشی زمانہ میں بھی نہ هو سکا مگر اس کے سوا پھر کہیں دیکھا نہ سنا۔

هم سمجھتے هیں که هارے شفیق نے اس امر کی نسبت ذرا توجه کم فرمائی ہے ۔ چندہ جس قدر جمع هوا اور جن جن سے لیا گیا وہ محتاج خانه جاری کرنے اور لنگر بانٹنے کے لیے جمع نہیں هوا بلکه اس کا مقصد یه ہے که عمدہ سامان تعلیم کا قوم کے لیے جمع کر دیا جاوے جو موجود نہیں ہے ۔ لائق اور قابل مدرس موجود هوں ۔

عمدہ عمدہ علوم کی کتابیں جمع کی جاویں ۔ جو کتابیں ھاری قوم کی زبان میں نہیں ھیں آن کو اپنی قوم کی زبان میں پیدا کیا جاوے ۔ جس طرح قوم کو مختلف قسم کے علوم کی حاجت ہے آن سب قسم کے علوم کا سامان مہیا ھو جاوے تاکہ جو مجبوری علم و کال کے حاصل کرنے میں قوم کو ہے وہ رفع ھو جاوے ۔ نہ یہ کہ جو اصل مقصود ہے وہ فوت ھو اور محتاج خانہ جاری کیا جاوے ۔ اگر اصل مقصود ہے وہ فوت ھو اور محتاج خانہ جاری کیا جاوے ۔ اگر آمدنی کا ھر مناسب ذریعہ سے بڑھانے کا خیال نہ رکھے تو مدرسین کی تنخواہ و اخراجات ضروری تعلیم کا خرچ کہاں سے ھو ۔ معہذا آگر سب سے مقدم سامان تعلیم نہ موجود کیا جاوے تو کہاں سے تعلیم دی جاوے گی ۔

کیسی غلط بات هارے شفیق نے لکھی ہے کہ " یہ بات کہ غریب لڑکوں کو نہیں لیا گیا۔ ہم قیاساً هی نہیں کہتے بلکہ هم کو معتبر ذریعہ سے اس قسم کی خبریں پہنچی هیں جس سے یہ معلوم هوا کہ مقامی اور باهر کے بہت سے لڑکے یہ عذر کرکے داخل نہیں کیے گئے کہ وہ مدرسہ کے اخراجات دینے کی استطاعت نہیں رکھتے " مگر میری عرض یہ ہے کہ یا تو وہ آپ کے معتبر ذریعہ نہایت نا معتبر هیں یا آن کی سمجھ کی غلطی ہے۔ یہ واقعات محض غلط هیں۔ نه کسی غریب اشراف کو بوجہ اس کی بے مقدوری کے مدرسہ میں داخل نہیں کیا گیا اور نه یه کہا گیا کہ تم کو استطاعت اخراجات مدرسہ دینے کی نہیں ہے۔ مدرسة العلوم کے طالب علموں اخراجات مدرسہ دینے کی نہیں ہے۔ مدرسة العلوم کے طالب علموں جو دینے کا مقدور رکھتے هیں بقدر آن کی استطاعت کے فیس لی جو دینے کا مقدور رکھتے هیں بقدر آن کی استطاعت کے فیس لی جاتی ہے جو ایک ذریعہ آمدنی کے اضافہ کا ہے اور جو آخرکار پھر خاتی ہے جو ایک ذریعہ آمدنی کے اضافہ کا ہے اور جو آخرکار پھر اس کی معافی بھی نہایت غریب بے استطاعت فائدہ نہیں ہوتا ۔ پھر اس کی معافی بھی نہایت غریب بے استطاعت

کے ساتھ ممکن ہے۔ لیکن اگر یہ خواہش ہو کہ اس کے ذاتی اخراجات بھی مدرسة العلوم سے ہوں تو اول تو یہ نا ممکن ہے اور نه ان اخراجات کے لیے چندہ ہوا ہے۔

بورڈنگ ھاؤس میں کوئی شخص داخل نہیں ھو سکتا جب تک کہ اخراجات بورڈنگ ھاؤس نه دے۔ کیوں که انھی لوگوں کا روپیه ان کے کہانے پینے میں خرچ ھوتا ہے جو وھاں رھتے ھیں۔ کمیٹی صرف اس کا اهتام کر دیتی ہے۔ بورڈنگ ھاؤس میں مردوں کے فاتحه کی روٹیاں اور صدقه کے بکرے آنے کی اجازت نہیں ہے جو مفت خوروں کو آس میں بٹھلا کر خیرات کی روٹی کھلائی جاوے۔ بلاشبه جو لوآک بورڈنگ ھاؤس کا خرچ دینے کی استطاعت نہیں رکھتے ان کے بورڈنگ ھاؤس میں داخل کرنے سے کمیٹی انکار کرتی ہے ته مدرسه میں۔

هم بھی اس بات کو پسند کرتے ھیں کہ امیروں سے لیا جاوے اور غریبوں کو دیا جاوے ۔ پس آمید ہے کہ ھارے شفیق نے جیسے کہ سرمابہ مدرسة العلوم کے فراهم کرنے کی کمیٹی کے وقت میں سعی کی تھی اور فیاضی اور قومی همدردی سے چندہ دینے کا وعدہ کیا تھا اب بھی پنجاب میں کوشش فرماویں گے اور خاص روپیہ اس کام کے لیے جمع کریں گے کہ غریب طالب علموں کو اس سے روٹی دی جاوے ۔ اُس کا اهتام نہایت دل سے کی ی

افسوس ہے کہ ایسے بڑے اور نازک معاملہ پر جیسا کہ قوسی تعلیم کا ہے ہارے شفیق نے کافی توجہ نہیں فرسائی اور یہ غور نہیں کیا کہ کمیٹی نے غریب طالب علموں کے لیے جو در حقیقت تعلیم کے لائق ہیں اور فی الحقیقت آن کو علم کا شوق ہے کس قدر مدد کے ذریعے موجود کیے ہیں۔ شروع مدرسہ سے معینان و با یان

مدرسه نے اپنے خرچ سے غریب طالب علموں کے لیے پانچ روپیه سے دس روپیه تک اسکالرشیس مقرر کس ـ متعدد طالب علموں کے ذاتی اخراجات ان لوگوں نے اپنر پاس سے ادا کیر ۔ اب حسب ضابطه کمیٹی نے تیس اسکالرشپیں مقرر کی هیں جو شاید کسی اعلی مدرسہ میں بھی اس قدر نہ ہوں گی اور اعللی جاعتوں کے لیر اور اسکالرشیبی مقرر کرنے کو ہے متعدد انعام نتیجه استحان پر مقرر هوتے جاتے هیں پس غریب سے غریب اور محتاج سے محتاج اشراف طالب علم اگر علم کا شوق رکھتے ھیں اور در حقیقت علم حاصل کرنے کی لیاقت بھی رکھتر ہیں آویں ۔ امتحان دیں ۔ لیاقت اپنی تحصیل علم کے لیر ثابت کریں اور اسکالرشپ لیں۔ مدرسة العلوم کا یه مقصد نہیں ہے کہ جو لوگ مطلق قابل تعلیم نہیں ھیں اور نہ پڑھنے کا شوق رکھتے ہیں اور نہ پڑھنر کی عمر رکھتر ہیں ان کو خیرات کی روٹیاں کھلایا کرے اور تنخواہ دیا کرے ۔ اگر ایسا مقصود ہو تو مدرسه کا نام کر کے گدھوں کا اُس میں پالنا کیا ضرور ہے۔ آؤ ھم سب مل کر پزاوه کا کام شروع کریں ـ

هم اپنے دوست نادر علی شاہ سیفی سے هر گونه قومی هم دردی. کی آمید رکھتے هیں ۔ سگر چند روز سے جس طرز پر انھوں نے تحریر فرمانا شروع کیا ہے هم کو آس سے قومی هم دردی کی توقع نہیں هو سکتی ۔

هم تو آماج گاه خلائق هیں ۔ جناب سینی بھی جو چاهیں تحریر فرماویں ۔ آمید ہے کہ آئندہ هم زیادہ ادب کو کام میں لاویں کے اور آن کی اس قسم کی تحریروں کو دیکھ کر سر تسلیم جھکا دیں گے (مفقول از تہذیب الاخلاق ، یکم شعبان ۲۹۳ء) ۔

سوال

خدا نے یه تمام کائنات کیوں اور کس مقصد سے پیداکی ؟

(سوال از دیوان سرشیر محد خان والئے پالن پور گجرات) جواب

پوچھا جو پوچھا جاتا ہے آس کا جواب دو طرح پر ھوتا ہے یا تو بتایا جاتا ہے کہ یہ سوال ہی سرے سے غلط ہے یا اس کا حواب دیا جاتا ہے ۔ مثلاً اگر کوئی یہ سوال کرے کہ دس اور پایخ مل کر ہیں کیوں ہوتے ہیں ۔ تو آس کا حواب دیا حائے گا ۔ که یه سوال ہی سرے سے غلط ہے اور اگر کوئی یہ سوال کر ہےکہ دس اور پایخ سل کر پندرہ کیوں ہوتے ہیں۔ تو اُس کا جواب دیا جائے گا کہ پایخ دس کا نصف ہے اور جب اس کو دس میں ملائیں۔ تو ڈیوڑھا ھو جاتا ہے اور پندرہ بھی دس کا ڈیوڑھا ہے۔ اس سے ثابت ھوتا ہے کہ پایخ کو دس میں ملائیں تو پندرہ ھو جاتے ھیں۔ مگر جب کوئی شخص سوال کرتا ہے۔ تو اس بات پر بھی خیال کرنا ضرور هوتا ہے۔ کہ یہ سوال انسان کے دل میں کیوں پیدا هوا ھے ۔ جب ھم اس سوال پر خیال کرتے ھیں ۔ جو پوچھا گیا ھے ۔ تو معلوم هوتا هے ۔ که انسان مصنوعات کو جب انسان دیکھتا ھے ۔ تو اس کے دل میں یہ سوال پیدا هوتا ھے ۔ که یه کیوں اور کس مقصد سے بنائے گئر ہیں۔ مثلاً اگر کسی کمہار نے ایک

پیاله بنایا ۔ تو اس کے دل میں یه خیال پیدا هوا ۔ که یه کیوں بنایا ہے ؟ اس کا حواب دیا حاتا ہے کہ کسی چیز کے رکھنر کو یا کسی رقیق چیز کے پینر کو یہ سوال ایسی حالت میں درست هوتا ھے ۔ حب کہ اُس کے بنانے والر کی اور اس کے بنانے کی حقیقت اور ماھیت معلوم ھو ۔ لیکن اگر اُس کے بنانے والر کی اور اس کے بنانے کی حقیقت اور ماہیت معلوم نه ہو۔ تو آس وقت یه سوال درست نہیں ہوتا۔ بلکہ غلط ہوتا ہے۔ کیوں کہ جو منشاء اس قسم کے سوال کا بنانے والر کے حالات معلوم ھونے سے انسان میں بیدا ھوتا ھے۔ وہ منشاء خدا کی نست صادق نہیں آتا ۔ کیوں کہ خدا کی اور آس کی صنعت کی حقیقت اور ماہیت معلوم نہیں ہے ۔ بلکہ اس کا جاننا فطرت انسانی سے خارج ہے ۔ پس خدا کی اور خدا کے کاموں کی حقیقت اور ماهیت معلوم نہیں ہے اور اسی لیر یہ سوال خدا کی نسبت کرنا درست نہیں ہے۔ بلکہ غلط۔ پس اس کا جواب سی ہے کہ یہ موال عقلاً نہیں ہو سکتا ۔ کہ خدا نے یہ تمام کائنات کیوں اور کس مقصد سے پیدا کی ہے۔ تو یہ سوال کے غلط ہونے کی عقل دلیل ہے لیکن اگر ھے مذھب کے رویسے جواب دینا چاھیں۔ تو صرف ھم کو اس قدر کہنا کافی ہے۔ کہ خدا نے قرآن محید میں فرما دیا۔ لا يسئل عدما يفل و هم يستلون -

اگر هم زیادہ عام فہم طور پر اس سوال کا جواب بیان کرنا چادیں ۔ تو یوں کہیں کہ کمہار جس نے سٹی کے کھلونے بنائے هیں ۔ کسی کو هاوڑا ، کسی کو شیر ، کسی کو بایا هے ، کسی کو بلی اور کسی کو چوها ، کسی کو لنگڑا ، کسی کو لولا ، تو کیا مٹی آس سے پوچھ سکتی هے ۔ کہ تو نے ایسا کیوں کیا ہے ۔ پس انسان کی کیا مجال هے ۔ که خدا کی نسبت ایسا سوال کر سکے ۔

هاں خدا نے بہت جگہ قرآن مجید میں فرمایا ہے۔ کہ هم نے انسان کو اس لیے پیدا کیا ہے۔ که هاری عبادت کرے۔ مثلاً ایک جگه فرمایا ہے سا خلقت البجن و الانس الا لیعبدون پس مسلمانوں کو آس کے مطابق خدا کی عبادت جس طرح که خدا نے عبادت کا حکم دیا ہے۔ عبادت کرنی چاھیے اور اگر کوئی غیر مذھب والا جو قرآن مجید کو نہیں مانتا۔ اس کی وجه دریافت کرنی چاھے۔ تو هم عقلاً به خوبی ثابت کر سکتے هیں۔ که انسان کا نیچر جس پر خدا نے آس کو مخلوق کیا ہے۔ اسی کا مقتضی ہے۔ مگر یہ بحث خدا نے آس کو مخلوق کیا ہے۔ اسی کا مقتضی ہے۔ مگر یہ بحث طویل ہے اور بقول ایک دانش مند شخص کے ٹیبل ٹاک میں آس کے بیان کی گنجائش نہیں۔

وحی و الہام کے متعلق ایک صاحب کے خیالات اور ان پر سرسیل کا تبصر ہ

(تهذیب الاخلاق ، بابت ماه صفر اور ربیع الاول ۱۲۹۷)

ایک صاحب نے جن کا نام نثار احمد صاحب تھا وحی و الہام کے متعلق اپنے بعض خیالات سرسید کی خدمت میں بھیجے تھے اور ان سے دریافت کیا تھا کہ ان کی نسبت آپ کی کیا رائے ھے ۔ سرسید نے ان کا خط اور اپنا جواب 'تہذیب الاخلاق' بابت ماہ صفر اور بابت ماہ ربیع الاول ۱۲۹٦ھ میں شائع کیا تھا جہاں سے ھم اسے نقل کر کے درج کر رہے ھیں ۔ (گد اساعیل پانی پتی)

جناب من ! وحمی اور المهام کی نسبت سندرجه ذیل رائیں آپ کی خدمت میں بھیجتا ہوں اور یہ دریافت کرنا چاہتا ہوں کہ آن کی نسبت آپ کی کیا رائے ہے ۔

المهام یا وحی دو قسم ہے ایک کتابی المهام جس کو تاریخی المهام بھی کمہتے ہیں اور جس میں کل کتب المهامی داخل ہیں ۔ دوسرا شخصی المهام جو ہر شخص کو ہر زمانہ ہوتا ہے ۔

کتب الہامی کی نسبت اس بات کے ثابت کرنے کو کہ یہ کتاب خداکی طرف سے نازل ہوئی ہے دو قسم کی شہادت درکار ہے:

اول بیرونی ، دوم الدرونی ، بیرونی شهادت سے وہ خارجی واقعات اور حادثات مراد هیں جو بغیر شک و شبه کے یه ثابت کر دیں که فلاں کتاب در حقیقت خدا نے نازل کی هے ، یا جو کچھ اس میں مرقوم هے خدا هی کا کلام هے ۔ مثلاً فرض کرو که میں کسی خاص کتاب کا مصنف هوں ، اب یه امر کسی بیرونی شهادت سے اس طرح ثابت هوتا هے که میرا پرنٹر شهادت دے که هاں یه کتاب آس نے مجھ سے لی هے اور میرے هاتھ کی لکھی هوئی هے اور تلاش کرنے سے میرے هاں اس کا مسودہ یا اس کے کچھ لکھے هوئے اوراق پائے جائیں ۔ یا کسی اور ایسے شخص کی گواهی سے جس کو میں نے کتاب مذکور کے تصنیف کرنے کا حال اعتباری طور پر ظاهر کر دیا هو یه تین طریقے بیرونی شهادت کے هیں ۔

لیکن یہی بات اندرونی شہادت سے بھی ثابت ہو سکتی ہے۔ مشلاً فرض کرو کہ کتاب مذکور میں جو خیالات بیان ہوئے ہیں وہ میرے خیالات سے نہایت مشابہ ہیں۔ اس کا طرز تحریر ٹھیک میرے طرز تحریر کے مطابق ہے۔ اُس میں جن واقعات کا ذکر ہے آن کا علم میرے سوا کسی کو نہ تھا۔ یہ تین اندرونی شہادتیں ہیں۔

تین اندرونی شہادتیں اور بھی ھو سکتی ھیں: اول یہ که وہ کتاب غلطیوں سے پاک ھو۔ دوسرے جو باتیں یا صداقتیں آس میں مرقوم ھیں وہ انسان کی عام قوتوں کے ادراک سے باھر ھوں، تیسرے یہ کہ وہ صداقتیں ایسی ھوں کہ جن پر انسان اپنی تحقیقات میں کبھی سبقت نہ لے گیا ھو۔ پس جب تک کسی کتاب الہامی کی نسبت یہ شہادتیں موجود نہیں وہ الہامی کتاب تسلیم نہیں ھو سکتی ۔ اس پر کہنے والا کہتا ھے کہ کوئی کتاب الہامی ایسی نہیں ھے جو ان شہادتوں سے ثابت ھو سکے ۔

وہ کہتا ہے کہ الہام و وحی کی کوئی ضرورت نہیں ہے۔
کیوں کہ انسان نے بہت سی نازک نازک اور مشکل مشکل باتوں
میں اپنی کوشش و سعی و تجسس سے صداقتیں حاصل کی ہیں ، پھر
کیا یہ غیر ممکن ہے کہ مذھبی امور کی نسبت جو نہایت سیدھے
سادے ھیں صداقتوں کے منکشف کرنے کے لیے اس کو نہ کسی
خدا کی اور نہ فرشتہ کی خاص احتیاج پڑی ھوگی۔

دنیا میں بہت سی کتب کتاب الہادی کے نام سے مشہور هیں پس کون تصفیه کر سکتا ہے که اُن میں سے فلاں کتاب کتاب الہامی ہے اور فلاں نہیں اور وہ کون سی وجوهات هیں که جس پر اس قسم کا اعتقاد بھی هو سکتا ہے ۔

اگر کسی کتاب کو الہامی مان بھی لیں تب بھی ھاری مشکلیں دفع نہیں ھو جاتیں کیوں که ایک ھی کلام کی پچاس مختلف معنوں میں تاویل ھو سکتی ہے۔ پس جب تک ھیشه ایک الہامی مفسر بھی اس کے ساتھ نه ھو جیسے که کیتھولک مذھب والے یوپ کو کہتے ھیں اس وقت تک الہامی کتب سے کچھ فائدہ نہیں ھو سکتا۔

علاوہ اس کے کل کتب مقدس لکھی جانے سے پیش تر لوگوں کی زبان پر تھیں اور عرصہ دراز تک زبان پر رھیں ۔ جو صداقتیں آن میں موجود ھیں وہ ایک عرصہ تک تو ایک خاص جاعت کی زبان پر رھیں ۔ بعدہ آن سے سیکھ کر ایک دوسری جاعت آن کی قاری رھی اور آخر کو ایک تیسری جاعت نے انھیں موقع پا کر قلم بند کیا ۔ پس پوچھا جاتا ھے کہ آیا ان تینوں جاعتوں کے لوگ بھی المامی تھر کہ آس میں غلطی نہ ھوئی ھو ۔

جب کتب المهامیه کی صحت نہیں ثابت هو سکتی تو صرف شخصی المهام جو هر زمانه میں هوتا هے باقی ره گیا ـ خدا لوگوں کو

اب بھی آسی طرح ملہم کرتا ہے جیسا کہ وہ مہلر کرتا رہا ہے۔ شخصی الہام سے مراد یہ ہے کہ جس طور پر هم ایک چھوٹے یودے کے نشو و نما ہوتے وقت دیکھتر ہیں کہ اس میں دو مختلف قسم کی طاقتیں کام کرتی هیں: ایک اُس کی خود طاقت که حس کے ساتھ وہ اپنی ساخت کے موافق زمین کے نیچر سے عرق کھینچتا ہے ؛ دوسرے ہوا اور روشنی کے ساتھ حس سے وہ اوپر سے محیط هوتا ہے۔ اسی طور پر ایک انسانی روحانی ترقی سی بھی هم دو قسم کی مشترک طاقتوں کو کام کرتا ہوا یاتے ہیں : ایک صرف انسان کی اپنی کوشش اور دوسری طرف خدا کی رحمت یا نعمت آس کی اس ترق کا ذریعہ بنتی ہیں ۔ خدا کی رحمت یا نعمت کا نازل ھونا کچھ خیالی نہیں اور نہ اس قسم کا ہے کہ جو ایک وقت میں هو اور دوسریے میں نه هو ـ بلکه وه هر وقت و همیشه اس طور پر کام دیتا ہے جس طور پر چلتی ہوئی ہوا ایک جلتی ہوئی بتی کے ساتھ شامل ہو کر ہر وقت عمل درآمد کرتی ہے۔ جس طور پر کوئی شمع بغیر ہوا کی خورش اور سہارے کے نہ جل سکتی ہے اور نبه قائم رہ سکتی ہے آسی طور پر کوئی روح انسانی بغیر ذات اللہی کے سہارے اور اُس کی نعمت کے حصول کے نه قائم رہتی ھے اور نه حقیقی طور سے سترقی هوتی ھے۔

روح کی ترق سے مراد آن چار قوتوں کا بڑھنا ہے کہ جن میں سے ایک قوت کو قوت ادراک یا عقل و فہم کہتے ہیں، دوسری کو دل یا محبت کرنے والی قوت، تیسری کو کانشنس اور چوتھی کو ایمان ۔

قوت عقل صداقتوں کی معلومات سے بڑھتی ہے۔ دل یعنی محبت کی قوت محبت کے بڑھانے سے ، یعنی اپنے ہم جنس کے پیار کرنے سے اور آس کی خدمت گزاری سے ۔ قوت کانشنس انصاف کے

تریادہ هونے سے بڑھتی ہے اور قوت ایمان خدا کے ساتھ محبت اور اس کی اطاعت کرنے سے مترقی هوتی ہے اور جب روح ایسی قوی هو جاتی ہے تو اپنی قوتوں کے ساتھ صداقت کا کشف حاصل کر سکتی ہے۔

دوسری رائے اس کے برخلاف ہے اور وہ یہ ہے کہ کوئی قانون عاصم ہارے پاس ایسا نہیں ہے جس کے ذریعہ سے ہم لزوساً غلطی سے بچ سکیں ۔ یہی باعث ہے کہ جن حکیموں نے قواعد منطق کے بنائے اور مسائل مناظرہ کے امجاد کیر اور دلائل فلسفہ کے گھڑے وہ بھی غلطیوں میں ڈوبتر رھے اور صد ھا طور کے باطل خیال اور جھوٹا فلسفہ اور نکمی باتس اپنی نادانی کی یادگار چھوڑ گئر ۔ پس اس سے یہ ثبوت ملتا ہے کہ اپنی ہی تحقیقات سے جمیع اسور حقه اور عقائد صحیحه پر پهنچ جانا اور کمهیں غلطی نه کرنا ایک محال عادی ہے ۔ کیوں کہ آج تک ہم نے کوئی فرد بشر ایسا نهس دیکها اور نه سنا اور نه کسی تاریخی کتاب مس لکها هوا پایا کہ جو اپنی تمام نظر اور فکر میں سہو و خطا سے معصوم ہو۔ پس بذریعہ قیاس استقرائی کے یہ صحیح اور سچا نتیجہ نکلتا ہے کہ وحود ایسر اشخاص کا کہ حنھوں نے صرف قانون قدرت میں فکر اور غور کرکے اور اپنر ذخیرہ کانشنس کو واقعات عالم سے مطابقت دے کر اپنی تحقیقات کو ایسے اعلٰی پایہ صداقت پر پہنچا دیا ہو کہ جس میں غلطی کا نکہنا غیر ممکن ہو خود عادتاً غیر ممکن ہے اس لیر مقتضائے حکمت اور رحمت اور بندہ پروری اس قادر مطلق کا یمی ہے کہ وقتاً فوقتاً جب مصلحت دیکھے ایسے لوگوں کو پیدا کرتا رہے کہ عقائد حقہ کے جاننے اور اخلاق صحیحہ کے معلوم كرنے میں خداكى طرف سے الهام پاویں اور تفهيم و تعليم كا ملكه وہی رکھیں تاکہ نفوس بشریہ کہ سچی ہدایت کے لیر پیدا کی گئی

ہیں اپنی سعادت سطلوبہ سے محروم نہ رہیں ـ

تیسری رائے اس دوسری رائے کی تردید میں ہے اور وہ یہ ہے کہ انسان نے بہت سی باتوں کی نسبت اپنی تحقیقات کے ذریعہ سے صداقتیں دریافت کی ھیں جس کا ثبوت ھر طرح پر موجود ہے۔ کل معلومات پر جو انسان آج تک حاصل کر چکا ھے اور آئندہ حاصل کرے گا اُس کے حصول کا کل سامان ھر فرد بشر میں نیچر نے مہیا کر دیا ھے۔ اب اس سامان کو انسان فرداً فرداً اور نیز بہئیت مجموعی جس قدر اپنی محنت اور جان فشانی سے روز بروز زیادہ سے زیادہ نفیس اور طاقت ور بنانے کے ساتھ ترق کی صورت میں لاتا جاتا ہے اور جس قدر اُس کے ساسب استعال کی تمیز پیدا کرتا جاتا ہے آسی قدر وہ نیچر کی تحقیقات میں زیادہ سے زیادہ تر صحت کے ساتھ اپنی معلومات کے حصول میں کامیاب ھوتا جاتا ہے۔

اس بیان سے ثابت ہے کہ اول تو انسان بعض صورتوں میں اپنے نیچری سامان کے مناسب استعال سے پہلے ہی حق امر کو دریافت کر لیتا ہے۔ دوم بشرط مناسب استعال میں نہ لانے یا نہلا سکنے کی اگر غلطی کھاتا ہے تو کوئی دوسرا جسے اس کے ٹھیک استعال کا موقع مل جاتا ہے وہ اس غلطی کو رفع کر دیتا ہے۔

ضرورت الہمام و وحی کی جو دوسری رائے میں بیان ہوئی ہے وہ صحیح نہیں ہے ، جو ضرورت کہ نیچر کے نزدیک قابل تسلیم نہیں ہے اور اسے ہم اپنے وہم سے قائم کرکے نتیجہ نکالیں تو جس طرح وہ ضرورت فرضی قائم ہوئی ہے آس کا نتیجہ بھی فرضی ہوگا اور آس سے کوئی مطلب ثابت نہ ہوگا ۔ انسان اپنی دو آنکھوں سے آگے کی چیز دیکھتا ہے اور پیچھے سے اس کی ہلاکت کا جو سامان کیا گیا ہو اس کو نہیں دیکھ سکتا جب وہ جہاز میں سوار ہوتا ہے اس کو

١- هر فرد بشر ميں مهيا كر ديا هے صحيح نہيں معلوم هوتا ـ (ايديثر)

نہیں معلوم ہوتا کہ طوفان سمندر میں آنے والا ہے جس میں اس کا جہاز غرق ہو جائے گا۔ پس جب خدا نے جو رحیم اور کریم اور حکیم ہے اُس نے انسان کے سر کے پیچھے دو آنکھیں نہیں پیدا کیں اور طوفان سے بچنے کو کوئی بخ کا پیغام نہیں بھیجا تو عقائد حقه اور اخلاق صحیحه کے لیے ایسے پیغام بھیجنے کی کیوں ضرورت مانی حائے ۔ '

راقم _ نثار احمد

جواب

اخی ! جو تحریر که آپ نے میرے پاس بھیجی نہایت عمدہ ہے اور میں اس کے خیالات کی قدر کرتا ہوں ۔ مگر افسوس ہے که میرے خیالات اس کے مطابق نہیں ہیں جو میرا خیال وحی و المہام کی نسبت ہے میں لکھتا ہوں ۔

جس طرح که انسان میں اور قوی هیں اسی طرح ملکه وحی و الہام بھی اس میں هے ۔ بعض انسان ایسے بھی هیں جن میں کوئی قوت منجمله قوائے انسانی کے بالکل معدوم هوتی هے مگر اوروں میں موجود ۔ یه بھی هم دیکھتے هیں که انسانوں میں ایک هی قوت متفاوت درجوں میں پائی جاتی هے ۔ کسی میں بہت کم هے کسی میں زیادہ کسی میں بہت زیادہ ۔ اسی طرح ملکه الہام و وحی بھی بعض انسانوں میں معدوم هوتا هے بعض میں کم هوتا هے بعض میں زیادہ اور بعض میں مہت زیادہ ۔

یه ملکه ایک آله هے انکشاف علوم و حقائق اشیاء کماهی هی کا

ر۔ ایک دوست نے اس کو دیکھ کر کہا کہ اس لیے ضرورت مانی جائے کہ دنیا کی صعوبتیں چند روزہ ہیں اور معاد کی صعوبتیں دائمی ہیں اس لیے مقتضائے حکمت و رحمت تھی کہ دائمی صعوبتوں سے انسان کے بچانے کو نجی پیغام بھیجے ۔

اور اس لے اس کا تعلق کسی خاص علم یا کسی خاص شئے پر منحصر نہیں ھے بلکہ ھر ایک سے جداگانہ و مستقل تعلق رکھتا ھے اور بہ لحاظ اپنے تعلق کے اسی علم یا شئے کے ساتھ وہ ملکہ منسوب یا موسوم ھوتا ھے جیسے کہ ملکہ حکمت ، ملکہ طب ، ملکہ شاعری ، ملکہ حداوی ، ملکہ موسیقی ، ملکہ قاصی و علی ھذا القیاس۔

انسان جب که انسان کے نیچر پر غور کرتا ہے اور نفس کے جالات جانتا ہے اور اس کی وہ غور ایسے درجہ پر پہنچ جاتی ہے حس ير اطلاق " سن عرف نفسه فقد عرف ربه " كا صادق آتا ھے آس وقت وہ جار حالتی نفس انسانی پاتا ھے۔ ایک وہ حالت ہے جو عموماً انسانوں کو لاحق ہوتی ہے اور وہ یہ ہے کہ مین سے ایک طرح پر تربیت پاتے پاتے اور ایک قسم کی باتیں سنتر سنتر اور ایک ھی طور کے طریقر کو برتتر برتتر یا دفعة ً کسی پر اعتقاد آ جانے سے اور اُس کی باتوں اور فعلوں کے اچھا ھونے پریقین بٹھلا لینر سے یا سوسائٹی کے نامعلوم مگر نہایت قوی اثروں کے دباؤ سے ایک ایسا یتین یا ایسی کیفیت اُس کے دل میں پیدا ہوتی ہے کہ آسی بات کئ حقیقت اور سچ جانتا ہے اور آس کے برخلاف کو برخلاف ۔ اور اسی کینیت کا نام كانشنس هے جو تمدن و اخلاق سے زیادہ تر تعلق ركھتی هے۔ دوسری وه حالت هے که انسان کا کسی خاص علم و هنر س ترقی کرتے جانا اور اُس کے تمام مالہ و ما علیہ کو اکتساب کرتے كرتے ايک اعلمٰي درجـه كي قـابليت آس ميں پيدا كـرنا جـو آس علم و ہنر کے ملکہ سے تعبیر کی جاتی ہے اور جس سے اُس شخص کی اس علم یا هنر میں اعللی درجه کی قدرت مراد هوتی هے ـ تیسری حالت یه هوتی ہے که جب وہ کسی علم و هنر سیں غور کرتا ہے

اور کسی مسئله کا حل کرنا یا کسی بات کی تحقیق کرنا یا کسی امر کی حقیقت دریافت کرنا یا کسی دو امرون میں سے صحیح کو غلط سے تمیز کرنا چاهتا ہے۔ مگر وہ تمام اکتسابی قوتیں اس کی اس سے عاجز آ جاتی ہیں اور اس کے حل و تنقیح کا رسته نہیں بتلاتیں ، مگر دفعتاً اس کے دل میں ایک بات آ جاتی ہے جس کو وہ نہیں جانتا که کہاں سے آئی اور کیوں کر آئی اور اس سے وہ تمام مطالب حل ہو جاتے ہیں۔ بعضی دفعه ایسا ہوتا ہے که وہ بات پہلے دل میں پرٹر جاتی ہے اور اس کی عمدگی اور اس کی صحت کی دلیلیں بعد کو مثل نکنه بعد الوقوع ذہن میں آتی ہیں اور اسی طرح پر کسی بات کے دل میں آنے کو وہ الہام کی جڑ وہی اکتسابی علوم ہوں مگر جب اس کا دل میں پڑنا ایک ظاہری طور پر آن اکتسابی علوم ہوں مگر جب اس کا دل میں پڑنا ایک ظاہری کی حد سے ہم اس کو خارج نہیں کرتے۔

چوتھی حالت ھم انسان میں ایسی پاتے ھیں جس کی بناء اکتسابی علوم پر قائم نہیں ھو سکتی بلکہ اُس شخص کے نیچر پر قائم ھوتی ھے ۔ ایک جاھل شخص کو جبو نہ علوم سے واقف ھے نیہ عروض سے نہایت عمدہ شاعر پاتے ھیں ، بہت بڑا ادیب دیکھتے ھیں ۔ ان پڑھ اور بے علم لوگوں نے ایسے دفیق مسائل اخلاق کے بیان کیے ھیں جن کو حال کی ترق یافتہ دنیا بھی تعجب سے دیکھتی ھے قدیم سے قدیم زمانہ میں بھی جب کہ روشنی علم کی اور علمی تحقیقاتوں کی ذرا بھی نہیں چمکی تھی یا بہت ھی تھوڑی چمکی تھی ایسے ایسے ایسے لوگ گذرہے جن کو لوگوں نے خدا تک مانا ۔ صرف یہی نہیں ھے کہ ان کو ایسا مان لیا تھا بلکہ اُن کے اتوال اور آن کے مسائل اور اُن کے اصول جو اس وقت دنیا کے اقوال اور اُن کے مسائل اور اُن کے اصول جو اس وقت دنیا کے

سامنر موجود هم آن سے ثابت هوتا هے که جیسر وہ مانے گئر تھر (نـعـوذ بـاالله) ویسر ھی ماننر کے لائق بھی تھر ۔ اس پرانی دنیا کے بت پرست ، حیوان پرست ، عجائب پرست ، مصریوں کو دیکھا انھی میں سے بعض کے اقوال المہیات کے مسائل کے ایسر ملتر ہیں جن سے زیادہ عمدہ نہیں ہو سکتر ۔ ہندوؤں کے ویدوں کے مصنفوں کے آن اقوال کو دیکھو حماں اس حوتی سروپ نر نکار کی وحدانیت اور آس کی صفات کو بیان کیا ہے۔ موسلی کا زمانہ بھی کچھ حال کا زمانہ نہیں ھے۔ اس نے کس عمدگی سے آس مخفی مگر علانیه هستی کو ان مختصر لفظوں میں که " میں وھی ھوں جو ھوں '' بیان کیا ہے۔ سب سے بڑے اور پرانے ھادی ابراھیم کو دیکھو جس نے بغیر کسی تربیت کے اپنے منہ کو بتوں کی طرف سے موڑا اور خدا کی طرف پھیرا اور اپنی فطرت سے خدا کی فطرت سے خدا کو پہچانا ۔ سب سے آخر محد رسول اللہ صلعم کو دیکھو جس نے نه لات کو مانا ، نه عزی کو ، نه تعلم و تربیت کا لفظ سیکھا ، نہ سوسائٹی کے نہایت قوی اثر کو دیکها اور دیکها تو آس وحده لا شریک کو دیکها ۔ پس اس طرح دل میں پڑنے والر بات کو هم وحی اور الہام کہتر هیں۔ اس میں کچھ شک نہیں کہ وہ پڑتی نہیں بلکہ اچھلتی ہے مگر جب آس کے اچھلنر کے اسباب ھم نہیں پاتے تو اس کو القاء کہتر ھیں۔

ان الہاسی بزرگوں کی نسبت کہا جا سکتا ہے کہ جن باتوں کو آن میں قرار دیا جاتا ہے آن کے پیدا ہونے اور دل میں آنے یا دل میں پڑنے کے بھی کچھ اسباب تھے لیکن اگر وہ ہوں گے بھی تو ایسے خفیف ہوں گے جن کو مدار آن عالی الہاموں کا قرار دینا ٹھیک نہیں ہو سکنے کا۔ مع ہذا ہم نے الہام کو خالی

نلی میں پانی بھرنا نہیں مانا بلکہ فوارہ کی طرح اس میں سے اچھلنا مانا ہے گو کہ اُس کے لیے کوئی خفیف تحریک ہوئی ہو ۔

ایسے بھی لوگ ھیں جنھوں نے اپنی حالت کو سوچا اور دوسروں کی حالت کو دیکھا اور ایک ایسا امر آن کے دل سیں پڑا جس سے انھوں نے تعلیمی اور تربیتی اور سوشیلی اثروں پر غلمہ پایا ۔ آس دل میں پڑنے والی شے کو بھی ھم الہام اور وحی کہتے ھیں ۔ اگر وحی و الہام نہ تھا تو اور کیا تھا جس نے کالون اور لوتھر کے دل کو آس پرانے راستے سے پھیرا اور ھارے ھی زمانہ میں آس قابل تعظیم و ادب شخص بابو کشیب چندر سین کے دل کو خدائے واحد کی طرف موڑا اور سوامی دیانند سر سوتی کے دل کو مورتی پوجن سے پھیرا ۔

وحی و الہام آس همیشه همیشه هست هستی کا دائمی فیض هے جو نه منتظع هوا هے نه منتظع هوگا۔ اگر وه کسی زمانه میں کسی سے هم کلام هونے کو موجود هے۔ اگر کبھی آس نے کسی کو اپنا دیدار دکھایا هے تو وه اب بھی دکھانے کو حاضر هے اگر وه آگ کی صورت یا آدمی کی مورت بننا جانتا تھا تو اب بھی وه جانتا هے مگر وه شخص چاهیے جس سے وه هم کلام هو اور جس کو اپنا دیدار دکھائے۔

عشق گر مردست مردمے بر سرکار آورد ورنه چوں موسلٰی بسے آورد و بسیار آورد

خدا تو ایسا فیاض ہے کہ سکھی کے دل سیں بھی وحی دالتا ہے۔ پھر انسان کے دل سیں وحی یا المہام ڈالنے سے آس نے کبھی سنہ نہیں موڑا۔ مگر انسان کا دل کم سے کم مکھی کا ساتو ہونا چاہیے جس میں وہ آ سکے۔

ھارے اس مضمون کو کٹ ملا پڑھ کر سمجھیں کے کہ ھم

نے کفر بکا ہے اور ختم نبوت سے انکار کیا ہے مگر یہ ان کی نادانی ہے جو ختم نبوت کو بمعنی انقطاع فیض مبدء فیاض سمجھتے ہیں۔ ہم ختم نبوت کے قائل ہیں اور پھر چشمہ فیض رحمت فیاض کو جاری مانتے ہیں اور خدا سے انسان کے تعلق کو کبھی منقطع نہیں سمجھتے اور ہم کیا تمام اگلے پچھلے جو ہمہ اوست یا ہمہ از دست کے کہنے والے گذرہے ہیں اس غیر منقطع ہونے والے تعلق کو دائم و قائم کہتے چلے آئے ہیں۔ غیر منقطع ہونے والے تعلق کو دائم و قائم کہتے چلے آئے ہیں۔ ختم نبوت دوسری چیز ہے اور عدم انقطاع رحمت دوسری چیز ہے۔

اگر ملکہ وحی و الہام کو جن میں وہ ھو ایک قوت مثل دیگر قوائے انسانی کے تسلیم کی جائے۔ جیسے کہ میں نے تسلیم کی ھے تو ضرور ھے کہ وہ بھی مثل دیگر قوائے انسانی کے کسی میں نعیف اور کسی میں قدوی یا کسی میں ناقص اور کسی میں کامل ھوگی اور وہ صرف اتنا عی کام دے گی جتنا کہ نیچر نے آس کو دیا ھے یا جتنے کی قابلیت نیچر نے آس میں رکھی ھے۔ فوارہ کا زور پانی کے جوش کی مناسبت سے ھوتا ھے۔ کسی کا پانی آس کے منہ ھی سے اہل کر رہ جاتا ھے۔ کسی کا اونچا اور کسی کا بہت اونچا ھو جاتا ھے اور کسی کا آس حد تک بلند ھوتا ھے جو حد کہ نیچر نے آس کے لیے مقرر کی ھے۔ پس بلند ھوتا ھے جو حد کہ نیچر نے آس کے لیے مقرر کی ھے۔ پس مر ایک وحی یا الہام کو ھم کامل یا بے نقص نہیں کہتے بلکہ صرف آسی کو کامل کیا ھے۔

وحی یا الہمام ه،یشه شخصی هوتا هے۔ شخصی الہمام اور کتابی الہمام دو جداگانه چیزیں نہیں هیں۔ یه دوسری بات هے که بطور اصطلاح کے ایک کو تاریخی الہمام اس لحاظ سے که وه کسی گذشته زمانه میں هوا تها اور ایک کو شخصی الہمام قرار دے لو۔ ورنه دونوں کی حقیقت واحد هے اور الہمام وهی ایک

حقیقت رکھتا ہے خواہ وہ پہلے ہوا ہو یا اب ہو ، مگر دونوں اپنی حقیقت اور صداقت ثابت کرنے کے محتاج ہیں ۔

حقیقت ثابت کرنے کے تو اس لیے محتاج ہیں تاکہ جس کو وحی یا الہام کہا جاتا ہے کہیں وہ کانشنس تو نہیں جو تعلیمی و سوشیلی اور اعتقادی امور کا نتیجہ ہے اور جس کی صحت و عدم صحت یا صداقت و عدم صداقت اس پر منحصر ہے جس کا وہ نتیجہ ہے ۔ یا وہ الہام وہ تو نہیں ہے جو اکتسابی علوم کا نتیجہ ہے کیوں کہ اس کی حقیقت بھی اس شئے کی حیثیت سے جس کا وہ نتیجہ ہے مغایر نہیں قرار پانے کی ۔

اور صداقت ثابت کرنے کے اس لیے محتاج ہیں کہ کہیں وہ ایسے المهام تو نہیں ہیں جن کو نیچر نے کاسلیت کے درجہ تک نہیں پہنچایا ۔ کیوں کہ صرف آسی وحی و المهام میں غلطی نہیں ہو سکتی جس کو نیچر نے کاسلیت کی حد تک پہنچایا ہے ۔

یکی بحث ہے جو تمام مذاهب نے کی اور تمام کتب الہادی کی صداقت یا عدم صداقت سے متعلق ہے۔ ہر ایک مذهب والا اپنے مذهب کو ، اپنے معتقدفیه کو سچا اور کامل بتاتا ہے اور اس کی تمام باتوں کا مخرج اس سے قرار دیتا ہے جو صداقت محض ہے۔ پس اگر اس کے لیے کوئی پیانه نه هو تو کسی کا یه حق نہیں ہے کہ ایک کو راست اور دوسرے کو نا راست کہے۔ یہ حق نہیں ہے کہ ایک کو راست اور دوسرے کو نا راست کہے۔ نیچر کے کاموں پر غور کرنے سے ثابت ہوتا ہے کہ ضرور اس نے اس نیچر کے کاموں پر غور کرنے سے ثابت ہوتا ہے کہ ضرور اس کی تلاش میں سے دور ہے کی دیا ہوگا اور اس لیے انسان کو اسی کی تلاش سے سے دور ہے۔

الہمام یا کتاب الہمامی کا پرنٹر خود اس کا دل ہے۔ جس پر الہمام ہوا اسی کا دل آس کے تمام اوراق کا مخزن ہے۔ اسی کا دل وہ شخص ہے جس سے اس نے اعتباری طور پر اس کی تصنیف کا حال

ظاہر کیا ہے۔ پس اُس کے لیر ایسی بیرونی شہادت جیسر کہ معربے اس آرٹیکل کے لیر حاصل ہونی مکن ہے قانون قدرت کے برخلاف ھے۔ اندرونی شہادت بھی جس کا نام لوگوں نے اندرونی شہادت رکھا ہے ایسی کتاب کے لیے ایسے ہی قانون قدرت کے برخلاف ہے حیسرکہ بعرونی شہادت ۔ اُس کے مصنف کے خیالات نا معلوم ہیں۔ بھر کیوں کر خیال کریں کہ اُس کتاب کے خیالات اُن خیالات کے مماثل هس آس کے مصنف کا طرز تحریر بھی نا معلوم ہے اور وہ واقعات بھی نا معلوم ہیں جو صرف آسی مصنف کو معلوم ہیں۔ یه المامی کتاب ایسی شمادت سے ثابت هوتی هے جو ان دونوں قسم كى شهادت سے بهت اعالى درجه پر غبر مشتبه هے اور وه وه شهادت ہے جو هر دم و هر آن هم تم ، آسان و زمین ، درخت و پتهر ، دریا و جنگل ، چرند و پرند ، سورج ، چاند ، ستار دے رہے ہیں ۔ خدا کی کتاب کے لیر فانی شخصوں کی کتاب کی مانند فانی شہادت مت ڈھونڈو۔ اس ازلی اور ابدی کے ازلی ابدی کلام، ازلی ابدی کتاب ازلی ابدی تحریر ، ازلی ابدی دستخط کے لیر ازلی ابدی هی شہادت ڈھونڈو ۔ اس کی شہادت ہاڑوں پر کندہ ھے ، اس کی شہادت درختوں کے ورقوں پر لکھی ہے۔ اس شہادت پر تمام جانور جہجہا رہے ہس، گھوڑے ہنہنا رہے ہس، شہر غرا رہے میں، گدھے رینگ رهے هيں ، آدسي بول رهے هيں اور دل تصديق كر رهے هيں ـ

جس کتاب کے لیے ایسی شہادت ہو وہ بلا شبہ خدا کی کتاب ہے ۔ پھر اُس کی صداقت نے لیے اس بات کا ثبوت طلب کرنا که وہ غلطی سے پاک ہے نادانی ہے ۔ نیچر غلطی سے پاک ہے اور اُس نے اس کی شہادت دی ہے ۔ ایسی صداقتیں جو انسان کی عام قوتوں کے ادراک سے باہر ہوں اگر اس میں پائی بھی جاویں تو انسان ان کو کیوں کر صداقتیں کہہ سکے ۔ وہ تو اس کے ادراک سے باہر

ھیں ۔ یہ سوچنا کہ اُس کی صداقتوں پر کوئی انسان سبقت لے گیا ہے اس کا ہے اس کا کیا نہیں اس لیے ناکافی ہے کہ اگر یہ ثابت بھی ہو تو اس کا کیا ثبوت ہوگا کہ آئندہ بھی نہ لےجاوے گا پس نیچر کی شہادت آس کی صداقت کو کافی ہے ۔

اس بات کو بھی نہ بھولنا چاھیے کہ ھم نے وحی و الہام کا تعلق خاص امر پر منحصر نہیں کیا ہے بلکہ ھر ایک امر سے جداگانہ اور مستقل تعلق قرار دیا ہے۔ پس اس مقام پر جس وحی و الہام سے ھم کو بحث ہے وہ وہ ہے جو روح کی تربیت اور اخلاق تعلیم اور انسان کی انسانیت سے علاقہ رکھتا ہے اور جس کو مذھب سے تعبیر کرتے ھیں۔ پس اگر موسلی کو کوئی ٹرگنامیٹری کا قاعدہ نہ آتا ھو اور اس نے اس کے بیان میں غلطی کی ھو تو اس کی نبوت نہ آتا ھو اور اس نے اس کے بیان میں نقصان نہیں آتا کیوں کہ وہ ٹرگنامیٹری یا استرانمی کا ماسٹر نہیں تھا۔ وہ آن اور میں دو انسا ٹرگنامیٹری یا استرانمی کا ماسٹر نہیں تھا۔ وہ آن اور میں دو انسا فرگنامیٹری یا استرانمی کا ماسٹر نہیں تھا۔ وہ آن اور میں اولوالعزم نی واقف تھا کہ ریڈ سی کے کنارہ سے کنعان تک کا جغرافیہ بھی شہیں جانتا تھا اور یہی اس کا فخر اور یہی دلیل اس کی نبی اولوالعزم ھونے کی تھی۔ یہ مسئلہ اس زمانہ کے علوم کی روشنی نے نہیں سکھایا بلکہ تیرہ سو برس گذرہے جب ھارہے پیشوا نے ھم کو سمجھایا کہ '' ما اتبا کہ مدن امی دینہ کے فیخذوہ وسا نہاکہ عندہ فانہ ہو وسا امر تکم مدن امی دینہ کے فیخذوہ وسا نہاکہ عندہ فیانہ ہو اس امر تکم مدن امی دینہ کے فیخذوہ وسا نہاکہ عندہ فیانہ ہو اس امر تکم برائی فیانا بشر مشلکہ ہیں۔ '

بے شک انسان نے اپنی عام قوتوں کی مدد سے بہت کچھ صداقتیں مختلف علوم و فنون میں حاصل کی هیں اور حاصل کرتا رہے ذاور انهی قوتوں کی مدد سے کتب مقدس کی چند سیدهی سادهی صداقتوں کو بھی منکشف کیا ہے مگر انھوں نے هی کیا ہے جن میں اس کے انکشاف کی قوت تھی ۔ میں اس کو نہیں تسلیم کر سکتا کہ ایسا کرنے میں اس کو نہ کسی خدا کی اور نہ فرشتہ کی احتیاج

ھے ۔ کیوں کہ آس کو اسی فرشتہ کی حاجت ہے جس کا دوسرا نام قویل پر قویل ہو گئا ہے ۔ پیدا کیا ہے ۔ پیدا کیا ہے ۔ پیدا کیا ہے ۔

جب یه عام خیال که وحی و المهام اوپر سے آتا ہے نکال دیا جائے اور یہ سمجھا جائے کہ وہ آتا نہیں بلکہ جاتا ہے اور پھر یلٹ کر پڑتا ہے اور خاص خاص علوم اور انکشاف سے علاقہ رکھتا هے تو کتب الہامی کی نسبت بھی خیال صاف ہو جاتا ہے ۔ کتب المهامي اخلاقي و روحاني تربيت سے علاقه ركھتي هيں ۔ پهر بالفرض اگر کسی الہامی کتاب میں اقلیدس اور جر ثقیل کے دلائل یا علم ھیئت کے مسائل کے بیان میں غلطی ہو تو کیوں وہ غلط مانی جائے کیوں کہ وہ الہام اُس سے متعلق نہیں ـ یہی سبب ہے کہ سچی کتب الہامی نے آن امورکی جو دیگر علوم سے علاقہ رکھتر تھر کچھ حث نہیں کی ہے۔ بلکہ آن امور کے متعلق حو عامیانہ خیال عام لوگوں کے تھے ان کو اسی طرح چھوڑ کر ان کی اخلاق تعلیم کو اختیار کیا ہے۔ مگر لوگوں نے نا سمجھی سے آن کو حقائق محققه قرار دیا ہے اور جو لفظ کہ اصلی حقیقت پر اشارہ کرتے تهر یا دوسرے معنی بھی رکھتر تھر آن کو خواہ نخواہ آن ھی عامیانہ خیال کی طرف رجوع کیا ہے۔ ہاں آئر وہاں روحانی تعلیم و تربیت سیں کچھ غلطی ہو اور نیچر آس کے غلط ہونے کی شہادت دے نہ کوئی فاني انسان تو البته هم اس كتاب كو جهولًا يا ناقص المهام قرار ديل كي ـ بلا شبه اس زمانه میں بہت سی کتابیں هیں جو کتب الهامی کے لقب سے مشہور ہیں اور آن میں غلطیاں بھی موجود ہیں مگر حس قدر کہ آن میں صداقت ہے آس کے نه ماننے کے لیے کوئی وجه نہیں ہے ۔ صداقت فی نفسه صداقت ہے خواہ اُس کو سچر ھاتھوں نے لکھا ہے یا دوسرون نے۔ وید میں غلطیاں ہیں خواہ وہ پیچھر سے ملائی هوں یا بہلر سے هوں مگر وهاں بهت سی صداقتیں بھی هیں

اور ہارا کام آن صداقتوں کو تسلیم کرنا ہے ۔

یہ بات بالکل ٹھیک ہے کہ کسی کتاب کے الہامی مان لینے سے بھی مشکلات رفع نہیں ہو سکتیں ۔ کیوں کہ اُس کتاب کی ھر ایک آیت کے متعدد معنی ھو سکتر ھیں اور اس بات کے قرار دینر کو که کون سے معنی اصلی هیں ایک ایسر مفسر کی ضرورت پیش آتی ہے جو خود الہاسی اور انفیلیبل یعنی معصوم یا محفوظ من الخطاء ہو۔ کیتھولک لوگوں نے اس ضرورت کو تسلم كيا هے اور وہ پوپ كو معصوم يا محفوظ من المخطاء تسلم کرتے ہیں اور انجیل کے جو وہ معنی کہتا ہے وہی صحیح مانے جاتے ھیں مگر اس سی بھی مشکل آ جاتی ھے۔ جب که کسی پوپ نے ایک آیت کے معنی کچھ کہر ہوں اور دوسرے نے کچھ ـ شیعه مذهب کا مسئله که ایک محتهد زنده موحود هونا چاھیے اس مشکل کو کسی قدر رفع کرتا ہے۔ اھل سنت و جاعت نے بھی کسی قدر اس کی پیروی کی ہے کہ انمہ مجتهدین کو واجب الاتباع مانا ہے۔ مگر قرآن مجید تو اس کے نہایت برخلاف ہے اور عیسائیوں کو پوپ کا عہدہ قائم کرنے پر الزام دیا ہے جہاں فرمايا هي "و لا يتخذ بعضنا بضاً اربابا من دون الله اتخذوا احبار هم و رهبانهم اربابا سن دون الله " با اين همه دو باتوں میں سے کسی ایک کے اختیار کیے بغیر چارہ نہیں ہے۔ یا کوئی الہامی مفسر مانا جائے یا تفسیر کی صحت کا کوئی پیانہ قرار دیا جائے ۔ میں تو وہی پیانہ قرار دیتا ہوں جو وحی و الہام کی صحت کا پیهانه هے یعنی نیچر اس کی صداقت پر شهادت دے بشرطیکہ اس الہاسی کتاب کے الفاظ اور اُس کا محاورہ اور الفاظ کے استعال کا طریقه بھی اس تفسیر کے مساعد ھو ۔ اس پر بھی محث منقطع نہیں ہوتی اور یہ سوال ہوتا ہے کہ نیچر کی صداقت کیا ہے۔

کوئی کسی امر کو اور کوئی کسی امر کو نیچر کی صداقت قرار دیتا هے جس میں سے ایک صحیح اور ایک غلط هوگی ۔ مگر یه بحث زیاده دیر نہیں پکڑتی کیوں که خود نیچر اس غلطی کو رفع کر دیتا هے اور دل اس کی تصدیق کرتے هیں ۔ آپ کا یه خیال که تمام کتب المهامیه عرصه دراز تک لوگوں کی زبان پر رهیں ۔ پهر اور لوگوں نے آن کو زبانی یاد رکھا اور آخرکار لکھنے والوں نے لکھا اور یه یاد رکھنے والے اور لکھنے والی المهامی نه تھے شاید صحیح هو مگر قرآن مجید کی نسبت صحیح نہیں هے اس لیے که بغیر شک کے ثابت هے که قرآن مجید کا جب المهام هوا تب هی ملمم کی زبان سے نکلا اور تب هی لکھنے والوں کے هاتھ سے لکھا گیا ۔ جو آج تک هارے هارے هاتی میں بھی تبدیلی نہیں کی گئی ۔

میں تو اس بات سے انکار نہیں کر سکتا کہ انسان اپنی نیچری قوتوں کے مناسب استعال سے حق بات دریافت کر لیتا ہے اور اگر اس نے اس کے استعال میں غلطی کی ہو تو دوسرا شخص جس نے استعال میں غلطی نہ کی دو آس غلطی کو رفع کر دیتا ہے کیوں کہ میں ملکہ نبوت و الہام کو بھی ایک قوت انسان کے قوی میں سے سمجھتا ہوں ۔ مگر جیسا کہ میں نے پہلے بیان کیا ہر ایک انسان میں اس ملکہ کا ہونا ضروری نہیں ہے اور ہم دیکھتے ہیں کہ بعض انسانوں میں ایک امر کا ملکہ ہے اور بعض میں نہیں ہوتا ۔ مگر جو قوت کہ نیچر نے دی ہے آس کا بے محل استعال ہو سکتا ہے مگر استعال میں غلطی نہیں ہو سکتی ۔ آپ نے جس امر کو استعال کی غلطی سے تعبیر کیا ہے اگر اس کو با لفاظ ناقص اور استعال کی غلطی سے تعبیر کیا ہے اگر اس کو با لفاظ ناقص اور مطابق ہونے قوت کے تعبیر فرماتے تو میرے خیال کے بالکل مطابق ہوتا ۔

الہام کی ضرورت پر جو بحث لکھی ہے افسوس ہے کہ میں اس سے متفق نہیں ھوں آپ کی تحریر نہایت عمدہ ھے اور خدا کے رحم اور انسان کے ساتھ اس کی هم دردی کا نہایت ُپر اثر خیال انسان کے دل پر اس تحریر سے پیدا هوتا هے ۔ معرا اور آپ کا مطلب کچھ مغائر نہیں ہے ۔ صرف طرز بیان یا طریقہ استدلال میں تفاوت ہے۔ هم دیکھتے هیں که جو کچھ خدا نے پیدا کیا ہے آسی کے لیر وہ سب چیزیں بھی پیدا کی ھیں جو اس کے لیر ضروری یا مناسب میں اور آن کے استعال سے جو نتیجہ پیدا ہو وہ بھی ایک لازسی نتیجه هے ۔ پتھر کے مناسب حال جو چیزیں تھیں وہ اس کے لیر ہیں ۔ درخت کے لیر ، پرند کے لیر غرض کہ تمام مخلوقات کے لیر جو چیز سناسب حال تھی سب سوجود ہے۔ انسان ایک اس قسم کی مخلوق ہے جس کے سناسب چال ہت سی چیزیں درکار تھیں اور آن سب کو خدا نے (یا جس کو اُس کا خالق کہو) مہیا و موجود کیا ہے۔ آنھی میں سے صداقت کا پانا بھی انسان کے مناسب حال تھا۔ اُس کو بھی خدا نے ایسے لوگوں کے ذریعہ سے جو صاحب وحي و الهام كهلاتے هيں پورا كيا هے ـ جن جن علوم اور جن حقائق اشیاء کی صداقت دریافت کرنے کا جس میں کامل ملکہ ہے وہ آسی کا پیغمس ہے ۔ مگر یہ لفظ خاص ہوگیا ہے اور صرف اخلاقی و روحانی علم کی صداقت دریافت کرنے والر شخص کو جس میں اُس کی صداقت دریافت کرنے کا کامل سلکہ ہو جو وحی و الہام سے تعبیر کیا جاتا ہے نبی یا پیغمبر کہتر ہیں۔ یہودی نبی کا لفظ ایسر شخص کی نسبت اطلاق کرتے تھر جو آئندہ کے واقعات کی پشین گوئی کرتا تھا مگر اسلام میں کبھی یہ لفظ ان معنوں میں استعال نہیں ہوا بلکہ نبی و پیغمبر مرادف لفظ سمجھے گئے ہیں اور سعاد کے حالات بتانے کے سبب آن پر نبی کا اطلاق ہوا ہے ـ

خدا هر چیز کے ساتھ درخت هو یا انسان همیشه سر هے ، کمهر اس سے جدا نہیں ہوتا بلکہ اگر خدا چاہے کہ میں اپنی مخلوق سے جدا هو جاؤں تو بھی جدا نہیں هو سکتا ۔ مگر آپ کی اخبر تحریر جو روح کی ترقی کی نسبت ہے سری سمجھ میں نہیں آئی ۔ آپ نے اس کی ترقی چار قوقوں یعنی قوت ادراک یا عقل و فہم ، قوت حب ، قوت کانشنس ، قوت ا مان کی ترقی قرار دی ہے ۔ قوت تھلی کی ترقی صداقتوں کی معلومات بر ٹھہرائی ہے۔ مگر کیا ایسر شخص کی روح کو حو حاهل هے اور جس کو صداقتوں کی معلومات نہیں ھے ترقی نهس هو سکتی اگر مهی هو تو کروژ در کروژ مخلوق خدا کی رحمت سے خارج رہ جائے گی ۔ قوت حب جس سے اپنر ہم جنس کے پیار اور خدمت گزاری سے مراد لی ہے ایک اضافی شر ہے کبھی وہ محبت کی صورت میں ظاہر ہوتی ہے جیسر کہ ماں اپنر بیٹر سے کرتی ہے اور کبھی وہ نہایت غضب اور بے رحمی کی صورت میں ظاہر ھوتی ہے جب کہ جج قاتل کے قتل اور محرم کی سزا کا حکم دیتا ہے اور کبھی وہ نہایت بد اخلاق اور بے آیمانی ہو جاتی ہے جب کہ محبت یا رحم کے سبب محرم کو سزا سے مچانے کے لیر کام سیں لائی جاتی ھے۔ پس جو شر کہ ایک حالت پر قائم نہیں ہے وہ روحانی ترقی کا کیوں کر ذریعہ ہو سکتی ہے۔کانشنس کو جو خود کچھ مستقل جیز نہیں ہے بلکہ نتیجہ دوسری چیزوں کا ہے اور اُس کا اچھا یا برا ہونا اُن چیزوں کے اچھر یا برے ہونے پر سنحصر ہے جس کا وہ نتیجه کے کس طرح ترقی روح کا ذریعه مانا جا سکتا ہے۔ ھال بلا شبه قوت ایمانی ترقی روحانی کا ذریه ہے ۔ خدا کی محبت آس کی اطاعت کا ذوق دل میں پیدا کرتی ہے اور انسان اپنر قوی کو آن کاموں میں لانے کی کوشش کرتا ہے جن کے لیر وہ پیدا کیر گئر ھیں اور قوی کے اُس طرح پر کام میں لانے سے روح کو ترق ہوتی ہے مگر ترک و تجرید اور زہد جس کو جوگ یا رہبانیت کہتے ہیں روح کو ترق نہیں دے سکتے کیوں کہ اُس میں قوتوں کا کام میں لانا نہیں ہوتا بلکہ اُن کا معطل کر دینا ہوتا ہے و السلام۔

راقم سید احمد

()

ترکوں کے متعلق مضامین

ترك

(تهذیب الاخلاق بابت ۵۰ جادی الثانی ۱۲۸۸ه)

اسلام کا نتیجہ نیک چلن ہونا ہے اگر ہم دیکھیں کہ کسی ملک کے مسلمانوں میں نیک چلنی نہیں ہے تو ہم کو یقین کرنا چاھیے کہ اسلام صرف آن کے منه ھی منه میں ہے حلق کے نیچے ذرا بھی نہیں آترا گو آنھوں نے اپنے تئیں کیسا ھی جبه اور عامه سے مقدس بنایا ہو اور نمازیں پڑھ پڑھ کر اور تسبیحیں ھلا ھلا کر قدوس جتایا ہو۔

اسلام جس طرح که اخلاق اور روحانی نیکیاں تعلیم کرتا ہے۔
نہیں نہیں جس طرح که اخلاق اور روحانی نیکیوں کو دل میں بٹھا
دیتا ہے آسی طرح تمدن اور حسن معاشرت کی جو نیکیاں ھیں آن کو
بھی اپنے پیروؤں کے برتاؤ میں ایسا ملا جلا دیتا ہے که کسی
طرح آس سے الگ نہیں ھو سکتیں اور بطور فطرتی عادتوں کے
د کھائی دیتی ھیں اور طبیعت ثانی ھونے سے بھی بڑھ کر اصلی
طبیعت ھو جاتی ھیں۔

اخلاق اور روحانی نتیجه اس کا خدا هی کو ماننا اور اسی پر بهروسا رکهنا اور هر حال دیں اس کی مرضی پر شاکر رهنا اور تمام مصیبتوں پر نیک دلی سے صبر کرنا هوتا هے اور تمدنی نتیجه اس کا اپنے هم جنسوں سے محبت کرنا اور هر ایک کے ساتھ نیکی اور سچائی اور پوری پوری صداقت سے پیش آنا هوتا هے ـ رحم دلی اور صدق مقال یعنی هر بات میں سچ بولنا اسلام کا تائیل یعنی لقب هے ـ

دغا و فریب سے بچنا آس کی ڈگری یعنی آس کا منصب ہے۔ اب دیکھو کہ ہندوستان کے مسلمانوں میں کتنے ہیں جن کا ایسا برتاؤ ہے۔

افسوس که هم نے اپنی بد چلنی سے اسلام کو کیسا داغ لگایا ہے۔ شہادت رور گویا مفلس مسلمانوں کا پیشه هو گیا ہے۔ هندوستان کی عدالتواں میں جس وقت هندو گواہ آتے هیں تو منصف جج کو گو وہ مسلمان هی کیوں نه هو اس بات پر غور کرنی پڑتی ہے کہ آیا آس کی شہادت سچ ہے یا نہیں سگر جس وقت مسلمان گواہ آیا اور آس نے اپنا نام بتایا اور جج کو ظن غالب آس کے جھوٹے ہونے کا هو گیا جب تک که کسی اور قرینه سے آس کے سچے هونے کا گان نه هو۔ مسلمان سودا بیچنے والے به نسبت اور قوموں کے بہت زیادہ جھوٹ بولتے هیں اور فریب کرتے هیں کسی چیز کی اصلی قیمت هرگز نه کہیں گے اور همیشه اس بات ہر قصد رهے گا که مشتری سے جہاں تک ممکن هو زیادہ قیمت لی جاوے۔

جب کہ ہم کسی قوم کے سوداگروں اور خوردہ فروشوں میں یہ بات دیکھتے ہیں کہ تمام اشیاء کی ایک قیمت خاص معین ہے وہی کہتے ہیں اور وہی لیتے ہیں تو ہم کو مسلمانوں کی خراب عادت یعنی جھوٹ قیمت کہنے اور پھر چکاتے چکاتے نصف سے بھی بعض اوقات کم پر بیچنے سے کیوں نه رہخ ہو اور ہم کیوں کر نه اس بات کا خیال کریں کہ اسلام نے کچھ بھی اُن کے دلوں پر اثر نہیں کیا ہے۔

اگر تمام دنیا کے مسلمان ایسے هی هوتے تو بڑی مشکل پیش آتی اس لیے که خود اسلام کی نسبت بہت کچھ شبه پڑتا مگر نہایت خوشی کی بات ہے که اور ملک کے مسلمانوں کا حال دیکھ کر یقین آتا ہے که اسلام بلا شبه روحانی اور اخلاق اور تمدنی نیکیاں بخشنے والا ہے ۔

مسٹر جان رینل موربل صاحب نے ٹرکی کے حالات میں ایک تاریخ لکھی ہے آس میں آنھوں نے جو کچھ حال ترکوں کا لکھا ہے آس کا انتخاب اس مقام پر لکھتے ہیں تاکہ ہندوستان کے مسلمان آس کو دیکھ کر عبرت اور غیرت پکڑیں ۔

وہ لکھتے ھیں کہ '' جس کسی نے ترکوں کے چال چلن کا حال لکھا ھے آس نے ماں اور لڑکوں کی محبت کا ضرور ذکر کیا ھے ۔ ماں کی شفقت اور لڑکوں کا ادب یہ دونوں باتیں طرفین کی طرف سے نہایت مستحکم اور لازوال ھوتی ھیں اسی کے ذریعے سے عورتوں کو وہ خوشی حاصل ھوتی ھے جو فرنگستان میں نہیں ھے ۔ عورت کو خانہ داری میں بالکل اختیار ھوتا ھے ۔ ھم لوگوں میں ریعنی اھل فرنگ میں) اگر عورت تمام عمر آس کے حاصل کرنے کی کوشش و محنت کرے تو بھی وہ اختیار آس کو حاصل نہیں ھوسکتا ۔ وہ کہتے ھیں کہ '' کثرت ازدواج ترکوں میں اس قدر زیادہ اور ایسی عام بلا نہیں ھے جیسا کہ لوگ عموماً تصور کرتے ھیں ۔'' وہ ایس کا قول ہے کہ '' اسلام عورتوں کی طرف نہایت رحم دل ان کا قول ہے کہ '' اسلام عورتوں کی طرف نہایت رحم دل ھے ۔ قرآن میں صاف لکھا ھے کہ جو کوئی نیک کام کرتا ھے اور خدا پر یقین رکھتا ھے مرد ھو یا عورت بہشت میں جاوے گا۔''

وہ لکھتے ھیں کہ '' مس پارڈہ جو ۱۸۳۸ء میں ٹرکی میں تھیں اور وہ ترکوں کے زنانہ میں جایا کرتی تھیں ترکوں کے گھر کے چال چلن سے نہایت خوش تھیں اور ترکوں کی عورتوں کی نیکی اور پارسائی کی تصدیق کرتی ھیں۔''

مسٹر سی ہوایٹ صاحب بیان کرتے ہیں کہ قسطنطنیہ میں امیروں کی عورتیں اپنے وقت کو آسی طرح پر صرف کرتی ہیں جیسا کہ اور دارالریاست کی عورتیں ۔ فرق یہ ہے کہ آن کے خاندان میں اتفاق زیادہ ہوتا ہے ۔ لڑکے اپنے والدین کا ادب زیادہ کرتے میں

هیں اور بیبی شوهر کی زیادہ مطیع هوتی هے۔ عورتوں کا دل اور اصول چلن کا نہایت کم خراب هوتا هے۔ ایک سے زیادہ عورتوں سے شادی کرنے کا برا دستور جاری نہیں هے اور نه یه کوئی قاعدہ کی بات هے بلکه ایسی حالت مستثنی هے۔ رزیل اور اوسط درجه کے لوگوں میں بھی شاذ و نادر ایسے لوگ ملیں گے جنھوں نے دو عورتوں سے شادی کی هو۔ نہایت درجه کے امیر لوگوں میں بھی یہ دستور مستثنی هے۔

مسٹر جان کارنی صاحب کیمبرج والر یه فرماتے هیں که " ترکوں کی عجیب ایمان داری کا کچھ ذکر کرنا عین انصاف ہے۔ حب که می گلیٹیا میں وارد هوا تو میرا اسباب ایک مزدور نے اٹھا لیا اور ھم آگے بڑھے۔ جب ھم ایسی جگه بہنچر جہاں لوگوں کی ہت کثرت تھی تو وہ مزدور سری نظر سے غائب ہوگیا اور ہم لوگ ایک قہوہ خانہ میں گئر ۔ میں نے یہ خیال کیا کہ وہ مزدور میرا اسباب لے کر بھاگ گیا مگر سیوڈن کا رہنے والا کپتان جہاز کا جو پہلے بھی اس بندر سیں آیا تھا کہنے لگا کہ ایسر کام کرنا ہاں کوئی جانتا بھی ہیں۔ تھوڑے عرصہ میں ھم کیا دیکھتر ہس کہ وہ غریب مزدور اُسی راہ سے پھرا چلا آتا ہے اور گھبرایا ہوا ہر چہار طرف دیکھتا آتا ہے ـ بازاروں میں اکثر دوکان دار اپنی دوکان اور اسباب کو کھلا ہوا چھوڑ کر چلر حاتے هم اور کچه اندیشه نهم هوتا ـ دین لین میں کوئی شاذ و نادر فریب دینے کی کوشش کرتا ہے ۔ ٹرکی یعنی روم کی سلطنت کے مختلف حصوں میں میں نے سفر کیا اور اثنائے سفر میں غریبوں کے جھونپڑوں اور امیروں کے سکانوں میں رہا مگر کبھی ایک خر سہرہ کا بھی سیرا نقصان نہیں ہوا۔

یونانیوں میں جب که تریپولٹ زا مقام کی ٹرکی عورتوں پر ظلم

کیا ۔ اسروں کی عورتوں کو رزیل قوم کی عورتوں میں ملا دیا ۔

آن کے مرد رشته دار ذبح کر ڈالے تاهم جس صبر و قناعت کے
ساتھ آن عورتوں نے آس تکلیف کو گوارا کیا نہایت قابل تعریف کے
ھے ۔ خدا کی شکایات یا بیفائدہ افسوس کبھی آن کی زبان سے نہیں
نکلا ۔ وہ یہی کہتی تھیں که خدا کی یہی مرضی ہے اور سب
تکلیفوں کو نہایت صبر و شکر سے گوارا کرتی تھیں ۔ ترک مرد بھی
رنج و تکلیف کو نہایت صبر سے برداشت کرتے ھیں ۔ مگر ترک
عورتیں تو گویا رنج و محنت کی برداشت کی روحیں ھیں ۔ "

اس مقام پر هم کو کچھ هندوستان کے شریف خاندانوں کی عورتوں کا بھی حال لکھنا مناسب ھے بلاشبه ھاری خوش قسمتی ھے کہ مسلمان شریف خاندانوں کی عورتیں جیسی نیک اور اثمان دار اور خدا پر شاکر اور ریخ و مصیبت میں صابر هیں شاید تمام دنیا کی عورتوں سے سبقت رکھتی ھیں ۔ خدا کی عبادت اور دل کی نیکی اور بے انتہا رحم دلی ـ والدین کا ادب ، شوہرکی محبت اور اطاعت ، تمام رشته مندوں کی الفت اور ریخ و راحت میں آن کے ساتھ شرکت۔ اولاد کی پرورش ، خانه داری کا انتظام جس دلی نیکی اور خالص ا ممان داری سے وہ کرتی ہیں بیان سے باہر ہے ۔ نہایت خوشی میں بھی وہ خدا ھی کو پکارتی ھس کہ او خدا تیرا شکر ھے کہ تو نے هم کو یه خوشی دی اور نهایت مصیبت میں بھی وہ خدا ھی کو یکارتی هس ـ آن کی زبان بر یه ایک مثل هے که مصیبت کے وقت بھی خدا ھی کو نه پکاریں تو کیا کریں ۔ دیکھو بچر کو ماں ھی مارتی ہے پر مجھ ماں ھی ماں پکارتا ہے۔ جو جو مصیبتیں ھاری یاد میں ہندوستان کی مسلمان عورتوں پر اتفاقات زمانہ سے یولیں اور جس صدر و شکر و قناعت اور استقلال اور خدا پر بهروسه رکهنر میں اُنھوں نے اُس کو سہا حقیقت سی دنیا کی عجائبات سی سے ھے۔

ھاری رائے میں اسلام کی عزت جس قدر کہ ھندوستان میں رکھی ہے صرف مسلمان عورتوں نے رکھی ہے اور جب اس کے ساتھ کافر مسلمان مردوں کا چال چلن جو ان کے ساتھ ہے خیال کیا جاوے تو عورتوں کی نیکی ایسے درجہ پر پہنچ جاتی ہے جو حد بیان سے خارج ہے ۔

هاری رائے یہ ہے کہ تمام مسلانوں پر واجب ہے کہ صرف زبان سے مسلان کہنے اور شخنوں سے اُونچا پاجامہ اور بیچ کے گریبان کا کرتا اور گول عامہ پہننے اور صرف نماز پڑھ کر دل خوش کر لینے اور صرف دن بھر کا فاقہ کر کر شام کو لذیذ چیزوں اور نفیس شربتوں سے افطار کرنے ھی کو اسلام نہ سمجھیں ۔ بلکہ اُس کے ساتھ اُن تمام نیکیوں پر بھی خیال کریں جو اسلام کے نتیجے ھیں اور جب تک کہ انسان کے افعال اور خواھش اور معاملات اور اخلاق اور تمدن اور معاشرت میں اُن کا ظہور نہیں ھوتا اُس وقت تک ھرگز یہ بات ثابت نہیں ھوتی کہ اسلام نے اُن میں کچھ اثر کیا ہے ہے

گر مسلمانی همین است که واعظ دارد وائے کر پس امروز بود فردائے

یو نأنی اور ترک

(آخری مضامین سرسید صفحه ۹س)

یونانیوں پر ٹرکی کی فتح کی خوشی میں مسلمانوں نے حد اعتدال سے باہر قدم رکھا ہے ترکوں کی اس فتح کو اسلام کی فتج سے پکارتے میں ۔ ماری دانست میں ایسر امور میں اسلام کو شامل کرنا اور اسلام اسلام بکارنا ، نہایت نا سمجھی کی بات ہے۔ اسلام کی فتح آج نہیں هوئی ۔ بلکه آس دن هوئی ۔ جب که رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم نے ہزاروں کافروں اور مشرکوں اور بت پرستوں میں کھڑے ھو کر فرمایا ۔ لا الله الا الله ۔ کافر کہتر ھی رہے ۔ "اجعل الالهة الها واحدا ان هذالشي عجاب" یعنی کیا آس نے ہت سے خداؤں کے بدلر ایک ھی خدا ٹھہرایا ہے۔ یہ تو ایک عجیب بات ہے۔ سگر رسول خدا صلی اللہ عليه وسلم ہي فرماتے رہے لا الله الا الله ـ خدا نے بھي ہي كہا ان اعبدونی هذا صراط مستقیم یعنی میری هی عبادت کرو یمی سیدها راسته هے پس کسی مسلمان بادشاہ کی فتح یابی کو اسلام کی فتح _ اسلام کی فتح سے پکارنا اسلام کی قدر و منزلت کو نه سمجهنا هے ۔ فتح اور شکست خدا کی دین هے ۔ جس کو چاهے دے۔ خود خدا فرماتا هے و تلک الايام ند اولها بین الناس ـ یعنی هم ان دنوں کو لوگوں میں ادلتے بدلتے رہتر میں ۔ کبھی مسلمانوں کی غیر مذہب والوں پر فتح ہوتی ہے کبھی غیر مذھب والوں کی مسلانوں پر۔ جب کہ ترکوں نے انگریزوں اور فرانسیسیوں کی مدد سے رومیوں پر فتح پائی تھی۔ تو هم اس فتح کو کس نام سے پکاریں اور جب ترکوں کی روسیوں سے شکست هوئی ۔ تو کیا هم اس شکست کو اسلام کی شکست سے (نعدوذ بالله) موسوم كريس ـ حاشا وكلا هارا مقصد يه هے ـ كه ایسی چیزوں کے ساتھ جو دنیاوی اسور اور دنیاوی اسباب پر منحصر هس ـ كبهى ادهر هوتے هس ـ كبهى أدهر ـ اسلام كے معزز نام کو جس نے اصلی فتح پائی ہے اور جو ہمیشہ فتح سند رہےگا۔ شامل کرنا کال نا سمجھی کی بات ہے۔ ہم کو خوش هونا چاهیے ۔ که ایک مسلان سلطنت اس جنگ میں فتح یاب هوئی اور برباد نہیں ہوئی ۔ لیکن اس کو ایک اسلامی لباس منانا اور اسلام کی فتح اسلام کی فتح پکارنا ۔ اگر حد سے باہر قدم رکھنا نہیں ہے تو اور کیا ہے اور یہ فتح ایسی کون سی فتح ہے۔ جس پر اتنا شور غل محایا جاوے ۔ ہر شخص جانتا تھا ۔ که ترکوں کے آگے یونانیوں کی کچھ حقیقت نہیں ہے۔ اگر وہ مقابلہ کریں گے۔ تو جس طرح ایک باز چڑیا کو مار لیتا ہے۔ اسی طرح ترک یونانیوں کو مار لی گے ۔ اندیشه اگر تھا ۔ تو یه تھا ۔ که یونانیوں کو ترکوں سے مقابلہ کرنے کی جرأت کیوں ہوئی اور اس لیر خیال کیا جاتا تھا ۔ که در پرده کوئی بڑی قوی سلطنت یونانیوں کی مدد پر ھے ۔ اس شبہ کو مسٹر کلیڈ سٹون کی نا معقول سپیچوں اور تحریروں نے ۔ اور لندن کے ریڈیکل محنونوں کی سپیچوں اور ٹیلیگراموں نے زیادہ قوی کر دیا تھا۔ مگر ھر سمجھ دار سمجھ سكتا تها ـكه نه منسٹر گليڈ سٹون گورنمنٹ پر اثر ڈال سكتے هيں ـ نه آن قلیل ریڈیکل ممران پارلیمنٹ کا گور نمنٹ پر اثر پڑ سکتا ہے ۔ پس یه خیال کر لینا که گورنمنٹ انگریےزی کی پالیسی ترکوں کے خلاف ہے۔ نہایت غلطی اور سفاہت پر سنی تھی۔ جب لڑائی کا معرکه گرم هوا۔ تو کسی بڑی سلطنت نے یونانیوں کا ساتھ نہیں دیا اور اس سے ظاہر ہو گیا ۔ که نه گور نمنٹ انگریزی یونانیوں کی مددگار تھی ۔ نه فرانس ، نه جرمن ، نه کوئی اور گورنمنٹ ، اب آئندہ حو کچھ هو۔ اس کی بناء پولیٹکل مصلحتوں پر هوگی۔ نه اسلام کی مخالفت پر ، هندوستان کے مسلمانوں کو جو اس معامله میں اس قدر جوش و خروش هوا ـ هاری دانست سی صرف انگریزی اخبار اس کا باعث ہوئے ہیں۔ مسٹر گلیڈ سٹون نے اور انگریزی اخباروں نے کوئی درحہ اھانت اور سخت کلامی کا سلطان کی نسبت نهس جهورًا تها اور كوئي بدي اور برائي ايسي نه تهي ـ جو انهون نے ترکوں کی نسبت نه لگائی هو اور یه سب باتیں خاص کر ترکوں اور عام طور پر سب ،سلمانوں کو ریخ دہ اور سخت ریخ دہ تھیں ۔ مگر جب ترکوں کی فتح ہوئی ۔ تو انھوں نے اپنے دشمنوں کے ساتھ ایسا رحم برتا۔ که اس سے زیادہ نہیں ہو سکتا مثلاً حب یونانیوں کے ایک گروہ کے پاس کھانے کو کچھ نہیں رھا۔ تو ترکوں نے اپنر پاس سے اُن کو کھانے کو دیا۔ یونانیوں کے محروحوں کی تیارداری کی اور نہایت مہربانی سے آن کے ساتھ برتاؤ کیا ۔ اب ترکوں کی فتح ھونے کے بعد اُس ریخ کے مقابله میں مسلمانان هند نے اس فتح کی خوشی میں حد اعتدال سے سے زیادہ خوشی ظاہر کی اور گورنمنٹ انگریزی نہایت خاسوشی سے ان سب باتوں کو دیکھتی رھی۔ ھم بھی اس خوشی کرنے میں کچھ مضائقہ نہیں سمجھتر مگر یہ بتلاتے ھیں۔ کہ ھم سب مسلمان هندوستان میں انگریزی گورنمنٹ کی رعایا هیں اور اس بات کو کبھی نہیں بھولنا چاھیے ۔کہ ھم غیر سلطنتوں کے ساتھ پولیٹکل امور میں کوئی کام اور کوئی فعل ایسا نہیں کر سکتے ۔ جو گور نمنٹ کے برخلاف ہو۔ پس ہم کو لازم ہے۔کہ ہم وہی کریں جو گور نمنٹ کی مرضی کے بر خلاف نہ ہو ۔

ذکر ٹرکی یعنی

روم کی جسلوب کا

(تهذيب الاخلاق ، جلد اول تمبر ، بابت ١٥ شوال ١٢٨٥هـ)

مسٹر ولیم هورڈ رسل صاحب کے روز نامجہ میں سے کچھ تھوڑا سا حال پرنس آف ویلز یعنی ولی عہد سلطنت انگلستان اور پرنسس آف ویلز یعنی ولی عہد بیگم سلطنت انگلستان کے روم میں جانے اور سلطان روم سے ملاقاتیں هونے کا لکھتے هیں ۔

یه دونوں شاهی خاندان انگلستان کے نگین تاج ۱۸٦۸ء میں دار السطنت قسطنہ طنیه میں گئے تھے اور کئی روز تک سلطان عبدالعزیز خاں سلطان روم کے هاں سہان رہے ۔ اُن سہانیوں کے جلسوں میں سے دو جلسوں کا حال لکھتے هیں ۔

ایک رات سلطان نے پرنس اور پرنسس آف ویلز اور آن کے ساتھ کے آمراء کو اپنے ساتھ کھانا کھلانے کی دعوت کی ڈالم بخشی محل جو بڑا عمدہ اور نہایت ناسی محل ہے جلسۂ دعوت کے لیے تجویز ہوا قریب سات بجے کے پرنس اور پرنسس آف ویلز آس محل میں تشریف لائے علی پاشا وزیر اعظم سلطان روم نے استقبال کیا اور ملاقات کے بڑے کمرے میں لے گیا جہاں اور وزرائے سلطنت روم بھی حاضر تھے چند لحمہ نہ گذرے تھے کہ عبد العزیز خاں سلطان روم بھی وھاں تشریف لائے اور پرنسس آف ویلز کا ھاتھ اپنے ھاتھ میں

ڈال کر کھانا کھانے کے کمرے میں لے گئے اور آن کے پیچھے اور تمام مہان درجہ بدرجہ آس کمرے میں آئے ۔ میز جس پر کھانا تناول فرمایا مستطیل تھی اور ایک سرا آس کا گول تھا آس گول سرے کی طرف بیچ میں سلطان اور ایک طرف پرنس آف ویلز اور ایک طرف پرنس آف ویلز اور ایک طرف پرنسس آف ویلز رونق افروز ھوئے۔

پرنسس آف ویلز کے بعد علی پاشا وزیر اعظم سلطنت روم اور آن کے بعد مسس ایسٹ اور آن کے بعد جنرل اگناٹیف اور مسٹر ایسٹ اور آن کے بعد دیگر وزرائے سلطنت روم کرسیوں پر میز کے پاس بیٹھے اور پرنس آف ویلز کے بعد میدم اگناٹیف اور آن کے بعد بم بوری اور آن کے بعد مسس گرے اور آن کے بعد اور وزراء و آمرائے سلطنت روم میز کے پاس کرسیوں پر بیٹھے ۔

سلطان کے سامنے سوائے وزیر اعظم کے اور کوئی وزیر بیٹھتا نہیں تھا۔ یہ پہلا جلسہ ہے جس میں سلطان نے اپنے اور وزیروں کو بھی اپنے ساتھ بٹھلایا۔

میز پر مسلمان اور عیسائی سب چوبیس آدمی تھے اور میز عمدہ برتنوں اور گلدستوں سے خوب سجی ہوئی تھی اور ڈالما بخشی محل کا کھانا کھانے کا کمرا ابنی عمدگی اور آراستگی میں نہایت عمدہ بلوری جھاڑ و فانوس میں مشہور ہے۔

سلطانی کھانے کا طرز نہایت عجیب تھا اور فریخ اور ترکش یعنی رومی دونوں قسم کے کھانے تھے کھانا کھانے میں سلطان نے پہلے پرنسس آف ویلز سے باتیں کیں اور علی پاشا (جو انگریزی خوب جانتا ہے) آن دونوں میں مترجم ہوا۔

آس کے بعد سلطان نے پرنس آف ویلز سے باتیں کیں اور عرفی بھی جو سلطان کی کرسی کے پیچھے کھڑا تھا آن میں مترجم ھوا وہ اسی واسطے سلطان کی کرسی کے پاس کھڑا تھا کہ جب سلطان اور

پرنس آف ویلز آپس میں باتیں کریں تو وہ ترجان ہو ۔

سلطان کا ایک خاص باجا نہایت نفیس پاس کے کمرے میں بج
رھا تھا سب نے نہایت خوشی اور خوبی سے کھانا کھایا اور جب
میز پر سے آٹھے تو سلطان پرنسس آف ویلز کا ھاتھ اپنے ھاتھ ڈال
کر زنانہ خانہ میں لے گیا اور اور لیڈیاں بھی اندر گئیں والڈی سلطانہ
یعنی سلطان بیگم نے آٹھ کر استقبال کیا اور پرنسس آف ویلز سے
باتیں کرنے لگیں اور میدم مہرن آن میں ترجان ھوئیں اور پرنس
آف ویلز اور اور آماء و رؤسا چرٹ پینے کے کمرے میں تشریف
لے گئے۔ تھوڑی دیر بعد سلطان بھی زنانہ خانہ سے باھر آئے اور
ملاقاتی چھوٹے کمرہ میں پرنس آف ویلز کے ساتھ بیٹھ گر باتیں کرنے
لگے۔ جب پرنسس آف ویلز اور اور لیڈیاں بیگات سے ملاقات اور
بات چیت کر کر فارغ ھوئیں اور باھر تشریف لائیں آس وقت سب
بات چیت کر کر فارغ ھوئیں اور جلسہ ختم ھوا۔

دوسرا جلسه برٹش اسباسٹر کے هاں یعنی سفیر سلطنت انگلستان کے هاں هوا جو روم میں رهتا هے سفیر سلطنت انگلستان نے پرنس اور پرنسس آف ویلز کے لیے برٹش اسباسٹی سیں یعنی آس مکان میں جہاں سفیر انگلستان رهتے هیں بہت عالی شان شاهانه بال دینا چاها اور بنظر اظہار اپنے نہایت خوشی اور خاطر اور توانع ایسے عالی شان عزیز مہانوں کے سلطان نے برٹش اسباسٹر کے هاں آس بال میں تشریف عزیز مہانوں کیا تمام بادشاهتوں کے اسباسٹر اور وزراء آس بال میں حاضر تھے اور چھ سو چٹھیاں بلاوے کی آماء و رؤسا اور افسران فوجی اور ملکی کو تقسیم هوئی تھیں تمام لوگ وقت پر آ حاضر هوئے هر ایک شخص نہایت عمدہ اور نفیس پوشاک پہنے هوئے تھا نو بجے کے بعد پرنس اور پرنسس آف ویلز وهاں رونق افروز هوئے۔ برٹش اسباسٹی اور سسس الیٹ نے استقبال کیا۔ اسباسٹی کے پھاٹک

میں سمندری فوجی لوگ کھڑمے تھے آنھوں نے سرخ اور نیلے رنگ کی مہتابیاں روشن کرنے سے خوشی اور تعظیم دونوں کا اظہار کیا وہ بڑا کمرہ جس میں بال تھا نہایت عمدہ آراستہ تھا اور گرڈ آف آنر کا پھول موجود تھا اور اندر و باھر کمرے کے انواع انواع اقسام کے پھول و گلدستے سجے ھوئے تھے۔

تھوڑی دیر بعد سلطان عبد العزیز خال بھی تشریف لائے اور بہت سے وزراء و اراکین سلطنت آن کے ساتھ تھے پرنس آف ویلز اور برٹش اسباسٹر نے استقبال کیا اور سمندری فوج نے سرخ او رنیلے رنگ کی سہتابیاں روشن کرنے سے تعظیم اور خوشی کا اظہار کیا پرنسس آف ویلز اور مسس الیٹ پہلی سیڑھی ہر استقبال کو کھڑی تھیں سب مہان اور میزبان بخوشی و خورمی آس اڑے مال میں جہاں بال تھا داخل ہوئے اور سلطان نے اپنی کرسی بر تشریف رکھی اور آس کی بغل میں ادھر آدھر پرنس اور برنس آف ویلز اپنی اپنی کرسیوں پر بغل میں ادھر آدھر پرنس اور برنس آف ویلز اپنی اپنی کرسیوں پر تشریف فرما ہوئے معمولی بال شروع ہوا آدھی رات کے بعد سلطان تشریف فرما ہوئے مگر وہاں وہ جلسہ صبح تک رھا۔

سلطان کا لندن میں آنا اور ملکه معظمه سے ملنا اور ولی عمده انگلستان کا اور ولی عمد بیگم کا وهاں جانا ایک نہایت عمده تاریخی واقعات سے ہے اور تمام دنیا کی آنکھوں میں آس محبت اور دوستی کا جو روم اور انگلستان یا یوں کمو که ایک مسلمان اور عیسائی سلطنت میں ہے ۔ بڑا ثبوت ہے ۔

جب سلطان لنڈن تشریف لائے تھے اور انڈیا آنس میں آن کی دعوت ہوئی تھی تو آس بڑے ہال میں بطور یادگاری محبت اور دوستی عیسائی اور مسلمان سلطنت کے نقش کرسنٹ اور کراس کا ملاکر کھودا گیا ہے۔

کرسنٹ کہتے ہیں پہلی تاریخ کے چاند کو اور یہ ہلال کی

صورت چاند کا نشان مسلانی سلطنت کا ہے اور کراس کہتے ہیں صلیب کو ، جو عیسائی مذہب کا مقدس نشان ہے ۔ انڈیا آنس کے هال میں هلال اور آس کے بیچ میں صلیب کا نشان کھودا ہے ۔ جو عیسائی اور مسلان سلطنت کی دوستی اور مجبت پر دلالت کرتا ہے ۔

ہم کو امید ہے کہ ہندوستان کے لوگ بھی ان حالات اور واقعات سے عمدہ نصیحت پکڑیں گے اور اپنے حالات پر غور کر کر ہذیب الاخلاق اور حسن معاشرت کی ترقی میں کوشش کریں گے ۔

ترکوں کی پہذیب

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ۱۷ مارچ ۱۸۵۹ء)

منعدد اخباروں میں ایک خبر اس عنوان سے چھی ہے ' ترکوں کی تہذیب '' اور اس میں ترکوں کی طرز معاشرت اور اخلاق کا تذکرہ اچھے طور سے کیا ہے اور راقم خبر نے اپنر انصاف سے یہ ثابت کیا ہے کہ جو الزام ترکوں کی تہذیب پر لگایا جاتا ہے وہ صحیح نہیں ہے اور شائستگی کے لحاظ سے ترکوں کی عورتوں اور ان کی اولاد کو تعریف و توصیف کے لائق بیان کیا ہے اور یہ بھی لکھا ہے کہ ترکوں کی عورتیں امور خانہ داری کے انتظام میں ایسی نہیں ھیں کہ ان کو نا سہذب کہا جاوے بلکه وه نهایت منتظم هوتی هس اور اپنر خاوندوں کی نظر میں آن کی عزت و وقعت جیسی که چاهیر ویسی هوتی هے ـ باعتبار تعلم و تربیت کے بھی وہ نہایت شکفته حالت میں هیں اور صغیر السن بچوں کی تعلیم و تربیت انھیں کے اختیار میں ہوتی ہے اور اپنے خاوندوں کے مال میں وہ خود مختار هوتی هیں۔ یه بھی لکھا ہے که کو لوگ سلطان روم کو اینر گهر بیثهر به خیال کر لی که وه ناز و نعمت میں پڑے ہوئے ہیں اور آن کے گرد چند پری وش عورتیں گھوم رھی ھیں مگر در اصل یہ غلط خیال ہے ۔ سلطان روم نهایت مهذب حالت میں هی اور وه اپنی والده کی تعظم ایسی کرتے ہیں کہ اس کی کچھ حد نہیں ہے ہاں تک کہ جس وقت وہ اپنی والدہ کی خدمت میں جاتے ہیں تو جب تک وہ آن کو

بیٹھنر کی احازت نه دیں آس وقت تک وہ بیٹھ نہیں سکتر اور آن کی مرضی کے خلاف کچھ کام نہیں کر سکتر ۔ غرض کہ اسی قسم کے امور کا تذکرہ اس خبر میں ہے جس سے یہ بات بالیقین ثابت ھوتی ھے کہ ترک لوگ بھی دنیا کے آسی بے نظیر خطه میں رھتر ھی جو شائستگی اور تہذیب کے لحاظ سے اعلیٰ درجہ کے خطوں میں شار کیا حاتا ہے مگر ھم افسوس کرتے ھیں آن لو کوں پر جو ترکوں کی تہذیب کو بے وقعت خیال کر رہے ہیں اور مسلانوں کے مذہب کو مانع تہذیب و شائستگی تصور کرتے ہیں۔ دیکھو باوحود اس بات کے کہ ترک نہایت سخت مسلمان ہیں اور با ایں همه آن کا اسلام سراسر تهذیب هے پهر کیوں کر یه خیال کیا جاتا ہے کہ اسلام مانی تہذیب ہے مسانوں پر بڑی شائسته قوس یه الزام لگاتی هس که آن کی عورتس نهایت خراب حالت میں هیں۔ مگر ترکوں کی عورتوں کی یه حالت شاید ان کے اس خیال کو بالکل باطل کر دے گی ۔ اسی طرح وہ مسلمانوں کی عورتوں کو علی العموم جاهل اور انتظام امور خانه داری میں عاجز تصور کرتے میں مگر اس خبر سے اس کے بالکل ہر خلاف ثابت ھوتا ہے۔ شائستہ قوموں کو اس بات پر بڑا ناز ہے کہ ان کی اولاد چھوٹی عمر سے ھی اپنی ماؤں کی گود میں تعلیم کا کھیل کھیلتی ہے اور ترکوں کی عورتیں بھی ایسی ہیں کہ وہ اپنی اولاد کو تھوڑی عمر سے تہذیب کا کھیل کھلاتی ہیں اور باوجود ان جمله امور کے ترکوں کی عورتی اپنر خاوندوں کے نزدیک نہایت معزز ھیں اور جس طرح بعض یورپین مصنف خیال کرتے ھیں کہ مسلانوں کی عورتس اپنر خاوندوں کی نظر میں معزز نہیں ہوتیں ویسا نمیں ہے بلکہ اس بات میں ترک غالب میں که جس طرح ترکی اپنی ماں کی تعظیم کرتے ھیں ۔ اس طرح اور قومیں نہیں کرتیں

اور پردہ کے لحاظ سے بھی ترکی غالب ھیں۔ ھاں البتہ یہ ایک دوسری بات ھے کہ تہذیب سے کوئی اصطلاح ھو کہ جس بات کو ھم تہذیب کہیں اس کو اور شائستہ قوریں ہے تہذیبی کہیں اور جس کو ھم ہے تہذیبی کہیں اس کو اور لوگ تہذیب کہیں اور اس کی نظیر یہ ھے کہ مسلمان قوریں عورتوں کے پردہ کو تہذیب کہتی ھیں اور اور قوریں اس کو وحشیانہ پن خیال کرتی ھیں پس اگر یہ امر ھے تو ھر گز تہذیب و ہے تہذیبی کا قصہ فیصل نہیں ھو سکتا اور اگر یہ امر نہیں ھے صرف انصاف ھے تو اس کا تصفیه نہایت آسان ھے۔ جو اسور تر کوں کے نزدیک یا مسلمانوں کے نزدیک تہذیب میں داخل ھیں آس کو اور کوئی غیر مہذب ثابت کر دے تہذیب میں داخل ھیں آس کو اور کوئی غیر مہذب ثابت کر دے تابت کر دیں اور جن وجوہ کے لحاظ سے ان کو تہذیب یا جس کو اور لوگ ہے تہذیبی کہتے ھیں ھم آس کو تہذیب یا خبر جس کا ھم نے ذکر کیا قابل لحاظ ھے اس لیے ھم اس کو خبر جس کا ھم نے ذکر کیا قابل لحاظ ھے اس لیے ھم اس کو نقل کرتے ھیں:

'' مسٹر ٹیلر جانسٹن صاحب نے اخبار پالہٰل گزٹ کو ایک چٹھی قسطنطنیہ سے تحریر کی ہے اور وہ یہ ہے :

میں خیال کرتا ہوں کہ عوام کو جو خیالات ترکی روم کے ہیں وہ ایسے ہیں کہ گویا سلطان درمیان میں بیٹھے ہیں اور بیس یا پچیس آھو چشم عورتیں سرکیشیا کی سلطان کے آس پاس پھرتی ہیں ۔ لوگوں کو اس بات کو سن کر تعجب ہوگا کہ ترکی حرم سرا ایسا نہیں ہے بلکہ یہ ایک مکان رہنے کا ہوتا ہے جہاں سب طرح کی آسائش و آرام ہے اور اس مقام سے ترک بڑی محبت کرتے ہیں اور اس کا اسی طرح خیال کرتے ہیں کہ جیسا کوئی یورپین ایسی جگہ کا خیال رکھتا ہے ۔ یورپین لوگوں کو یہ خیال یورپین ایسی جگہ کا خیال رکھتا ہے ۔ یورپین لوگوں کو یہ خیال

ھے کہ مسلان قرار دیتے ھیں کہ عورتوں کے جان نہیں ھوتی اور نہ آن کے جسم میں روح ھوتی ھے مگر میرے نزدیک یہ بات غلط ھے گو مذھب اسلام میں چند شادیوں کی ممانعت نہیں ھے مگر جس پر بھی ترکی میں عوام کی رائے اس کے بر خلاف ھے اور جس قدر عورتیں ترکی میں لوگوں کے پاس ھیں اسی قدر اور ملکوں میں ھیں ۔ کچھ یہ بات نہیں ھے کہ یہاں زیادہ ھوں اور مقام پر کم بلکہ اکثر تو ترکی میں ایسا دیکھنے میں آیا ھے کہ لوگوں کے پاس ایک ھی ایک عورت ھوتی ھے زیادہ عورتیں نہیں ھوتیں ھیں ۔ ترکوں کی عورت ھوتی اپنے اپنے گھروں میں سب طرح سے حکومت کرتی ھیں اور آن کا وقار کوئی باھر مانے یا نہ مانے مگروہ اپنے گھروں کی حاکم ھیں ۔

جو تہذیب ترکوں کے خانکی سعاملات میں ہے آ در آس کو وہ لوگ دیکھیں جو انگشت نمائی کرتے ھیں تو حیران ھو جائیں۔ ترکوں کو اپنے والدین کا خیال اور ادب بہت رھتا ہے اور یہاں تک که حضرت سلطان اپنی والدہ کے روبرو کبھی نہیں بیٹھے جب تک انھوں نے اجازت نہیں دی ۔ ایسا ادب سغربی ملکوں میں نہیں ھوتا ۔ سغربی ملکوں میں یہ قادہ ہے کہ جب لڑکے کی شادی ھو جاتی ہے اور آس کی بیبی کیر میں آتی ہے تو آس عورت کو کل اختیارات دے دبے جاتے ھیں اور سال کا خیال کم ھوتا ہے سگر ترک ایسا نہیں کرتے ۔ اگر ایسا کریں تو سوجب بڑی ہستاخی کا ھو ۔ سوا اس کے شہنشاہ نپرلین نے ایک قانون جاری کیا تھا کہ ھر ایک شخص اپنی اولام میں برابر ترکہ تقسیم کرے۔ کیا تھا کہ ھر ایک شخص اپنی اولام میں برابر ترکہ تقسیم کرے۔ کیا تھا کہ ھر ایک شخص اپنی اولام میں برابر ترکہ تقسیم کرے۔ کو چو بات یہاں ھرگز نہیں ہے جس کو چاھے آس کو باپ دے سکتا ہے ۔ جب صبح ھوتی ہے تو ھر ایک لڑکا والدین کے ھاتھوں کو چومتا ہے اور یہ رسم نہیں ہے بلکہ ترکوں کی اولاد دل

سے والدین کی اطاعت کرتی ہے۔ ترک آیس میں نہایت محس سے رهتر هیں اور حن کو خاندانی کہنا چاهیر وہ خصوصاً ہت سہذب هیں حوں کہ هر وقت یه سب ایک دوسرے کی نگھوں میں رهتر هیں اس لیر محال نہیں ہے کہ کوئی شخص بد تہذیبی کی بات کرے مذھبی کارروائی کی پابندی جیسی ہماں ہے ویسی کہیں نہیں ہے ـ لونڈی اور غلام اور نو کر چاکر سب اهل خانه کی اطاعت دل سے کرتے هس ـ بعض باتس ترکوں میں مہت عمدہ پائی جاتی ہس ـ مثلاً أن کے هاں مختلف فرقر نہیں میں ۔ سب ایک میں اور هر شخص کی من حیث المراتب آبرو ہے جب اور فرقر علیحدہ علیحدہ ہوتے ہیں تو باہم رشک و حسد بیدا هو جاتا ہے مگر یہ بات ہاں نہیں ہے ۔ تمام یورپ میں ترکوں کو ھی ابسا کہنا چاھیر کہ آن کی سلطنت یک دلی اور اتفاق سے ہے ۔ ہاں جو قواعد کی کتابیں ہیں ۔ ان میں ہدایت ہے کہ ہر ایک شخص اپنر درجوں اور اپنی حیثیت کے سوافق ہی کارروائی کر سکتا ہے ۔ ترک نبایت ملائمت سے گفتگو کرتے ہیں اور بڑے ھی سہذب ھوتے ھیں ۔ ان کی تہذیب اور خاطر و توانیح کو دیکھ کر طبیعت نہایت خوش ہوتی ہے ۔ ایسی تہذیب اور ایسر قواعد کا شاھی حرم سرا میں بخوبی برتاؤ ھوتا ہے۔ ترکوں میں عزت آسی کو ملتی ہے جو عزت کا مستحق ہے۔ ترک اپنر اپنر درجوں ہر قائم رہتر ہیں۔ جب تک ترکوں کے لڑکے چھوٹے ھوتے ھیں آس وقت تک مکانوں میں رھتے ھیں اور ان کی سال کے سیرد آن کی تعلم ہوتی ہے یورپین لڑکے جو ہوتے ہیں وہ نہدی ہوتے ہیں اور جیسا چاہتے میں ویسا کرتے ہیں سگر ترکوں کی اولاد مس یہ بات نہیں وہ ہرگز برخلاف والدین کے نہیں کر سکتر اور نہ آن کی اطاعت میں فرق آ سکتا ہے۔ بلا عذر اپنر بزرگوں کا کہنا مانتے ہیں۔ یورپین کے لڑکوں سے ترک اپنے

لڑکوں کو نہیں ملنے دیتے کیوں کہ آن کی عادات یہ لڑکے سیکھ لیتے ہیں ۔ اسی غرض سے ترک اپنے مکانات کو دور دور پر بناتے ہیں اور یورپین لوگوں کے مکانوں کے قریب نہیں بناتے تاکہ آن کی عادات ان میں اثر نہ کریں تھوڑی سی عمر میں ترکوں کی اولاد کام سیکھ لیتی ہے اور اپنے والدین کے کاموں میں شریک ہوتی ہے ۔

سلطان رو م اور هندوستان کے مسلمان

اس عنوان کے نیچے اخبار پایونیر میں ایک تار قسطنطنیہ کا ہورخہ ے رہون چھپا ہے جس کا مضمون یہ ہے:

''جو جواب سلطان نے هندوستان کے مسلمانوں کی مبارک بادیوں کا ارسال فرسایا ہے۔ جو آنھوں نے یونان پر ٹرک کی نسبت سلطان محدوح کی خدمت میں بھیجی تھیں۔ وہ ایک طولانی چٹھی میں درج ہے۔ جس میں خلیفہ کی نسبت تمام سچے مسلمانوں کے فرائض بیان کیے گئے ھیں۔ جن میں نقصانات نقدی اور اخلاقی اور جسہانی شامل ھیں۔ چٹھی مذکور کے خاتمہ پر یہ بیان کیا گیا ہے۔ کہ اسلام کی توت اتفاق اور یک جہتی پر منحصر ہے یہ چٹھی خاص ایلچیوں کی معرفت هندوسنان اور مصر اور عرب کے شیوخ اور علیاء کے پاس بھیجی جاوے گی۔''

اس ٹیلیگرام کا ترجمہ ھارے پچھلے اخبار میں چھپ چکا ھے مگر اس وقت ھم اس ٹیلیگرام کے مضمون پر غور کرتے ھیں کہ وہ صحیح ہے یا اس میں کچھ غلطی ہے ۔ ھارے نزدیک جہاں تک اس کا مضمون ھندوستان کے مسلمانوں سے متعلق ہے وہ صحیح نہیں معلوم ھوتا ۔ ھارے نزدیک ممکن ہے کہ سلطان نے اسی مضمون کی کوئی چٹھی مصر اور عرب کے علماء اور شیوخ کے پاس بھیجی ھو ۔ مگر ھندوستان کے مسلمانوں کے پاس ایسی چٹھی کا بھیجنا ھاری سمجھ میں نہیں آتا اور ظاھرا ٹیلیگرام کا یہ بیان بھیجنا ھاری سمجھ میں نہیں آتا اور ظاھرا ٹیلیگرام کا یہ بیان

کہ '' سلطان نے ھندوستان کے مسلمانوں کی مبارک بادی کے جواب میں یہ چٹھی لکھی ہے اور یہ چٹھی خاص ایلچیوں کی معرفت ھندوستان کے علماء کے پاس بھیجی جاوے گی ۔'' صحیح نہیں معلوم ہوتا ۔

ھاری دانست میں بہ موجب نیشنل لا کے سلطان کو اس قسم کی پولیٹکل تحریر کرنے کا کسی دوسری سلطنت کی رعایا کو بلا توسط وہاں کی گورنمنٹ کے اختیار نہیں ہے اور ہم ہرگز خیال نہیں کر سکتے کہ سلطان ٹرکی کو یہ امر معلوم نہ ہو ۔

مسلانان بمبئی نے جو تار مبارک باد فتح کے بھیجے تھے۔ اس کا جواب بھی سلطان نے براہ راست مسلان بمبئی کو نہیں بھیجا تھا۔ بلکہ اپنے انبیسیڈر (سفیر) مقیم بمبئی کے پاس وہ جواب بھیجا تھا۔

هم نے سنا ہے کہ مسلمانان شملہ نے بھی تار مبارک باد فتح کا سلطان کی خدمت میں بھیجا تھا۔ مگر جو کہ شملہ میں کوئی انبیسیڈر سلطان کی طرف سے نہیں ہے۔ اس واسطے سلطان نے اس کا جواب اپنے انبیسیڈر مقیم لندن کے پاس بھیجا اور لندن کے انبیسیڈر نے آس کا جواب مسلمانان شملہ کے پاس بھیجا۔ ہم کو ٹھیک معلوم نہیں ہے کہ یہ امر صحیح ہے یا نہیں۔ لیکن قیاسا معلوم ہوتا ہے کہ صحیح ہوگا۔ پس جب کہ سلطان نے ایسی احتیاط هندوستان کے مسلمانوں کی مبارک باد کے جواب میں بھیجنے میں کی ہے۔ نو هم مسلمانان هندوستان کے نام لکھی ہو اور اپنے ایلجیوں کی معرفت مسلمانان هندوستان کے نام لکھی ہو اور اپنے ایلجیوں کی معرفت براہ راست هندوستان کے مسلمانوں کے پاس بھیجی ہو۔ بالفرض ا در سلطان نے ایسا کیا ہو جو ہاری رائے میں ہر در نہیں کیا ہوگا۔ تو گور تمنٹ انڈیا کو از روئے نیشنل لا کے اختیار کامل ہے کہ

ایسے ایلچی کو ہندوستان میں نہ آنے دے اور جو چٹھی اس کے پاس ہو ضبط کر لے ۔

مذکور بالا ٹیلیگرام میں لکھا ہے کہ اس چٹھی میں خلیفہ کی نسبت تمام سچے مسلمانوں کے فرائض بیان کئے گئے ہیں۔ جب کہ هندوستان کے مسلمان شرکی کی رعایا نہیں ہیں۔ تو هندوستان کے مسلمانوں کو خلیفہ کی نسبت کیا فرائض بیان ہو سکتے ہیں کیوں کہ هندوستان کے سلمانوں کے لیے بجز اس کے کہ وہ جس سلطنت کی حکومت میں بطور رعایا نے رهتے ہیں۔ اس کے خیر خواہ اور وفادار ہیں اور کچھ فرض نہیں ہے۔

ایک اور فقرہ اس ٹیلیگرام میں مندرج ہے۔ کہ جو فرائض مسلمانوں کے بیان کبے گئے ہیں۔ ان میں نقصانات نقدی اور اخلاق اور جسمانی بھی شامل ہیں۔ '' ہم تو اس فقرہ کا کچھ مطلب ہی نہیں سمجھ سکتے اور اگر کچھ مطلب ہو تو وہ مصر اور عرب کے مسلمانوں سے متعلق ہوگا۔ جو سلطان کی رعیت ہیں۔ مگر هندوستان کے مسلمانوں سے نه متعلق ہو سکتا ہے اور نه اس کے کچھ معنی سمجھ میں آ سکتے ہیں۔''

خاهرا یه معلوم هوتا ہے۔ که جو تہنیت ناسے مصر اور عرب سے اس فتح کی بابت سلطان کی خدمت میں آئے هیں۔ شاید اس کے جواب میں کوئی چٹھی سلطان نے لکھی هو ۔ مگر ٹیلیگرام بھیجنے والے نے خلطی سے یه سمجھ لبا ہے ۔ که هندو ۔ تان کے مسلمانوں نے جو مبارک بادی بھیجی ہے ۔ اس کے جواب میں وہ چٹھی ہے ۔

سلطان نے جو یونانیوں ہر فتح پائی ۔ اس سے کوئی ایسا مسلمان نه هوگا جس کا دل خوش نه هوا هو ۔ هم بهی کمتے هیں ۔ که سلطان کی اس فتح سے هارا دل بهی نہایت خوش هوا ہے لیکن

جو کچھ هندوستان کے مسلمانوں نے کیا ۔ بلا اجازت اور مرضی گورنمنٹ کے ۔ هم اس کو اچھا نہیں سمجھتے ۔ که گورنمنٹ نے اس پر اعتنا نہیں کیا ۔ مگر جن مسلمانوں کو ایسا کرنا تھا ھارے نزدیک ضرور تھا کہ آولا گورنمنٹ سے اس کی اجازت حاصل کرتے اور اس کے بعد جو کچھ ان کو کرنا تھا کرتے ۔ هم هرگز اس بات کو پسند نہیں کرتے که ایسے پولیٹکل امور میں جو دوسری سلطنتوں سے متعلق هیں ۔ بلا اجازت اور مرضی گورنمنٹ هندوستان کے مسلمانان کوئی کارروائی کریں ۔ کیوں که قانونی اور مذهبی فرض یه هے که هم همیشه اپنی گورنمنٹ کے وفادار اس کی مرضی نور پالیسی کے تابع رهیں اور یه بات تو کسی هاری سمجھ میں اور پالیسی کے تابع رهیں اور یه بات تو کسی هاری سمجھ میں نہیں آئی که دکن سے هندوؤں نے کس خیال سے سلطان کو اس خیت کی بابت مبارک بادی بھیجی ۔ کیا وہ بھی آن فرائض میں داخل هونا چاھتے هیں جو سلطان نے مسلمانوں کی نسبت قرار دیے ۔ آخر کو هم پھر بیان کرتے هیں ۔ که مذکورہ بالا ٹیلیگرام یا آخر کو هم پھر بیان کرتے هیں ۔ که مذکورہ بالا ٹیلیگرام یا اس میں مسلمانان هندوستان کی نسبت جو کچھ لکھا ھے وہ صحیح آس میں مسلمانان هندوستان کی نسبت جو کچھ لکھا ھے وہ صحیح اس میں مسلمانان هندوستان کی نسبت جو کچھ لکھا ھے وہ صحیح اس میں مسلمانان هندوستان کی نسبت جو کچھ لکھا ھے وہ صحیح اس میں مسلمانان هندوستان کی نسبت جو کچھ لکھا ھے وہ صحیح اس میں مسلمانان هندوستان کی نسبت جو کچھ لکھا ھے وہ صحیح اس میں مسلمانان هندوستان کی نسبت جو کچھ لکھا ھے وہ صحیح اس میں مسلمانان هندوستان کی نسبت جو کچھ لکھا

جب که ترکوں نے سپاسٹپول کی لڑائی میں روسیوں پر فتح پائی تھی ۔ اس وقت مسلمانان ھند نے کوئی علامت ایسی خوشی کی ظاھر نہیں کی تھی جیسے که یونانیوں پر فتح پانے پر ظاھر کی ہے۔ سپاسٹپول کی لڑائی میں خود انگریزی گور بمنٹ نے ترکوں کے لیے ھندوستان میں چندہ جمع کرنے کی اجازت دی تھی ۔ لیکن اگر ھاری یاد میں کچھ غلطی نه ھو ۔ تو اس وقت بھی ترکوں کے لیے کوئی معتدبه چندہ ھندوستان میں نہیں ھوا تھا ۔

ہیں ھے ۔

پس یہ بات غور کرنے کی ہے کہ یونان پر فتح پانے سی ہندوستان کے مسلمانوں نے کیوں ایسی گرم جوشی ظاہر کی ہے۔ هاری رائے میں اس کے دو سبب میں: اول یہ کہ یورپ کے بعض لوگوں کو یہ خیال پیدا ہوا تھا کہ هندوستان کے مسلمانوں کو کوئی بہت بڑا تعلق سلطان ٹرکی سے نہیں ہے ۔ پس مسلمانان هندوستان نے عملی کارروائی سے ظاہر کیا کہ آن کو سلطان ٹرکی سے جو حرمین شریفین کا محافظ ہے خاص قسم کا تعلق ہے ۔ قطع نظر اس سے کہ سلطان مذھبی خلیفہ ہے یا نہیں اور مسلمانوں کو اس کے احکام کو تسلیم کرنا لازم ہے یا نہیں ۔

دوسرے یه که مسٹر کیڈ سنون اور دیگر ریدبکل میران پارلیمنٹ نے نہایت سخت اور محض بیجا اور نا واجب زبان درازی سلطان ٹرکی اور ترکوں کی نسبت کی تھی ۔ جس سے مسلمانان هند کے دل نہایت رنجیدہ تھے ۔ جب که ترکوں کو بونانیوں پر فتح هوئی ۔ تو جس قدر آس زبان درازی سے مسلمانوں کو رہخ هوا تھا ۔ آسی قدر آن کو خوشی کرنے کا موتع ملا ۔ مگر اس خوشی کو کسی پولینکل اسور پر محمول کرنا هماری رائے میں بیجا هے اور اس سے زیادہ اور کوئی امر هماری سمجھ میں نہیں آ سکتا ۔

ترکوں کے ساتھ ھندوستان کے مسلمانوں کی ھم دردی

اگر کوئی شخص ہارے دوست کی جان بچائے یا مصیبت کے وقت اس کے ساتھ ہم دردی کرے تو ہم کو اُس کا شکر کرنا لازم ہے یا نہیں ؟

سب سے بڑا سخت وقت ترکوں پر وہ تھا جب کہ ۱۸۵۵ میں روس نے ترکوں سے لڑائی شروع کی جو جنگ کریمیا کے نام سے مشہور ہے۔ آس وقت دو سلطنتوں یعنی انگستان اور فرانس نے ترکوں کے ساتھ هم دردی کی اور فوج سے ، روپیہ سے ترکوں کی مدد کی ، اور کوئی شخص اس سے انگار نہیں کر سکتا ۔ کہ اگر انگستان اور فرانس آس زمانہ میں ترکوں کی مدد نہ کرتے تو سلطنت ٹرکی کا یقینی خاتمہ هو جاتا ۔ بس اب سوال یہ ہے کہ اگر هندوستان نے مسلمانوں کو ترکوں کے ساتھ هم دردی ہے تو کریمیا جنگ کے نمج هونے کے بعد کس وجہ سے مسلمانوں نے گور نمنظ انگریزی اور کور تمنظ فرانس کا شکریہ ادا نہیں کیا اور آن کے لیے مساجد اور معابد میں کیوں نہیں دعا کی اور کیوں پیغام تار برق شکریہ کے یا ایڈریس شکر گذاری کے انحش اور فرخ گورنمنظ کے بات شکریہ کے یا ایڈریس شکر گذاری کے انحش اور فرخ گورنمنظ کے پاس نہیں بھیجے ۔

ایک انگریز کا قول ہے کہ ھندوستان کے مسلمان برڑے احسان فراموش ھیں۔ کہ جس زمانہ میں انگریزوں نے جان و مال سے ترکوں کی مدد کی تھی۔ اسی کے قریب یعنی ۱۸۵2ء میں

آنھوں نے ھندوستان میں انگریزوں کے مقابلہ میں غدر کیا۔ اگر درحقیقت ان کو ترکوں کے ساتھ ھم دردی ھوتی۔ تو آس بہت بڑے احسان کو جو انگریزوں نے ترکوں کے ساتھ کیا تھا ھرگز فراموش نه کرتے اور انگریزوں اور انگریزوں کی حکومت کے مقابله میں بغاوت نه کرتے۔

هم تو اس قول کو تسلیم نہیں کرتے ۔ اس لیے که هارے نزدیک ۱۸۵ء میں انگریزوں کے ساتھ کسی کے دل میں بغاوت کرنے کا ارادہ نہیں تھا ۔ بلکه بقول ایک مؤرخ مسٹر '' کے '' کے وہ بغاوت نہیں تھی ۔ صرف ایک سیبائی وار تھی اور جو فسادات که آس زمانه میں هوئے وہ بد عملی هو جانے کے سبب سے هوئے ۔ نه اس وجه سے که رعایا دو انگریزوں کے مقابل میں بغاوت کرنی مقصود تھی ۔ مگر هاں اس کا کچھ جواب نہیں ہے که اس وقت کیوں نه هندوستان کے مسلمانوں نے گور تمنٹ انگستان اور گور تمنٹ فرانس کا شکریه ادا نہیں کیا ۔

پھر ۱۸۷۶ء میں دوبارہ ترکوں اور روسیوں کے درسیان لڑائی ہوئی ۔ جس میں عثمان پاشا غازی کی بھادری کے کرنامے هندوستان کی هر ایک گلی اور کوجے میں مشہور تھے ۔ مگر د بختی سے ترکوں کو شکست هوئی ۔

اور ۱۸۷۸ء میں روسی پلونا اور درۂ شبکا کو فتح کرتے ہوئے قسطنطنیہ کی دیواروں تک جا پہنچے آس وقت نرکوں کی سلطنت کے نیست و نابود ہو جانے میں کچھ باقی نہیں رہا تھا ۔ مگر گورنمنٹ انگریزی آن کی حایت کو آٹھی اور اپنے جنگی جہاز قسطنطنیہ کے سمندر میں بھیج دیے اور روس سے کہا کہ بس آگے قدم نہ بڑھائیں اور صرف انگلستان کے بیچ میں پڑنے سے برلن کا عہد نامہ تحریر ہوا اور سلطنت ٹرکی جیسے کہ اس زمانہ میں ہے باقی رہی ۔ اگر

انگلستان ترکوں کی مدد نه کرتا تو ترکوں کی سلطنت کا باقی رہنا عال تھا ۔ محال تھا ۔

پس اب سوال یہ ہے کہ ایسی ہم دردی کے موقع پر جو انگلستان کی طرف سے ترکوں کی نسبت ظاہر ہوئی ۔ ہندوستان کے مسلمانوں نے آس کا شکریہ کیوں نہیں ادا کیا ۔

ادهم پاشا نے یونانیوں کی حال کی لڑائی میں اس سے زبادہ بہادری اور دلاوری نہیں دکھائی ۔ جس قدر که عثان پاشا نے پلونا میں دکھائی تھی ۔ پس کس وجه سے هندوستان کے مسلمانوں نے ادهم پاشا کا بہت شکر کیا اور عثان پاشا کی نسبت کچھ نہیں کیا ۔ هارے پاس اس کا کچھ جواب نہیں ہے ۔ هارے نزدیک جو کچھ اس وقت مسلمانوں نے کیا وہ صرف آن کی خفیف الحرکتی تھی اور ایک کے دیکھا دیکھی اوروں نے بھی ویسا هی کیا جو آنھوں نے کیا تھا ۔

جو لوگ اس بات کا خیال کرتے ہیں۔ که مسلمانوں نے جو یونان کی فتح پر اس قدر خوشی منائی وہ کسی پولیڈکل امر پر مبنی تھی۔ ھارے نزدیک صحیح نہیں ہے اور بجز خفیف الحرکتی کے اور کوئی امر نہیں ہے۔ سلطان کو خلیفه ماننا اس سے زیادہ کچھ نہیں ہے۔ جس طرح که بنی امیه اور بنی عباس کو خلیفه کہا جاتا ہے کوئی مسلمان ایسا نہیں ہے جو سلطان ٹرکی کے احکام کو مثل احکام پوپ کے واجب التعمیل سمجھتا ہو یا مثل احکام خلفائے راشدین رضی اللہ عنہم اجمعین کے جانتا ہو۔ پس کسی طرح پر خیال نہیں ہو سکتا کہ آن کا خوشی منانا اور مبارک بادی کے تار بھیجنا کسی پولیٹکل امر پر مبنی ہو۔ گو کہ ھارے نزدیک ان کا ایسا کرنا بھی بلا اجازت گور نمنٹ کے جس کے وہ رعیت ہیں ہرگز مناسب کرنا بھی بلا اجازت گور نمنٹ کے جس کے وہ رعیت ہیں ہرگز مناسب

اس وقت سلطان نے تھسلی کو اپنی سلطنت میں شامل کرنے کے معاملہ میں ۔ تمام یورپ کی سلطنتوں کی رائے کو نہیں مانا ۔ هم بھی نہیں چاہتے کہ سلطان تھسلی سے اپنا قبضہ آٹھا لے۔ مگر معاوم نہیںکہ اس انکارکا نتیجہ کیا ہوگا اورکون سلطنتیں سلطان کی دوست اور کون سلطنتیں اس کی مخالف ہو جائیں گی۔ یا کوئی متوسط امر سب سلطنتوں کی صلاح سے قرار پائے کے ۔ لیکن یہ باتیں پولیٹکل معاملات سے علاقہ رکھتی ہیں ۔ ان کو مذہبی لباس پہنانا همارے نزدیک بالکل نا واجب ہے کیوں کہ ہر ایک سلطنت اپنی پولیٹکل مصلحت کو قائم رکھنا چاہتی ہے ۔ خواہ وہ مصلحت ترکوں کے مقابلہ میں ہو۔خواہ روس . جرمنی اور اٹلی کے مقابلہ میں اور کبھی کوئی سلطنت اپنی پولیٹکل مصلحت کو فرو گزاشت نہس کرتی ۔ ہاں جو سلطنتیں کہ ضعیف ہیں ان کی پولیٹکل مصلحت سی ہوتی ہے کہ جو سلطنت قوی ہے اُس کی رائے کو تسلیم کربی ۔ کیوںکہ اس میں وہ اپنی بھلائی تصورکرتی ہیں اور قوسی سلطنت سے . قابله کرنا نہیں چاهتیں ـ اس زمانه میں تمام معرکه آرائیاں اسی بنا پر هوتی هیں نه کسی مذهبی بنا ہر ـ

سلطان روم

دهي

ھندوستان کے مقدسوں کے نزدیک بحکم حدیت من تشبہ۔ مبدی بقوم فیموم۔نہم کافر نکائے

(تهذیب الاخلاق ، جلد ے نمبر ۱، بابت یکم شوال ۱۲۹۳ ه صفحه س

اب تو مسلانوں کا کمیں ٹھکانہ نہیں رھا۔ نئے سلطان عبدالحمید خاں خلد اللہ ملکم بھی من تشبہ کی لپیٹ میں آھی گئے ۔ بے چارے مسلانوں بر کیسی مشکل آن بنی ہے ۔ آج عید کا دن ہے ۔ مکه معظمه اور مدینه منورہ کے مقدس منبروں پر کس کا خطبه بڑھیں ؟ کیا سلطان عبدالحمید خاں کا ؟ (جس کو خدا بہت سی عیدیں نصیب کرے) وہ تو سن تشبہ بقوم کی جھپیٹ میں آگیا اور نعوذ باللہ کافر ہوگیا ۔

مدراس کا شمس الا خبار ، مطبوعه ۲۹ شعبان ۲۹۸ هجری لکهنا هے که سلطان عبدالحمید خاں کو ۱۸۹۵ میں آن کے باپ (چچا) ہیرس (دارالخلافه فرانس) میں واسطے دکھلانے نمائش گاہ کے لائے ۔ معلوم ہوتا ہے کہ آس نمائش گاہ نے عبدالحمید خاں کی آنکھیں کھول دیں ۔ آن کو کہال شوق فرانس کی زبان سے پیدا ہوا

اور آنهوں نے وہ زبان سیکھی اور آن کو یورپین قواعد اور لباس بھی نہایت پسند ھوا ۔ لہٰذا آس زبانہ سے اور اب تک آن کا ویسا ھی برتاؤ ھے ۔ یعنی یورپین پوشاک پہنتے ھیں اور یورپین قاعدوں کا برتاؤ کرتے ھیں ۔ ۔ ۔ ۔ اور اشیاء منشی سے آن کو کچھ شوق نہیں (جو ھارے نزدیک ایک معزز تمغه مسلمانوں کا ھے) ۔ ۔ ۔ ۔ آن کی بیبی بھی ایک ھی ھے جس کے ساتھ یہ عمدگی سے اپنی زندگی بسر کرتے ھیں (جو ھارے نزدیک ٹھیک ٹھیک سچا مسئلہ ٹھیٹ اسلام کا ھے) کیا دارالاسلام کے شیخ الاسلام بھی کافر ھوگئے ھیں اسلام کا ھے) کیا دارالاسلام کے شیخ الاسلام بھی کافر ھوگئے ھیں جو کالا بوٹ اور بٹن لگی پتلون اور انگریزی یا فرانسیسی کوٹ اور لال پھندنے دار ٹوپی پہننے والے میز کرسی پر بیٹھنے والے ۔ چھری کائٹے سے کھانے والے کو امیرالمومنین اور سلطان حرسین شریفین کائٹے سے کھانے والے کو امیرالمومنین اور سلطان حرسین شریفین کائٹے سے کھانے والوں کا خطبہ پڑھایا جاتا ھے ؟ خدا ھمچنیں کند ۔ پر کفر از کعبہ بر خیزد کجا مانند مسلمانی ۔ فاعـتـبـروا یـا اولی الابـصار !!!

تركى كاشيخ الاسلام

(تهذیب الاخلاق ، جلد هفتم بابت شعبان ۱۲۹۳ه)

شیخ الاسلام کا عہدہ سلطنت ٹرکی میں در حقیقت ایک بہت بڑا معزز عہدہ ہے ۔ شیخ الاسلام به حیثیت اپنے عہدہ کے اُس کونسل خاص کا ممبر بھی ہے جس کا پریسیڈنٹ وزیر اعظم ٹرکی ہوتا ہے اور جس کو مجلس باب العالی کہتے ہیں ۔

یه عہدہ همیشه ایسے شخص کو دیا جاتا ہے جو بہت بڑا عالم اور حنفی مذهب هو اور مسائل فقہه حنفی سے به خوبی واقفیت رکھتا هو اُس کو کوئی ایسا حق یا اختیار نہیں ہے کہ کوئی جدید حکم مثل حکم شرع کے جاری کر سکے یا اُن حکموں میں سے جو شرع میں هیں کوئی حکم منسوخ یا ترمیم کر سکے بلکه اس کا کام صرف میں هیں کوئی حکم منسوخ یا ترمیم کر سکے بلکه اس کا کام صرف یہ ہے کہ جو واقعات پیش آویں اُن کی نسبت بتا دے کہ فقہه حنفی کا حکم کیا ہے یا جن احکام کا اجراء منظور هو اُن کی نسبت بتا دے کہ فقہه کے مطابق هیں یا نہیں اگرچہ اُس کو پہلے تو بہت بتا دے کہ فقہه کے مطابق هیں یا نہیں اگرچہ اُس کو پہلے تو بہت زیادہ اختیار تھا مگر اب بھی کسی قدر اختیار رکھتا ہے کہ جن احکام کو خلاف شرع سمجھے اُن کے عدم اجراء میں بحث و کوشش کر ہے۔

ان اسباب سے شیخ الاسلام کو گویا تمام امور کلی و جزوی سلطنت میں ایک گونه مداخلت هو جاتی ہے مثلاً جب وزیروں نے سلطان عبد العزیز یا سلطان مراد کا معزول کرنا مناسب سمجھا تو

آس میں شیخ الاسلام کا اتفاق ضرور تھا اور آس سے ایک فتوی لیا گیا که سلطان عبد العزیز یا سلطان مراد لائق بادشاهت نہیں رھا آس کا عزل کرنا احکام شریعت کے موافق درست ہے جب دوسرا بادشاه آس کی جگه قائم کیا گیا تو شیخ الاسلام سے آس کا استحقاف بادشاهت تسلیم کرانا ہوا۔

جو که مسلمانوں نے یه ٹهہرا رکھا ہے که عقائد مذھبی اور سعاسلات دنیوی اور انتظامات ملکی سب کا تقلیداً بموجب فقہه حنی کے ھونا چاھیے (جو نا واجب تقلید اصلی باعث آن تمام خرابیوں کا ہے جو سلطنت اسلامیه میں پائی جاتی ھیں) اس سبب سے ھر ایک امر متعلق انتظام سلطنت میں شیخ الاسلام کو مداخلت ہے ۔ زمین پر مال کداری مقرر کرنے ۔ ٹیکس یا جزبه لگانے ، تجارتی احکام جاری کرنے ، ملکی قانون جاری کرنے ، عدالتوں کے تقرر کرنے ، عدالتوں کی کارروائی کے ضوابط مقرر کرنے ، انفصلل حقوق کے اصول میں ۔ جنگی معاملات میں ، غیر سلطنتوں سے صلح نامه کرنے میں ، فوج کے آراسته کرنے میں ، یہاں تک که فوج کی وردی و هتھیار فوج کے آراسته کرنے میں ، یہاں تک که فوج کی وردی و هتھیار اور قواعد کے طریقه میں بھی آس کو مداخلت ھوتی تھی ۔

مسلانوں کا کو وہ کسی ملک کے هوں یه خیال نہیں ہے که شیخ الاسلام کی روح میں کوئی ایسی بات ہے جس کا حکم ماننا ضرور ہے جیسے که رومن کیتھلک عیسائیوں کا پوپ کی نسبت خیال ہے بلکه وہ اُس کے حکم کو اُس خیال سے واجب التعمیل سمجیتے هیں که وہ نقمه حنفی کا سب سے بڑا عالم تسلیم کیا جاتا ہے اور جو وہ حکم دیتا ہے سمجھا جاتا ہے کہ بے شک وہ فقمه و شریعت کے مطابق ہے جس کی پہروی مسلان مذهباً ضرور سمجھتے هیں۔

اگلے زمانہ میں جب کہ ترکوں میں جہالت اور نا تہذیبی زیادہ تھی اُس وقت تک شیخ الاسلام کو ان تمام ہاتوں میں پوپ

کی مانند بہت بڑا کامل اختیار تھا مگر رفته رفته بہت سی باتوں میں کم هوتا گیا اور سلطان محمود کے وقت سے اس کے اختیاروں میں بہت کمی هو گئی اب تو شیخ الاسلام صرف شیر کی کھال رہ گئے هیں جو باتیں بطور فتویل شریعت لوگوں میں مشہور کرنی هوتی هیں جیسے حال میں اشتہار جہاد یا اعلام نامه عدم زیادتی نسبت عیسائیان مشتهر کیا گیا هے وہ شیخ الاسلام کی معرفت هوتا هے عدالتوں میں ابھی اس کو مداخلت ہے گو پہلے کی نسبت کسی قدر کم هو۔

ایک زمانه وه تها که شیخ الاسلام کا تبدیل کرنا ترکوں کے لیر کچھ آسان کام نہ تھا وہ جھٹ ساطان کے کافر یا عیسائی ہوجانے کا فتویل دے دیتا تھا اور لوگوں میں بغاوت بھیلانی شروع کر دیتا تھا مگر دیکھو کہ اب کس قدر زمانہ بدل گیا ہے کہ ہم دو شنبہ کی تار برقی سے پاتے هیں که شیخ الاسلام مثل ایک نوکر کے موقوف کر دیا گیا اور دوسرا شیخ الاسلام آس کی جگه مقرر هوگیا۔ ھارے یورپین ھم عصر مسلمانی مذھب کے اصولوں سے بخوبی واقفیت نہیں رکھتر اس لیر وہ شیخ الاسلام کی نسبت سعلوم نہیں کیا خیالات رکھتر میں۔ پایونس لکھتا ہے کہ '' تھوڑا عرصہ موا کہ مم نے اشتهار جهاد کی نسبت ساحثه کیا تها یه اشتهار آس شیخ الاسلام نے مشتہر کیا تھا جواب آس معزز عہدے سے موقوف ہو گیا ہے اور ھم نے بھروسہ کرکے اس امرکا یقین کرایا تھا کہ برٹش انڈیا کے مسلمانوں کے دلوں پر اس فتوی جہاد سے کچھ اثر نہ ہوگا گو آن لوگوں کی ہمدردی ترکوں کے واسطے کیسی ہی کیوں نہ ہو على هذا القياس شيخ الاسلام كي برطرفي ايك ايسى بات هم جسكا اثر قسطنطنیه پر هو مگر قیصر هند کی مسلمان رعایا پر شمه بهر بهی آس کا کجھ اثر نه هوگا ۔''

هم بیان کرنا چاهتے هیں که شیخ الاسلام مسلمانی مذهب کے

مطابق کوئی چیز نہیں ہے۔ کوئی شخص خواہ نخواہ اُس کا حکم ماننے یہ محبور نہیں ہے جو شخص کہ اس کا حکم نہ مانے اس کے ایمان میں اس کے مذهب میں کسی قسم کا نقصان نہیں آ سکتا ند کوئی گناہ اس پر هوتا ہے ۔ یه عہدہ کوئی مذهبی عہدہ نہیں ہے جیسر که یوپ کا عہدہ خیال کیا جاتا ہے۔ ہر شخص کو آزادی ہے کہ شیخ الاسلام کے احکام پر غور کرے آئر آس کے نزدیک وہ حکم غلط ہو آس کو رد کر دمے ۔ ہندوستاں کے مسلانوں کو قسطنطنمه کے شیخ الاسلام سے کچھ تعلق نہیں ہے۔ نه کوئی اُس کا حکم اُن پر واجب التعمیل ہے۔ هندوستان کے مسلمانوں کی حالت ٹرکی کے مسلمانوں کی حالت سے از روئے احکام مذھب اسلام کے بالکل مختلف ھے ھندو۔تنان کے مسلمان گورنمنٹ انگریزی کی رعایا ہس اور اُس کے اسن میں رہتے ہیں۔ برخلاف اس کے ٹرکی کے مسلمان ایسر نہیں ہیں اور یہی وجہ ہے کہ دونوں کے لیر احکام سذھبی مختلف ہیں۔ شیخ الاسلام کا کوئی حکم هندوستان کے مسلمانوں سے مذهباً متعلق نہیں ہو سکتا ۔ ہندوستان کے مسلمانوں کا مذہباً یہ فرض ہے کہ اپنر بادشاہ کی جس کی وہ رعیت ھیں اور جس کے اس میں مذھبی آزادی سے وہ بسر کرتے ہیں ہمیشہ اُس کے تابع رہیں گو وہ ترکوں کے ساتھ کیسی ہی ہمدردی رکھتے ہوں اور گو ٹرکی میں اور خود قسطنطنیہ میں کچھ ہی ہوا کرے ۔ فرض کرو کہ اگر خود انگش گورنمنٹ مجائے روس کے ہوتی اور تدرکوں کا سلک بظلم چھین لینا چاہتی اور گو اس بات سے کیسا ہی ریخ و غم اور غصہ اور آزردگی هندوستان کے مسلمانوں کو هوتی اس پر بھی مذهب کی رو سے ہندوستان کے مسلمانوں کو ہندوستان میں جہاں آن کو امن اور سذھبی آزادی ہے بجز انگریزی گـورنمنٹ کی اطاعت کے اور کچھ چارہ نہیں پس هم اپنر یوروپین دوستوں کو بتانا چاهتر هیں که

ئرکی میں کچھ ھی انقلاب ھوا کریں اور کچھ ھی احکام جاری ھوا کریں آن کا اثر ھندوستان میں سذھب کی رو سے کچھ نہیں ھو سکتا مگر اس میں کچھ شبہ نہیں کہ جو امور خلاف مراد ٹرکی ھوتے ھیں آن سے ھندوستان کے مسلمانوں کو از حد رہنج و غم و غصہ ھوتا ھے ۔ مخالفان ٹرکی سے از حد ناراض ھوتے ھیں ۔ ھارے نزدیک یہ بات کہ مسلمان سلطان کو ایک مذھبی پیشوا سمجھتے ھیں اور اس لیے آس کی ھمدردی کرتے ھیں ایک لغو و سہمل بات ھے بلکہ یہ ھمدردی ایک قدرتی طبعی بات ھے اور تعلیم سے اور اخبارات سے اور سنر کی آسانی سے جو اس زمانہ میں حاصل ھے اور جس کے سبب سے سلطنت ٹرکی میں ھندوستان کے مسلمانوں کی آمد و رفت بہت زیادہ ھو گئی ھے ۔

ٹرکی کی حالت

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ، ۲۲ دسمبر ۱۸۵۹ء)

سلطان عبدالعزیز خال کے تخت ہے معزول ہونے کے افسوس میں صرف ہم تنہا نہیں ہیں بلکہ اور بھی بہت سے ارباب دانش اس باب میں ہارے ہم صفیر ہیں اور اس باب میں ہم سے اتفاق کرتے ہیں کہ بلا شبہ ٹرک کے کونسلی وزیروں کی یہ حرکت کچھ دانش مندی کی حرکت نه تھی که انھوں نے سلطان عبدالعزیز کو تخت سے اتا دیا ۔ خصوصاً شاہ ایران بہت زیادہ اس افسوس میں مبتلا ہیں کہ سلطان عبدالعزبز خال ایسا لائق بادشاہ اس طرح ضائع کیا گیا ۔

هم نے یه رائے بطور پیشین گوئی بیان کی تھی که سلطان پد مراد کا تخت ٹرکی پر قرار پکڑنا ذرا دشوار بات ہے۔ چناں چه هاری آسی پیشین آلوئی کے موافق مجد مراد خال اب پھر اپنے قدیمی منصب پر چلے گئے اور بجائے آن کے عبدالحمید خال تخت نشین هوئے۔ پس هم وزرائے تخت ٹرکی سے پوچھتے هیں که کیا در حقیقت یه لڑکوں کا سا کھیل کچھ شو کت سلطنت میں مخل نہیں ہے اور کیا سلطان عبدالعزیز خال میں اس قدر لیاقت بھی نه تھی جس قدر که سلطان عبدالحمید خال بہادر میں ہے۔ کیا عبدالعزیز خال کی انتظامی رائے کو اس قدر قوت نه تھی جس قدر که اب عبدالحمید خال کی رائے کو قوت ہے۔ کیا سلطان عبدالحمید خال کی اور روپیه کی نگمہداشت کا ملکه اس وقت ایسا ہے جیسا که اور روپیه کی نگمہداشت کا ملکه اس وقت ایسا ہے جیسا که

عبدالعزیز خاں میں اتنی مدت کی سلطنت کے بعد بھی نه هوا تھا کیا سلطان عبدالعزیز خاں سلطان عبدالحمید خال کے برابر تجربه کار نه تهر اور آن کا رعب سلطنت سی اس قدر نه تها حس قدر که اب عبدالحمید خاں کا ہے اور اگر وزرائے ٹرکی کو سلطان عبدالحمید خاں کی ذات سے گو اس وقت کچھ نفع نہیں ہے بلکہ آئندہ کچھ آمید مے تو هم آن کے انصاف سے پوچھتر هس که تمھارے نزدیک کیا سلطان عبدالعزیز خاں کی حالت آئندہ اصلاح کے لائق نه رهی تھی اور تم کو آن سے اس قدر فلاح کی بھی آمید نه تھی جس قدر که اب عبدالحمید خاں کی حالت سے امید ہے ہم کو بہت افسوس ہے (مگر اب ہارا افسوس بے سود ہے) کہ تخت ٹرکی سلطان عبدالعزیز خال کے می حانے سے بالکل خراب ہوگیا اور معاملات ایسر ضعیف ہوگئر کہ اب آن کو اپنی اصلی حالت پر آنا بہت دشوار کام ہوگیا ۔گو اس وقت ہم سن رہے ہیں کہ ٹرکی کے مهادر سیاہی سرویہ کے مقابلر میں اپنی جان لڑا رہے ہیں اور سرویہ کو نہایت تشویش پیش ہے اور شاہزادہ سرویہ صلح کی فکر میں ہے مگر کیا یہ سب امور اس وقت کچھ اطمینان دلا سکتے میں جب تک ٹرکی کے تمام معاملات اور سلطنتوں سے صاف نہ ہو جاویں اور کیا صرف اسی بات سے ٹرکی کو خوش ہونا چاہیر کہ اُس نے سرویہ کو عاجز کر دیا ہے۔ هم کو اندیشه هے که کمیں ٹرکی کی یه ملکی لڑائی مذهبی نه ھو جاوے اور اس جنگ کا نام جہاد نه ھو جاوے اور اس میں ذرا شمه نہیں ہے کہ حب وہ وقت ہوگا تو ٹرکی کو اس سے زیادہ اندیشه هوگا ـ

شاہزادہ کارٹسچیکاف کا یہ کلمہ کہ جب تک مسلمانوں کا مایۂ افتخار یعنی ٹرکی کی قوت نہ گھٹے گی اس وقت تک مسلمانوں کا زور نہ گھٹے گا اور ہمب روم کا گرجاؤں میں یہ دعا مانگنا کہ او

خدا ! دنیا سے مسلمان غارت ہو جاویں اور مذھبی چندہ کا بعض عیسائی قوموں میں پھیلنا ھرگز اس بات کا یقین نہیں دلاتا کہ ٹرک کا معامله صرف سرویه پر ختم هو جاوے بلکه هاری رائے یه هے که سلطان عبدالعزیز خاں اس ہنگاسہ کے قلعہ کے واسطر کویا کلید باب تھا اور آس کی موت نے اس ہنگامہ کے قلعہ کو کھول دیا۔ اب اس کا بند کرنا ہت ھی دشوار بات ھے۔ روس کے خالی اراد ہے اس کو اس بات پر آمادہ نہ کر سکتے تھے کہ وہ ٹرکی سے کچھ بول سکے اور بلاشبہ روس پہلو کو ڈھونڈتا تھا کہ کسی طرح چھیڑ ھو جاوے مگر سلطان عبدالعزیز خاں اپنی لیاقت سے ان تمام ملوؤں کو دبائے ہوئے تھا۔ اب وہ می گیا اور آس کو مہلو مل گیا ـ پس گو اس وقت خاص روسی سلطنت نه لڑتی هو سگر اس میں ذرا شبہ نہیں ہے کہ ٹرکی سے روس کی بنددوقیں اور روس کی توپس اور روس کے افسر اور روس کا کوله بارود ضرور لڑ رھا ھے اور وه آئنده اس بات کے لیے آماده ہے که آئنده وه کهلم کهلا مرد سیدان بن کر آئے اور ٹرکی سے صف آرا ہوجائے۔ ہارہے زمانہ کے عاقل اس بات کو نہیں سمجھتے کہ ابھی سے بہت سے اخبار نویس ٹرکیوں کے ظلم کی شکایتیں کر رہے ہیں اور وہ یہ کہہ رہے هیں که اب ترکیوں کا ظلم اس لائق نہیں ہے که آس کو دیکھا جاوبے اور چشم پوشی کی جاوے ۔ مسٹر ڈسریلی صاحب ہادر پر اسی سبب سے طعن کی بوچھاڑ ہو رہی ہے کہ وہ اب تک ٹرکی کی جانب داری کیر جاتے ہیں اور ٹرکیوں کے ظلم کی نسبت ھاں میں ھاں نہیں ملاتے۔ پس کیا روس کی جنگ کے واسطر کسی اور حیلہ کی ضرورت ہوگی اور کیا آس کے مطلب کی تمہید کے واسطر کسی اور تیز فقرہ کی ضرورت ہے۔ کیا ڈرکیوں کے ظلم کی شکایت کا بعینہ وہ قصہ نہیں ہے کہ ایک بھیڑنے نے

بکری کو کشتی میں دیکھا اور جب آس کے کھانے کے واسطے اور کوئی حیلہ ھاتھ نہ آیا تو آس نے کہا کہ کیوں ناؤ میں خاک آڑاتی ھے ۔ بکری نے عرض کیا کہ حضور ناؤ میں خاک کہاں ھے۔ اگر کھانا ھے تو یوں ھی کھا لیجیے ۔ روس کی جانب سے سلطان عبدالعزیز خاں پر بد انتظامی کا الزام یوں ھی لگایا گیا اور اب ٹرکی انتظام کی طرف متوجہ ھوئی اور باغیوں کی سرکوبی کی فکر کی تو آس سے کہا جاتا ھے کہ ٹرکی ظلم کرتی ھے ۔ اب ایسی حالت میں انصاف کرنا چاھیے کہ ٹرکی کیسے خوف کی حالث میں حالت میں انصاف کرنا چاھیے کہ ٹرکی کیسے خوف کی حالث میں گیوں کی ھو سرویہ پر کے اور جب اس کو یہ خوف ھے تو اس کا خاتمہ صرف سرویہ پر کیوں کی ھو سکتا ھے ۔

ھم نے جو یہ بات کہی ہے کہ اگر ٹرکی کی جنگ مذھبی جنگ هو جاوے گی تو نہایت اندیشه هوگا اس کی وجه یه هے که اس حالت میں جو سلطنتیں ٹرکی کی طرف دار ہیں وہ طرف دار نہ رہیں گی اور ٹرکی اس تنہائی کی حالت میں صرف آن طالب علموں کے بھروسہ پر کچھ کام نہ کر سکے گی جنھوں نے شیخ الاسلام کے معزول کرنے کے واسطے لاٹھی ، پٹیاں اور سوئے اور پرانی بندوتیں بانده کر هنگامه کر دیا تها اور ایک شیخ الاسلام کو معزول کرکے فتح باب ہوگئے تھے ۔ اسی طرح ٹرکی کے آن ہنگامہ آرائیوں سیں وہ زر چندہ کافی نه هوگا جو بطور امداد عام مسلمانوں سے مانگا جاتا ہے اور اسی وجه سے هم اس بات میں لو گوں سے مخالف هیں کہ عام چندہ کی درخواستیں ٹرکی کی طرف سے سشہور کی جاویں اور اس سے ھارا یہ مقصود نہیں ہے کہ مسلمان ٹرکی کی مدد نہ کریں نہیں ضرور ھے کے مسلمان ٹرکی کی مدد کے ریں مگر بطور خود کریں اور اس مدد کی خواستگاری کے واسطر سلطنت ٹرکی کی استدعا نه سمجهیں ۔ وہ یہ نہ خیال کریں کہ سلطنت ٹرکی آن سے

کچھ مانگ رھی ہے اور وہ خود ایسے چندہ کی خواستگار ہے بلکه یوں سمجھیں کہ ٹرکی نہیں مانگتی مگر خود اس کی مدد کے واسطے تیار ھیں اور ھم خود اپنا فرض ادا کرتے ھیں اور اگر یہ کہا جاوے گا کہ خود ٹرکی مانگ رھی ہے تو سلطنت ٹرکی کا نہایت ضعف ثابت ھوگا اس لیے ھم کو یہ بات ظاھر کرنی ضرور ہے کہ جو استدعا چندہ کے باب میں اب تک کی گئی ہے وہ خاص ٹرکی کی نہیں ہے اور ٹرکی بحمد اللہ اب تک بڑی دھوم دھام سے ملکی لڑائی لڑ رھی ہے۔

ھاری مذکورہ بالا رائے کی تصدیق اس بات سے بھی ھوتی ھے کہ ٹرکی نے جو سخت شرطیں صلح کی سرویا سے کرنی چاہی ہیں ان شرطوں کو لارڈ ڈربی صاحب نے پسند نہیں کیا بلکہ ارخلاف اس کے ٹرک کو دھمکایا ہے کہ اگر ٹرکی اپنی صلح کی شرطوں کو نرم نه کرے گی تو هم ثری کو روس کے حواله کر دیں گے۔ وہ ٹرکی کو سمجھ لے گا ۔ پس کیا لارڈ ڈربی کی یہ دھمکی ٹرکی کے حق میں کچھ کم خوف ناک ہے اور ہم یہ نہیں کہتے کہ ٹرکی کی جانب سے جو شرطیں ظاہر کی گئی ہیں وہ سخت اور قابل تسلیم نہیں ہیں اور سرویا باوجود اپنی اُس بغاوت کے جو اُس نے ٹرکی سے کی آن رعایتوں کا مستحق ہے جو آس کے حق میں کی جاویں گی مگر جب هم کو آن مشکلات پر نظر هونی هے جس میں اس وقت ٹرکی مبتلا ہے تو البتہ لارڈ ڈربی صاحب کی یہ دھمکی بھی کچھ بے جا نہیں معلوم ہوتی اور کو ہم یہ بھی نہیں کہہ سکتے کہ اگر خدا نخواستہ گورنمنٹ انگریزی روم کا ساتھ چھوڑ دے گی تو **روم** کو کیا مشکلیں پیش آویں کی مگر اس میں شک نہیں ہے کہ ایسر وقت میں لارڈ ڈربی صاحب کا یہ مقولہ کہ هم اس کو روس کے سرد کر دیں گے ایک باری خاطر شکن بات ہے اور ہم کو یقین ہوتا ہے

کہ ٹرکی کو بجز اس کے کچھ چارہ نہ ہوگا کہ وہ لارڈ ڈربی صاحب کے دباؤ کو تسلیم کر لے ۔

ٹرکی نے جو شرطیں تجویز کی ہیں منجملہ ان کے ایک یہ ہے کہ سرویا مصارف جنگ ادا کرے اور به حسب ظاهر یه شرط ہے جا نہیں معلوم ہوتی کیوں کہ جس حالت میں وہی بانی جنگ ہوئے تھر تو اب اس کو مصارف جنگ کے ادا کرنے میں کیوں کر عذر هو سكتا هے ـ خصوصاً اس حالت مين كه سرويه كوئي مستقل سلطنت نہیں ھے ۔ حالاں کہ مصارف حنگہ ادا کرنے کی نظیر فرانس اور پرشیا کی جنگ میں ثابت بھی ہو چکی ہے۔ دوسری شرط ٹرکی کی یہ ہے کہ وہ تمام حدود سرویہ میں ریل جاری کرمے اور ظاہراً یہ شرط بھی اس لحاظ سے کچھ بے جا نہیں ہے کہ سرویا ٹرکی کا ماتحت ملک ہے ۔ سرویا کوئی اجنبی اور علیحدہ سلطنت نہیں ہے جس میں ٹرکی کو کسی نوع کا استحتاق حاصل نه هو۔ تیسری شرط شاید یہ ہے کہ سرویا ابنر تمام عمدہ اور مستحکم قلعر ٹرکی کے حوالر کر دے اور چھوٹے چھوٹے قلعر مسار کرا دے پس شاید ٹرکی کی یہ شرط زیادہ سخت معلوم ہوئی ہوگی اور اسی وجہ سے لارڈڈ ربی نے کہا ہوکا کہ ہم ٹرکی کو روس کے حوالر کر دیں گے مگر هم بهس كمه سكتر كه ثرى اس كاكيا جواب ديتي هے ـ البته به حسب ظاهر ٹرکی کو ست سی ایسی مصلحتیں در پیش هیں کہ وہ لارڈ ڈربی صاحب کی رائے کی مخالفت نہیں کرمے گی اور اپنی مصلحت کو هاته سرنه دے گی۔

ملک عین

(تهذيب الاخلاق ، جلد هفتم بابت ماه شعبان مروم، ع)

ان دنوں میں تمام دنیا کے مسلمانوں میں روم اور روس کی لڑائی کا چرچا ہے۔ لڑائیاں تو آپس میں بادشاھوں کے ھوا ھی کرتی ھیں اور چرچا بھی آن لڑائیوں کا ھوا ھی کرتا ہے مگر جو رخخ و غم مسلمانوں کو ہے وہ روسیوں اور بلگیریا والوں کے آن ظلموں کا ہے جو آنھوں نے مسلمانوں پر کیے ھیں۔ سینکڑوں بے آناہ مسلمانوں کو پکڑ کر مار ڈالا اور نہایت بے رحمیوں سے مارا۔ بڈھوں اور عورتوں اور بچوں کو قتل کیا۔ جن عورتوں کی گود میں شیر خوار بچے تنہے آن کو بھی قتل کیا۔ اور آن شیر خوار بچوں کو زندہ آن ھی لاشوں میں ڈال دیا کہ رو روکر ، چلا چلا کر اور جانوروں کے پنچوں سے زخمی ھو کر سسک سک کر می کئے۔

یه واقعات اگرچه بے حد غم دلانے والے هیں مگر چنداں ربخ میں دالنے والے نہیں هیں۔ کیوں که ان سب کا آخری نتیجه موت تهی ۔ پس مرنے سے کیا ڈرنا هے ۔ وہ کسی نه کسی طرح آگئی ۔ تکلیف آٹها کر جان گئی یا آسانی سے جان نکل گئی ۔ مگر سب سے زیادہ رنج اور غصه اور غیرت اور کاهش طبع جو مسلمانوں کو هے وہ روسیوں کی اور بلگیریا والوں کی اس نالائق حرکت سے هے جو آنهوں نے کنواری لڑکیوں ۔ بیاهی عورتوں، بدهی یواؤں سے بطور ملک یمین کے کیا مقام پیما سے جو تار آیا هے بیواؤں سے بطور ملک یمین کے کیا مقام پیما سے جو تار آیا هے

آس میں لکھا ہے کہ ''ھر ایک سمت سے لوگ بھاگ بھاگ کر آن مقاسوں کو آتے ھیں جہاں پناہ ملنے کی توقع ھوتی ہے اور مرد اور عورت بلکہ چھوٹے چھوٹے بچوں کی قتل کی ایسی خبریں اپنے ساتھ لاتے ھیں جن کو سن کر کلیجہ پھٹ جاتا ہے۔ روسی سپاھی مسلمانوں کی جورؤں اور کنواری لڑکیوں کو پکڑ لیتے ھیں اور آن کو خراب کرتے ھیں۔ اس طرح پر سینکڑوں عورتیں خراب کی گئیں۔''

پس یه واقعه سب سے زیادہ مسلمانوں کو ریخ دیتا ہے اور تمام دنیا کے لوگ اس بچھلی حرکت کو نہایت وحشیانہ و نالائق حرکت خیال کرتے ھیں۔ آس وحشی انسان پر غور کرنا چاھیر جس نے ایسی عورت کو پکڑ لیا ہو جس کا بیٹا میدان میں مقتول بڑا ہے۔ اور جس کا خصم زخمی تڑپ رہا ہے ۔ اور وہ رو رہی ہے اور چلا ً رھی ہے اور یہ بچھاڑ کر آس کے ساتھ درخت کے نیچر یا اپنر تمبو کے تلر وہ وحشیانہ حرکت کرتا ہے جس کو بیان کرتے ہوئے شرم آتی ہے۔ کافر سے کافر کیوں نه هو۔ هم کو يقين ہے که وہ روسیوں اور بلگیریا والوں کی اس حرکت پر آن کو لعنت و نفرین كرتا هوكا كيسر سے كيسا هي مقدس مسلان هو وه بهي ان حركتوں کو اپنر بارے میں وحشیانہ حرکت سمجھتا ہوگا۔ ہم نے سنا ہے کہ کافروں نے بھی اس امر کو نا پسند کیا ہے اور چند عیسائی سلطنتوں نے ان ظلموں کی بابت روسیوں سے کیفیت طلب کی ہے۔ مگر ھمکو بڑا خوف ہے کہ کہیں '' نور الآفاق '' کے پچھلر پرچر میں جس میں ھارے شفیق مولوی مجد علی صاحب نے ھارے رساله تبرية الاسلام عن شين الامة و الغلام كا جواب لكها هي اور کہیں ھارہے مخدوم و سکرم سولوی علی نخش خان صاحب کے رسالے جن میں اُنھوں نے ایسی حرکات کو مذھب اسلام میں جائز

قرار دیا ہے۔ روسیوں کے ھاتھ نہ لگ گئے ھوں اور وہ آن کو اپنی جرأت کی دلیل میں پیش نہ کریں اور جواب دیں کہ یہ باتیں کچھ وحشیانہ پن کی نہیں ھیں جن لوگوں کے ساتھ ھم نے کیا ہے وہ اپنے مذھب کی رو سے اور اپنے خدا کے حکم کے بموجب دوسرے لوگوں کے ساتھ ایسی حرکتیں کرنی جائز سمجھتے ھیں اور نعوذ باللہ اپنے بزرگوں کی نسبت ان افعال کو منسوب کرتے ھیں۔ پھر ھم ان افعال میں کیوں مجرم ھیں ؟ ھاں عورتوں اور بچوں کے قتل کا گناہ ھم پر ھے مگر تصرف علی ملک الیمین کی نسبت جواب پوچھنا بجا ھے۔

هم کو نہایت افسوس اور رہخ ہے مسلمانوں کی ایسی جاهلانه باتوں پر جو اسلام کو ایسی بد باتوں سے داغدار کرتے ہیں اور جو باتی اسلام میں نہیں ھی صرف اپنی ھوائے نفسانی سے اُس میں داخل کرتے میں۔ حس هندوستان کے مسلمان کو هارمے مسئله حریت اساری میں شبه هو آس کو جناب مولوی مجد علی صاحب اور جناب مولوی علی مخش خاں صاحب کے رسالوں کو پڑینا ضرور نہیں ہے وہ سیدھا بلگیریا میں چلا حاوے اور حو زیادتیاں عورتوں اور کنواری لڑکیوں پر ہوتی ہیں آن کو دیکھر اور فیصلہ کرے که ایسی حرکتوں کا کسی مذهب میں بھی هونا جائز هو سکتا هے ؟ افسوس مے آن مسلمانوں پر جو ایسی باتی مذهب اسلام میں جائز بتاتے میں اور مذمب اسلام کو بدنام کرتے میں اور اس سے بھی زیادہ افسوس ہے مسلمانوں کی اس حالت پر کہ ایسوں کو تو مقدس مسلمان تصور کرتے ہیں اور جو کوئی مذہب اسلام کو ان نجس باتوں سے پاک بتاوے اور ثابت کرے کہ یہ خدا کا حکم نہیں ہے اور نه مذهب اسلام میں جائز ہے بلکه مذهب اسلام اس اس عیب سے یاک ہے۔ اُس کو کافر و ملحد و کرسٹان و نیجریه بتاتے ہیں۔ وسیلمون من ہو اشد ظلماً و کفراً۔

روس اور ترک

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ، ۲۲ دسمبر ۱۸۷۹ء)

اخبار ڈیلی نیوز مطبوعہ ۲۸ نومبر کی تحریر سے جو بے حوالہ اخبار ماسکو گزف ہے ہم کو اس بات کے کہنے کی جرأت ہوتی ہے کہ روس اور ترک کے مابین هنگامه هوئے بغیر نہیں رهتا ۔ کیوں که کریمیا کے تاتاریوں نے وہ تمام هتھیار خرید لیے هیں جو مقام سمسر پور میں فروخت ہوتے تھے اور کوہ قاف کے مسلمانوں کی طبیعتیں بھی بدلی ہوئی هیں اور گو سر دست وہ کچھ نہیں کہتے بالکل ساکت هیں مگر ان کا سکوت فتنه انگیز معلوم ہوتا ہے اور بالکل سے مسلمان برابر ٹرکی کو چلے جاتے هیں ۔

روسیوں کو بھی ان امور کی طرف توجہ ہے اور جا بجا قلعہ بندی اور سامان جنگ فراھم ھو رھا ہے اور تمام آثار لڑائی کے نظر آتے ھیں ۔ انگلستان نے بھی ھر طرح اپنا استحکام کر لیا ہے وہ بلا عذر لڑائی پر تیار ہے ۔ ترکوں نے بھی بڑی کوشش و سعی کے ساتھ تمام کارخانوں کو حکم دے دیا ہے کہ بڑی تیزی کے ساتھ بجائے پانچ لاکھ روزانہ کارتوس تیار کیے جاویں ۔ پس اس لحاظ سے اگر ھم یہ بات کہیں کہ ٹرکی اور روس جاویں ۔ پس اس لحاظ سے اگر ھم یہ بات کہیں کہ ٹرکی اور روس کے باھم لڑائی کا نہایت قوی گان ہے تو کچھ غلط نہیں ہے ۔ بلا شبہ جو ھوا اس وقت چل رھی ہے اور جس قدر روس اور ترک کے بلا شبہ جو ھوا اس وقت چل رھی ہے اور جس قدر روس اور ترک کے دلوں میں بخارات جمع ھو رہے ھیں وہ ضرور موت کے بادل لاویں گے اور تمام یورپ میں نہایت سخت مصیبت کا مینہ خون کی دھاروں اور تمام یورپ میں نہایت سخت مصیبت کا مینہ خون کی دھاروں

میں برساویں کے روس کی طبیعت بھی ھرگز ایسی نہیں معلوم ھوتی کہ آس کی کاوش بغیر زبردستی کے کم ھو جاوے اور وہ ھرگز ایسا رحم دل نہیں ہے کہ خدا کے بندوں کا مفت خون بہانے سے ڈر جاوے یا اپنے بزرگوں کے مرتب کیے ھوئے وصیت نامه کو یوں ھی کاغذ میں لپٹا ھوا رکھ چھوڑے اور اس پر عمل کرنے سے پست ھمتی ظاھر کرے۔

ترک بھی ھرگز روس کی دھمکیوں کو نہیں مانیں گے اور وہ اپنے سچے دین کے اس مسئلہ پر فان یکن سنکم ساۃ صابرۃ یخلبوا سأتین و ان یکن سنکم الف یغلبوا الفین باذن الله دلی یقین کے ساتھ عمل کریں گے اور وہ روس کو ایسا ھی متین جواب دیں گے جیسا کہ روس کا مستحکم ارادہ ہے اور اس میں شبہ نہیں ہے کہ روس بھی بغیر اس برتاؤ کے جو اس کے ساتھ قلعہ سپاسٹسپول پر کیا گیا ھر گز اپنے ارادوں سے باز نہ اوے گا۔

یورپ کے سلاطین بھی اپنے برتاؤ سے گویا یہ ثابت کر رہے ھیں کہ ان کو بھی لڑائی کا دیکھنا منظور ہے شہزادہ بسارک بھی اپنے کو سب سے علیحدہ بیان کرتا ہے اور ظاہراً کسی کا شریک نہیں ہے مگر ایسے زمانہ میں ایک ایسی بڑی ہولناک جنگ کی نسبت اپنی علیحدگی ظاہر کرنا اور اس کے دفعیہ کی نسبت تدبیر نہ کرنا اس بات کو غلط ثابت کرتا ہے کہ شہزادہ بسارک علیحدہ رہے بلکہ ضرور شہزادہ موصوف وقت کا منتظر معلوم ہوتا ہے کیوں کہ کسی ایک شخص کو اس بات کا یقین نہیں ہے کہ روس کور ترکی کی جنگ انھیں دو سلطنتوں پر منحصر رہے گی بلکہ یقیناً اس کا کم و بیش اثر تمام یورپ میں پہنچے گا اور آخرکار اس کا نتیجہ خایت ھی ھولناک ہوگا۔

هم کو بہت افسوس ہے کہ اس بے جا خون ریزی کو جس کا باعث روس ہے یورپ کے تمام سلاطین خلاف امن کیوں نہیں سمجھتے اور جو خلل اندازی اس عام امن میں روس کی طرف سے هو رهی ہے اس کو سلاطین یورپ اس معاهدہ کے خلاف کیوں نہیں خیال کرتے جو عامه خلائق کی امن کی بابت ہے اور اگر اس موقع پر روس کے اس نقص عہد کو سلاطین یورپ خلاف شان سلطنت نه سمجھیں گے تو پھر کیوں کر ممکن ہے کہ آئندہ کسی ایسی سلطنت کو جو صرف اپنی بلند حوصلگیاں ظاهر کرنے کے واسطے ایسی هی خون ریزیاں کرنی چاھے گی کوئی سلطنت روک سکے گی ۔

جو اندیشه کوه قاف کے مسلمانوں کی برهمی کی نسبت ظاهر کیا گیا ہے وہ بالکل صحیح ہے اور یه کسی طرح کچھ تعجب انگیز نہیں ہے کیوں که جس چیز نے اس وقت عام عیسائیوں کی طبیعتوں کو افروخته کو برهم کر دیا ہے وهی چیز عام مسلمانوں کی طبیعتوں کو افروخته کر سکتی ہے اور جب که ایسا هوا تو صرف روس اور ترک کی لڑائی نه هوگی بلکه نمایت اندیشه ناک مذهبی لڑائی دو بڑی قوموں میں هوگی جو یورپ کے هی امن میں خلل انداز نه هوگی بلکه اور سلطنتوں پر بھی اس کا اثر هوگا۔

هم کو اس وقت گور نمنٹ انگریزی کی تعریف کرنی چاهیے جس نے اب تک اس هنگامه قیامت کو روک رکھا ہے اور اگر گور نمنٹ انگریزی هی اس موقع پر اپنی حکمت عملی پر نظر نه کرتی تو اب تک یورپ میں خون کے نالے بهه نکلے هوتے اور کروڑوں جانیں ضائع هو گئی هوتیں ۔

انگلستان، روس اور ٹرکی کا معاملہ

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ، ۲۲ دسمبر ۱۸۷۶ء)

جو چٹھی ایک انگستانی افسر مقیم خلیج بیسکا کی جانب سے اخبار ٹائمز مطبوعہ ور دسمیں میں مشہر ہوئی ہے آس کے دیکھنر سے گورنمنٹ انگریزی کے فوجی افسروں کی اُس رائے کا مخوبی اندازہ ھوتا ھے حو وہ ٹرکی اور روس کے معاملہ کی نسبت رکھتر ھیں۔ اُس کے دیکھنے سے یہ بات معلوم ہوتی ہے کہ گورنمنٹ انگریزی کی قومی عزت کی نگہبانی جس قدر ٹرکی کی معاونت سے متصور ہے روس کے ساتھ ھونے میں نہیں ھے اور اسی وجه سے جو خیالات كليد اسٹون صاحب كا فرقه ظاهر كر رها هے وہ كچھ قابل تعريف نهيں ھیں بلکہ وہ ایک نوع کی خرابی کا سبب ھیں۔ جو جلسر آج کل انگلستان میں ترکوں کے ہر خلاف ہو رہے ہیں اور وعظ و پند انگلستان کے پادریوں کی جانب مع عوام الناس کی طبیعتوں کے بر انگیخته کرنے سی مساعی ہیں وہ مجز اس کے اور کچھ نہیں حانتر کہ تعصب آسیز خیالات کی اعانت سے عیسائیوں کی طبیعتوں کو ترکوں کی طرف سے برہم کر دیں اور دلوں میں کینه کے تخم جا دیں اور وہ اس بات کو ہرگز نہیں حانتر کہ ملکی تدابیر کی تقویت کس طریقہ سی ہے اور سلطنت کا انتظام کس تدبیر سے عمدہ قائم رہ سکتا ہے اور مت زیادہ معین گلیڈ اسٹون صاحب کے

فرقه کا یہی وعظ و پند کی مجلسیں ہیں جن کو اس وقت کے مناسب کام کرنا نہیں آتا ۔

لارڈ ڈری صاحب کے خیالات نہایت مدبرانہ ھیں اور آن کے انصاف آمیز طریقه کو سب پسند کرتے هیں اور انهیں کے خیالات سے قوسی حفاظت کا زیادہ لحاظ معلوم هوتا هے ۔ وہ بڑی ا بمان داری اور رحم دلی کے ساتھ ملکی عزت کو قائم رکھنا چاھتر ھی اور انگلستان کو اُس بے عزتی سے مجانا چاہتر میں جو انگلستان کو دب کر کسی کام کے کرنے میں حاصل ہوگی ۔ لارڈ ڈربی صاحب اس امر کو قومی عزت کے برخلاف سمجھتر ہیں کہ انگلستان اپنی قوم کے مخالفوں کو قوت دے کر اپنی قوم کو ذلیل کرے کیوں که وہ خوب جانتے ہیں که سرویا کی عیسائی قوسیں اپنی وحشت اور سفاکی میں امریکہ کے باشندوں سے کم نہیں ہیں۔ اگر ان کو موقع ملر تو وہ اسی وقت اپنی وحشت کے آثار کو ظاہر کر دیں اور کسی کو زندہ نہ چھوڑیں ۔ پس کیا لارڈ ڈربی اپنے ایسے مخالفوں کو مدد دینا اور آن پر رحم کرنا کچھ عقل کے مناسب سمجھیں کے ہرگز نہیں ۔ کیوں کہ وہ گلیڈ اسٹون صاحب کی طرح لوگوں کو بر انگیختہ کرنے کو گمراہ کرنے سے کچھ کم نہیں سمجھتر اور سی وجه ہے کہ گلیڈ اسٹون صاحب اب تک کسی کے نزدیک اپنر قول سیں سچر ثابت نہیں ہوئے اور ہم اُس چٹھی کا ترجمه چھاپنا چاہتے ہیں جو مذکورہ بالا افسر نے چھاپی ہے اور جو ہارے خیالات کی نہایت ممد ہے و ہے ہے دا ۔

" جو اخبارات ھارے پاس انگلستان سے آتے ھیں ان کے دیکھنے سے ھم کو معلوم ھوتا ھے کہ آج کل انگلستان میں طرح طرح کی مجلسیں اس غرض سے جمع ھوئی ھیں کہ جو تدبیر مملکت ٹرکی کے معاملہ میں گور نمنٹ انگلستان نے اخیتار کی ھے اُس سے

اپنی ناراضی ظاہر کریں اور ہارا حال سنئر کہ ہم آٹھ مہینر سے اپنر جہازوں پر پڑے ھوئے ھیں۔ نه ھم کو رخصت ملتی ھے۔ نہ ہم کو تفریج طبع کے واسطے کہیں جانے کی اجازت ہے اور باوجود اس کے ہم ہرگز کچھ شکایت نہیں کرتے بلکہ ہم ہر وقت اس بات یر آماده هس که اگر هاری ملکه معظمه اور هارا ملک انصاف کے واسطر نیک سبب پر لڑائی کرنا چاھے تو ھم بھی حان دینر کو موجود هیں۔ جو جهنڈا اس وقت هارے جہاز پر لہرا رھا ھے وہ آزادی کا حامی ھے اور اس میں کچھ شک نہیں ھے کہ جو کچھ ہم دیکھ رہے ہیں اس کے لحاظ سے ان لوگوں کے خیالات حو مشرقی معاملات میں کھلیلی ڈال رہے ھی بالکل نا واقفیت پر مبنی معلوم ہوتے ہیں اور آن لوگوں کی مثال بھیڑ بکریوں کے گلہ کی سی ہے گلیڈ اسٹون صاحب اور لو صاحب جو اس گروہ کے رہنا بنر ہوئے ہیں وہ خود ہمیشہ سے اپنر قول سی سچے نہیں ثابت ہوئے اور بجز اس کے کہ وہ شکار پر گھوڑا چھٹا لیں اور کس کام کے ہیں البتہ لارڈ ڈربی صاحب اور بیکنسفیلڈ صاحب ہادر نہایت آزاد اور خود مختار حکمت عملی کے حاسی هس اور هم ان کی اس حکمت عملی پر نازاں هس اور هم کو فخر ہے کہ ہم آن کے گروہ میں ہیں اور ہم کو امید ہے کہ ہارے گروہ کے مخالف چند روز میں دیکھ لیں گے کہ ہارا گروہ کیسا ذی عزت ثابت هوگا اور بلاشبه جهازی سپاهی بدل و جان ان کی اعانت کریں گے ۔

کو هم اس وقت انگلستان میں نہیں هیں مگر تاهم هم لوگ انگلستان کے رهنے والے هیں اور هم علانیه کہتے هیں که هم آن عیسائیوں میں نہیں هیں که هم سرویا والوں کو اچها کہیں اور آن کو کوئی عزیز قوم سمجھیں ۔ اگر اس وقت هم سے اور سرویا

سے لڑائی ہو تو بلاخوف و خطر لڑنے کو تیار ہیں۔ جو لوگ صرف اخباروں کی گپ بازی پر بھروسہ کر کے باتیں بناتے ھی ھم ہرکیف آن سے زیادہ جانتر ھی اور ھم کو اس بات سے بڑی نفرت ہے کہ ہاری ہی قوم سے کچھ لوگ روسیوں کے ساتھ ہو جاویں اور ان کی وجہ سے سرویا والوں کے طرف دار بنس ۔ اگر ھارے انگلستان کے وہ لوگ جو اس وقت سرویا کی مصیبت زدہ قوموں کو روپیہ پیسہ اور دوا درمان سے مدد کرتے ہی کجھ سمجھیں تو آن کے حق میں مجائے اس کے یہ ہتر ہے کہ وہ اپنی ھی قوم کے انگلستانیوں کی خبر گیری کریں ـ کیا وہ نہیں جانتر کہ اگر آج سرویا والوں کو موقع ملے تو وہ فوراً جان تلف کرنے اور ایذا ہنچانے کو تیار میں اور اگر ان سے مو سکر تو وہ ایک شخص کو زندہ نه چهوڑیں ۔ اور هم کو یه خوب معلوم ہے که آن کا مذھبی طریقہ یہی ہے اور اس وقت بلاشبہ روس اور سرویا اور بوسینیا سب هم سے اس بات کے ملتجی هیں ۔ که هم آن کے ساتھ ھو کر ٹرکی سے لڑیں مگر ھم کو کیا ضرورت ھے کہ ھم ایسا کریں ۔کیا ہم کو کبھی آن سے فائدہ بہنچا ہے یا ہم کو آن سے کسی فائدہ کی توقع ہے۔ اگر ھم کو اس وقت ھتھیار اٹھانے کا حکم ہو اور ٹرکی کا حق بطور ایک خود مختار قوم کے قائم رہے تو ہم فوراً حاضر ہیں ۔ آپ ہرگز یہ خیال نہ کریں کہ ہارہے بیڑے کے سپاھی کچھ اس معاملہ میں غافل ہیں۔ نہیں هم کو وهی جوش ہے جو ایک انگریز کو هونا چاهیے اور اس میں ذرا شبه نہیں ہے کہ اگر میں ترک ہوتا اور کوئی غیر قوم مجھ پر حمله کرتی تو میں اپنر هتهیار هرگز نه رکهتا ـ پس اسی طرح اب بھی ہم کو یہ انتظار ہے کہ فوراً لڑائی ہو ۔ ہم ضرور اپنے عزیز وزیر لارڈ ڈربی صاحب کو مدد دینے کے واسطے تیار ھیں اور ھم

آن کے مخالفوں کو اس بات کے دکھلا دینے کا دعوی کرتے ھیں کہ اگر روس ٹرکی کو ذرا بھی چھیڑے گا اور کچھ وہ بھی اس قصد کا اثر ظاھر کرے گا تو ھم فوراً ٹرکی کو مدد دیں گے اور روس دیکھے گا کہ ھم کیا کریں گے ھم آن انگلستانیوں میں نہیں ھیں کہ تدبیر ملکی کو تو جانتے نہیں ھیں اور مشرق معاملات سے تو ان کو خبر نہیں ھے مگر یوں ھی لوگوں کو ترکوں کی دشمنی اور مخالفت پر آمادہ کر رہے ھیں ۔''

راقم ایک افسر، روایل میدی ، ایچ ـ ایم ـ ایس ـ هرکیولر خلیج بیسکا ، ۲۷ اکتوبر ۱۸۷۹ء ـ

اس چھی کے دیکھنے سے جو تدبیر مملکت انگلستان کی ہے وہ ھر شخص پر ظاھر ھو سکتی ہے اور جو جوش انگلستان کے قومی افسروں کو ہے وہ ب انہا ہے اور اسی موقع سے یہ بات بھی عام ھو سکتی ہے کہ کلیڈ اسٹون صاحب کے شور و غل کو کچھ روشن دساغ اور ملکی مدبر پسند نہیں کرتے ۔ صرف پادری منش پسند کرتے ھیں اور نو یہ بات مسلم ھو کہ گورنمنٹ انگریزی کچھ ترکیوں کو قابل ترجیح سمجھ کر مدد نہیں کرتی مگر اس میں تو شہد نہیں ہے کہ وہ سرویا والوں سے دل میں راضی نہیں ہے اور اس کو سرویا سے کچھ فلاح کی امید نہیں ہے ۔ پس اگر ترک کی ذاتی مدد مد نظر نہ ھو تو سرویا کی مخالفت کے لحاظ سے تو ضرور ترک قابل امداد سمجھے جاویں گے اور اس میں کچھ شبہ نہیں ہے ترک قابل امداد سمجھے جاویں گے اور اس میں کچھ شبہ نہیں ہے میں مفید ھوگا ۔

ترکوں کے بتیہوں اور زخمیوں کے لیے چندہ

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علیگڑھ، ۲۲ دسمبر ۱۸۷۶)

بمبئي اور کلکته اور حیدر آباد اور لاهور اور مدراس کي ان کمیٹیوں نے جو به نظر انسانی هم دردی کے ترکوں کے بتم اور زخمیوں کے واسطے چندہ جمع کرنے کے لیے قائم ہوئیں اس بات کا شبہ دور کر دیا ہے کہ یہ کمیٹیاں گور نمنٹ انگریزی کے خلاف منشاء هیں ۔ حضور وائسرائے مادر اور ان کی کونسل نے بھی اس ھم دردی کو نا پسند نہیں کیا ۔ علاوہ اس کے یہ بات بھی ثابت ھو چکی ہے کہ یہ چندہ ملکی لڑائی کے واسطے نہیں ہے اور نہ اس سے ٹرکی کی جنگی قوت کا بڑھانا مد نظر ہے اور اگر ایسا خیال کیا حاومے تو وہ اس لیر غلط ہے کہ ٹرکی کے ایک معرکہ میں اس قدر صرف ہوگا کہ تمام ہندوستان کے باشندے برسوں سیں اس قدر جمع نہ کر سکیں گے ۔ پس بہر کیف اب یہ بات متیقن ہے کہ یہ چندہ صرف محروحوں اور مصیبت زدہ لوگوں کے واسطر ہے اور کسی طرح وہ قانون سلطنت اور منشاء گورنمنٹ کے خلاف نہیں ہے اور اس قسم کا چندہ اپنی هم قوروں نے لندن سے سرویا کے محروحوں کو علانیہ بھیجا ہے اور ہت سے لوگ لندن سے سرویا کے عیسائی لوگوں کی مرہم پٹی کے واسطے به نظر رحم دلی خود لے کر گئر ہیں اور ہرگز گورنمنٹ نے اس سے مزاحمت نہیں کی اور نه

اب تک اس کی مزاحمت کے واسطے کوئی حکم جاری ہوا۔ پس کسی گروه خاص کا کوئی کام کرنا اور اس پر گورنمنٹ کا تعرضی نه کرنا بھی ایک قانون ہے حو دوسرے گروہ کے واسطر قابل استدلال ہے ۔ جب کلکتہ اور بمبئی وغیرہ کے چندہ کی کمیٹیوں کو گورنمنٹ نے نہیں روکا تو وہ اور ہندوستان کے باشندوں کے واسطر بلا شبه بمنزله قانونی احازت کے ہے۔ یس اگر ایسی حالت میں کوئی ایسی عدالت جو خلاف قانون کوئی حکم نافذ نہیں کر سکتی کوئی ایسا حکم نافذ کرمے جو عام کارروائی اور گور نمنٹ کی منشاء کے خلاف ہو تو ایسر حکم کو ہم اپنی دانست میں حکم جائز نہیں کہہ سکتے اور اس کو حاکم کی خاص رائے کہہ سکتر ہیں تا وقتیکه اس کے مخالف حکم کی علت ہم کو نه معلوم ہو جاوے۔ ہم نے سنا ہے کہ ضلح سہارن پور کی کسی عدالت نے اُس ضلع کی آس درخواست کو نا منظور کیا ہے جو انھوں نے فراھمی چندہ کے واسطر اجازت حاصل ھونے کی وھاں کی عدالت محاز میں پیش کی تھی اور یہ بھی ہم نے سنا ہے کہ اُس عدالت نے مسلمانوں کی اس درخواست کی نسبت یه حکم دیا هے که یه شاید تدبیر فریب ح واسطر کی جاتی ہے ورنہ ٹرکی کو کچھ حاجت چندہ کی نہیں ہے۔ وہاں ٹرکی کی لڑائی کے واسطے بہت کچھ سامان موجود ہے ۔ ہارے اس ضلع کے معتمد کارسپانڈنٹ نے جو تحریر ہارے پاس بھیجی ہے آس کے دیکھنے سے ہم کو یہ تمام کیفیت معلوم ہوئی ہے۔

مسلمانوں کے ایک ایسے گروہ کی نسبت فریب اور دغا کا منسوب کرنا جن میں ذی عزت اور بے عزت سب طرح کے لوگ شامل ھیں اس وقت تک صحیح نہیں ھے جب تک کہ ان پر یہ الزام کسی طرح ثابت نہ ھو جاوے ۔ علاوہ اس سے جب کہ گور نمنے ۔ ' اس بارے میں کوئی خاص حکم ممانعت کا جاری نہیں فرمایا تو اس

عدالت نے کس بنا پر یه ممانعت کی ـ

اگر یه خبر صحیح هے اور جیسا که هارے کارسپانڈنٹ نے لکھا ہے ویسا ھی ہے تو اس میں کچھ شبہ نہیں ہے کہ نہایت افسوس کے لائق ہے اور بڑی حدرت ہے کہ یه کارروائی کس قسم کی ھے مبئی کے چندہ کی تو ٹرکی کی جانب سے بعض اخباروں سی رسیدیں بھی چھپ گئی ھیں اور اضلاع شال و مغرب کے چندہ میں ھنوز تک اجازت نہیں ملی ۔ حیدر آباد کی رعایا کی درخواست کو وہاں کے صاحب ریزیڈنٹ نے بلا تامل منظور کر لیا اور ماں کی عدالتیں هنوز اسی خیال میں هس که یه فریب هے - کلکته کے امراء عالی تبارنے ہزاروں روپیہ جمع کر نیا اور ہو رہا ہے۔ پس کیا یہ سب فریبی هیں ؟ اور کیا یہ آن کی دغا بازی ہے ؟ هرگز نہیں۔ کیونکه اس میں وہ نام ور لوگ شریک ہیں جن کی عقل و دیانت پر سب کو اعتاد ہے۔ اگر ان کے نزدیک ٹرکی کے پتیموں کو حاجت نه هوتی تو وه کیوں چنده جمع کرتے ۔ کیا وه ایسے نادان تھے که بلا حاجت کے چندہ جمع کرنے لگتے ۔ مولوی عبداللطیف خاں اور جناب سید امیر علی خال بهادر به دل و جان اس باب میں سعی کر رہے ہیں پس کیا ان کو ٹرکی کی ضرورت اور عدم ضرورت سے کچھ خبر نہیں ہے۔ ہم کو نہایت تاسف ہے کہ بلا وجہ ایک ایسا حکم دیا گیا ہے جو تعجب کے قابل ہے ۔ ہم کو یقین ہے کہ جو ہمدردی اپنے بنی نوع اور اپنے ہم قوم کے واسطے کی جاوے وہ کسی طرح قابل مزاحمت نہیں ہو سکتی ۔ ہم کو معلوم نہیں ہے کہ وہاں کے درخواست دینر والوں نے اب کیا تدبیر کی ہے اور اس حکم کا آن پر کیا اثر هوا ہے۔ اگر هم کو اس کی اطلاع هوگی تو هم اس کو بھی مفصل چھاپس ہے ۔

چنده یتیهان و بیوگان و زخمیان

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ، ۲۷ اکتوبر ۱۸۵۹ء)

ھندوستان کے مسلمان ایک مدت سے اپنے بزرگوں کی عادت و طبیعت و همدردی کو بھولے ہوئے تھے ۔ اب اس تعلیم و تربیت کے زمانہ اور ُپر امن عہد دولت مہد شہنشاہ انڈیا وکٹوریہ نے پھر اُن کی طبیعتوں کو آسی اصل فیاضی اور ہمدردی کی طرف مائل کر دیا ہے جو آن کے مشہور بزرگوں کی تھیں ۔ اس طبیعت کے تازہ ہونے کا اثر اُس چندہ سے ثابت ہوتا ہے جو جنگ روم کے زخمیوں اور يتيموں اور بيواؤں كے ليے هندوستان ميں هو رها هے ـ مدراس ، بمبئی ، کاکته ، اور اور مقاموں میں چندہ شروع ہوا ہے اور ہم دیکھتے ہیں کہ بہت سے لوگوں کی طبیعتیں چندہ کرنے کو اور ترکوں کے ساتھ ہمدردی کرنے کو آسادہ و تیار ہیں۔ اس چندہ میں چند امور ھیں جن پر غور کرنے سے مسلمانوں کی طبیعتوں کا حال معلوم هو سکتا هے - سب سے اول بات یه هے که اس همدردی میں شیعہ اور سنی دونوں نہایت اتفاق اور دل سے شریک ہوئے ہیں اور اس معاملہ میں انھوں نے وہی طریقہ برتا ہے جو ہزار آٹھ سو برس پیشتر کے شیعہ و سنی آپس میں برتتے تھے کیوں کہ اُس زمانہ مین شیعه اور سنی مذهب مین ایسی مغائرت و عداوت نه تهی جیسی کہ حال کے زمانے میں بعض جاہل اور متعصب اشخاص میں ھے ۔ اس تمام کارروائی سے ان لوگوں کی رائے کی غلطی علانیہ ثابت ہو گئی جو یہ سمجھتے تھے کہ ہندوستان کے مسلمانوں کو ترکوں

کے ساتھ کچھ ھمدردی نہیں ہے ۔ دوسری عمدہ بات اس تمام کارروائی سے یه هوئی هے که جو بات چند اشخاص کو پہلر معلوم تھی اب ہندوستان کے ہر فرد کو معلوم ہو گئی ہے کہ گورنمنٹ انگلستان اور حضور شہنشاہ انڈیا وکٹوریہ همیشه سے دوست اور مددگار سلطنت روم کے رہے ہیں اور روسیوں کے صدمہ سے جو نہایت سخت دشمن سلطنت روم کے هیں گور نمنٹ انگریزی نے هر سوقع یر مدد کی ہے اور اب بھی مددگار ہے اور اس سبب سے ھاری دانست میں ایک عام خیال محبت و خبر خواهی اور احسان سندی گور نمنٹ انگریزی کا هر ایک مسلان کے دل میں پھیلا ھے ۔ تیسرے هم اس بات کے معلوم کرنے سے نہایت خوش ھیں کہ جو کمیٹیاں اس باب میں مقرر ہوئی میں انہوں نے اپنی کارروائیاں نہایت علانیہ کی میں اور گور نمنٹ ہندوستان پر بھی اپنے ارادوں اور مقصدوں کو مخفی نہیں رکھا ہے ۔ ہم کو جناب مولوی عبداللطیف خان مهادر کی یه تحویر نہایت پسند آئی جو انھوں نے گورنمنٹ سے درخواست کی ہے کہ زریعہ سے صدر کمیٹی میں بھیجا جاوے اور ہم کو یہ بھی اسید ہے کہ جناب مولوی صاحب ممدوح ایسی تدبیر فرماویں کے که ٹرکی کے خزانہ میں بھی یا اس کمیٹی کی تحویل میں جو ٹرکی میں یتیموں کی مدد اور زخمیوں کی ہتری کے لیر مقرر ھو بذریعہ سرکار انگریزی روپیہ بھیجا جاوے تاکه تغلب و تصرف کا کسی طرح احتال نه رہے اور لوگوں کو طانیت کامل ہو کہ جس مقصد کے لیے روپیہ دیا گیا ہے در حقیقت وہ اُس میں کام آوے گا اور اسید ہے کہ جو خط و کتابت اس باب میں گورنمنٹ سے ہو وہ علانیہ ظاہر و مشتہر کی جاوے ـ چوتھی بات جس سے هم زیاده خوش هیں وه یه هے که هر ایک جگه کی کمیٹی نے اپنی گورنمنٹ کا ادب اور وفا داری اور شکریہ ادا کیا هے اور در حقیقت هم کو اپنی گورنمنظ کا بے انتہا ممنون اور شکر گذار هونا لازمی هے کیوں که یه ایسی عمده گورنمنظ کا نتیجه هے که هم اپنے مسلمان ترک بھائیوں کی اس قدر دور دراز فاصله سے امداد کرنے کو آماده هیں ۔ انصاف کا مقام هے که اگر کسی پر امن گورنمنظ اور ایسی آزادانه حکومت جیسی که گورنمنظ انگریزی کی هے نه هوتی تو کیا هم یه سب باتیں کر سکتے جو کر رہے هیں ۔

پانچویں بات غور کے قابل یہ ہے کہ اس واقعہ سے جو ترکوں میں پیش آیا اور جس میں روس نے بلا سبب سرویا اور بوسینیا وغیرہ ملکوں میں سازش کرکے بغاوت کروائی اور هزار ها مخلوق کا خون بہایا اس سے بخوبی معلوم هو گیا که روسیوں کو کس قدر دشمنی سلطنت ٹرکی سے اور مسلمانوں سے ہے اور اس باعث سے هندوستان بح مسلمانوں کے دلوں میں نہایت سخت عداوت اور دشمنی روسیوں سے جمتی جاتی ہے اور اب ان کو روسیوں کا سنٹرل ایشیا میں بھی پھیلنا نہایت نا گوار هوتا جاتا ہے جس پر وہ اس واقعہ سے پہلے چنداں خیال بھی نہیں کرتے تھے ۔ یہ سب حالات اس بات سے چنداں خیال بھی نہیں کرتے تھے ۔ یہ سب حالات اس بات سے خور کرنے والوں کا موقع دیتا ہے ۔

طيئهز

از اے گریٹ رفارمر یعنی زمانہ ایک بڑا اصلاح کرنے والا ہے

(تهذیب الاخلاق ، جلد ششم ، بابت یکم رمضان ۱۲۹۲ه صفحه ۲۸۱ تا ۱۸۸۸)

یہ بات تو سب کو معلوم تھی کہ ترک انگریزی کا لباس پہنتے ھیں اور میز و کرسی پر بیٹھ کر ُچھری کانٹے سے کھاتے ھیں اور سلطان روم یعنی بادشاہ حرمین شریقین جن کا خطبہ مکہ معظمہ کے منبروں اور مسجد نبوی کے منبر پر روضہ مطہرہ علیٰ صاحبہا الصلوۃ و السلام کے سامنے پڑھا جاتا ھے۔ بوٹ و پتاون و ترکش کوٹ و لال پھندنے دار ٹوپی پہنتے ھیں۔ مگر اب نئی بات یہ معلوم ھوئی ھے۔ کہ جناب شریف مکہ عبد الله بن عون بھی انگریزی مہذیب کو پسند فرماتے جاتے ھیں۔ بیرس کے ایک اخبار میں چھپا ھے کہ بصرہ کے ایک بہت دولت مند سوداگر جن کا نام علی الرشید ھے ان دنوں پیرس میں تشریف لائے ھیں۔ آتے وقت علی الرشید ھے ان دنوں پیرس میں تشریف لائے ھیں۔ آتے وقت مہان رھے تھے۔ آن کا بیان ھے کہ شریف مکہ کے ھاں مہان رہے تھے۔ آن کا بیان ھے کہ شریف مکہ کا مکان بالکل یورپ مہان رہے تھے۔ آن کا بیان ھے اور شریف مکہ کا مکان بالکل یورپ کے اسباب سے سجا ھوا ھے اور شریف مکہ کا انگریزی طور کا کھانا

کھاتے ھیں۔ مگر ابھی اتنی کسر ہے کہ 'چھری کانٹے سے نہیں کھاتے ۔ ایک فرانسیسی باورچی آن کے ھاں نوکر ہے ۔ شریف مکہ نے فرانسیسی زبان سیکھ لی ہے اور فریخ یعنی فرانسیسی زبان بولتے ہیں ۔ اب تو قیامت ہوگئی ۔ ع

چو کفر از کعبہ برخیزد کجا ماند مسلمانی کیا ہمارا تہذیب الاخلاق مکہ میں بھی پڑھا جاتا ہے ؟

سلطان زنجبار کو بھی زمانہ کی ہوا لگی ہے۔ آنھوں نے بھی فریخ زبان پڑھنی و سیکھنی شروع کی ہے۔ اپنے ہاں کے بڑے بڑے سرداروں کو تمغے دیے ہیں۔ جن میں سلطان زنجبار کی تصویر انی ہوئی ہے۔ کیا اب تصویر ناجائز نہیں رہی ؟ نہیں کمیں بھول گیا۔ سلطان زنجبار تو بڑے پکے حنی ہیں۔ تمغوں میں پوری تصویر نه ہوگی۔ صرف چہرہ یا نصف قد کی تصویر ہوگی۔ اس لیے کہ حنفیوں کے ہاں کا مسئلہ ہے کہ جان دار کی اُس قدر تصویر جس سے زندہ رہنا ممکن نہ ہو بنانی یا رکھنی ناجائز نہیں ہے۔

ایک مصور نے سن کر کہا کہ میں تو پورے قد کی تصویربی بھی ایسی ھی بناتا ھوں ۔ کہ اگر آتنی ھی چیزیں انسان میں ھوں جتنی کہ میں بناتا ھوں تو بھی انسان کا زندہ رھنا ممکن نہیں ۔ اس نے قسم کھائی اور کہا '' میں نہ انسان کا بھیجا بناتا ھوں نہ پھیپھڑا ، نہ دل و جگر ، نہ معدہ نہ امعاء ، نہ خون نہ روح ، اور بغیر ان سب چیزوں کے انسان زندہ نہیں رہ سکتا ۔ پس میں بھی حنفی مسئلہ کے بہ موجب کوئی ناجائز کام نہیں کرتا ۔''

جب مصور سے کہا گیا۔ کہ قیامت میں خدا کہے کا کہ '' اب اس میں جان ڈال '' تب وہ حیران ہوا اور کہنے لگا کہ جناب درخت کی بھی تصویر بناؤں یا نہیں۔ تو اُس سے کہا گیا کہ درخت کی بھی تہیں۔ تب اُس نے کہا کہ جناب اگر قیامت

میں خدا کہے گا کہ اب اس کو بڑھا اور پھل پھول لگا۔ تو میں کیا کروں گا۔ اس سے کہا گیا کہ درخت میں قوت نامیہ پیدا کرنے کو اور پھل پھول لگانے کو خدا نہیں کہنے کا۔ مصور بولا۔ کہ ناصاحب میں نہ مانوں۔ ایسے خدا سے جو کاغذ پر لکیریں کی ھوئی جانور کی تصویر میں جان ڈالنے کو کہے گا۔ کیا لگتا ہے کہ وہ کاغذ پر درخت کی کھچی ھوئی تصویر میں بھی قوت نامیہ پیدا کرنے اور پھل پھول لگانے کو کہوے۔ یا تو اس مسئلہ ھی میں کچھ غلطی ہے۔ یا مطلقاً تصویر بنانا جان دار کی ھو یا بے جان کی۔ کیا لکل ممنوع ہے۔

کیا کسی مولوی نے سلطان زنجبار کو فتوی دے دیا ہے۔ کہ تمغوں میں نقش تصویر ناجائز نہیں ہے ؟ **(**r)

مضامين متعلق واقعات حاضره

دملی کا دربار اور اس کا خرچ

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ . ۱ نومبر ۱۸۵۹ء)

جب هم اس بات کا خیال کرتے هیں که گورنمنظ هندوستان نے تمام محکموں میں تخفیف کا حکم دیا ہے تو هارے دل میں یه گان پیدا هوتا ہے که آج کل خزانه میں کمی ہے اور وہ ضرورتیں پیش هیں جن کو خزانه اپنی کمی کے سبب سے برداشت نہیں کر سکتا اور هم یقین کرتے هیں که جو اراکین تخفیف کی رائے دینے والے هیں وہ بھی اپنی رائے کے واسطے بجز اس کے اور کچھ وجه نه ظاهر کریں گے که خزانه کم اور ضرورت زائد تھی ۔ اس سبب سے تخفیف کی ضرورت معلوم هوئی لیکن بحسب ظاهر جو لوگ سبب سے تخفیف کی ضرورت معلوم هوئی لیکن بحسب ظاهر جو لوگ اس وجه کو ضعیف خیال کرتے هیں وہ دربار دهلی کے صرف کو دیکھ کر تخفیف کی اس وجه کو بالکل نا واجب کہتے هیں اور وہ بہت حیرت میں هیں که دربار دهلی پھتر لاکھ روپیه صرف کرے گاور گورنمنٹ تیں چار هی لاکھ کی تخفیف کی خواهاں ہے ۔

اگر تخفیف کی ضرورت سے قطع نظر کی جاوے تو بھی ھارے بعض ھم عصر جو ھندوستان کے خزانہ کا بے دریخ صرف ھونا نا پسند کرتے ھیں اس پچھتر لاکھ روبیہ کے صرف کو بالکل نا واجب کہتے ھیں۔ وہ کہتے ھیں کہ جب ملکہ معظمہ تخت نشین ھوئی تھیں تو اس وقت صرف مبلغ سات لاکھ روپیہ صرف ھوئے تھے (یعنی ستر ھزار پونڈ) اور اب صرف خطاب شہنشاھی کے قبول کرنے کی خوشی میں پچھتر لاکھ صرف کیا جاتا ھے جو

دہ چند سے بھی زیادہ ہوگا اور ان کو اسی وجہ سے یہ فکر ہے کہ اگر حضور ملکہ معظمہ شہنشاہی تاج پہننے کی رسم ادا فرماویں گی تو اس عمل درآمد کے لحاظ سے اس وقت بھی ہندوستان سے روپیہ جاوے گا اور اس کی مقدار بھی اس سے کچھ کم نہ ہوگی۔

وہ اس بچھتر لاکھ کے صرف کو اس وجہ سے نا یسند کرتے ہیں کہ ان کے نزدیک اس صرف کو ہندوستان سے جو تعلق ہے وہ انگلستان سے نہیں ہے۔ پس اس صورت میں یہ تمام بار هندوستان کے خزانہ پر ہوگا حس کے لحاظ سے ان کے نزدیک یہ کہنا کچھ بے جا نہیں ہے کہ اگر آج ہندوستان کا پارلیمنٹ علیحدہ ہوتا حیساکه انگلستان کا پارلیمنٹ ہے تو ہرگز مجھتر لاکھ روییہ کی درخواست اس آسانی سے پیش نه هوتی اور اس کی منظوری تو خواب و خیال سے کم نہ ہوتی اور اب چوں کہ انگلستان کی طرح ھندوستان کا پارلیمنٹ اُس کے خزانہ کا حامی نہیں ہے اس وجہ سے یچھتر لاکھ روپیہ کی رقم کثیر صرف اس نام سے بجٹ میں شاسل ہوگی کہ دھلی کے تماشہ میں صرف کی گئی اور وزیر خزانہ ھند اپنر نقشه میں اس رقم کو مارچ آئندہ میں لکھیں گے اور اسی وحه سے خیال کرتے ہیں که سر جان اسٹریچی صاحب بہادر کو آئندہ نہایت دقت پیش آوے گی کیوں کہ اُن کو تمام محکموں کی فضول خرچی کا اس کفایت شعاری سے مقابلہ کرنا پڑے گا اور جس قدر اس باب میں ان کو دقت هوگی اس قدر حضور گورنر جنرل ہادر کو نه هوگی کیوں که وه کهه دیں کے که یه تمام صرف ایک بڑی حکمت عملی کے اظہار کے واسطر کیا گیا اور اس کے ذریعہ سے ہندوستان کے تمام شاہزادہ اور رئیس اس لیر بلائے گئر کہ وہ سب ایک دوسرے کے سامنر اپنے شہنشاہ کی تعظیم و تواضح

بؤی عاجزی سے محا لاویں اور یہ کہہ کر حضور گورنر حنرل مهادر بالکل بری هو جاویں گے۔ حالاں که ان کے نزدیک در اصل یه چنداں مفید نہیں ہے۔ سگر ھم اس رائے سے اس وحه سے اتفاق نہیں کرتے کہ حو تدہیر مملکت اس زمانہ میں حضور لارڈ لٹن صاحب مهادر کو هندوستان میں کرنی ضرور ہے وہ زیادہ مفید هندوستان هي کے حق میں هے اور حو نازک وقت آج کل هندوستان کی گورنمنٹ کو پیش ہو رہا ہے آس کا اثر حس قدر ہندوستان کو برداشت کرنا پڑے گا انگلستان کو برداشت نہ کرنا پڑے گا۔ یس اس لحاظ سے بلاشبہ ہندوستان کے گورنر حنرل کو ایک ایسر ہی دربار کی نہایت ضرورت تھی اور اسی وجہ سے ھم اس مجھتر لاکھ روپیہ کی رقم کو صرف دہلی کے تماشہ کی رقم نہیں کہہ سکتر بلکہ اُس کو ایک ملکی ضرورت کی رقم کہیں گے جس میں ھندوستان کے خزانہ کو بخل کرنا سراسر تدبیر مملکت کے خلاف ہوگا۔ حو لوگ ہندوستان کے خارجی تعلقات کو خوف ناک خیال کرتے ہیں اور جو بڑے زور و شور سے آج کل یہ رائے دے رہے ہیں کہ ہندوستان کی گورنمنٹ کو ایک ایسر زمانے میں جب کہ پورپ کی حالت دگرگوں ہو رہی ہے اور انگلستان کی گورنمنٹ کو بھی اس عرصه میں اس بات کی بڑی ضرورت ہے که هندوستان کی حکومت نہایت کیر امن با شوکت رہے تو کیا اب لارڈ لٹن صاحب کا یه دربار حو هندوستان کی گورنمنٹ کی قوت اور اطمینان اور شوکت کو ظاہر کرے گا۔ دھلی کے تماشہ کے نام سے موسوم ھونے کے لائق ھوگا ؛ ھارے نزدیک ھرگز نہ ھوگا ۔

ھارا ایک انگریزی معاصر لکھتا ہے کہ جو رؤسا اور شہزادے اس دربار میں شریک ہوں گے آن کا صرف زبان سے خیر خواہی کا دم بھرنا حکومت کا استقلال ثابت نہ کرے گا مگر ہاری رائے

میں یہ خیال چند وجہ سے قابل التفات نہیں ہے کیوں کہ ھارے ھم عصر نے اس بات کی کوئی وجہ نہیں لکھی کہ ھندوستانی شہزادوں اور درباریوں کی یہ نیاز مندی اور اپنے گورنر جنرل کے حضور میں علی الاعلان جب کہ اپنے اور بیگانہ ملک کے لوگ بھی وھاں حاضر ھوں گے خیر خواھی اور وفاداری کا اقرار کرنا کس وجہ سے صرف زبانی اقرار ھوگا اور کیوں کر آس سے استقلال حکومت ثابت نہ ھوگا ۔ علاوہ اس سے اس بات کا بھی کوئی کافی سبب نہیں بیان کیا کہ کیوں اُن کے نزدیک اس وقت ایسے دربار کی ضرورت نہ تھی ۔

گو یه مسلم هے که جو تخفیف اس وقت عام محکموں میں کی گئی هے وہ اس صرف کثیر کے منافی معلوم هوتی هے مگر جب اس دربار کی قومی ضرورت کو تسلیم کر لیا جاوے اور یه بهی منجمله انہیں ضروری اخراجات کے بجٹ میں مندرج هو جن سے گور نمنٹ کو کچھ چارہ نہیں هے تو پهر هاری رائے میں یه صرف کثیر بجائے اس کے که تخفیف کی وجوہ میں کو اس کے که تخفیف کی وجوہ میں کوئی داخل هو جاوے گا اور هم کو یقین هے که ایسے وقت میں کوئی ایسا شخص جس کو روس کے ارادوں اور سرحدی معاملات پر نظر هے هرگز اس دربار کی ضرورت میں کلام نه کرے گا۔

هم اس وجه کو بهی چندای پسند نهیں کرتے هیں که ملکه معظمه کی تخت نشینی کے زمانه میں صرف سات لاکھ روپیه صرف هوا تھا اب اس قدر کیوں صرف هوتا هے کیوں که اول تو هارے نزدیک هو زمانه کی تدبیر مملکت اور ملکی مصلحت یکساں نهیں هوتی تا که هم اس بات کو تسلیم کریں که جب اس قدر صرف هوا تو اب اس قدر نه هونا چاهیے۔ دوسرے یه که وه خرچ صرف تخت نشینی کی خوشی میں تھا اور اس جشن میں زمانه کی خوشی اور

تدبیر مملکت دونوں شامل هیں پس کسی طرح وہ قیاس صحیح نہیں ہے ۔

ہارا وہی ہم عصر جس کی یہ رائے ہے کہ استقلال حکومت کچھ زبانی اقرار پر منحصر نہیں ہے اپنی رائے کے اخبر میں لكهتا هے كه دراصل استقلال حكومت اس بات میں هے كه كفايت شعاری اور انتظام اور بیدار مغزی هو اور آن رئیسون کا دل آن کو راحت منجانے اور آن کے کاموں میں دخیل نہ ھونے سے ھاتھ میں لیا جاوے ۔ پس هم آس کی اس قدر رائے سے بڑی خوشی کے ساتھ اتفاق کرتے ہیں اور آس کی اس منصفانہ اور علاقانہ تحویز سے آس کو بڑی عزت کے لائق سمجھتر ھیں اور ھم بھی یہ رائے تسلم کرتے میں کہ بلاشبہ رئیسوں بلکہ تمام رعایا کے ساتھ ایسا ھی محبت کا برتاؤ کرنے سے اصلی استقلال حکومت کو حاصل ہوگا اور گورنمنٹ کی ہی تدبیر سچی وفاداری رعایا کے دل میں پیدا کرے گی ۔ مگر اپنر ہم عصر موصوف کی اس رائے کو اس محل پر اس وجہ سے تسلم نہیں کرتے کہ ہارے نزدیک یہ دربار کچھ صرف ہندوستانی رؤساء کی گرویدگی کے ہی واسطے نہیں ہے بلکہ اس کی ضرورت خارجی لوگوں پر رعب ڈالنر اور آن کو ہندوستان کی رعایا کی فرماں برداری ظاہر کرنے کے واسطے بھی ہے اور دراصل یہ ضرورت تمام ضرورتوں سے قوی ہے۔ پس ہم کسی طرح اس ضرورت کو بغس ایک ایسر دربار کے پورا ہونا نہیں سمجھتر اور اس کی وجہ سے ضرور ہم شوکت اور قوت کی اعانت سمجھتر ہیں۔ ھاں اگر یه دربار صرف اس مقصد سے کیا جاتا که گور نمنٹ اس کے ذریعہ سے رعایائے ہندوستان کی وفاداری اور اس کی کرویدگی کو زیادہ کرے تو ہم اپنر ہم عصر کی اس بے نظیر رائے کو آب زر سے لکھتر اور ہم اس کو ضرور تسلیم کرتے اور اسی وجہ

سے هم اس بات کا اعتراف کرتے هیں که اگر هارے هم عصر کی یه رائے اس دربار کی مخالفت میں نه هوتی تو هم اس کے ساته نهایت خوشی سے اتفاق کرتے کیوں که هم همیشه یه خیال کرتے هیں که سچی وفاداری اور دلی خیر خواهی رعایا کے دل میں اسی وقت پیدا هو سکتی هے جو گورنمنٹ اس کے دل میں معبت کے ذریعے پیدا کر دے اور رعایا کی معبت بغیر اس کے معبت بغیر اس کے گورنمنٹ کو اپنی گورنمنٹ سے بهمه وجوه اطمینان هو اور وه گورنمنٹ کو اپنا شفیق اور مهربان سمجھ لے ۔ هم خوب جانتے هیں که جو رعایا کسی گورنمنٹ کے جبر سے اور آس کے دباؤ سے اس کی مطاعت و فرماں برداری کا اقرار کرتی ہے وہ هرگز وفادار کی اطاعت و فرماں برداری کا اقرار کرتی ہے وہ هرگز وفادار نہیں هوتی اور جو رعایا گورنمنٹ کی محبت اور شفقت اور مهربانی سے آس کی گرویدہ هوتی ہے وہ ضرور سچی وفادار هوتی ہے اور یه گرویدگی آسی وقت ممکن ہے جب که گورنمنٹ آس کے کسی معامله میں به جبر دخیل نه هو اور آس کی جان و حفاظت میں نهایت صفائی کا برتاؤ رکھتی هو۔

هم نے آسی عرصه میں جب که اس دربار کا اشتہار هوا تھا اپنی یه رائے ظاهر کی تھی که حتی الامکان یه دربار نہایت پر شوکت هونا چاهیے اور اب بھی هم آسی رائے پر اعتباد کرتے هیں که ضرور اس دربار میں گور نمنٹ هندوستان کو اپنی قوت و حکوست کا دبدبه دکھلانا چاهیے اور اس زمانه میں هندوستان کے خزانه کو ذرا فیاض هی بننا مناسب هے اور جو لوگ اس کو صرف کی زیاتی سے خوف دلاویں ان کی رائے کو هرگزنہیں سننا چاهیے۔ هم سر جان اسٹر یجی صاحب کے واسطے بھی ان وجوہ پر نظر کرنے سے کچھ دقت نہیں سمجھتے۔

رهائی

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ یکم دسمبر ۱۸۷۹ء)

اب یہ خبر بختہ ہو گئی ہے کہ حضور ملکہ معظمہ کے خطاب شہنشاھی قبول کرنے کی خوشی میں بہت سے قیدی ھندوستان کر جیل خانوں سے چھوڑے جاویں گے جس کی نسبت ھارا ھم عصر صاحب راقم دھلی گزٹ اپنا یوں بقین ظاہر کرتا ہے کہ شاید ان کی تعداد فیصدی دس هو ۔ یه بات بهی نهایت اجهی هے که حو قیدی بلحاظ اینر جال چلن کے اچھر ثابت ہوں گے وہ رہائی کے مستحق ٹھہریں کے ۔ دھلی گزٹ کی رائے ھے کہ اگر ان قیدیوں میں عورتیں زیادہ شامل ہوں جو سوائے قتل عمد کے اور قسم کے جرائم میں ماخوذ ھی تو نہایت سناسب ھو ۔ پس ھم بھی اس رائے سے نہایت اتفاق کرتے ھیں۔ ھاری رائے میں عورتیں باعتبار اپنی اصلی فطرت کے بھی زیادہ رحم کے قابل ثابت ہوتی ہیں اور بسبب اینر اصلی خلقت کے آن کے جرائم بھی کسی طرح آس تمرد اور بدی پر محمول نہیں ہو سکتر جس پر مرد کے جرائم محمول ہوتے ہیں۔ تکلیف و مصائب کی برداشت کے لحاظ سے بھی آن کا خلقی صنف آن کا سفارشی ہے۔ یس بلا شبه یه رائے نہایت عمدہ هے که اس شاهانه نخشش میں عورتوں کو زیادہ مہرہ دیا جاوے اور چوں که عورتوں کی تعداد بھی حیل خانوں میں نہایت کم هوگی اور مردوں کی به نسبت وہ بہت کم ماخوذ هوں کی اس لیر اس فیصدی تعداد میں اگر ان کی نسبت

وسعت زیادہ کر دی جاوے تو کسی طرح مردوں کے حق سیں نا انصافی نه ہوگی ـ

گورنمنٹ کی اس فیاضی سے هندوستان میں نہایت خوشی هوگی اور جو هندوستانی مشرق سلطنتوں کے قدیمی دستوروں کو دل سےعزیز رکھتے هیں وَء حد سے زیادہ خوش هوں گے اور جس طرح هندوستان کے خواص اپنے بادشاہ کی وقعت و توقیر اور اُس کی فیاضی سے بخوبی آگاہ هیں اسی طرح عوام بھی یه بات سمجھ جاویں گے که بلا شبه هارا بادشاہ بڑا فیاض هے جس کی فیاضی کا اثر هم تک پہنچ گیا هے گو تربیت یافتہ اور حکیم طبیعت هندوستانی اُس کو نه پسند گرتے هوں۔

حو بد ظنیاں ھاری گور نمنٹ کی اپنی رعایا کی نسبت ھیں وہ به نسبت اس کے نہایت بڑی بڑی هیں اور اس کا زمانه تمام مشرقی سلطنتوں کے زمانہ سے بدرجہا فائق ھے اور اُس کے عہد کی خوابیوں کی کچھ انتہا نہیں ہے لیکن ان تمام باریک اور مستحکم فیاضیوں کو صرف تعلم یافته هی هندوستانی سمجه سکتر هس ـ جو رعائتس گورنمنٹ اپنی رعایا کے حقوق کی نسبت فرماتی ہے اور جو انصاف کا طریقہ اس کی عدالتوں میں رائج ہے اور جو خوبیاں اس کے قانون کی هیں جو امن اس کے عہد میں ہے ، جو ترقی تہذیب کی اُس کے عہد میں ہے ، جو آرام رعایا کو اس کے وقت میں ہے ۔ جو تنگی ظالموں کے واسطے اُس قانون میں ہے وہ تعلیم یافتہ بخوبی جانتے ہیں اور اُس کی قدر کرتے ہیں : سگر ایک عام آدسی جو بازار کا پھرنے والا اور مزدوری کرنے والا ہو وہ اس فیاضی کو سب سے بڑا جانتا ہے کہ بادشاہ نے محھ کو قید سے رہا کر دیا یا محھ کو فلاں کام پر خوش هو کر یه چیز انعام میں عطاکی ـ پس ضرور تھا که حضور سلکه معظمه کے خطاب شہنشاہی قبول کرنے کی خوشی میں وہ شاہانہ فیاضی بھی ظاہر کی جاتی جس سے عوام الناس بھی جانیں کہ ھارے بادشاہ نے یہ احسان کیا ۔

هم جانتے هیں که اس لحاظ سے بھی یه طریقه پسندیدہ ہے که هارے حضور گورنر جنرل بهادر یه دربار ایسے مقام پر بیٹھ کر فرماویں گے جہاں شہنشاهان هندوستان کا تخت تھا اور اس لیے تالیف قلوب کے واسطے بھی ایک ایسی رسم کا برتنا مناسب تھا جس سے هندوستانیوں کے دلوں کو مناسبت هو اور وہ اس سے خوش هوں غرض که بهر کیف اس خوشی میں قیدیوں کی رهائی نهایت عمدہ تدبیر ہے اور هم خیال کرتے هیں که جو لوگ اس بات کا اندیشه کرتے تھے که قیدی رها هو گئے تو هاری کوٹھیوں کے احاطوں میں چوری کریں گے اور هارے مال کی حفاظت میں احاطوں میں چوری کریں گے اور هارے مال کی حفاظت میں فقصان هو گا آن کو اس بات سے اطمینان کر لینا چاهیے که نیک چلن چور چھوٹیں گے جو تم کو اندیشه هو اور چور چھوٹیں گے بد چلن نہیں چھوٹیں گے جو تم کو اندیشه هو اور چوریاں کریں گے ۔ شاید ایسے خیال کے لوگوں کو گوارا نہیں ہے چوریاں کریں گے ۔ شاید ایسے خیال کے لوگوں کو گوارا نہیں ہے

جیل خانوں کی رپورٹ

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ . ۲ آکتوبر ۱۸۷۶)

هم همیشه اس بات کا اقرار کرتے هیں که هندوستان میں گور بمنٹ انگریزی هندوستانیوں کا خوش اقبالی کا نشان ہے اور اس کا قانون اور منشاء قانون انصاف کا حامی اور عقل کے سوافق ہے جس کے سبب سے رعایا آن تمام حقوق اور رعایتوں کی مستحق ھو سکتی ہے جو ایک عادل اور منصف گور نمنٹ کی ظل عاطفت مس هونی چاهئی لیکن با این همه هم کو کبهی کبهی یه کهنا یڑتا ہے کہ فلاں شخص کے معاملر میں انصاف نہیں ہوا اور فلال معامله میں هندوستانیوں کے حق پر نظر نہیں هوئی لیکن تاهم هاری یه رائے کچھ یه ثابث نہیں کرتی که اس بے انضافی کا سبب اصل قانون هوا هے بلکه هم آس کو همیشه خاص افسروں کی غفات یا ہے پروائی کی طرف منسوب کرتے ہیں اور ہم جانتے ہیں کہ اگر وہ افسر احتیاط کریں اور گورنمنٹ کے انصاف کی پوری تعمیل کریں تو هرگز هم کو اس شکایت کا موقعه نه ملر اور بلاشبه اس میں ذرا تردد نہیں ہے کہ آن افسروں کی احتیاط آس وقت ظہور میں آ سکتی ہے جب که حکام بالا دست اپنر ذمه یه بات فرض سمجهیں کہ وقتاً فوقتاً آن افسروں کی بے اعتدالیوں پر تنبیہ و مواخذہ كرتے رهيں اور اگر وہ حكام عالى مقام هي اس ميں چشم پوشى کریں گے تو پھر وہ افسر احتیاط کو عمل میں نہیں لاویں گے اور وہ اپنر اختیارات کو محدود نہیں سمجھیں کے اور اس وجه سے

گور بمنٹ کے اُس قانون کی پوری تعمیل نه هوگی اور هندوستانیوں کی زبان شکایت کو کوئی تدبیر نه روک سکے گی ۔

همیشه شکایت کا منشاء عامه رعایا کی جانب سے یا کوئی حق تلفی هوتی هے یا کوئی ایزا و تکلیف هوتی هے اور جس حالت میں که بعض افسروں کے وہ اختیارات جو آن کے عہدہ سے زیادہ هوں یا قانون کی حد سے باهر هوں رعایا کو تکلیف پہنچاویں گے تو صرف گور بمنٹ کے قانون کی خوبی اور عمدگی کچھ رعایا کی زبان شکایت کو بند نه کر دے گی ۔ هاں البته ایسی حالت میں اصل قانون یا منشاء قانون کی شکایت جائز نه هوگی ۔ اور هم یقین کرتے هیں که ایسی شکایت بجز آن عوام الناس کے جو قانون کو نہیں جانتے ، خواص سے کبھی ظہور میں نه آوے گی پس ایسی حالت میں حکام بالا دست پر بلاشبه واجب هے که وہ اپنے ماتحت افسروں کی کارروائیوں کو نظر غور سے دیکھتے رهبی اور اس بات پر نظر رکھیں که وہ اپنے حد اختیارات سے باهر نکل کر کام کرنا چاهتے هیں یا نہیں ۔

هم اس وقت آس رپورٹ کو دیکھ رہے هیں جو گذشته سنه کی بابت شالی مغربی جیل خانوں کے متعلق ہے۔ آس رپورٹ میں نہایت ایمان داری اور بڑی سچائی کے ساتھ یہ بات بیان کی گئی ہے۔ کہ مہمرہء میں قیدیوں کی زیادتی کا یہ باعث بھی تھا کہ مجسٹریٹوں نے آن لوگوں کو بھی جیل خانه دکھلایا جن سے کوئی خاص جرم وقوع میں نہیں آیا تھا بلکہ صرف یہ بات تھی کہ وہ بیچارے اپنی نیک چلنی کی ضانت نہیں دے سکتے تھے۔ آس کے بیچارے اپنی نیک چلنی کی ضانت نہیں دے سکتے تھے۔ آس کے بعد آسی رپورٹ میں یہ فقرہ مندرج ہے کہ '' سر جارج کوپر صاحب یہ رائے دیتے هیں کہ یہ اختیار جس وسعت کے ساتھ عمل درآمد میں لایا جاتا ہے آس کا دار و مدار زیادہ تر ہر محسٹریٹ

کے ذاتی خیال پر ہے اور یہ وہ اختیار ہے کہ حس کے عمل درآمد پر افسران بالا کو اچھی طرح نظر رکھنا چاھیر ۔ کیوں کہ ایک کم عقل اور بے احتیاط حاکم کے ہاتھ میں ایسر اختیار کا ہونا ظلم کا ایک خطرناک هتهیار هے " پس هم کو دیکهنا چاهیے که سر جان کوپر صاحب ہادر کی یہ عاقلانہ رائے کہاں تک ھاری رائے کو تقویت دیتی هے اور کہاں تک هارا یه خیال صحیح ثابت هوتا ہے کہ جہاں تک هندوستان میں نا انصافی کی شکایت ہے وہ بعض تند مزاج اور نا واقف نو عمر حکام کی اُس بے اعتدالی پر مبنی ہے جو وہ اپنی حدود اختیار سے زیادہ عمل میں لاتے میں اور قانوناً اس کے مجاز نہیں ہوتے ۔ دیکھو اگر حضور سر جارج کوپر صاحب بهادر کی یه رائے صحیح هے (اور بلاشبه صحیح هے) که قیدیوں کی تعداد کی زیادتی بعض محسٹریٹوں کی اس کارروائی پر مبنی تھی کہ انھوں نے غیر محرموں کو جیل خانہ میں بهیج دیا تو شاید هندوستانیوں کا یه کہناکچھ غلط نه هوگا که جو انصاف گورنمنٹ کے قانون میں ہے وہ اس کی عدالتوں میں نہیں ہے اور جو انصاف و اضعان قوانین کے دل و زبان میں ہے آس کا ظہور آن لوگوں کی کارروائی سے نہیں ھرتا جو اُس کے عمل درآمد کے ذمہ دار ھیں۔ ھر ضلع کا محسٹریٹ اپنر ضلعمیں ایک ایسا بادشاہ ہوتا ہے کہ اس کا حکم گورنمنٹ کے حکم سے سابق ھو سکتا ہے اور گورنمنٹ کا کوئی حکم بغیر اُس کی مداخلت کے نہیں نافذ ہوتا ۔ پس اگر ایسر ذی اختیار شخص کو اپنر اختیارات کے عمل درآمد میں حد قانون کی پابندی نه هو اور اس کو کسی قسم کی باز پرس کی پروا نه هو تو اس میں کسی طرح کا شبه نہیں ہو سکتا کہ یہ اختیار ایک بہت بڑے ظلم کا نشانہ ہوگا اور ایسر تیر کے نشانہ کے سامنے رعایا کے جان و مال کی حفاظت کی امید

نہایت امر موہوم ہوگی جس کے سبب سے رعایا ہرگز امن و اطمینان کے ساتھ اپنی زندگی بسر نہ کر سکے گی بلکہ ہمیشہ ایک خوف و اندیشہ کی حالت میں زندگی بسر کرے گی ۔

کیا ایک شریف رعایا کو اس سے زیادہ کسی بات کا اندیشه ھو سکتا ہے کہ آس کے ضلع کا حاکم بغیر کسی قانونی جرم کے **ا**س کو جیل خانہ دکھلا سَکے اور بغیر کسی قصور کے اُس کی آبرو کو خراب کر سکر ۔ کیا جس حالت میں ایک ضلع کا محسٹریٹ کسی شریف آدمی کو صرف اس قصور پر ماخوذ کر سکر که اس نے هم کو راسته میں سلام نہیں کیا یا اُس نے هم کو دیکھ کر سواری سے اترنا نہیں چاھا یا آس نے سڑک پر ھاری برابر بگھی چلائی تو کیا ایسر ضلع میں امن ہو سکتا ہے اور رعایا خیال کر سکتی ہے کہ ہارہے حقوق محفوظ ہیں اور ہم ایک نہایت خوش فزا قانون کے باغ میں دم لے رہے ہیں اور کوئی چیز ہارے سانس کو نہیں روکتی ۔ ہاری رائے سیں ہرگز نہیں ہو سکتی اور اسی لحاظ سے ہارے حکام عالی مقام کا فرض ہے کہ وہ ماتحت افسروں کی ایسی حرکتوں کو دیکھتے رہیں ۔ ہم اسی وجہ سے مدح کرتے ہیں اس بات کی که فلر صاحب کے مقدمه میں حضور لارڈ لٹن صاحب ہادر کی کارروائی نہایت عمدہ اور ایسر ٹھیک وقت پر ہوئی جب کہ **ا**س کی نہایت ضرورت تھی ۔ اگر حضور لارڈ لٹن صاحب بہادر کی مانند یه تنبیهه پہلے سے هوتی تو اضلاع شالی کا ایک مجسٹریٹ اپنی عدالت میں ایک هندوستانی وکیل کے سر پر اس جرم میں جوتیاں نہ رکھواتا کہ وہ عدالت میں اُس کمرہ کے اندر جوتا ہنر چلا آیا جس میں صاحب محسٹریٹ ہادر کی عدالت کا کہرہ تھا۔

اس رپورٹ میں آن اختیارات کا بھی ذکر ہے جو صاحبان سپرنٹنڈنٹ جیل خانہ قیدیوں کی سزا کے متعلق عمل میں لاتے ہیں

اور آس کی نسبت یه بیان کیا گیا هے که صاحبان سرنٹنڈنٹ جیل خانه اس باب سی متفق نہیں ھیں بلکه ھر ایک جرم کی نسبت ھر ایک کی رائے مختلف ھے اور اُس کی نظیر میں ذکر کیا گیا ہے کہ بعض سپرنٹنڈنٹ قیدیوں کے پاس تمباکو کا نکانا قتل عمد کی حد سے کچھ ہی کم سمجھتر ہیں اور بعض اس کو نهایت خفیف اور بعض بالکل جرم هی نهری سمجهتر اور اس قباحت کے رفع کرنے کے واسطے حضور سر جارج کوپر صاحب بہادر یه تجویز فرماتے ہیں کہ حرموں کے درحہ مقرر کیر جاویں اور آن کی سزا متعین کر دی حاومے صرف اس کا تصفیه صاحبان سیرنٹنڈنٹ کی رائے پر چھوڑ دیا جاوے ۔ پس ھم سر جارج کوپر صاح**ب کی** اس تجویز کو نہایت عمدہ سمجھتر ہیں اور ہم کو آسید ہے کہ جو اندھیر بغیر کسی قاعدہ کے ھوتا ھے وہ ضرور اس تجویز سے کم ہو جاوے گا - گو یہ تجویز آس اختیار کو نہ روک سکے گی جو باوجود ضبط قانون کے بھی بعض حکام اپنے ذاتی خیال سے عمل میں لاتے هیں ۔ چناں چه حضور ممدوح خود هی اس بات کو تسلم کرتے ہیں کہ بعض محسٹریٹوں نے قیدیوں کے جیل خانہ بھیجنر میں اپنر ذاتی خیال کی پابندی کی ۔ پس اسی طرح سیرنٹنڈنٹ جیل خانہ بھی باوجود حد اختیار کے کسی اپنر ذاتی خیال کا پابند هو سکتا هے اور اس کی بات تدبیر هاری دانست میں کسی جدید قانون کی تجویز سے ایسی ممکن نہیں ہے جس قدر کہ حکام بالا دست کی تنبیه سے متصور ہے ۔

جیل خانہ میں بعض نیک چلن قیدیوں کی سزا میں کبھی کمی کرنے کا قاعدہ مفید بیان کیا گیا ہے اور اس میں کسی طرح کا شبہ نہیں ہے کہ وہ ضرور مفید ہے اور ایک ایسے شخص کو جو اپنے جرم کے سبب سے جیل خانہ میں آیا ہے نہایت بڑی

نیک چلنی کی ترغیب دیتا ہے مگر یہ بات نہایت سچ ہے کہ یہ ترغیب صرف انہیں مجرموں کو ھو سکتی ہے جو اپنے کسی اتفاقیہ جرم سے قید ھو گئے ھیں اور جو مجرم جرم کے عادی ھو گئے ھیں اور جن کو کسی نوع کا پاس عزت نہیں رھا اُن کے حق میں یہ تدبیر مفید نہیں ہے ۔ پس اس لحاظ سے حضور سر جان اسٹریجی صاحب بہادر کی یہ رائے نہایت عمدہ معلوم ھوتی ہے کہ سزا کی تخفیف یا اور کسی قسم کی رعایت کا طریقہ صرف انہیں قیدیوں کے واسطر مناسب ہے جو ھمیشہ جرم کے عادی نہیں ھیں ۔

ھم بھی اس بات کو تسلم کرتے ھیں کہ جیل خانوں کے سرنٹنڈنٹوں کے اختیارات اور آزادی میں خلل ڈالنا نہیں چاھیر کیوں کہ بہ نسبت اور افسروں کے وہ ایک سخت اور خطرناک انتظام کا ذمہ دار ہوتا ہے اور سیرنٹنڈنٹ جیل خانہ کے زیر حفاظت ایک بڑا بھاری گروہ آن بدسعاشوں کا ہوتا ہے جو تمام ضلع کے بدمعاشوں کے انتخاب ہوتے ہیں اور اب جہاں تک جیل خانوں میں آسائش کے قواعد زیادہ ہوتے جاتے ہیں اور جیل خانہ کے اندر قیدی آزاد ہوتے جاتے ہیں اور سوائے ایک خاص قسم کے قیدیوں کے بیزیوں وغیرہ سے خالی رہتر میں اسی قدر جیل خانوں میں خطرہ زیادہ ہوتا جاتا ہے۔ پس اب اگر ایسر گروہ کے محافظ کے اختیارات میں خلل ڈالا جاوے تو بلاشبہ انتظام میں رخنہ ہوگا اور همیشه ایک اندیشه رهے ً گا ۔ مگر جس طرح هم اس قدر آزادی کے موید ہیں جو اس انتظام کے واسطر کافی ہو ، اسی قدر آس آزادی کے مخالف ہیں جس سے صاحب سیرنٹنڈنٹوں کو قیدیوں کے ساتھ آس قسم کے سلوک کرنے کا اختیار حاصل ہو جاوے جو ایک انسان کیا معنی ایک ذی روح کے بالکل مناسب حال نہ ہو۔ جیل خانہ محرم کی همت اور اس کے جرم کی قوت اور اس کے دلی جوش اور طراری کے کم کرنے کا ذریعہ ہے۔ کچھ مجرم کی روح کے فنا کرنے اور اس کی جسانی اور روحانی تندرستی کے ضائع کرنے کا ذریعہ نہیں ہے۔ پس جو عمل درآمد قیدیوں کی روح اور آن کی صحت کو فنا کرے وہ ضرور سپرنٹنڈنٹوں کے اختیار سے باھر ھونا چاھیے اور ھمیشہ اس باب میں آن کے اختیارات کی ایک حد ھونی چاھیر۔

هم دیکھتے هیں که بعض ارباب فہم همیشه قیدیوں کے حق میں اس رعایت کی درخواست کرتے هیں جو آن کے واسطے کسی طرح مناسب نہیں هوتی اور اسی طرح بعض ارباب اس ظلم اور شدت کی درخواست کرتے هیں جو انسان کے واسطے عقلاً جائز نہیں هے مگر هم همیشه ان دونوں رایوں کے مخالف رہے هیں کیوں که هم جانتے هیں که بے جا رعایت کے سبب سے سزا سزا نہیں رهتی اور بے انتہا شدت کے سبب سے سزا ظلم هو جاتی ہے۔ هم اس رائے کو نہایت هی پسند کرتے هیں که قیدی کو بجائے اس کے رائے کو نہایت هی پسند کرتے هیں که قیدی کو بجائے اس کے ایک بارکسی جرم پر تیس بید لگائے جاویں بہت بہتر ہے که چار پائ ابر اس کو یه سزا دی جاوے کیوں که تقسیم سزا سے اس کی روح بار اس کو یه سزا دی جاوے کیوں که تقسیم سزا سے اس کی روح اور جسم پر نا واجب صدمه نه پہنچے گا اور ایک سپرنٹنڈنٹ کو اس طریقه سے چند بار اپنے اختیار کے عمل میں لانے کا موقع ملےگا۔

هم نہایت خوش هیں اور نہایت شکر گزار هیں حضور سر جارج کوپر صاحب بہادر کی آن منصفانه رایوں کے جو حضور محدوح نے اس رپورٹ میں ظاهر فرمائی هیں اور هم کو آسید هے که حضور لارڈ لٹن صاحب بہادر اور حضور سر جارج کوپر صاحب بہادر کی وہ توجه جو انھوں نے هندوستانیوں کی حالت اور افسروں کے عمل درآمد کی نسبت فرمائی هے ، هندوستان میں نہایت انصاف پھیلاوے گی

اور گور بمنٹ انگریزی کے عادلاندہ قانون کی وقعت رعایا میں بٹھلا دے گی اور جس طرح حضور لارڈ لٹن صاحب کی آس کے دل تنبیہ نے ھندوستان کی عام عدالتوں کو فائدہ پہنچایا اسی طرح مسٹریٹ اور نیز جیل خانوں کے آن سپرنٹنڈنٹوں کو متنبہ کرے گی جسٹریٹ اور نیز جیل خانوں کے آن سپرنٹنڈنٹوں کو متنبہ کرے گی جو ایک چلم تمباکو کو قتل عمد کے قریب قریب سمجھ کر نہایت بے رحمی سے قیدیوں کو سزا دیتے تھے اور جو رحم انسانی هم دردی کے لحاظ سے ھونا چاھیے اس کو کام میں نہیں لاتے تھے اور اس قسم کی تنبیہیں انصاف کی ترق میں اس قدر فائدہ بخشیں گی کہ اس قدر چند جدید قانون ھرگز نہ بخشتے کیوں کہ ھاری رائے میں زیادتی قانون ھمیشہ معاملات کی پیچیدگی کو بڑھاتی ہے اور حکام بالا دست کی نگرانی فوراً ایک کام کو اپنے موقع پر پورا کر دیتی ہے۔

عدالت مائے سرکاری کی تخفیف

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ۲۲ ستمبر ۲۸۵۹)

آج کل سرکاری عدالتوں میں تخفیف کی خبر گرم هونے سے ایک عجیب کھلبل پڑی ہوئی ہے اور جو شخص ہے اسی فکر میں مبتلا ہے ۔ جو لوگ معرض تخفیف میں ہیں ان کو اس بات کا خیال ہے کہ اول تو روزگار ہاتھ سے جاتا ہے دوسرے وہ بمام استحقاق جو مدتوں حان مار کر اور اپنا اچھا وقت سرکاری ملازمت میں گزران کر پیدا کیا تھا ھاتھ سے جاتا ہے اور ہت سوں کو یہ فکر ھے کہ اب آئندہ بوڑھی عمر میں نو کری کے تو لائق نہیں ھیں دیکھیے عمر کس مصیبت میں کٹے گی اور کس ذلت سے زندگی بسر ہوگی اور بہت سے ایسر لوگ جو تخفیف کے دغدغہ سے انمن ہیں اس فکر میں سرشار میں که حب تحقیف هوگی اور ملازم کارکن کم ھو جاویں کے اور کام عدالتوں کا بدستور رہے گا تو ہمر کیف انھیں عدالتوں میں انہیں باقی ماندہ ملازموں سے وہ کام پورا کرایا حاوے گا کیوں کہ اس کا سر انجام بجز اس کے اور کس طرح ہو سکتا ہے کہ جو شخص موقوف هو آس کا کام اوروں پر منقسم هو جاوے اور یہی باقی ماندہ لوگ اس کے کفیل ہوں ۔ پس ایک تو پہلے ہی سے ہم لوگ مر رہے ہیں کہ کام حد سے زیادہ ہے ۔ نہایت مشکل اور بڑی بڑی مصیبتوں سے پورا ہوتا ہے ۔ صبح سے آتے ہیں شام کو جاتے میں۔ نه کھانے کی خبر ہے نه بہننے کی خبر ہے۔ بسته سامنر رکھا ہے دوات قلم سے باتیں ھو رھی ھیں۔ نہ تعطیل کی

خبر هے نه رخصت کا خیال ۔ نه چھٹی کا ذکر هے ۔ صرف کام هی کام یاد ہے اور جب تخفیف شدہ سلازسوں کا کام بھی ھارے سر آ پڑا تو دیکھیر کیا ھوتا ھے۔ جرمانوں کے ھی مارے کام تمام ہو جاوے گا اور کام پورا نہ ہوگا ۔ یا گورنمنٹ کے نزدیک نالائق ٹھہریں گے یا خود دق ہو کر نوکری چھوڑ دیں گے ۔ غرض که جو لوگ تخفیف کے لائق ہیں وہ بھی اور جو تخفیف سے بچر ہوئے هیں وہ بھی دونوں مصیبت میں گرفتار هیں اور یه بھی ضرور هے کہ تخفیف ہوئے بغیر نہیں رہ سکتی ۔ چاندی کا نرخ گھٹ گیا ہے ۔ روپیہ کی ضرورتس پیش ہیں۔ آمدنی بدستور خود ہے پھر تخنیف نه هو تو کیا هو مگر هم کو حرانی په هے که اس قسم کی تخفیف سے حو سردست گورنمنٹ نے تحویز فرمائی هیں نتیجہ کیا هوگ ـ کیا گورنمنٹ کی کچہریوں میں دو چار چیزاسیوں اور دو چار پرانے محرروں اور دو چار بستہ برداروں ایک دو دفتریوں اور بڑے سے بڑے ایک دو زائد پیش کاروں کی تخفیف سے کوئی ایسا معتدیه خزانه جمع ہو جاوے گا جو قابل اعتبار ہو یا اس کے سبب سے کوئی بڑا خرچ موقوف ہو جاوے گا جس کی گورنمنٹ برداشت نہیں کر سکتی _ یا دس بیس چوکی داروں کے سوقوف کرنے سے گورنمنٹ کچھ کام چلا سکتی ہے جے اس پر نظر ہو۔ ھاری دانست میں ایسر لوگوں کی تخفیف سے سوائے واویلا اور فریاد کے پیدا ہونے کے اور کوئی نتیجہ نہیں معلوم ہوتا اور ایسر لوگوں کی تخفیف سے علاوہ فریاد کے انتظام کی ابتری کا بڑا اندیشہ ہے۔ اگر بجائے دس چپراسیوں کے آٹھ تجویز ہوں گے تو سوائے اس کے اور کیا ہوگا کہ دس کا کام آٹھ کو کرنا پڑے گا اور اس کے سبب سے جو کام جلد هوتا تها وه دیر میں هوگا اگر دس محرروں میں دو کم هو جاویں کے تو جو کام ایک گھنٹہ میں ہوتا تھا وہ سوا گھنٹہ میں ہوگا ۔ اگر

کے اهل کار کم هو جاویں گے تو آسی قدر حکام کو دقتیں بڑھ جاویں گی اور جس اطمینان سے اس وقت کام چل رہا ہے وہ نه رہے گا۔ حکام کی محنتیں زیادہ هو جاویں گی۔ غرض که اس وقت سوائے اس کے که ایسی تخفیف سے مصیبت زیادہ هو اور کچھ سود نہیں معلوم هوتا۔

هم حیران هیں که گورنمنٹ کی نظر ایسی تخفیف پر کس غرض سے هے ۔ اگر وہ تخفیف هی کرنا چاهتی هے تو ایسا کیوں نہیں کرتی که جو ضلع قریب قریب هیں آن میں سے جس ضلع کو چھوٹا خیال کرے آس کو توڑ کر اور بڑے ضلعوں میں شامل کر دے اور اس تدبیر سے لاکھوں روپیه کی بچت حاصل کرے اور اگر ضلعوں کے توڑنے میں دقت معلوم هو تو جو لوگ بڑے بڑے تنخواہ دار هیں آن کی تنخواهوں میں سے ایک معتدبه حصه کی تخفیف کر دے تاکه جو انتظام هے وہ بجنسه باقی رهے اور کسی طرح کا هرج بھی نه هو اور تخفیف بھی هو جائے ۔ جو افسر اس وقت دو دو هزار اور چار چار هزار تنخواه پاتے هیں اگر ان کی تنخواهوں میں سے دو دو سو چار چار سو کی تخفیف مو جاوے تو دو هی افسروں کی تنخواہ کی خفیف سے اس قدر بچت هوگی که پچاس محرروں کی تخفیف سے اس قدر نہ هوگی که پچاس محرروں کی تخفیف سے اس قدر نہ هوگی اور کام بدستور چلے گا۔

گو هم یه نہیں کہ سکتے که حاکم عدالت اور پیش کار عدالت کا کام کچھ باهم مقابله کرنے کے لائق ہے جس کے سبب سے هم یه کہه سکیں که پیش کار کام حد سے زیادہ کرتا ہے اور تنخواہ صرف سو سوا سو روپیه پاتا ہے اور حاکم کام تھوڑا کرتے هیں اور تنخواهیں زیادہ پاتے هیں کیوں که هم جانتے هیں که هرگز ایک حاکم کا کام ایک سرشته دار کے کام سے کچھ مناسبت نہیں رکھتا لیکن تاهم ان کی تنخواهوں میں سے سو دو سو روپیه کا کم هو جانا لیکن تاهم ان کی تنخواهوں میں سے سو دو سو روپیه کا کم هو جانا

کچھ مخل مطلب نہیں ہو سکتا پس نہایت مناسب ہو کہ ہاری بیدار مغز گورنمنٹ غریبوں کی تخفیف سے باز رہے اور بجائے اس کے مذکورہ بالا دونوں تدبیروں میں سے ایک کو اختیار کرے ـ

ھاری گور نمنٹ اس بات پر بھی نظر فرماوے کہ اب یولیس کے سررشتہ کی بدولت کیا صرف ہوتا ہے اور ملرکیا صرف ہوتا تھا اور انتظام کے لحاظ سے پہلے کیا تھا اور اب کیا ہے ۔ پہلے دو دو سو روییہ کے تھانے دار اور ہزار ہزار پان پان سو کے سرنٹنڈنٹ کماں تھر اور اس قدر صرف کی کب ضرورت تھی اور اب تو کچھ ٹھکانا نہیں ہے۔ پس اگر گورنمنٹ تخفیف کی ہی خواست گار ہے تو یولیس کی طرف کیوں نہیں متوجہ ہوتی اور بڑے بڑے یورپین صاحب کیوں معرض تخفیف میں نہیں آتے ۔ خصوصاً اس حالت میں کہ اب یولیس کے انتظام کا انتلاب ہوگیا ہے اور افسران پولیس کی ذمه داری بہت کہ ہوگئی ہے اور آن کا کام بہت کم ہوگیا ہے اور پولیس کی تخفیف سے بھی ہارا یہ مطلب نہیں ہے کہ بے چارے کانسٹیبل جو تنخواہ پایخ سات پاتے ہیں اور وقت اور محنت میں سپرنٹنڈنٹ صاحب سے زیادہ مبتلا رہتر ہیں آن کی تخفیف کی جاوے بلکه تخفیف انھیں کی کی جاوے جو بے کار بیٹھر ہوئے پنشن پاتے ہیں کیوں کہ کانسٹیبلوں اور محرروں کی تخفیف سے تو کام میں سراسر هرج ہو جاوے گا اور مجائے چار فضول افسروں کے ایک افسرکی کمی سے کچھ هرج نه هوگا ـ

ھاری گورنمنٹ کو معلوم ہے کہ پہلے ہی تھانہ دار اور برقنداز تھے اور رعیت کی حفاظت کا کام بڑی آسانی سے چلتا تھا اور تنخواھیں آن کی به نسبت اس زمانے کے نہایت کم تھیں اور ابتخواھیں اور افسر جس قدر زیادہ ھوگئے ھیں اسی قدر کام میں ابتری زیادہ ہے پس بلا شبہ تخفیف کی گنجائش پولیس کے انتظام میں

ہت ہے اور اس قدر بڑی بڑی تنخواہوں کے یورپین افسر کچھ ضرور نہیں ہیں ۔ کچھ ان کی تعداد کم ہونی چاہیے اور کچھ تنخواہوں میں کمی ہونی چاہیے ۔

سرشتہ تعمیرات سرکار بھی اور محکموں کی بہ نسبت زیادہ نگرانی کے لائق ہے اور اس کے مصارف کی کمی سے بھی بہت کام نکل سکتا ہے ۔ پس اگر بجائے ایسے موقعوں کی تخفیف کے صرف چند چپراسی اور محرروں اور پیش کاروں کی تخفیف کی جاوے تو بڑے افسوس کے لائق بات ہوگی ۔

گور بمنٹ سے یہ امر بھی نہایت بعید ہے کہ جب وہ کسی قسم کی تخفیف تجویز کرتی ہے تو پہلے سے یہ تجویز نہیں فرماتی کہ جو لوگ بلا قصور و بلا جرم تخفیف میں آکر اپنے تمام حقوق ملازمت سے محروم ہوں گے آن کی حق تلفی کی کیا تلافی ہوگی ۔ ہاری دانست میں جو لوگ پوری پنشن کے مستحق ہو چکے ہیں صرف تھوڑی سی کمی باقی ہے تو بلا شبہ آن کو پنشن ملنی چاھیے اور جو لوگ پوری پنشن کے مستحق نہیں ھیں آن کے استحقاق پر نظر کرنے سے آن کو اور سرکاری سر رشتوں میں جو تخفیف سے مغوظ رہے ھیں بھرنا چاھیے تاکہ وہ لوگ بالکل محروم نہ کیے جاویں اور اگر آن کے واسطے کچھ بھی نہ ہوکا تو ھاری گور نمنٹ جاویں اور اگر آن کے واسطے کچھ بھی نہ ہوکا تو ھاری گور نمنٹ کیوں کر اس بات کو تجویز فرماوے گی کہ صد ھا بندگان خدا ایک بلائے نا گہانی میں آ جاویں گے اور کسی قصور میں ملزم نہ ہوں گے ۔ جس بارہ میں ھاری مذکورہ بالا رائے ہے اس کے متعلق مندرجہ ذیل آرٹیکل پڑھنے کے لائق ہے جس کو ھم نورالابصار متعلق مندرجہ ذیل آرٹیکل پڑھنے کے لائق ہے جس کو ھم نورالابصار سے نقل کرتے ھیں:

'' سرکار دولت مدار کے خزانہ ،یں ٹوٹا پڑے تو بڑے تعجب کی بات ہے ۔ اگر سمندر سوکھ جائے تو ندی نالوں کی کیا گنتی ہے

لیکن جب که حقیقت میں یه حال هے تو البته سرکار کو اس ٹوٹے کی تدابیر کرنی ضرور ہے اور تدبیر اس کی دو طرح سے ہو سکتی ہے ـ یا آمد بڑھے یا خرچ گھٹر ۔ آمد کا بڑھنا تو ٹیکس اور مال گزاری وغیرہ سے ہے۔ سو مال گزاری تو اس حد تک بہنچی ہے کہ زمین داروں پر اس کا بڑھانا دشوار ھے بلکہ اندیشہ ھوتا ھے کہ کمہیںکمہیں سرکار کو گھٹانی بڑے گی اور ٹیکس کی آزمائش انکم ٹیکس سے ہو چکی ہے کہ دو چار سال میں خلقت نے تنگ ہو کر اس قدر شور و غل محایا جس سے آخر کو وہ ٹیکس موقوف کرنا بڑا۔ اس طرح دروازے آمد کے تو بند ہیں ۔ اب رہی تخفیف سو اُس کی طرف سرکار فیض آثار نے رجوع کی ہے ۔ خبر ہے کہ ہر سر دفتر کے نام مہت تاکیدی حکم اس بات کے جاری هوئے هیں که جس طرح بنے عملہ کی تخفیف کرو اور جو تم نہ کرو گے تو گورنمنٹ یہ کام اپنے ہاتھ میں لے گی لیکن جہاں تک غور کی جاتی ہے اس تخفیف میں تو کسی طرح سرکار کا پورا پڑنا نظر نہیں آتا الٹی رعیت کی خرابی ہوگی ۔ گورنمنٹ کے سیکرٹریٹ اور اکاونٹنٹ کے دفتر میں اگر تخفیف ہو تو خود گورنمنٹ کو دقت پڑے اور نگرانی اور اوپر کی سنبھال میں فرق آئے ممکن ہےکہ گورنمنٹ اس کی نگرانی اور سنبھال کے لیے اسی پر اکتفا کرے کہ کچھ ضروری ضروری کاموں کے لیے تھوڑے اہل کار اور عملہ رکھ لر یا سب کو کہر کہ سلام کرو اور گھر بیٹھو لیکن اس طرح سے شاید کام چلنا مشکل معلوم ھوتا ہے ۔ اسی واسطر ان دفتروں میں تخفیف کرنے کا کچھ ذکر نہیں ہے اور ریونیو بورڈ ایک ایسا دفتر ہےکہ اسی پر مال کا مدار ہے اس لیے وہ بھی تخفیف سے محفوظ ہے اب چلو کمشنری سے سو وہاں حاکموں کی تنخواہیں تو تین تین ہزار اور آن کے سررشتہ داریا ہیڈ کارک جن سے تمام کام نکاتے ہیں گویا کمشنروں کے ہاتھ پاؤں یہی ہیں

آن کی تنخواہیں سو ڈیڑھ سو کے اوسط سے زیادہ نہیں ـ

اب دیکھنا چاھیر کہ بچیس تیس گنا تو ابھی فرق ھے۔ حب تخفیف سے اور زیادہ ہوا تو ادھر ھندوستانیوں کے روزگار میں خلل پڑا کیوں که بیش تر یہی ان عہدوں پر مقرر هیں آدهر رشوت ستانی کی رغبت کے لیر ایک نیا سبب پیدا ہوا اور کاکٹروں اور مسٹریٹوں کے دفتروں میں تو ذرا سی تخفیف میں رعیت پر ایک بڑی آفت آن ٹوٹے گی ۔ سرکار کے لیر یہ بات ہت غور کرنے کے لائق ھے کہ سوائے کاغذی گھوڑوں کی سواری کے جس سے مراد رپورٹ وغیرہ ہے جو بعد بھگت جانے سب کاموں کے صرف گورنمنٹ کے سمجھانے کے لیرکی جاتی ہے اور جتنی باتس میں عملہ کے ھاتھ سے نکاتی ھیں بانخ روپیہ کے محرر سے سو ڈیڑھ سو روپیہ مہینہ تک کے سر رشتہ دار ان سب کاموں کو پورا کرکے کاکٹروں اور محسٹریٹوں کے سامنر رکھ دیتر ہیں تب وہ ان پر حکم جڑھاتے هیں ـ اگرچه یه حاکم کیسے هی هوشیار هوں لیکن ان لوگوں پر اعتبار رکھر بغیر آن کا کام ایک دم بھی نہیں چل سکتا ۔ سو آن کی تنخواهوں اور کلکٹروں اور محسٹریٹوں کی تنخواهوں میں اتنا فرق ھے کہ کہیں قریب دس گنے کے اور کہیں اس سے بھی بہت زیادہ اور یھر ھر اھل کار کے ذمہ کام اتنا کہ تمام دن پسائی کرمے بلکہ رات کو بھی گرہ سے تیل منگا کے اور گھر کا چراغ جلا کے بیٹھر ۔ تب اس سے چھٹکارہ پائے ۔ جب ان لوگوں کی تنخواہوں کا وہ حال اور کام کی یه صورت اور اعتبار کی وه حد که بدون اس کے جناب صاحب مادر مد فاضل هو كر بيٹھ رهيں تو تعجب هے كه تخفیف کی صورت میں ان عمله والوں کو تکایف دی جائے اور رعیت کے انصاف میں خلل ڈالنر کی رغبت پیدا کی جائے ۔ پھر بھی آفریں ہے اس فرقه هندوستانی پر که باوجود اس کے روکھی سوکھی

پر صبر کرکے اپنا کام دیتر ہیں اور اپنی شہنشاہ ملکہ معظمہ کی بڑھتی دولت کی دعا کرتے رہتر ہیں اور افسوس ہے ان کے حال پر کہ جب سرکار مس ٹوٹا پڑے تو ان بے چاروں کی تھوڑی تنخو اھوں سے اس کے پورے کرنے کی فکر کی جائے اسی طرح پولیس میں دیکھو تو اب جناب سر جان اسٹریجی ہادر کے نئر انتظام سے جتنر عہدہ دار اہل یورپ انسپکٹر سے اوپر درجے کے ہیں سب بے کار ھوگئر اور واقع میں پیش تر بدوں ان کے پولیس کا انتظام ایسا ھی رعایا کے نزدیک چلا حاتا تھا حیسا کہ اب ھے لیکن اس پر بھی ان کی تنخواہوں اور ہندوستانی انسیکٹروں کی تنخواہوں میں بڑا فرق ہے اور نیچر اتر کر کانسٹیبلوں تک دیکھا جائے اور صفائی کے چوکی داروں پر نظر کی جائے که وہ بھی پولیس میں داخل ہیں تو زمین آسان کا فرق ہے۔ جس پر ان ادنٹی ادنٹی اہل کاروں کو رعایا کی نسبت وہ اختیار ہے کہ اچھر اچھر بھلر مانس ذی عزت آن سے ڈرتے ھیں۔ اب اگر آن کی تنخواھوں میں خدا نخواسته تخفیف ہو تو اور بھی قیامت مجےے۔ پہلے تو خود اُن کے ہی بال بچوں پر آن بنے ۔ پیچھر رعیت کو اُن کے ھاتھ سے مشکل پڑے اور جو آن کی تعداد کم کی حائے تو رعیت کے انتظام میں **ا**سی قدر خلل پڑے ۔ کیا عجب ہے کہ وہی کانسٹیبل جو بے روزگار ھو کر گھر بیٹھیں کوئی معاش کا ذریعہ نہ دیکھ کر چور*ی کو* آسان وسليه پيٺ بهرنے کا سمجهس ـ مختصر په که به ظاهر هندوستاني عملوں میں تو ایسر بیان سے کسی طرح گنجائش تخفیف کی نظر نہیں آتی ۔ البتہ بڑے بڑے عہدہ داروں میں تخفیف تنخواہ اور تخفیف عمدہ کی بہت گنجائش ہے۔ اسی طرح عدالت میں بھی اگر ھائی کورٹ کا ایک حاکم بھی کم کر دیا جائے تو سینکڑوں کی تخفیف سے زیادہ کی تخفیف ہو جائے اور ججوں کی تنخواہ کے کم

ھو جانے سے بھی کسی طرح کا نقصان عدالت میں نہ ھو بلکہ یہ سر رشته تو اسی لائق هے که بالکل نیا بندوبست کیا حائے ۔ ان صیغوں کے سوا ایک صیغه تعمیرات سرکاری هے اس میں بھی تخفیف کی بہت گنجائش ہے اگرچہ آس کی نسبت گور نمنٹ ہند نے اتنا لکھا ھے کہ اس کا سر رشتہ زائد موقوف ھو لیکن ظاھرا اس میں اور بھی ہت کچھ تخفیف ہو سکتی ہے ۔ ہر کیف محض ہندوستانی عملوں کی تخفیف سے یورا پڑنا دشوار ہے اور یہ بات مصلحت سے بھی بعید ہے خاص ایسر وقت میں کہ ادھر تو ولایت کے حکام ھندوستانیوں کو بڑے بڑے عہدوں کے دینر کی تحویز کرتے میں اور جامتر میں کہ اس سلوک سے ہندوستانیوں کے دلوں کو خوش کریں اور ادھر یہ تخفیف شروع ہو۔ دس پایخ کو بڑے بڑے عہدے دے کر خوش کرنا اور ہزاروں کو تخفیف کی بلا میں ڈالنا اور اُس تخفیف سے جو اور خراب نتیجر پیدا هوں کے ان کو گوارا رکھنا اور پھر یہ اسید کرنا کہ ہندوستان کے لوگ دل سے خوش ہوں گے ہم کو اپنی سرکار عاقل اور عاقبت اندیش رحم دل کی دانائی کی تدبیروں کے خلاف معلوم هوتا ہے ۔ خصوص ایسر وقت میں که ملکه معظمه نے اپنی هندوستانی رعایا کو خبر خواه اور دلی تابعدار سمجھ کر آس کو زیادہ راضی اور خوش کرنے کے لیر یه عنایت کی که اپنر واسطر هندوستان کی شمهنشاهی کا خطاب لیا ـ بالفرض اگر ایسا هی ٹوٹا پڑا ہے اور ہندوستانیوں کی تخفیف سے ہی آس کا پورا پڑتا ہے تو پھر برس دو برس بعد دیکھ لیا ھوتا۔ اس وقت تو مجائے آس خوشی کے اس تخفیف کا غم دینا نہ چاھیر اور جن کی تخفیف ھو آن کے متوسلوں اور نوکر چاکروں پر بے روز گاری کی بلا نہ ڈالنی چاھیے ۔ سوچنے کی بات ہے کہ نواب وائسرائے بہادر دھلی کے دربار کا اشتہار کس شوق سے دیتے ھیں اور فرماتے ھیں کہ اس

خطاب کی خوشی کو رعیت طرح طرح کے جشن اور خوشی کے سامان سے ظاہر کرے اگر ان هی دنوں میں یه تخفیف جاری هوئی تو تمام سرکاری دفتروں میں اس خوشی کے بدلے اس غمکا رونا پڑے گا۔ یه نحوست هم هندوستانیوں کی هے که اگر ایک پهول هاته آئے تو اس کے ساتھ کانٹا بھی لگا هوتا هے اور جو ایک پیاله شربت کا ملے تو آس میں کچھ زهر بھی گھلا هوتا هے۔ لو دیکھو کیا تو وقت اس خوشی کا که ملکه معظمه هندوستان کی شمنشاهی کا خطاب لیں اور کیا یه آفت تخفیف کی که هزاروں کے دلوں کو رہج پیدا هو۔

قاتل تحصيل دار فتح آبال

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ۲۹ دسمبر ۱۸۷۶ء)

صاحب راقم آگره اخبار رقم طراز هیں که مولوی عبدا لحفیظ تحصیل دار فتح آباد کے قاتل کو ہائی کورٹ سے پایخ برس کی قید کی سزا ھوئی کیوں که صاحب جج آ گرہ نے اس کے لیے سفارش کی تھی کہ اشتعال طبع کی جحت سے یہ فعل اُس سے سرزد ہوا۔ ہارے نزدیک یه رائے صاحب جج کی صحیح نہیں ہے ۔ کیوں که قانون اشتعال طبع کے واسطے شرافت شرط ہے۔ ایک کمینہ آدمی کے واسطے اشتعال طبع سزا وار نہیں ہے۔ دوسرے یہ که اشتعال طبع كے واسطے فوراً اس فعل كا كر بيٹهنا لازم هے اور اس سوقع پر ايسا نہیں ہوا کیوں کہ قاتل خود اپنر اظہار میں بیان کرتا ہے کہ دو مہینے سے میں آن کے مارنے کی فکر میں تھا۔ پس یه اشتعال طبع کہاں رہا ؟ یہ تو ایک صریح خباثت اور آقا کشی تھی جس کے عوض میں وہ ضرور سزا قصاص کے لائق تھا اور اگر یہ قابل سزا نہ تھا تو ریڈر صاحب کا قاتل کیوں اشتعال طبع کی وجہ سے سزا سے بری نه هوا ـ حالان که صاحب سوصوف بهی بد زبانی اور د شنام دهی اور نوکروں کے زود کوب میں ید طوالی رکھتے تھے اور جس وجہ سے وہ قتل ہوئے وہ بھی یہی تھی مگر ہارے نزدیک اس وقت مناسب یہی تھا کہ ہائی کورٹ ایک ہندوستانی قاتل کو بھی جرم قتل سے بری فرما کر اس بات کو ثابت کر دیتی که کچھ عدالت ھائے انگریزی کے نزدیک یورپین قاتل ھی قتل کے جرم سے

بری نہیں ہو جاتے بلکہ ہندوستانی قاتل بھی بعض اوقات اس جرم سے بری کر دیے جاتے ہیں اور اس ثبوت کے بعد ہائی کورٹ حضور گورنر جنرل بہادر کی اس تنبیہہ کو ہلکا کر دے گی جو انھوں نے ملر صاحب کے مقدمہ میں اس بناء پر فرمائی کہ ہندوستانیوں کی جان کے مقدمہ میں کچھ احتیاط نہیں کی گئی۔

هارمے نزدیک بلاشبه یه قانون اشتعال طبع ضرور کسی حد کے ساتھ محدود ہونا چاہیے ورنہ ہم بہت اندیشہ کرتے ہیں کہ اس کے سبب سے جرم قتل کی نہایت کثرت ہو جاوے گی اور ہارا ہرگن یہ منشاء نہیں ہے کہ ہم خاص یورپین لوگوں کے واسطے اس بندوبست کو چاہتے ہیں بلکہ ہم ہمیشہ جان کے معاملہ کو نہایت نازک اور از بس اهم خیال کرتے هیں اور هم کو همیشه اس بات کا خیال ہوتا ہے کہ قانونی حیلہ سے قاتل کا صاف رہا ہو جانا ضرور جرم قتل کو زیادہ کرے گا اور ہم یقین کرتے ہیں کہ کوئی جرم قتل ایسا ثابت نه هوگا جس میں قانونی حایت سے اشتعال طبع ثابت نه هو جاوے اور اگر قاتلوں کو یه معلوم هو جاوے گا که اشتعال طبع کے حیلہ سے قتل بھی کر سکتے ہیں اور جان بھی بچا سکتے ہیں تو آن کو کسی موقع پر اشتعال طبع کی صورت بنا لینا دشوار نہ ہوگا۔ دیکھو اگر کوئی شخص کسی کے قتل کا سصمم قصد کر لے اگر قتل سے پہلے وہ مقتول کے ساتھ کوئی ایسا معاملہ یا حرکت کرمے جس کے مقابلہ میں مقتول کی کوئی حرکت اُس کے اشتعال طبع کا باعث بن جاوے اور وہ اس حیلہ سے فوراً اس کو ھلاک کرمے پس اب ایسی صورت میں قانون اشتعال طبع ایسی مضرت ناک چیز ہوگا جس کی کچھ حد نہ ہوگی ۔

ھارے نزدیک اشتعال طبع کے اول تو معنی ھی نہایت وسیع ھی اور آن کی وسعت کے سبب سے قانون قصاص جو سراپا عدل پر

مبنی ہے بالکل ضعیف ہوا جاتا ہے دوسرمے ہم کو اس میں بھی نهایت کلام هے که قانون اشتعال طبع میں شرافت کی قید کیوں لگائی گئی ہے اور اس کی کیا وجہ ہے کہ اشتعال طبع کے مستحق شریف هی قرار دیے گئر هیں ۔ اگر یه قانون اشتعال طبع قابل لحاظ ھے تو ضرور وہ ھر ایسر شخص کے لیر قابل لحاظ ھے جس مس اشتعالی طبع کے سعنی ستحقق ہوں اور اگر وہ انصاف میں مخل ہے تو یک لخت ہر یک کے واسطر محدود ہونا چاھیر اور گو بظاھر یہ خيال كيا جاتا هے كه رگ حميت و غيرت شرفاء ميں هوتي هے کمینه شخص میں یه غیرت نہیں هوتی مگر هارے نزدیک شاید یه خیال صحیح نہیں ہے اور ہم اس اس کو ہمیشہ طبائع مختلفہ کے اختلاف پر محمول کرتے هیں ۔ کیوں که هم دیکھتر هیں که بعض اوقات شرفاء میں اشتعال طبع کا بالکل مادہ نہیں ہوتا اور کبھی کسی بات پر افروخته نهیں هوتے اور بعض اوقات کمینه لوگ اپنی معمولی اور رسمی عزتوں کا پاس کرتے ہیں اور آن میں اشتعال طبع کا مادہ هوتا ہے ۔ بلکه آکثر اوقات کمینه آدمی زیادہ کاوش کی طبیعتیں رکھتے ہیں اور اس وجہ سے وہ ایک قوسی خیالات کے پابند ہو کر اشتعال طبع کے مادہ سے خالی نہیں ہوتے۔ پس اس خیال کو خاص ً شرفاء کے واسطر تجویز کرنا اور کمینہ کو علی العموم مستثنلی کر لينا شايد صحيح نه هو بلكه كلى اور زود كوب پر هميشه كمينه آدمی دل میں کینہ پیدا کرتا ہے اور بسبب اپنر جہل کے وہی زیادہ اپنر انجام سے غافل ہو جاتا ہے اور بے باکانہ حرکت کے ساتھ وھی زیادہ آسادہ قتل ھو جاتا ہے پس آس کی نسبت بالکل اشتعال طبع کا خیال نه کرنا کچه ٹھیک معلوم نہیں ھوتا ۔ علاوہ اس سے غیرت کی کیفیت ہر قوم میں مختلف ہے ۔ وہ امور جو شرفاء کے نزدیک موجب غیرت ہوتے ہیں یہ صحیح ہے کہ کمینہ کے

نزدیک وہ موجب غیرت نہیں ہوتے مگر کمینہ کے نزدیک بھی اپنے حسب حال ایک خاص غیرت اور ایک خاص قسم کی عزت ہوتی ہے اور وہ اسی لحاظ سے اشتعال طبع میں مبتلا ہوتا ہے ۔ پس یہ کیوں کر ہو سکتا ہے کہ اس کے واسطے اشتعال طبع نہ ہو۔

ظاهراً هاری یه بحث هارے مضمون کی ابتداء کی نحالف هے کیوں که ابتداء مضمون اس بات کو مقتضی هے که تحصیلدار فتح آباد کا ملازم اشتعال طبع کے حیله سے سزا سے بری نه هو کیوں که وہ کمینه هونے کی وجه سے اس قانون سے مستثنی هے اور آخر مضمون میں یه بات ظاهر کی گئی هے که اشتعال طبع کمینه کو بهی هونا چاهیے لیکن جب که یه خیال کیا جاوے که هم در اصل قانون اشتعال طبع کو هی اندیشه ناک اور باعث ازدیاد جرم قتل سمجهتے هیں تو هارا مدعا صرف یه هے که یه قانون اشتعال طبع هی محدود هونا چاهیے اور اگر محدود نه هو تو پهر اس اشتعال طبع هی محدود هونا چاهیے اور اگر محدود نه هو تو هو کمینه کو نه هو اور یه هم آس صورت میں کہتے هیں که هارے نزدیک کو نه هو اور یه هم آس افروختگی طبع کا نام هے جو دفعته ایک غیرت دلانے والی بات سے پیدا هو جاوے اور اگر اس کے کوئی اور دلانے والی بات سے پیدا هو جاوے اور اگر اس کے کوئی اور دلانے والی بات سے پیدا هو جاوے اور اگر اس کے کوئی اور دلانے والی بات سے پیدا هو جاوے اور اگر اس کے کوئی اور دلانے والی بات سے پیدا هو جاوے اور اگر اس کے کوئی اور دلانے والی بات سے پیدا هو جاوے اور اگر اس کے کوئی اور دلانے والی بات سے پیدا هو جاوے اور اگر اس کے کوئی اور دلانے والی بات سے پیدا هو جاوے اور اگر اس کے کوئی اور دلانے والی بات سے پیدا هو جاوے اور اگر اس کے کوئی اور دلانے والی بات سے پیدا هو جاوے اور اگر اس کے کوئی اور دلانے والی بات سے پیدا هو جاوے اور اگر اس کے کوئی اور

باقی رهی یه بات که عبد الحفیظ تحصیلدار کے قاتل کو سزا هونی چاهیے یا نه هونی چاهیے اس کی نسبت هاری بلا شبه یه رائے هے که اُس کی یه حرکت ضرور حالت اطمینان میں هوئی ـ وه هرگز اشتعال طبع کے سبب سے اس حرکت کا مرتکب نہیں هوا ـ پس ضرور وه قابل سزا هے بلا شبه وه ایک مدت مدید سے اس فکر میں تھا که اپنے آقا کو کسی وقت فرصت میں قتل کیجیے اور یه هرگز اشتعال طبع نہیں هے چناں چه روز قتل میں بھی وه بعد اس قصه

کے جس میں وہ اس حرکت کا مرتکب ہوا بہت دیر بعد اپنے ارادہ میں کام یاب ہوا اور جب تحصیلدار صاحب سوگئے اس وقت اس نے کام تمام کیا ۔ اگر اشتعال طبع تھا تو اس نے فوراً اسی وقت کیوں نہیں تحصیلدار صاحب کو مار دیا جب کہ وہ اس کو مار رہے تھے اور گالیاں دے رہے تھے اور یہ اشتعال طبع نہیں ہو سکتا کہ جسوقت اس کو گلی دی گئی اس وقت تو سمجھ بوجھ کر چپ ہو رہا اور جب اس کو اطمینان کا موقع ہاتھ آیا اس وقت فرصت میں باطمینان قتل کیا ۔ پس یہ کسی طرح اشتعال طبع نہیں رہا اور اس وجہ سے قتل کیا ۔ پس یہ کسی طرح اشتعال طبع نہیں رہا اور اس وجہ سے وہ قابل رحم نہیں ہے ۔

هم اپنی اس رائے میں بالکل قانون اشتعل طبع کے اصول کے مغالف نہیں هیں بلکه هم آس کے مغنی کی وسعت کے کسی قدر مغالف هیں اور نیز اس تخصیص کے مغالف هیں که ایک انسان کے واسطے هو اور ایک کے واسطے نه هو ۔ باقی البته هم اس بات کے ضرور مخالف هیں که جن مواقع پر عدالتوں کی رائے میں اشتعال طبع قرار پاتا هے آس حالت میں البته بعض موقعوں پر اشتعال طبع خرار پاتا هے آس حالت میں قانون گورنمنٹ پر الزام نہیں هو سکتا بیک خاص کارروائی پر الزام هو سکتا هے ۔

قابل نفرت حركت

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ۱۵ دسمبر ۱۸۵۶ء)

کیا هم پر یه ضرور نہیں ہے که جو قابل نفرت حرکت ایک ھندوستانی سپاھی سے اپنر افسر کی نسبت ظہور سی آئی اس کی نسبت هم اپنا افسوس ظاهر کریں ۔ اگر هم ایسا نه کریں گے تو تو هم میزان انصاف کی دونوں جانب کو برابر نه رکھ سکس کے ۔ راولینڈی میں حو ایک سیاھی نے عین قواعد کے وقت اپنر افسر کی صرف اس قدر ملامت پر کہ اس نے سپاھی کے نشانہ کو نا پسند کر کے اس سے یہ کہا تھا کہ تمهارا ایسا نشانہ آفریدیوں کے مقابلہ میں کچھ مفید نہ ہوگا اس افسر کو گولی سے ھلاک کر دیا اور ایسر مہذب کلام کے مقابلہ میں ایسا ہے هودہ کام کیا بلاشبہ اس کا یہ کام نہایت ھی نفرت اور افسوس کے لائق اور نہایت ھی بڑی تنبیہ کے لائق نہیں ہے۔ جس مہذب اور لائق افسر کو اس بے حمیت اور جھوٹی غیرت والر سپاھی نے ھلاک کیا آن کا نام لفٹنٹ دُبليو هارس صاحب تها اور وه ايک لائق اور مستعد افسر تهر ـ پس اگر فرض کرو که وه سپاهی اپنی اس حرکت کی پاداش سی سزائے پھانسی کا مستحق هوا تو یه بات کسی طرح سمجھ میں نہیں آ سکتی که کیوں کر یه سزا جرم کے برابر هو گی ۔ کیوں که ایک ایسر لائق افسر کی جان کے بدلہ میں ایک ایسر بدخو شخص كا مارا جانا كسى طرح اس كى عزيز جان كا بدله نهين هو سكتا ـ لیکن حب قانون کو دیکھا حاوے حس کا منشاء بالکل فطرتی

ضرورتوں کے موافق ہے تو اس کے سوائے اور کیا سزا ہو سکتی ہے کہ جان کے بدلہ میں جان لے سکے کیوں کہ ہر امیر و غریب اور لائق و نالائق کے پاس اپنی جان سے زیادہ عزیز اور اعلیٰ درجہ کی کچھ شے نہیں ہے پس بہ مجبوری لفٹنٹ ہاؤس صاحب کی اس جان کا بدلہ جو اُن کے پاس سب سے زیادہ عزیز چیز تھی اسی جان سے ہو سکتا ہے جو اس سپاھی کے پاس سب سے زیادہ عزیز ہوگی ۔

بلاشبه نهایت خرابی اور بڑے حیف کی بات ہے که لفٹنٹ هارس صاحب بهادر کی اس نرم اور شائسته بات کے مقابله میں که "تمهارا یه نشانه آفریدیوں کے مقابله میں کیچھ مفید نه هو گا" ایسی بے غیرتی کے ساتھ گولی سے جواب دیا جاوے اور فوج کے آدمیوں کی وحشت کو ثابت کرے ۔ یه کام اس سپاهی کا صرف بے حمیتی کا هی نہیں ہے بلکه ایک قسم کی تمک حرامی کا بھی ہے اور جب تک یه ثابت نه هو جاوے که لفٹنٹ هارس صاحب بھی ہے اور جب تک یه ثابت نه هو جاوے که لفٹنٹ هارس صاحب نے اس سپاهی سے کوئی بے تهذیبی کا کلمه کہا یا اس کو گالی دی اس وقت تک هر طرح سپاهی کی یه حرکت نهایت نفرت کے آس وقت تک هر طرح سپاهی کی یه حرکت نهایت نفرت کے گائق، ہے ۔

اگر هم اس وقت یه بات کمیں که جب ایسی هولناک حرکت کا ظہور اس سپاهی سے هوا هے تو ضرور هے که آس کا سبب کوئی قوی هوگا اور کسی طرح شبه نہیں هے که یا وہ سپاهی مجنون هوگا یا آس کو لفٹنٹ هارس صاحب سے کوئی ایسا ربخ هوگا جس کے انتقام کا وہ موقع دیکھتا هوگا یا آس کو ضرور لفٹنٹ صاحب موصوف نے علانیه سب کے سامنے گالی دی هوگی جس کو وہ اپنی عزت کے سبب سے سب کے سامنے نه سن سکا تو اس قسم کی رائے ایک تحقیقات کے مشابه هے جو هارا کام نہیں هے کیوں که هم سیشن یا مجسٹریٹ نہیں هیں بلکه هم صرف ایک

اخبار نامہ کے ذریعہ سے سننے والے ہیں اور ایسی حالت میں ہم کو بڑے افسوس کا اظہار کرنا چاہیر ۔

علاوہ اس سے اسی قسم کا ایک اور واقعہ بھی کچھ عرصه هوا سننے میں آیا تھا۔ اس واقعہ کا سبب یہ تھا کہ ایک رسال دار نے سپاھی کو گلی دی تھی اور اس کے عوض میں سپاھی نے کولی سے جواب دیا تھا۔ چناں چہ اس واقعہ کے بعد عام حکم هو گیا تھا کہ کوئی افسر کسی سپاھی کو گلی نہ دے اور اس باب میں تاکید هو گئی تھی۔ پس اب کہان نہیں هو سکتا کہ یہاں بھی اسی قسم کا واقعہ پیش آیا هو اور لفٹنٹ موصوف نے باوجود اس حکم کے کہ سیاسی کو پریڈ پر گلی نہ دو، اس کو گلی دی هو۔ هارا جو هم عصر اس بات کی سفارش کرتا ہے کہ اس سپاھی کو جلد پہانسی هونی چاهیے هم بھی اس کی سفارش کو تسلیم کرتے هیں۔ جو سپاهی فوج میں اپنی عمر گذار چکے هیں آن کا یہ مقوله جو سپاهی فوج میں اپنی عمر گذار چکے هیں آن کا یہ مقوله عے کہ تھان پر اصل گھوڑے کو چابک اور پریڈ پر شریف

جو سپاهی فوج میں اپنی عمر ددار چدے هیں ان ۵ یه مقوله هے که تهان پر اصل گهوڑے کو چابک اور پریڈ پر شریف سپاهی کو گالی نہایت خطرناک کام هے اور جو تجربه کار هیں وہ بلاشبه ان دونوں خوف ناک کاموں سے نہایت اجتناب کرتے هیں اور یه بات بهی مسلم هے کو فوجی تهذیب اور قسم کی هے اور علمی تهذیب اور قسم کی هے پس اسی طرح وهاں کی غیرت اور حمیت بهی اور هی قسم کی هوتی هے جس کا لحاظ افسران دانش مند کے نزدیک نہایت ضروریات سے هے۔

بلاشبہ فوج کے سپاھی اور افسر کی تمثیل ایسی ہے جیسے کہ دل اور ھاتھ پیر ۔ افسر بمنزلہ دل کے ہے اور سپاھی بمنزلہ ھاتھ پیر کے اور تمام فوج کی مجموعی حرکات اور اُس کے کام بھی ایسے ھیں جیسے انسان کے دل اور ھاتھ پیروں کے کام ۔ پس جب تک دل آن تک ھاتھ پیر کام نہ کریں دل نہیں رہ سکتا اور جب تک دل آن

کی حفاظت نه کرے کام نہیں چل سکتا۔ پس گورنمنٹ کا یه حکم نہایت عمدہ ہے۔ که کوئی افسر پریڈ پر کسی کو گالی نه دے۔ مگر افسوس ہے که جس نمک حرام سپاہی نے اس افسر کو هلاک کیا اس نے تو ایسا کام کیا جس کا نه کوئی سبب ہے اور نه آس کا انتظام ممکن ہے۔

وکیلوں ا*ور مختاروں کا لباس ایک* جیسا ہونا چاھیے

(اخبار سائنٹیفک سوسائیٹی علی گڑھ ے اپریل ۱۸۵۶ء)

یورپ کے ملکوں میں جہاں شائستگی نہایت ترقی پر ھے خاص خاص پیشوں کے آدسیوں کا لباس بھی مخصوص ھوتا ھے اور اس کے ذریعہ سے وہ اور شخصوں سے بآسانی مہچانے جا سکتر ہیں۔ چناںچہ ھر ایک شخص مذھب رومن کیتھولک کے ایک پادری اور مذھب یراٹسٹنٹ کے ایک بشب یا ارک بشب کے درسیان صرف آن کے لباس کے ذریعہ سے بلاکسی دقت کے امتیاز کر سکتا ہے۔ حجوں اور ببرسٹروں کا بھی ایک خاص لباس ہوتا ہے جس کو آن کے درجہ یا پیشہ کے لوگوں کے سوائے اور کوئی شخص نہیں بہن سکتا ہے۔ فوج کے آدمی اس قاعدے سے مستثنای نہیں ھیں یعنی جنرل سے لے کر ایک عام آدمی تک هر ایک شخص کی وردی اور شخصوں کی وردی سے علیحدہ هوتی هے مگر هندوستان میں باوجو دیکه انگریزی شائستگی کے ذریعہ سے آس کی حالت کو بہت کچھ ترقی ہوئی ہے اس معاملہ میں صرف باستثنائے عہدیداران پولیس کے اور کوئی تبدیلی نہیں ہوئی ہے۔ نہلع کے جج اور محسٹریٹ اور وکلاء کے واسطر کوئی خاص لباس مقرر نہیں ہے اور وکیلوں اور مختاروں کو بعض اوقات ایک معینہ قسم کے لباس کے نہ ھونے سے بڑی دقت پیش آتی ہے۔ عدالت ہائی کورٹ کے ایک معزز وکیل سے لر کر

چھوٹے سے عرضی نویس تک کوئی بات ایسی نہیں ھے جس کے ذریعر سے اجلاس میں آن کے رتبہ می امتیاز ھو سکر ۔ جو جج اور معسٹریٹ کسی قدر وهمی هونے هس وه آن کے لباس کی نسبت بعض اوقات بے هوده احکام جاری کرتے هیں ۔ ایک جج تو یه حکم دیتا ہے کہ جوتی نہیں پہنی چاہیے اور ایک محسٹریٹ یہ حکم دیتا ہے کہ سر پر کچھ نہیں بہننا چاہیے اور اس وجہ سے وکیل اور مختار ایک قابل افسوس حالت سی گرفتار ہوتے ہیں اور اپنی خاص وضع تجویز نہیں کر سکتر ہیں کیوں کہ حضور آن سے ناخوش ہو جاویں گے۔ یس آن کو حضور کے خیالات کے تموجب عمل کرنا پڑتا ہے چند روز کا عرصه هوا که سروالٹر مارگن صاحب بهادر نے جب که وہ ان اضلاع کی عدالت ہائی کورٹ کے چیف جسٹس تھے یہ بات چاھی تھی کہ عدالت ھا کورٹ کے وکیلوں کے واسطر ایک یکساں لباس مقرر کیا جاوے اور سر رابرٹ اسٹوارٹ صاحب مادر چیف جسٹس حال کی بھی ابتداء میں ہی رائے تھی مگر چونکہ بیرسٹروں نے اس کی نسبت اعتراض کیا جو یه سمجھتر ھی که گون کے پہننے کا صرف انھیں کو اختیار حاصل ہے اس وجہ سے یہ تدبیر انجام کو نه پہنچ سکی ـ

ھم اس معاملہ کی تائید صرف اس وجہ سے نہیں کرتے ہیں کہ یکسانی لباس کے ہونے سے ایک وکیل یا مختار کے رتبہ کی وقعت زیادہ ہو جاوے گی بلکہ ایک سخت خرابی کے دفع کرنے کی غرض سے کرتے ہیں۔

ھم نے حال میں اس بات کا ذکر کیا تھا کہ خاص عدالت ھائی کورٹ کی آنکھوں کے سامنے ایک جونیر سویلین کی خود رائی سے ایک مختار کی کیسی بے عزتی کی گئی اور چند منٹ تک وہ کیسی قابل افسوس حالت میں رھا۔

ان سویلن صاحب نے یہ خیال کیا کہ آن کی عدالت الک ایسی مقدس عدالت تھی جس میں ایک مختار جوتا ہن کر نہیں آسکتا تھا اور آن کے نزدیک یہ جرم ایسا سنگین تھا کہ انھوں نے صرف اس بات پر اکتفا نہیں کیا کہ اس غریب مختار کو جوتے اتارنے کا حکم دیتر بلکہ ان کے بغض کی کچھ حد ھی نہ تھی اور انھوں نے اس قدر حرأت کی کہ اُس مختر کے جوتے چند منٹ تک بطور سزا اس سنگین جرم کے جو اُس سے وقوع میں آیا تھا اُس کے سر پر رکھوائے۔ چونکه هم اس معامله کی نسبت ایک علیحدہ آرڈیکل میں گفتگو کر چکر ہیں اس وجہ سے ہم اس مقام پر اُس کو طول دینا نہیں چاہتر ہیں۔ ہم اس مثال کو صرف اس بات کے ظاہر کرنے کے واسطے نقل کرتے میں کہ اگر مختاروں کے واسطر كسى قسم كا لباس معين هوتا تو صاحب محسثريك وكلاء اور مختاروں کے کل فرقہ کی ایسی ہتک نہیں کر سکتر تھر جیسی کہ انھوں نے اس خاص صورت میں کی ۔ ھم بے انتہا مثالی اس بات کی دے سکتر ہیں کہ جج اور محسٹریٹ خود مختاری کے ساتھ وکیلوں اور مختاروں کو جوتا ہنر ہوئے عدالت میں نہیں آنے دیتر هس ـ یه صرف ادب و شائستگی کا معامله هے که ایک آدمی معقول لباس مهنر اور مختار وکیل کو اس بات کی اجازت دینر سے کہ جوتے پن کر کچہری میں آیا کرے کوئی بڑا حق یا بڑی آزادی حاصل نیں هوتی هے۔ يورپ اور امريكه کے شائسته ملكوں ميں بيرسٹرى اور اٹارنیوں کی بلحاظ حسن معاشرت کے بڑی قدر و منزلت ہوتی ہے اور جو بڑے کام سلک اور رعایا کی ہبودی کے واسطر جس کے وہ ایک طرح پر حامی هوتے هیں جاری کئر جاتے هیں۔ آن سب میں وہ سر گروہ ہوتے ہیں ۔ پس اس کی کیا وجہ ہے کہ ہندوستان میں

اس کے بر عکس معاملہ ہے اور حکام وکیلوں اور مختاروں کو ہیئت مجموعی کس واسطے حقارت سے دیکھتے ہیں ۔ اگر آن سی بے ایمان آدمی هوتے هیں تو بیرسٹروں اور اٹارنیوں میں ایسر آدسی هوتے ھیں جو کسی قسم کی احتیاط نہیں کرتے۔ علاوہ اس کے آن کی بد اعالیوں کی سزا کے واسطر جو خاص خاص آدسیوں سے وقوع سی آتی هس ایک اور طریقه هے مگر علی العموم کل فرقه کو برا سمجهنر اور بلا استیاز آن کے ساتھ بغض رکھنر کی کیا وجہ ہے۔ ہر ایک آدمی اپنی عزت رکھتا ہے خواہ وہ هندو هو یا مسلمان یا عیسائی ـ پس جب که کوئی هندوستانی ایک یورپین سے ملر تو اس وقت ازراه خصومت باهم کچه امتیاز نهس کرنا چاهیر ـ هم اس بات کو جانتر ھیں کہ جس مضمون کی نسبت محث کر رھے، ھیں اُس سے کسی قدر تجاوز کرتے ہیں مگر ہم اس مقام پر چند باتیں صرف اس وجہ سے کہنا ضروری سمجھتر ہیں کہ کل قوم کو یہ بات ناگوار ہے کہ ہارے حکام ہارے ساتھ مثل کتوں اور بلیوں کے بلکہ بعض اوقات اس سے بھی بری طرح پر پیش آویں ۔ اگر وہ مختار کوئی یورپین ہوتا تو صاحب معسٹریٹ البه آباد کی یہ جرأت نبه هوتی که اُس کی کسی طرح پر بے توقیری کرتے ۔ چوں کہ هم سابق میں یه بات کہه چکر ھیں کہ ذاتی عزت کچھ رنگ پر موقوف نہیں ہے اس وجہ سے ہم اس حیثیت سے کہ هم اضلاع شال و مغرب میں هندوستانیوں کے حامی می همیشه اس بد سلوکی کی نسبت اعتراض کرنا چاهتر هی جو مفصلات کے حکام ھارمے ساتھ کرتے ھیں۔

ھم نے اپنے ناظرین اخبار کی بہت کچھ سمع خراشی کی ہے۔ اب ھم خاتمہ پر گور نمنٹ کی خدمت میں یہ عرض کرتے ھیں کہ اب وہ زمانہ آگیا ہے کہ گور نمنٹ کو اس خرابی کے رفع کرنے کی

جانب متوجه هونا چاهیے اور وکیلوں اور مختاروں کے واسطے یکساں لباس قرار دینا چاهیے تاکه آئندہ سے وہ بد سلوکی سے محفوظ رهیں اور مفصلات کے حکام جس طرح چاهیں همیشه آن کے ساتھ پیش نه آ سکس ۔

شاهجهان پور کا واقعه

(اخبار ٰسائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ۱۲ مئی ۱۸۵۹ء)

هم جانتر هم که مقام شاهجهان پورکی وه هولناک واردات جس میں تین هندوستانیوں کا خون بہایا گیا اب تو علی العموم مشہور ہو گئی ہوگی اور جس یورپین نے یہ قتل کیا اُس کے خیالات پر اطلاع ہو گئی ہوگی ۔ اُس کا یہ بیان کہ مجھ کو اُس وقت سے ھندوستانیوں سے سخت دشمنی ھو گئی ہے جب سے کہ میں نے مقام کان پور میں آس یادگار کو دیکھا ہے جو ۱۸۵۷ء کے غدر میں مظلوم یورپین کے قتل کی بابت بنائی گئی ہے هندوستانیوں کو نہایت ترساں و لرزاں بناتا ہے۔ نہایت افسوس کی بات ہے کہ اس نادان یورہین نے ان بے چارے ناکردہ گناہ ہندوستانیوں کے قتل کو اس ظلم کی مکافات تصور کیا جو ۱۸۵2ء کے هنگامه میں کسی اور کی طرف سے هوا تھا اور جس میں ان مقتول هندوستانیوں کا کچھ بھی دخل نه تھا ۔ هم کو ہت افسوس ہے کہ اس درجہ تبرہ دماغی آس نامور قوم کے ایک شخص سے ظہور میں آوے جس کا انصاف نہایت مشہور ہے اور گو ھم خوب حانتر هس که صرف اس ایک یورپس کی ایسی ظالمانه حرکت اور آس کا ایسا جاهلانه خیال کچه آس قوم کی منصفانه نیک نامی میں خلل انداز نہیں ہے مگر تاہم هندوستانیوں کے خائف هونے کے واسطر اس قدر مدت مدید کے بعد ایک یورپین کا ایسا خیال کافی ہے۔ ھارے نزدیک بلکہ جملہ اھل عقل کے نزدیک اس سے

زیادہ کوئی بات اندیشہ ناک نہیں ہے کہ خاص امن و امان کے زمانه میں جب که لوگوں کی طبیعتیں صاف هو گئی هیں اور حاکم و محکوم کے باہم کال محبت و اتفاق ہو اور ایک دوسرے کی جانب سے مطمئن ہو کوئی ایسی بات پیش آوے حو گذشتہ فساد کے زمانہ کو یاد دلاوے اور صاف طبیعتوں کو دفعۃ بر انگیخته کرے اور اسی وجہ سے ہم خیال کرتے ہیں کہ ایسر امور کا قائم رکھنا نا مناسب ہوگا جو لوگوں کے دلوں میں فساد کی آگ کو بھڑکاویں ۔ ہم کو دیکھنا چاہیر کہ ۱۸۵۷ء کو اب کس قدر مدت مدید هوئی اور اس عرصه می هندوستان می انگریزی حکومت کو کیا کچھ استحکام ہو گیا ہے اور جناب ملکہ معظمہ کے اس امن آمیز اشتہار نے ہندوستان میں کیسی کچھ امن پھیلا دی ہے جس کے سبب سے ۱۸۵۷ء کا ہنگامہ کالعادم محض ہو گیا ہے مگر با ایں ہمہ مدت وہ کیا چیز تھی جس نے اس یورپین کو دفعۃ ً ایسا بر افروخته کر دیا که آس کا کینه هندوستانوں کی طرف ۱۸۵۷ء کے کینہ سے کچھ زیادہ ہو گیا اور کیا چیز اُس کو ایسے وحشیانہ اور هولناک فعل کا باعث هوئی ۔ همری دانست میں اس کا سبب صرف وہ یادگار ہے جو کان پور کے آس سوقع پر تیار کی گئی ہے جهال یه هنگامه واقع هوا تها ـ اگر اس وقت وه یادگار نه هوتی اور اس کا ایسا غم ناک بغض و عداوت اور دلی کینوں کا یاد دلانے والا نشان اس آب و تاب اور شدومد کے ساتھ قائم نه رکھا جاتا تو ہرگز اس پورپین کی آتش کینہ اس قدر نہ بھڑکتی اور ایسی بے رحمی کے ساتھ یہ ہندوستانی مقتول نہ ہوتے اور هندوستانیوں کو یه نه معلوم هوتا که اب تک آس زمانه کے کینه کا اثر بعض لوگوں کے دلوں میں باقی ہے۔ ہم یقین کرتے ہیں که ایسی یادگاریں همیشه ایسے هی هولناک خیالات پیدا کرتی هین

جو ایک امن کی حالت کو خراب کر دیتی هیں اور اس کے سبب سے همیشه ایک بدنتیجه پیدا هوتا ہے ۔

ایک زمانه گزرا جس می ایک شیشه کا چهوٹا سا بکس بنا کر اور ایک صلیب آس میں نصب کر کے جا بجا یورپین صاحبوں کی کی طرف سے تقسیم ہوا تھا اور اس بکس میں اسی کان پور کے ہولناک واقعہ کی تاریخ نہایت پر جوش کیفیت کے ساتھ دکھلائی گئی تھی اور آس بکس کی تقسیم سے فائدہ یہ سمجھا گیا تھا کہ جس قدر مقامات مشهور و معروف هیں اور جہاں عام محمع هوتے رهتر هس ـ یه بکس وهان رکها جاوے تاکه عام لوگوں کو ھندوستانیوں کی سفا کی اور ظلم کی مقدار معلوم ھووے ۔ یس اس بکس کا بھی ثمرہ ہی تھا کہ لوگ دیکھ کر اُس کو اینر سینہ کی صفائی سے محروم ہوکر غضب ناک بن جاویں اور علی العموم جہان میں آس کی بدولت غم و غصہ پھیل جاوے جس کے سبب سے ہمیشہ حاکم و محکوم شمر و بکری کی مثل بنر رهیں اور هرگز باهمی محبت اور صفائی پیدا نه هو ـ چنان چه وه بکس ایک عرصه تک ھاری سوسائٹی کے اخباروں کے کمرہ میں رکھا رھا جس کو ھمیشہ وہ یورپین چشم غضب سے ملاحظہ فرماتے رہے جو اخبار پڑھنر کے واسطر سوسائٹی میں آتے تھر ۔ مگر ھم نے اسی خیال سے که ایسی شر کے ہر وقت سامنے موجود ہونے سے سوسائٹی کا اصلی مطلب فوت ہوتا ہے اس کے سامنر سے دور کروایا اور یہ خیال کیا کہ یہ سوسائٹی خاص اس واسطر بنائی گئی ہے کہ اس کے سبب سے باہم ہندوستانیوں اور انگریزوں کے میل ملاپ ہو اور یہ بکس هنگاسه کان یورکا یاد دلانے والا اور غصه بڑھاتا ہے جو سراسر اس مدعا کے خلاف ہے اور هم کو یاد ہے که اس بارے میں هم نے اپنی ایک رائے بھی دی تھی جس کا منشاء یہ تھا کہ ایسی

یادگاریں همیشه کینه کو تازه کریں گی اور فساد کو بڑهاویں گی ـ پس اسی طرح هم اب یه رائے ظاهر کرتے هیں که هاری گو زنمنٹ پر به نظر بقاء امن و امان ضرور ہے کہ وہ ایسی حملہ یادگاروں کو نیست و نابود کر دے اور جو باتیں ان میں دلوں کو جوش میں لانے والی هیں ان کا استیصال واجب سمجھے اور اگر اس کو ایسی یادگاروں کے باقی رکھنے کی اس لیے ضرورت ہو کہ اس کے سبب سہ ایک تاریخی واقعہ یاد آتا ہے تو ہاری رائے میں وہ ضرورت اس کی ۱۸۵۷ء کی تحریری تاریخ سے بخوبی پوری هو سکتی هے اور اس صورت خاص کی یادگار تاریخی واقعه کو اس قدر یاد نهس دلاتی جس قدر کینہ اور عداوت کی یاد دلاتی ہے ۔ تحریری تاریخ کے نتابخ سے همیشه وهی دماغ فائدہ حاصل کرتے هیں جو عقلی روشنی سے منور ہوتے ہیں اور تاریک دماغ آن سے کوئی نتیجہ نہیں نکال سکتے ۔ بخلاف ایسی یادگار کے جو ایک ھنگامہ کی صورت مثالی تیرہ خیال آدمیوں کے قلوب میں پیدا کرتی ہے اور آس کے سبب سے بے ساختہ آن سے ایسی ھی حدرکات سر زد ہوتی ہیں جیسی کہ اس یورپین سے شاهجہان پور میں دفعۃ سر زد هوئیں غرض کہ امن و امان کے زمانہ میں خطرناک اداروں اور خیال کا پیش آنا نہایت مضر ہے اور اُس کے انسداد کی تدبیر اس سے بہتر کچھ نہیں ھے کہ جو اسور اس کے باعث ھوں ان کو رفع کر دیا جاوے اور چوں کہ کان پورکی یادگار اور اس کی مثل جہاں کہ*یں* یادگار ہو وہ ایسے ہی خیال کا باعث ہے پس اس کا دور کرنا گورنمنٹ پر ضروریات سے ہے۔ ہم کو اسید ہے کہ ہاری یہ رائے قابل توجه معلوم هوگی ـ

قانون ميعان نكاح

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ۱٫ ۔ مئی ۱۸۵۹ء)

ھاری نظر سے بعض لوگوں کی یہ رائے گذری ہے کہ گور نمنٹ کو چاهیر که وه هندوستانیوں کو صغرسنی میں مجوں کا نکاح کرنے سے سنع کرمے اور نکاح کے واسطر عمر کی ایک حد خاص مقرر کر دے تاکہ اس کے سبب سے ھندوستانی آن خرابیوں سے محفوظ رهیں جو صغیر السن بچوں کا نکاح کرنے سے پیدا ہوتی ہیں۔ چناںچہ جہاں تک ہم نے فکر کی ہم کو یقین ہوا کہ اس تدبیر کے محوز نے اپنر اس خیال کو سراسر قوسی همدردی اور محبت وطنی کی بناء پر ظاہر کیا ہے اور جو قباحتیں صغیر سنی کے نکاح کی بدولت اُس کی نظر سے گذری ہیں شاید ان کے خیال سے اس کو ایسی رائے ا دینر پر مجبوری هوئی هے اس کو هندوستانیوں کی بعض خام خیالیوں سے شاید یه اسید نہیں ردی که وہ اپنر اخلاق کام کو بھی بغیردست اندازی کورنمنٹ کے کر سکس ۔ پس اس مایوسی نے اس کو اس خیال پر آمادہ کیا ہے کہ ایسر نازک معاملات میں بھی گورنمنٹ کی دست اندازی کا خواستگار هو مگر هم کو امید نمی هے که یه رائے کسی کے نزدیک قابل تسلیم ہوگی ۔ قطع نظر اس جو امور ہارے اخلاقی معاشرت سے متعلق میں اور جن کو ہم تدبیر سنازل کے لحاظ سے کرتے میں اور حن کو هم ایک ضرورت فطری کے متعلق سمجھ کر اپنر استعال میں لاتے میں آن میں هم کسی طرح بیگانه مداخلت کو هرگز جائز نہیں سمجھتے ۔ معالات نکاح و طلاق

اور ارث وغیرہ کو هم ایک اور وجه سے بھی اس قابل نہیں سمجھتے کہ اس میں کسی طرح گورنمنٹ کی مداخلت کو جائز تصور کریں اور وہ یہ وجہ ہے کہ یہ معاملات ھارے نزدیک ایک لحاظ سے عبادات میں بھی داخل ھیں جس کے لحاظ سے اب ان میں ھارے وہ ارادے اور اختیار جو ھارے حدود شرعی کے خلاف ھوں محض معطل اور بے کار ہوگئر ہیں اور جہاں ہاری اور ذاتی کمی بیشی کو کچھ محال باقی نہیں رہی اور چناں چہ جو امور اس قسم کے هوں ان سی هم کو محبور سمجھ کر هاری گورنمنٹ خود کسی طرح کی مداخلت کو پسند نہیں کرتی اور وہ ایسی دست اندازی کو خلاف انصاف اور نیز خطرناک تصورکرتی ہے ۔ پس یہ کیوںکر متصور ہے کہ میعاد عمر نکاح کے واسطے وہ کسی قانون کو پاس کر کے ایک ایسی دست اندازی کو جائز تصور کرمے جو کسی طرح ہندوستانیوں اور گورنمنٹ دونوں کے اختیار میں نہیں ہے۔ ہندُوستان کی رعایا کے دونوں فرقہ ہندو و مسلمان اپنی اپنی شرع میں اس قید کو نہیں پانے کہ لڑکے یا لڑکی کا نکاح فلاں عمر میں کیا جاوے، بلکہ جہاں تک دیکھا جاوے ہی ثابت ہوتا ہے کہ باب ازدواج میں عجلت کی جاوے ۔ پس کیوں کر ہو سکنا ہے کہ گورنمنٹ آس کے لیر اپنر اختیار سے کوئی حد مقرو فرماوے بلکہ جم خیال کرتے ہیں کہ ہت زیادہ مخالفت اس رائے سے هندوستان کے ھندو باشندے کریں گے جن کے ہاں کنواری لڑک کا ایک ایک ساعت کا وبال ماں باپ کے ذمه تصور کیا حاتا ہے اور حس قدر چهوٹی عمر میں شادی هو اسی قدر زیادہ باعث ثواب تصور کیا جاتا ہے ۔ پس اگر کوئی قانونی مزاحمت آن کے واسطے ایسی تجویز ہوگی جو آن کو اس وبال سے بچنے اور ثواب کے حاصل کرنے سے بازر کھے تو وہ اس قانونی مزاحمت کو مثل آسی مزاحمت کے سمجھیں گے جو آن کو اپنے مذھبی معاملات میں حد سے زیادہ شاق اور دشوار معلوم ھوتی ہے اور جس کے لحاظ سے وہ اپنے کو سراسر مجبور و معذور تصور کرتے ھیں ۔

ہندوستان کے مسلمان بھی اس سزاحمت پر رضا مند ہونے کو اپنر مذھب کے خلاف تصور کریں گے اور قید عمر کو اپنر دین کی ھدایت کے مخالف سمجھی کے اور بغیر اس رضامندی کے ایسر قانون کا تجویز کرنا گورنمنٹ کی ملکی اور اخلاقی مصلحتوں کے سراسر خلاف ہے اور گو مسلمان اپنے مذہب کی رو سے قبل از بلوغ نکاح کو کوئی بارے ثواب کی بات نہیں تصور کرتے مگر اس میں کچھ شبہ نہیں ہے کہ وہ اس کو کسی عمر سی نا جائز بھی نہیں کہتر اور آس کے مخالفف قانون کا تحویز ہونا آن کی مذھبی احازت کو باطل کرے گا اس واسطر وہ ضرور اس مزاحمت کو خلاف مذہب تصور کرکے نہایت مخالفت کریں گے اور اگر جبرکیا گیا تو وہ اس کو اور مذھبی معاملات کا جبر تصور کریں گے جو کسی وقت میں گورنمنٹ کے نزدیک جائز نہیں ہے ۔ اگر گورنمنٹ نےاسی رائے پر خیال کیا تو مسلمان خیال کریں کے کہ متعدد نکاحوں کے معاملات میں بھی گورنمنٹ دست اندازی کرے گی کیوں کہ وہ بھی تو گورنمنٹ کے نزدیک نہایت قبیح رسم ہے اور جب یہ دست اندازی جائز ہو گئی تو پردہ کے باب میں کیوں نہ دست اندازی کرے گی جو اُس کے نزدیک صد ها طرح کی قباحتوں پر مشتمل هے اور جب یه دست اندازیاں گورنمنٹ کے نزدیک جائز ھو گئیں تو پھر مسلان یقین کر لیں گے کہ اب گورنمنٹ کی رعایا کو مذھبی آزادی حاصل نہیں ہے اور یہ یقین گور نمنٹ کے ذمہ ایک بڑا الزام ثابت کرے گا اور ہندوستان کی رعایا کو زلزله میں ڈال دے گا۔ هم کو افسوس هے که اس قسم کی رائے دینے والے صرف آن ظاہری مصلحتوں پر نظر کرتے ہیں

جو چنداں اہم تو نہیں ہوتیں اور ان باطنی مصلحتوں سے چشم پوشی کر لیتے ہیں جو نہایت اہم ہوتی ہیں ۔

اگر هم مذهبی اور اخلاق وجوه سے قطع نظر کریں تاهم یه رائے هارے نزدیک اس لیے صحیح نہیں ہے کہ اس قسم کے معاملات میں جو خرابیاں واقع هیں وہ سب هارے طرز معاشرت سے پیدا هوئی هیں اور اسور معاشرت کے واسطے کوئی حد نہیں ہے جس کا کسی طرح احاطه ممکن هو پس اگر فرض کرو که ایک کام میں زبردستی گورنمنٹ نے اصلاح کر دی تو دوسری بات میں کیا هو گا اور اگر دوسری بات میں بهی گورنمنٹ نے کچھ نه کیا تو آئندہ کیا گورنمنٹ هارے واسطے کوئی اتالیق کا کام نہیں کر سکتی که وہ هر وقت هارے واسطے کوئی اتالیق کا کام نہیں کر سکتی که وہ هر وقت هارے رہتی رہے گی اور جو کام هارے کرنے کے هیں آن کو وہ اصلاح کرتی رہے گی اور جو کام هارے کرنے کے هیں آن کو وہ طرز معاشرت میں کوئی عیب دیکھیں تو خود هی اس کی اصلاح کریں ۔ هر گھڑی گورنمنٹ کی اعانت پر نظر نه کریں ۔

هم کو اس رائے کے دیکھنے سے نہایت هنسی آئی تھی جس میں یه بیان کیا گیا تھا که هندوؤں کی عورتیں گھاٹ پر جا کر برهنه نہاتی هیں ۔ یه ایک بے حیائی کی بات هے گورنمنٹ اُس کی مانعت کر دے اسی طرح ایک شخص نے یه رائے دی تھی که شادیوں میں بعض عورتیں فحش گیت گایا کرتی هیں اور گالیاں دیا کرتی هیں گورنمنٹ اُس کی ممانعت کر دے ۔ ذرا عقل سے غور کرنا چاهیے که جو عورتیں ننگی نہاتی هیں وہ خود اپنی شرم نہیں رکھتیں ۔ فان کے ورثاء کو منع نہیں کرتے پھر گورنمنٹ کو کس بناء پر مزاحمت کی ضرورت هے ۔ اسی طرح جو عورتیں گالیاں دیتی هیں وہ کچھ باک نہیں رکھتیں اور جن کو گالیاں دیتی هیں وہ مدعی نہیں

بنتے بلکہ ایک ایک گالی ان کو ایک ایک گھونٹ شربت کا معلوم ھوتا ھے۔ پھر گورنمنٹ کو کیا ضرورت ھے کہ وہ کسی کے گھر جا کر دست اندازی کرے۔ ایسے معاملات میں گورنمنٹ کو منصب نہیں ھے بلکہ ھر قوم کے شرفاء کو منصب ھے کہ وہ اخلاق ذلت سے محفوظ رکھنے کے واسطے اپنے اخلاق قانون بناویں۔ ھر باب میں گورنمنٹ سے ایک قانون کی درخواست نہ کیا کریں صغر سی کے لکاح میں جو کچھ خرابیاں پیدا ھوتی ھیں وہ سب لڑکے یا لڑکی کی طرف عائد ھوتے ھیں اور وہ سب ایسی ھیں کہ گورنمنٹ کو اس میں دست اندازی کرنے کی کچھ حاجت نہیں ھے پھر گورنمنٹ سے میں دست قانون کی درخواست کرنا بڑی عجیب بات ھے۔

خورجه کا فسال

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ یکم دسمبر ۲۸۵۹ء)

سنا گیا ہے کہ خورجہ ضام بلند شہر میں ایک سخت ہنگامہ بنیوں اور سراوگیوں میں ہوا اور گو اس کے فرو کرنے کی کسی قدر کوشش کی گئی لیکن کچھ سود مند ثابت نہیں ہوئی ۔ بناء نزاع وهي ايک مشهور معامله هوا جو هميشه بنيوں اور سراوگيوں مس ھوتا ہے۔ سراوگیوں نے قصد کیا تھا کہ ھم سیلہ کریں اور اپنی رتھ جاترا نکالیں اور پارس ناتھ کا شہر میں گشت کراویں ۔ بنرے اس بات کے مخالف تھے اور وہ نہیں چاھتے تھے کہ بازار میں پارس ناتھ کا قدم پھرے ۔ یہ بھی سنا گیا ہے کہ سراوگیوں کی طرف سے کوئی بات پیش نہیں آئی ۔ پہلر اینٹ بنیوں کی طرف سے آئی ۔ حکام نے سراوگیوں سے وعدہ کیا تھا کہ ہم تمھارا رتھ نکلوا دیں کے مگر سنا ہے کہ نہایت افسوس ناک واردات ظہور میں آئی ۔ اگر چہ مشہور ہے کہ دو ایک آدمی بھی اس بلا میں هلاک هو گئے مگر چوں که هم کو اس وقت تک کسی معتمد ذریعہ سے خبر نہیں ملی اس لیر هم کسی امر کی نسبت اپنا اطمینان نہیں ظاہر کر سکتے ۔ مگر یہ ضرور کہہ سکتے ہیں کہ اگر فی الواقع ایسا ہوا تو نہایت ہے جا ہوا اور بنیوں کی یہ نہایت شرارت ہے کہ وہ بہ مقابلہ حکام ایسے فساد سے پیش آئے۔ گورممنٹ انگریزی کی منصفانہ نظر میں تمام رعایا یکساں ہے اور اگر وہ کسی ایک گروہ کی رعایت کرمے اور دوسرے کی طرف داری

نہ کرمے تو کچھ انصاف نہیں ہے۔ اگر سراوگیوں نے یہ قصد کیا کہ وہ بھی اپنی عادل گور نمنٹ کی عمل داری میں اپنے مذھبی خیالات کے سوافق کوئی کام آزادی سے کریں تو گور نمنٹ کی کسی رعایا کو اس کی مزاحمت کا منصب نہیں ہے اگر وہ خلاف رائے حکام ایسی مزاحمت کریں تو نا فرمانی کی بات ہے۔

ھم کو تعجب ہے کہ حکام نے اس موقع پر پہلے سے کیوں نه ایسا انتظام کر لیا جو یہاں تک نوبت نه پہنچے دیتا اور جو خرابی اب هوئی وه نه هوتی ـ هاری رائے میں همیشه ایسے موقع پر اکر ادنلی بھی احتال فساد ہو تو بخوبی انتظام کر لیا جاوے ـ پھر ممکن نہیں ہے کہ کچھ بھی خرابی واقع ہو سکے اور ایسی غقلت سے همیشه یهی نتیجه پیدا هوتا هے اور گو یه بات مسلم هے کہ جو عمل داری سرکار میں ایسی حرکت کرے گا اُس کو سرکار سزا دے گی مگر ایسی سزا انتظام کا فائدہ نہیں دے سکتی ۔ اگر کسی مقام پر کسی عام جہالت کے سبب سے کچھ اندیشه هو تو وهاں صرف یه کمنا که اگر یماں کچھ هوا تو هم سزا دیں گے چنداں سود سند نہیں ہے جس قدر که یه سودسند ہے که اس جوش جہالت کے دبانے والی تدبیر کو پہلے <u>سے</u>کر لیا اور ہنگامہ کی نوبت هی نه پہنچنے دی ورنه آخرکار یہی هوتا ہے که حکام کے غصه کے سامنے مجرم و غیر مجرم سب ماخوذ ہو کر ناگہانی آفت میں پھنس جاتے ہیں اور حکام کی بد انتظامی علیحدہ ہوتی ہے اور حان و سال کا نقصان علیحدہ ہوتا ہے ـ

بچه کشی کی عجیب واردات

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ۲٫ مئی ۱۸۵۶ء)

ھم اپنے گذشتہ پرچہ میں لکھ چکے ھیں کہ ایک پارسی عورت نے جو دو برس سے بیوہ تھی ایک حرام کا بچہ جن کو عجیب جرأت سے اس کو قتل کرایا ۔ جس کی تفصیل یہ ہے کہ عورت مذکورہ نے بچہ جن کو ایک اور عورت کی صلاح سے اپنے باورچی سے کہا کہ تو اس بچہ کو ذبح کر ڈال ۔ باورچی نے اس بچہ کو نہایت بے رحمی سے ٹکڑے ٹکڑے کر ڈالا اور علانیہ یہ جرم کیا گیا ۔

یه بهی هم کو معلوم هوا هے که یه بچه کسی یورپین صاحب سے پیدا هوا تها جس کی وجه سے هم خیال کرتے هیں که اگر وه زنده رهتا تو اس کا نام شائستگی کا نتیجه رکھا جاتا جو نهایت موزوں نام هوتا مگر افسوس هے که اس نالائق هندوستانی باورچی نتیجه شائستگی کی قدر نه کر کے اس کو ضائع کر دیا ۔ اس بچه کا اس بے رحمی سے مقتول هونا صرف اسی وجه سے افسوس کا بچه کا اس بے رحمی سے مقتول هونا صرف اسی وجه سے افسوس کا باعث نهیں هے که ایک نفس انسانی ضائع هوا بلکه اس کے سبب سے یه بهی افسوس هے که ایک یورپین صاحب کا بچه ضائع هو گیا اور اگر وه زنده رهتا تو کیسا لائق اور عالی دماغ هوتا ۔

اس پارسی عورت نے اس بچہ کو کیوں جرأت سے قتل کرایا حالاں کہ جو سزا گورنمنٹ کے قانون میں اس فعل کی ہے وہ کچھ

خفی نہیں ہے۔ پس شاید اس کی وجہ بھی یہ ھوئی کہ آس پارسی عورت نے یہ خیال کیا ھوگا (سیاں بھئی کوتوال اب ڈر کامے کا) ھاری دانست میں بلکہ شاید علی العموم مغربی شائستگی کا اثر پارسی عورتوں میں بہت زیادہ ھو گیا ہے مگر افسوس ہے کہ ھنوز ھندوستان کی حاقت کا غلبہ ھی چلا جاتا ہے کیوں کہ اگر یہ پارسی عورت اس بچہ کو قتل نہ کراتی بلکہ حفاظت کے ساتھ بطور شائستہ اس کو کہیں پہنچوا دیتی تو وہ جرم قتل میں ماخوذ نہ ھوتی چناں چہ شائستہ ملکوں میں ایسا ھی ھوتا ہے اور اسی وجہ سے کچھ اس کا مواخذہ یا افشاء نہیں ھوتا مگر یہ جب ھوتا کہ ھندوستان کی حاقت غالب نہ ھوتی۔

هم خیال کرتے هیں که بہت زیادہ مواخذہ کے لائق بلکه قتل کی اصلی سزا کے موافق وہ باورچی هے جس نے ایسی سخت بے رحمی کو بے باکانا جائز رکھا اور اس فعل کا مباشر هوا ۔ جو چرچا اس قتل کا بمبئی میں ہے آس کا سبب شاید یہی ہے که وہ متمول پارسی عورت کا معامله ہے اور صاحب یورپین بهادر آس کے واسطے علت فاعله مشہور هیں ۔

اگر هم اس خبر کو دیکه کر اپنے اس خیال کو اس جانب مائل کریں که ایسی وارداتوں کا اصلی سبب کیا ہے تو ہم کو بے تامل یه کہنا ہڑتا ہے که اس کا سبب وهی بیوگی ہے جس کو هم اسی قسم کے صدها ظلموں کا اصل اصول خیال کرتے هیں اور اگر هم اس کے اصلی سبب سے قطع نظر کریں تو اس کا سبب کسی قدر وہ بے پردگی بھی ہے جو پارسی لوگوں میں رائج هو گئی ہے اور جس پر ان کو صرف اعلیٰ درجه کی شائستگی نے مجبور کیا ہے۔ پارسی اس بات کو خوب جانتے هوں گے که چار بجے شام کو ایک بے نظیر فٹن پر بیٹھ کر ان کی عورتوں کی

هوا خوری ان کو ایسے هی سبز باغ دکھلا دے گی جس کا نتیجه ان کے حق دیں ایسی هی کام یابی هوگی جو اس شریف پارسی عورت کو هوئی اور جس کا بمبئی دیں آج نهایت چرچا هے اور هم گان کرتے هیں که هندوستان دیں یه شائستگی کامل اس وقت سمجهی جاوے گی جب که ایسے واقعات کا یہاں چرچا بھی نه رهے گا۔ هم کو ذرا اس بات دیں شبه نہیں هے که هندوستان کی

هم کو ذرا اس بات میں شبہ نہیں ہے کہ هندوستان کی طرز معاشرت بالکل شائستہ ملکوں کی طرز معاشرت کے خلاف ہے۔ پس جو لوگ ہر ایک بات میں اس بات کے خواہاں ہیں کہ ہم اپنے ملک کی طرز کو چھوڑ کر دفعۃ دوسرے ملک کی شائستگی کی طرز کو اختیار کر لیں وہ هندوستان میں سیاہ روئی سے محفوظ نہیں رہ سکتے۔

هم کو تعجب ہے کہ صاحب راقم خبر نے اس خبر میں صرف اس بات کو تعجب کے لائق سمجھا ہے کہ یہ واردات نہایت ہے رحمی کے ساتھ واقع ہوئی اور اس نے اس بات پر تعجب ظاهر نہیں کیا کہ یہ بچہ کس شخص سے اور کس خاندانی عورت سے کس بد اطواری کے ساتھ پیدا ہوا مگر شاید اس نے اس واسطر چھوڑ دیا ہوگا کہ اور لوگ خود تعجب کر لس گے۔

پارسی عورتوں کی تعلیم و تربیت انگریزی خیالات کے لحاظ سے نہایت ترق پر ہے اور یہ بات مشہور ہے کہ انگریزی تربیت ایسی فواهش کی مانع هوتی ہے مگر تعجب ہے کہ یہ عورت کیوں اس سے محروم رهی اور اس پر انگریزی تربیت نے کیوں اثر نہیں کیا مگر احتمال ہے کہ شاید اس تربیت میں وہ خام رهی هوگی اور رسوخ کا مرتبہ اس کو حاصل نہ هوا نہ هوگا۔ بہر کیف یه واقعہ عجیب ہے۔

هندوستانيو بكا خون

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ۱۵۔ ستمبر ۱۸۵۶)

حو تنبیه حضور لارڈ لٹن صاحب مهادر نے مسٹر فلر کے مقدمه مس فرمائی اس کے بعد سے بجائے اس کے که هارم کان میں یہ صدا کم بہنچتی کہ فلاں ھندوستانی فلاں صاحب کے ھاتھ سے اور سارا گیا برابر ہارے کان سس یہ آواز ہنچتی رھی کے آج ایک اور ہندوستانی کے فالاں یے ورپین نے ہالاک كبرديا اور يه خبرين هم كبو اسي طرح بهنچتي هـ س جس طرح شکار کے موسم میں یہ خبریں پہنچتی هیں که ایک صاحب نے آج ایک ہرن بہماں سے سارا دوسرے صاحب نے ایک ہرن وہاں سے مارا چناں چه فلر صاحب کے مقدمه کے بعد ایک خبر توب خانه کے صاحب کی بہنچی، جنھوں نے ایک پنکھا قلی کو مارے لاتوں کے جان سے مار ڈالا ۔ دوسری خبر آن صاحب کی بہنچی جنھوں نے ایک ملاح کو راہ گزار عالم بقا کیا۔ تیسری خبر لکھنؤ کے چوکی دار کی ہنچی جس کو شوقین گوروں نے بندوق سے شکار کیا۔ چوتھی خبر کراچی کے اسسٹنٹ سیرنٹنڈنٹ محکمہ ٹیلیگراف کی پہنچی جنھوں نے ایک شخص کو مار ڈالا۔ پانچویں خبر گورکھ پور کے ایک تماشہ والہ صاحب کی بہنچی جنھوں نے ایک شخص کو سرائے میں لٹھ مار کر ھلاک کیا۔ چھٹی خبر جہلم کے ایک صاحب ایلچی نامی کی ہے جو ملازم ریلوے ہیں اور انھوں نے ایک پنکھا قلی کے سر میں ایک ضرب شدید پہنچا کر اس کو ہلاک کیا۔

غرض که یه چه خبریں قتل کی هیں جن میں چه غریب هندوستانی مقتول اور چه صاحب بهادر قاتل هیں اور ان جمله مقدمات میں اب تک یه معلوم نہیں هوا که قاتلوں سے کیا مواخذہ هوا۔

ہم کو ان تمام درد ناک خبروں کے سننے سے نہایت افسوس هوا ہے اور. وہ انسوس کچھ صرف اسی وجہ سے نہیں ہے کہ بے چارمے غریب ہندوستانی ایسی بے رحمی کے ساتھ مارمے گئے اور آن کا خون ایک جانور کے خون بلکہ پانی سے بھی زیادہ بے قدری کے ساتھ ہمایا گیا اور باوجود اس کے ہندوستانیوں کی فریاد کی کچھ شنوائی نہیں ہے۔ بلکہ بڑا سبب انسوس کا یہ ہوا کہ ہندوستان میں جس طرح هندوستانیوں کی فریاد شنوائی کے لائق نہیں ھے اسی طرح شاید ہارے حضور گورنر بہادر کے احکام کی بھی شنوائی نہیں ہوتی کیوں که اگر ان کی شنوائی هوتی تو ان کا اثریه هوتا که اگر ھمیشہ کے واسطر نہیں تـو چند روز کے واسطر تو ضرور ھی هندوستانیوں کو اس سختی سے نجات ملتی اور کچھ تو ہارے ملک کے حاکم متنبہ ہوتے نہ کہ برخلاف اس کے برابر قتل ہو رہا ہے اور کوئی کپرسان حال نہیں ہے ۔ کیا کسی کے نزدیک یہ امر کچھ انصاف سے بعید نہیں ہے کہ انگریزی عمل داری میں انسان جانوروں کی طرح مارے جاتے ہیں۔ کیا یہ وہی فعل نہیں ہے جس کے سبب سے مشرق سلطنتیں آج تک ظالم مشہور ہیں اور ان کی بدناسی حد سے زیادہ گزر گئی ہے۔ کیا ان کی نسبت ہی نہیں کہا جاتا تھا کہ ان کے عہد میں رعایا کی جان و مال کی حفاظت نہ تھی ۔ ان کے جیل خانے خراب تھر ۔ ان کے کار پرداز خود غرض اور ظالم تھر ۔ پس کیا اے انصاف پسند لو گو! اب انگریزی عمل داری کو یه حرکتی بدنام نہیں کریں گی ؟ کیا غریب هندوستانی اسی طرح کام میں آویں گے کہ ہمیشہ صاحب لوگوں کے گھونسوں اور لاتوں اور

رولوں سے پٹ کر جان دیں گے ۔ اگر ایسا ھی ہے تو پھر گورنمنٹ انگریزی میں جان کی حفاظت کا دعوی شاید صحیح نه هوگا۔ سلاطین مشرقیه کے زمان میں جو حفاظت جان کی نه تھی اس کے کچھ یہ معنی نہ تھے کہ سلاطین اپنے ہاتھ سے ہمیشہ لوگوں کو قتل کر ڈالتے ہوں یا علی الصباح بطور تماشا دو چار کو قتل کا حکم دے دیتے هوں بلکه ان کے عہد میں بعض ظلم پسند ایسے حرکات کا باعث ہوتے تھے اور جب آن سے کچھ باز پرس نہ ہوتی تھی تو ان کی جرأت بڑھتی تھی ۔ اسی طرح اب یہ کیفیت ہے کہ غریب هندوستانی برابر مارے جاتے هیں اور قاتلوں کو چنداں عبرت نہیں ہوتی جس سے خود وہی آئندہ کو باز آویں یا ان کو دیکھ کر اور کسی کو عبرت ہو بلکہ جس وقت سے حضور لارڈ لٹن صاحب ہادر کی تنبہہ کی نسبت ہائی کورٹ نے اعتراض کیا ہے اس وقت سے یہ بھی اسید نہیں ہے کہ کچھ باز پرس ہوگی کیوںکہ ضلع کے حکام اور ڈاکٹر ضرور مقتول کو طحال کا مریض سمجھیں گے ۔ اور اس کی مدت م*ر*گ اتفاقیہ میں شامل ہوا کرے گی اور اگر کوئی گورنر جنرل بھی اس باب میں دخل دے گا تو ہائی کورٹ کی نا خوشی ہوگی اور آس گورنر جنرل کی کارروائی خلاف ضابطه قرار پاوے گی جس کا نتیجہ بجز اس کے کیا ہوکا کہ بہر کیف تمام اسور خلاف ضابطه هیں ـ صرف مقتول كا مر جانا ایک با ضابطه كار روائي ہے ـ پس ایسے موقع پر ہاری دانست میں اگر اس بناء پر کارروائی هوا کرمے تو نہایت آسانی ہے کہ ایسے مقتول کی نسبت صرف موت تقدیری کا حکم دیا جایا کرے اور یہ لکھا جاوے کہ گو اس کو صاصب نے مارا مگر جب تک که اُس کی تقدیر میں موت نه تھی وہ کیوں مر گیا ۔ نظر بربی اس کی موت کا سبب صرف اثر تقدیر ہے اور کچھ نہیں ہے۔ اس صورت میں نہایت بھاری الزام قانونی سے

چنداں سروکار نہ رہے گا۔

قانون تغریرات هند کے اس حکم سے که اشتعال طبع کی حالت میں قتل عمد نہیں رهتا اور اگر آلهٔ قتل سے قتل نه کرے تو قتل عمد نہیں هوتا یه نوبت پہنچ گئی تهی که بے رحم لوگ نهایت جبری هو گئے تهے اور هر شخص اپنے دل کے غبار نکالنے اور قتل میں کام یاب هونے کے واسطے اشتعال طبع کا حیله پکڑنے لگا تها ۔ مگر تاهم کچھ اندیشه تها اور جب سے که شاه جہاں پور میں ایک گورے کے هاتھ سے تین هندوستانی مقتول هوئے اس وقت سے آلهٔ قتل کی بھی چنداں پروا نه رهی اور لکھنؤ میں آج کل ایک چوکیدار کا شکار بندوق سے هوا هے اور اگر آئندہ ایسے اسور میں ڈاکٹروں اور جیوریوں کی نیت بخیر رهی تو پھر مقتول کے مریض هونے اور جیوریوں کی نیت بخیر رهی تو پھر مقتول کے مریض هونے اور خون کی ندیاں بہنے لگیں گی۔

اگر ان چھ وارداتوں کے ساتھ شاہ جہان پور کے تین خون اور فلر صاحب کے سائیس کا خون بھی شامل کر لیا جائے تو یہ دس خون ھوتے ھیں جو بہت تھوڑے عرصہ میں واقع ھو چکے ھیں۔ پس اگر گور نمنٹ انگریزی اپنی توجہ اس طرف مائل نہ کرے گی تو آس کے نوجوان ولایت زا حاکم جو ابھی ھندوستان میں آئے ھیں ھندوستانیوں کے قبل میں ایسے ھی بے باک ھو جاویں گے جیسے اب وہ شکار پر بے باک ھیں اور اس وجہ سے ھندوستانی رعایا کے دل میں آن کی طرف سے ایک ھولناک اندیشہ پیدا ھو جاوے گا اور اس کا نتیجہ تدبیر مملکت کے بالکل برخلاف ھوگا۔ گور نمنٹ کو چاھیے کہ وہ ھندوستانیوں پر آسی طریقہ سے حکمرانی کرے جس کو چاھیے کہ وہ ھندوستانیوں پر آسی طریقہ سے حکمرانی کرے جس کو وہ بہ نظر انصاف پسند کرتی ھے اور جس کے سبب سے آس کو تمام یورپ کی سلطنتوں پر نہایت شرف ھے اور وہ اپنی بیدار مغزی کے

موافق ایسے نازک مزاجوں کو اسیسر مسلط نہ کرمے گی جو بجائے اس کے کہ اپنی عقلی روشنی سے رعایا کو اپنی گورنمنٹ کا وفا دار بناویں اور رہا سما اندیشہ ناک کر دیں گے اور آن کے دلوں میں بھی بے جا خوف بٹھلا دیں گے -

گورنر جنرل کے حکم کا انو

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ، ۲۲ ـ ستمبر ۱۸۷۶)

هم کو اسد هوتی هے که جو تنبیه حضور گورنر جنرل بهادر نے فلر صاحب کے مقدمہ میں اپنے حکام ماتحت کو فرمائی هے وہ هائی کورث کے اعتراضات سے بے اثر نه هو جاوے گی اور جو توقع هم هندوستانیوں کو اس سے هے وہ ضرور پوری هوگی ـ

ھارے حضور گورنر جنرل بہادر ھائی کوٹ کے اعتراضات کو بھی باسانی تسلیم نه فرما لیں گے اور بلا شبه اپنے گورنر جنرلی کی شان کے موافق ان اعتراضات کا جواب دیں گے اور جس طرح حکام ھائی کورٹ کے اعتراضات نے ھم کو اس بات کا شبه دلایا تھا که شاید حضور گورنر جنرل بہادر کی تنبیه ہے اثر ھو جاوے اسی طرح هم کو مسٹر ٹرنر صاحب بہادر کی اس گفتگو سے جو انھوں نے ایک جیوری کو مخاطب فرما کر سر اجلاس فرسائی تھی اس بات کا بھی خیال ھوا تھا که کو قانونی اصول کے موافق ھائی کورٹ نے حضور گورنر جنرل بہادر کی کارروائی پر اعتراض کیے ھوں سکر انصاف کے اصول کے موافق ھائی کورٹ نے انصاف کے اصول کے موافق ھائی کورٹ نے بھی اس تنبیه کو بخوبی مان لیا ھے۔

ہم کو ایک اور طریقہ سے بھی یہ ثابت ہوتا ہے کہ حضور گورنر جنرل بہادر کی تنہیہ نے انصاف کی عدالتوں میں ایک بڑا اثر پیدا کیا ہے اور ضرور حکام کو پورا انصاف کرنے پر مجبور کر دیا

ھے اور وہ طریقہ یہ ھے کہ کراچی کے صاحب اسسٹنٹ نے جو ایک شخص کو قتل کر دیا تھا آن کے جرم کے عوض میں وھاں کی عدالت نے پان سو روپیہ جرمانہ کیا اور علاوہ جرمانہ کے قریب ایک ھزار روپیہ کے آن کا پیروی مقدمہ میں صرف ھوگیا جس کے سبب سے صاحب موصوف کو ڈیڑھ ھزار روپیہ کا نقصان اٹھانا پڑا ۔ پس اگر ھم یہ خیال کریں کہ فلر صاحب اور اسسٹنٹ صاحب کا جرم ایک ھی تھا تو پھر ھم کو تیس روپیہ جرمانہ اور پان سو روپیہ جرمانہ کا بھاری فرق صرف اسی وجہ سے معلوم ھوتا ھے روپیہ جرمانہ کا بھاری فرق صرف اسی وجہ سے معلوم ھوتا ھے کہ لارڈ لٹن صاحب ہادر کا حکم درمیان میں آگیا ھے۔

هارا ایک هم عصر لکهتا ہے که صاحب اسسٹنٹ موصوف پر اس قدر جرمانه کے هونے سے آن کے احباب کو بڑا قلق ہے مگر هم کو اس موقع پر یه سوال سوجهتا ہے که کیا صاحب موصوف کے احباب کو صاحب کے روپیه کا اسی قدر قلق ہے جس قدر که مقتول کے ورثاء کو اس مقتول کا قلق ہے یا اس سے کچھ زیادہ قلق ہے ۔ اگر کچھ زیادہ قلق ہے تو صاف ظاهر ہے که صاحبان یورپین کے نزدیک هندوستانیوں کی جان عزیز اپنے روپیه سے زیادہ قدر کے لائق ہے اور اگر زیادہ میں ہے تو بھی جان کی قدر کے لائق ہے اور اگر زیادہ میں ہے تو بھی جان کی قدر کچھ زیادہ نہیں بلکہ برابر ہے ۔

هم اس بات سے بہت خوش هیں که صاحب اسسٹنٹ موصوف پر یه جرمانه ایسا هوا که انهوں نے اس کی مقدار کو گراں سمجها اور آن کے احباب بھی آس کے سبب سے گراں خاطر هوئے۔ پس اگر اسی سبب سے هندوستانیوں کی جان بچی تو هارا مقصود حاصل هو گیا کیوں که هم صرف اسی امر کے خواست گار هیں که بے گناهوں کی جان محفوظ رہے ۔ خواہ روپیه کے صرف سے خواہ کسی اور خوف سے ۔ اگر اسی طرح اور صاحب لوگوں کو بھی اس

بات کا خوف ہوا کہ ہم کو بہت بڑا جرمانہ دینا پڑے گا تو وہ بھی شاید آئندہ ایسے ہے دریخ مار ڈالنے سے باز آویں اور ہم به رائے کچھ اس لحاظ سے نہیں دیتے کہ فی الواقع ہارے نزدیک پان سو روپیہ کے جرمانہ سے ایک جان تلف کرنے کی تلافی ہو سکتی ہے اور اسسٹنٹ صاحب پر جو جرمانہ ہوا وہ ان کے جرم کی کافی سزا تھی بلکہ ہم یہ کہتے ہیں کہ فلر صاحب کے جرمانہ کی نسبت اس جرمانہ کی مقدار کہ قیس روپیہ تو ایسی مقدار ہے کہ ہر وقت صاحب لوگوں کی پاکٹ میں رهتے ہیں۔ یس اگر ایک جان کا عوض تیس ہی روپیہ ٹھہرتے تو نہایت اندیشہ تھا اور ایک جان کا عوض تیس ہی روپیہ ٹھہرتے تو نہایت اندیشہ تھا اور پان سو روپیہ اس کی بہ نسبت گراں ہیں تو اسی قدر اسید جرم کی کم ہونے کی ہے۔ غرض کہ بہر کیف جو کچھ اس مقدمہ میں موا وہ انصاف کے نہایت مناسب ہوا اور ہارے نزدیک وہ لارڈ لٹن صاحب کی تنبیہ کا ہی اثر ہے جس کے سبب سے بڑی بڑی امیدیں ہوتی ہیں۔

زبر دستی کا سلام

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ، ۵ سئی ۱۸۷۹ء)

هارے اخبار مطبوعه ۲۱ اپریل ۱۸۲۱ء میں هارے ناظرین اخبار نے آس خبر کو پڑھا هوگا جس میں مسٹر نیو جنٹ صاحب اسسٹنٹ مجسٹریٹ سیتا مڑھی اور اس بیچارہ امید وار کا ذکر هے جس کے گھوڑے کی باگ پکڑ کر صاحب نے آس سے کہا تھا که اگر تم آئندہ سے هم کو دیکھ کر گھوڑے سے نه اترو گے تو هم تم کو سخت سزا دیں گے ۔ اگر یه شریف هندوستانی هندوستانی نه هوتا بلکه بجائے اس کے ایک یوربین هوتا گو وہ کیسا هی کم رتبه هوتا تو شاید اسسٹنٹ صاحب موصوف کو آس سے ایسی گفتگو کر۔ کا منصب نه هوتا مگر چرں که وہ هندوستانی تها اس سبب سے صاحب موصوف کی اس دهمکی کا مستحق هوا که آگر تم آئندہ گھوڑے سے نه اترو گے تو هم سخت سزا دیں گے ۔

کسی شخص کو یه نه خیال کرنا چاهیے که یه بیچاره گهوڑے کا سوار ادید وار تھا اور ادید وار کی کچھ عزت نہیں هوتی اس لیے صاحب موصوف نے آس سے یه کفتگو کی ۔ کیوں که آس بے چارے ادید وار کے ساتھ ایک اور غریب معزز آدمی پالکی دیں سوار تھا اور آس نے صاحب کو سلام بھی کیا تھا مگر صاحب نے آس کا سلام نہیں لیا اور آس سے بھی یہی کہا کہ آکر تم پالکی سے نه اترو گے تو هم تم کو سخت سزا دیں گے ۔ پس اس سے صاف معلوم هوا که کچھ ادید واری کی وجه نه تهی بلکه هندوستانی هونا هی بڑی

ذلت کی بات ہے۔ علاوہ اس قصہ کے بسا اوقات یہ دیکھا گیا ہے کہ گو کیسا ھی معزز اور شریف ھندوستانی ھو اور گو وہ بگی یا ٹم ٹم ھی پر کیوں نہ جاتا ھو اور اگر ادنئی صاحب بہادر تشریف لے جاتے ھوں اور وہ ھندوستانی صاحب کو سلام کرے تو صاحب ھرگز اُس کا سلام نہیں لیتے اور اُن کی اس بے پروائی سے صرف یہی نہیں ثابت ھوتا کہ صاحب کی کج اخلاق اور تند مزاجی تھی ؛ بلکہ یہ بھی معلوم ھوتا کے صاحب کی کج اخلاق اور تند مزاجی تھی ؛ بلکہ یہ بھی معلوم ھوتا نے کہ ھندوستانی نہایت ذلیل سمجھے جاتے ھیں اور شاید وہ کسی عزت کے اُس وقت تک مستحق نہیں ھیں جبتک کہ وہ ھندوستانی ھونے کا سیاہ ٹیکا اپنی پیشانی پر سے نہ چہڑاویں۔

هاری گور بمنٹ جس کی بیدار مغزی نہایت شہرہ آفاق ہے کیا اس بات کو نہ جانتی هوگی کہ هندوستانیوں کو اپنی ایسی ذلت سے کیسا صدمہ هوتا ہے اور وہ اس بے بنیاد تفرقہ کے سبب سے کس درجہ نا خوش هوں گے اور وہ اپنے اوپر ایسی زیادتیاں دیکھ کر کس قدر دل میں تنگ هوتے هوں گے اور ان کے دلوں میں کس قدر غبار بیٹھا هوگا جس کی ایک نظیر یہ ہے کہ آج کل هی اخباروں میں دیکھا گیا کہ ایک صاحب یورپین گھوڑے پر سوار جاتے تھے۔ اتفاق سے گھوڑے نے یورپین صاحب کو سڑک پر گرا دیا ۔ ایک مسافر جو راستہ میں جاتا تھا دیکھ کر کھڑا هو گیا اور آس نے بجائے اس کے کہ صاحب کو اٹھاوے یہ لفظ گھوڑے کی طرف مخاطب هو کر کہا کہ ''شاباش غازی مرد یہی چاھیے ۔ ھارا بدلہ صاحب بہادر سے 'تو نے لیا ہے '' اب جو لوگ ھارے حاکم ھیں اور جن کے هاتھ میں ایک بڑی تدبیر مملکت ہے وہ اس بات کو خیال کریں گے هاتھ میں ایک بڑی تدبیر مملکت ہے وہ اس بات کو خیال کریں گے میب سے کچھ رنج اور صدمہ نہ تھا تو اس نے ایسے رنج آمیز کابات کہ اگر اس هندوستانی کے دل میں آن صاحب کے کسی ظلم کے میب سے کچھ رنج اور صدمہ نہ تھا تو اس نے ایسے رنج آمیز کابات

کیوں زبان سے ظاہر کئر ۔ ہاری دانست میں نہایت استحکام کے ساتھ یہ خیال آتا ہے کہ بعض صاحب لوگوں کی ایسی تنگ مزاحیاں هندوستانیوں کو اس بات پر محبور کرتی هیں که وه اپنا انصاف آپ کر لیا کے رہی اور ہرگز ہوئے وفاداری آن کے دلوں میں پیدا نه ھو۔ اور یہ امر تدبیر مملکت کے بالکل برخلاف ہے۔ آج تک ہندوستان میں سرکاری حکومت کو ایک مدید زمانہ گزر گیا اور عرصه دراز سے صاحب لوگ هندوستانیوں کے اوپر حکومت کرتے هس اور رات دن آن کے ساتھ آن کا معاملہ رہتا ہے ۔ مگر بایں ہمہ جب هندوستانیوں اور صاحب لوگوں کو دیکھو تو ایسی مغایرت رکھتے ہیں کہ ہرگز ایک دوسرمے سے کچھ میل جول نہیں ہے بلکہ منافرت ھے پس اس کا سبب صرف می ایک فرضی بات نہیں ھو سکتی کہ ھندوستانی صاحب لوگوں کی طرز معاشرت اور آن کی خصلتوں سے آگاہ نہیں میں اس لیر صاحب لوگ آن سے منافرت رکھتر میں کیوں کہ واقفیت کے لیر بھی ایک حد ہوتی ہے۔ کب تک واقفیت نه هوگی بلکه اصل یه هے که بعض صاحب لوگوں کی کج اخلاقیاں اور آن کی تند سزاجی اختلاط اور محبت کی سانع ہو رہی ہے اور هم یه خوب جانتر هیں که جو استحکام ایک سلطنت کو آس حالت میں هو سکتا هے جب که اس کی رعایا اپنر افسروں کی هوا خواه اور دوست بن جاوے وہ استحکام آس حالت میں نہیں ہو سکتا جب که وه ظاهر میں دبی هوئی هو اور دل میں مکدر هو ـ هم امید کرتے هیں که هارمے عالی همت حکام ضرور اس باب میں دانش مندی کو کام فرساویں گے ۔

صاحب اسسٹنٹ موصوف نے جو یہ فرسایا کہ کیا تو یہ نہیں جانتا کہ ہم اسسٹنٹ مجسٹریٹ ہیں، ہم حیران ہیں کہ اس سے صاحب ممدوح کا کیا مقصد تھا ۔ کیا یہ مقصد تھا کہ ہر شخص کو

اسسٹنٹ مجسٹریٹ کی صورت کا پہچان لینا فرض ہے۔ یا یہ مطلب تھا کہ اسسٹنٹ مجسٹریٹ کو دیکھ کر گھوڑے پر سے اتر آنا فرض ہے۔ یا یہ مطلب ہے کہ سلام کر لینا فرض ہے۔ اگر اس میں سے ایک بھی مطلب ہو تو ہم جانتے ہیں کہ ہاری گورنمنٹ کے معدلت کے بالکل برخلاف ہے اور صاحب مجسٹریٹ قانونا کسی ایک بات کے اصرار کرنے پر بھی ان میں سے مستحق نہیں ہیں قانونا شاید کوئی شخص اس بات کا معمور نہیں ہے ہر جگہ راہ میں یورپین صاحب کی صورت دیکھتے ہی گھوڑے سے اتر کر یا سواری چھوڑ کر کھڑا کی صورت دیکھتے ہی گھوڑے سے اتر کر یا سواری چھوڑ کر کھڑا رہے اور صاحب کو سلام کرے مگر هندوستانی اس منشاء سے بڑھ کر فورا نہایت ادب سے سلام کر لیتے ہیں اور صاحب لوگ سلام سے فورا نہایت ادب سے سلام کر لیتے ہیں اور صاحب لوگ سلام سے فورا نہایت ادب سے بھی اتر آیا کریں۔ پس ہندوستانی ہونا ضرور ساتھ سواری پر سے بھی اتر آیا کریں۔ پس ہندوستانی ہونا ضرور کوئی بڑا جرم ہے۔

زمانے کی ترقی کے آثار

(اخبار سائنٹیفک گزف علیگڑھ ، ۲۳ مارچ ۱۸۷٦ء)

زمانه کوئی ہاڑ نہیں ہے جو هم کو نظر آتا هو اور وہ ہت بلند هو۔ وہ کوئی خوبصورت شہر بھی نہیں ہے جس سی خوشنا آبادی هو ۔ وہ کوئی ملک بھی نہیں ہے جس میں بہت سے شہر هوں وہ دریا بھی نہیں ہے جس میں تجارت کے بڑے بڑے جہاز چلتر ہوں مگر بایں همه هم اس کو کهتر هي که زمانه اچها هے ـ زمانه ترق کا ھے۔ زمانہ تجارت کا ھے۔ جس سے غرض یہ ھے کہ آس کے آدسی اچھر ھیں اور لوگ ترقی یافتہ ھیں۔ آن کے خیالات عالی هیں ـ چناں چه آج کل لوگ اپنی حالت کو ترقی دیتے جانے ھیں اور ھر طرح سے ان میں شائستگی آتی جاتی <u>ھے</u> اور عوام الناس کی نسبت گو اس وقت تک یه لفظ صحیح نه هو که وه شائسته حالت میں هیں مگر اس میں کچھ شبه نہیں ہے که خواص تو اپنر آپ کو سنبھالتر جاتے ہیں۔ دیکھو ہندوستان کے امراء اب ویسے نہیں ھیں جیسے پہلے تھے ۔ اب ان میں علم کا شوق ہے ۔ ملکی حالات سے مطلع ہونے کا اشتیاق ہے۔ حکمرانی کے متعلق خبروں کو کان لگا کر سننے لگے ہیں اور اس ملک کو خود بھی پسند کرتے ہیں اور گو اب تک بعض امراء ایسی غفلت کی حالت میں هوں مگر یه غفلت ان کی نافهمی یا نالائقی سے بہت کم ہے ۔ عیش پسندی سے زیادہ ہے اور اگر وہ ذرا اس سے باز آویں تو بخوبی اپنر آپ کو سنبھال سکتر ھیں۔ اب وہ ملکی معاملات

میں رائے بھی دینے لگے ھیں اور آن کو حسب موقع ھر قسم کی گفتگو اور ھر قسم کے نشیب و فراز کی نگہداشت کا شوق ھو گیا ھے۔ اب آن کی نظر میں یہ باتیں آنے لگی ھیں کہ پہلی حکومتوں میں یہ قصور اور اس زمانہ کی حکومتوں میں یہ فائدے ھیں۔ ان کو اس زمانہ کے موافق ملکی ضرورتوں پر نظر ھو گئی ھے اور جب وہ قصد کرتے ھیں تو آن ضرورتوں کی مراعات سے اپنا کام نکال لیتے ھیں۔ اب وہ گور نمنٹ کے بعض مراعات سے اپنا کام نکال لیتے ھیں۔ اب وہ گور نمنٹ کے بعض انتظامی امور کے حسن و قبح کو ایسے غور سے دیکھنے لگے ھیں اور آس کی برائی بھلائی پر بحث و مباحثہ کا مادہ حاصل کرنے کے شائق ھو گئے ھیں۔ جس طرح پہلے امراء اپنی اولاد سے غافل شیں معلوم ھونے بلکہ ود یقین کرنے رہتے تھے اب وہ ایسے غافل نہیں معلوم ھونے بلکہ ود یقین کرنے لگے ھیں کہ آگر ھم اپنی اولاد کی فکر نه کریں گے تو آئندہ وہ اپنی زندگی کو عیش و عشرت اور عزت و حرمت کے ساتھ مشکل اپنی زندگی کو عیش و عشرت اور عزت و حرمت کے ساتھ مشکل سے بسر کر سکیں گے۔

جو تعصب ایک زرانه میں هندوستان میں به لحاظ هندوستان کی اُن پرانی رسوم کے تھا جو سراسر مانع ترقی اور باعث مذلت تھیں وہ تعصب بھی ہت گھٹ کیا ہے اور اُس کے گھٹ جانے سے هی اس قسم کے ثمرات حاصل هوئے هیں۔ ایک وہ زمانه تھا که هندوستان کے باشندے سفر کو جانتے بھی نه تھے اور اس کو نہایت خراب چیز خیال کرتے تھے اور اب یه زمانه ہے که هر سال هارے کان میں کسی نه کسی نامور رئیس کے لندن اور فرانس اور روم جانے کی خبر سنی جاتی ہے۔ کل سرجنگ ہادر کا قداد لندن تھا تو آج سر سالار جنگ بهادر تیار هو رہے هیں۔ اُدر ان امور کے لحاظ سے اس زمانه کو ترقی کا زمانه کہیں تو کہا امور کے لحاظ سے اس زمانه کو بھلا هی سمجھیں تو ہم

سفید و سیاہ میں کچھ فرق نہیں کرتے اور اگر ہم کو اب تک کوئی استیاز نہیں ہے تو رات اور دن میں کچھ تمیز نہیں کرتے اور ایسی صریح چیز میں اگر ہم امتیاز نہ کر سکیں تو ضرور ہاری کسی عقلی قوت میں نقصان ہے جو ہم کو معلوم نہیں ہے ـ

اوره اخبار اور منشی غلام مجل خاں

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڈھ ، ۲۹ ستمبر ۲۸٫۱۵)

مندرجه ذیل مضمون سرسید کے بلند اور اعلٰی اخلاق کی بہت روشن اور واضح مثال ہے۔ منشی غلام محد خاں ایڈیٹر اودھ اخبار لکھنؤ جن کا اس مضمون میں ذکر ہے ۔ سرسید کے مخالفین میں سے تھے اور اکثر اُن کے خلاف مضامین لکھا کرتے تھے۔ لیکن جب منشی نولکشور مالک اودھ اخبار نے اُن کی مناسب قدر نه کی اور وہ دل برداشته ھو کر اودھ اخبار سے تعلق قطع اور وہ دل برداشته ھو گئے تو چوں که آدمی قابل اور لائق تھے۔ اس لیے سرسید نے اس موقع پر ذاتی مخالفت کم قطعاً خیال نه کیا اور بڑے زور سے اُن کی حایت میں کا قطعاً خیال نه کیا اور بڑے زور سے اُن کی حایت میں یه مضمون لکھا اور منشی نولکشور کو توجه دلائی که منشی صاحب کے الگ ھونے سے اودھ اخبار کو نا قابل تلافی نقصان پہنچے گا لہذا اُن کی قدر کریں اور اُن کو اخبار سے علیعدہ نه ھونے دیں۔

(مجد اساعیل پانی پتی)

ہم کو انسوس ہے کہ اب تک ہارے ہم وطنوں کی طبیعتیں کمال کی قدر شناس نہیں ہوئیں اور جو اسباب ان کی ترقی کے ہیں

ان کی طرف متوجه نہیں ہوئیں ۔ ھارے ملک میں سے علم و فضل و لیاقت کے مفقود ہونے کی بڑی وجہ ہی ہے کہ اب کوئی صاحب کال کو پوچهتا نہیں ہے اور جب خود اپنی طبیعتوں کا یہ حال ہو تو اس افسوس سے کیا نتیجہ ہے کہ هندوستان میں اب کوئی صاحب کال نہیں هوتا ۔ هم کو یاد نہیں آتا که هارے سلک کے امراء اور دولت مند اور تاجروں نے کسی شخص کی قدر آج تک اس کی لیاقت کے سبب سے کی ہو۔ پس یہی آثار ملک کی ابتری کے میں۔ چوں کہ ھے اس مضمون کو طول دینا نہیں جاھتر اس لیر اب هم اپنر خیال کو ظاهر کرتے هیں وه یه هے که هم کو معلوم ہوا ہے کہ منشی غلام مجد خان صاحب ایڈیٹر اودھ اخیار آپ برداشتہ خاطر ہو کر منشی نول کشور صاحب کے ھاں سے چلر آئے میں اور گو انھوں نے ترک تعلق نہیں کیا مگر ظن غالب هے که اب ان کا وهاں جی نه لگر اور برداشتگی کا سبب صرف یہ ہوا ہے کہ جو مصیبت اور محنت منشی صاحب ممدوح نے اودہ اخبار کی ترقی اور رونق میں فرمائی منشی صاحب کو ا**س** کا صله مجز اس کے اور کچھ نہیں ملاکه آن کو ضعف بصارت کے مرض میں مبتلا ہونا پڑا اور بجائے ترقی کے ان کو یہ تنزل نصیب ہوا کہ ان کے نور نظر سیں کمی ہو گئی ۔ پس کیا یہ بات افسوس کے لائق نہیں ہے کہ منشی نول کشور سا نامور شخص ایک ایسر شخص کی نسبت جیسر که منشی غلام مجد خال صاحب ھیں بے اعتنائی کرکے آن کو ھاتھ سے کھو دے اور اس بات کا خیال نه کرے که ایسر شخص کی علیحدگی سے ایسے مشہور اخبار کی ترق میں جس کا شہرہ هندوستان سے انکستان تک ہے کیا نقصان آوے گا ۔ ہارے نزدیک شاید اس بات کا تو کوئی منصف بھی انکار نہیں کر سکتا کہ اودہ اخبار کی موجودہ ترق منشی غلام محد

خاں صاحب ہی کی توجہ کا نتیجہ ہے ورنہ اس سے مہلر یہ کوئی چيز نه تها ـ جو آب و تاب اس كو حاصل هوئي وه صرف انهس کی بدولت نصیب ہوئی اور ہر مذاق کی بات اخبار میں نظر آنے لگی ۔ اخبار پہلے ایک هی بار چهپتا تها اب کئی بار هو گیا اور باوجود اس کے اس قدر لمبا جوڑا اخبار ہے کہ آج اس وقت اس سے اردو اخباروں میں کوئی زیادہ نہیں معلوم ہوتا۔ پس باوجود ان سب باتوں کے منشی غلام مجد خال نے اُس کو کچھ ایسا سنبھالا که بلاشمہ وہ آس کے سب سے نہایت قدر کے لائق شخص ہو گئر ۔ مگر نہایت تعجب ہے کہ جتنی قدر سنشی غلام مجد خال کی اوروں کی نظر میں ہوئی شاید منشی نول کشور صاحب کے نزیک آن کی قدر اننی بھی نه هو هم کو ذرا شبه اس بات میں نہیں ہے که اگر منشی غلام محد خاں صاحب اپنر ارادہ کے موافق علیحدہ ہو گئر تو بلاشبه اودھ اخبار اس حالت پر نہیں رھے گا اور منشی نول کشور صاحب کو ایسا نیک نیت اور بے عذر اور لائق ایڈیٹر نهیں ملرگا۔ آگر اس وقت منشی نولکشور صاحب ذرا چشم پوشی نه فرماویں گے۔ اور تھوڑی سی ترقی سے درین کربن گے تو ان کو اودھ اخبار کی رونق میں بہت زیادہ نقصان گوارا کرنا پڑے کا ۔

هم خیال کرتے هیں که لوگ هارے اخبار میں منشی غلام محد خاں صاحب کی نسبت اس رائے کے دیکھنے سے اس لیے تعجب کریں گے که هارے اخبار میں پہلے ان کی اور قسم کی تعجب کریں گے که هارے اخبار میں پہلے ان کی اور قسم کی تعربیں وہ دیکھ چکے هیں لیکن چوں که یه اور مقام هے اور وہ اور مقام تھا اس لیے وہ اسی قسم کا تعجب نه کریں گے اور اس بات کا وہ یقین کریں گے که هاری لفظی منازعت قلبی منازعت تک منجر نہیں ہوتی ۔ هم به نظر انصاف اپنے ذمه یه بات واجب سمجھتے هیں که اپنے هم عصروں کی لیاقت کی قدر شناسی میں سمجھتے هیں که اپنے هم عصروں کی لیاقت کی قدر شناسی میں

کبھی کوتاھی نہ کریں اور جو بات ھاری ملک و قوم کی بھلائی کی ھو۔ اس کو قلم سے ضرور نکالیں۔

اخیر پر هم یه بات کہتے هیں که آج تک جو هندوستانی اخبار سڑیل اور لغو اور بے اعتبار هیں اسی وجه سے هیں که اخباروں کے مالک ایڈیٹروں کی قدر نہیں کرتے اور حتی الامکان مفت کام چلانا چاهتے هیں جس کا نتیجه وهی هندی مثل هوتی هے '' جیسے تیری کومری ویسے میرے گیت '' هم کو امید هے که منشی نول کشور صاحب ضرور هاری اس رائے کو به نظر غور دیکھیں گے اور جو کچھ هم نے اودھ اخبار کی خیر خواهی میں لکھا هے اس کو مان لیں گے ۔

تجارت

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ، . ، اکتوبر ۱۸۵۹ء)

هارے هم عصر صاحب راقم لارنس گزئ اس بات کے شاکی هس که سرکار نے کوئی پیشه نہیں چھوڑا جس کو انجام دے کر هندوستا اپنا پیٹ پالس مگر صاحب راقم نور الابصار زیادہ اس الزام میں هندوستانیوں کو هی ملزم بناتے هس ـ آن کی رائے ہے کہ ہندوستانیوں میں خود ہی وہ عزم اور سرمایہ اور عقل اور واقفیت اور استقلال نہیں ہے کہ اگر ان کے مقابلہ میں کوئی اهل یورب کام کرے تو وہ اس کو سنبھال سکس ۔ سرکار پر اس كا كيا الزام هے ـ البته وه سركار پر صرف اس قدر الزام لگاتے هس کہ سرکار ہندوستانوں کے کسی پیشہ کی قدر نہیں کرتی بلکہ مجائے قدر کے اور وہ تدبیر کرتی ہے جس سے ھندوستانیوں کو نقصان ھوتا ہے اور اس کے ثبوت میں وہ جیل خانہ کی کارروائیوں کو پیش کرتے میں جس سی اب ٹاٹ کی پٹی تک سرکار قیدیوں سے تیار کرا لیتی ہے اور کوئی ادنلی سی شر بھی ہندوستانی پیشہ وروں سے خرید نہیں فرماتی جس سے ان پیشہ وروں کو نہایت نقصان ہنچتا ہے۔ لیکن ہاری دانست میں صاحب نور الابصار کی رائے سے لارنس گزٹ کا خیال اور قوی هوتا ہے کیوں که اس میں ذرا شبہ نہیں ہے کہ ہندوستانیوں کی تجارت کو گورنمنٹ کی بے اعتنائی نے هے، پست کر دیا ہے اور گو سرکار خود اپنر هاتھ سے کوئی کام نہیں کرتی مگر ایسی تدبیروں کی نسبت جیسی که جیل خانوں کی کارروائیاں میں سرکار می کی طرف کی جاتی ہے ۔

البته يه بات صاحب نور الابصار كي بهي نهايت صحيح هے که هندوستانیوں میں عزم و استقلال نہیں ہے اور قومی اتفاق کو وہ جانتے بھی نہیں ھیں بلکہ مجائے اس کے باھمی بغض و حسد اور نفاق ان کو همیشه یست کرتا هے اور هم اس بات کا یقین کرتے هیں که بلاشبه هندوستانی بعض اوقات ذاتی اغراض کے سبب سے قومی نقصان کے در بے ہو جاتے ہیں جو ہمیشہ ان کی حالت کو یستی کی طرف مائل کرتا ہے۔ هندوستانیوں کا یہ عقلی نقصان بھی نہایت مضر ہے کہ وہ ہمیشہ اپنی رائے کو مستقل نہیں رکھتے اور اگر ایک شخص ان میں سے کوئی ذریعہ معاش کا ایجاد کرے تو سب اسی کی طرف جھک جاتے ھیں اور اس کی قدر کو کم کر دیتر هس ـ اگر ایک قوم نوکری کی طرف متوجه هو تو تمام قومیں اسی طرف جهک جاتی هیں اور آگر ایک شخص ایک خاص پیشه کرمے تو تمام شخص یه سمجھ کر که اُس کو نفع ہے سب اسی کی طرف جھک جاتے ھیں جس کا آخری تمرہ یہ ھوتا ہے کہ وہ نفع ایک کے حق میں بھی باقی نہیں رھتا ۔ جو لو ک علم انتظام مدن سے آگاہ ہیں وہ خوب جانتے ہیں کہ اُکر تمام جہان نوکری پیشه هو جاوے تو ایک گھڑی دنیا کا کام نہیں چل سکتا اور اگر تمام لوگ نوکری کو برا سمجھیں اور کوئی نو دری نه کرے تو بھی کام نہیں چل سکتا۔ اسی طرح تمام عالم اگر ایک ھی پیشه کرمے تو کام نہیں چل سکتا اور آگر سب پیشه وری چھوڑ دیں تو بھی کام نہیں چل سکتا ۔ اگر سب آدمی کھانے والے ھوں اور جنگل میں ھل والے چلانے اور کھیت کیار کرنے والے بالکل نه رهیں تو ایک دم بهر بهی دنیا کے کام اس عنوان پر نہیں چل سکتے ۔ اگر تمام جہان ایک ھی تجارت کرے دوسری قسم کی

کوئی تجارت نہ کرہے تو کسی طرح کام نہیں چل سکتا ۔ پس اس سے ثابت ہوا کہ سب لوگوں کی کسی طرح ایک ہی سلسلہ میں گنجائش نہیں ہو سکتی اور قدرت کا سلسلہ سب کو اس بات پر محبور کر رہا ہے کہ ہر شخص ایک نیا راستہ اختیار کرمے اور تمام دنیا کے باشندے دنیا کے خاص حصوں کے باشندوں خاص حصوں میں سے خاص شہروں کے باشندے خاص شہروں میں سے خاص محلہ کے باشندے ۔ خاص محلوں میں سے خاص گھروں کے باشندے ایک هی کام کو کر کے اپنی زندگی بسر نہیں کر سکتر تو اب ھارے آن ھندوستانی بھائیوں کو معلوم کرنا چاھیر کہ اگر تم سب یه چاهو که سرکاری مدارس میں تحصیل کرکے هم صرف نو کری ھی کریں کے تو تمھارا یہ خیال غلط ھوگا اور اگر تم یه چاهو که هم سب ولایت می جا کر بیرسٹر هو جاویں کے تو یه خیال غلط هوگا اور اگر تم یه چاهو که هم سب وکیل و مختار ہو کرکام چلاویں گے تو بھی یہ خیال غلط ہوًا اور اگر تم چاہو که هم سب صدر الصدور اور منصف هو کر کام چلاویں کے تو یه بھی خیال غلط ہوگا اور ہرگز قدرت کا انتظام کسی ایک ساسلہ میں تم سب کو حگه نه دمے گا۔ پس اس لحاظ سے ضرور ہے که هندوستان کے آدمی مختلف شعبوں میں ترقیاں اختیار کریں اور مختلف کا وں میں عقل کو اور علم کو صرف کریں ۔ مختلف قسم کے خیالات طبیعتوں میں پیدا کریں تاکہ ترقی کی صورت ظہور میں آوے اور اگر تم سب ایک هی طرف گرو کے تو کبھی کام نہیں چل سکتا بلکه مفلس اور مصیبت زده هو جاؤ کے ۔ یه بھی ضروریات عمدن سے ہے کہ دولت ہاتھوں میں گھومتی رہے اور اگر دولت ایک صندوق میں بند ہو کر گھومنا چھوڑ دے تو ہرگز ملکی یا قومی ترق نہیں ہو سکتی ۔ بلکہ کسی نوع کی ترق نہیں ہو سکتی اور

فطرتی انتظام کے موافق انسانی حوائج نہیں چل سکتے۔ اگر انسان روپیہ کو صرف کرکے اسباب ضروری نہ خرید کرے تو کسی طرح وہ زندہ نہیں رہ سکتا اور خرید و فروخت ھی ذریعہ دولت کے گھومنے کا ھے۔ بس جن ملکوں میں خرید و فروخت کے سبب سے دولت زیادہ گھومتی ھے اور دولت کا قدم دور دور تک پہنچتا ھے اور ابک جگہ زیادہ نہیں ٹھہرتی وھال بہت بڑی ترقی سے اور جہال دولت بند بڑی ھے اور کاھلی کے سبب سے قدم نہیں ھٹاتی ، صندوقوں دولت بند بڑی ھے اور کاھلی کے سبب سے قدم نہیں ھٹاتی ، صندوقوں میں پڑی سویا کرتی ھے بلکہ کہیں مردوں کی طرح زمین میں دفن میں پڑی ھو گئی ھے وھاں ھرگز ترق نہیں ھے اور ھم جانتے ھیں کہ ایسی دولت ھارے ھندوستانی باشندوں کے پاس ھے کہ وہ اس کو نہایت محبت سے بند رکھتے ھیں تجارت کے ذریعوں سے اس کا گھانا پسند محبت سے بند رکھتے ھیں تجارت کے ذریعوں سے اس کا گھانا پسند نہیں کرتے۔ پس یہ بات بہت سچ ھے کہ ھندوستانیوں کا بھی اپنی ترق نہ کرنے میں بڑا قصور ھے۔

صاحب بهادر کی چوری

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ، ۱۵ ستمبر ۱۸۷ء)

هم نے اپنے صیغه کارسپانڈنٹ سیں ایک خبر ڈیرہ دون کی چھاپی ھے جس میں سیل صاحب بہادر چوری کرتے ھوئے پکڑے گئے اور آخرکار ضرب شدبد کھا کر گرفتار ھوئے اور اظہار دے کر دوسرے یا تیسرے روز می گئے اور هم نے اس مقدمه کی اس کارروائی کی کیفیت بھی درج کی ھے جو عدالت فوجداری میں حاکم فوج داری نے کی ۔ هم دبکھتے ھیں که اب تک اس مقدمه میں ڈیرہ دون کے نہایت ایمان دار مجسٹریٹ نے نہایت عمدہ کارروائی کی ھے جس سے آس کا انصاف بسند ھونا ثابت ھوتا ھے اور یہ بات نہیں معلوم ھوتی که اس میں ایک طرف صاحب معزز یورپین اور دوسری جانب غریب ھندوستانی ھے ۔

ڈاکٹر صاحب کی کیفیت بھی اب تک نہایت عمدہ ہے اور پرداز مقدمہ بھی اب تک نہایت تعریف کے لائق ہے ۔ ھندوستانیوں کو امید ہے کہ اگر پورپین اور ھندوستانیوں کے مقدمات میں اسی طریقہ سے انصاف کیا جاوے ک تو جو شکایت اب ہے وہ آئندہ نہ رہے گی ۔ جو عرضی سیل صاحب کے بھائی نے اپنے بھائی کی موت کے اسباب دریافت کرنے کے واسطے دی ہے وہ صاحب مجسٹریٹ بہادر کے طرز انصاف میں کچھ خلل نہیں پیدا کرتی خصوصاً اس حکم کے دیکھنے کے بعد جو صاحب مجسٹریٹ بہادر نے سائل کی عرضی پر اکھوایا ہے ۔

جو طریقه سیل صاحب کے بیرسٹروں نے اختیار کیا ہے وہ بھی کچھ حارج نہیں ہے کیوں که اگر وہ مدعا علیه یعنی اپنے موکل کے ذمه سے الزام دفع کرنے کو اپنے موکل کو نشه باز ثابت کریں تو ان کا کام ہے۔ وہ صرف اسی بات کے نوکر ہوتے ہیں که اپنے موکل کو بچاویں اور جنون سے ، نشه سے ، اشتعال طبع سے ، غفلت سے ، اتفاق سے ۔ غرض که جس حیله سے بچا سکیں اس کے بچانے میں کوشش کریں ۔ ھاں البته بیرسٹروں کے اس عذر کو عدالت بھی تسلیم کر لے اور ایسے صریح الزام میں صاحب محدوح کو نشه باز ٹھہرا کر کوئی اپنی وائے ظاہر کرے موالیت کسی قدر افسوس کے لائق بات ہے اور ایسی حالت میں عدالت کا انصاف دیکھنر کے لائق ہے ۔

هارا کارسپانڈنٹ لکھتا ہے کہ اگر سیل صاحب زندہ رھتے تو اس حالت میں عدالت کا انصاف دیکھنے کے لائق تھا مگر ھم اپنے کارسپانڈنٹ کو یقین دلاتے ھیں کہ اب بھی عدالت کا انصاف اچھا ھوگا اور دیکھنے کے لائق ھوگا کیوں کہ عدالت اب بھی یہ بات دکھلا سکتی ہے کہ وہ اپنی تجویز میں سیل صاحب کو چوری کا ملزم قرار دے یا صاف آن کو نشہ باز ٹھہرا کر بری کر دے اور اس حالت میں آن کے ورثاء کو پولیس اور مالک مکان کو مواخذہ کے لائق ٹھہراوے۔

هارے ناظرین اخبار دیکھیں گے کہ یہ مقدمہ اخلاق کیفیت کے لحاظ سے کس قدر سند کے لائق ہے اور جس موقع پر کہ انگلستان کے شائستہ اور هندوستان کے نا شائستہ لوگوں کی شائستگی اور نا شائستگی کا موازنہ کیا جاوے تو کسی قدر کام آوے گا۔ هندوستان کا ایک جھوٹا گواہ اس تدر قنق میں نہیں ڈالتا جس قدر کہ انگلستان کا جھوٹا گواہ قلق میں ڈالتا ہے اور هندوستان کا ایک

چور اگر نقب پر مارا جاوے تو چندان افسوس نہیں ہے جس قدر که انگلستان کے ایک لائق شخص کے نقب پر مارے جانے کا افسوس ہے اور شاید اس حالت میں اور بھی زیادہ افسوس کے لائق ہے جب که وہ ایک معزز شخص کا بیٹا تھا اور بڑا عالی خاندان تھا اور اس کی کیا وجه ہے که انگلستان کا ایسا آدمی زیادہ افسوس میں ڈالتا ہے ۔ یہ سبب ہے که دندوستانی نیم وحشی ہیں اور انس کے عیب میں بھی انگلستان می کز تہذیب ہے پس آس کے اور اس کے عیب میں بھی اسی قدر فرق ہے جس قدر که اس کی اور اس کی شائستگی میں فرق ہے۔

ألنا چور كوتوال كو ځانځے

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ، ۱۵ ستمبر ۱۸۵۹ء)

بعض اخبار ناقل هس که پونا کی میونسیل کمیٹی پر ایک صاحب یورپین نے چالیس هزار روپیه کا دعوی اس هرجه کی بابت کیا جو آن کی ایک ٹانگ کے ٹوٹ حانے سے ہوا حس کی کیفیت یہ ھے کہ یونا کی حدود میونسیلٹی کے اندر ایک سڑک کے کنارہے اینٹوں کی سرخی کا ایک ڈھس پڑا ھوا تھا۔ صاحب مادر حو بگھی دوڑاتے ہوئے اس طرف سے نکار تو بگھی کا پہیہ اینٹوں کے ڈھس یر چڑھ 'گیا جس کے صدمہ سے بگھی آلٹ گئی اور صاحب گر گئر اور آن کا ایک پاؤں ٹوٹ گیا ۔ صاحب موصوف نے اس الزام میں میونسیل کمیٹی پر نالش کر کے سولہ ہزار روبیہ کی ڈگری حاصل کی پس یه ایک عجیب و غریب مقدمه ہے جس کو سن کر ہم کو تعجب ہوتا ہے اور اس قاعدہ کے تموجب بہت سی مشکلیں پیش آتی معلوم ہوتی ہیں ۔ کیوں کہ اگر اسی طرح کبھی صاحب ممدوح کی بگھی راہ میں کسی شخص کے مکان کی دیوار سے ٹکر کھاتی تو صاحب ممدوح صاحب مکان پر ٹانگ ٹوٹنر کا دعوی کرکے سولہ ہزار کی ڈگری حاصل کرتے اور اگر آئندہ راہ میں ان کی بگھی کی جھیٹ میں کوئی آدسی آ جاوہے گا اور صاحب کا گھوڑا اُس کے سبب سے چونک حاوے کا اور صاحب گر کر ہاتھ یاؤں توڑ لیں کے تو آس غریب پر نالش کر کے هرجه وصول کریں گے اور وہ غریب جهیا

میں مر گیا تو صاحب اس کے ورثاء پدر ہدرجہ کی نالش فرماویں گے۔

هم کو حرانی ہے که میونسپل کریٹی پر یه دعوی کیوں کیا گیا اور صاحب جج نے یہ دعوی کیوں سن لیا کیوں کہ در اصل صاحب ممدوح اگر نالش کر سکتے تھے تو اپنی آنکھوں پر کر سکتر تھر جن کو یہ نہ سوجھا کہ ہم اندھا دھند بگھی کو کہاں لیر حاتے میں اور اینٹوں کے ڈھیڑ پر کیوں چڑھاتے میں اور سڑک جھوڑ کر اس کنارمے پر کیوں بگھی بھگاتے میں اور اگر آن کی آنکھیں یہ عذر کریں کہ ہارا قصور کیا ہے۔ ہم تو صاحب ہادر کی عقل کے ماتحت ہیں جو کچھ مواخذہ ہونا چاہیر صاحب ہر'در کی عقل سے ہونا جامیر تو یہ عذر بھی قابل ساعت ہوگا اور اس کے سبب سے صاحب ہمادر کی عقل بھی مدعا علیہ قرار پاوے گی لیکن اس عذر سے صاحب کی آنکھوں کی بالکل براءت نہیں ھو سکتی کیوں کہ جرم قتل یا ضرر ٔ رسانی سیں کسی نوکر کا یہ عذر کہ محھ کو میرے آقا نے فلاں شخص کی نسبت حکم قتل دیا تھا اس لیر میں نے آس کو مار دیا نو کر کو جرم قتل سے بری نہیں کرتا مگر ھاں البتہ بعد ثبوت کے آقا بھی ماخوذ ھو سکتا ھے۔ پس نظر بریں صاحب موصوف کی آنکھیں اور عقبل دونوں مدعا علیه هو سکتي هيں ـ

هم کو یه بات ظاهر کرنی چاهیے که کسی موقع پر بضرورت ملبه کا اکثها هونا کچھ میونسپل کمیٹی کے حق میں جرم نہیں هو سکتا اور اگر وہ جرم سمجھا جاوہے تو میونسپل کمیٹی کوئی کام اپنا نہیں کر سکتی ۔ کیوں که سرکاری عارتیں جو میونسپل کمیٹی کے اختیار سے بنتی هیں آن میں همیشه میونسپل کمیٹی سڑکوں پر ملبه ڈالنے اور سر راہ بہت سے کام کرنے میں مجبور ہے ۔ جب آس کی حد میں سڑک

تیار ہو تو اُس حالت میں وہ سڑک کے کنارہے پہلے سے کنکر جمع کرنے میں مجبور ہے۔ اگر وہ کسی موقع پر کنواں یا سڑک کی نالی بناوے تو وہ سر راہ ایسی چیزوں کے ڈالنے میں مجبور ہے۔ پس اگر ایسی حالت میں کوئی صاحب دوڑتے آویں اور دھم سے کنوئیں میں گر پڑیں تو صاحب کا قصور ہے میونسپل کمیٹی کا کیا قصور ہے۔ اگر سڑک کی نالی میں گر کر وہ اپنی ٹانگ توڑ لیں تو کمیٹی کا کیا قصور کا کیا قصور کے دائر صاحب ممدوح یہ فرماویں کہ بعد تیاری کے میونسپل کمیٹی کا کام ہے کہ راہ صاف رکھے تو ان کا یہ عذر میونسپل کمیٹی کا کام ہے کہ راہ صاف رکھے تو ان کا یہ عذر اپنے کام کی کوئی حد مقرر کرمے گی کیوں کہ اگر ہم فرض کریں کہ اس وقت میونسپل کمیٹی کا کام ختم ہوا اور اسی اثناء میں کوئی صاحب اس وقت میونسپل کمیٹی کام ختم ہوا اور اسی اثناء میں کوئی صاحب کیوں راہ صاف نہ ہو گئی کیوں کہ میونسپل کمیٹی کہہ سکے گی وہ اس راہ کو صاف کر سکتی ۔

اگر صاحب موصوف کے دعوے کی نظیر ھندوستان میں قائم ھو گئی تو آیندہ دانستہ کنوئیں میں گرنے والے کنواں بنانے والے پر اس بات کا دعوی کر سکیں گے کہ اُس نے کنوئیں پر چوکھٹا نہیں ڈالا تھا اس لیے ھم گر گئے اور اگر چوکھٹا بھی ھو تو کہہ سکیں گے کہ ایک محافظ کنوئیں پر کیوں نہیں بیٹھا تھا جو ھم کو منع کرتا ۔ اگر کوئی شخص کسی کی بندوق اٹھا کر اپنے اوپر سر کرے تو اس پر بھی ھرجہ کا دعوی ھونا چاھیے کہ کیوں اُس نے اپنی بندوق کو ایسے موقع پر رکھا کہ ھم اٹھا سکے اور اپنے اوپر سر کر سکے ۔ کیسے تعجب کی بات ھے کہ خود صاحب موصوف اینٹوں پر چڑھ گئے اور اپنی نادانی سے اپنا پیر توڑ لیا اور میونسپل

سے سولہ ہزار روپیہ وصول کیا ۔

هم کو اندیشه ہے که اگر یہی مزہ لگ گیا که سوله هزار روپیه ایک پاؤں کی قیمت ملتی ہے تو بہت سے صاحب سڑک کے کنکروں پر بگھی چڑھا کر اپنا پاؤں توڑ لیا کریں گے اور سوله هزار روپیه وصول کرکے مزے اڑاویں گے کیوں که ڈاکٹر انگریزی ایسے هوشیار هیں که ضرور وہ ٹوٹا هوا پاؤں جوڑ دیا کریں گے اور سوله هزار روپیه مفت میں وصول هوا کرے گا۔

ھارا ایک ھم عصر لکھتا ھے که دیکھو اس مقدمه میں کیا انصاف ہوا ہے۔ ایک کی ٹانگ کی قیمت سولہ ہزار روبیہ ٹھہری ہے اور فلر صاحب کے سائیس کی حان تیس روپیہ کی قرار پائی ۔ مگر هم کو اپنر هم عصر سے اتفاق نہیں ہے کیوں که هم جانتر هی کہ فلر صاحب کے سائیس کی جان تیس روپیہ کی کیا ایک کوڑی کی بھی نہیں ٹھہری اس لبر کہ وہ تیس روپیہ جو وصول ہوئے اگر وہ اس سائیس کے کسی وارث کو دلائے جاتے تو البتہ ہم اس کو اس کی جان کی قیمت سمجهتر مگر هم کو معلوم ہے کہ یہ تیس روپیہ بھی اُس کے ورثاء کو نہیں دیے گئے بلکہ وہ بھی سرکاری خزانه سی داخل هوئے اور وہ حق سرکار سمجھر گئر ۔ بے چارے غریب سائیس کی جان تو مفت میں گئی ۔ مخلاف اس سولہ ہزار کے کہ یہ تو صاحب کو دلائے گئر ہوں کے نظر بریں یہ کہنا چاھیر کہ ہندوستانیوں کی جان اور صاحبان یورپ کا رونگٹا بھی برابر نہیں ہو سکتا بلکہ صاحب ہادر کا رونگٹا تو بڑی چیز ہے آن کے کتر کے رونگٹر کی برابر بھی نہیں ہے کیوں کہ بعض بعض صاحب لوگوں کے کتر کا هرجه بھی فلر صاحب کے سائیس کی جان کے هرجه سے زیادہ هوا هے اور انگریزی عدالتوں نے آس کر تسلم کیا ہے ۔

هم کو انتظار ہے کہ هم اس مقدمہ میں پونا کی میونسپل کمیٹی کے جواب دیکھیں اور جو عذر اس نے کیا ہے اس کو سنیں اور اگر کمیٹی نے بھی اپنے ذمہ اقبالی ڈگری کرا لی ہے تو اور بھی زیادہ تعجب کی بات ہوگی جس کو هم نہایت شوق سے پڑھیں گے۔

کلکتہ میں ایک صاحب کا بھنگی سے مقدمہ

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ، ۱۵ ستمبر ۲۵۰۸ء)

ایک بھنگی کسی صاحب کے ھال کلکتہ میں نو کر تھا۔ صاحب سے اور اس بھنگی سے تکرار ہوئی تو صاحب نے اس پر نالش کی مگر مقدمہ خارج ہو گیا ۔ ہم کو انسوس ہے کہ صاحب نے ایسر خفیف مقدمه میں کیوں نالش کی اور کیوں بھنگی کے برابر کھڑے هو کر مدعی هوئے۔ خصوصاً ایسی حالت میں جب که وہ خوب جانتر تھر کہ جو بیان انھوں نے عدالت میں کیا وہ چنداں لائق لحاظ نه تھا ۔ کیا عدالت اس بات کا یقین کر سکتی ہے کہ صاحب ہادر نے بھنگی کو صرف برتن دھونے کا حکم دیا ھو اور بھنگی نے مجبواب اس کے حملہ کیا ہ و ایک ذلیل ملازم بلا وحمه یه حرأت کر سکتا ہے کہ اپنر آقا کا وہی کام نہ کریے حس کا وہ نوک ہو اور کام کے مقابلہ میں حملہ کرنے ۔ کیا کسی کو یہ یقین آ سکتا ہے که صاحب ایسر حلیم الطبع هول که بهنگی کی گستاخی پر کچه هاته پس نه هلاوین الاشبه یه بات صحیح معلوم هوتی هے که جب صاحب نے نہایت خفیف قصور پر بھنگی کو زیادہ سخت پکڑا ہوگا اور مار ییك كی هوگی تو بهنگی نے لاچار هو كر اور سسٹر فلر صاحب کے سائیس کو یاد کرکے یہ خیال کیا ہو گا کہ اگر میں بیٹھا رہا تو مفت جان جاوے گی اس لیر اس نے اپنی جان بچانے کے واسطے

گستاخی کی هوگی ۔ هارے قول کی تصدیق سعدی کے اس شعر سے هوتی هے ہے

وقت ضرورت چو ^نماند گریز دست بگیرد سر شمشیر تیز

اب هم ذيل سي آس جز كو لكهتے هيں:

" مسٹر بروز صاحب ساکن کروکوڈلین کلکتہ نے اپنے بھنگی پر حملہ آوری کی نالش کی جو ۲۵ ماہ گذشتہ کو واقع ہوا۔ صاحب موصوف نے بھنگی کو ایک قلعی کا برتن صاف کرنے کا حکم دیا تھا لیکن آس نے صاحب کی مرضی کے موافق برتن کو صاف نہیں کیا۔ صاحب نے کہا پھر صاف کرو جس پر مدعا علیہ گستاخی سے پیش آیا اور جب صاحب بہادر نے کھڑے ہو کر آس سے کہا کہ تو مکان سے نکل جا تو مہتر نے لوٹا کھینچ مارا جس سے صاحب کی ٹھوڑی پر گہرا زخم آیا۔ مدعی کا اظہار تو یہ تھا لیکن اور گواھی سے ثابت ہوا کہ طرفین سے حملہ کی نوبت پہنچی تھی۔ اس گواھی سے ضاحب محسٹریٹ نے مقدمہ خارج کیا۔

صاحبان یورپ کا دیسی زبان میں امتحان

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ہ نوسبر ۱۸۷۵ء)

صاحب راقم اخبار انڈین پہلک اوپینین نے حو ایک منصفانه خیال ظاہر کیا ہے وہ اپنی راستی کے سبب سے ایسا نہیں ہے کہ ھم اُس کی قدر شناسی سے چشم پوشی کریں ۔ بلاشبہ ایک سچا خیال جس قدر و منزلت کے لائق ہوتا ہے ویسی قدر و منزلت اور کسی چیز کی نہیں ھو سکتی ۔ صاحب راقم سوصوف نے اس بات پر افسوس کیا ہے کہ جو انگریز ہندوستان سی عہدہ دار ہو کر آتے ہیں وہ ھندوستانی زبان <u>سے</u> بالکل نا واقف ھوتے ھیں اور آ*ن کو اس* قدر ملکہ نہیں ہوتا کہ وہ اپنی عدالت کے ریل معاملہ سے گفتگو کر سکس یا آن کی گفتگو سمجھ سکس یا آن کی عرضی کو خود سمجھ سکس یا آپ کچھ لکھ سکس اور جب اُن کی یه حالت هے تھ عدالتوں کا انصاف کیوں کر خراب نہ ہوگا اور جو انگریز ایسر ہیں وہ اپنی کارروائی میں آن اہل کاروں کے محتاج کیوں کر نہ ہوں گے جو اپنر چال چلن اور دیانت کے لحاظ سے نہایت برمے ہوتے ہیں اور یه رائے ایسی صحیح اور عمدہ ہے کہ ہم کو اس کی تائید سیں ذرا بھی کمی نہیں چاھیے ۔ یہ بات بالکل سچ ھے کہ جب حاکم عدالت ایک ایسی زبان سے نا واقف هو جس میں اس عدالت کی کارروائی ہوتی ہے یا حس زبان کے اہل معامله عدالت میں مستغیث هوتے هیں تو ایسی عدالت کا انصاف کسی طرح باقی نہیں رہ سکتا ۔
انصاف اس بات کی فرع ہے کہ اول اس معاملہ کو سمجھ لیا جاوے
جس کی نسبت انصاف کا قصد کیا جاوے اور جب ایک حاکم اُس
کے فہم پر هی قادر نه هو تو کیوں کر امید هو سکتی ہے کہ انصاف
هو سکے گا۔ شاید هم اس بات کی چند مثالیں پہلے بیان کر چکے
هیں کہ بعض صاحب کسی قدر زبان هند سے ناواقف هوتے هیں اور
اس کے سبب سے کیسی کیسی دقتیں واقع هوتی هیں ۔ پس اگر ان
نخرابیوں کو کچھ هلکا نه سمجھا جاوے تو کسی طرح مناسب
نہیں معلوم هوتا کہ اس باب میں گور نمنٹ غفلت کرے اور اس
بھاری دقت کا کچھ انتظام نه کرے ۔

صاحب راقم موصوف کے نزدیک یہ بڑی خرابی اس غفلت یا چشم پوشی کا نتیجہ ہے جو صاحبان انگریز کی جانب سے زبانوں کے امتحان میں کی جاتی ہے ۔ اگر زبان کا امتحان اس غفلت سے نه لیا جاوے تو پھر اس امر کی شکایت بہت کم ھو جاوے علی الخصوص دیسی زبان کا امتحان اگر احتیاط اور مضبوطی کے ساتھ لیا جاوے اور جس آسانی سے صاحبان انگریز اس زبان میں پاس ھو جاتے ھیں وہ آسانی نه رہے تو پھر کیوں کر نمکن ہے کہ وہ اصلاح پذیر نه ھوں ۔ پس یه رائے فی الواقع نہایت سچی ہے اور ھاری دانست میں ھوں ۔ پس یه رائے فی الواقع نہایت سچی ہے اور ھاری دانست میں یہ الزام گورنمنٹ پر اس قدر نہیں ہے جس قدر که دیسی زبان کے متحنوں کی نسبت ہے کیوں کہ اس باب میں آنھیں کی نسبت یه دو خیال ھو سکتے ھیں کہ یا وہ دیسی زبان کے امتحان لینے کی لیاقت نہیں رکھتے اور یا وہ رعایت کے ساتھ سند عطا کر دیتے ھیں اور یه نونوں الزام ان کے حق میں کچھ کم مضر نہیں ھیں ۔

در حقیقت یہ ممتحن گورنمنٹ کے کام کے کفیل ہوتے ہیں ۔ پس اگر وہ خود ہی اس باب سیں کوتاہی کریں گے تو کیوں کر آسید هو سکتی ہے که دوسروں کی حالت کی اصلاح یا جانخ وہ پوری کر دیں گے ۔ پس هم آسید کرتے هیں که آئندہ سے اس بڑی خرابی کا خیال کرنے کے بعد جو دیسی زبان کی ناواقفیت کی وجه سے حکام کی عدالتوں میں پیش آتی هیں ضرور کوئی ایسی فکر هوگی که اس امتحان میں یہ نقصان باقی نه رہے ۔

جوں که صاحب راقم موصوف کی پوری رائے قابل ملاحظه ھے اس لیر ہم اس کو ذیل میں درج کرتے ہیں اور ہم کو امید ہے کہ اس رائے کو تمام ہندوستان کے لوگ نظر انصاف سے دیکھی گے۔ صاحب اخبار انڈین پبلک اوبینین رقم طراز ہیں کہ '' دیسی زبان کی تعلم اور اس کے استحانوں کا جو قاعدہ آج کل ھندوستان میں جاری ہے اُس کی خرابی کا ثبوت ہندوستان میں اُن انگریزی عہدہ داروں کی حالت سے هوتا جاتا هے حو اس زبان میں استحان پاس کر لیتر هس کیوں که ان میں چند هی ایسے نکاتے هیں جو ھندوستانیوں خصوصاً اہل معاملہ کاشت کاروں کے ساتھ صاف صاف صحیح تلفظ کے ساتھ گفتگو کر سکس یا آن کی تقریر کو سمجھ سکس چناں چه هم نے ایسر شخص دیکھر هس جن کی نسبت یه کہا جاتا ہے کہ انھوں نے دیسی زبان میں اعلمٰی درجہ کی لیاقت حاصل کی ہے سگر وہ ایک جاٹ یا میو کے ساتھ بالکل گفتگو نہیں کر سکتر اور نـه آس کی بات کو سمجھ سکتر هیں ـ پس جو خرابی هارہے انصاف کی عدالتوں اور عام کچہریوں سی واقع ہوتی ہے اور جو ناراضی اس کے باعث سے پیدا ہوتی ہے وہ بیش تر اسی امر سے منسوب کی جا سکتی ہے ۔ هم دریافت کرتے هم که ایسر انگریزی عهده دار کس قدر هیں جو اس بات میں قاصر هیں اور ایسے کتنر ھیں جو بغیر مدد کے پہلے ھی نظر میں اردو یا ھندی کی ایک عام چٹھی یا عرضی کو پڑھ سکیں یا اپنر ھاتھ سے ایک صحیح جواب

یا حکم لکھ سکیں یا ایک ھندوستانی ساھوکار یا سوداگر کے حساب کی کتابوں کی رقموں کو فوراً سمجھ سکیں یا پڑھ سکیں یا آن کو جانج سکیں یا کسی اور کاغذ کو اسی طرح پڑھ سکیں جو خاص اس زبان میں لکھا ھو جس میں انھوں نے جھوٹ موٹ سند حاصل کی ھو۔

هندوستانی لوگ اس بات سے هارے انتظام میں ایک نهایت بڑا نقصان سمجهتے هیں اور آس کی وجه بهی معقول هے کیوں که زبان کی ناواقفیت کی وجه سے صاحب لوگ اکثر ان هندوستانی ماتحت اهل کاروں کے محتاج هوتے هیں جو بے احتیاط اور مرتشی هولے هیں اور یہی وجه هے که لوگوں کو هارے انصاف کی عدالتوں پر به نسبت آس کے کم اعتبار هوتا هے جیسا که آن کو اور صورتوں میں هونا چاهیے تها اور رشوت ستانی کو بهی شائد خفیه طور پر ترق هوتی هے۔

پس جب تک حکام کی یه کیفیت رهے گی آس وقت تک اور باتوں میں ترقی اور اصلاح کرنے سے بہت کم فائدہ هوگا اور اس کا یہ علاج صریح نہایت موثر هے که یا تو اس بات کی تاکید کی جاوے که انگریزی عہدہ دار دیسی زبان کو ضرور اس قدر سیکھ لیں که وہ آس سے آسی قدر واقف هو جاویں جیسا که خاص اپنی مادری زبان سے اور یا رفته رفته هاری عدالتوں اور کچہریوں میں انگریزی زبان جاری هو جاوے ۔''

ترميم احكام شريعت

('' تهذیب الاخلاق '' یکم رجب ، ۱۲۹۳ه)

هم کو اودھ اخبار مورخہ ۲ جولائی ۱۸۷۹ء دیکھ کر نہایت افسوس ہوا ہے کہ اب نعوذ اللہ شریعت مصطفوی ایسی ہوگئی ہے جس میں ترمیم کی حاجت پڑی ہے اور حکام وقت سے اس کی ترمیم کی درخواست کی جاتی ہے ۔

خدا نے اور مجدرسول اللہ صلعم نے مہر کی کوئی حد معین نہیں کی۔ نا کے اور منکوحہ کی رضامندی پر موقوف ہے وہ جو چاھیں مقرر کریں مگر ھارے زمانہ کے امام اعظم جناب حضرت دولوی مجدیعقوب صاحب مدرس مدرسہ عربی دیو بند خدا کے اس حکم کو پسند نہیں فرماتے اور یہ چاھتے ھیں کہ نواب گورنر جنرل بہادر ھندوستان کی لیجسلیٹو کونسل سے کوئی قانون اس کی ترمیم کے لیے نافذ ھو تاکہ ھر قوم کی حسب حیثیت مہر کی ایک مقدار مقرر ھو جاوے - چنانچہ جو خط جناب امام ھام کا اس باب میں اودھ اخبار میں چھچا ہے اس کا وہ فقرہ جس میں وہ درخواست ہے بعینہ افتال کیا جاتا ہے اور وہ یہ ہے:

'' اب ایک مختصر مضمون اس رائے ہر عرض کرتا ہوں۔ زیادہ مہر کی اصل غرض ملک ہند میں کچھ تو فخر اور تکبر کے باعث ہے مگر اصل اس بات کی یہ ہے که زیادہ مہر کے وسیله سے عورتیں بعد بیوہ ہونے کے دوسرے نکاح کرنے سے بچین اور

بنی اعام اور رشته دار اس حیله سے اپنے حق سے جو بحسب فرائض اللہ آن کے لیے مقرر ھیں محروم رھیں ۔ مگر اس کے لیے کسی زمانه میں جیسی صورت ظاھری تھی ویسی مقدار مقرر ھوئی تھی ۔ اب وہ صورت بھی نه رھی اور نه وہ گنجائش ۔ مگر مہر وھی کا وھی رھا ھے ۔ کیا اچھی بات ھو که حکام ایسے بے ھودہ جھگڑے دیکھ کر ایسے برے امر سے که بنا بہت سی بری باتوں کی ھے روک دیویں اور ھر قوم کی حسب حیثیت ایک مقدار مقرر ھو جاوے جس سے اور ھر قوم کی حسب حیثیت ایک مقدار مقرر ھو جاوے جس سے تجاوز نه ھوا کرے ۔ یا ھر جانب عائد کو اس بات کی ھدایت کریں تو نہ ماھم اس تجویز کو فراھم ھو کر کر لیں تاکه یه بلائے عام رفع ھو ۔ "

محد يعقوب مدرس مدرسه عربى ديو بند

هم سمجھتے هیں که جو حکم شریعت مجدی کا هے وہ تو نہایت عمدہ هے ۔ اس میں تو کچھ قوم کی حاجت نہیں اور نه کوئی نقصان اور آفت اس میں هے ۔ هاں اس میں شبه نہیں که جو لوگ شریعت کی ٹٹی کی آڑ میں شکار کھیلنا چاھتے هیں ان کو بہت سی جورواں گھیر لینے اور پرانی کو طلاق اور نئی سے نیا نکاح کر لینے میں بہت آسانی هو جاوے گی اور ٹھیک یه مثل صادق آ جاوے گی که:

بہت آسانی هو جاوے گی اور ٹھیک یه مثل صادق آ جاوے گی که:

حیدر آباد کا هنگامه

('خبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ، . ، جنوری ۲۰۸۶)

حیدر آباد دکن میں جو ایک هنگامه مولوی مجد زمان خال صاحب کے قتل کے متعلق پیش آیا تھا اُس کے تفصیلی خبر هم اپنے گذشته پرچه میں چهاپ چکے هیں اور هم کو یقین هے که یه نا مناسب واقعه جس طرح هارے نزدیک موجب افسوس هے اور لوگوں کے نزدیک بهی موجب افسوس هوا هوگا یه افسوس هم کو کچه صرف اس وجه سے نہیں ہے که مولوی مجد زمان خال صاحب مظلوم قتل هوئے بلکه هم کو اس حیثیت سے افسوس هے که اس کے سبب سے مسلمانوں کی اخلاق حالت نهایت خراب معلوم هوتی هے اور اُس کی جمت سے آن کے مذهبی خیالات طعن کے لائق ٹھمرتے هیں حالاں که نفس الامر میں آن کی مذهبی حالت آن کے ایسے اخلاق کے بالکل منافی هے۔

هم کو مذهبی حالت کے ذکر کا موقع اس وجه سے ملا که اس هنگامه کو جہاں تک تعلق هے آن کے مذهبی مزعومات سے تعلق هے گو فی نفسه آن کے ایسے مزعومات آن کے مذهب کے خلاف هی کیوں نه هوں ۔ کیوں که جس بے رحمی سے ایک جاهل اور خون خوار پٹھان نے ایک مولوی کو نماز میں هلاک کیا اس طرح پر مسلمانوں کے مذهب میں کوئی قتل جائز میں غیر ہے بلکہ ایسا قتل مسلمانوں کے مذهب میں سب سے بڑا گناہ اور غورناک کبیرہ هے جس کے واسطے خدا کی طرف سے فجرناءہ

جہنم کا حکم آن کے قرآن میں لکھا ہوا ہے۔ مگر چوں کہ ان کی اخلاق حالت اچھی نہیں ہے اس سبب سے وہ اس وحشیانہ حرکت کو ثواب سمجھتے ہیں۔

جن دو فرقوں میں یه قصه واقع هوا آن میں سے ایک اهل سنت و جاءت کے نام سے مشہور هے اور دوسرا مہدویه هے مگر افسوس هے که یه حرکت آن دونوں گروهوں کی مذهبی هدایات کے خلاف هے ۔

مسلمانوں کی مذھبی تعلیم جن ملکوں میں خراب ہے اور جن ملکوں میں جاھل اور بد اخلاق شخص عوام الناس کے سرگروہ بنے ھوئے ھیں بسا اوقات ان کی باھمی نفسانیت سے یہ اثر پیدا ھوتا ہے کہ ایسے ھنگامے ھو جاتے ھیں اور اس کا مرتکب خسر الدنیا والآخرۃ کا مصداق ھوتا ہے۔ یہ بات ھم نے بڑے تجربہ کے بعد دریافت کی ہے کہ جب مسلمانوں کے دو گروھوں میں اختلاف ھوتا ہے تو یہ اختلاف صریح حرام اور حلال شی کی بابت اختلاف ھوتا ۔ البتہ مکروہ و غیر مکروہ یا مستحب و ساح کے درمیان ھوتا ۔ البتہ مکروہ و غیر مکروہ یا مستحب و ساح کے درمیان ھوتا ۔ البتہ مکروہ و غیر مکروہ یا مستحب و ساح کے درمیان مدھبی ھوتا ہے اور یہ اختلاف اس قسم کا نہیں ہے کہ مسلمانوں کی مذھبی کو مباح بنا دے ۔ اگر مولوی مجد زمان خاں کے قتل کا منشاء صرف یہی مذھبی خیالات تھے اور آن کے قتل کا سبب ایسے ھی صرف یہی مذھبی خیالات تھے اور اس سے زیادہ اور کیا بات افسوس کے بھودہ مزعومات تھے تو اس سے زیادہ اور کیا بات افسوس کے کسی دلیل کی حاجت ہے۔

مولوی مجد زمان خاں کے قتل کا سبب کوئی مذھبی تکرار نہیں ہے بلکہ اور کوئی سبب ہے تو بھی اس قسم کے ھنگاسے مسلمانوں کے حق میں بڑی بد نامی کا نشان ھیں ۔ آن کی یہ حرکات

آن پر اس بات کا الزام لگاتی هیں که مسلمانوں میں ظلم کا مادہ زیادہ ہے اور یہ ایک بڑی خرابی کا الزام ہے ۔

مسلمانوں کی ایسی حرکات هی اس امر کا باعث هوئی هیں که جو نا واقف لوگ آن کے مذهب کی حالت سے آگاہ نہیں هیں وہ یه خیال کرنے لگے هیں که مسلمانوں کا مذهبی اثر یہی هے حالاں که جس درجه رحم آسیز خیالات اس مذهب کے هیں کسی مذهب کے نہیں هیں ۔ مگر چوں که آن کی اخلاقی حالت خراب هے اس لیے آن کی یه خرابی آن کی مذهبی بدنادی کا سبب هوتی هے ۔ غرض که مولوی مجد زمان خان کا قتل زیادہ افسوس کے لائق اس وجه سے هے که وہ ایک ایسی بدنادی کا باعث هے جو مسلمانوں کی مذهبی حالت سے متعلق هے ۔

هم کو ظن غالب اس بات کا هے که اس فساد کا منشاء کوئی سده نزاع هی هوا هے کیوں که مولوی صاحب کے مقتول هونے عدد جو ایک قسم کا جوش و خروش مسلمانوں کے گروہ میں هوا اور ایک خاص گروہ میں تھا ، عام نه تھا اور یه ایک عمده علامت مذهبی تکرار کی هے اور اس سے علاوہ یه سنا گیا هے که حیار آباد میں اس بات کا انتظام کیا گیا هے که ماہ محرم میں پھر یه فساد تازہ نه هو اور اس خوف سے بعض تدابیر کی جاتی هیں ۔ یس ضرور هے که یه نزاع مذهبی کسی مذهبی واقعه پر تھا اور یه بھی خیال کیا جاتا هے که یه قتل مشورہ اور تدبیر سے هوا ۔ ورنه یه نمکن کیا جاتا هے که یه قتل مشورہ اور تدبیر سے هوا ۔ ورنه یه نمکن نه تھا که قاتل اس بات کا منتظر رهتا که جب سرسالار جنگ بهادر عدر آباد سے باهر تشریف لے جاویں اس وقت اس کا ظہور هو اور یه قتل دفعة کچھ اشتعال طبع کی وجه سے نہیں سعلوم هوتا ور یه قتل دفعة کچھ اشتعال طبع کی وجه سے نہیں سعلوم هوتا کیوں که جو کیفیت اس کے متعلق هم نے دیکھی هے اس سے کیوں که جو کیفیت اس کے متعلق هم نے دیکھی هے اس سے کیوں که جو کیفیت اس کے متعلق هم نے دیکھی هے اس سے کسی طرح یه ثابت نہیں هوتا که کوئی امر باعث اشتعال طبع

ھوا تھا بلکہ مقتول مولوی کا نماز میں ھونا اس بات پر دلالت کرتا ہے کہ قاتل سے اور آن سے نوبت کلمہ و کلام کی بھی نہیں آئی اشتعال تو نہایت بعید تھا۔

یه امر نهایت اچها هوا که قاتل آسی وقت نه مارا گیا کیوں که هارے نزدیک قاتل کا ایسے طریقه سے مارا جانا سبب واردات کو هرگز ظاهر نهیں هونے دیتا۔ پس یه کال نادانی هے که قاتل کے قتل میں ایسی سرعت کی جاوے که سبب قتل پر اطلاع بهی حاصل نه هو۔ چوں که قاتل زنده ماخوذ هو گیا هے پس مالار جنگ بهادر کی کوشش سے کچھ عجب نهیں هے که سبب قتل مالار جنگ بهادر کی کوشش سے کچھ عجب نهیں هو جاوے گا۔

انتظام مهمانى

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ، ہ نومبر ۱۸۷۵)

ہارے بعض ہم عصر گورنمنٹ ہند پر یہ طعن کرتے ہیں کہ وہ اپنے سہانوں کی سہانی کا انتظام نہیں کرتی اور ان کے کھانے پینے کی فکر آس کو نہیں ہوتی ۔ نہ آن کے واسطے رہنے کے سکان کا انتظام ہوتا ہے ۔

اس طعن کی وجہ یہ بھی بیان کی گئی ہے کہ چوں کہ بعض اوقات یہ لوگ به طلب گور بمنٹ حاضر ہوتے ہیں پس کیا وجہ ہے جو گور بمنٹ ان کی مہانی نہیں کرتی جو اُس کے بلائے ہوئے مہان ہوتے ہیں اسی بنا پر یہ بھی اعتراض کیا گیا ہے کہ جو لوگ شاہزادہ ویلز بہادر کے استقبال کے واسطے بمبئی میں موجود ہیں اُن کی گور بمنٹ کی طرف سے کچھ فکر نہیں ہوئی اور کسی قسم کا انتظام اُن کے واسطے نہیں کیا گیا ۔ مگر ہم کو نہایت افسوس ہے کہ یہ خیال اصول سلطنت اور گور نمنٹ کی شان سے غافل ہو کر ظاہر کیا گیا ہے ۔

جو سہانی ایک گور نمنٹ یا سلطنت کی طرف سے کسی رعایا کی ہوتی ہے کی ہوتی ہے اور جو سہانی رعایا کی جانب سے رعایا کی ہوتی ہے اس میں کچھ فرق ضرور ہے اور جس قسم کی یہ سہانی ہے دوسری مہانی اس قسم کی نہیں ہے ۔ گور نمنٹ کی جانب سے جو سہانی رعایا کی ہوتی ہے وہ نہایت اعلی درجہ کی ہے اور اس کھانے پینے کے خسیس انتظام سے نہایت اعلیٰی و برتر ہے اور کھانے پینے کے خسیس انتظام سے نہایت اعلیٰی و برتر ہے اور کھانے پینے کے

ادنے, انتظام سے آس کو مناسبت نہیں ہے ۔ اسی وجہ سے جب آس معامله میں کسی نہج سے کوتاهی هوتی هے تو گورنمنٹ کی رعایا از بس شکسته خاطر هو جاتی ہے اور اگر وہ سہانی پوری هو حاوے تو رعایا تمام دنیا کی خوشی اور سرور کو میسر سمجھتی ہے۔ یس جو لوگ یه خیال کرتے هیں که گورنمنٹ کهانے پینر کا انتظام بھی کرے وہ گور نمنے کی اصلی سہانی سے آگاہ نہیں ھیں۔ گور نمنے اپنی اس معزز رعایا کی جو گور نمنٹ کی سہان ہونے کے لائق ہے صرف اس سہانی کی ذمه دار ہے که آن کو اپنر عالی دربار مس باریابی کا موقع عطا فرماوے۔ جس مرتبہ اور عزت کا جو شخص مستحق ہے آس کو اس رتبہ سے اعزاز مخشر ۔ ان کو اپنر شاھانہ الطاف اور خسروانه مزاهم كا مورد بناوے ـ جو موقع ايسي عزت کے هس جہاں ان کو بار نہیں هو سکتا آن موقعوں یہ یاد فرمانے سے آن کی قدر و سنزلت کو زیادہ کرے آن کی ملاقات کی مشتاق ہو کر عام دربار میں آن کو اپنی ملاقات سے عزت بخشے جو لوگ کسی خطاب و عزت کے مستحق ہیں ان کو خطاب و عزت سے سرفراز کرے ۔ دیکھو درباروں میں ترتیب نشست کی رعایت اور اظمار خوشی میں هر ایک کی نسبت اس کے مناسب کاات خوشنودی کا اظہار خلعت و خطاب کے عطا میں مناسب امتیاز ۔ مقام نشست میں ایک دوسرے کے باہم علنی قدر مراتب اختلاف خطاب کے مراتب کا مقرر فرمانا جو سلامی کسی ذی عزت کی مقرر ہے اس کو سعمولی سوقعوں بر بڑے اہتمام سے ادا کرنا ۔ جو شخص حس عزت کا ہے اُس کے حسب حیثیت حکام کا اس کے استقبال کے واسطر حاضر ہونا ۔ ان کی حفاظت اور مدارات کے واسطر سرکری پولیس کا حاضر رهنا ـ سامان رسد کی نسبت سرکاری ملازموں کو به تشدد حکم عطا هونا رعایا میں یا حکام میں جو شخص کسی ذی عزت

مہان کے خلاف شان کوئی امر کرمے اس کو اسی وقت سزا یاب کرنا اگر یه سب امور سهانی س داخل نهن هن تو کیا هین اور گور نمنٹ کی جانب سے تواضع نہیں تو کیا ہے۔ پس اس جملہ امور کو فراموش کرنے کے بعد یہ کہہ دینا کہ گور نمنٹ کھانے پینر کی فکر نہیں کرتی یا خوان میں کھانا لگا کر ھندوستانیوں کا سا خوان پوش ڈھک کر نہیں بھیجتی یا حقہ چلم کی فکر نہیں کر یا سونے کے واسطر پلنگ نہیں بھیجتی نہایت خسیس رائے ہے اور گورنمنٹ کی شان کی مناسب لوازم سہانی سے نا واقفیت کی دلیل ہے ۔ بلاشبہ گورنمنٹ ایسی سہانی نہیں کر سکتی اور نہ ایسی مہانی اُس کے لیر ضروریات سے ہے۔ انبتہ دوستانہ دعوت جو موجب زیادتی سرور و اتحاد ہو وہ کورنمنٹ کی جانب سے بھی حسب موقع ظمور میں آتی ہے اور بہت جلسے ایسے هوتے هیں جہاں هندوستانی رعیت ہونے کی حیثیت سے قطع نظر کرنے کے دوستانہ طور سے بلائے جاتے ہیں اور رقص وغیرہ کے جلسوں میں یہ لوٹ یاد کیے جاتے ہیں۔ پس آدر گورنمنٹ صبح و شام روثی پکوا کر نہ بھیجے تو کیا اس پر الزام ہے۔کورنمنٹ کے انتظام کی نسبت به رائے بھی غلط ہے کہ گورنمنٹ کی جانب سے ان کو جگہ نہیں ملتی بلکہ ہمیشہ جب کورنمنٹ ایسر لوگوں کو بلاتی ہے تو ان کے واسطر مقام سکونت کا انتظام سہانوں کے حسب مراد فرسا دیتی ہے۔ پھر اس پر کوئی اعتراض کرنا سراسر غلطی ہے۔

اگر هم اس بات کو تسلیم بھی کر لیں که هاں کھانے پینے کا انتظام بھی گورنمنٹ هی کے ذمه هونا چاهیے اور اس کی مہان نوازی کے یہی معنی هیں جو هارے هم عصر سمجھے ہیں تاهم جو لوگ شاهزادہ ویلز بهادر کے استقبال کے واسطے بہنی میں حاضر هوئے هیں ان کو هرگز اس بات کا حق حاصل نہیں ہے کہ

وہ اپنی مہانی کا سامان گورنمنٹ سے طلب کریں کیوں کہ اس موقع پر وہ خود اپنے شاہزادہ عالی جاہ کے استقبال کے واسطے حاضر ہوئے ہیں اور یہ اُن کو اپنے خلوص عقیدت اور وفور محبت کے اظہار کا موقع ہے ۔ پس ایسے موقع پر وہ اپنے مہان کی مدارات کے واسطے حاضر ہوئے ہیں نہ کہ خود اس کی گورنمنٹ کے سہان بننے گئے ہیں ایسے موقع پر اگر وہ اپنے آپ کو سہان تصور کریں تو آن کی بڑی خام خیالی ہے۔ پس جو لوگ یہ رائے دبتے ہیں که گورنمنٹ کو ان راجاؤں کی سہانی کرنی چاھیے تھی جو شاھزادہ کے استقبال کے واسطے حاضر ہوئے ہیں آن کی رائے غلطی سے خالی نہیں ہے اور اگر یہ خیال کیا جائے کہ یہ لوگ گورنمنٹ کے حسب الطلب حاضر ہوئے ہیں اس وجہ سے سہان ہیں تو یہ بھی سوء فہمی ہے۔ کیا گورنمنٹ کی طلب سے ہمیشہ مہان بن جاتے ہیں ۔ اس سوقع پر گورنمنٹ کی طلب صرف آن کے اظہار اعزاز کے واسطے ہے تاکہ وہ اپنی ذی عزت رعایا کو اس بات سے مطلع کر دے کہ تم بھی اس موقع پر باریابی کے لائق ہو اور تم کو بھی شاھزادہ ویلز بھادر کی رسم استقبال کے ادا کرنے اور اس معزز موقع پر شامل ہونے کا منصب حاصل ہے ۔ اس غرض سے گور نمنٹ نے نہیں طلب کیا کہ تم ھارے سہان ھو۔ پس جس حالت میں گورنمنٹ ایسے طریقہ سے طلب فرماوے تو رعایا آس کی مہان نہیں ہو سکتی ۔ علیٰ ہـٰذا القیاس درباروں سیں جو گورنمنٹ کسی کو طلب فرماتی ہے وہ مہان بنا کر طلب نہیں فرماتی بلکہ رعایا ہونے کی حیثیت سے طلب فرماتی ہے اور جب وہ مہان بناتی هے تو آس وقت قواعد خسروی بر طرف هو جاتے هیں اور رعایا کے ساتھ هم سری کے طور پر دعوت میں شریک هوتی ہے ـ غرض کہ کسی طرح یہ رائے صحیح نہیں ہے کہ گور نمنٹ ایسے

موقعوں پر کیوں ان راجاؤں کی مہانی ہندوستانیوں کے طریقہ سے نہیں فرماتی ۔

هم کو بہت افسوس ہے کہ هاری گورنمنٹ کی عنایتوں اور الطاف نے هندوستانیوں کو اس قدر غافل کر دیا ہے کہ وہ اپنے اصلی مرتبہ سے بالکل ہے خبر هو گئے هیں۔ اسی وجہ سے کبھی یہ رائے دی جاتی ہے کہ گورنر جنرل بہادر صرف پچس هزار روپیه ماهوار کی آمدنی رکھتے هیں اور هندوستان کے راجا لاکھوں روپ کے مالک هوتے هیں۔ پس راجاؤں کی سلامی کی توپیں گورنر جنرل بہادر سے زیادہ چاهئیں اور ایسی هی یه رائے ہے کہ جو راجا درباروں میں مہان هو کر جاتے هیں گورنمنٹ ان کے کھانے پینے کی کفیل میوں نہیں ہوتے۔ هم خیال کرتے هیں کہ اگر یہ لوگ بادشاہ اور رعیت کے مراتب اور حقوق پر نظر رکھ کر کوئی رائے لکھیں تو رعیت کے مراتب اور حقوق پر نظر رکھ کر کوئی رائے لکھیں تو ان سے ایسی غلط رائے ظاهر نہ هو۔

لارځ نارته بروک کې فياضي

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ، ۲۳ مارچ ۲۸۷۶)

اخبار اسٹینڈرڈ کے کارسیانڈنٹ نے کاکته سے ایک مضمون لارڈ نارتھ بروک صاحب ہادر کی نسبت اخبار موصوف کے پاس بھیجا ھے اور آس میں یہ بیان کیا ھے کہ '' میں نے معتبر ذریعہ سے یہ خبر سنی ہے کہ حضور لارڈ نارتھ بروک صاحب نے حب سے کہ وہ ہندوستان میں تشریف لائے ہیں اپنی تنخواہ کا ایک روپیہ بھی نہیں لیا ہے اور وہ اس وقت خزانہ سے دس لاکھ روپیہ کا دعوی كر سكتر هين ـ پس اب بعض لوگ اس باب مين اپنا قياس دوڙاتے ھیں کہ صاحب ممدوح نے کس وجہ سے اب تک تنخوا، نہیں لی اور ہت سے آدسی یہ خیال کرتے ہیں کہ شاید حضور لارڈ نارتھ بروک صاحب آس روبیته کو آس سلک میں جس پیر آنہوں نے حکم رانی کی ہے کسی خیراتی کام کے جاری کرنے کے واسطر مثلاً ابک نارتھ بروک کالج یا نارتھ بروک ہسپتال قائم کرنے کے واسطے عطا فرمانا چاهتر هس - " كارسپاندنك مذكور نے يه بهى لكها دے كه " اگر حضور کا ارادہ اس قسم کا هو تو وہ اس کے باعث سے ان تمام گورنر جنرلوں سے فوق لرِ جاویں کے جو اب تک ہندوستان کو آئے ھیں " ھم اپنے ھم عصر کے کارسپانڈنٹ کے اس بیان سے بالکل اتفاق کرتے ہیں کہ اگر حضور مدوح کے دل میں ایسا ارادہ ہے تو وہ اس کے باعث سے صرف نیک نامی ھی حاصل نہ کریں گے بلکه هندوستان کو ایک بڑی نعمت کالج یا خبراتی اسپتال یا کسی

اور خیراتی کام کی صورت میں بخشیں کے جس کے ساتھ حب تک کہ ہندوستان کی تواریخ قائم ہے صاحب ممدوح کا نام نامی شامل رہے گا هم امید کرتے هیں که یه خبر صحیح هوگی ـ پس اگر حضور ممدوح در حقیقت اس ملک کو کوئی مستقل فائدہ پہنچانا چاہتے ہیں تو ہم صاحب ممدوح کو ایک ایسے کام کے کرنے کی رائے دیتے ہیں جس کے باعث سے ہندوستان میں آن کا نام تمثیلاً ہمیشہ کے واسطر مشہور ہو جائے گا یعنی ہر ایک شخص اس بات سے واقف ہے کہ جو طریقه تعلم بالفعل هندوستان میں جاری ہے اس میں ایک بڑی تبدیلی کی ضرورت ہے اور ہر ایک شخص کو سر رشتہ تعلیم میں اس تبدیلی کی کم و بیش ضرورت معلوم ہوتی ہے ـ خصوصاً وہ لوگ تو اس تبدیلی کی بڑی ضرورت سمجهتر هیں جو ایک اوسط درجه کی معقول انگریزی تعلم حاصل کرنے کے بعد مناسب روزگار کی تلاش میں پریشان خاطر رہتے ہیں ۔ ہم صد ہا مثالیں اس بات کی دے سکتے ہیں کہ تعلیم یافتہ ہندوستانی صرف اس وجہ سے سست اور کاهل هیں که وہ اپنی خواهش کے موافق روزگار حاصل نہیں کر سکتے پس یه بڑی خرابی اس ملک کے حق میں تباهی کا باعث ہے نظر بر ایں اگر ہندوستانیوں کو موجودہ طریقہ تعلیم کی مجائے کارآمد علوم و فنون اور زراعت سی معقول تعلیم دی جاوے جس کی بدولت بہت سے آدمی بغیر اس کے کہ سرکاری نوکری یا ریلوے کی نوکری کے محتاج رہیں آزادانہ طور پر اپنی زندگی بسر کر سکیں گے تو بڑی مفید بات هوگی ـ یه امر قابل افسوس هے که هندوستان میں ایسا کوئی مدرسه موجود نہیں ہے جس میں اس قسم کی تعلیم دی جاوے آج هی کل کا ذکر ہے کہ انڈین لیگ نے کاکته میں اس معامله کی نسبت ایک تجویز کی تھی اور چند روز کا عرصہ ہوا کہ ڈاکٹر سرکار نے بھی اس باب میں ایک تجویز کی تھی اور اس کا مقصد اعلیٰی درجہ

کا تھا مگر اب تک اس میں کچھ کام یابی حاصل نہیں ھوئی ۔ اگر یہ رقم کثیر جو لارڈ نارتھ بروک صاحب کے اختیار میں ھے اس قسم کے مدرسے قائم کرنے میں صرف کی جاوے تو یہ ملک ھمیشہ حضور محدوح کا محنوں و مشکور رھے گا اور اُس کے باشندے حضور محدوح کے دعا گو رھیں گے اور اُن کے عہد کو ھمیشہ دل سے یاد کریں گے ۔

هم یه رائے دیتر هیں که اس قسم کے چار مدرسے هندوستان میں قائم کیر جاویں یعنی تین مدرسے تینوں پریذیڈنسیوں کے صدر مقامات کاکته اور بمبئی اور مدراس میں اور ایک شالی هندوستان میں قائم کیا جاوے ۔ آن میں سے شالی ھندوستان کا مدرسه کسی متوسط مقام پر قائم هوتا که اضلاع شال و مغرب اور پنجاب کے لوگ اس سے فائدہ اٹھا سکس اور گو یہ فنڈ اس ملک کی وسعت کے لحاظ سے کم ہو مگر جس وقت ہندوستان کی آئندہ مہبودی کے واسطر اس قسم کی عمدہ تجویز کا آغاز ہوگا تو غالباً ہندوستان کے اور لوگ بھی چندہ دیں گے ۔ گو یہ بات سچ ہے کہ لارڈ نارتھ بروک صاحب مهادر ایک بڑے مدبر اول درجہ کے منتظم خیال نہیں کیر جاتے مگر ان کو اور اس سلک کی اور اس کے کروڑوں باشندوں کی جبودی جن پر انھوں نے تین برس سے ھی زیادہ حکم رانی کی ہے دل سے منظور ہے ۔ صاحب ممدوح اس ملک کو اس فائدہ عظیم کے پہنچانے سے صرف ان گورنر جنرلوں سے سبقت نہیں لیے جاویں گے جو آن سے سے بہلر اس ملک پر حکمران ھو چکر ھس بلکہ جب تک اس ملک میں گورنمنٹ انگریزی کا رعب داب رھے گا (اور ھم اسید کرتے هس که یه رعب مدت تک قائم رهے گا) اس وقت تک صاحب ممدوح کا نام بڑی قدر و منزلت اور تعریف کے ساتھ یادکیا جاوےگا ۔

لارځ نارته بروک کا استعفاء

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علیگڑھ ، ۱۷ مارچ ۱۸۷۶)

لارڈ نارتھ بروک صاحب بہادر کا عہدہ گورنری سے دفعتاً استعفاء دینا اور اس کی وجه کا هندوستانیوں پر پوشیدہ هونا بلا شبه ایک عجیب بات ہے اور اسی وجه سے تمام ایسی طبیعتیں جو اپنے ملک کے وائسرائے کی حالت کے اس اثر کو پہچانتی هیں جو ملکی تعلقات کی جہت سے آن پر هوتا ہے اس معاملہ کو نہایت فکر کی نظر سے دیکھ رهی هیں ۔

اس ملک کے علاوہ انگلستان کے باشندے بھی اس امر کو کچھ کم تعجب کی نظر سے نہیں دیکھتے اور جہاں تک ان کو رائے دینے کا موقع ملتا ہے وہاں تک ضرور وہ اپنے خیالات کو پہنچا دیتے ہیں ۔ لارڈ نارتھ بروک صاحب بہادر کے عہد حکوست میں بلحاظ آن کے ایک گورنر جنرل ہونے کے جو امور قابل توجه ہیں رائے لگانے والے ہر ایک پر نظر تامل ڈالتے ہیں مگر جو بات آن کے استعفاء کا سبب قرار پاوے وہ اب تک کسی کے نزدیک ٹھیک شھیک ثابت نہیں ہوئی ۔ سب سے زیادہ جس بات کا لارڈ نارتھ بروک صاحب کے عہد میں شور مچا وہ یا بڑودہ کے رئیس کی معزولی کا معاملہ ہے یا وہ قعط سالی تھی جس کا ہولناک اثر بنگال کی رعایا کے حق میں بہت سخت سمجھا گیا تھا ۔ پس جہاں تک رائے دینے والوں کی عقل کی جولانی ہے وہاں تک انھیں دو معاملوں رائے دینے والوں کی عقل کی جولانی ہے وہاں تک انھیں دو معاملوں

کو استعفاء کا باعث قرار دیا گیا ہے ۔

صاحب راقم لندن ایگزیمنر نے اپنے ایک نہایت طول و طویل آرٹیکل میں اول اس بات کا اقرار کیا ہے کہ لارڈ نارتھ بروک صاحب بہادر کا عہد بہمہ وجوہ نہایت تعریف کے قابل رہا ہے اور بجز اس بات کے کہ صاحب محمدوح میں تمام نکتہ چینی کی سزاحمت کی قوت نہ تھی اور ہر طرح پر عام پسند ہے اور اس میں کسی طرح کا شبہ نہیں ہے کہ لارڈ نارتھ نارتھ بروک صاحب کا عہد بلحاظ ایک اعلیٰ درجہ کی رحم دلی اور خوش اخلاق کے هندوستانیوں کے اعلیٰ درجہ کی رحم دلی اور خوش اخلاق کے هندوستانیوں کے نزدیک یاگادر ہوگا مگر ساتھ اس کے اس نے یہ بھی لکھا کہ ملکی شان و شوکت کے لحاظ سے حضور محمود نے کچھ اپنے تئیں زیادہ نہیں بڑھایا۔

آس نے یہ بھی بیان کیا ہے کہ لارڈ نارتھ بروک صاحب نے قحط سال کے باب میں بجائے اس کے کہ آس کو غلطی کہا جاوے ایک بے نظیر فیاضی کو ظاہر کیا ہے جس سے یہ معلوم ہو سکتا ہے کہ هندوستان کے وائسرائے کو اپنی ماتحت رعایا کی جان کی حفاظت کس قدر مد نظر تھی اور اسی وجہ سے قحط کے معاملہ میں جو کارروائی ہوئی ۔ ہرگز غلطی نہیں ہو سکتی اور اس باب میں صاحب راقم ایگزیمنر کی رائے ہارے نزدیک صحیح ہے ۔ ہم بھی اس بات سے اتفاق کرتے ہیں کہ یہ بے نظیر رحم دلی حضور محدوح کی هندوستان میں یادگار رہے گی اور آس کے لحاظ سے حضور محدوح کے عہد کا تذکرہ ہمیشہ بڑی عزت و قدر کے ساتھ ہوگا مگر بڑودہ کی نسبت جو صاحب ایگزیمنر نے اپنی یہ رائے ظاہر کی ہے کہ اس کی نسبت جو صاحب ایگزیمنر نے اپنی یہ رائے ظاہر کی ہے کہ اس میں گو حضور محدوح نے ظاہراً غلطی کی مگر در اصل وہ ایک مدبرانہ خیال پر مبنی تھی اس میں ہم کو کلام ہے اور شاید ہم مدبرانہ خیال پر مبنی تھی اس میں ہم کو کلام ہے اور شاید ہم کو آن کی اس رائے سے اتفاق کرنے کی کوئی وجہ نہیں ملے گی ۔

هم کو نهایت شبه هے که شاید اصلی وجه لارڈ نارتھ بروک صاحب کے استعفاء کی یہی هے اور هم گان کرتے هیں که اگر سیکریٹری آف اسٹیٹ کو اصول ملک رانی کے لحاظ سے یه مجبوری پیش نه آتی که ایک گورنر جنرل کی ملکی کارروائی کو بالکل باطل کر دینا نهایت خطرناک بات هے تو وہ غالبا بڑودہ کے معامله کو آلٹ پاٹ کر دیتے اور اس کار روائی کو جو قانون کے کسی سانچہ میں نہیں آسکتی هرگز جائز نه رکھتے ۔ چناں چه جو اشتہار سیکریٹری آف اسٹ ی طرف سے جاری کیا گیا تھا وہ بھی اپنی دبی زبان سے هارے اس طرف سے جاری کیا گیا تھا وہ بھی اپنی دبی زبان سے هارے اس قدیمی رائے کے موافق بھی صحیح سعلوم هوتا هے که بڑودہ کا قدیمی رائے کے موافق بھی صحیح سعلوم هوتا هے که بڑودہ کا معامله هی استعفاء کا سبب هوا اور اس کے بعد کوئی اور وجه تلاش معامله هی استعفاء کا سبب هوا اور اس کے بعد کوئی اور وجه تلاش کرنے کی ضرورت نہیں هے تاکه هم راقم ایگزیمنر کی رائے سے اتفاق کریں ۔

راقم ایگزیمنر لکھتا ہے کہ لارڈ نارتھ بروک صاحب نے جو بڑودہ کی گدی کو واپس کر دیا اس بات سے هندوستانیوں کو یقین ہو گیا کہ یہ مواخذہ کچھ ریاست کی ضبطی کا حیلہ نہ تھا اور اس بات کو هم بھی تسلیم کرتے هیں مگر اس امر کے تسلیم کرنے سے یہ لازم نہیں آتا کہ جو کارروائی اس باب میں هوئی وہ بھی درست اور قابل تسلیم تھی کیوں کہ کارروائی کی غلطی اور چیز ہے اور نیک نیتی اور چیز ہے اور اس میں ذرا شبہ نہیں ہے کہ هاری گورنمنٹ میں حد سے زیادہ نیک نیت ہے گو اس سے ایک خاص کارروائی میں کسی وجہ سے غلطی هو گئی بلکہ هم اس غلطی کو بھی نیک نیتی پر هی مبنی سمجھتے هیں اور گو بلحاظ رئیس بڑودہ کی عادات اور پر هی مبنی سمجھتے هیں اور گو بلحاظ رئیس بڑودہ کی عادات اور غلطی اور تیرہ دماغی کے گورنمنٹ پر حق یمی تھا کہ وہ هزاروں غلطی ضرف خلوق خدا کو ایسر شخص کے پنجہ سے نکال دیتی مگر غلطی صرف

اس طرز کارروائی کے لحاظ ہوئی جو کسی طرح صحیح ثابت نہیں ہو سکا ورنہ نیک نیتی کے ثبوت میں ہم اس سے بھی بڑھ کر کہ ریاست بڑودہ واپس دے دی گئی اس بات کو سمجھتے ہیں کہ حیدر آباد کے ریذیڈنٹ کے ساتھ گور نمنٹ کا معاملہ نہایت منصفانہ ہوا اور اس انصاف ہی کا یہ ثمرہ ہوا کہ سانڈرس صاحب گور نمنٹ کی شکایت لے گئے اور رعایا ہند گور نمنٹ کی عنایت کی ممنون ہوئی کی شکایت لے گئے اور رعایا ہند گور نمنٹ کی عنایت کی ممنون ہوئی اور آس نے ثابت کر دیا کہ بڑودہ کے معاملہ میں گور نمنٹ کے خیالات خدا نخواستہ ہرگز نا انصافی پر مبنی نہ تھے لیکن خلاصه کیلام یہ ہے کہ اگر کسی اور وجہ سے نیک نیتی ثابت ہو اور کسی جگہ اتفاقیہ غلطی ہو جاوے تو ایک دوسرے کی اصطلاح کے واسط کافی نہیں ہے۔

بعض صاحب رائے یہ خیال کرتے ھیں کہ سیکریٹری آف سٹیٹ نے معاملات محاصل میں کچھ اختلاف کیا تھا اس سبب سے حضور ممدوح نے استعفاء دے دیا مگر ھم اس وجہ کو قابل لحاظ نہیں سمجھتے اور جو لوگ یہ خیال کرتے ھیں کہ سیکریٹری آف سٹیٹ کو استعفاء منظور کرنے میں اس قدر تعجیل نہیں کرنی مناسب تھی کیوں کہ حضور ممدوح نے صرف اس امر کی اطلاع ھی کی تھی کہ میں اگلے موسم گرما میں شاید ھندوستان میں نہ رہ سکوں گا اور یہ استعفاء نہ تھا مگر ھم کو اس خیال پر نہایت افسوس ہے اور ھم اس رائے کو کسی طرح معقول نہیں سمجھتے اور اس نہایت نازک تعلق میں جیسا کہ گورنر جنرل کا تعلق ھندوستان اور انگلستان سے ہے اس سے زیادہ اور کیا تصریح کی ضرورت تھی جیسے انگلستان سے ہے اس سے زیادہ اور کیا تصریح کی ضرورت تھی جیسے کے لارڈ نارتھ بروک صاحب کی طرف سے ھوئی بلکہ ھم خیال کرتے ھیں کہ اگر حضور لارڈ نارتھ بروک صاحب بہادر کی اس درخواست کی منظوری میں کچھ کلام ھوتا تو حضور ممدوح کو

شاید بہت رہخ ہوتا کیوں کہ ہم کو معلوم ہے کہ حضور ممدوح ان لوگوں میں نہیں ہیں جن کو ایک گورنر جنرل کی پرواہ ہو اور وہ ہر چہار طرف سے چند مخالف صدائیں سننے پر صبر کریں اب ہم ایگزیمنر کی رائے کو ذیل میں درج کرتے ہیں ۔

'' ھم لارڈ نارتھ بروک صاحب ہادر کے عہد حکومت کی نسبت عموماً نہایت تعظیم و تکریم کے ساتھ کوئی بات کرنا چاہتر ھیں اور گو بنظر ظاہر بڑودہ کے مقدمہ میں صاحب ممدوح سے غالباً غلطی هوئی اور هارے نزدیک بھی اس میں خلاف دور اندیشی طریقه اختیار کیا گیا حیسا که قحط کے معامله میں غلطی هوئی تهی اور اس سین چند اسور خلاف دور اندیشی اختیار کیر گئر تھر ۔ مگر ان دونوں صورتوں میں صاحب ممدوح کا اصل منشاء نہایت عمدہ اور عالی تھا اور آخرکار جب بڑودہ کے مقدمہ میں ہندوستان کے باشندوں کو یہ یقین ہو گیا کہ حضور وائسرائے ہمادر ایک نئے ملک کے ضبط کرنے کے واسطے کوئی حیلہ نہیں چاہتے تھے تو یه بھی ایک نہایت مفید بات ہوئی ۔ اسی طرح قحط کے معاملہ سیں اس سے بھی زیادہ عمدہ نتیجہ حاصل ہوا۔ حالاں کہ جو روپیہ بنگالہ اور ہمار کے قحط زدوں کی جان مچانے سس صرف ہوا تھا وہ کچھ انگلستان کا روپیہ نہ تھا بلکہ ہندوستان ہی کا تھا اور لارڈ نارته بروک صاحب مادر کا یه مقصد تها که آس وسیع سلطنت میں جو آن کے زیر حکومت تھی نہایت غریب سے غریب اور ادن^لی سے ادنئی آدمی کی جان بچانے میں خبرگیری کی جاوے ہم ہرگز یہ نہیں خیال کرتے کہ ہندوستان میں کبھی کوئی گورنر جنرل ایسا آیا ہو جس کی راست بازی اور فیاضی اور سادگی اور نیک نیتی کا هندوستانیوں کی طبیعتوں پر ایسا اثر هوا هو جیسا که صاحب ممدوح کی ایسی رحم دلی کا اثر هوا هے اور اس سس بھی کچھ شک

نہیں ہے کہ سرکاری رسموں اور تقریبوں میں صاحب موصوف نے کچھ بڑی شان و شوکت بھی ظاہر نہیں کی اور اگر ہم یہ خیال کریں که صاحب محدود ایک ایسی ٹوبی منتر جس میں دس لاکھ روپیہ کی قیمت کے جواہرات جڑے ہوئے ہوتے جیسر کہ مہاراجہ صاحب بهادر والئي پڻياله کي ڻوبي تهي يا وه مهاراجه صاحب مهادر وزیانگرم کی سانند سرداروں میں اپنی منزلت بڑھانے کے واسطر یہ کرتے کہ آن کی سلامی توپس زیادہ کر دی جاویں تو یہ ایک هنسی كي بات هوگي هال البته لارد نارته بروك صاحب مادركي ذات مي ایک عام نکتہ چینی کے مقابلہ کی طاقت کم تھی اور یہ ایک ایسی کمزوری ہےکہ جو نہایت زبردست شخص انکستان نے ہندوستان کو ملر بھیجر تھر آن میں سے بھی بعض آدمیوں میں یہ کمزوری تھی۔ هم اس امر سے بھی نہایت خوش هیں که لارد نارتھ بروک صاحب نے لوگوں کو اس قسم کے بیش ہا تحفوں کے دہنر کی ترغیب ہم دی جیسر که عالی جناب شاهزاده ویلز مادر کی خدمت میں پیش كير گئر تهر بلكه منع كر ديا تها بايل لحاظ علاوه اس خاص بات کے جس کا ذکر صدر میں ہوا۔ لارڈ نارتھ بروک صاحب ہادر کے عہد گورنری میں اور کوئی امر ایسا شبہ کا باعث نہیں ہے جیسا کہ **آن** کا اپنر عہدہ سے کنارہ کش ہونا ہے ورنہ وہ ہر طرح سے هندوستان مس اپنر جانے کے بعد ایک نہایت هی نیک نام اور شہرت چھوڑ حاویں گے '' ۔

جوتے کا مقدمہ

(اخبار سائنٹیفک سوسائٹی علی گڑھ ، ۱٫ مارچ ۲۸۵۶)

جو لوگ وقت کی مصلحت اور زمانہ کی ضرورت سے بے خبر ھیں اور جن کی نظر میں قومی عزت کوئی شر نہیں ہے اور حن کو قومی ذلت سے کوئی صدمہ نہیں بہنچتا شاید وہ اس خبر کو سن کر بھی ہے خبر رہے هوں گے که سر اجلاس ایک نوحوان اسسٹنٹ اله آباد نے ایک ہندوستانی مختار کا حوتا آتروا کر اس کے سر پر رکھوایا اور چند منٹ تک اس کو اسی طرح کھڑا رکھا چوں کہ وہ ایک ہندوستانی تھا اور اس کی عزت و بے عزتی کا اثر تمام قوم پر ہوتا ہے اس وجہ سے دور اندیش لوگو**ں** کو اس خبر کے سننر سے نہایت ھی افسوس ھوا ھوگا۔ جو زبان دراز لوگ جن کے دماغ میں عقلی جوہر بہت کم رکھا گیا ہے جوتے کے معاملہ کو ایک خفیف بات کہتر تھر اور اس کے متعلق محث و حجت کو مضحکه بتاتے تھر اگر وہ اس خبر کو سن کر بھی اسی غلطی میں پڑے رہیں تو بلاشبہ ان کی بے پروائی نہایت افسوس کے لائق ہوگی ۔ کیا وہ یہ نہیں سمجھتر کہ ان کی قوم کے ایک شخص کے سر پر برسر عدالت جوتا رکھوایا جانا ان کے حق میں کس قدر ذلت کا باعث ہے اور قومی عزت میں نقصان آنا کس نتیجه کا موجب ہے۔ کیا اب وہ اس بات سے خوش ہوں کے کہ آن ہی کی جوتی ان ھی کا سر ھو ؟

جس تیز مزاج افسر نے اپنی دانست میں اس حرکت کو اپنی حکومت کی شان سمجھا ھاری دانست میں وہ اپنی ھم قوم گور بمنٹ کے عدل و انصاف کا حامی نہیں ھے اور شاید وہ اپنی اس تیز مزاجی کے سبب سے گور بمنٹ کے نامور ملازموں میں شار نه ھو سکے گا۔ آس افسر نے شاید اپنے نزدیک ھندوستان میں اپنی عدالت کو انتہائی عدالت خیال کیا جس کی داد نه فریاد ورنه کوئی ضابطه انصاف اس کارروائی کو منصفانه نہیں کمه سکتا۔ ھم یقین کرتے ھیں که جب کبھی رعایا میں سے کوئی شخص کسی ایسی حرکت کا مرتکب دوتا ہے جو قانوناً جرم قرار دی جاتی ھے تو حرکت کا مرتکب دوتا ہے جو قانوناً جرم قرار دی جاتی ھے تو کبھی آس کے لیے اس قسم کی زیادتی بھی محرک ھو جاتی ھے۔ اور اس بات کے خیال کرنے سے کہ جب افسراں عدالت ھی انصاف نہیں کرتے تو ھم کو اپنا انصاف آپ کر لینا چاھیے نہایت آزردہ ھو کر لوگ ایسی کارروائی کرتے ھیں۔

هندوستان میں اعلی درجه کی عدالت جو اسی وجه سے عدالت العالیه کہلاتی ہے عدالت گھائی کورٹ ہے مگر هم دیکھتے هیں که آس کے نزدیک هندوستانیوں کا جوتا پہن کر آنا جانا کچھ خلاف آداب عدالت نہیں ثابت هوا بلکه وهاں علی العموم تمام و کلاء اور اهل مقدمه اجلاس کے کمروں میں بھی جوتا پہن کر جاتے هیں اور حکام عدالت هرگز اس پر تعرض نہیں کرتے ۔ پس افسوس ہے که یه نوجوان اسسٹنٹ کیوں اس کو خلاف آداب عدالت سمجھے ۔ کیا ان کی عدالت کا آداب عدالت هائی کورٹ کے آداب سے کسی وجه سے کچھ زیادہ ہے ۔ یا ان کی عدالت کے واسطے کوئی خاص عزت هائی کورٹ کے قاسلے کوئی خاص عزت هائی کورٹ کی عزت سے اعلیٰ ہے جس کے سبب سے وہ ایسی زیادتی پر آمادہ هوئے ۔

عدالت هائي كورث كي وه تمام كارروائياں جن كو وه خود

کرتی ہے یا جن کو جائز رکھتی ہے اور عدالتوں کے واسطے قانون سمجھی جاتی ہے۔ پس ھم کو حیرت ہے کہ جس عدالت کی کارروائیاں انفصال خصومات میں قانون سمجھی جاتی ھیں اُس عدالت کی کارروائی آداب عدالت کے باپ میں کیوں نہیں واجب الاتباع سمجھی جاتی ۔

جوتا پہن کر عدالت کے کسی کمرہ میں جانا خلاف آداب هی قرار پاوے تو جوتا پہن کر جانے والا صرف اس سزا کا مستوجب هوگا جو قانون کے منشاء کے موافق اس شخص کے واسط مقرر هے جو عدالت کی عزت میں خلل انداز هو اور هم کو یقین هے که ایسے مجرم کے واسطے کسی قانون میں یه سزا نہیں هے که مجرم کے سر پر پندرہ منٹ تک جوتیاں رکھوائی جائیں یا جو شخص ذرا بھی اپنے مطلب کی تائید کے واسطے زیادہ گفتگو کرے تو نازک دماغ حاکم اس کے کان پکڑاوے اور اٹھاوے بٹھاوے یا اس کو دماغ حاکم اس کے کان پکڑاوے اور اٹھاوے یا راہ چلتے شخص ڈیم سؤر کہه کر سر اجلاس دو لاتیں لگاوے یا راہ چلتے شخص کو اس جرم میں پکڑ کر بید لگوا دے که اس نے هم کو سلام نہیں کیا تھا۔ ایسی سزاؤں کا اپنی طرف سے جاری کرنا جن کے وہ قانونا مجاز نہیں هیں انگریزی عدالتوں کی تہذیب اور انصاف میں سراسر بٹه لگاتا ہے۔

هم عدالت هائی کورٹ کے انصاف اور تہذیب کے نہایت مداح هیں که وہ اپنی غریب رعایا کے ساتھ منصفانه برتاؤ میں اپنے فرض کو ادا کرتی ہے مگر اس قدر هم کو اس کی نسبت بھی خیال ہے که آس کا فرض صرف یہی نہیں ہے که وہ اپنی عدالت کو انصاف کا ذمه دار سمجھ لے اور جو عدالتیں آس کی ماتحت هیں ان کی پروا نه کرمے بلکه اس لحاظ سے که وہ خود عدالت العالیه اور تمام عدالتوں کے انصاف کا مرجع ہے یه بھی آس کا فرض ہے

کہ وہ اپنے ماتحت حکام کی عدالتوں کی بے تہذیبی اور نا انصافی کو هر وقت سخت مزاحمت کی نظر سے دیکھے اور جو امور غریب رعایا کی عزت و آبرو کی حفاظت کا ذریعہ هیں آن کی حایت کرتی رہے اور جو باتیں رعایا کی بے آبروئی اور آس کی دل شکنی کا سبب هیں اور ان کا استعال بے جا اور ناجائز طریقہ سے هوتا ہے آن کو اپنی عدالت کے زور سے دفع کرتی رہے ۔

اسی خاص معاملہ میں جس کا هم نے تذکرہ کیا ، هندوستان کے تمام سعزز وکلاء اور مختار کار بلکہ تمام ایسے شریف هندوستانی جن کو اپنی قومی ذلت کا سخت صدمه هے اس باب میں عدالت هائی کورٹ کی طرف نہایت امید کی نظر سے دیکھ رہے هیں اور آن کو اس بات کا بھروسه هے که جو کارروائی اس وقت عدالت العالیہ کرے گی وہ آئندہ کے واسطے ایسے تیز مزاج افسروں کے واسطے ایک عمدہ نظیر هو جاوے گی ۔ پس اگر اس کا مناسب تدارک هو گیا تو تند مزاج حاکم اپنی تند مزاجی کو ضبط کرنے کے عادی هوں گے اور اگر عدالت هائی کورٹ نے کچھ نه کیا تو یقین کر لینا چاهیے که گویا آئندہ کے واسطے هائی کورٹ ھی کی طرف سے هندوستانیوں کے تذلیل کی ایک نظیر هوگی ۔

نئی تہذیب

(على گڑھ انسٹي ڻيوڻ گزڻ ، ١٢ جون ١٨٨٣ء)

بمبئی کے کشف الاخبار نے تہذیب مروجہ کے عنوان سے ایک آرٹیکل شاید مزاحاً نئی تہذیب پر لکھا ھے بے شک نئی تہذیب بر جو کچھ الزام لگایا جاوے اور نئی تہذیب والوں کی جو هنسی آڑائی جاوے سب آسان ھے ۔ هم بھی اس بات سے متفق هیں که نئی تہذیب اختیار کرنا ہے وقونی کا کام ھے اور اپنے تئیں نہایت مشکلات میں پھنسانا ھے ۔ نئی تہذیب اختیار کرنا آسان کام نہیں ھے ۔ جو لوگ اس کو اختیار کرنا چاھتے ھیں اپنے آپ کو صدھا مشکلات میں پھنساتے ھیں ۔ اس زمانہ میں نئی تہذیب اختیار کرنے سے پہلے پھنساتے ھیں ۔ اس زمانہ میں نئی تہذیب اختیار کرنے سے پہلے دل گردے والے شخص کا کام ھے جو آس کے اخیتار کرنے سے پہلے اپنے آپ کو صدھا بلاؤں و مشکلات و طعن تشنیع کا نشانہ بنا لے ۔ ایک اس وقت ھم کو ھندوستان میں دو فریق سے کام پڑا ھے ۔ ایک خود ھاری قوم دوسری وہ قوم جو ھم پر فرماں روا ھے ۔

ہاری قوم کا یہ حال ہے کہ ہم میں سے جن لوگوں نے نئی تہذیب میں قدم رکھا ہے ہم نے کوئی درجہ لعنت و سلامت طعن تشنیع اور اتبام اور مسخرا پن کا اُن کی نسبت باقی نہیں چھوڑا۔ جو کچھ چاہتے ہیں کہتے ہیں ۔ جو کچھ چاہتے ہیں کہتے ہیں۔

ہاری فرساں روا قوم کا یہ حال ہے کہ آن نئی تہذیب والوں سے زیادہ کوئی خار ان کی آنکھوں سیں نہیں کھٹکتا ۔ جب یورہین جنٹلمین مخلع بالطبع ہو کر ہاری قوم کے پرانے فیشن کی تضحیک کرتے ھیں تو کوئی درجہ حقارت کا اٹھا نہیں رکھتے ۔ کہتے ھیں کہ ھندوسستانی بندر کے موافق ھیں جو چوتڑوں کے بل زمین پر بیٹھتے ھیں ۔ بندر کے سوافق کھانے میں ہاتھ سان کر ھاتھ سان کہ معاشرت میں نہیں ھے ۔ وحشیوں سے کسی قدر بہتر آن کا لباس ھے ، گو قطع آس کے مشابہ ھے جو جنگلی وحشی نا سہدنب قوسیں اب تک پہنتی ھیں ۔ بہر حال یہ باتیں آن کی صحیح ھوں یا غلط مگر ھاری قوم کے پرانے فیشن کے لوگوں کی اس قسم کی تضحیک و حقارت آن کے دل میں ھے ۔

ایک بہت بڑے مجمع میں جس میں بہت سی لیڈیاں اور جنٹلمین شریک تھے ایک نہایت معزز هندوستانی اپنا قوسی لباس پہنے هوئے آگیا۔ جس حقارت اور تعجب سے سب نے اُس کو دیکھا ھے وہ کسی طرح قلم سے بیان نہیں هو سکتا۔ اکثر لوگ کہتے تھے که عجائب خانه میں رکھنے کے لائق ھے۔ کوئی کہتا تھا کہ ان کی نمائش کا اگر ٹکٹ مقرر کیا جاوے تو بہت کچھ حاصل هو۔ غرض که یہی یورپین جنٹلمین جس قدر که هو سکتا ہے هاری قوم کے پرانے فیشن کی خاک اڑاتے هیں اور جب هم اُسی درتے هیں تو غضب آلود هوتے هیں جس کم مقصد یه ھے که هم آسی ذلت کی حالت میں رهیں۔

ھاں البتہ جو بات کہ آن کو پسند ھے اور جس سے ھارے پرانے فیشن کے لوگ آن کو اچھے معلوم ھوتے ھیں وہ آن کی غلامی کی حالت ھے۔ آن کے منه سے جب حضور کی آواز نکلتی ھے آن کا دل ٹھنڈا ھوتا ھے۔ آن کے ھاتھ جوڑ کر بات کرنے سے آن کو خوشی پیدا ھوتی ھے۔ ایک بے چارہ بڈھا معزز زمین دار جب کسی یورپین سے ملنے جاتا ھے آس کو کچھ پروا نہیں ھوتی جب کسی یورپین سے ملنے جاتا ھے آس کو کچھ پروا نہیں ھوتی

که برانڈہ میں خدست گاروں کے پاس بیٹھا ہے یا باہر زمین پر کھڑا ہے۔ وہ اپنی سواری پر سے احاطه کے باہر سے اتر کر دھوپ میں کوٹھی تک پیدل آتا ہے یا بڑا دل کر کے دو چار قدم احاطه کے اندر گاڑی لے آتا ہے۔ جس طرح بنا دیر سویر آس کو ملازمت نصیب ہوئی ۔ آس نے سامنے جا کر بھی ادب آداب میں کوئی درجه غلامی کا باق نہیں چھوڑا حکام آن پر مہربانی بھی کرتے ہیں درجه غلامی کا باق نہیں چھوڑا حکام آن پر مہربانی بھی کرتے ہیں اس ویسی ھی مہربانی جیسے آقا غلام پر مہربان ہوتا ہے۔ پس اس فیشن کے آدمی قوم میں بھی مطعون نہیں ہوتے اور قوم فرماں روا قوم کی بھی مہربانی حاصل کرتے ہیں۔

مگر جب کسی شخص کو غیرت آئی اور آس نے یه ارادہ کیا کہ میں اپنے تئیں اور اپنی قوم کو آس طعنہ آمیز باتوں بندر کی طرح بیٹھنے اور کھانے کی حقارت سے نکالوں اور غلامی کی عادت کو قوم سے چھڑاؤں آسی وقت ھاری فرماں روا قوم نہایت غیظ و غضب سے آس کو دیکھتی ہے۔ اکثروں کو آن میں سے جوش آتا ہے کہ یه غلام ھاری برابری کرنے پر آمادہ ھوا ہے۔ پاجی غلام ھم سے چاھتا ہے کہ ھم بطور دوستوں کے آس سے مدارات کریں۔ ھم بہت خوشی سے بطور ایک آقا کے اس پر مہربانی کرنے کو موجود ھیں۔ مگر اب آس کو غرور آیا ہے۔ یه غلام چاھتا ہے کہ ھارا دوست بنے اور برابر کے دوستوں کی طرح ھم اس سے ملیں۔ کہ ھارا دوست بنے اور برابر کے دوستوں کی طرح ھم اس سے ملیں۔ نکال دی جاوے گی آن کو خدا نے قدرت دی ہے جب چاھتے ھیں نکال دی جاوے گی آن کو خدا نے قدرت دی ہے جب چاھتے ھیں ایس کی مشیخت کسی دن ایسا ھی کرتے ھیں جیسا کہتر ھیں۔

وہ شخص جس نے نئی تہذیب اختیار کی ہے بلا شبہ اس کے دل میں انسانیت کا اثر ہوا ہے۔ وہ چاہتا ہے کہ میں نہایت انسانی ادب سے پیش آؤں اور اوروں سے چاہتا ہے کہ وہ بھی ایک اشراف

انسان سے جس طرح پیش آنا چاھیے اس طرح پیش آئیں۔ اکثر حکام سے وہ خوف کھاتا ہے کہ خدا معلوم کیا پیش آوے اور وہ جو میری وضع کو نا پسند کرتے ھیں کس طرح مجھ سے پیش آویں اور اکثر دفعہ اس کو مشکلات بھی پیش آتی ھیں۔ غلامی کا طریق برتنا یہ پسند نہیں کرتا۔ اس کے جنٹلمین طریقہ کو وہ پسند نہیں کرتے۔ جن سے اس کو معاملہ بڑا ھے اس کی زندگی نہایت تلخی میں گذرتی ھے۔ اس کی تمام خواھشیں برباد ھوتی ھیں۔ ھر طرح اس کو ناکامی حاصل ھوتی ھے۔ پس نئی تہذیب کا اختیار کرنا اس شخص کا کام ھے جو اول تمام بلاؤں اور صدمات کے اٹھانے اور تمام مشکلات کے جھیلنے کے لیے آمادہ ھو جاوے۔

وہ خوب سمجھتا ہے کہ ، ہری قوم کو مجھ سے نذرت ہے۔ دوسروں کو میرے طریقہ اور وضع سے عداوت ہے مگر با وصف ان باتوں کے وہ مادرانہ دلری کرتا ہے اور تمام مشکلات جھیلتا ہے۔ آس کا کانشنس اس بات سے خوش ہوتا ہے کہ نہ میں نے یہ کام اس غرض سے کیا تھا کہ دوسری قوم محھ پر مہربان ہوگی یا مری قوم سری عزت کرےگی مگر خود محھ کو وہ کام کرنا چاہر جس سے خود میری عزت میری آنکھ میں ہو گو میں اس وقت اپنی قوم کا نشانہ ملامت بنوں مگر اپنی مثال سے اپنی قوم کو بتلاؤں کہ هم کو آن عیبوں کو چھوڑنا چاهیے جو حقیقت میں حقارت اور وحشیانہ پن کے هیں اور جن کے سبب سے هاری قوم وحشی یا نم وحشی کے لقب سے معزز ہے ۔ وہ یقین کرتا ہے (خواہ اُس کا یقین صحیح هو یا غلط) که گو اس وقت میری قوم مجه کو ملامت کرتی ہے مگر رفته رفته وہ سمجھر کی اور شائسته قوموں میں درجه پاوے گی وہ صاف اپنی تہذیب اور قومی تہذیب کی امید پر یہ سب مشکلات برداشت کرتا ہے مگر اس کا دل آن امیدوں کے

جو اس نے باندھ رکھی ھیں کبھی رنجیدہ نہیں ھوتا ۔

پس وہ لوگ نہایت نا انصاف ھیں جو یہ خیال کرتے ھیں کہ نئی تہذیب والے انگریزوں کے خوش کرنے اور آن میں ملنے اور آن کی خوشامد کرنے کی غرض سے یہ طریقہ اختیار کرتے ھیں انگریزوں سے زیادہ تو کوئی شخص اس نئی تہذیب کا مخالف نہیں ہے۔

هاں هم سب انگریزوں کی نسبت یه باتیں نہیں کہ سکتے جو هم نے اس آرٹیکل میں لکھی هیں۔ ایسے فیاض طبع بھی (مگر بہت کم) انگریز هیں جو هندوستانیوں کی هر طرح کی ترق سے خوش هوتے هیں۔ آن کی نہایت خوشی هوتی هے که هندوستانی تہذیب و شائستگی کے اعلیٰی درجه میں پہنچیں۔ آن کی کہال خواهش هے که هندوستانیوں سے بطور ایک دوست کے راہ و رسم رکھیں۔ آن کی خواهش هے که هندوستانیوں سے غلامی کی عادت (گو که وہ کیسی هی ظاهر داری کے لیے هو) جاتی رهے مگر ایسے فیاض طبع کم هیں۔

پس جو لوگ که نئی تهذیب والوں کو طعنه دیتے هیں اگر آن کے مقصد پر خیال هو اور ذرا سوچیں که آن کو اس قدر مشکلات میں پاڑنے کی کون سی خوشی ہے تو یقین ہے که آن کا غصه بہت کچھ ٹھنڈا هو جاوے ۔

وفات لاری هابرت صاحب بهای ر گورنر مدراس

(تهذیب الاخلاق جلد ششم تمبر ے بابت یکم ربیع الثانی ۲۹۲ه)

ہارا یہ پرچہ کسی کے مرنے جینے پر شادی و ماتم نہیں کرتا مگر ہاں ایسے غم پر ماتم کرتا ہے جس سے قوم کا نقصان ہے۔

مسلمان جو هزاروں طرح کی آفتوں اور مصیبتوں اور ذلتوں میں پڑے هوئے هیں آن کے حال پر رحم کرنے والا اور آن کو تمام آفتوں سے بچانے میں کوشش کرنے والا مسلمانوں کا دوست لارڈ هابرٹ تھا۔ افسوس صد افسوس که انھوں نے بعارضه اسمال معدی دفعۃ کے اپریل ۱۸۵۵ء کو شام کے چھ بجے تیس سنٹ پر اس دار نا پائدار سے انتقال کیا۔

هارے ایک دوست کا مقولہ ہے کہ اچھالا ہوا پتھر جب نیچے گرنا شروع ہوتا ہے تو بیچ میں کہیں نہیں تھمتا زمین ھی پر آکر ثکراتا ہے۔ اسی طرح مسلمانوں کا حال ہے کہ اُن پر ادبار آیا ہے۔ اُن کا تنزل شروع ہوا ہے اب کوئی اُن کو تھام نہیں سکتا۔ وہ ضرور تحت الثری کو پہنچیں گے۔ اگرچہ ہم اپنے دوست کی بات کو نہیں مانتر مگر آثار ایسر ھی دکھائی دیتر ھیں۔

اضلاع شال و مغرب میں خاص مسلمانوں کی بھلائی و بہتری کے لیے مدرسة العلوم قائم کرنے کی تجویز کی گئی ۔ اُس میں لوگوں نے کس قدر مخالفتیں اور مزاحمتیں کیں کہ برسوں سے اخباروں کے صفحوں کے صفحے اُس سے سیاہ ہوتے ہیں اور رسالہ پر رسالے چھپتے

هیں ۔ پھر اتنی بات پر اکتفا نہیں ھوا کہ جو بات سچ اور صحیح اور واقعی ہے اسی کی بھلائی یا برائی پر بحث کریں بلکہ جھوٹ اور افترا اور بہتان آن لوگوں نے بھی جو اپنے تئیں بڑے دین دار خیال کرتے ھیں اپنے دل سے بنائے اور مشہور کیے تا کہ جس طرح ھو سکے مدرسة العلوم میں ھرج پڑے اور بے شک آن کا دل جانتا ھوگا کہ جو کچھ وہ کہتے ھیں خوا، وہ سچ ھو اور خواہ جھوٹ اس کو مدرسة العلوم سے کچھ تعلق نہیں ہے ۔ پھر جس قوم کی بھلائی میں کوشش کی جاوے اور اسی قوم کے لوگ دیدہ دانسته صرف اپنے اغراض سے اس میں خلل انداز ھوں اور کوئی دیتے دانسته صرف اپنے اغراض سے اس میں خلل انداز ھوں اور کوئی حقیقہ اس کی برہادی کا فروگزاشت نہ کریں تو کیوں کر خیال نہ کیا جائے کہ آثار تو ادبار ھی کے دکھائی دیتے ھیں ۔ ھاں صرف اس بات پر بھروسہ ہے کہ و اللہ مستم نہ ورہ ولو کہ و الکا فہ و ن

مدراس میں ایک یہ شخص لارڈ ھابرٹ تھا جو مسلمانوں کی ھر قسم کی بھلائی میں کوشش کرتا تھا۔ افسوس کہ وہ بھی دنیا سے جاتا رھا اور مسلمانوں کے ادبار کا دوسرا آثار نظر آیا۔ پس خیر خواھاں مسلمانان اس واقعہ ناگزیر پر جس قدر غم و الم کریں بجا ھے۔ آئیسویں تاریخ تک لارڈ ھابرٹ بہت اچھے تھے اور پریسیڈنسی کالج میں نہایت فصاحت سے آئندہ تعلیم کی تدبیر پر بہت عمدہ گفتگو کی تھیں۔۔

لارڈ ھاہرٹ نے آکسفورڈ کے ٹرینٹی کالج میں تعلیم پائی تھی اور ۱۸۳۲ء میں سر رشتہ بورڈ تجارت میں کلارک مقرر ھوئے تھے اور آس کے دوسرے برس سر ایچ ایلس کے ساتھ پرائیویٹ سیکریٹری مقرر ھو کر برازیل کو گئے تھے اور ۱۸۳۸ء سے لغایت سنہ ۱۸۶۹ء لندن میں کوئلہ کے کارخانہ میں رجسٹری کمشنر تھے اور جب

سر جارج گرے آبادی ھائے جدید کے سیکریٹری تھے تو لارڈ ھابرٹ آن کے پرائیویٹ سیکریٹری تھے۔ اُس کے سوا اور عہدوں پر بھی مامور رہے آخرکار سارچ سنہ ۱۸۵۲ء میں مدراس کے گورنر مقرر ھوئے ۔ تمام مسلمان لارڈ ھابرٹ سے ذاتی محبت رکھتے تھے ۔ مسلمانوں کی بہتری اور ترق کے لیے جو کچھ لارڈ ھابرٹ نے کیا اُس کے بھی مسلمان اُن کے بہت احسان مند ھیں اور مسلمانوں کی بلکہ عام لوگوں کی تعلیم نے اُن کے عہد میں به نسبت اور کسی گورنر مدراس کے بہت ترق پائی تھی ۔ اس قدر اُن کے حق میں کہنا بہت صحیح ہے کہ مدراس کے تمام باشندگان کی بھلائی چاھنے والے اور مسلمانوں کے خاص دوست تھے ۔ اُن کے بھائی ھابرٹ پاشا سلطان روم کے ھاں خاص دوست تھے ۔ اُن کے بھائی ھابرٹ پاشا سلطان روم کے ھاں امیر البحر ھیں ۔

خدا لارڈ ہابرٹ پر اپنے نبی کے صدقہ سے جس کی آمت پر وہ مہربان تھے رحم کرے ۔ آمین

ضميمى

واقعه معراج کی حقیقت و اصلیت

مقالات سرسید کی اس جلد کا پہلا حصه مذهبی امور کے متعلق سرسید کے ذاتی خیالات پر مشتمل ہے مندرجه ذیل مضمون اسی سلسله کی ایک کڑی ہے جس میں سرسید نے معراج نبوی اور شق صدر کے متعلق اپنی رائے اور اپنے خیال کا بڑی تشریح اور تفصیل سے ذکر کیا ہے۔ اس جلد کے حصه اول کی ترتیب کے وقت یه مضمون نہیں ملا تھا۔ اب دستیات ہوا ہے اس لیے آخر میں بطور ضمیمه درج کیا جاتا ہے۔

(چد اساعیل پانی پتی)

معراج کے متعلق حدیثوں اور روایتوں میں جس قدر اختلاف ہے غالباً اور کسی امر میں اس قدر اختلاف نه هو ٔ معراج کا واقعه بیان کرتے هوئے آن اختلافات کا بیان کرنا اور آن کی تنقیح کے رنا ضروری ہے اس لیے هم ہاں هر ایک امر کو معه آن کے اختلافات کے جدا جدا بیان کرتے هیں ۔

زمانة معراج

بخاری میں شریک کی روایت سے ایک حدیث ہے جس کے یہ الفاظ ہیں '' قبدل ان یاوحی الله '' یعنی اسراء آنحضرت کو وحی آنے یعنی نبی ہونے سے پہلے ہوئی تھی مگر خود محدثین نے بیان

کیا ہے کہ وہ انفاظ اسرا سے متعلق نہیں ہیں چناں چہ اس حدیث کی اس بحث کو بھی بیان کریں گے اس وقت آن اختلافات کو بیان کرتے ہیں جو اسرا یا معراج سے متعلق ہیں ۔

اس باب میں که معراج کب هوئی ، مندرجه ذیل مختلف اقوال هیں :

۔ هجرت سے ایک برس پہلے ربیع الاول کے مہینہ میں ۔

ہجرت سے ایک برس پانچ مہینے پہلے شوال کے مہینہ مین ۔
 بعضوں نے کہا کہ رجب کے مہینہ میں ۔

سـ هجرت سے اٹھارہ سمینے پیشتر ـ

ہ۔ هجرت سے ایک برس تین مہینے پہلے ذی الحجه میں ۔

۵- مجرت سے تین برس پہلے ۔

ہوت سے پانچ برس بعد ۔

ے۔ نبوت سے بارہ برس بعد ، بعضوں کے نزدیک قبل موت ابی طالب اور بعضوں کے نزدیک بعد موت ابی طالب ۔

 $_{\Lambda^{-}}$ نبوت سے تیرھویں برس ربیع الاول یا رجب میں -

ہورت سے سولہ مہینے قبل ذیقعدہ کے سہینہ میں اور
 بعضوں کے نزدیک ربیع الاول میں ۔

. ۱ ستائیسویں تاریخ رجب کے مہینہ میں ـ

11- رجب کے پہلے جمعہ کی رات کو ۔

۱۲- ستائیسویس تاریخ رسفهان کے مہینه میں هفته کی رات کو -

یه تمام اختلافات جو هم نے بیان کیے عینی شرح بخاری میں مندرج هیں اور اُس کی عبارت بلفظه هم ذیل میں نقل کرتے هیں ۔ عینی میں لکھا هے کہ معراج کے وقت میں اختلاف هے بعض و اختلف فی وقت المعراج کہتے هیں نبوت سے پہلے هوئی

یه قول شاذ ہے لیکن اگر اس کا واقع هونا خواب س خيال كيا جائے تو بے وجہ نہیں ہے۔ بعض هجرت سے ایک سال بہلر ربيع الاول سين مانتر هين ـ يه قول اکثر لوگوں کا ھے ماں تک که ابن حزم نے اس پر اجاع آست ہونا بیان کیا ہے اور سندی کے نزدیک هجرة سے ایک برس پایخ سہینے پہلے ہوئی اس قول کو طری اور بہتی نے بیان کیا ھے ۔ اس قول کی بنا پر معراج ماه شوال می هیوئی اور این عبدالس نے ماہ رجب میں بیان کیا ہے۔ نیووی بھی اسی کو مانتا ہے اور بعض کا قول ہے کہ هجرت سے اٹھارہ سہینر بہلر هوئی _ ابن البر نے اس قول کو بھی بیان کیا ہے اور بعض کے نزدیک هجرت سے ایک برس تین مہینے پہلے هوئی ۔ اس کی بنا پر ذي الحجه كا مهينه تها ابن فارس اسى قول كو مانتا ہے اور بعض کے نزدیک هجرت سے تین برس مہلر ہوئی ۔ اس کو ابن اثیر نے

فقيل انه كان قبل المبعث وهو شاذ الااذ احمل على انه وقع في المنام فله وجه وقيل كان قبل الهجرة بسنة في ربيع الاول و هو قلول الاكثريان حتى بالغ ابن حزم فنقل الاجاء على ذلك وقال السدى قبل الهجرت بسنة وخمسة اشهر و اخرجه من طريقه الطرى والبيهة فعلى هذا كان في شوال و حكى اين عبدالـرانه كان في رجب و جـزم به النووى و قيل بشانية عشر شهر احكه ابن البر اينا وقيل كان قبل الهجرة بسنة و ثلاثة اشهر فعلى هـذا يـكـون في ذي الـحـجـه و به جنزم ابن فارس وقيل كان قسل الهجرة بشلاث سندين حكاه ابن الاثبر وحكي عياض عن الزهري انه كان بعد المبعث يخمس سننن و روی این شیبه سن حديث جابروا ابن عباس

رضى الله تعالى عنهم قال ولد رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم الاثنين و فيه بعث وفيده عدرج بده الى الساء وفيه سات ـ

(صفحه ، معيني شرح بخارى جلد ٨) معراج اور اسی دن وفات پائی ـ

و كان اي الاسراء في السنة الشانية عشر من الخبوة و في روايـــــة الـــبـــهـــقى مـــن طــريق موسلي بن عقبه عن الزهري انه اسرے به قبل خروحه الى المدينة بسنة وعن السدى قبل مهاجرته بستة عشر شهرا فعلى قوله يكون الاسراء في شهر ذيقعدة وعلى قلول الزهري يكلون في ربيع الاول و قيل كان الاسراء ليلة السابع والعشرين من رجب و قد اختاره الحافظ عبدالغني بن سرور المقدسي في سيرته و سنهم سن يزعم انه كان في اول ليلة جمعة

بیان کیا ہے اور قاضی عیاض نے زهری سے حکایت کی ھے که معراج نبوت سے پایخ برس بعد هوئی اور ابن ابی شیبه نے عماس اور جابر سے روایت کی ہے کہ وه دونوں کہتر تھر که پیغمس خدا پیر کے دن پیدا ہوئے اور اسی دن نبوت ملی اور اسی دن

عینی میں دوسرے مقام پر لکھا ہے کہ معراج نبوت کے بارھویں سال ھوئی ۔ بہقی نے موسلی بن عقبه اور آس نے زهری سے روایت کی ہے کد معراج مدینہ جانے سے ایک برس پہلے هوئی اور رسدی کا قول هے که هجرت سے دو ماہ مهلر پس اس کے قول کے سوافق ماہ ذیاتعدہ میں اور زھری کے قول کے موافق ربيع الاول ميں ، بعض كمهتر هيں ستائیسویں رجب ک۔و ہ۔وئی ۔ حافظ عبدالغني بن سردار مقدسي نے اپنی سیرت میں اسی قہول کو اختیار کیا ہے اور بعض کا گان ہے ساہ رجب کو جمعہ کی اول شب میں هوئی ـ پهر بعض کا قول ہے کہ ابو طالب کے

مرنے سے پہلے ہوئی اور ابن

حوزی نے سکھا ھے کہ ان کے

مرنے کے بعد نبوت کے بارھویں

سال هوئی _ بهر کوئی کمتا هے

کہ نبوت کے تیرھ وہ سال رہضان کی سترہ تاریخ کو ہفتہ

کی رات کو هوئی اور کوئی کہتا

ھے کہ ربیع الاول سیں کوئی کہتا

ھے رجب سی ۔

من شهر رجب ثم قيل كان قبيل موت ابي طالب و ذكر ابين الجوزى انه كان بعد موته في سنة اثنتي عشرة للنبوة ثم قيل كان في ليلة السبت لسبع عشرة ليلة خلت من رسفان في السنة الشالشة عشر للنبوة و قيل كان في ربيع الاول و قيل في ربيع الاول و قيل في رجب -

(صفحه ۱۹۹ جلد ثنانی عیانی شرح بخاری)

یه روایتی اس قدر مختلف هیں که کوئی علانیه قرینه با دلیل بین آن میں سے کسی روایت کو مرجع کرنے کی نہیں ہے۔ قرآن مجید سے اس بات پر یقین هو سکتا ہے که اسراء جس کا دوسرا نام معراج ہے رات کو واقع هوئی اور احادیث مختلفه سے جو امر مشترک اور نیز قرآن مجید سے بطور دلالت النص پایا جاتا ہے وہ اس قدر ہے که زمانه نبوت میں معراج هوئی اور یه بات که کب هوئی بسبب اختلاف روایات و احادیث محقق ثابت نہیں هو سکتا۔ پس ان تمام اختلافات کا نتیجه یه هوا که بعض علاء تعدد معراج اور اسراء کے قائل هوئے اور معراج اور اسراء کو دو جداگنه واقعے قرار دیے ، چناں چه عینی شرح بخاری میں لکھا ہے۔

که سعراج اور اسراء میں اختلاف هے که دونوں ایک رات و اختلفوا فی المعراج میں هوئے یا دو راتوں میں اور و الاسراء هل کانا فی لیالمة دونوں جاگنر میں هوئیں یا

واحدة او في ليلتين و هل كانا حميعا في اليقظة او في المنام واحد هما في اليقظ و الاخر في المنام فقيل ان الاسراء كان مرتبن مرة بروحه مناسا و مرة بروحه و بدنه يقظة وسنهم سن يدعي تعدد الاسراء في اليقظة ابضاحتي قال انه اربع اسرا آت وزعم بعيضهم ان بع خسها كأن بالمدينة ووفق ابو شامة في روايات حديث الاسراء بالجمع بالتعدد فجعل ثلاث اسرا ات مرة من مكة الى بيت المقدس فقط على المراق ومرة من مكة الى السماوات عللي المراق ايه ضا ومرة من مكة الى بييت المقدس ثم الى السملوات جمهور السلف والمخلف على ان الاسراء كان ببدنه و روحه و اسا سن مكة الى بيت المقدس فبنض القرآن ـ

خواب میں یا ایک خواب میں اور ایک بیداری میں ۔ بعض کا قول هے اسراء دونوں مرتبه هوئی _ ایک دفعه خواب سی روح کے ساتھ اور ایک دفعہ روح اور بدن کے ساتھ بیداری سی بعض کے نیزدیک بیداری سس کئی دفعه اسراء هوئی ـ مان تک کہ بعض چار دنعہ اسرا کے قائل هوئے هس اور بعض نے گان کیا ہے کہ ان سی سے بعض مدینه سی هوئیں ـ ابو شاسه نے حدیث اسراکی مختلف روایتوں میں تین مرتبه اسراء مان کر تونیق کی ھے۔ ایک دنعه مکه سے بیت المقدس تک براق پر دوسری دفعه مکه سے آسانوں تک براق پر ۔ تیسری دفعه مکه سے بیت المقدس تک پھر آسانوں تک ـ متقدمین اور متاخرین سب متفق هس که که اسراء بدن اور روح کے ساتھ واقع ہوئی اور مكه سے بیت المقدس تک حانا تو نص قرآنی سے ثابت ھے ۔

(عیبی شرح بخاری جلد ۲ صفحه ۹۹)

ان تمام روایتوں پر لحاظ کرنے کے بعد معلوم ہوتا ہے کہ علاوہ اس اختلاف کے جو زمانه معراج میں ہے نسبت نفس معراج یا اسراء کے حسب تفصیل ذیل علاء میں اختلاف هو گیا هے _

 ۱- بعضوں کا قول ہے کہ اسراء اور معراج دو جداگانہ واقعات هس ـ

۲- بعضوں کا قول هے که ایک دفعه صرف اسراء هوئی اور ایک دفعه اسرا معه معراج ـ

سـ بعضوں کا قول هے که معراج دو دفعه هوئی ایک دفعه بغیر اسراء کے اور ایک دفعہ معہ اسراء کے۔

ہ۔ بعض کا قول ہے کہ اسراء معہ معراج کے دو دفعہ ہوئی ۔

۵۔ اکثر علماء کا یہ قول ہے جو قول مقبول بھی ہے کہ اسراء و معراج ایک دفعه ایک ساتھ ایک ھی رات میں ھوئی ـ

یمی قول صحیح اور متفق علیہ ہے اور احادیث سے جو امر مشترک پایا حاتا ہے اور جو قرآن محید کی دلالت النص سے ثابت هوتا ہے وہ بھی یہی ہے مگر ہم اس مقام پر آن تمام اقوال کو جن سے یه اختلاف ظاهر هوتے هیں ذیل میں لکھتر هیں ـ

اقوال آن علماء کے جو اسراء اور معراج کو دو جداگانه واقعر كهتر هين

جو لوگ که الاسراء اور معراج کو علیحده علیحده دو واقعے جنح البخاري الى ان قرار ديتر هي أن كا بيان يه ه بخاری کا سیلان اس پر ہے کہ ليلة الاسراء الك واقعه هـ ـ اور لي لمة المعراج الك واقعه ـ اور وه دليل په لاتا هے كه بخارى

ليلة الاسراء كانت غيير ابن وحيه كليه قول كه خود ليلة المعراج لانه افرد لكل سنهدا ترجمة ـ

(فتح البارى جلد هفـتم صنحه ۱۱)

نے ان دونوں میں سے هر ایک کے لیر جدا جدا ترجمه الباب قرار دیا ہے (اور واضح هو که مخاری کا ترجمة الباب بطور استنباط مسائل کے سمجھا حاتا ہے ـ

خاری نے ایک علیحدہ باب میں لکھا ہے کہ یہ باب ہے حدیث اسراء کا اور خددا کے اس قول کا جہاں اس نے فرمایا ہے '' ياک ہے وہ جو لر گيا اپنر بندے کو ایک رات میں مسجد حرام سے مسجد اقصلٰی تک''۔

اور دوسرے علیحدہ باب میں لکھا ہے کہ یہ باب ہے اس بیان سی که اسراء سی تماز کیوں کر فرض ہوئی ۔

مگر اس دلیل کو خود علامه هجر عسقلانی نے رد کیا ہے۔ اور کہا ہے کہ اس سے دونوں کا جدا جدا ھونا نخاری کے نزدیک نهس نكتا بلكه كتاب الصلوة كے عنوان سے دونوں کا ایک ھونا ظاهر هے ـ كيوںكه أس نے لكها هے _ که لیلة الاسراء سی نماز کیوں کر فرض ہوئی اور نماز یقیناً معراج دیں فرض هوئی هے ـ اسسے معلوم ہوا کہ مخاری کے نزدیک دونوں واقعر ایک هیں جدا جدا

ترحمة ابواب البخاري باب حدبث الاسراء و قول الله تعاليٰي سبحان الذي اسرى بعبده ليلا من المسجد الحرام الى المسجد الاقصلي (مخاری صفحه ۵۸۸) -

كتاب الصالوة باب كييف فرضت الصلواة الاسراء ـ یخاری صفحه (. ن)

ولا د لالة في ذلك على التغائر عنده بل كلاسه في اول الصلوة ظاهر في اتحاد ها و ذالک انه ترجم باب كيف فرضت الصلوة ليلة الاسراؤ الصلوة الما فرضت في المعراج فدلل عللي اتحاد ها عنده و انما افرد کلا سنها يترحمة لان كلا منها يشتمل علىٰ قصة مفردة و ان

كإنا و قعا معا ـ ترجمة الباب اس لير قرار ديا هے (فتح الباري جلد / صفحه ١٥٠) - که ان مين الگ الگ قصر هس اگرچه وه ایک ههی ساته واقع هوئے هس ـ

وقال بعض المتاخرين كانت قصة الاسراء في ليالة و المعراج في ليلة ستمسكا ما ورد في حديث انس من روایة شریک سن ترک ذکر الاسراء وكذا في ظاهمر حديث سالک بن صعصعه

(فتح البارى جلد هفتم صفحه ١٨١)-

سگر خاود حجر عسقلانی لکھتر ہیں کہ متاخرین نے ان و لا كن ذلك لا يستلزم التعدد بل حو محمول على ان بعض الرواة ذكر ما لم يـذكـره الاخر ـ

(فتح البارى جلد هفتم صفحه ۱۵۱) که اس سے تعدد واقع لازم مہیں آتا۔ بلکه یه خیال کیا جاتا ہے بعض راویوں نے جو بیان کیا ہے اس کو دوسرے راوہوں نے ترک کر دیا ھے۔

جن کے گان میں اسراء الگ واقع ہے ۔ ان کی دلیل شداد ابن واحتہ ہن زعم ان اوس کی حدیث ہے جس کو بزار

اور بعض علمائے ستاخرین بھی قصہ اسراء اور معراج کو دو واقعے سمجهتر هل عدلامه هجر عستلانی نے لکھا ھے ۔ بعض متاخرین نے کہا ہے کہ اسراء ایک رات میں هوئی اور معراج ایک رات سی ۔ آن کی حجت یہ ہے کہ انس کی حدیث میں جو شریک سے مروی ہے اسراء کا ذکر نهس اور ایسا هی سالک بن صعصعه کی حدیث سے معلوم ہوتا ہے۔

روایتوں کی بنا یہ اسراء کا ایک رات سی اور معراج کا دوسری رات سی ه ونا خیال کیا هے مگر أن روايتون سے اسراء اور سعراج كا عليحده عليحده واقدع هونا لازم نهس آتا _ چنال چه وه لکهتر هس

الاسراء وقع سفردا بما اخرجه البزارو الطبراني وصححة البيهقي في الدلائل من حديث شداد بن اوس قال قلنا يا رسول الله کیف اسرمے بک قال صليت صلاة العنمة عكة فاتانى جيريل بداية فذكر الحديث في محيئه بيت المقدس وسا وقع له فيه قال ثم انصرف لى فلمردنا بعس لقريش مكان كذا فذكره قال ثم اتيت اصحابي قبل الصبح مکة ـ

(فتح البارى جلد هفتم صفحه ۱۵۱)

اور طبرانی نے بیان کیا اور بہتی نے دلائل میں اس کی تصحیح کی ھے۔ اس نے کہاکہ ھم نے کہا یا رسول اللہ آپ کے کیوں کر اسراء هوئی ۔ فرسایا که میں نے عشاء کی نماز مکه میں یؤھی پھر حریل سرے پاس سواری (براق) لايا _ پهر بيت المقدس حانا اور وهاں حو کچھ گذرا سب بیان کیا ۔ پھر فرمایا که واپسی میں ھارا قریش کے آونٹوں ہر فلاں حگه گذر هوا _ يهر اس کا ذكر کیا پھر فرمایا کہ میں صبح سے ملر مکه میں اپنر اصحاب کے یاس آگیا۔

اقوال آن علماء کے جو کہتر ِ ہیںکہ ایک دفعہ صرف ؑ اسراء ہوئی اور ایک دفعہ اسراء مع معراج کے

بعض نے کہا ہے کہ اسراء بیداری میں دو دفعہ ہوئی ـ پہلی دفعه پیغمس خدا بیت المقدس سے لوٹے اور آس کی صبح کے وجو کچھ دیکھا قریش سے بیان کیا ۔ دوسرى دفعه بيت المقدس تك گئر پھر وھاں سے آسی رات آسانوں پر گئر۔ قریش نے اس واقعہ پر اعتراض نہیں کیا کیوں که

وقيل كان الاسراء سرتين في الميقظة فا لا ولى رجع من بيت المقدس وفي صبيحتة اخبر قريشا بما وقع والثانية اسرمے به الی بیت القدس ثم عرج به من ليلة الى الساء الى اخرسا و قع و لم يتع

لقريش في ذلك اعتراض لان ذلك عندهم سن جنس قوله ان الملك ياتية سن الساء في اسرع من طرفة عين وكانوا يعتقدون استحالة ذلك من قيام الحجة على صدقه بالمعجزات الباهرة لكنهم عاند واني ذلک و استمروا علی تکذیبه فيه مخلاف اخباره انه حاء بيت المقدس في ليلة واحدة ورجع فانهم صرحوا بتكذيبه فيه فطلبوا سنه نعت بيت المقدس لمعرفتهم به علمهم بانه ساکان راه قبل ذلك فاسكنهم استعلام صدقه في ذلك مخلاف المعراج ـ (فتح البارى جلد هفتم صفحه ١٥١) بیتالہقدس کو نہیں دیکھا۔ پس معراج کے برخلاف اس میں آن کو رسول الله کے سچر ہونے کی آزمائش کا موقع ملا۔

اور ام ہانی کی حدیث میں ابن اسحاق اور ابوا یعلی کے نزدیک و في حديث أم هاني عند وهي مضمون هي جو أبو سعيد كي ابـن اسحــاق و ای یــعــلی نحو ما فی حدیث ابی سعید ـ فان تبت ان المعراج كان سنا امنا عالي ظناهار رواينة شنرينك

آن کے نزدیک یہ ایسا هی تھا حیسر آن کا یده قدول که فرشته آسان سے یلک حهیکانے سر بھی ملر آتا ہے۔ اور اس کو محال سمجهتر تهر حالان که روشن کا واقع ہونا آن کے سچر ہونے کی دلیل تھے ۔ لیکن آنھوں نے اس میں مخالفت کی اور برابر پیغممر خداکو اس میں جھٹلاتے رھے ۔ برخلاف اس کے کہ آپ نے ایک رات میں بیت المقدس جانے اور وھاں سے پھر آنے کی خبر دی اس واقعه سی آنهوں نے کھلم کھلا پیغمس خداکی تکذیب اور بیت المقدس کا حال پوچها کیوں کہ وہ اس سے واقف تھر اور جانتر تھر کہ پیغمبر خدانے

حدیث میں ہے۔ پس آگر یہ ثابت هو جائے کہ معراج خواب میں هوئی تھی جسا کہ شریک کی روابے میں انس سے مروی ھے

و عن انس فينتظم من ذلك و ان الاسراء وقع مرتبن ـ مرة على النفراده _ و مرة مضموما اليه المعراج و كلها في المقظة _

(فتح البارى جلد هفتم صفحه ۱۵۱) -

اقوال آن علما کر ِ جو کہترے ہیں کہ معراج دودفعہ ہوئی ایک دفعه بغیر اسراء کمے اور ایک دفعه معه اسراء کہ

> و الـمعـراج و قـع سرتين ــ توطئه و تمهيدا ـ و سرة في اليقظة مضموما الى الاسراء _ (فتح البارى جلد هفتم جاگنر سى ـ

صفحه ۱۵۱) -

و جنح الاسام ابو شاسة الى وقوع المعراج مرارا و استند الى سا اخرجه البزار و سعید بن سنصور من طریق ابي عـــران الـجـوني عن انس دفعه قال بينا انا جالس اذ حاء حريل فوكرز بن كتفي فيقمنا إلى شجرة فما

تو اس سے معلوم ہوگا کہ اسراء دو بار هوئی ۔ ایک بار تنہا اور ایک بار صعراج کے ساتھ اور دونوں دفعه حالت بیداری میں ھوئی ـ

فتح الباری میں ھے کہ مرة في السمنام عدلي انفراده معراج دوبار هوئي ـ ايك بار بطور تمہید کے تنہا خواب میں هوئی اور ایک بار اسراء کے ساتھ

اسام ابوشاسہ کا میلان معراج کے کئی بار واقع ہونے کی طرف ہے۔ اور سند میں آس حدیث کو بیان کرتے میں جو بزار اور

سعید بن منصور نے ابو عمران جونی سے اور اس نے انس سے مرفوعاً روایت کی که پیغمس خدا نے فرمایا کہ میں بیٹھا تھا کہ جریل آئے اور سرے دونوں سونڈھوں کے درمیان ھاتھ مارا ـ

پھر ھم دونوں ایک درخت کے پاس گئر جس سی پرندوں کے دو گھ۔ونسلر سے رکھے تھے ۔ ایک میں جبریل اور ایک میں میں بیٹھ گیا ۔ پھر سی بلند ھوا ہاں تک که آسان و زمین سے گذر گیا۔ اسی حدیث میں ہے کہ میر مے لیر آسان کا دروازہ کھولا کیا۔ اور میں نے نور اعظم کو دیکھا اور آس سے ورے ایک یے, دہ تھا موتیوں اور باقوت کا ـ علامه ابن حجر نے کہا ہے کہ اس حدیت کے راویوں میں کونی عیب نہیں ہے۔ مکر دارقطنی نے ایک ایسی علت بیان کی ہے جس سے آس کا مرسل هو نا معلوم هو تا هے مرحال یہ ایک اور قصہ مے اور ظاهرا وه مدینه سی هوا ـ اور ایسر واقعوں کے هونے سی کوئی تعجب نہیں ہے۔ اور اگر تعجب انگیز ہے تو معراج کے قصه کاکئی بار هو نا هے جس میں ھر نبی کا سوال اور ھر آسان کے دربان كاسوال كه كيا ادهر بهيجر گئر ھیں۔ اور پاپخ نمازوں کا

مشل وكرالطائر فقعدت في احد ها وقعد جمريل في الاخر فار تفعت حتى سدة الخافقين الحديث و فيه ففتح لى باب من الساء ورايت النور الأعظم واذا دونه حجاب و فرف الدر و الياقوت _ قال المعلامة ابن الحدجر و رحاله لا بأس بهم الا ان الدار قطني ذكرله علة تقتضني رساله وعلني كل حال فهمي قصة اخرى الظاهر انها وقعت بالمدينة ولا بعد في وقلوع الشالها والما المستبعد وقوع التعدد في قبصة المعراج اللتي وقع فيها سوالمه عن كل بني و سوال اهل كل باب هل بعث اليه و فرض الصلوات الخمس وغير ذلك فان تعدد ذلك في اليقظة لا يتجه فيتعن رد بعض الروايات المختلفة الى بعض او الترجييح الا انه لا بعد في جميع وقوع ذلك فى المنام توطئة ثم وقوعه

في اليقظة على وقيفه كما فرض هونا مذكور هي ـ كيولكه قىدمىتىە ـ

(فتح السباری جلد ہفتم کئی بار واقع ہونے کی کوئی وجہ صفحه ۱۵۱) -کو بعض کی طرف پھیرنا یا آن میں سے ایک کو ترجیح دینی ضرور رھے۔ مگر اس میں کوئی تعجب نہیں ہے که یه سب خواب میں تمہید کے طور پر ہوا ہو پھر اس کے موافق بیداری میں جیسا کہ هم يهلر ذكر كر چكر هيں ـ

ابن عبد السلام في تنفسره بيداري اور مكه اور مدينه مي كَانَ الأسراء في الـنـوم و اليقظـة هوئي اكر أس كي مراديه هـ كه و وقع بمكة والمدينة فانكان يريد تخصيص المدينة بالنوم ويكون كلامه على طريق الملف و النشر غيرالمرتب فيحتمل ويكون الاسراء الـذي أتصل به المعراج و فرضت فيه الصلوات في اليقظة بمكة و الاخر في المنام بالمدينة وينبغي ان يزاد فيه ان الاسراء في السنام تكور با لمدينة النبويه ـ (فتح البارى جلد سابع

صفحه ۱۵۲) -

اور ابن عبدالسلام كا قلول اس حديث كي تفسر مس اور بهي و سن المستغرب قول عجيب هے كه اسراء خواب و مدینه سی خواب سی هوئی اور آس کا کلام بطور لف و نشر غیر مرتب کے هو تو احتال ہے که ایسا هی هو اور اسراء جس کے ساتھ معراج هوئی جس میں مازیں فرض هو ئی حالت بیداری میں مکه میں هوئی هو اور دوسری خواب میں مدینه میں ۔ اور اتنی بات اور بڑھانی چاھیر کہ اسراء خواب میں کئی بار مدینه می ھوئی ـ

حالت بیداری میں اس قصه کے

نہیں ہے پس بعض مختلف روایتوں

اقوال آن علماء کے جو اسراء کا مع معراج کے دو دفعه هونا بیان کرتے هس

هاں بعض حدیثوں سی وہ باتیں هس جو بعض کی مخالف هس ـ اسى لير بعض اهل علم كا میلان اس طرف ہے کہ یہ سب کچه دو مرتبه هوا ایک مرتبه نیند می بطور تمهید اور پیش بندی کے اور دوسری مرتبه جاگتر سی ۔ جیسا که فرشته کے اول اول وحی لانے سی هوا۔ اور میں اسکتاب کے شروع میں ابن میسره تابعی کبیر وغیره کا یه قول ذکر کر چکا هوں که یه نیند کی حالت سی هوا ـ

نعلم جاء في بعض الاخبار، يخالف بعض ذالك فحنح لاجل ذلك بعض اهل العلم سنهم الى ان ذلك كله وقع مرتين مرة في المنام توطئة و تـمـم يد او مـرة ثانيـة في اليقظة كما وقع نظير ذلك في ابتداء مجئي الملك بالوحى فقد قدمت في اول الكتب ساذكره ابن لتابعي الكب

وغمره ان ذلك وقع في المنام ـ (فتح البارى شرح صحيح بخارى جلد هفتم صفحه ١٥٠)

عن طائفة و ابو نصر بن القشري و ابوسعيد في شرف المصطفي قال كان للنبى صلى الله عليه وسلم معاريج منها ما كان في اليقظة

اور مملب شارح بخاری نے اس قول کو ایک گروہ کی جانب و حكاء (اے مهلب) سے بيان كيا هے اور ابو نصر قشیری نے اور ابو سعید نے شرف المصطفلي مين كمها هے که پیغمبر کو کئی بار معراج هوئي بعض دفعه خواب سي اور بعض دفعه بیداری سی ـ

و سنها ساكان في المنام -(فتح الباري جلد هفتم صفحه ١٥٠)

اب هم آن حدیثوں اور روایتوں کو نقل کرتے ہیں جن ہے، بیان ہے کہ اسراء اور معراج ایک ہی دفعہ اور ایک رات سیں ہوئی تھیں اور انھی روایتوں کو ہم تسلیم کرتے ہیں ـ

اقوال آن علماء کے جو اسراء اور معراج دونوں کا ایک رات میں ہونا تسلیم کرتے ہیں

جمهور علماء اور محدثین اور فقها اور متکلمین کا یه مذهب ہے که اسراء اور معراج دونوں ایک رات میں واقع ہوئیں۔ ظاہرا وہ لوگ مکہ سے بیت المقدس تک جانے کا نام اسراء رکھتے ہیں والا اکشر علی انه اور بیت المقدس سے سدرة اسرے بےجسدہ الی بیت المقدس المنتہی تک جانے کا معراج - جیسا ثم عرج به الى السموات كه تفسير بيضاوى مين لكها هـ

حتى انسهني الى سدرة المنتهني ـ اور آكثر علماء اس پرمتفق هير ـ (تفسر بیضاوی جلد اول

صفحه ١٥٠ -

کہ بیت المقدس تک آں حضرت بجسدہ گئے پھر آسانوں کی طرف بلند کہے گئے یہاں تک که سدرة المنتہلی تک جا پہنچے -

اور فتح الباری شرح صحیح بخاری میں لکھا ہے کہ علمائے و قد اختلف السلف متقدمين نے احادیث کے مختلف بحسب اخة لاف الاخمار هونے کے سبب سے اختلاف الواردة - فمنهم من ذهب كيا هے بعض كهتے هيں كه اسرا اور معاراج دوناوں ایک وقعا في ليلة واحدة رات مين حالت بيداري مين

الى أن الاسراء والمعراج فی الیقظة بجسد النبی جسم اور روح کے ساتھ بعثت

صلی الله عـلـیـه وسلم و روحـه يعد المسعث والي هذا ذهب الجمهور من علاء المحدثين والفقهاء و المتكلمين و تواردت عليه ظواهر الاخبار الصحيحه ولا ينبغني العدول عن ذالك اذاليس في العقل ما يحيله حتى يحتاج الى تاويله ـ

(فتح البارى جلد هفتم صفیحه ۱۸۰

عقب الاسراء في ليلة واحدة رات من واقع هوني كي تائيد روایة ثابت عن انس عند مسلم ففي اوله اوتيت بالبراق فركبت حتى اتيت بيت المقدس فذكر القصدة الى ان قال ثم عرج الى السماء الدنيا و في حديث ابى معيد الخدري عند ابن اسحاق فلما فرغت سماكان في يدرت المقدس اتى بالمعراج

کے بعد واقع ہوئیں۔ تمام علائے محدثین _ فقہا اور متکلمین اسی کے قائل هس اور تمام احادیث صحیحه سے بھی ایسا ھی معلوم ھوتا ھے اور اس سے انکار کرنے کی گنجائش نہیں کیوں کہ یہ عقل کے نزدیک محال نہیں ہے تاکه تاویل کی ضرورت هو ـ

علامه حجر عسقلانی نے دوسرے مقام بر یہ لکنا ہے۔ که ویلؤید وقلوع السمعراج اسرا کے بعد معراج کے ایک ہی مسلم کی اس روایت سے هوتی هے حو ثابت نے روایت کی ہے اس کے اول میں ہے کہ براق لابا دیا پہر میں آس پر سوار هوا۔ ماں تک که بیت المقدس بهجا ـ پهر وھاں کا حال بیان کر کے نہا دہ پھرھم آسان کی دنیا کی طرف بلند هوئے اور ابن اسحاق نے ابوسعد خدری کی حدیث میں بیان کیا ھے کہ جب سی بیت المقدس

فذكر الحديث و وقع في اول حديث سالك بن صعصعة ان النبى صلى الله عليه وسلم حد ثهم عن ليلة اسرے به فذكر المحديث فهو و ان لم يذكر فيه الاسراء الى يت المقدس فقد اشار اليه و صرح به في روايته فهو المعتمد.

(فتح البارى جلد هفتم صفحه ۱۵۱)

کی سیر سے فارغ ہوا تو ایک سیڑھی لائی گئی۔ پھر پوری حدیث بیان کی اور مالک بن صعصعه کی حدیث کے شروع میں ھے که پیغمبر خدا نے آن سے لیلۃ الاسراء کا ذکر کیا۔ پھر پوری حدیث بیان کی۔ پھر اگرچہ اس نے اس حدیث میں ایک جانے کا ذکر نہیں کیا۔ مگر اشارہ کر گیا ھے اور اپنی روایت میں اس کی تصریح کر دی ھے اور بھی معتبر ھے۔

جن روایتوں میں اسراکو علیحدہ اور معراج کو علیحدہ دو چیزیں قرار دیا ہے۔ ان کو هم تسلیم نہیں کر سکتے۔ بلکہ اسرا اور معراج کو ایک دوسرے کا متحد المعنی یا مرادف تصور کرتے هیں۔ اس لیے که قرآن مجید میں صرف لفظ اسرے واقع هوا ہے جہاں خدا نے فرمایا ہے '' سبحن الدذی اسرا بعبدہ لیلا من المسجد الحرام المسجد الاقصی الذی بارکنا حوله'' مگر اس کے بعد فرمایا ہے '' لذریه من 'ایتنا انہ هو السمیع البحصیر'' یه آخر فقرہ ایک قسم کے عروج پر دلالت کرتا ہے جس کے سبب لفظ معراج مستعمل هو گیا ہے پس معراج اور اسراکا مفہوم متحد ہے اور یہ ایک هی واقعہ ایک هی رات میں اور ایک مفہوم متحد ہے اور یہ ایک هی واقعہ ایک هی رات میں اور ایک

جن علم نے اسرا اور معراج کا هونا متعدد دفعه تسلیم کیا

ھے اس کا اصلی سبب یہ ھے کہ اسرا اور معراج کے متعلق جو حدیثس اور روایتیں وارد ھیں۔ وہ آپس میں بے انتہا مختلف ھیں ۔ علم نے ان تمام حدیثوں کی تطبیق کرنے کے خیال سے وہ تمام شقوق اختیار کر لی ھیں جو آن حدیثوں اور روایتوں سے ييدا هوتي تهس ـ

هم اس طریق کو صحیح نہیں سمجھتر ۔ مختلف حدیثوں میں وجه تطبیق پیدا کرنی نهایت عمده طریقه هے ـ بشرطیکه آن میں تطبیق هو سکر ۔ جو حدیثی اس قسم کی هیں که جن میں ایسے اسوركا بيان ہے جو عادةً يا اسكاناً واقع ہوتے رہتے ہيں اور جن مس کے وئی استبعاد عقلی نہریں ہے اگر ایسے امور میں مختلف حدیثیں ھوں تو کہا جا سکتا ہے۔ کبھی ایسا ہوگا اور کبھی ویسا۔ مگر ایسی حدیثوں میں جن میں ایسر امور کا بیان ہو جن کا واقع ہونا عادة ً یا عقلاً ممکن نه هو تو صرف آن حدیثوں کے اختلاف کے سبب آن کے تعدد وقوع کا قائم کرنا صحیح نہیں ہے ۔ کیوں کہ جب تک اور کسی طرح پر یه امر ثابت نه هو گیا هو که آن حدیثوں میں جو واقعه مذكور هے ـ وه متعدد دفعه واقه هوا هے ـ أس وفت تك صرف اختلاف احادیث سے جن کی صحت بسبب اختلاف کے خود معرض بحث میں ہے آس کا تعدد وقوع تسلیم نہیں ہو سکتا ۔ یہ تو مصادره عللي المطلوب هے _

شاه ولى الله صاحب بهي حجة الله البالغه مين باب القضافي الاحاديث المختلفه مس لكهتر هي که اصل یه هے که هر حدیث یر عمل کیا جائے جب تک کہ تناقض کے هونے سے سب پر

الاصل أن يعدمه بكل حديث الا أن يمتنع العمل بالجميع للتناقض وانه ليس في الحقيقة اختلاف ولا كن فى نظرنا فقط فاذا ظهر حديشان مختلفان فان كانا من باب حكايدة الفعل فحكى صحابى انه صلى الله عليه وسلم فعل شيئا وحكى آخر انه فعل شيئا آخر فلا تعارض و يكونان صباحين ان كانا من باب العادة دون العمادة .

عمل کرنا نا ممکن هو اور یه حقیقت میں اختلاف نہیں ہے بلکه فقط هاری نظر میں اختلاف ہے۔ پس اگر دو مختلف حدیثیں هوں اور دونوں میں پیغمبر خدا کا کوئی فعل مذکور هو۔ اس طرح که ایک صحابی بیان کرے که آنحضرت صلی الله علیه وسلم نے یه فعل کیا هو کیا اور دوسرا

(حجة الله البالغه ص سهم) اصحابی کوئی اور فعل بیان کر ہے تو آن میں کوئی تعارض نه هوگا اور دونوں مباح هوں کے اگر وہ عادت کے متعلق هوں نه عبادت کے ۔

جو لوگ اسرا اور معراج کو متحد مانتے هیں اور ایک هی ساتھ آس کا واقع هونا قبول کرتے هیں آن کے بھی باهم دوسری طرح پر اختلاف هے ایک گروہ اعظم کی یه رائے هے که معراج ابتدا سے اخیر تک بجسدہ اور جاگنے کی حالت میں هوئی تھی ۔ ایک گروہ کی یه رائے هے که معراج ابتدا سے آخر تک سونے کی حالت میں یعنی بالروح بطور خواب کے هوئی تھی ۔ ایک گروہ کی یه رائے هے که مکه معظمه سے بیتالمقدس تک بجسدہ جاگنے کی حالت میں اور وهاں سے آسانوں تک بالروح هوئی تھی ۔ شاہ ولی الله صاحب نے ایک چوتھی رائے قائم کی هے که معراج بجسدہ هوئی تھی اور جاگنے میں مگر بجسد بر زخی بینالمثال والشہادة چناں چه ان سب رایوں کو هم ذیل میں نقل کرتے هیں ۔

قاضی عیاض نے اپنی کتاب شفا میں لکھا ھے۔ پھر اگلے ثم اختلف السلف و لوگوں اور عالموں کے اسراء کے

روحانی یا جسانی ہونے میں تہن مختلف قول هس _ ایک گروه اسراء کی روح کے ساتھ اور خواب میں ہونے کا قائل ہے ۔ اور اس پر بھی متفق ہیں کہ پیغمبروں کا خواب وحی اور حق ہوتا ہے ـ معاویہ کا مذہب بھی یہی ہے حسن بصری کو بھی اسی کا قائل بتاتے ہیں۔ لیکن آن کا مشہور قول اس کے برخلاف ہے۔ اور مجد ابن اسحق نے اس طرف اشارہ کیا ہے۔ اُن کی دلیل ہے خدا کا یہ فرمانا کہ نہیں کیا ہم نے وہ خواب جو دکھایا تجھ کو مگر آزسائش واسطر لوگوں کے اور حضرت عائشه کا یه قول که نهس کھویا میں نے رسول اللہ کے جسم کو یعنی آپ کا جسم سبارک معراج میں نہیں گیا تھا اور آنحضرت کا یه فرمانا که اس حالت میں که میں سوتا تھا اور انس کا یه قول که آنحضرت آس وقت مسجد حرام میں سوتے تھے پھر سعراج کا قصہ بیان کہ ک آخر میں کہا کہ میں حاگا اور

العلماء هل كان اسراء بروحه اوحسده على ثلاث مقالات فذهبت طائفة الى انه اسراء بالروح وانه رويا سنام سع اتفاقهم أن رويا الانبياء وحيى و حق و الى هذا ذهب معاوية وحكى عن الحسن والمشهور عنه خلافه و البيله اشار مجد ابن استحاق و حجبتهم قوله تعالني وسا جعلنا الرؤيا الاتي اريناك الافتنة لايناس وما حكوا عن عائشه سا فقدت حسد رسول الله صلى الله عليه وسلم وقوله بينا انا نائم وقول انس و هو نائم في المسجد الحرام و ذكر القيصة ثم قال في اخرها فاستيقظت وانا بالمسجد الحرام و ذهب معظم السلف والمسلمين الى انه اسراء بالجسد في اليقظة وهو الحق و هذا قبول ابن عباس و جابر و انس و حذيفة و و عمر و ابي هريرة و سا لک آس وقت مسجد حرام میں تھا مت سے اگلر لوگ اور مسلمان اس بات کے قائل ھیں کہ اسرا کے ساتھ اور جاگنر کی حالت سیں ہوئی اور سی بات حق ہے۔ ابن عباس ، جابر ، انس ، حذیفه عمر ، ابی هریره ، مالک بن صعصعه ، ابو حبته البدري ، ابن مسعود ، ضحاک ، سعید بن حسر قتاده ، ابن المسيب ، ابن شهاب ابن زید ، حسن ، ابراهیم ، مسروق مجاهد ، عكرمه اور ابن جريح سب کا می مذهب هے اور حضرت عائشہ کے قول کی یہی دلیل ہے اور طبری ۔ ابن حنبل اور مسلمانوں کے ایک بڑے گروہ کا یہی قول ہے۔ متاخرین میں سے بہت سے فقہہ ، محدث ، متكلم اور مفسر اسى مذهب پر همی ـ ایک گروه بیت المقدس تک جسم کے ساتھ بیداری میں جانے اور آسانوں پر روح کے ساتھ جانے کا قائل ہے ۔ آن کی دلیل خدا کا یه قول هے جہاں فرمایا پاک ہے وہ جو لے گیا

ابن صعصعه وابي حبة البدري و ابن مسعود و ضحاك وسعيد ابن حسر وقتاده و ابن المسيب و ابن شهاب و ابن زید و الحسن و ابراهم و مسروق ومحاهد وعكرسه وابن جريح و هو دليل قول عايشه و هو قول الطري و ابن حنبل و جاعة عظيمة من المسلمين و هوقول اكثر المتاخرين من الفقهاء المحدثين والمتكلمين والمهفسرين ـ وقال طائفة كان الاسراء بالجسديقظة الى بيت المقدس و الى الساء بالروح و احتجو بقوله سبحان الذي اسرى بعبدهليلا من المسجد الحرام الى المسجد الاقصلي غاية الاسراء فوقع التعجب بعظيم القدرة والتمدح بتشريف الني محمد به اظهار الكراسة له با لاسراء اليه و لوكان الاسراء عبسده الى زائد على المسجد الاقتصالی لذکرہ فیکون اپنے بندہ کو ایک رات مسجد ابدلغ فی المدح میں حرام سے مسجد اقصلی تک یہاں (قاضی عباس شفا صفحه ۸۵، ۸۹) اسراکی انتہا مسجد اقصلی بیان کی ھے میں ایسی بڑی قدرت اور مجد صلی الله علیه وسلم کو بزرگی دینے اور اپنے پاس بلانے سے آن کی بزرگی ظاہر کرنے پر تعریف کی اور تعجب کیا ھے اور اگر مسجد اقصلی کے اوپر بھی جسم کے ساتھ جاتے تو اس کا ذکر کرنا تعریف کے موقع پر زیادہ مناسب تھا۔

اور یہی عبارت جو شفا قاضی عیاض میں ہے۔ عینی شرح بخاری میں نقل کی گئی ہے۔ مگر شفا قاضی عیاض میں حضرت عائشہ کی روایت میں جہاں لفظ سا فقدت کا ہے۔ وہاں صرف لفظ سا فقد ہے بغیر (ت) کے (عینی شرح بخاری جلد ہفتم ، مطبوعه مصر ، صفحه ۲۲۹)۔

اور مولوی احمد حسن مراد آبادی کی تصحیح و تحشی سے جو شفا قاضی عیاض چھاپی گئی ہے آس میں لکھا ہے۔ وروی عنها (عن عاید ما فقد بصیخة المجمهول و هو اظهر فی الاحتجاج یعنی فقد مجمول کے صیغه سے (ت) کے ہے اور صاحب معالم التنزیل نے بھی روایت عایشه میں لفظ فقد بغیر تاء کے بھی ایان کیا ہے۔

اور شاه ولی الله صاحب نے حجة الله البالغه میں یه لکھا ہے۔
و اسرے به الی المسجد که پیغمبر خدا کو مسجد اقصلی
الاقصلی ثم الی سدرة المنتہ یٰ تک پھر سدرة المنتہ یٰ تک اور
و الی ماشاء و کل ذالک جہاں تک خدا نے چاها
بجسده فی الیقظة ولکن معراج هوئی اور یه سب واقعه
ذالک فی موطن هو برزخ جسم کے ساتھ بیداری میں هوا۔

بين المشال والشهادة جامع لا حكامهما فظهر على الجسد احكام الروح وتمثل الروح والمعافى الروحية اجـــاداً و لـذا لـكـ بـان لكل واقعة سن تلك الوقائع تعبس وقد ظمر لحرقيل و سـو سلي و غـيرهــم نحــن سـن تلك الوقائع وكذلك لاولياء الاسة ليكون علو درجاتهم عندالله كحالهم في الرؤيا والله اعلم ـ

(حجة الله المالغه ص ١٨٦) خدا کے نزدیک بلند ھوں جیسر کہ آن کا حال خواب س

هوتا هے ـ

ان چار صورتوں کے سوا اور کوئی صورت معراج کی نہیں ہو سکتی اور اس لیے ہم کو ضرور ہے کہ ان چار صورتوں ہیں سے کوئی صورت معراج کی اختیار کریں اور جس صورت کو اختیار کریں آس کی دلیلی بیان کریں اور جو اعتراض آس پر وارد ہوتے ہوں آن کے جواب دیں مگر قبل اس کے کہ اس امی کو اختیار کریں ، مناسب معلوم هوتا هے که اول صحاح سبعه کی آن حدیثوں کو نقل کریں جو معراج سے متعلق ہیں اور آن کے اختلافات کو بتائیں اور تنقیح کریں کہ آن مختلف حدیثوں سے کیا امر ظاہر ہوتا ہے اور اگر کسی حدیث کے ترجیح دیں تے وجہ ترجیح کو بیان کریں ۔ واضح هو که مؤطا امام مالک اور ابو داؤد سی

لیکن ایسی حالت میں که وه حالت عالم مثال اور عالم شهادت کے بزرح سیں آن دونوں احکام کی جامع تھی۔ روح کے آثار جسم پر طاری هوئے اور روح اور روح کی کیےفیتیں جسم کی شکل میں آ گئیں۔ اسی لیے ان میں سے ہر ایک واقعہ کی ایک جدا تعبیر ہے حزقیل اور موسلی وغير انببا پر بهـي ايسر هي حالات گذر چکے ہیں ۔ اسی طرح کے واقعات اولیائے آست کو پیش آتے میں تاکہ آن کے مرتبر کوئی حدیث متعلق معراج کے نہیں ہے بخاری ، مسلم ، ترمذی ، فسائی اور ابن ماجه میں ہیں جن کو ہم بعینه اس مقام پر نقل کرتے ہیں ۔

(۱) احادیث بخاری

حدیث کی هم سے محیلی بن بکر نے اس نے کہا حدیث کی هم سے لیث نے یونس سے اور آس نے ابن شہاب سے اور آس نے انس بن مالک سے اُنھوں نے کہا ابوذر بیان کرتے تھے کہ پیغمبر خدا نے فرسایا کہ سرے گھر کی جہت شق هوئی اور میں اس وقت مکه مى تها ـ پهر جرئيل نازل ھوئے اور آنھوں نے میرا سینه چاک کیا اور اس کو آب زمزم سے دھویا پھر حکمت اور ا مان سے بھرا ھوا ایک سونے كالكن لائے اور اس كو مىر ب سینه می الڈیل دیا۔ پھر سرے سینه کو برابر کر دیا پهر میرا هاته پکڑا اور آسان تک لرگئر ۔ جب سس آسانی دنیا تک منچا تو جبریل علیه السلام نے آسان کے معافظ سے کہا کہ دروازہ

حدد ثنا يحيى ابن بكير قال حد ثنا الليث عن يونس عن ابن شهاب عن انس بن سالک قال کان ا بو ذريحدث ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فرج عن سقف بيتى وانا بمكة ننزل جبرئيل ففرج صدری ثم غسله بماء زم زم ثم جاء بطست سن ذهب ممتلئى حكمة وايمانا فافرغه في صدرى ثم اطبقه ثم اخذبیدی فعرج بی الى السماء فلما حئت الى السماء الدنيا قال جبريل عليه السلام لخازن الساء افتدح قال من هذا جبرئيل قال هل سعك احدد قال نعدم معدى مجد فقالء ارسل اليه قال نعم قلما فتح علونا السماء

کھول دے ۔ اس نے کہا کون ھے ؟ جبریل نے کہا میں ھوں آس نے پوچھا تمھارے ساتھ کوئی ہے ؟ کہاں ھاں میر ہے ساته مجد صلى الله عليه وسلم هس ـ کہا کیا بلائے گئر میں۔ کہا ھاں ۔ جب دروازہ کھلا ۔ هم آسان اول پر چڑھے دیکھا تو ایک شخص بیٹھا ھوا ھے جس کے دائیں طرف ہت سی دهندلی صورتس هس ـ دائیس طرف دیکھ کر ہنستا ہے اور بائس طرف دیکھ کر روتا ھے۔ اس نے کہا مرحبا اے نی صالح اور فرزند صالح ۔ میں نے جريل سے پوچھا که يه کون ہے۔ جریل نے کہا یه آدم هے اور یه دهندلی صورتیں جو اس کے دائیں اور بائی طرف هیں۔ اس کی اولاد کی روحی میں ان میں سے دائیں طرف والى جنتي هين اور بائين طرف والى دوزخي اسى لير دائس طرف دیکھ کر ہنستا ہے اور بائس طرف دیکھ کر روتا ہے

الدنيا فاذا رحل قاعد على يسمينه أسودة وعلى يساره اسودة اذا نظر قال يمينة ضحک و اذا نظر قبل شماله بكي فقال مرحبا بالبنى الصالح والابن الصالح قلت الجبريل من هذا قال هذا آدم و هذه الاسودة عن يمينه و شماله نسم بنیه فاهل اليمين سنهم اهل الجنة و الاسودة اللتي عن شماله اهل النارفاذ انظرعن يمينه ضحک و اذا نظر قبل شماله بكي حتى عرج بى الى السماء الشانية فقال لخازنحا افتح فقال له خازنها مشل سا قال الاول ففتح قال انس فذكرانه وجد في السموات آدم و ادريس و سوسلي و عیسلي و ابدراهیه و لـم يـشببت كـيـف منازلهم غير انه ذكرانه وجد آدم في السماء الدنيا و ابراهيم في السماء السادسة -

پھر محھ کو دوسرے آسان تک لے گئے اور آس کے محافظ سے کہا کھول ۔ اس محافظ نے بھی وھی کہا جو پہلر محافظ نے کہا تھا۔ پھر دروازہ کھل گیا۔ انس کہتر ھیں که پھر ذکر كيا كه آسإنون مين آدم، ادریس، موسلی، عیسلی اور ابراہیم سے ملے اور آن کے مقامات کی تعیین نہیں کی سوائے اس کے کہ ہلر آسان پر آدم اور چھٹے آسان پر ابراھیم سے ملنر کا ذکر کیا ہے انس کے۔۔۔ میں جب جبریل علیه السلام پیغمبر خدا کے ساتھ ادریس علیه السلام کے پاس بہنچے ۔ آنھوں نے کہا اے بني صالح اور برادر صالح ـ مين نے پوچھا یہ کون میں جبریل نے کہا یہ ادریس هیں۔ پهر موسنی پر گذر ہوا اُنھوں نے کہا مرحبا اے نبی صالح اور برادر صالح ۔ میں نے پوچھا یہ کون ھیں جبریل نے کہا یہ موسلی هیں پھر میں عیسلی کے

قال انس فلما سر جبريل عمليده السلام بالنبي صلى الله عليه وسلم بادريس قال مرحبا بالنبى الصالح والاخ الصالح فقلت من هذا ادریس ثم سررت بموسنی فقال مرحبا بالنبي الصالح والاخ الصالح قلت من هذا قال هذا سوسلى ثم مررت بعيسلي فقال مرحبا بالنبى الصالح والاخ الصالح قلت من هذا قال هـذا عـيسلى ثـم سررت بابراهيم فقال سرحبا بالنبى الصالح والا بن الصالح قلت من هذا قال هذا ابراهیم ـ قال ابن شهاب فاخبرنی ابن حزمران ابن عباس و اباحبة الانصارى كانا يقولان قال النبيى صلى الله علیه وسلم ثم عرج بی حتى ظهرت لمستوى اسمع فيه صريف الاقلام ـ قال ا بـن حـزم و انس ا بـن ما لـک

پاس بہنچا۔ اُنھوں نے کہا اے نبي صالح اور برادر صالح ـ ميں نے پوچھا یہ کون ہیں۔کہا یه عیسنی هیں ۔ پهر میں ابراهم کے پاس پہنچا ۔ اُنھوں نے کہا مرحبا اے نہی صالح اور فرزند صالح ۔ میں نے پوچھا یہ کون هس کها یه ابراهیم هین ـ ابن شهاب کهتر هی محهر ابن حزم نے خبر دی کہ ابن عباس اور ابو حبة انصار**ی** دونوں کہتر تھرکہ پیغمبر خدا نے فرمایا کہ پھر محھ کو چڑھا لے گیا یہاں تک کہ میں ایسی جگہ پہنچا جہاں سے قدموں کے چلنے کی آواز سنتا تھا ۔ ابن حزم اور انس بن مالک کہتے ہیں که رسول خدا نے فرسایا که خدا نے میری امت پر یچاس بمازیں فرض کیں۔ جب سیں واپس ہو کر موسلی کے پاس آیا تو انھوں نے پوچھا کہ خدا نے آپ کی آست پر کیا فرض کیا میں نے کہا پچاس نمازیں کہا پھر خدا کے پاس جائیے - آپ

قال النبي صلى عليه وسلم فىفىرض الله عىزوجىل عالمي آسى خمسين ملواة فرجعت بذلک حتی سررت علی موسلى فقال ما فرض الله لك على استك قلت فرض خمسين صلواة - قال فارجع الى ربك فان استك لآ قطيق - فراجعت فوضع شطرها فرجعت الي موسني قلت وضع شطرها ـ فقال راجع ربك فان استك لا تطيق ذلك فراجعت فوضع شطرها فرجعت اليه فقال ارجع الى ربك فان آمتک لا تطیق ذلک فراجعته فقال هي خمس وهى خمسون لايبدل القول لذى ـ فرجعت الى موسلى فقال راجع ربك فقلت استحییت سن ربی ثم انطلق بی حتی انتهی بى الى سدرة المنتهلي و غشيها الوان لا ادرى ساهى ثم ادخلت الجنة فاذا هي

سائل (جنایذ) اللؤلؤ کی آمت سے یه فرض ادا نه هو سکر گا۔ میں پھر گیا تو (صحیح نخاری مطبوعه خدا نے ان میں سے ایک حصه کم کر دیا پھر موسلی کے پاس آیا

و اذا ترابها المسك ـ دهلی صفحات . ۵ و ۵۱)

اور میں نے کہا ایک حصه آن میں سے خدا نے کم کر دیا۔ کہا پھر جائیے آپ کی آست اس کا بھی تحمل نہ کر سکے گی ۔ میں پھر گیا۔ خدا نے ایک حصہ اور کم کر دیا۔ پھر جب موسلی کے پاس آیا تو کہا پھر جائیر ۔ آپ کی آست یہ بھی ادا نه کر سکر گی ۔ میں پھر خدا کے پاس گیا ۔ کہا پانچ نمازیں ہیں اور وھی بچاس کی برابر ھیں ۔ سرا یہ قول نہیں بدلتا ۔ سی سوسٹی کے پاس آیا تو کہا پھر جائیر میں نے کہا اب تو مجھر خدا سے شرم آتی ہے ۔ پھر جبریل محھر لر جلا ۔ یہاں تک کہ میں سدرہ کے پاس یمنچ گیا اور اُس پر رنگ چھائے ہوئے تھے جن کی حقیقت میں نہیں جانتا۔ پھر میں جنت میں داخل ہوا اور دیکھا کہ موتی کے قبر ہیں اور اس کی مٹی مشک خالص ہے۔

حدیث بیان کی هم سے هدبه بن خالد نے ، کہا اُس نے کہا حدیثنا هدبة بن خالد حدیث بیان کی هم سے هام نے حدیث بیان کی هم سے یزید بن زریع نے ، کہا اُس نے حدیث بیان کی هم سے سعید اور هشام نے ، هم سے قتادہ نے ، اس نے حدیث بیان کی هم سے انس بن مالک نے

حدثنا همام عن قتاده و قال قتاده سے اور کہا محم سے خلیفہ نے لى خىلىيفة حىدثىنا يريد بن زريع حدثنا سعيد وهشام حدثنا قتاده حدثنا انس بن مالک عن مالک بن صعصعه کما آنہوں نے حدیث بیان کی قال قال النيبي صلى الله عليه وسدم بينا انا عندالبيت

مالک بن صعصعه سے کہا اُس سے فرمایا رسول خدا نے که میں کعمہ کے یاس کچھ سوتا کچھ حاگتا تها یه ذکر کیا ایک شخص کا دو شخصوں کے درمیان پھر سونے کا لگن حکمت اور ایمان سے بھر ہوا لایا گیا۔ پھر میرا سینه پیٹ کی نــرم جگه تک چیراگیا ۔ پھر اندرکی چیز (دل) آب زمزم سے دھو کر حکم*ت اور* ایمان سے بھر دیا اور ایک سفید رنگ کا جانور لایا گیا جو خچر سے چھوٹا اورگدھے سے بڑا تھا _ یعنی براق _ پھر سی جبریل کے ساتھ چلا ۔ یہاں تک که هم پہلے آسان تک پہنچے۔ پوچھا گیا که کون ہے کہا مجد صلی اللہ عليه وسلم هيں۔ پوچها کيا وہ بلائے گئے میں ۔ کہا ھاں ۔ کہا مرحبا كيا خوب آنا هوا ـ پهر میں آدم کے پاس آیا اور اُن کو سلام کیا ۔ کہا مرحبا اے فرزند اور نبی ۔ پھر سی عیسٹی اور محیثی کے پاس آیا دونوں نے کہا مرحبا اہے بھائی اور نبی ۔ پھر ہم

بين النائم و اليقظان فدكر رجلا بين الرجلين فاتيت بطست من ذهب ملان حكمة و ايمانا فشق من النحرالي مراق البيطن ثم غسل البطن بماء زمزم ثم سلني حكمة و المانا وآتيت بدابة ابيض دون البغل وفوق الحارالبراق فانطلقت سع جبريل حتى اتينا الساء الدنيا قيل من هذا قال جريل قيل و سن معرك قال محد قيل وقد آرسل اليه قال نعم مرحبا به ولنعم المجئي جاء فاتيت علي آدم فسلمت عليه فقال می ما یک من این و نی فات الساء الشانية قيل من هذا قال جريل قيل و من سعك قال مجد قيل و ارسل اليه قال نعم قيل مرحبابه ولنعم المجئي جاء فاتبيت على عيسني و يحيني فقال مرحبابك من اخ و نبي فاتينا الساء الشالشة قيل من هذا قال جبريل قيل و

تيسرے آسان پر مهنچر پوچها يه كون ھے ۔ کہا جریل ۔ پوچھا ترے ساتھ کون ھے۔ کہا مجد صلی اللہ علیه وسلم هیں _ آس نے پوچھا کیا بلائے گئر میں۔ کہا ماں۔ كها مرحباكيا خوب آنا هوا ـ پھر سی یوسف کے یاس آیا اور أن كو سلام كيا _ كها مرحبا تم پر اے بھائی اور نبی پھر ھم چوتھر آسان پر منچر پوچھا کون ھے۔کہا جریل پوچھا تر ہے ساتھ اور کون ہے کہا مجد صلی اللہ عليه وسلم هس _ كما كيا بلائے گئر هیں ۔ کہا هاں ۔ کہا مرحبا كيا خوب آنا هؤا پهر سي ادريس کے پاس آیا اور آن کو سلام کیا کہا مرحبا تم پر اے بھائی اور نبی پھر میں پانچویں آسان پر منچا ـ يوچها كون هے ـ كما جريل - كها تر مساته اوركون هِ كما جد صلى الله عليه وسلم هس ـ كم اكيا بلائے گئر هس کہا ھاں۔ کہا مرحیا کیا خوب آنا ہوا ۔ پھر ہم ھارون کے پاس ہنچر میں نے آن کو سلام کیا۔

سن معک و قدال مجد قیــل و قد ارسل اليه قال نعم قيل مرحبا به و لندعم المجئي حاء فاتيت على يوسف فسلمت عليه فقال مرحما بك من اخ و نبى فاتينا الساء الرابعة قيل من هذا قال جريل قيل و من سعک قيل مجد صلى الله عليه وسلم قيل و قد ارسل اليه قيل نعم قيل مرحبا به و لنعم المجئي جاء فاتيت على ادريس فسلمت عليه فقال مرحما بكسن اخ و نبى فاتيت الساء الخادسة قيل من هذا قيل جبريل قيل و من معک قیل مجد قیل و قد ارسل اليه قيل نعم قيل مرحبا به ولنعم المجئي جاء فاتينا على هارون فسلمت عليه فقال مرحما بك من اخ و نبي فاتينا الساء السادسة قيل من هذا قيل جريل قيل و من معک قيل مد صلى الله عليه وسلم قيل وقد ارسل اليه قيل نعم

قيل مرحبا به و لنعم المجئي . كما مرحباتم پر اے نبي اور برادر پهرهم چهٹر آسان پر منچر يوچها كون هے ـ كها حريل پوچها تعرے ساتھ کون ھے۔ کہا مد صلى الله عليه وسلم هس ـ پوچها کیا بلائے گئر میں ۔ کہا ماں كها مرحبا كيا خوب آنا هوا ـ یھر میں موسئی کے پاس مہنچا۔ آن کو سی نے سلام کیا ۔ کہا مرحیا اے برادر اور نبی ۔ جب میں وھاں سے بڑھا تو وہ روئے پوچها که تم کیوں روتے هو۔ کہا اے خدا یہ لڑکا جو سیرے بعد سبعوث ہوا ھے ۔ اس کی است کے لوگ سری آست والوں سے زیادہ جنت سی داخل ہوں گے ۔ پهر هم ساتوین آسان پر مهنچر کہاکون ہے۔ کہا جریل۔ کہا تیرے ساتھ کون ھے۔ کہا مد صلى الله عليه وسلم هس ـ پوچھا کہ بلائے گئر ھیں۔ کہا هاں۔ کہا مرحبا کیا خوب آنا ھوا۔ پھر میں ابراھم کے پاس پہنچا ۔ سیں نے آن کو سلام کیا کہا مرحبا تم پر اے فرزند اور

جاء فاتيت على موسى فسلمت عليه فقال مرحبا بك من اخ و نبيى فللها جاوزت يكي فه قدیدل ما ابکاک قال یا رب هـذالـغـلام الـذي بعـث بعدي يدخل الجنة من امة افضل ما يدخل من آمتي فاتينا الساء السابعة قيل سن هذا قىيىل جبريىل قيىل ومان سعك قيل محد قيل وقدد ارسل اليه مرحبا به و لنعم المجئي جاء فاتيت على ابراهم فسلمت عليه فقال مرحدايك سن ابـن و بني فرفع لى الـبيتالمعمور فسالت جريل فقال هذا البيت المعمور يصلى فيه كل يدوم سبعدون النف مسلك اذا خرجوالم يعود واخرما عدليهم و رفعت لي سدرة المنتهني فيا ذانبقها كانيه قبلال هيجر و ورقهاكانه اذان فيول في اصلهااربعة انها رنهران باطنان ونهران ظاهران فسالت حمريل فقال اما الباطنان ففي الجنة واما الظاهران فالفرات

والنيل - ثم فرضت على خمسون نبي ـ پهر بيت المعمور ميرم قریب لایاگیا۔ میں نے جبریل سے صلوة فا قبلت حتى جئت پوچها تو کها په بیتالمعمور موسلي فقال ما صنعت قلت فرضت على خمسون صلوة ھے ۔ اس میں ھے روز ستر ھزار قال انا اعلم بالناس منك فرشتر نماز پڑھتر ھی اور جب عالجت بني اسرائيل اشد ماں سے نکلتر هیں تو پهر کبهی نهى آتے ـ پهر سدرة المنتمى مجه المعا لجة فان امتك لا سے نزدیک هوا۔ جس کے بہر هجر تطيق فارجع الى ربك فسله کے مٹکوں کے برابر بڑے تھر اور فرحعت فسالته فعجعلها اربعين ثم مثله ثم ثلثين ثم مثله فيجعل پتر ھاتھیوں کے کان کے برابر عشرين ثم مثله فجعل عشرا فاتيت تھر ۔ چار نہریں اس کی جڑ سی سے نکلتی تھیں۔ سی نے موسني فقال مثله فجعلها خمسا جبريـل سے پـوچها تو كهـا دو فاتيت موسلي فقال ساصنعت پوشیده نهریل تو جنت میل هل ـ قلت حعلها خمسا فقال مثله قلت سلمت فنودى انى قد اور دو ظاهر فرات اور نیل هی امضيت فريضتي و خففت عن پهر مجه پر مجاس نمازين فرضهوئين پھر میں موسیٰ کے پاس آیا۔ عبادي و اجزى الحسنة عشرا یوچھا آپ نے کیا کیا ۔ سی نے و قال هام عن قتاده عن الحسن کہا مجھ پر سےاس نمازیں فرض عن ابي هريرة عن النبي صلى الله ھوئی ھیں۔ کہا میں لو کوں کے عـليـه وسلم في البيت المعمور ـ حال سے آپ سے زیادہ واقف هوں ـ (صحیح مخاری مطبوعه دهلی مس نے بنی اسرائیل کی اصلاح سی صفحات (۵۵٪ و ۵۵٪) سخت تکلیف آٹھائی ہے۔ آپ کی آمت اس کا تحمل نہ کر سکر گی آپ خدا کے پاس پھر جائیے اور درخواست کیجیے میں پھر گیا اور

خدا سے سوال کیا تو چالیس نمازوں کا حکم دیا - پھر ایسا ہی ہوا

پھر تیس کا حکم دیا پھر ایسا ھی ھوا پھر بیس کا حکم دیا ۔ پھر ایسا ھی ھوا پھر دس کا حکم دیا پھر میں موسلی کے پاس آیا پھر وھی کہا جو ہار کہا تھا۔ پھر خدا نے پانچ نمازوں کا حکم دیا میں پھر موسلی کے پاس آیا ۔ کہا آپ نے کیا کیا میں نے کہا اب پایج کا حکم دیا ہے موسلی نے پھر وہی کہا جو ہملر کہا تھا۔ مس نے کہا اب تو میں قبول کر چکا۔ پھر آواز آئی کہ ہم نے اپنا فرض جاری کیا۔ اور اپنر بندوں کو آسانی دی۔ اور هم ایک نیکی کے بدار دس کا ثواب دیں گے۔ ہام نے قتادہ سے آس نے حسن سے اور اُس نے ابو ہریرہ سے اور اُنھوں نے پیغمبر خدا سے روایت کی ہے كه يه واقعه بيت المعمور سي هوا ـ

حدیث بیان کی هم سے هدبه بن خالد نے کہا آس نے حدیث قال حدثنا هدبه بن بیان کی هم سے هام بن محیلی نے سے قتادہ نے انس بن مالک سے که پیغمبر خدا نے ذکر کیا آن سے معراج کی رات کا کہ اُس حالت میں که میں حطم میں تھا اور کبھی کہا میں حجر میں کروٹ پر سوتا تھا۔ که ایک آنے والا آیا یھر اُس نے جبرا اور سی نے سنا که فرمایا ماں سے ماں تک چاک کیا یعنی گلر کے گڑھے سے بالوں کی حگه تک اور میں نے سنا کہ فرمایا کہ سینہ کے

خالد قال هدثنا همام بن کما آس نے حدیث بیان کی هم محيثي حدثنا قتاده عن انس بن مالک عن مالک آس نے مالک بن صعصعه سے ين صعرصعه أن النسي صلى الله عالميه وسلم حدثهم عن لیلة اسری به بنیا انا في الحطيم وربما قال في التحديد سفيطيج عا اذا اتانی ات فقد قال و سمعته يقول فشق سابين هذه الى هـذه يـعني سن ثغرة نحـره الى شعرته وسمعته يقول سن قبصته الى شعرته

سرے سے بالوں کی حگہ تک پھر مرا دل نکالا پھر امان سے بھرا ھوا سونے کا لگن لگایا گیا اور مرا دل دهویا گیا پهربهرا گيا پهر وهس رکه ديا گيا حما**ن** تھا۔ پھر ایک حانور سواری کا لایا گیا خچر سے چھوٹا گدھے سے بڑا سفید رنگ کا اور وہ براق تھا جو سنتھائے نظر پر قدم رکھتا تھا۔ میں آس پر سوار ھوا اور جبريل مرے ساتھ چلر جہاں تک که بهدر آسان پر بهنچا اور آس نے دروازہ کھلوانا چاھا۔ پوچھا کیا۔ کون هے - کہا۔ جبریل۔ پوچها أديا _ تمر مے ساتھ كون ھے _كما جد صلى الله عليه وسلم هم -كما کیا بلائے گئر۔ میں کہا ھاں۔ كها مرحبا! كيا خوب آنا هوا پهر دروازه کهل کیا۔ حب سی وهاں پہنچا تو دیکھا کہ وہاں آدم هیں۔ جبریل نے کہا کہ یہ آپ کے باپ آدم ہیں آن کو سلام کیجیر۔ میں نے سلام کیا۔ آدم نے سلام کا جواب دیا پھر كها اے فرزند صالح اور نىصالح

فاستخرج قلى ثم اتيت بطست سن ذهب مملوة ايمانا فغسل قلىي ثم حشى ثم آعيد ثم اتيت بدابة دون المغل وفوق الحار ابيض و هو البراق يضع خطوه عند اقصلي طرفه فحملت عليه فانطلق بي جمريل حتى اتى الساء الدنيا فاستفتح فقيل من هذا قال حمريل تبل و سن سعك قال مجد قيل وقد ارسل اليه قال نعم قيل مرحبا به فنعم المجئى جاء ففتح فلما خلصت فاذا فيها اادم فيقال هذا اروك ادم فسلم عليه فسلمت عليه فدرد السلام ثم قال مرحبا بالابن الصالح والنبي الصالح ثم صعد حتى اتى الساء الشانية فاستفتح قيل م هدا قال جمريل قيل ومن معك قال مجد قيل وقد ارسل اليه قال نعم قيل مرحبا به فنعم المجئي جاء ففتح

مرحبا! پهر چڙها سال تک که دوسرمے آسان پر منچا اوردروازہ کھلوانا جاھا ۔ کہاگیا ۔ کون ھے کہا جریل۔کہا ترے ساتھ کون ھے ۔ کہا ہد صلعم ھی۔ کہا بلائے گئر هس ـ كما هان كها مرحباكيا خوب آنا هوا يهر دروازه كهل كيا ـ جب میں وهاں مهنچا تو دیکھا که محیلی و عیسلی هی اور وه دونون خاله زاد بھائی ھیں۔ حبریل نے کم یه عیسلی اور محیلی هس آن کو سلام کیجیر ۔ میں سلام کیا دونوں نے جواب دیا۔ پھر کہا مرحبا! اے برادر صالح اور نبی صالح _ پھر مجھ کو تیسرے آسان پر چڑھا لر گیا ۔ پھر آس نے دروازہ کھلوانا چاھا ۔ پوچھا گیا ۔ کون ھے کہا جریل ۔ کہا ترمے ساتھ کون ھے ۔ کہا جد صلى الله عليه وسلم همى - كها بلائے گئر میں ۔ کہا ماں کہا مرحبا ! كيا خوب آنا هوا ـ پهر دروازه کهل گیا اور میں پہنچا تو دیکها که وهان یوسف هس جریل نے کہا کہ یہ یوسف

فله خلصت اذا محميلي و عيسلى و ها ابنا الخالة قال هذا محيني وعيسني فسلم عليها فسلمت فردا ثم قال مرحبا بالاخ الصالح والنبى الصالح ثم صعدبي الى الساء الشالشة فاستفتح قيل سن هذا قال جبريل قيل و سن معك قال مجد قيل وقد ارسل اليه قال نعم قيل مرحبا به فنعم المعجى جاء ففتح فلما خلصت اذا يوسف قال هذا يروسف فسلم عليه فسلمت عمليه فرد ثم قال مرحبا بالاخ الصالح والنبى الصالح ثم صعدي حتى اتى الساء الرابعة فاستفتح قيل من هذا قال جمريل قیل و سن سعک قال مجد قيل وقد ارسل اليه قال نعم قيل مرحبا به فنعم المع أي جاء ففتح فلما ت اذا ادریس قال هدا دريس فسلم عليه ف

هيں ـ أن كو سلام كيجير ـ میں نے سلام کیا۔ یوسف نے جواب دیا اور کہا که مرحبا اے برادر صالح اور نبی صالح پھر مجھ کو چوتھے آسان پر چڑھا لر گیا وھاں بھی دروازہ كهلوانا چاها تو پوچها گيا ـ كون ھے ۔ کہا جریل ۔ کہا تر ہے ساتھ کون ہے ۔ کہا محد صلی اللہ عليه وسلم هيں - كما كيا بلائے گئے میں۔ کہا ھاں۔ کہا مرحبا! کیا خوب آنا هوا۔ پھر دروازہ کھل گیا ۔ جب سی وہاں بہنچا تو دیکھا وھاں ادریس ھیں ـ جریل نے کہا یہ ادریس میں آن کو سلام کیجیر ۔ س نے سلام کیا۔ ادریس نے جواب دیا اور کہا مرحبا! اے برادر صالح اور نبي صالح ۔ پھر مجھ کو پانچویں آسان پر چڑھا لے گیا اور وهال بهي دروازه كهلوانا چاها ـ پوچھا گيا ـ كون هے - كماجبريل ـ کہا تیرے ساتھ کون ہے ۔کہا مد ضلى الله عليه وسلم هين ـ كيا بلائے گئر ھیں۔ کہا ھاں۔ کہا

عليه فرد ثم قال مرحبا بالاخ الصالح والنبي الصالح ثم صعد بي حتى اتى الساء الخامسة فاستفتح قيل من هذا قال جبريل قيل و من معک قال محد قيل وقد ارسل اليه قال نعم قيل مرحبا به فنعم المجئي حاء فلما خلصت فاذا هارون قال هذا هارون فسلم عليه فسلمت عليه فرد ثم قال مرحبا بالاخ الصالح و النبى الصالح ثم صعدى حتى اتى الساء السادسة فاستفتح قيل سن هذا قال حمريل قيل ومن معك قال محد قيل وقد ارسل اليه قال نعم قال مرحبا به فنعم المجئي جاء فلما خلصت فاذا موسلى قالهذا موسائي فسلم عليه فسلمت عليه فرد ثم قال مرحبا بالاخ الصالح والني الصالح فلما تجاوزت بكي فقيل له ما يسكيك و قال ايكي لان

مرحيا كيا خوب آنا هوا حب مس منچا تو دیکها وهان هارون هی _ جریل نے کہا یه هارون ھیں ان کو سلام کیجیر سیں نے سلام کیا ھارون نے سلام کا جواب دیا اور کہا مرحبا اے برادر صالح اور نبي صالح پهر مجه کو چھٹر آسان پر لر گیا اور دروازه كهلوانا جاها يوجها كيا که کون هے ۔کہا حبریل ۔کہا تیرے ساتھ کون ھے ۔ کہا جد صلی الله علیه وسلم هیں ۔ کہا کیا وہ بلائے گئر ہیں۔ کہا هاں ۔ کہا مرحبا کیا خوب آنا هوا پهر سی پهنچا تو دیکها وهان موسیٰ هی جبریل نے کہا یه سوسلی هیں ان کو سلام کیجیر میں نے سلام کیا۔ موسلی نے جواب دیا۔ پھر کہا مرحیا اے برادر صالح اور نبی صالح ـ جب میں وھاں سے آگے بڑھا موسلی روئے ۔ آن سے پوچھا گیا کہ آپ کیوں روتے میں ۔ کہا میں اس لیر روتا هوں که اس لڑ کے کی آست کے لوگ جو میرمے بعد

غلاما بعث بعدى يدخا, النجنة سن أسته اكثر ممس يدخلها سن استي ثم صعدبي الى السماء السمابعة فاستفتح جعريل قيل سن هذا قال جبريل ومن سعدك قال محد قيدل و قدد بعدث اليه قال نعم قال مرحبها به فنعم المجئي جاء فلما خلصت فاذا ابراهيم قال هذا ابوك فسلم عليه قال فسلمت عليه زدالسلام فقال مرحبا بالابن الصالح والنبي الصالح ثم رفعت بي سدرة المنتهلي فاذا فبقها مشل قلال هـجر و اذا اورقها مثل اذان اللفيلة قال هذا سدرة المنتهلي واذا اربعة انهار نهران باطنان و نهران ظاهران فقلت سا هذا ان يا جريل قال ام الساطنان فنهران في الجنة واما الظاهران فاننيل والفرات ثم رفع لي البييت المعمور ثم اتيت باناء سن خمرو اناء سن لبين و انباء سن عسل فاخذت مبعوث ہوا ہے۔ میری امت سے زبادہ حنت سی حائیں کے یھر محھ کو ساتویں آسان پر لر گیا اور دروازه كهلوانا جاها ـ يوجها گیا کون ھے۔ کہا حمر دل ۔ کہا تررے ساتھ کون ھے ؟ کہا جد صلى الله عليه وسلم هس ـ كما کیا طلب کیر گئر هیں ۔ کہا هاں ۔ کہا مرحبا ! کیا خوب آنا ہوا۔پھر جب سی پہنچ گیا تو دیکها وهال ابراهیم هیں۔ جبریل نے کہا یہ آپ کے دادا ابراہم هس ـ ان كو سلام كيجير ـ میں نے سلام کیا۔ سلام کا جواب دیا اور کہا مرحبا اے فرزند صالح اور نبي صالح ـ پهر سدرة المنتهلي مجھ سے نزدیک ہوا س نے دیکھا کہ آس کے پھل حجر مٹکوں کے برابر اور پتر ھاتھیوں کے کان کے برابر ھیں۔ جریل نے کہا یہ سدرة المنتہلی ہے۔ میں نے دیکھا کہ اس کی جڑ سے چار نهرین نکاتی هی دو پوشیده اور دو ظاہر۔ سی نے کہا اے جريل يه كيا هين ـ كما دو

الابن فقال هي الفطرة انت علما و استك ثم فرضت على الصلوات خدمسون صلوات كل يوم فرجعت فمررت على موسلي فقال عم امرت مخمسين صلوات كل يوم قال ان استك لا تـســــطـيـع خـمـسين صلواة كل يـوم و اني والله قـد جـربـت الناس قبلك وعالجت بني اسرائينل اشد المعالجة فارجع الى ربك فسله التخفيف لامتك وفرجعت فوضع عنى عشرا فرجعت الى موسلى فقال مشله فرجعت فوضع عنى عشرا فرجعت الى موسى فقال مثله فرجعت فامرت الى موسلى فقال بعدشر صلوات كل يدوم فرجعت فقال سشله فرجعت فامرت نخمس صلوات كل يدوم فسرجعت الى موسلى فقال بم آمرت قلت امرت بخدمس صلوات كل يدوم قال ان استك لا تستطيع خمس صلوات کل یوم و انی قد جريت الناس قبلك

پوشیده نهرین تو جنت مین جاتی

اور دو ظاهر نیل اور فرات هس

پھر بیت المعمور مجھ سے نزدیک ہوا۔ پھر ایک طرف شراب سے

دوسرا دودھ سے اور تیسرا شہد سے بھرا ہوا پیش کیا گیا ہی

نے دودھ کو پسند کیا حریل

وعالجت بنى اسرائيل اشد المعالجة فارجع الى ربك فسله التخفيف لاستك قال سالت ربى حتى استحييت ولكنى ارضى و اسلم قال فلما جاوزت نادى منادا مضيت فريضتى و خففت

نے کہا ہی آپ کی فطرت ھے عين عسادي ـ (صحیح بخاری مطبوعه دهلی جس پر آپ اور آپ کی است پیدا صفحات ٨٨٥ و ٩٨٥ و ٥٥٠) هوئي هـ ـ پهر مجه پر هر روز یچاس کمازیں فرض هوئس ـ پهر سی الٹا پهرا اور سوسلی کے پاس آیا ۔ پوچھا کیا حکم ہوا ۔ میں نے کہا ہر روز بچاس کمازوں کا حکم هوا هے کہا آپ کی آمت هر روز پچاس تمازیس ادا نہیں کر سکر گی اور خدا کی قسم میں آپ سے پہلے لوگوں کو آزما چکا هوں اور بنی اسرائیل کی اصلاح میں سخت تکلیف آٹھا چکا ھوں ۔ خدا کے پاس پھر جائیر اور آمت کے لیر تخفیف کی درخواست کیجیر ۔ میں پھر گیا اور خدا نے دس کم کر دیں اور میں پھر موسیل کے پاس آیا ۔ موسیل نے پھر وہی کہا جو المرکما تھا۔ میں پھرگیا اور خدا نے دس نمازیں اور کم کر دیں۔ پھر موسلی کے پاس آیا موسلی نے پھر بھی وہی کہا جو پہلے کہا تھا میں پھر گیا تو خدا نے دس نمازیں اور کے کر دیں پھر موسیٰ کے پاس آیا پھر بھی وھی کہا جو پہلر کہا تھا۔ میں پھر گیا تو ھر روز دس نمازوں کا حکم ھوا۔ جب میں موسلی کے پاس آیا تو پھر وہی کہا جو پہلر کہا تھا۔ میں پھرگیا

اور اب کی دفعه هر روز پایخ نمازوں کا حکم هوا ـ لوٹ کر موسلی کے پاس آیا تو پوچھا کیا ہوا میں نے کہا ہر روز پانچ نمازوں کا حکم ہوا ہے ۔ کہا آپ کی اُست ہر روز پانچ نمازیں ادا نہیں کر سکے گی ۔ میں آپ سے پہلے لوگوں کو آزرا چکا ھوں اور بنی اسرائیل کی اصلاح میں میں تکلیف آٹھا چکا ہوں ۔ آپ پھر جائیر اور اپنی آست کے لیے کمی کی درخواست کیجیر ۔ کہا میں نے اپنے رب سے سوال کیا یہاں تک کہ مجھے شرم آئی اب تو میں راضی ہوں اور اسی کو قبول کرتا ہوں ۔ کہا جب میں اس مقام سے چلا تو ایک پکارنے والر نے پکارا میں نے اپنا فرض جاری کر دیا اور اپنر يندوں ير آساني كي ـ

حدیث بیان کی هم سے محد بن بشار نے کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے غندر نے کہا اس نے حدیث بیان کی ھم سے شعبہ نے قتادہ سے اور کہا محھ سے خلیفہ نے حدیث بیان کی ھم سے یزید بن زریع نے کہا آس نے حدیث بیان کی ھم <u>سے</u> سعید نے قتادہ سے اس نے ابو العاليه سے كہا اس نے حدیث بیان کی هم سے تمهارے نبی کے چچا کے بیٹے نے یعنی ابن عباس نے پیغمبر خدا سے فرمایا میں نے دیکھا معراج کی شب موسلی کو لمبر قد کا اور گھونگریالے بالوں والا گویا کہ

حدثنا محد بن بشار حدثنا غند احدثنا شعبة عن قتاده و قال لى خليفة حد ثنا یزید بن زریع حد ثا مسعید عن قتاده عن ابی مالية حد ثنا ابن عم نبيكم صلى الله عليه وسلم يعنى ابن عباس عن النبي صلى الله عمليه وسلم قال رایت لیلة اسرے بی موسلی رجلا آدم طوالا جعدا كانه من رجال شنؤة و رايت عيسلي رجلا سربوعا سربوع الخلق الى الحمرة و

البياض سبط الراس و رايت سالكا خازن النار والدحال في آيات اراهين الله اياه فلا تكن في مرية من لقائه قال انس و ابوبكرة عن النبى صلى الله عليه وسلم تحرس الملائكة المدينة من الدحال ـ

مس ۔ روایت کی انس نے اور ابوبکرہ نے پیغمس خدا سے کہ فرشتر سدینہ کو دجال سے بچاتے اور اُس کی نگہبانی کرتے میں۔

وہ قبیلہ شؤاۃ کے مردوں میں سے میں اور میں نے عیسلی کو دیکها میانه قد میانه بدن رنگت مائل بسرخى و سفيدى بال چھوٹے ھوئے اور میں نے دیکها مالک محافظ دوزخ کو اور دجال کو آن نشانیوں میں جو خدا نے دکھائی ۔ پس نه (صعیح مخاری صنحه ۲۵۹) شک کر تو اس کے دیکھنر

کی هم سے عبد اللہ نے کہا آس نے حدیث بیان کی ھم سے یونس نے زھری سے اور ھم سے حدیث بیان کی احمد بن صالح نے کہا آس نے حدیث بیان کی ھم سے عنبسہ نے کہا آس نے حدیث بیان کی هم سے یونس نے ابن شہاب سے کہا اس نے کہا انس بن مالک نے ابوذر حدیث بیان کرتے تھر کہ پیغمس خدا نے فرسایا۔ میرے گھر کی چھت شفق کی گئی اور میں اس

حدیث بیان کی هم سے عبدان نے کہا اس نے حدیث بیان حد ثنا عبدان حد ثنا عبدالله حدثنا يونس عن الزهري وحدثنا احمد بن صالح حدثنا عنبسة حد ثنا يونس عن ابن شهاب قال قال ائس ابن مالک کان ابوذر یحددیث ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فرج سقف بيتي وانا بمكة فنزل جبريل ففرج صدرى ثم غسله بماء زمنزم ثم جاء بطست من

وقت مکه میں تھا ۔ پھر جبریل نازل ہوا اور سیرا سینہ چیر کر آب زم زم سے دھویا پھر حکمت و ایمان سے بھرا ہوا سونے کا لگن لایا اور اس کو میرے سینه میں آلٹ دیا ۔ پھر اُس کو برابر کر دیا اور میرا هاته پکڑ کر آسان پر لے چلا جب پہلے آسان پر پہنچا جبریل نے آسان کے محافظ سے کہا ۔کھول ۔ کہا کون - ھے کہا - جریل - کہا تیرے ساتھ کوئی ہے۔ کہا۔ میرے ساتھ مجد صلی اللہ علیہ وسلم ہیں ۔ کہا بلائے گئے ہیں کہا ہاں ۔ پھر دروازہ کھل گیا اور هم آسان پر جا پہنچے۔ میں نے دیکھا ایک مرد ھے جس کے دائیں بائیں بہت سی صورتیں هیں ـ دائیں طرف دیکھ کر ہنستا ہے اور بائیں طرف دیکھ کر روتا ہے ۔ اُس نے کہا مرحبا امے نبی صالح ۔ اور فرزند صالح میں نے کہا اے جبریل یه کون ہے کہا یه آدم هیں اور یه صورتیں جو ان کے دائیں

ذهب ممتلي حكمة و ایما نا قا فرغها فی صدری ثم اطبقه ثم اخذبیدی فعرج بي الى السماء فلما جاء الى السماء الدنيا قال جبريل لخازن السماء افيتبح قال من هذا قال هنذا جبربل قال سعك احدقال سعي مجد قال ارسل اليه قال نعدم ففتح فلما علونا السماء الدنيا اذا رجل عن يسينه اسودة و عن يساره اسودة فاذا نظر قبل يمينه ضحك و اذا نظر قبل شماله بكي فقال مرحبا بالنبى الصالح و الابن الصالح قلت سن هذا يا جبريل قال هذا آدم و هـذه الاسودة عـن يـمـيـنــه و عن شماله نسم بنيه فاهل اليمين سنهم اهل الجنة و الاسودة اللتي عن شمالة اهل النارفاذا نظرقبل يمينة ضحك واذانظر قبل شماله بكى ثم عرج بى جبريل حتى اتى السماء

الشانية فقال لخازنها روحیں ھیں ۔ ان میں سے دائیں افتح فقال له خازنها طرف والے جنتی اور بائیں طرف مشل ساقال الاول ففتح والے دوزخی هیں ۔ اس لیے دائیں قال انس فذكر انه وجد طرف دیکھ کر ہنستے اور بائیں في السموات ادريس و موسلي و طرف دیکھ کر روتے ہیں۔ پھر عيسلي و ابراهيم ولم يشبث جبریل مجھ کو دوسرے آسان لى كيف سنازلهم غير پر چڑھا لے گیا اور محافظ سے انه قد ذكرانه قد وجد کہا کھول ۔ اس محافظ نے بھی آدم في السماء الدنيا و وہی کہا جو پہلے محافظ نے ابر اهيم في السادسة وقال کہا تھا۔ پھر کھل گیا انس انس فلما سرجبريل بادريس کہتے ہیں کہ ابوذر نے آسانوں قال سرحبا بالنبى الصالح پر ادریس ، موسلی ، عیسلی اور والاخ الصالح فقلت من ابراهیم کا ملنا تو بیان کیا مگر هذاقال هذا ادريس ثم ان کے مقامات کی تعین نہیں کی مررت بموسلى فقال سرحبا سوائے اس کے کہ آسان اول پر بالنبى الصالح والأخ آدم اور چھٹے آسان پر ابراہیم الصالح قلت من هذا قال کے ملنے کا ذکر کیا ۔ انس کہتے هذا موسلي ثم مررت بعيسلي هیں جب جبریل کا گذر ادریس فقال سرحبا بالنبى الصالح کے پاس ہوا ۔ ادریس نے کہا والاخ الصالح فقلت من مرحبا اے نبی صالح اور برادر هذا قال هذا عيسلي ثم صالح ۔ میں نے کہا یہ کون مررت بابراهيم فقال سرحبا هیں کہا یہ ادریس هیں پھر میں ل بالنبى الصالح و الابن موسلی کے پاس پہنچا موسلی نے الصالح قلت من هذا قال کہا مرحبا اے نبی صالح اور

بائیں هیں۔ آن کی اولاد کی هذاابراهیم۔ قال ابن

شهاب و اخبرنی ابن حزم ان ابن عباس وابا حبة الانصاري كانا يقولان قال النبى صلى الله عليه وسلم ثم عرج بی جبریل حتی ظهرت لمستوى اسمع صريف الاقلام قال ابن حزم و انس بن مالک قال النبی صلى الله عمليه وسلم ففرض الله على خمسين صلواة فرحعت بذلک حتی امر بموسلي ققال سوسلي سا الذي فرض ربك على استك قلت فرض عليهم خمسون صلواة قال فراجع ربك فان استک لاتطیق ذلک فرجعت فراجعت ربي فوضع شطهرها فرجعت الى موسلى فقال راجع ربك فذكر مثله فوضع شطرها فرجعت الى موسلى فاخبرته فقال ذلك ففعلت فوضع شطرها فرجعت الى موسلي

برادر صالح _ میں نے پوچھا یہ کون هیں ۔ کما موسلی هیں ۔ پھر میں عیسیٰ کے پاس بہنچا عیسلی نے کہا مرحبا اے نبی صالح اور برادر صالح ـ میں نے پوچها يه كون هي كها يه عيسلي هيں ـ پهر سي ابراهيم کے پاس یہنچا ۔ ابراہیم نے کہا مرحبا اے فرزند صالح اور نبی صالح ـ سي نے پوچھا يه كون هيں كما يه ابراهيم هيں ـ كما ابن شہاب نے اور خبر دی محھ کو ابن حزم نے کہ ابن عباس اور ابو حبة الانصاري دونوں کہتر تھرکہ رسول خدا نے فرمایا ـ پهر محه كو جبريل ايسر مقام پر چڑھا لے گیا جہاں سے قلموں کے چلنر کی آواز سنائی دیتی تھی ۔ کہا ابن حزم اور انس بن مالک نے فرمایا رسول خدا نے کہ فرض کی خدا نے محه پر بچاس نمازیں ـ پهر سي لوٹ کر موسلی کے پاس آیا

و- اى صوت الاقلام حال الكتابة كانت الملائكة تكتب الا قضية -

فاخبرته فقال راجع ربک فان استک لا تطبیق ذلک فرجعت فراجعت ربی فقال هی خمسو ن لا هی خمسو ن لا یبدل القول لذی فرجعت الی موسلی فقال را جع ربک فقلت قد استحیت من فقلت قد استحیت من ربی شم انطلق حتی اتبی السدرة المنتهای قنغشیها الوان لا ادری ما هی شم ادخلت الجنة فاذا فیها جسابذ اللؤ لؤ و اذا ترابها

(صحیح بخـاری صفحات ۲۰۰۰ و ۲۵۱)

موسلی نے پوچھا کہ خدا نے
آپ کی آست پر کیا فرض کیا۔
میں نے کہا آن پر پچاس نمازیں
فرض ہوئی ہیں کہا خدا کے
پاس پھر جائیے آپ کی آست اس
پھر خدا کے پاس گیا خدا نے
آن میں سے ایک حصہ کم
پاس آیا۔ کہا پھر میں موسلی کے
وہی کہا جو پہلے کہا تھا۔ پھر
فرمی خدا نے ان میں سے ایک حصہ
وہی کہا جو پہلے کہا تھا۔ پھر
اور کم کر دیا۔ میں پھر موسلی
کے پاس آیا اور آن کو خبر دی
موسلی نے پھر کہا خدا کے پاس

پھر جائیے۔ میں نے ایسا ھی کہا۔ ایک حصد خدا نے اور کم کر دیا۔ میں پھر موسلی کے پاس آیا اور اُن کو خبر دی۔ کہا خدا کے پاس پھر جائیے آپ کی اُست اس کی طاقت نہیں رکھتی۔ میں پھر گیا اور پھر سوال کیا کہا پانچ اور یہی پچاس ھیں۔ اب میرا قول نہیں بدلتا۔ پھر میں موسلی کے پاس آیا کہا خدا کے پاس پھر جائیے۔ میں نے کہا مجھ کو خدا سے شرم آتی ہے۔ پھر جبریل مجھ کو سدرة المنتہلی پر لے گیا۔ کچھ رنگ اُس پر چھائے ھوئے تھے۔ اُن کی حقیقت سے میں خبردار نہیں ھوں۔ پھر میں جنت میں داخل ھوا۔ وھاں موتی کے قبے اور اُمشک کی مٹی تھی۔

حدیث کی هـم سے عبد العزیز بن عبداللہ نے، کہا اس نے

حدیث کی محھ سے سلیان نے ، شریک بن عبداللہ سے کہا اس نے سنا میں نے انس بن مالک سے که ذکر کرتے تھر وہ اس رات کا جب که رسول خدا کو مسجد کعبہ سے معراج ہوئی ۔ کہ تین شخص (فرشتر) وحی آنے سے ملر رسول خدا کے پاس آئے اور وہ مسجد حرام میں سوتے تھر ـ ان سی سے اول نے کہا ان میں سے کون ، بیچ والر نے کہا جو ان میں متر ہے۔ ان میں سے اخبر شخص نے کہا لو ان میں سے جتر کو، وہ رات تو گذر گئی پھرکسی نے آن کو نہیں دیکھا۔ ماں تک که ایک دوسری رات کو آئے ایسی حالت میں حب کہ رسول خدا کا دل دیکهتا تها اور آنکهی سوتی اور دل جاگتا تها اور اسی طرح پیغمبروں کی آنکھیں سوتی اور آن کے دل نہیں سوتے هيں ـ پهر انهوں نے رسول خدا سے بات نہیں کی اور آن کو آٹھا کر چاہ زسزم کے پاس ارگئر ۔ پھر ان سی سے جبریل

حدثنا عبد العزيزين عمدالله قال حدثني سليان عن شریک بن عبدالله انه قال سمعت انس بن سالک يقول ليلة اسرى برسولات صلى الله عليه وسلم سن مسجد الكعبة انه حاءه ثلثة نفر قبل أن يوحي اليه و هنو نائم في المسجد الحرام فقال اولهم ايهم هو فقال او سطهم هو خبرهم فقال اخرهم خلذو اخترهم فكانت تملك المليلة فلم يرهم حتثي توه ليلة اخرى فيا يرى قبله وتنام عينه ولاينام قلمه وكذلك الانبياء تنام اعينهم ولاتنام قلوبهم فلم يكلموه حتلي احتملوه فرضعوه عندبئر زسزم فتولاه منهم جمريل فشق جمريل سابين نحره الى لبته حتى فرغ سن صدره و جوفه نغسله سن ساء زسزم بسيده حتى انقى جوفه ثم اتى بطست سن ذهب فيه تورسن ذهب محشو المانا

نے کام کا ذمه لیا ۔ پھر حریل نے آن کے سینہ کو ایک سرمے سے دوسرے سرے تک چیر ڈالا۔ ماں تک که سینه اور جوف کو بالكل خالى كر ديا _ پهر آب زمزم سے اس کو دھویا ۔ ماں تک که جوف کو صاف کر ڈالا۔ پھر سونے کا لگن لایا گیا جس سی سونے کا لوٹا ایمان اور حکمت سے بھرا ھوا تھا۔ جبریل نے اس سے آں حضرت کے سینہ اور حلق کی رگوں کو 'پر کر دیا پھر برابر کر دیا ۔ پھر آن کو آسانی دنیا پر لر گیا اور آس کا ایک دروازه کھٹکھٹایا آسان والوں نے یکارا که کون ہے۔ کہا جبریل۔ کہا اوز ترمے ساتھ کون ھے ۔ کہا مرے ساتھ محد صلی اللہ علیه وسلم ھی ۔ پوچھا بلائے گئر ھی ۔ کہا ھاں۔ کہا مرحبا آئیر اهل آسان اسی بشارت کو طلب کر رہے ہیں۔ کوئی آسان کا فرشته نہیں جانتا که ان سے خدا زسن پر کیا جاهتا ہے جب تک که آن کو معلوم نه هو۔ پهر

و حـكـمـة فـحشابـه صدره و لغاديده يعنى عروق حلقه ثما طبقه ثم عرج به الي الساء الدنيا فضرب بابا من ابواما فناداه اهل الساء من هذا فقال جريل قالوا و سن معک قال معی مجد قال و قىد بىعىث قال ئىعىم قالىو افـمـرحـــابـه و اهلا يستبشر به اهمل الساء لا يعلم اهل الساء عا يريد الله به في الأرض حتى يعلهم فوجد في الساء الدنيا آدم فقال له جبريل هذا ابوك فسلم عليه فسلم عليه ورد عليه آدم و قال مرحبا و اهلا يا نبيي فنعم الا بن انت فاذا هو في الساء الدنيا بنهرين يطردان فقال ما هذان النهران يا جبريل قال هذا النيل والفرات عنصر ها ثم سضى به في الساء فاذا هو بنهر آخر عليه قصر من لؤلؤ وزبرجد فضرب يده فاذا هو مسك اذ فرفقال ما هذا يا جريل قال هو هذا

آسان اول پر آدم کو دیکھا جریل نے کہا یہ آپ کے باپ ھیں۔ ان کو سلام کیجیر ۔ رسول خدا نے آدم کو سلام کیا اور آدم نے جواب دیا اور کہا می حیا اے مترین فرزند ـ پهر یکایک آسان اول پر دو نهريل متي ديکهس کها اے جریل یه کیسی نہریں هس ـ كما يه نيل و فرات كي اصل هی پهر آن کو آسان پر لر گیا۔ ایک اور نہر دیکھی جس پر سوتی اور زبرجد کے محل بنے تھے ۔ پھر اس میں ھاتھ ڈالا تو اس کی مٹی بالکل مشک خالص کی مانند تھی ۔ کہا اے جریل یہ کیا ہے آس نے کہا یہ کوثر ھے جو خدا نے آپ کے لیر تیار رکھی ہے۔ پھر دوسرے آسان پر ار گیا ہاں بھی فرشتوں نے وہی کہا جو ہلوں نے کہا تھا۔ که كون هے ـ كها جريل ـ كها تسرمے ساتھ کون ہے کہا بدصلی اللہ عليه وسلم هس _ كها طلب كير أنشر هين - كما هان - كما مرحبا پھر تیسرے آسان پر لرگیا وہاں

الكوثر الذي قد خيالك ربك ثم عرج به الى الساء الثانية فقالت الملائكة له مثل ما قلت له الاولى من هذا قال حريل قالوا وسن معك قال محد قال وقد بعث اليه قال نعم قالو ام حبابه و اهد ثم عرج به الى الساء الثالثة و قالواله مشل ما قالت اولالي و الشانية ثم عرج به الى الساء الرابعة فقالوا له مشل ذلک ثم عرج به الی الساء الخامسة فقالوا له مثل ذلک ثم عرج به الى الساء السادسة فقالواله مشل ذلك ثم عرج به الى الساء السابعة فقالوا له مشل ذلک کل ساء فيها البياء قد ساهم فاوعيت سنهم ادريس في الثانية و هارون في الرابعة واخر في الخامسة لم احفظ اسمه و ابراهم في السادسة وموسلي في السابعة بتفصيل كلام الله فقال موسی رب لم اظن ان یدرفع على احدثم علابه فوق ذلك

بھی فرشتوں نے وہی کہا حو ملر اور دوسرے آسان پر کہا تھا۔ پھر چوتھر آسان پر لرگیا۔ پھر وہی آنھوں نے کہا جو پہلے که چکر تهر ـ پهر پانچوین آسان پر لے گیا اور یہاں بھی مثل اول کے فرشتوں نے کلام کیا ۔ پھر چهٹر آسان پر لر گیا اور فرشتوں نے مثل اول کے کلام کیا۔ یهر ساتویی آسان پر لرگیا وهان کے فرشتوں نے بھی وھی کہا جو ہلوں نے کہا تھا۔ ھر ایک آسان میں پیغمروں کے جدا جدا نام بتائے ۔ جن میں سے میں نے یاد رکھا ادریس دوسرے آسان میں مارون چوتھر سی اور کوئی دوسرمے نبی ـ پانچویں میں جن کا نام یاد نہیں رھا ۔ ابراھیم چھٹر میں اور موسلی ساتویں میں اس لیر که آن کو خدا کے ساتھ کلام کرنے کی فضیلت ہے۔ پھر موسنی نے کہا اے خدا سرے گان میں بھی نہیں تھا که کسی کو مجھ پر فضیلت دی حائے گی۔ پھر خدا آن کو اس سے

تما لا يعلمه الاالله حتى جاء سدرة المنتهلي ودنا الجبنار رب العرزة فتدلى حتى كان قاب قـوسن او ادنى فـاوحى الله اليـه فيما يوحى الله خمسين صلواة على استككل يوم وليلة ثم هبط حتى بلغ موسلى فاحتبسه موسلي فقال يا محد ماذا عمد اليك ربك قال عدد الى خمسين صلوة كل يوم وليلة قال ان استک لا تستطیع ذلك فارجع فليخفف عنك ربك و عنهم فالتفت النبي صلى الله عليه وسلم الى جريل كانه يستشعره في ذلك فاشار اليه جبريل نعم ان شئت فعلا به الى الجمار فقال و هو مكانه يا رب خفف عنا فان آمتي لا تستطيع هذا فوضع عنده عشر صلوة ثم رجع الى موسى فاحتبسه فلم يزل يدردده موسلي الى ربه حتى صارت على خمس صلواة ثم احتبسه موسلي عند الخمس فقال يا محد والله لقد راودت بني اسرائيل قوسي

بھی اوپر لے گیا جس کا علم سوائے خدا کے کسی کو نہیں هے یہاں تک که سدرة المنتہلی پر منچر - پهر خدا نزديک هوا پهر اور بھی نزدیک ہوا ۔ یہاں تک کہ دو کہانوں کا یا اس سے بھی کم فاصلہ رہ گیا۔ پھر خدا نے آن کو وحی بھیجی کہ تیری آست پر بچاس نمازیں هر روز و شب میں فرض هو ئیں _ پهر آتر ہے یہاں تک کہ سوسلی کے پاس پہنچے - پھر موسلی نے آن کو روک لیا۔ اورکہا اے محد صلی اللہ علیه وسلم خدا نے آپ کو کیا حکم دیا ۔ کہا مجھ کو ہر رات دن سیں بچاس نمازوں کا حکم ہوا ہے۔ ووسلی نے کہا آپ کی آست اس کی طاقت نمی*ن رکھتی* پهر جائير تا که خدا اس سی تخفیف کرے ۔ رسول خدا نے جریل کی طرف دیکھا گویا کہ اس بارہ میں اس سے صلاح پوچھتے ہیں ۔ جبریل نے کہا ھاں اگر آپ چاھیں۔ پھر خدا کے پاس گئے اور کہا جب کہ وہ

على ادنى من هذا فضعفوا و تركوه فاستك اضعف احيسادا وقلموبا وابدانا و ابـصـار او اساعـا فارجـع فليخفف عنك ربك كل ذلك يلتفت النبي صلى الله عليه وسلم الى جـمريـل ليشير عـليـد وكان لا يكره ذلك جيريل فرفعه عندالخامسة فقال يا رب ان استى صنعقاء اجساد هم وقلوبهم و أساعهم و أبصارهم و أبدانهم فخفف عنا ففال الجبار يا محد قال لبيك و سعد يك قال انه لا يبدل القول لذي كم فدرضت عليك ني ام الكتاب فكل حسنة بعشر استالها فهي خيمسون في ام الكتاب وهمي خمس عليك فرجع الي موسلي فقال كيف فعلت قال خفف عنا اعطانا بكل حسنة عشرا سشالها قال موسني قد و الله راودت بني اسرائيل على ادنى من ذلك فتركبوه فارجع الى ربك فليخفف عنك ايضا قال رسول الله

صلى الله عليه وسلم يا موسلى قد والله استحييت من ربى ما اختلف اليه قال فاهبط بسم الله فاستيقظ و هو في المسجد الحرام -

(صحیح بخاری صفحات ۱۱۲۰ و ۱۲۰۱)

اپنے پہلے مقام پر تھے ۔ اے خدا کمی کر کیوں کہ میری آمت اس کی طاقت نہیں رکھتی ۔ خدا نے دس نمازیں کم کر دیں ۔ پھر موسلی کے پاس آ۔' اور موسلی نے آن کو روک لیا موسلی بار بار آن کو خدا کی طرف بھیجتے تھے ۔ ان کو خدا کی طرف بھیجتے تھے ۔ یہی ۔ موسلی نے پھر روکا اور کہا

یماں تک کہ پانچ کمازیں فرض رہ گئیں ۔ موسنی نے پھر روکا اور کہا اے محد قسم خدا کی میں نے اپنی قوم بنی اسرائیل سے اس سے بھی کم محنت چاہی تھی ۔ اُنھوں نے کمزوری دکھائی اور اُس کو چھوڑ دیا ۔ آپ کی آست کا جسم ، قلب ، بصارت اور ساعت اور بھی زیادہ ضعیف ہے ۔ پھر جائیے تاکہ خدا اس کو بھی معاف کر دے ۔ رسول خدا نے جبریل کی طرف دیکھا تاکه اس میں مشورہ دے ۔ جبریل اس کو برا نہیں جانتا تھا پھر پانچویں دفعہ رسول خدا کو لے گیا۔ پھر رسول خدا نے کہا اے رب میری امت کے جسم، قلب ، بصارت ، ساعت اور بدن ضعیف هیں ـ پس هارم حق سیں كمى كر - خدا نے كہا اے جد ـ كہا لبيك (حاضر هوں) كہا ميرا قول نہیں بدلتا جس طرح آم الکتاب میں تجھ پر فرض کر چکا ہوں ـ اور ہر نیکی کا بدلہ دس نیکیوں کے برابر ہوگا ۔ اس لیے اب یہ تمازیں **آ**م الکتاب میں یچاس کے برابر اور تیرے نزدیک وہی پانچ ہیں ۔ پھر موسنی کے پاس آئے کہا آپ نے کیا کیا ۔کہا خدا نے تخفیف کی اس طرح پر کہ ہر نیکی کے بدلے ہم کو دس نیکیوں کا ثواب عنایت کیا ۔ موسنی نے کہا واللہ میں نے تو بنی اسرائیل سے اس سے بھی کم محنت چاہی تھی ۔ اُنھوں نے اس کو بھی چھوڑ دیا ۔ خدا کے پاس پھر جائیے ۔ تاکہ خدا ان کو بھی معاف کر دے ۔ رسول اللہ

صلی الله علیه وسلم نے فرمایا اے موسلی قسم ہے خدا کی مجھ کو اپنے رب سے شرم آتی ہے که بار بار اُس کے پاس جاؤں ۔ کہا تو بسم الله اترئیے ۔ پھر جاگے اور اُس وقت مسجد حرام میں تھے ۔

حدیث بیان کی هم سے ابراهیم بن موسلی نے کہا اس نے حدثنا ابراهيم بن حدیث بیان کی هم سے هشام بن موسیٰی حدثنا هشام بن یوسف نے کہا اُس نے حدیث يوسف حدثنا معمرعن بیان کی ہم سے معمر نے زہری الزهرى عن سعيد بن المسيب سے اُس نے سعید بن مسیب سے عن ابي هريره قال قال النبي اس نے ابو ہریرہ سے کہا انھوں صلى الله عليه وسلم ليله نے فرمایا رسول خدا نے معراج آسری بی رایت سوسلی و اذا کی رات میں نے موسلی علیہ السلام هـو رجـل ضرب رجـل كانـه مـن کو دیکھا اور وہ بدن کے دبلے رجال شنؤة ورايت عيسلي تھے اور بال چھوٹے ہوئے گویا فاذا هو رجل ربعه احمر کہ وہ قبیلہ شنؤہ کے ایک آدمی كانما خرج من ديماس وانا ھیں اور میں نے عیسیٰی علیہ السلام اشبه ولد ابراهيم صلى الله کو دیکھا اور وہ میاند قد سرخ عليه وسلم به ثم اتيت رنگ تھے گویا ابھی حام سے نہا بانائين في احد هما لبن دھو کر نکلے ھیں اور میں في الاخر خمر فقال اشرب ابراهيم عليه السلام كا فرزند هم ايهما شئت فاخدت اللبن شکل ہوں پھر دو برتن پیشکیر فشربه فقيل اخذت الفطرة گئے ۔ ایک میں دودھ اور ایک اسا انك لواخذت الخمر میں شراب تھی ۔ پھر کہا پی غوت استرك _ جس کو چاھے۔ سی نے دودھ

(صحیح بخاری صفحہ ۳۸۱) لےکر پی لیا مجھ سے کہا گیا کہ تو نے فطرت کو پسند کیا ۔ اگر تو شراب کو پسند کرتا تو تیری

آمت گمراه هو حاتی ـ

حدیث بیان کی هم سے محد بن بشار نے کہا اُس نے حدیث بیان کی هم سے غندر نے کہا حدثنا عد بن بشار اس نے سنا میں نے قتادہ سے کہا حدثنا غندر سمعته عن اس نے سنا میں نے ابو العالیہ سے قتاده قال سمعت ابا العاليه یه کہا آس نے حدیث بیان کی حدثنا ابن عم نبيكم يعنى ابن عباس عن الني ھم سے تمھارے پیغمبر کے چچا کے بیٹا یعنی ابن عباس نے صلعم قال لا ينببغي لعبد رسول خدا صلى الله عليه وسلم ان یقول انا خبر من یونس سے فرمایا کسی بندہ خدا کو بن متى ونسبه الى ابيه نہیں کہنا چاھیر که میں یونس و ذكر النبي صلى الله عليه بن ستی سے بہتر ہوں اور یونس وسلم ليله اسرى به فقال کو آن کے باپ کی طرف منسوب سوسلى آدم طوال كانه من کیا اور رسول خدا نے معراج کی رجال شنوة وقال عيسلي رات کا ذکر کیا اور کما موسلی جعد مربوع وذكر سالكا لمبرقد کے تھر گویا کہ وہ قبیلہ خازن النارو ذكر الدجال (صحیح مخاری صفحه ۸۱۱) شنؤة سي سے تھر اور عيسلي گھونگریالے بالوں والے اور میانہ قد تھے اور دوزخ کے محافظ مالک اور دجال کا بھی ذکر کیا ۔

حدیث بیان کی هم سے هدبه بن خالد نے اس نے حدیث بیان کی هم سے هام بن محیلی نے قتادہ سے آس نے انس بن مالک سے آس نے مالک بن صعصعه سے كه رسول الله صلى الله عليه وسلم نے آن سے شب معراج کا ذکر

حدثنا هدبه بن خالد حدثنا همام بن محيلي عن قتاده عن انس بن سالک عن مالک بن صعصعه ان نبی الله صلی الله علیه

وسلم حدثهم عن ليله اسری به ثم صعد حتی اتی الساء الشانيه فاستفتح قيل من هذا قال جبريل قيل و من سعك قال مجد قيل وقد ارسل اليه قال نعم فلما خلصت فاذا يحييلي وعيسلي و هما ابن خاله قال هذا يحبيني وعيسني فسلم عليها فسلمت فردا ثم قالا مرحا بالاخ الصالح والنبي الصالح ـ

(صحیح نخاری صفحات ۲۸۵ و ۸۸س)

کیا پھر چڑھا یہاں تک کھ دوسرے آسان پر پہنچا اور دروازہ کھلوانا چاہا پوچھا کون ہے کہا جبریل کہا تیرے ساتھ کون ہے کہا ہد صلی ابتہ علیہ وسلم ہیں پوچھا کیا طلب کیر گئر هیں کہا هاں جب میں پہنچ گیا تو میں نے یحیلی اور عیسلی کو ديكها اور وه دونوں خاله زاد بھائی ھیں - جبریل نے کہا یہ یحینی اور عیسنی هیں ان کو سلام کیجیے ۔ میں نے سلام کیا دونوں نے جواب دیا اور کہا مرحبا اے برادر صالح اور نی صالح _

حدیث بیان کی هم سے ابراهیم بن موسنی نے کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے هشام نے معمر سے اور حدیث بیان کی مجھ سے محمود نے کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے عبد الرزاق نے کہا اس نے حدیث بیان کی ھم سے معمر نے زھری سے کہا اس نے خبر دی محه کو سعید بن مسیب نے ابو هریره سے کہا آنھوں نے فرمایا رسول خدا نے کہ۔

حدثنا ابراهيم ابن وسلى حدثنا هشام عن مر و حدثنی محمود حدثنا عبدالرزاق حدثنا معمر عن الزهري اخبرني سعيد بن المسيب عن عن ابي هريرة قال قال النبي صلى الله عمليمه وسلم ليمله آسری بی لقیت سوسیٰ قال

فاذا رجل

قال مضطرب رحل الراس كانه من رجال موه قال ولقيت عيسلي فنعته النبي صلى الله عليه فقال ربعه احمر كانما خرج سن ديماس يعنى الحمام و رايت ابراهم وانا اشبه ولده به قال و اتيت بانائن احد هما لن والاخر فيه خمر فقيل لي خذامما شئت فاخذت اللين فشربته فقيل لي هديت الفطرة او اصدت الفطرة اسا انک لواخذت الخمر غوت نے ابراهیم علیه السلام کو دیکھا استک (صحیح مخاری صفحه ۹۸۹) اور سی آن کا هم شکل فرزند ھوں کہا دو پیالر لائے گئر ایک میں دودھ تھا ایک میں شراب مجھ کو کہا گیا جس کو چاہو پی لو۔ میں نے دودھ لے کر پی لیا پھر مجھ سے کہا گیا کہ آپ فطرت پر ھدایت کیر گئر یا فطرت کو حاصل کر لیا اگر شراب پی لیتے تو آپ کی است گمراه هو جاتی ـ

حدیث بیان کی هم سے محد بن کثمر نے کہا اُس ۔ حدیث اسرائیل حد ثنا عشمان کہا اس نے حدیث بیان کی بن المغيرة عن سجاهد عن ابن عمر قال قال

معراج رات میں موسی سے ملا کہا پھر آنحضرت نے موسلی کی صفت بیان کی ۔ کہ میں نے دیکها وه ایک مرد هی سی خیال کرتا هوں که فرمایا بدن کے دہلر سر کے بال چھوٹے هوئے گویا که وہ قبیله شنؤة میں سے ھیں ۔ کہا اور سی عیسی علیه السلام سے ملا پھر رسول خدا نے عیسلی علیه السلام کی صفت بیان کی اور فرمایا که وه میانه قد سرخ رنگ هس گویا ابھی حام سے نکار ھیں اور میں

حدثنا مجد بن کثیر حدثنا بیان کی هم سے اسرائیل نے هم سے عثان بن مغرہ نے محاهد سے اس نے عمر سے کہا اس

النبى صلى الله عليه وسلم رايت عيسلي و موسلي و ابراهيم فاما عيسلى فاحمرجعد عريض الصدر واسا سوسلي فادم جسیم سبط کانه من يرحال الزط _

(صحیح مخاری صفحه ه ۸م)

نے فرمایا رسول خدا نے دیکھا س نے عیسنی ۔ موسلی اور ابراهيم كو - عيسلي عليه السلام تو سرخ رنگ گھونگریالے بالوں والے اور چوڑے سینہ والے تھے اور موسیٰ علیه السلام بدن کے فربه اور سر کے بال چھوٹے هوئے تھر۔ گویا کہ وہ قوم زط س سے ھس۔

حدیث بیان کی هم سے عبدان نے کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے عبد اللہ نے کہا اس نے خبر دی هم کو یونس نے اور حدیث بیان کی هم سے احمد بن صالح نے کہا اُس نے حدیث بیان کی هم سے عنبسه نے کہا اس نے حدیث بیان کی ھم سے یونس نے ابن شہاب سے کہا ابن مسیب نے کہا ابوھریرہ نے كه حسررات رسول الله بيت المقدس گئر ـ دو پياله دوده اور شراب کے پیش کیر گئر رسول اللہ نے آن کی طرف دیکھا اور دودھ کو لیا جریل نے کہا خدا کی تعریف ہے جس نے آپ کو فطرۃ یر هدایت کی ۔ اگر شراب لیتر تو آپ کی آمت گمراه هو جاتی ـ

حدد ثنا عبدان قال حد ثنا عبد الله قال اخبرنا يونس وحدثنا احتمد بن صالح قال حدثنا عنبسة قال حدثنا يونس عن ابن شهاب قال ابن المسيب قال ابو هريره اتى رسول الله صلى الله عمليه وسلم ليلة آسري به يلياء بقد حيين من خمر ولبن فنظر اليهما فاخذ اللبن قال حبريل الحمدتة الذي هداک لافطرة لواخذت غوت آستک ـ (صحیح بخاری صفحه ۱۸۸۳)

حید ثنا احتمد بن صالح قال حدثنا ابن وهب قال اخبرني يونس عن ابن شهاب قال ابو سلمة سمعت جابر بن عبدالله قال سمعت النبى صلى الله عليه وسلم يقول لماكذ بنى قريش قمت في الحجر فحل الله لي بيت المقدس فطفقت اخبر هم عن آياية و إنا انظر اليه ـ

(صحیح بخاری مطبوعه دهلی ۱۲۹ هجری صفحه ۱۲۸)

حدثنا يدحني بن بكير قال حدثنا الليث عن عقيل عن ابن شهاب حدثننی ابو سلمة بن عبد الرحيمان سمعت جابر بن عبدالله انه سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول لما كنذ بني قريش قمت في الحجر فجل الله لى يدت المقدس فيطيفيقت

حدیث بیان کی هم سے احمد بن صالح نے کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے ابن وهب نے کہا اُس نے خبر دی محھ کو یونس نے ابن شہاب سے کہا ابو سلمہ نے سنا میں نے حابر بن عبد الله سے کہا اس نے سنا میں نے رسول اللہ سے که فرماتے تھر جب محھ کو قریش نے جھٹلایا۔ سی حجر سی كهرا هوا اور خدا نے بیت المقدس کو میری نظر کے سامنر کر دیا۔ میں اس کی نشانیاں آن کو بتاتا تھا اور آس کی طرف دیکھتا تها ـ

حدیث بیان کی هم سے محیلی بن کبیر نے کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے لیث نے عقیل سے اس نے ابن شہاب سے کہا آس نے حدیث بیان کی محھ سے ابوسلمه بن عبد الرحان نے کہا اس نے سنا میں نے جابر بن عبد الله سے سنا اس نے رسول الله صلى الله عليه وسلم سے كه فرماتے تھر جب محھ کو قریش نے جهٹلایا میں حجر میں کھڑا ھوا۔ خدا نے بیت المقدس کو سری

اخبر هم عن آياته وانا انظر اليه ـ

(صحیح بخاری صفحه ۵۳۸)

و قال عسدان اخب عسد الله قال اخبرنا يونس عن الزهري قال انس بن مالک كان ابيوذر يحدث ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فرج سقفى وانا بمكة فنزل جبريل ففرج صدرى ثم غسله بماء زم زم ثم حاء بطست من ذهب ممتللي حكمة و ايمانا فرغها في صدري ثم اطبقه ثم اخذبیدی فعرج بی الى السماء الدنيا فقال جريل لخازن السماء الدنيا افتح قال من هذاقال جـبريـل ـ

(صحیح بخاری صفحه ۲۲۱) ـ

حدیث بیان کی هم سے اساعیل نے کہا اس نے حدیث بیان حدثنا اسمعیل حدثنی کی مجھ سے سیرے بھائی نے

نظروں میں جلوہ گر کر دیا۔ س اس کی نشانیاں ان کہ بتاتا تها اور آس کو دیکهتا حاتا تها ـ

کہا عبدان نے خبر دی ہم کو عبداللہ نے کہا اس نے خبر دی هم کو یونس نے زهری سے کہا انس بن مالک نے کہ ابوذر حدیث بیان كرتے تهركه رسول الله صلى الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ میرمے گهر کی چهت شق هوئی اور سی آس وقت سکه میں تھا۔ پھر جبریل نازل هوا اور آس نے مرے سینہ کو چاک کیا پھر آب زمزم سے اس کو دھویا يهر سونے لگن حکمت و ایمان سے بھرا ھوا لایا اور آس کو میرے سینہ میں ڈال کر سینہ کو برابرکر دیا۔ پھر سرا ھاتھ پکڑا اور آسان اول پر چڑھا لر گیا۔ جریل نے آسان کے معافظ سے کہا کھول کہا کون ھے کہا جبریل ۔

اخبی عن سلیان عن شریک بن عبدالله بن ابي تمر قال سمعت انس بن سالک محدثنا عن ليلة آسرى بالنبي صلى الله عليه وسلم من مسجد الكعبة جاءه ثلاثة نفر قبل ان يوحى اليه وهو نائم في المسجد الحرام فقال اولهم ايهم هو فقال اوسطهم هو خبرهم فكانت تلك فلم يرهم حتى جاؤا و قال آخرهم خذوا خبرهم ليلة أخرى فيا يرى قلبه والنبي صلى الله عليه وسلم ناممة عيناه ولا ينام قلبه و كذلك الانبياء تنام اعينهم ولا تنام قلوبهم فتولاه جمريل ثم عرج به الى الساء ـ (صحیح بخاری صفحه ۲۰۰۸) آں حضرت کے پاس ایسی حالت میں آئے کہ آپ کا دل دیکھتا تھا اور حضرت کی آنکھیں سوتی اور دل جاگتا تھا ۔ اسی طرح پیغمبروں کی آنکھیں سوتی اور دل جاگتا ہے۔ پھر جبریل نے آن کا کام اپنے ذمہ لیا ۔ پھر آن کو آسان پر چڑھا لرگیا ۔

سلیان سے اس نے شریک بن عبد الله بن ابو نمر سے کہا اس نے سنا میں نے انس بن مالک بیان کرتے تھر ھم سے اس رات کا جب که رسول الله صلی الله علیہ وسلم کو مسجد کعبہ سے سعراج ہوئی ۔ کہ وحی آنے سے ملر تین شخص آل حضرت کے . پاس آئے اور وہ مسجد حرام میں سوتے تھر۔ ان میں سے پہلر نے کہا کہ وہ ان میں سے کون ہے۔ درمیانی شخص نے کہا کہ وہ ان سب میں سے متر ہے۔ اخبر شخص نے کہا کہ ان میں سے بہتر کو لے چلو پهر وه رات تو گذر گئی اور آن کو کسی نے نہیں دیکھا یہاں تک که وه ایک اور شب کو

(٢) احادیث مسلم

حدیث بیان کی ہم سے شیبان بن فروخ نے کہا اس نے حدیث حدثنا شیبان بن فروخ بیان کی هم کے حاد بن سلمه نے

کہا اس نے حدیث بیان کی ھم سے ثابت بنانی نے انس بن مالک سے که رسول الله صلى الله علیه وسلم نے فرمایا که براق لایا گیا اور ایک سفید رنگ کا جانور تھا گدھے سے بڑا خجر سے چهوٹا اپنی نظر کی انتہا پر قدم رکھتا تھا۔ میں اس پر سوار هو كدر بيت المقدس منجا اور براق کو حلقه سے باندھ دیا جس سے اور نبی باندھتے تھے۔ پهر مسجد سی داخل هوا اور دو رکعت نماز پیرهی پهر مسجد سے نکلا ۔ جریل ایک پیالہ شراب کا اور ایک دوده کا لایا۔ میں نے دودھ کو پسند کیا۔ جبریل علیه السلام نے کہا که آپ نے فطرت کو پسند کیا۔ پهر مجه کو آسان پر لرگيا جريل نے آسان کا دروازہ کھلوانا چاھا کہا گیاکون ہے۔ کہا جریل۔ پوچها تر مساته كون هے - كها مد صلى الله عليه وسلم هي _ پوچھا کیا طلب کیر کئے ھیں ۔ کہا ھاں طلب کیر گئر ھیں۔

قال حدثنا حادبن سلمة قال حدثنا ثابت البناني عن انس بن مالک ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اتيت بالراق و هو دابة ابيض طويل فوق الحارو دون البغل يضع حافرة عند سنتهاى طرفه قال فركبته حتى اتيت بيتالمقدس قال فريطته بالحلقة اللتي يربطه بها الا نبياء قال ثم دخلت المسجد فصليت فيه ركعتين ثم خرجت فجاء ني جريل باناء من خمر واناء من لن فاخترت اللن فقال جبريل عليه السلام اخترت الفطرة ثم عرج بنا الى الساء فاستفتح جمريل فقيل من انت قال جريل قيل و من معك قال محد قيل وقد بعث اليه قال قد بعث اليه ففتح لنا فاذا انا بادم صلى الله عليه وسلم فرحب بي و دعابي مخير ثم عرج بنا

پھر ھارے لیے دروازہ کھلگیا۔ ناگاہ محھ کو آدم نظر پڑے۔ آدم نے محھ کو مرحبا کہہ کر میرے لیے نیک دعا کی پھر جبریل هم کو دوسرے آسان یو لے گیا اور دروازہ کھلوانا چاھا يوچهاگياكون هے ـ كما حريلـ پوچھا تر مے ساتھ کون ھے۔ کہا مد صلى الله عليه وسلم هي _ پوچها کیا طلب کیر گئر هیں ۔ کہا هاں طلب کیر گئے هیں۔ پهر دروازه کهل گیا ناگه محه کو خاله زاد بهائي عيسلي بن مريم اور یحیلی بن ذکریا نظر آئے دونوں نے مرحبا کہدکر سرمے لیر نیک دعا کی پھر جریل هم کو تیسرے آسان پر لر گیا اور دروازه كهلوانا جاها بوجها کون ہے۔ کہا جبریل ۔ پوچھا ترمے ساتھ کون ھے۔کہا محد صلى الله عليه وسلم هين ـ پوچها کیا طلب کیے گئے میں کہا ماں طلب کیے گئے میں ۔ پھر دروازہ کھل گیا اور س نے يوسف عليه السلام كو ديكها اور

الى الساء الشانية فاستفتح جبريل عليه السلام فقيل من انت قال جريل قيل و من سعك قال محد قيل وقد بعث اليه قال قد بعث اليه ففتح لنا فاذا انا بني الخالة عيسلي بن مريم و يحيلي بن ذكريا صلى الله عليه وسلم فرحبا ي ودعوالي بخبر ثم عرج بنا الى الساء الشالشة فاستفتح جبريل فقيل من انت قال جريل قيل و من معك قال مجد قيل وقد بعث اليه قال قد بعث اليه ففتح لنا فاذا انا بيوسف صلى الله عليه وسلم و اذا هو قد اعطى شطر الحسن قال فرحب بي و دعا لي بخبر ثم عرج بنا الى الساء الرابعة فاستفتح جبريل عليه السلام قيل من هذا قال جبريل قيل و من سعك قال جد قيل وقد بعث اليه قال قد اليه مستح لنا فاذا انا بادریس صلی الله

آن کو حسن کا ایک حصہ عطا هوا تها _ يوسف عليه السلام نے مرحبا کہہ کر میرے لیے نیک دعا کی۔ پھر جبریل ھم کو چوتهر آسان پر لرگیا اور دروازه كهلوانا جاها پوچها گيا كون ھے۔ کہا حریل ۔ یوجھا تعرمے ساتھ کون ھے ۔ کہا مجد صلی اللہ عليه وسلم هيں ـ پوچها كيا بلائےگئر هيں ۔ كنها هان بلائے گئر هیں ـ دروازه کهل گیا اور میں نے ادریس علیه السلام کو دیکھا۔ ادریس نے بھی مرحبا کہہ کر میرے لیے نیک دعاکی ـ خدا نے فرسایا ہے کہ ھم نے آس کو آونچی جگه آٹھا لیا ۔ پھر جبريل هم كو پانچوين آسان پر لر گیا اور دروازه کهلوانا چاها پوچھا گيا کون ھے کہا جبريل پوچھا تر بے ساتھ کون ھے کہا مجد صلى الله عليه وسلم هين پوچها کیا بلائے گئر میں کہا ماں بلائے گئر میں پھر دروازہ کھل گیا ۔ اور میں نے ھارون کو دیکھا ھارون نے بھی میرے لیے

عليه وسلم فرحب بي و دعا لي مخمر قال الله عزوها و رفعناه سكانا عليا ثم عرج بنا الى الساء الخامسة فاستفتح حمريل فقيل من هذا قال حبريل قيل و سن سعك قال مجد قبيل و قبد بنعيث اليه قال قد بعث اليه ففتح لنا فاذا انا بهارون صلى الله عليه وسلم فرحب بي و دعـالي الـخـير ثم عرج بنا الى السماء السادسة فاستفتح جبريل قيل من هـذا قـال حريل قـيـل و مـن معک قال محد قیل و قد بعث اليه قال قد بعث اليه ففتح لنا فاذا انا بموسلي صلى الله عليه وسلم فرحب بي و دعالي بخير ثم عرج بنا الى الساء السابعة فاستفتح جريل قيل سن هذا قال جمريل قيل ومن سعك قال مجد قيل وقد بعث اليه قال قد بعث اليه ففتح لنا فاذا انا بابراهم صلىالله عليه وسلم مسند اظهره الى

مرحیا کہد کر نیک دعاکی پھر لر گیا اور دروازه کهلوانا چاها۔ یوچهاگیا کون هے ۔ کہا حبریل۔ یوچھا تعرے ساتھ کون ھے۔ کہا مد صلى الله عليه وسلم همى ـ پوچھا کیا بلائے گئے ہیں۔ کہا ھاں بلائے گئر ھیں۔ دروازه کهل گیا اور می نے موسلی علیه السلام کو دیکھا موسیٰ نے بھی مرحبا کہہ کر میرے لیے نیک دعاکی پهر جبريل هم كو ساتويي آسان پر لر گیا اور دروازه کهلوانا چاھا۔ پوچھاگیا کون ھے۔ کہا جبریل ـ پوچها ترے ساتھ کون هے۔ کہا مجد صلی اللہ علیه وسلم هیں۔ پوچها کیا بلائے گئر هیں ۔ کہا هاں بلائے گئر هیں ۔ دروازہ کھل گیا اور سی نے ابراهم عليه السلام كو ديكها بیت المعمور کی طرف پشت کا سهارا لير بيڻهر هين اور بیت المعور می هر روز ستر هزار فرشتر داخل هوتے هیں اور پهر

البيت المعمور واذا هويد خله کل یوم سبعون الف جریل هم کو چهٹر آسان پر ملك لا يعودون اليه ثم ذهب بي الى السدرة المنتهلي فاذا ورقها كاذان الفيلة و اذا ثمرها كالقلال قال فلا غشيه ا من امر الله سا غشي تغمرت فيا احد سن خلق الله يستطيع ان ينعتها من حسنها فاوحى الى ما اوحى ففرض على خمسين صلوة في كل يوم و ليلة فنزلت ما فرض ـ ربك على استك قلت خمسن صلوة قال ارجع الني ربك فاساله التخفيف فان استک لا يطيقون ذلک فانى قد بلوت بنى اسرائيل او خبرتهم قال فرجعت الى ربی فقلت یا رب خفف علی آستى فحط عنى خمسا فرجعت اللي موسلي فقلت حطعني خمسا قال ان امتك لا يطيقون ذلكت فارجع الى ربك فسله المتخفيف قال فلم ازل

ارجم بدین ربی تسمارک و تعالی و بين موسلي عليه السلام حتى قال يا محد انهن خمس صلوة كل يوم و ليلة لكل صلوة عشر فللك خمسون صلوة و منهم محسنة فلم يعملها كتمت حسنة فان عدملها كتبت له عشراو منهم بسيئة فلم يعملها لم تكتب شيئا فان عملها كتبت سيئة و احدة قال فنزلت حتى انتهيت الى موسلي عليه السلام فاخبرته فقال ارجع الى ربك فسله التخفيف فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت قد رجعت الى ربى حتى استحييت مـنه ـ

صفحه به)

پاس پھر جائیر اور کمی کی (صحيح مسلم جلد اول درخواست کیجر آپ کی است سی اس فرض کے ادا کرنے کی طاقت نہیں ہے میں بنی اسرائیل کو خوب آزما چکا ھوں میں دوبارہ خدا کے پاس گیا اور کہا اے خدا میری آست کے لیر تخفیف کر ۔ خدا نے پانچ نمازیں کم کر دیں پھر سی موسٰی علیہ السلام کے پاس آیا اور اُن سے کہا کہ خدا نے پانچ کم کر دیں ۔ کہا آپ کی اُست اس کی بھی طاقت نہیں رکھتی خدا

دوبارہ نہیں آتے پھر جریل محھ کو سدرةالمنتهای کی طرف لر گیا اس کے پتر ھاتھی کے کانوں کے برابر اور یہل مٹکوں کے ہرابر تھر۔ جب حکم الہی سے اس پر جو جهانا تها جها کیا تو اس کی حالت بدل کئی پھرکسی انسان کی طاقت نہیں ہے کہ اس کے حسن کی تعریف کر سکر پھر خدا نے مجھ پر جو وحی بهیجنی تهی بهیجی اور محه پر بچاس نمازیں هر روز فرض کی پھر میں نیچر آتر کر موسلی علیه السلام کے پاس آیا موسلی علیه السلام نے کہا خدا نے آپ کی آست پر کیا فرض کیا ـ میں نے کہا بچاس نمازیں ۔ سوسنی علیه السلام نے کہا خدا کے

کے پاس پھر جائیے اور کمی کی درخواست کیجیے ۔ رسول اللہ فرماتے ھی کہ میں بار بار خدا اور موسلی علیہ السلام کے درمیان آتا جاتا تھا ہاں تک کہ خدا نے فرمایا اے محد صلی اللہ علیه وسلم رات دن میں پایخ تمازیں ھیں اور ھر تماز پر دس کا ثواب ۔ اس طرح پر مجاس تمازیں ہوئیں اور جو شخص نیکی کا ارادہ کرے اور اس کو عمل میں نه لائے میں اس کی ایک نیکی لکھوں گا اور جو عمل میں لائے اس کی دس نیکیاں لکھوں گا اور جو بدی کا ارادہ کرمے اور اس کو عمل میں نه لائے اس کی بدی نہیں لکھی جائے گی اور اگر عمل میں لائے تو صرف ایک بدی لکھوں گا۔ پھر میں نیجر آتر کر موسی علیه السلام کے پاس آیا اور اُن کو خبر دی ۔ کہا خدا کے پاس پھر جائیے اور اس میں کمی کی درخواست کیجیے ـ رسول الله صلی الله علیه وسلم فرماتے هیں که میں نے کہا که میں خدا کے باس اتنی دفعہ جا چکا هوں که اب مجھے آس سے شرم آتی ھے ۔

حدیث بیان کی هم سے هارون بن سعیدایلی نے ، کہا اُس نے حدیث بیان کی هم سے ابن وهب نے ، کہا آس نے خبر دی عه کو سلیان نے اور وہ بلال کے بیٹے میں کہا اس نے حدیث بیان کی محھ سے شریک بن عبداللہ بن ابو بمر نے کہا اس نے سنا سی نے انس بن سالک سے کہ ذکر کرتے تھر ھم سے اس رات کا حب که رسول خدا کو مسجد حرام سے معراج هوئی -

حدد دادما هارون بن سعید الايلى قال حدثنا ابن وهب قـال اخـمرنی سلـیـان و هـو ابن بلال قال حدثني شريك بن عبدالله بن ابي تمر قال سمعت انس بن سالک محدثنا عن ليلة اسرى برسول الله صلى الله عليه وسلم سن مسجدال كعسة انه حاء ثلاثة نفر قبل ان يوحلي اليه و هو نائم في المسجد الحرام و ساق الحديث بقصة محو حديث ثابت المناني و قدم فیه شیئا و اخر و زاد و نـقـص ـ

(صحیح مسلم جلد اول صفحه ۱۹)

حدثنا حرسلة بن يحيدي التجيدي قال حدثنا ابن وهب قال اخبرني يونس عـن ابـن شـمـاب عـن انـس بن سالک قال کان ابوذر محدث أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فرج سقف بيتي و انا يمكة فنزل جمريل عليه السلام ففرج صدری ثم غسله سن ساءزمزم ثم جاء بطست سن ذهب ممتلئي حكمة وانمانا فافرغمها في صدري ثم اطبقه ثم اخد بیدی فعرج ہے الی الساء فلا حئنا الساء الدنيا قال جبريل لخازن الساء الدنيا افتح قال من

که آن حضرت کے پاس وحی آنے سے ملر تین شخص آئے اور آل حضرت مسجد حرام میں سوتے تھر ۔ راوی نے ثابت بنانی کی حدیث کی مانند تمام قصه کو بیان كيا اور اس مى كچه تقديموتاخىر کی ۔ کچھ کمی اور زیادتی ۔

حدیث بیان کی هم سے حرملہ بن یحیلی تجیبی نے کہا اُس نے حدیث بیان کی هم سے این وهب نے کہا اس نے خبر دی مجھ کو یونس نے ابن شہا**ب** سے آس نے انس بن مالک سے کہا آس نے کہا ابوذر بیان کرتے تهر که رسول الله صلی الله علیه وسلم نے فرمایا کہ سڑے گھر کی چھت شق ھوئی اور می آس وقت مکه میں تھا ۔ پھر جریل نازل هوا اور آس نے سرے سینه کو چیرا اور اُس کو آب زمزم سے دھویا پھر سونے کا لگن لایا جو حکمت و انمان سے بھرا ھوا تھا پھر اُس کو میرے سینه سی اونڈیل دیا اور پھر مرمے سینہ کو برابر کر دیا۔ پھر میرا ھاتھ پکڑ کر آسان پر

لر گیا جب هم مهلر آسان پر بہنچر جبریل نے محافظ سے کہا کھول ۔ یوچھا کون ہے کہا جبريل ـ پوچها تبرےساتھ كوئى ھے کہا ھاں میرے ساتھ مجد صلی الله علیه وسلم هیں۔ پوچها بلائے گئر ھیں کہا ھاں پھر دروازه کهل گيا جب هم آسان اول پر گئر تو هم نے دیکھا که ایک شخص کی دائس اور بائس طرف کچھ دھےندلی سی صورتی هیں دائیں طرف دیکھ کر هنستا هے اور بائی طرف دیکھ كر روتا هي أس نے كہا اے نبي صالح اور فرزند صالح ـ سين نے جریل سے پوجھا یہ کون ھے کہا یہ آدم هیں اور صورتیں جو آن کے دائیں اور بائس طرف هیں آن کی اولاد کی روحی هیں اور دائس طرف والى جنتي اور بائس طرف والى دوزخى هس ـ اس لیر دائس طرف دیکھ کر هنستر اور بائی طرف دیکه کر روتے هيں ۔ پهر جبريل محه كو دوسرے آسان پر لرگیا اور محافظ

هذا قال هذا جبريل قال هل سعبك احدد قال نعم معدى مجد قال فارسل اليه قال نعم ففتح قال فلما علونا الساء الدنيا فاذا رجل عن يمينه اسودة وعن يساره اسودة قال فاذا نظر قيل عينه ضحک و اذا نظر قبل شاله بكي قال فقال مرحبا بالنبي الصالح و الابن الصالح قال قلت يا جمريل سن هذا قال هذا آدم صلى الله عليه وسلم و هذه الا سودة عن عينه عن شاله نسم بينه فاهدل اليمن اهمل الجنة والاسودة اللتي عند شاله اهل النار فاذا نظر قبال عينه ضحك و اذا نظر قبل شاله بكي قال ثم عرج بي جبريال حتى اتى السماء الشانية فتال لحازنها افتح قال فقال له خازنها مشل ساقال خازن الساء الدنيا ففتح فقال انس بن سالک فذکرانه

سے کہا کھول اس محافظ نے بھی وہی کہا جو آسان اول کے محافظ نے کہا تھا پھر دروازہ کھل گیا ۔ انس بن مالک کہتے هیں که ابوذر نے یه تو بیان کیا کہ رسول خدا نے آسانوں میں آدم ـ ادریس ـ عیسنی ـ موسنی اور ابراهيم عليه السلام كوديكها مگر ان کے مقامات کی تعین نہیں گی۔ سوائے اس کے کہ آدم کو پہلے آسان پر اور ابراھیم چہٹے آ۔ اُن پر بایا ۔ راوی کہتا ھے کہ جب رسول خدا اور جبریل ادریس کے پاس پہنچے ـ ادریس نے کہا مرحبا اے نبی صالح اور برادر صالح ۔ میں نے پوچھا یہ کون ہےکہا یہ ادریس ہیں پھر میں موسٰی کے پاس پہنچا ۔ موسنی نے کہا مرحبا اے نبی صالح اور برادر صالح ۔ .یں نے پوچھا یہ کون ہے کہا یہ ،وسلی ہیں ـ پھر میں عیسنی علیہ السلام کے پاس پهنچا عيسني عليه السلام نے کہا مرحبا اے نبی صالح اور برادر صالح میں نے پوچھا ید کون

و جد في السموات آدم و ادريس وعيسلي و موسلي و ابرا هيم عليهمم السلام و لـم يـشبـت كـيـف سنــازلهم غير انه دكر انه قد وجد آدم عليه السلام في الساء الدنيا و ابراهيم في السهاء السادسته قال فلمامي جبريل و رسول الله صلى الله عمليه وسلم بادريس قال م حبا بالنبي الصاليح والاخ الصالح فقلت من هذا قال هذا ادريس قال ثم مرزت بموسني عليه السلام فقال مرحبا بالنبي الصالح والاخ الصالح قلت من هذا قال هذا موسلي قال ثم مررت بعديدسلى فقال مرحما بالني الصالح والاخ الصالح قلت من هذا قال هذا عيسني بن مريم قال ثم مررت بابراهم عليه السلام فقال مرحبا بالنبى الصالح والاخ الصالح قلت من هذا قال هـذا ابراهـم - قال ابن شهاب

ھے کہا یہ مربم کے بیٹر عیسی ھیں۔ پھر میں ابراھیم کے پاس ہنچا ابراھیم علیہ السلام نے کہا مرحبا اے نبی صالح اور فرزند صالح سیں نے پوچھا یہ کون ہے كما يه ابراهم عليه السلام هي کہ ا ابن شہاب نے اور خبر دی محھ کو ابن حزم نے کہ ابن عماس اور ابو حبته الانصاري كهتر تهر که رسول الله نے فرسابا که پهر جريل محه كو ايسى جگه لر گیا جہاں میں قلمدوں کے چلنے کی آواز سنتا تھا کے ابن حزم اور انس بن مالک نے که رسول الله نے فرمایا کہ خدا ۔ میری است پر بچاس نمازیں فرض کس ـ پهر مس الٹا پهرا اور موسلی کے پاس آیا ۔ موسنی نے پوچھا کہ خدا نے آپ کی است پر کیا فرض کیا سی نے کہا آن پر بچاس نمازیں فرض کی هیں موسیٰ نے محھ سے کہا پھر خدا سے کہیر کیوں کہ آپ کی آست ہرگز اس کا تحمل نہی*ں کر سکر* گی س نے پھر کہا خدا نے ایک

و اخبرنی ابن حنزم ان ابن عياس واباحية الانصاري يقولان قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم عرج بي حتى ظهررت للمستوى اسمع فيه صريف الاقلام ـ قال ابن حزم و انس بن سالک قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ففرض الله على استي خمسين صلوة قال فرجعت بذلک حتلی مریموسلی عليه السلام فقال موسني ماذا فرض ربك على استك قلت فرض علمهم خمسن صلوة قال لي سوسلي فراجع ربك فان استك لا تطيق ذالک قال فراجعت ربی فوضع شطرها قال فراجعت الى موسنى عليه السلام فاخررته قال راجع ربكب فان استك لا تطيق ذلك قال فراجعت ربي فقال هي خمس و هي خمسون لا يبدل القول لدى قال فرجعت الى موسلى فقال راجع ربك

فقلت قد استحییت من ربی قال ثم انظلق بی جریل حتى ناتى سدرة المنتهلي فغسها الوان لا ادرى سا هي قال ثم دخلت الجنة فاذا فها جنابذ اللؤلؤ واذا ترامها المسكب

صفحه ۱۹

پاس آیا کہا خدا سے پھر کہتر میں نے کہا محھ کو خدا سے شرم آتی ہے پھر جبریل مجھ کو ار چلا تاکه سدرة المنتہلی کے پاس جائس ۔ سدرہ پر کچھ رنگ چھائے ھوئے تھر جن کی حقیقت میں نہیں جانتا ۔ پھر میں جنت میں گیا اس میں موتی کے قبر تھر اور اس کی مٹی مشک تھی ۔

> حد ثنا محد بن المشنثي قال حدثنا مجد بن ابی عدی عن سعید عن قتاده عن انس بن سالک لعله قال عن سالک بن صعصعه رجل من قوسه قال قال نبي الله صلى الله عليه و سلم بينا انا عند البيت بين النائم واليقظان اذ سمعت قائل يقول احد

حصه اس میں سے معاف کر دیا۔ پھر میں موسنی کے پاس آیا اور آن کو خبر دی کہا خدا سے پھر کہیر آپ کی آست اس کی بھی طاقت نہیں رکھتی ۔ سیں نے یھر کہا ۔ خدا نے فرمایا که پایج نمازیں فرض هیں اور می (صحیح مسلم جلد اول مجاس کے برابر هیں میرا قول نہی بدلتا ۔ سی پھر موسلی کے

حدیث بیان کی هم سے مجد بن سنٹی نے کہا اُس نے حدیث بیان کی هم سے مجد بن ابوعدی نے سعید سے آس نے قتادہ سے آس نے انس بن مالک سے شاید راوی نے کہا اس نے مالک بن صعصعه سے جو اسی کی قوم کا ایک شخص ہے کہا آس نے كه رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمایا کہ میں کعبہ کے قریب کچھ سوتا کچھ جاگتا تھا کہ میں نے مناکوئی کہتا ہے

تین میں سے ایک جو دو کے درمیان ھے پھر میر سے یاس آبا اور محھر لر جلا پھر سونے کا لگن جس سی آب زم زم بهرا تها لایا گیا اور سرا سینه ہاں سے یماں تک کھولا گیا۔ قتادہ کہتے میں کہ میں نے اپنے ساتھی سے پوچھا اس سے کیا مراد ہے کہا شکم کے زیرین حصه تک یهر معرا دل نکال کر آب زم زم سے دھویا کیا اور اسی جگه رکه دیا گیا یهر ایمان اور حکمت سے بھر دیا گیا پھر ایک سفید رنگ کا حانور لایا گیا جس کو براق کہتر میں کدھے سے بڑا خچر سے چھوٹا انتہائے نظر تک قدم مارتا تھا۔ میں اس پر سوار کیا گیا پھر ھم چلے اور آسانی دنیا پر پہنچر جریل نے دروازہ کھلوانا چاھا اس سے یوچھا گیا کہ کون ھے کہا جبریل پوچھا تبرے ساتھ کون ہے کہا مجد صلی اللہ علیہ وسلم هیں یوچها کیا بلائے گئر هیں ۔ کہا هاں پهر هارے

الشلاثة بين الرحلين فاتيت فانطلق بي فاتبيت ياطست من ذهاب فالملها من ماء زم زم فشرح صدری الی كدا و كدا قال قتاده فه لت للذي سعبي سا يعني قال الى المفال بطائله فاستخرج قلمي فغدل بماء زمزم نہ اعید سکانا تہ حشی ايمانا و حكمه ثم اتيت بدایه ابیفس یقال له البراق فوق الحمارودون البغل يقع خطوه عند اقصى طرفه فحملت عليه أم انطلقنا حتى اتينا السهاء الدنيا فاستفتح جبريل عليه السلام فقيل سن هـذا قال جبريـل قيل و من سعك قال عد صلى الله عليه وسلم قيل وقد بعث اليده قال نعدم قال ففتح لنا وقال سرحبا ولنعم المحجئي جاء قال واتسنا علني آدم عليه السلام و ساق الحديث بنصه و

لبر دروازه کهل گما اور کمها مرحبا كيا خوب آنا هوا ـ يهر هم آدم علیه السلام کے یاس ہنجر بھر راوی نے تمام قصه بیان کیا اور یه ذکر کیا که دوسرے آسان پر عیسنی اور بحبى عليهم السلام سر اور تیسرے آسان بر یوسف علیه السلام سے اور پانجویں پر ھارون عليه السلام سے ملر يهر فرمايا کہ ہم چلے اور چھٹے پر پہنچے ـ پهر سي سوسلي عليه السلام سے ملا اور آن کو سلام کیا کہا مرحبا اے برادر صالح اور نبي صالح جب سين آگے اِڑھا تو موسلی علیه السلام روئے آواز آئي که کيوں روتے هو ؟ كمها اے خدا! يه لؤكا حس كو تو نے میرے بعد نبوت دی ہے ۔ اس کی آست کے لو ک مری آمت والوں سے زیادہ جنت سی جائیں گے۔ بھر ھم جلر اور ساتویں آسان پر سنجر اور میں ابراهیم علیه السلام سے ملا ۔ بھر راوی نے حدیث

ذكر انه لقم في السماء الشانية عيسني ويحيني عليما السلام و في الشالشة يورف عليه السلام و في الرابعة ادريس عليه السلام و في الخامسة هارون عليه السلام قال ثم انطلقنا حتى انتهاالى السماء السادسة فاتيت على موسلي صلى الله عمليمه وسلم فسلمت عليه فقال سرحما بالاخ الصالح والنبي الصالح فلما جاوزته بكي فنودى سايبكيك قال رب هذا غلام بعشته بعدى يدخل من استه الجنة اكشر سما يدخل سن استى قال ئم انطلقنا حتى انتهينا الى السماء السابعة فاتيت على ابراهيم عليه السلام و قال في الحديث وحدث انه رای اربعة الهار يخرج من اصلها نهران ظاهران و نهران باطنان فقلت يا

حدريل ساهده الانهار قال اما النهران الباطنان فنهران في الجنة واسا الظاهران فالنيل والفرات ثم رفع لى البيت الم عمور فقلت یا جبریل سا هذا قال ه.ذا الـيت المعمور يدخله كل يهوم سبعمون الف ملك اذاخرجواسنه لم يعود والبيه آخر ساعليهم ثم اثیت یانائین احد هما خرو الاخرلبين فعرضا على فاختر اللين فقيل اصبت اصاب الله بك استك على الفطرة ثم فرضت على كل يدوم خمسون صلدواة ثم ذكر قصتها الى آخر الحدديث ـ

(صحیح مسلم جلد اول صفحه مرم) _

آست کو بھی ہمی نصیب کرے ۔ پھر مجھ پر ھر روز پچاس کمازیں فرض ھوئیں ۔ پھر راوی نے تمام قصہ آخر حدیث تک بیان کیا ۔ حدیث حدیث بیان کی ھم سے مجد بن مثنلی نے کہا آس نے حدیث

حدث المشنلی بیان کی هم سے معاد بن هشام مال حدث بیان کی هم اسے معاد بن هشام نے کہا اُس نے حدیث بیان کی

میں بیان کیا ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ذکر کیا که چار نهریی دیکهی حو اس کی جڑ سے نکاتی ہیں دو نہریں ظاھر اور دو پوشیدہ میں نے جریل سے پوچھا کہ یہ کیا نهرین هی - کها پوشیده نهرین تو حنت می حاتی هی اور دو ظاهر نيل اور فرات هيں ـ پهر بیت المعمور محه سے نزدیک هوا میں نے پوچھا کہ اے جریل یه کیا هے ۔ کہا یه بیت المعمور ھے جس میں ہر روز ستر ھزار فرشتر آتے هيں اور جب جاتے هس تو دوباره کبهی نهس آتے پهر دو پياله پيش کير گئر ایک شراب کا اور ایک دوده کا ۔ میں نے دودھ کو یسند کیا محھ سے کہا گیا کہ آپ نے فطرة كو حاصل كيا خدا آب كي

قال حدثنی ابی عن قتاده قال حدثنا انس بن سالک عن مالک بن صعصعه ان قال فذكر نحوه و زاد فيه فاتیت بطست سن ذهب ممتلئ حكمة و ايمانا فشق سن النحر الى مراق البطن فغسل بماء زم زم ثم ملئي حكمة و ايمانا ـ (صحيح مسلم جند اول صفحه م و)

محھ سے ممر سے باپ نے قتادہ سے کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے انس بن مالک بن صعصعه سے که رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرمایا پھر راوی نے آسی کی مانند بیان کیا اور زیاده کیا اس میں یہ بیان کہ سونے کا لگن حکمت و ایمان سے بھرا هوا لایا گیا۔ پھر گلر سے پیٹ کی نرم حگه تک چیرا گیا پهر آب زم زم سے دھویا گیا پھر ایک حکمت و ایمان سے بھر دیا کیا ۔

حدیث کی مجھ سے محد بن مثنثی اور ابن بشار نے کہا ابن مثنثی نے حدیث بیان کی ھم سے مجد بن حعفر نے کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے شعبہ نے قتادہ سے کہا اس نے سنا میں نے ابو العاليه سے كہتر هيں وه کہ حدیث بیان کی محم سے تمهارے نبی صلی اللہ علیه وسلم کے چچا کے بیٹر یعنی ابن عباس نے کہا آنھوں نے ذکر کیا رسولاته نےوقت معراج کا اور کہا که سوسلی علیدالسلام لمبر قد کے

حدثني مجد بن الشمنلي و ابن بـشـار قـال ابن الـمثنلي حدثنا محد بن جعفر قال حدثنا شعبة عن قتاده قال سمعت ابالعالية يقول حدثنی ابن عم نبیئکم صلى الله عليه وسلم يعني ابن عباس قال ذكر رسول الله صلى الله عليه وسلم حين آسرے بلہ فیقال میوسینی آدم طوال كانه سن رجال شنوة

و قـال عـيـسـني جـعـد مربـوع و ذكر سالكا خازن جهنم و ذكر الدحال ـ

(صحید مسلم جلد اول صفحه یم و) تفصیل نہیں ھے)۔

اور سیانہ قد کے هس اور دوزخ کے محافظ مالک اور دحال کا بھی ذکر کیا (مگر واضح ہو کہ دجال کے قصہ کی اس حدیث میں کچھ

حدیث بیان کی هم سے عبد بن حمید نے کہا اس نے حدیث بیان کی ہم سے یونس بن مجد نے کہا آس نے حدیث بیان کی ھم سے شیبان بن عبدالرحان نے قتادہ سے آس نے ابو العالیہ سے کہا آس نے حدیث بیان کی ھم سے تمهارم نبي صلى الله عليه وسلم کے چچا کے بیٹر ابن عباس نے کہا آنھوں نے کہ رسول اللہ نے فرمایا کہ میں معراج کی رات موسٹی بن عمران کے پاس مہنچا وه دراز قامت گهونگريالر بالون والر هي گويا كه وه قبيله شنؤة میں سے ھیں اور میں نے مرح کے بیٹے عیسنی علیه السلام کو میانه بدن مائل بسرخی و سپیدی لمبر بالول والا ديكها اور رسول خدا نے دوزخ کے مالک اور

هم گویا که وه قبیله شنوه می

سے هیں اور کہا کے عیسلی

عليه السلام گهونگريالر بال والر

حدثنا عبد بن حميد قىال حىدثىنا يىونىس بىن مجد قال حدثنا شيبان بن عبدالرجان عن قتاده عن الى العالية قال حداثنا ابن عم نبيئكم صلى الله عليه وسلم ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مررت لیلة اسری بی علی سوسنی بن عمران رجل آدم طوال جعد كانه سن رجال شنوة و رایت عیسلی بن مرم مراوع الخلق الى الحمرة والبياض سبط الراس وارى مالكا خازن النار والدجال في آيات اراهن الله اياه فلا تكن في مريدة من لقائمه قال

كان قتاده يفسرها ان النبي صلى الله عمليم وسلم قد لقي موسلي عليه السلام ـ

(صحيح مسلم جلد اول صفحه مه و)

کہتر تھر کہ رسول اللہ نے موسلی علیہ السلام کو دیکھا۔

حلدثنا محد بان رسح قال حدثنا السيت عن الى النزبر عن جابران رسول الله صل الله عليه وسلم قال عرض على الانبياء فاذا موسلى ضرب سن الرجال كانه سن رجال شنفة وايت عيسلي بن مريم فاذا اقرب من رايت به شبها عاروة بن مسعود و رايت ابراهم فاذا اقرب من رايت به شبها صاحبكم يعنى نفسه ورايت جمريل عليه السلام فاذا اقرب من رايت به شها وحية وفي روايـة ابن رمح وحيـة بن خليفة ـ

(صحيح مسلم جلد اول صفحه ۵۹) ان سیں سے ہیں جن کو سیں نے دیکھا وحیہ کے مشاہم ہیں اور ابن رمح کی روایت میں ہے وحیہ بن خلیفہ ۔

دحال کو بھی دیکھا آن نشانیوں میں حو خدا نے دکھائیں ۔ تم اس کے دیکھنر میں کچھ شک نه لاؤ _ قتاده اس کی تفسیر میں

حدیث بیان کی هم سے محد بن رمح نے کما آس نے حدیث بیان کی ہم سے لیث نے ابو زاہر سے اس نے جاہر سے که رسول الله نے فرمایا کہ انسا سیرے سامنر لائے گئر۔سی نے دیکھا کہ موسنی علیه السلام بدن کے دبلر هم گويا كه وه قبيله شنؤة سي سے ھیں اور سی نے مربم کے بیٹے عیسلی علیہ السلام کو دیکھا کہ وہ ان میں سے جن کو س نے دیکھا عروہ بن مسعود سے مشابه هی اور سی نے ابراهیم عنيه السلام كو ديكها كه وه أن میں سے میں جن کو سی نے دیکھا تمہارے آقا سے ملتر جلتے ھیں اور اس سے خود اپنی ذات مراد لی اور میں نے جبریل عليه السلام كو ديكها كه وه

حدیث بیان کی مجھ سے محد بن رافع اور عبد بن حمید نے اور دونوں کے لفظ قریب قریب هی کہا ابن رافع نے کہ حدیث بیان کی هم سے اور کہا عبد نے حدیث بیان کی هم سے عبدالرزاق نے کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے معمر زهری سے کہا اس نے خبر دی مجھ کو سعید بن مسیب نے ابو ھریرہ سے کہا انھوں نے کہ رسول اللہ صلی الله عليه وسلم نے فرمايا كه مى نے سعراج کی رات سوسلی عليه السلام كو ديكها پهر آنحضرت نے آن کا حلیہ بیان کیا که وه " میں خیال کرتا هوں که آپ نے فرمایا " بدن سے دہلر هیں اور بال چھوٹے ہوئے گویا که وہ قبیله شنؤه مس سے هیں اور فرمایا میں نے عیسنی علیہ السلام كو ديكها پهر آنحضرت نے آن کا حلیہ بیان کیا کہ وہ وه میانه قد سرخ رنگ هیں گویا ابھی حام سے نہا کر نکامے ھیں اور فرمایا که میں نے ابراهیم علیه السلام كو ديكها سى ، أن كا هم

خدد ثني مجد بن رافع و عبد بن حميد وتقاربا في الله ظ قال ابن رافع حدثنا وقال عبد حدثنا عبدالرزاق قال حدثنا معتمر عن الزهري قال اخمرنی سعید بن المسیب عين ابي هريارة قال قال النبي، صلى الله عليه وسلم حين اسرے بی لقیت سوسئی عليه السلام فنعة النبي صلى الله عليه وسلم فاذا ارحل حسبته قال مضطرب رحل الراس كانه من رجال شنبؤه قال ولقيت عيسني فنعمته النبى صلى الله عليه وسلم فاذا ربعة احمركاتما خرج سن ديماس يعنى حاما قال و رايت ابراهم عليه السلام و انا شهه ولده به قال فا تيت بانائين في احد هم لمن وفي الاخر خدمر فقيل لى خدام المدات اللن فـشـربـة فـقال هـديـت الفطرة او اصبت الفطرة اسا انك

الواخدات الدخسمر غوت شكل فرزند هول يهر فرمايا كه مرے آگے دو پیالر پیش کیے امتکیت ۔ (صحیح مسلم جلد صفحه ۹۵) گئے ایک میں دودہ اور ایک میں شراب تھی اور مجھ سے کہا گیا کہ ان میں سے جس کو چاھیے لیجیے میں نے دودہ لے کر پی لیا۔ کہا کہ آپ نطرت پر ہدایت کیے گئے یا آپ نے فطرت کو پسند کیا اگر آپ شراب کو یی لیتر تو آپ کی آمت بہک جاتی (لبن جو ایک قدرتی چیز ہے اس سے مراد لی ہے اور خمر جو مصنوعی چیز ہے دنیا کی اُس سے غوایت مراد لى هے) ـ

حدیث بیان کی هم سے ابوبکر بن شیبه نے ، کہا آس نے حدیث بیان کی هم سے ابو اسامه کی ہم سے مالک بن مغول نے اور حدیث بیان کی هم سے ابن نمر اور زهیر بن حرب دونون نے عبداللہ بن نمیر سے اور آن کے الفاظ ملتر جلتے هیں کہا ابن ممر نے حدیث بیان کی سیرے باپ نے ، کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے مالک بن مغول نے زبیر بن عدی سے اُس نے طلحه بن مصرف سے اُس نے مرہ سے آس نے عبداللہ سے کہا آنھوں نے جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو معراج

حدد ثدنا ابوبكر بن ابسی شیبہ قال حدثہا ابو نے کہا اُس نے حدیث بیان اسامة قال حدثنا مالك بن سغول و حدثنا ابن نمير و زهير بن حرب حمديعا عين عبدالله بن نمير والفاظهم ستقاربة قال ابن نمير حدثنا ابي قال حدثنا سالک بن مغول عين اليزبيير بن عيدي عن طلحه بن مصرف عن سرة عن عبد الله قال لما أسرى برسول الله صلى الله عليه وسلم انتهی به الی سدرة المنتهلي و هي في السماء

السادسة اليها ينتهى سا يعدرج به من الارض فيقبض منها واليها ينتهني سا يهبط به من فوقها فيقمض منها قال اذ يغشى السدرة سا يغشى قال فراش من ذهب قال فاعطى رسول الله صلى الله عمليم وسلم ثملاثما آعطى الصلواة الخمس و اعطى خواتم سورة البقر و غفر لمن لم يشرك بالله من آمة شيئا المقدحمات (صحیح مسلم جلد اول صفحه رو)

حدثنا قتيبه بن سعيد قال حدثنا ليث عن عقيل عن النزهري عن ابي سلمة بن عبد الرحمان عن جابر بن عبدالله ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لما كدذبتني قربش

قدمت في الدحدجر فدجدلي الله

هوئي سدرة المنتهلي تک گئر اور وہ جھٹر آسان سی ھی جو چیز زسن سے آویر حاتی ہے میں تک جا کر رک جاتی ھے اور جو چیز اس کے اوپر سے آتی ہے وہ بھی میں آکر رک حاتی ہے۔ خدا فرساتا هے حب جها حائے سدره بر جو چها جائے ۔ راوی کہتا ہے کہ اس سے مراد سونے کے بروانے میں ۔ بھر کہا که رسول الله کو تین چیزیں عطا هوئس _ يايخ تمازبي اور سورة البقركي اخمر آيتين اور أن کی آست دس سے جس نے خدا

کے ساتھ شرک نہیں کیا اُس کے گناہ کبیرہ معاف کر دیے ۔ حدیت بیان کی هم سے قتیبہ بن سعید نے کہا اُس نے حدیث بیان کی هم سے لیث نے عقیل سے آس نے زھری سے ، آس نے ابوسلمه بن عبد الرحمان سے آس نے جاہر بن عبداللہ سے که رسول الله صلى الله عايد وسلم نے فرمایا که حب مجھ کو قریش نے جھٹلایا میں حجر میں كهرا هوا خدا نے بيت المقدس لی بیت المقدس فطفقت کو میرے سامنر جلوہ گر اخبر هم عن آیاته و انا کر دیا میں اس کی نشانیاں آن انظر اليه ـ

(صحیح مسلم جلد اول دیکهتا جاتا تها ـ صفحه ۹۹)

حدیث بیان کی محھ سے زھیر بن حرب نے کہا آس نے حدیث بیان کی هم سے حجین بن مثنثی حرب قال حدثنا حجین بن نے کہا آس نے حدیث بیان کی هم سے عبد العزیز نے اور وہ ابوسلمہ کے بیٹر ھیں۔ عبد الله بن فضل سے آس نے ابوسلمه بن عبد الرحان سر آس نے ابوھریرہ سے کہا آنھوں نے كه رسول الله صلى الله عليه وسلم نے فرسایا کہ میں نے اینر تئس حجر مس دبكها اور قريش مجھ سے بیت المقدس تک مسر ہے حانے کا حال پوچھتر تھر۔ آنھوں نے بیت المقدس کی ایسے باتس مجھ سے پوچھیں جو مجھ کو یاد نہیں تھیں ۔ سی اس قدر أنهرايا كه كبهى ايسا نهين گهرایا تها _ آل حضرت فرماتے هس که خدا نے بیت المقدس کہ مجھ سے قریب کر دیا سی اس کی طرف دیکھتا تھا اور

کو بتاتا تھا اور آس کی طرف

حددثني زهيد بدن المشنى قيال حدثنا عبد التعزير وهو ابن ابي سلمة عن عبدالله بن الفضل عين أبي سلمة بن عدد الرحمان عن ابني هنزيرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لة درايتني فالحجر وقريش تسالني عن مسراي فسأ ليتني عن اشداء من بيتالمقدس لم اثبتها فكربت كربة ما كربت مشله قط قال و رفعه الله لي انظر اليه ما يسألوني عن شئي الا انبائه م به و قد رایتنی في حماعة من الانبياء فاذا موسني عليه السلام قائم يصلى فاذا رجل ضرب جعد كانيه سن رحيال شنؤة و ا ذا قریش محھ سے جو پوچھتے تھے

میں آن کو بتاتا تھا اور میں نے

انبیاء کی جاعت میں اپنر آپ

کو دیکھا میں نے دیکھا کہ

موسلي عليه السلام كهاري نماز

پڑھتر ھیں اور آن کا بدن دبلا

اور بال گهونگريالر تهر كويا

که وہ قبیله شنؤه میں سے هی

اور سی نے دیکھا که عیسلی

بن مريم عليه السلام كهڑے

عاز پڑھتے ھیں اور وہ سب

آدمیون سی عروه بن سمعود

عيسي بن سريم عليه السلام قائم يصلى اقرب الناس به شبها عروة بن مسعود الشقفي واذا ابراهيم عليه السلام قائم يصلى اشبه الناس به صاحبکم یسنی نفسه صلى الله عليه وسلم فحانت الصلواة فامتهم فلما فرغت من الصلواة قال قائل یا محد هذا سالک صاحب النار فلم عليه فالتفت اليه فبدأني بالسلام ـ

ثقفی سے زیادہ مشابه هس اور (صحیح مسلم جلد اول میں نے ابراھم علیه السلام کو صفحه ۹۹) دیکھا کہ کھڑے نماز پڑھتے ھیں اور وہ سب آدمیوں سے تمھارے آقا سے زیادہ مشابہ ھیں۔ اس سے حضرت نے اپنی ذات مبارک مراد لی پھر نماز کا وقت آیا اور میں نے امامت کی جب نماز سے فارغ هوا ایک نے کہا اے مجد یه مالک هے دوزخ کا محافظ اس کو سلام کیجیے ۔ میں اس کی طرف متوجہ ہوا اور اس نے پہلے سلام کیا ۔

(۳) احادیث ترمذی

حدیث بیان کی هم سے یعقوب بن ابراهیم دورقی ۔ کہا اس حدثنا یاعقوب بن نے حدیث بیان کی هم سے ابو

ابراهم الدورق حدثنا ابو تميله نے زبیر بن جنادہ سے اس تمیدلمه عن الزبر ابن جناده نے ابن بریده سے آس نے اپنر

عين ابن بريده عن ابيه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لما انتهينا الي بيت المقدس قال حمريل با صبعه فخرق به الحجر و شدد به الحراق ـ

(ترمذی صفحه سرد)

حدثنا اسحاق بن منصور حدثنا عبدالرزاق حدثنا معمر عن قتاده عن انس ان النبي صلى الله عليه وسلم اتى بالبراق ليلة أسرح به ملجا مسرجا فاستصعب عليه فقال له جمريل المحمد تفعل هدذا فما ركبك احد اكرم على الله سنه قال فارفض عرقا ـ (ترسذی صفحه ۳۱۵)

مقبول ھو تجھ پر سوار نہیں ھوا یہ سن کر براق ندامت سے پسینہ يسينه هو گيا ـ

> حدثنا محمود بن غيلان حدثنا عيدالرزاق حدثنا معمر عن الزهري قال اخبرني

باپ سے ۔ کہا اس نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا که جب هـم بيت المقدس منچر جریل نے اپنی انگلی سے اشارہ کیا اور آس سے پتھرکو شق کیا اور براق کو اس سے باندھ دیا ۔

حدیث بیان کی هم سے اسحاق بن منصور نے کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے عبدالرزاق نے کہا اُس نے حدیث بیان کی هم سے معمر نے قتادہ سے اس نے انس سے کہ رسول خدا کے پاس معراج کی شب براق زین اور لگام سے آراستہ آیا اور اس نے حضرت کو دیکھ کر شوخی کی ۔ جریل نے اُس سے کہا تو مجد صلی اللہ علیه وسلم کے ساتھ ایسا کرتا ہے کوئی شخص حو خدا کے نزدیک آن سے زیادہ

حدیث بیان کی هم سے محمود بن غیلان نے کہا آس نے حدیث بیان کی هم سے عبدالرزاق نے حدیث بیان کی هم سے معمر نے زھری سے کہا اس نے خبر

في سعيد بن المسيب عن ابي هريرة قال قال النبيي صلى الله عليه وسلم حبن آسرى بى لـقـيـت سوسـنى قـال فنعته فاذا رحل قال حسبته قال مضطرب الرحل الراس كانه من رحال شنوة قال و لقيت عيسني قال فنعته قال وبعلة الممركانه خبرج سن دنماس يعني المهام رايت ابراهيم قال و انا اشبه ولده به قال و آتبت بانائين احدد هما لمن والاخبر فيهده خمر فقيل لي خد اسما شدت فاخذت اللبن فشربته نقيل لى حديث او اصبت للفطوة اما انك لواخدنت الخمر لغوت امتک ـ

آپ کی اُست ہک جاتی ۔

(ترمذی صفحہ می) ہم شکل ہوں۔ پہر فرمایا کہ میرے سامنے دو پیالے پیش ہوئے ایک میں دودہ تھا اور ایک میں شراب ۔ مجھ سے کہا گیا کہ آپ ان میں سے جس کو چاھیں لے لیں۔ میں نے دودہ لے کر پی لیا مجھ سے کہا گیا کہ آپ فطرت پر کامیاب ہوئے اگر شراب لیتے تو پر ہدایت کیے گئے یا قطرت پر کامیاب ہوئے اگر شراب لیتے تو

حدیث بیان کی هم سے ابن ابی عمر نے کہا اس نے حدیث

دی محه کو سعید بن مسیب. نے ابو هريرہ سے کہا آنهوں نے که رسول اللہ نے فرمایا که میں نے معراج کی شب موسلی عليه السلام كو ديكها يهر أن کی تعریف کی که وه! راوی کهتا ھے میں خیال کرتا موں کہ فرمایا بدن سے دبلر تھر اور آن کے سرکے بال چھو۔ " ہونے تھر كُوبا كه وه تبسه شدره سي سے هی اور فرسایا نه مین نے عیسنی عليه السلام كدو ديكها كها راوی نے کہ پہر فرمایا آنحضرت نے آن کا حلیہ بیان کیا اور فرسایا که وه میانه قد سرخ رنگ تهر کویا ابھی حام سے ناخے ھیں میں نے ابراھم کو دیکھا اور فرمایا که میں آن کا فرزند

حدثنا ابن ابی عمر حدثنا سفيان عن سالك بن مغول عن طلحة بن مصرف عن مرة عن ابن مسعود قال لما بلغ رسول الله صلى الله عليه وسلم سدرة المنتهى قال انتهى الما ما يعرج من الارض و سا ينزل سن فوق فاعطاه الله عندها ثلاثا لم بعطمن نسيا كان قبله فرضت عليه الصلوة خدسا و اعطى خواية سورة البقر وغفر لامته المقحمات مالم يـشـركوا بالله شـيـنا قال ابن مستعود اذ يغشي السلارة ما يغشى قال السدرة في الساء السادسة قال سفيان فراش سن ذهب و اشار سفيان بيده فارعدها وقال غر مالک و بن سغول السا ينتهى علم الخلق لاعلم لههم بما فوق ذلكه ـ (ترمذی صفحه ۲ م ۵)

بیان کی هم سے سفیان نے مالک بن مغول سراس نے طلحہ بن مصرف سے اس نے مرہ سے اس نے این مسعود سے کہا آنھوں نے حب رسول الله صلى الله عليه وسلم سدرة المنتئبي پر منچر کہا راوی نے جو چیز زسن سے اوپر جاتی ہے اور جو چیز اوپر سے آتی ہے سدرہ یہ رک حاتی ہے خدا نے آن کو تین چیزیں عطا کس جو آن سے بہلر کسی نبی کو نہیں دیں اول پانچ نمازیں **آن** پر فرض هوئی دوم سوره بقر کی آخر آیتس آن کو عطا هوئس سوم حس نے آن کی آست میں سے خدا کے ساتھ شرک نہیں کیا اس کے گناہ کہیرہ سعاف کر دیے ابن مسعود اس آیت کی تفسیر میں که حب چها حا۔ ٔ ـ سدره ير حو چھا جائے کہتر ھیں کے سدرہ چھٹر آسان پر ھے سفیان کہتر دی سونے کے پتنگر تھر جو سدرہ یر چھائے تھر اور سفیان نے ھاتھ سے اشارہ کیا اور آس کے ملایا اور مالک بن مغول کے سوا اور راوی کہتا ہے کہ سدرہ پر تمام

دنیا کا علم منتہی ہوتا ہے ۔ اس سے اوپر کا کسی کو علم نہیں ۔ حدیث بیان کی هم سے قتیبہ نے ، کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے لیث نے عقیل سے ، اس نے زهری سے ، اس نے ابوسله سے ، آس نے جاہر بن عبداللہ سے که رسول خدا نے فرمایا که حب قریش نے مجھ کو جھٹلایا سى حجر مين كهڙا هوا اور خدا نے بیت المقدس کو سری نظر میں حلمہ کر کر دیا میں اس کی نشانیاں آن کو بتاتا تھا اور آس طرف ديكهتا حاتا تها ـ

حدثنا قتيبه حدثنا الليث عن عقيل عن الزهري عن ابی سلمة عن جابر بن عبد الله أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لماكذبتني قريش قدت في الحجر فعجلي الله لى بيت المقدس فطف قت اخبر هم عن آياته و انا انظر اليه ـ

(آرمذی صفحه سرد)

(٣) احادیث نسائی

خبر دی هم کو یعقوب بن ابراهیم نے ، کہا اُس نے حدیث بیان کی هم سے محیلی بن سعید نے، کہا اُس نے حدیث بیان کی هم سے هشام دستوائی نے ، کہا اس نے حدیث بیان کی ھم سے قتادہ نے انس بن مالک سے، انھوں نے مالک بن صعصعہ سے که رسول خدا نے فرمایا که مس کعید کے قریب کچھ سوتا كچه حاگتا تها كه ایک فرشته آیا حو تین میں کا ایک اور دو کے درسیان تھا۔ پھر سونے کا

اخترنا يعقوب بنن ابراهيه حدثنا يحيني بـن سعـيـد حــدثـنا هشام الدستوائي حدثنا قتادة عن انس بن سالک عن سالک بن صعبصعه ان النبي صلى الله عليه وسلم قال بينا انا عند البيت بين النائم واليقطان اذا قبل احد الشلاثة بدين الرحليين فاتیت بطست من ذهب

لكن لايا گيا حو حكمت اور ا مان سے بھرا ھوا تھا اور سرا سینه پیٹ کی نرم حگه تک چيرا كيا پهر سرا دل آب زم زم سر د دویا گیا اور حکمت و انمان سے بھرا کیا یھر ایک حانور لایا کیا حو خجر سے جھوٹا گدھے سے بڑا تھا۔ یہر میں حریل علیه السلام کے ساتھ چلا اور ہلر آسان ہر ہنچا ۔ پوچھا گیا کون هے ، کہا حریل - یوجها تمرے ساتھ کون ھے ، کہا جد صلى الله عليه وسلم همى _ پوچها کیا بلائے گئر میں ۔ کہا ماں مرحبا كيا خوب آنا هوا پهر سي آدم کے پاس بہنچا سیں نے آن کو سلام کیا کہا مرحبا اے فرزند اور نبی ـ پهر هم دوسرے آسان پر ہنچر پوچھا گیا کون ہے کہا جریل ۔ کہا ترے ساتھ كون هے ـ كما مجد صلى الله عليه وسلم هم يهال بهي ويسى هي باتیں هوئی ۔ پهر سی محیلی اور عیسٹی کے پاس منچا اور سی نے آن کو سلام کیا ۔ دونوں

سلاءن حكمة وايمانا فشق سن النحرالي سراق المطن فغسل القلب بماء زم زم ثم سلئي حكمة و ایمانا ثم اتیت بد ابة دون السغل و فوق الحمار ثم انطلقت سع جبريل عليه السلام فاتينا السماء الدنيا فقيل من هذا قال جبريل و سن معك قال محد قيل و قد ارسل اليه سرحبا به و نعم المجنى جاء فاتيت على آدم عليه السلام فسلمت عليه قال مرحبا بک من ابن و نبی ثم اتينا إلى السماء الشانية قيل سن هذا قال حمريل قيل و سن سعک قال مجد سشل ذلک فاتیت علی يحيني و عيسلي فسلمت عليهما فقال مرحبابك من اخ و نبی ثم اتینا الى السماء الثالثة قبل من هدذا قال جبريل قيل و سن صعبک قبال مجد فیمشل

نے کہا مرحما اے بھائی اور نی ۔ پھر ھم تیسرے آسان پر منجر ـ يوچها گيا كون هے ـ كما حبریل ۔ یو چھا تبرے ساتھ کون هے -کہا محد صلی الله علیه وسلم ھیں اور یہاں بھی ویسے ھی باتیں ہوئی پھر میں یوسف کے پاس ہنچا ۔ سی نے آن کو سلام کیا۔ کہا اے مرحبا بھائی اور نبی پھر ھم چوتھے آسان پر پہنچے اور وہاں بھی ویسی هی باتس هو ئیں ـ پهر سی ادریس کے پاس بہنچا سی نے آن كو سلام كيا -كمها مرحبا اے بھائی اور نبی ۔ پھر ہم پانچویں آسان پر پہنچر وہاں بھی ویسی ھی باتیں ھوئیں۔ پھر میں ھارون کے پاس بہنچا۔ سیں نے آن کو سلام کیا ۔ کہا مرحبا اے بھائی اور نبی بھر هم چھٹے آسان پر پہنچے اور ویسی هی باتس هوئی ـ پهر س موسلی کے پاس پہنچا ۔ س نے آن کو سلام کیا ۔کہا مرحبا اے بھائی اور نبی - جب سی

ذلک فاتیت علی یوسف عليه السلام فسلحت عليه قال سرحبا بك من اخ و نبيى ثم اتينا الى السماء الرابعة فمشل ذلك فاتيت على ادريس عاليه السلام فسلمت عليه قال سرحبا بک من اخ و نبی شم اتينا الى السماء الخامسة فمشل ذلك فاتيت على هارون عليه السلام فسلمت عليه قال مرحما بك من اخ و نبه, ثم اتینا الی السماء السادسة فحشل ذلك نه اتیت علی سوسلی علیه السلام فسلمت عليه قال مرحبا بک سن اخ و نبی فلما حاوزته بكي قيل سا یہکیک قال یا رب هذا الغلام الذي بعشته بعدى يدخل من آسته الجنة اكشر و افضل سما يلخل من آمتی ثم اتینا السماء السابعة فمشل ذلك فاتيت على ابراه يم عليه السلام

وهاں سر آگے بڑھا تو موسلی روئے۔ یو چھا گیا کہ کیوں روتے هو - کہا اے خدا یه لؤکا حس کو تو نے میرے بعد نہی کیا ہے اس کی آست کے لوگ مری آست والوں سے زیادہ جنت س جائس کے ۔ پھر ھم ساتویں آسان پر سنچر اور ویسی هی باتس هوئی _ پهر سی ابراهم کے پاس ہنچا ۔ میں نے آن کو سلام کیا ۔کہا مرحبا اے فرزند اور نبی پھر بیت المعمور مجھ سے نزدیک هوا۔ س نے جریل سے پوچھا ۔ تو کہا بیتالمعمور ھے ھر روز اس میں ستر ھزار فرشتر نماز پڑھتر ھی اور جب حاتے هس يهر كر دوباره نہیں آتے ۔ پھر سدرہ محھ سے قریب آ گیا آس کے بیر ھجر کے مٹکوں کی برابر اور پتر ھاتھی کے کانوں کی برابر تھر آس کی جڑ سے چار نہریں نکتی تھی دو ظاهر اور دو باطن ـ میں نے جبریل سے پوچھا تو کہا یہ دو پوشیده نهرین تو جنت سی جاتی

فسلمت عامده قال سرحما بک سن ابن و نبی ثم رفع لى الميت المعمور فسالت حدريل فقال هذا البيت المعمور يصلي فيه كل يوم سبعون الف سلك فاذا خرجواسنه لم يعودوا فيه آخر سا عليهم ثم ر فعت الى سدرة المنتلي فاذا نبقها مشلي قلال هجرو اذا ورقها مشل آذان الفيلة و اذا في اصلها اربعة انهار نهران باطنان و نهران ظاهران فسالت جسريل فقال اسا الباطنان فقى الجنة واسا الظاهران فالفرات والنيل ثم فرضت على خمسون صلوة فاتيت على موسلي فقال ماصنعت قلت فرضت على خسمون صلوة قال انى اعلم بالناس منك انى عالجت بنى اسرائيل اشد المعالجة و ان استک لن يطيقوا ذلک فارجع الی ربک

فاسأله ان يخفف عنك فرجعت الى ربى فسألته ان يخفف عنى فجعلها اربعين ثم رجعت الني موسلي عليه السلام فقال ما صنعت قلت جعلها اربعين فقال لي سشل مقالته الاوليي فرحيعت الي ربي عيزوجيل فيجعلها ثلشين فاتيت على موسى عليه السلام فاخبرته فقال لي مشل مقالنه الاولى فرجعت الى ربى فجعلما عشرين ثم عشرة ثم خمسة فاتيت على موسلى عليه السلام فيقيال لي مشل مقالسه الاولى فقلت انى استحيى من ربى عزوجل ان ارجع اليه فنودى ان قداسضيت فريضتي وخففت عن عبادى واجرى بالحسنة عشرا مشالها ـ

(نسائی صفحہ ۵۲ و ۵۳) میں بھر خدا کے پاس گیا۔ تو تیس نماز کا حکم دیا۔ پھر موسلی علیہ السلام کے پاس آیا اور آن کو خبر دی۔ موسلی نے پھر وہی کہا جو پہلے کہا تھا۔ میں بھر

هی اور یه دو ظاهر نیل اور فرات هس ـ يهر محه ير مياس تمازیں فرض هوئیں ـ يهر میں موسلی علیه السلام کے پاس آیا۔ موسلی نے بوچھا کہ آپ نے کیا کیا ۔ میں نے کہا محھ پر یچاس نمازیں فرض هوئی هی*ں* ـ کہا آپ سے زیادہ میں لو گوں کی حالت سر واقف هوں ۔ سی نے بنی اسرائیل کو آزاایا اور سخت نکیف آٹھائی ۔ آپ کی آمت اس فرض کا تحمل نه کر سکر گی ـ آپ خدا کے پاس پھر جائیر اور کمی کی درخواست کیجیر -میں پھر خدا کے پاس گیا اور کمی کی التجا کی ۔ خدا نے چالیس کا حکم دیا۔ پھر س موسنی علیدالسلام کے پاس آیا ۔ پوچھا کیا کر آئے ۔ س نے کہا چالیس نماز کا حکم دیا ھے۔ موسلی علیه السلام نے پهر وهي کها جو پهلرکها تها۔ میں بھر خدا کے پاس گیا۔ تو خدا کے پاس گیا ۔ اب کی دفع بیس نمازوں کا حکم دیا پھر دس کا پھر یایخ کا میں پھر موسی علیه السلام کے پاس آیا موسلی علیه السلام ی یھر وہی کہا جو ہار کہا تھا۔ میں نے کہا محھ کو شرم آتی ھے کہ میں پھر اُس کے پاس جاؤں ۔ آواز آئی کہ میں نے اپنا فرض جاری کر دیا اور اپنے بندوں کو آسانی دی اور می ایک نیکی کے بدلر دس نیکیوں کا ثواب دوں گا۔

حمر دی ہم کو یونس بن عبد الاعلیٰ نے، کہا اس نے اخسر نا یمونس بن حدیث بیان کی هم سے ابن وهب انس بن مالک اور ابن حزم نے كنه رسول خدا فے فرمایا الله تعالمي نے میری آمت پر مچاس نمازیں فرض کی ۔ میں آلٹا پھرا اور موسی علیه السلام کے پاس آیا۔ موسلی علیه السلام نے کہا خدا نے آپ کی آمت پر کیا فرض کیا ۔ سی نے کہا آن پر مجاس نمازیں فرض کی هیں ـ موسئی علیه السلام نے مجھ سے کہا دوبارہ خدا سے کہیر آپ کی آست اس کا تحمل نہ کر سکر گی ۔ سیں نے دوبارہ خدا سے کہا اور خدا نے ان میں سے ایک حصہ کم کر دیا۔ پھر موسلی علیه السلام کے پاس

عبدالاعلى حدثنا ابن وهب نے، كم اس نے خبر دى مجھ قال اخترنی یتونس عن ابن کویونس نے ابن شہاب سے ، کہا شهاب قال انس بن مالک و ابن حرزم قال رسول الله صلى الله عبليمه وسبلم و فرض الله عز وجل على آستي صلوة فرجعت بذلك حتى مريموسلي عليه السلاء فقال ما فرض ربك علي امتك قلت فرض عليهم خمسين صلوة قال لي موسني فراجع ربك عزوجل فان امتک لا تطیق ذلک فراجعت ربي عزوجل فوضع شطرها فرحعت الى سوسني فاخبرته فقال راجع ربك فان استك لا تطييق ذالك

فراجعت ربي عز وجل فقال هي خمس وهي خمسون لا يبدل القول لدى فرجعت الى مـوسـلى فـقـال راجـع ربكــ فقلت انی استحییت من ربى عــز و جـ ل -

(نسائی صفحه ۵۳) کے پاس آیا ۔ کہا پھر خدا سے کہیے ۔ میں نے کہا اب تو مجھے خدا سے شرم آتی ہے -

> اخبيرنا عيمار و ابن هشام قال حدثنا مخلد عن سعيد بن عبد العزيز حدثنا يزبد ابن ابي سالک حدثنا انس بن مالك ان رسول الله صلعم قال اتيت بدابة فوق الحار و دون البغل خطوها عند سنتهى طرفها فىركىبت و معى جبريل عليه السلام فسرت فقال اندزل فعصل فنعلت فقال اتدرى اين صليت صليت بطبية و اليها المجاجرثم قال انرل فصل صليت فقال اتدری این صلیت صلیت

آیا اور آن کو خبر دی کما پھر خدا سے کہیے آپ کی آست میں اس کی طاقت نہیں ہے ۔ سیں نے خدا سے پھر کہا ۔ خدا نے فرمایا کہ پایخ نمازیں هیں اور وهی بچاس حے برابر ہیں ۔ میرا قول نہیں بدلتا _ میں پھر موسلی علیه السلام

خبر دی هم کو عمر بن هشام نے۔ کہا اس نے حدیث بیان کی ہم سے مخلد نے سعید بن عبدالعزیز سے ، کہا اس نے حدیث بیان کی یزید بن ابی سلک نے ، کہا اس نے حدیث بیان کی هم سے انس بن مالک نے کہ رسول خدا نے فرمایا میرے لیے ایک جانور لايا گيا جو خچر سےچھوڻا اور گدھے سے بڑا تھا اور اس کا قدم منتہامے نظر تک پڑتا تھا۔ میں اس پر سوار ہوا اور میرے ساتھ جبریل تھے۔ بھر میں چلا۔ جبریل نے کہا آتر بے اور نماز پڑھیے۔ میں نے نماز پڑھی۔ کہا آپ کو سعلوم ہے کہ آپ نے کہاں کماز پڑھی آپ نے طیبہ

(مدینه) میں نمار پڑھی اور آپ اسی طرف هجرت کریں گے ۔ یھر کہا آتر ہے اور نماز پڑھیر ۔ میں نے نماز پڑھی کہا آپ کو معلوم ھے کہ آپ نے کہاں نماز پڑھی۔ آپ نے طور سینا جہاں خدا نے سوسٹی سے کلام کیا۔ بھر كها أترك اور تماز پڑھير سي نے تماز پڑھی ۔کہا آپ جانتر ھی که آب نے کہاں تماز پڑھی۔ آپ نے بیت اللحہ میں تماز پڑھی، جمال عسني عليه السلام بيدا هرنے ندر میں بیت المقدس مين داخل هوا ـ البيا عسي السلام میرے لیے جمع تھے۔ جبریل نے محھ کو آگے بڑھا دیا میں نے اساست کی پہر محھ کے آسان اول یر لر آئیا میں نے آس میں آدم عنيه السلام كو پايا ـ یھی دوسرے آسان پر لر کیا۔ میں نے اس میں خالہ زاد بھائی عيسلى اور بحيني عليها السلام دیکھے ۔ بھر تیسرے آسان بر لر گیا _ وهال یوسف علیدالسلام نظر آئے ۔ پھر چوتھر آسان پر

بطور سينا حيث كام الله موسئي عليه السلام ثم قال انزل فصل فصليت فقال اتدری این صلیت صليت ببيت لحم حيث ولد عياسلي عليه السلام ثم دخلت اللي بيت المقدس فجمع لى الانبياء علمه السلام فقد سني جبريل حتى اسم تهم في صعدي الى السباء الدنيا فاذا فيها آدم عليه السلام نح صعدى الى السماء الشانية فاذا نبا ابن الخالة عيسني وعيني علمها السالام نح صعدى الى الساء الشالشة فاذا فيها يوسف عليه السلام نم صعد بي الى الساء الرابعة فاذا فيها هارون عليه السلام ثم صعد بي الى السهاء الخاسسة فاذا فسا ادريس عليه السلام ثم صعد بي الى الساء السادسته فاذا فيها موسلي عليه السلام ثم صعدى الى الساء السابعة فاذا فيها ابراهم عليه السلام

لر گیا اس می هارون علیه السلام تھر ۔ پھر پانچویں آسان پر لر گیا اس میں ادریس علیه السلام تهر ـ پهر چهٹر آسان پر لرگيا اس میں موسلی علیه السلام دکھائی دے ۔ پھر ساتویں آسان پر لر گیا میں نے اس میں ابراهيم عليه السلام كو ديكها ـ پھر مجھ کو ساتوں آسانوں سے آدهر لرگیا۔ پهر هم سدرةالمنتمی پر ہنچر ۔ محھ پر ایک کہر سی چھا گئی میں سجدے میں گرا آواز آئی کہ سی نے جس روز آسا**ن و** زمن کو پیدا کیا نجھ پر اور تعری آمت پر بچاس نمازبی فرض کیں ۔ اب تو اور تیری آست اس کو قائم کربی ۔ سیں وہاں سے ابراہیم علیه السلام کے ہاس لوٹ کر آیا ۔ اُنھوں نے کوئی سوال محھ سے نہیں کیا ۔ پھر میں موسیٰ علیدالسلام کے پاس آیا۔ پوچھا کتنی کمازیں آپ پر اور آپ کی آست پر فرض هوئیں ـ میں نے کہا مچاس ۔ کہا نہ آپ اس کو ادا کر سکس کے نه آپ کی

ثم صعدى فوق سبع سموات فاتينا سدرة المنتشي فغشيتني ضبابة فخررت ساجدها فعقيل لي اني يومخلقت السموات والارض فرضت علیک و علی استک خرمسين صلوة فقم بها انت و استك فرجعت الى ابراهم فلم يسألني عن شئي ثم اتيت على موسلى فقال كم فرض عاليك وعالى استك قملت خمسين صلوة قال فانك لا تستطيع ان تقوم بها انت ولا استك فارجع الى ربك فاساله التخفيف فرجعت الى ربى فيخفف عنى عددرا ثم اتيت الى موسني فامرني بالرجوع فرجعت نخفف عنى عشرا ثم ردت اللى خمس صلوة قال فارجع الى ربك فاسأله التخفيف فانه فرض على بني اسرائيل صلويتن في قاسوا بها فرجعت الى ربى عــز و جـل فـسألتـه التخفييف فقال اني يوم

آمت ۔ خدا کے پاس پھر حاثیر

اور کمی کی درخواست کیجیر ـ

مس پھر خدا کے یاس گیا تو

دس نمازیں معاف کر دیں ۔ مس

یهر موسلی علیه السلام کے پاس آیا تو محه کو پهر حانے کو کہا۔

میں یھر گیا تو خدا نے دس اور

معاف کر دیں ۔ یھر یایخ نماز کا

حکم لر کر آیا تو موسیٰ علیه

السلام نے پھر کہا کہ خدا کے

خلقت السموات والارض فرضت عليك وعل امتك خمسين صلوة فخمس مخمسين فقم بها انت و استك فعرفت انها من الله عيزوحيل صرى فيرجعت اللي موسئي عليه السلام فقال ارحم فعرفت انها من الله صرى يقول حستم فلم ارجع ـ

(نسائی صفحات س و س م) پاس پهر جائبر اور کمی کی

درخو است کیجئر ۔ خدا نے بنی اسرائیل پر دو نمازیں فرض کی تھیں ان کو بھی ادا نه کر سکر ۔ میں پھر خدا کے پاس گیا اور کمی کی درخواست کی ۔ خدا نے فرمایا کہ میں نے جس روز زمین و آسان پیدا کیر آسی روز تجه پر اور تبری آست پر بچاس نمازین فرض کر دی تھیں اور یہ پانچ نمازیں بچاس کے برابر ھیں ۔ تو اور تیری آست ان نمازوں کو ادا کریں اب میں نے جان لیا کہ یہ خدا کی طرف سے قطعی حکم ہے۔ پھر میں موسلی علیه السلام کے پاس آیا۔ موسلی علیه السلام نے کہا پھر جائیے ۔ میں نے سمجھا کہ یہ خدا کا حکم قطعی ہو چکا اس لیے میں پھر نہیں گیا ۔

خبر دی ہم کو احمد بن سلیان نے کہا اُس نے حدیث بیان اخمرنا احمد بن سلیان کی هم سے محیلی بن آدم نے کہا مالک بن مغول نے اس نے زبیر

حدثنا محیلی بن آدم حدثنا اس نے حدیث بیان کی هم سے مالك بن سغول عن الزبير ین عدی بن طلحه بن مصرف بن عدی بن طلحه بن مصرف سے

عن مرة عن عبدالله قال لما آسرى برسول الله صلى الله عليه وسلم انتني به الى سدرة المنتلجي و هي في الساء السادسة واليها ينتهلي ساعرج به من تحتمها و البيمها ينتهي ما هيط به من فوقها حتى يتسنف منها قال اذبغش السدرة ما بغيشر قال فراس من ذهب فاعطم للشا التصلوة الخنمس و خنواتنم سلورة البلقار وابلغلفارالحلن سات سن استنه لا بنشر نب بالقاشيشا المتجمعات

(نسائي صنحه سرا

الليمرة أنده سي معاف الإرب أداب

اخترنا سلمان بن داؤد عن ابين وهيب قال اخبرني عمرو بين التحيارث ان عبدريه بن سعيد اختره ان السيناني حدثه عن انس بن مالكت ان الصلوات فرضت تمكلة و ان ملكس اتيا رسول الله

آس نے مرہ سے آس نے عبد اللہ سے کہا آنھوں نے کہ حب رسول خدا معراج کو گئے سدرۃ المنتهي تک يهنجر اور وه چهٹر آیان ہر ہے اور جو کچھ آس کے نیجر سے اوپر کو جاتا ہے اور جو کچھ آس کے اوپر سے نیچر کو آتا ہے وہی آکر رکتا ہے اس آیت کی تنسس میں کہ جب جها حائے آس پر جو جما جے نے راوی نے کہا کہ اس سے مراد ہیں سونے کے پتنکے ۔ بھر آنحضرت صبي الله عليه وسلم دو تان چار ہی دی دہی ۔ بانچ ممازیں اور سورہ بفر کے آخیر آیتیں اور آن کی آست میں سے جو شخص خدا کے ساتھ شراب نہ کرمے آس کے

خس دی ہم کو سلبان بن داؤد ہے ابن وہب سے ، کہا آس نے شہر دی محملے کو عمرو بن حارث نے که عبدریه بن سعید نے خبر دی آس کوکہ بنانی نے حدیث بیان کی ، آس نے انس بن مالک سے که نماز مکه سی فرض هوئی اور دو فرشتر رسول الله کے پاس آئے اور آن

صلى الله عليه وسلم فذهبا به الى زمزم فشقا بطنه و اخر حاحسوه في طست من ذهب فغسلاه بماء زسزم ثم كبسا جوفه حكمة وعلا (نسائی صفحه سم)

کو زمزم کے پاس لرگئر ۔ دونوں نے آن کا پیٹ جبرا اندر کی چیز (دل) سونے کے لگن سی نکالی۔ اور آب زمزم سے اس کو دھویا پھر علم و حکمت آس کے اندر بهر دیا ـ

حدیث این ماجه

حدیث بیان کی هم سے حرمله بن محیلی مصری نے ، کہا آس نے حدیث بیان کی ھم سے عبدالله بن وهب نے ، کہا آس نے خبر دی مجھ کو یونس بن یزید نے ابن شہاب سے، اس نے انس بن مالک سے ، کہا اُنھوں نے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نےفرمایا کہ خدا نے میری آمت یر مجاس نمازین فرض کی میں آلٹا پھر کر موسلی علیہ السلام کے پاس آیا تو موسیٰی علیه السلام نے پوچھا خدا نے آپ کی آمت پر کیا فرض کیا۔ میں نے کہا بچاس نمازیں ۔ کہا خدا کے پاس پھر جائیے آپ کی آست اس کی طاقت نہیں رکھتی ۔ میں نے دوبارہ خدا سے کہا اور خدا نے ان میں سے ایک حصه

حدثنا حرمله بن محيلي المصرى حدثنا عبدالله بن وهب اخبرنی یونس بن يـزيـد عن ابـن شــهـاب عـن انس بن سالک قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فرض الله على آمتي خدمسين صلوة فرجعت بذلك حتى اتى على موسلى فقال موسلى ماذا افترض ربك على استك قلت فرض على خمسين صلوة قال فارجع الى ربك فان امتک لا تطیق ذالک فراجعت ربى فوضع عنى شطرها فرجعت الى موسلى فاخبرته فقال ارجع الى ربك فان امتک لا تطیق ذلک فراجعت

ربی فقال هی خمس وهی خمسون الى موسلى فقال راجع الى ربك فقلت قد استحييت من ربي ـ

معاف کر دیا ۔ پھر میں موسلی لا يبدل القول لدى فرجعت كي ياس آيا اور أن كو خبر دى ـ کہا یھر خدا کے پاس حاثیر آپ کی آست میں اس کے ادا کرنے کی طاقت نہیں ہے ۔ سی نے پھر (ابن ماجه صفحه سم ،) خدا سے کہا خدا نے فرمایا که

پایخ نمازیں هیں اور یہی بچاس هیں۔ سرا قول نہیں بدلتا۔ پھر سی موسلی علیه السلام کے پاس آیا ۔ موسلی علیه السلام نے کہا بھر خدا کے پاس جائیر ۔ میں نے کہا مجھ کو خدا سے شرم آتی ہے، ۔

اختلافات جو ان حديثوں مس هيں

ان حدیثوں کے طرز بیان میں اور واقعات جو آن میں بیان ھوئے ھیں اور اُن کے الفاظ و عبارات میں ایسا اختلاف ہے جو اس بات کے یقین کرنے کے لیر کافی دلیل ہے کہ وہ الفاظ وہ نہیں ہیں جو رسول خدا صلی الله علیه وسلم نے اپنی زبان مبارک سے فرمائے هوں کے یه بات مسلم ہے که حدیثین بلفظه یعنی آنھی الفاظ سے جو رسول خدا صلی اللہ علیه وسلم نے فرما۔ ٔ تھر بیان نہیں ھوتی تھیں بلکہ روایت بالمعنی کا عام رواج تھا یعنی راوی حدیث کے مطلب کو اپنر الفاظ میں بیان کرتا تھا اور سی وجہ ہےکہ ایک مطلب کی حدیثوں کو متعدد راویوں نے مختلف الفاظ میں بیان کیا ہے اور اس لیر سمجھا جاتا ہے کہ ان حدیثوں کے جو الفاظ میں وہ اخبر راوی کے الفاظ میں جس کی روایت حدیثوں کی کتابوں میں لکھی

علاوہ اس کے ان حدیثوں کے مضامین بھی نہایت مختلف ھیں اور راویوں نے اپنی یاد اور اپنی سمجھ کے موافق آن کو بیان کیا ہے آن سے یہ بات ثابت نہیں ہوتی کہ در حقیقت رسول خدا صلی اللہ علیه وسلم نے بیان کیا تھا اور زبانی نقل در نقل ہوتے ہوتے اخیر راوی تک کس قدر پہنچی اور کیا کمی یا زیادتی آن میں ہوگئی اور مطلب بھی آن میں وہی باق رہا جو رسول خدا صلی اللہ علیه وسلم کا تھا یا آس میں بھی کچھ تغییر و تبدیلی ہو گئی ہے۔

اب هم الفاظ کے اختلافات سے قطع نظر کرتے هیں اس خیال سے که راویوں کے سبب وہ مختلف هو گئے هیں اور صرف اختلافات مضامین کو دکھلاتے هیں جو مذکورہ بالا حدیثوں سی پائے حاتے هیں ۔

۱۔ اس بات میں اختلاف ہے کہ جب معراج شروع ہوئی
 تو آپ کہاں تھر

بخاری اور مسلم میں ابو ذرکی حدیثوں میں ہے کہ آپ مکہ میں اپنے گھر میں تھے کہ آپ کے گھر کی چہت پھٹ گئی ۔

بخاری اور مسلم اور نسائی میں مالک ابن صعصعه کی حدیث میں ہے کہ آپ خانہ کعبہ کے پاس تھے ۔

بخاری میں انھی کی دوسری حدیث میں ہے کہ آپ حطیم میں تھے یا حجر میں تھے ۔

بخاری اور مسلم میں انس ابن مالک کی حدیث میں ہے کہ مسجد کعبہ میں سے آپ کو معراج ہوئی ۔

جس قدر حدیثیں ان کے سوا ھیں ان میں سے کسی میں اس بات کا ذکر نہیں کہ جب معراج شروع ہوئی تو آپ کہاں تھے ۔

٣۔ جبریل تنہا آئے تھے یا اور بھی آن کے ساتھ تھے

بخاری میں مالک ابن صعصعه اور بخاری و مسلم میں ابوذرکی حدیث ہے که تنہا جبریل آنحضرت کے پاس آئے تھے ۔

نسائی میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ دو فرشتے آنحضرت

کے پاس آئے تھے۔

بخاری میں مالک ابن صعصعه کی حدیث ہے جس کے یه لفظ
ھیں '' فدذکر رجلا بین الرجلین '' ۔

اور مسلم اورنسائی میں ہے '' احد الشلشة بـین الـرجـلین '' یعنی تین کا ایک جو دو کے درسیان میں ہے ـ

فتح الباری اس سے مراد لیتا ہے کہ آنحضرت حمزہ و جعفر کے بیچ میں سوتے تھے جس سے مراد یہ ہے کہ آنحضرت نے فرمایا کہ میں دو آدمیوں یعنی حمزہ و جعفر کے بیچ میں سوتا تھا ـ

مگر کواکب الدراری اور خیرالمجاری میں جو بخاری کی شرحیں هیں لکھا هے '' ای ذکر النبی صلی الله علیه وسلم ثلاث رجال وهم الملائکة تصور و ابل صورة الانس'' یعنی آنحضرت نے تین آدمیوں کا ذکر کیا جو فرشتے تھے که آدمیوں کی شکل بن کر آئے تھے ہس اس روایت سے تین فرشتوں کا آنا معلوم هوتا هے ۔

بخاری اور مسلم میں انس ابن مالک کی حدیث میں ہے کہ آنحضرت کے پاس تین فرشتر آئے۔

ہ۔ آس وقت آپ سونے تھے اور آخیر تک سونے ؑ رہے یا جاگتے تھے

بخاری اور مسلم اور نسائی میں مالک ابن صعصعه کی حدیث میں ہے ۔ بین النائم والیقظان یعنی آنحضرت نے فرمایا که میں کچھ سوتا اور کچھ جاگتا تھا ۔

بخاری کی انھی کی دوسری حدیث میں ہے '' مضطجعا'' یعنی آنحضرت نے فرمایا کہ میں کروٹ پر لیٹا سوتا تھا۔

بخاری میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ '' وہو نائم'' یعنی آنحضرت سوتے تھے اور اس کے بعد ہے '' فیمایدری قلبہ و تنام

عینه ولا ینام قلبه " یعنی فرشتے آپ کے پاس آئے ایسی حالت میں که آپ کا دل دیکھتا تھا اور آنکھیں سوتی تھیں اور دل نہیں سوتا تھا۔ اس حدیث کے اخیر میں ھے " فاستقیظ و ھو فال۔مسجد الحرام " یعنی تمام قصه معراج بیان کر کے انس بن مالک نے کہا که پھر آنحضرت جاگے اور وہ مسجد حرام میں تھے۔ اور مسلم میں انس ابن مالک کی حدیث میں ھے و ھو نائم فی المسجد الحرام یعنی آنحضرت سوتے تھے مسجد حرام میں۔ ان حدیثوں کے سوا کسی حدیث میں اس بات کا بیان ھی نہیں ھے کہ اس وقت آنحضرت جاگتر تھر یا سوتے تھے۔

۲۔ شق صدر اور آس کے اختلافات

بخاری اور مسلم میں ابوذر کی حدیث ہے کہ آنحضرت نے فرمایا کہ جبریل نے میرا سینہ چیرا اور زمزم کے پانی سے دھویا ۔ بخاری میں مالک ابن صعصعه کی حدیث ہے کہ آنحضرت نے فرمایا کہ حلقوم سے پیٹ کی نرم جگہ تک چیرا گیا اور پیٹ کو زمزم کے پانی سے دھویا گیا ۔

اور بخاری اور مسلم اور نسائی میں انھیں کی حدیث ہے کہ گئے کے گڑھے سے پیڑو تک چیرا گیا۔ پھر میرا دل نکالا اور زمزم کے پانی سے دھویا۔

بخاری میں انس بن مالک کی حدیث ہے کہ تین فرشتے جو آئے تھے آن میں سے جبریل نے سینہ کو ایک سرے سے دوسرے تک چیر ڈالا اور جبریل نے اپنے ہاتھ سے زمزم کے پانی سے دھویا ۔ نسائی میں انس بن مالک کی حدیث ہے کہ دو فرشتے آئے اور آنحضرت کو چاہ زمزم کے پاس لے گئے اور دونوں نے آنحضرت کے پیٹ کو چیرا اور دونوں نے مل کر زمزم کے پانی سے دھویا ۔ ان حدیثوں کے سوا جو اور حدیثی ہیں آن میں شق صدر کا

کچھ ذکر نہیں ۔

۵۔ براق کا ذکر کن حدیثوں میں ہے کن میں نہیں

بخاری اور مسلم میں مالک ابن صعصعه کی حدیث ہے کہ ایک چوپایه میرے پاس لایا گیا سفید رنگ کا گدھے سے بڑا اور خچر سے چھوٹا جس کو براق کہتے ہیں۔

مسلم میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ میرے پاس براق لایا گیا اور وہ ایک چوپایہ ہے سفید رنگ کا گدھے سے بڑا اور خچر سے چھوٹا ۔

ترمذی میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ رسول خدا کے۔ پاس معراج کی شب براق زین اور لگام سے آراستہ لایا گیا ۔

نسائی میں مالک ابن صعصعہ کی حدیث ہے اُس میں براق کا نام نہیں ہے صرف یہ ہے کہ ایک چوپایہ میرے پاس لایا گیا جو خچر سے چھوٹا اور گدھے سے بڑا تھا۔

نسائی میں انس بن مالک کی حدیث ہے اُس میں بھی براق کا نام نہیں ہے صرف یہ ہے کہ ایک چوپایہ میر بے پاس لایا گیا ۔

ان حدیثوں کے سوا اور کسی حدیث میں براق کے لائے حانے کا ذکر نہیں ہے ۔

٦۔ آپ براق پر سوار ہو كر گئے يا كس طرح

بخاری اور مسلم میں ابو ذر اور انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ آنحضرت نے فرمایا کہ جبریل میرا ہاتھ پکڑ کر آسانوں پر لے گئے اور انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ مجھ کو آسانوں پر لے گئے (واضح ہو کہ ان حدیثوں میں براق کا کچھ ذکر نہیں ہے)۔

بخاری اور مسلم اور نسائی میں مالک ابن صعصعہ کی حدیث ہے جس سے پایا جاتا ہے کہ براق پر سوار ہوکر جبریل کے ساتھ گئے۔

مسلم اور نسائی میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ آنحضرت۔ نے فرمایا کہ میں براق پر سوار ہوا اور بیتالمقدس تک پہنچا ۔

ترمذی میں انس بن مالک کی حدیث ہے کہ سوار ہوتے وقت براق نے شوخی کی اور جبریل نے آس سے کہا کہ تو مجد کے ساتھ اس طرح شوخی کرتا ہے ۔ کوئی تجھ پر سوار نہیں ہوا جو مقبول ہو خدا کے نزدیک ان سے زیادہ ۔ راوی نے کہا کہ براق ندامت سے پسینہ پسینہ ہو گیا ۔

اور سب سے زیادہ عجیب روایت وہ ہے کہ جو ہزار نے اور سعید ابن منصور نے ابو عمران جونی سے اور اس نے انس سے مرفوعاً بیان کی ہے ۔ کہ پیغمبر خدا نے فرمایا کہ میں بیٹھا تھا کہ جبریل آئے اور میرے دونوں کندھوں کے بیچ میں ھاتھ مارا پھر ھم دونوں ایک درخت کے پاس گئے جس میں پرندوں کے گھونسلے رکھے تھے ۔ ایک میں جبریل اور ایک میں میں بیٹھ گیا ۔ پھر وہ گھونسلے بلند ھوئے ۔ یہاں تک کہ زمین و آسان کو گھیر لیا ۔

>۔ بیت المقدس میں براق کے باندھنے کا اختلاف مسلم میں انس بن مالک کی حدیث ہے کہ آنحضرت نے فرمایا کہ میں نے براق کو آس کنڈے سے باندھ دیا جس سے سب پیغمبر باندھتر تھر۔

ترمذی میں بریدہ کی حدیث ہے کہ جبریل نے انگلی کے ا اشارہ سے ایک پتھر کو شق کیا اور اُس سے براق کو باندھ دیا ۔

۸۔ بیت المقدس پہنچنے سے پہلے کہاں کشریف
 لر گئر اور کیا کیا

نسائی میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ آنحضرت نے فرمایا کہ میں سوار ہو کر جبریل کے ساتھ چلا اور طیبہ میں آترا اور نماز پڑھی جہاں کہ ھجرت ھوئی بھر طور سینا پر آترا اور کماز پڑھی جہاں اللہ نے موسئی سے کلام کیا تھا۔ پھر بیت لحم میں آترا اور کماز پڑھی جہاں حضرت عیسلٰی علیه السلام پیدا ھوئے۔ پھر میں بیت المقدس میں پہنچا جہاں کمام انبیاء جمع تھے اور میں نے امام بن کر سب کو کماز پڑھائی۔

اس واقعہ کا سوائے اس حدیث کے کسی اور حدیث میں ذکر نہیں ہے۔

 ۹۔ اختلافات مقامات انبیاء آسمانوں پر جن سے ملاقات هوئی

(۱) ادریس

بخاری میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ ادریس دوسرے آسان پر ملے ۔

بخاری اور مسلم اور نسائی میں مالک ابن صعصعه کی حدیث ہے کہ ادریس چوتھے آسان پر ملے ۔

مسلم میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ ادریس چوتھے آسان پر ملے ۔

نسائی میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ ادریس پانچویں آسان پر ملے ۔

(۲) هارون

بخاری اور نسائی میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ ہارون چوتھے آسان پر ملے ۔

بخاری اور مسلم اور نسائی میں مالک ابن صعصعه کی حدیث ہے که هارون پانچویں آسان پر ملر ۔

مسلم میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ ہارون پانچویں آسان پر ملر ۔

(۳) موسلی

ُ بخاری اور مسلم اور نسائی میں مالک ابن صعصعه کی حدیث ہے که موسلی چھٹے آسان پر ملے ـ

مسلم اور نسائی میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ موسلی چھٹے آسان پر ملے ۔

بخاری میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ موسلی ساتویں آسان پر ملے ۔

(۲) ابراهیم

بخاری اور مسلم میں ابوذر کی حدیث ہے کہ ابراہیم چھٹے آسان پر ملر ۔

بخاری میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ ابراہیم چھٹے آسان پر ملے ۔

بخاری اور مسلم اور نسائی میں مالک ابن صعصعه کی حدیث ہے کہ ابراہیم ساتویں آسان پر ملے ۔

مسلم اور نسائیٰ میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ ابراہیم ساتویں آسان پر ملر ۔

حليه موسني

بخاری میں ابوہریرہ کی اور مسلم میں جابر کی اور ابوہریرہ کی ترمذی میں حدیث ہے جن میں حضرت موسلی کا دبلا یا چھریرہ ہونا بیان ہوا ہے ـ

بخاری میں عبد اللہ ابن عمر کی حدیث ہے جس میں موسلی کا موٹا ہونا بیان ہوا ہے ۔

بخاری اور مسلم میں عبد اللہ ابن عباس کی حدیث ہے جس میں بیان ہوا ہے کہ حضرت موسلی کے گھونگریالے بال تھے ۔

بخاری میں ابوہریرہ کی اور عبد اللہ ابن عمر کی اور مسلم اور

ترمذی میں ابو ہریرہ کی حدیث ہے جس میں حضرت موسلی کے سیدھے لمبے بال بیان ہوئے ہیں ـ

حليه عيسني

بخاری اور مسلم میں عبد اللہ ابن عباس کی حدیث ہے جس میں حضرت عیس*نی کے لمبے ب*ال ہونے معلوم ہوتے ہیں۔

بخاری میں عبد اللہ ابن عمر کی اور بخاری اور مسلم میں عبد اللہ ابن عباس کی حدیث ہے جس سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت عیسلی کے گھونگریالے بال تھے۔

(۵) ذریات آدم و بکاء آدم

بخاری اور مسلم میں ابوذرکی حدیث ہے کہ پہلے آسان پر آدم سے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم ملے اور آدم کے دائیں اور بائیں آن کی ذریات تھی ۔ دائیں طرف والوں کو دیکھ کر روتے تھے کہ وہ جنتی ھیں اور بائیں طرف والوں کو دیکھ کر روتے تھے کہ وہ دوزخی ھیں ۔

باق حدیثوں میں سے کسی حدیث میں اس واقعہ کا ذکر ہمیں ہے۔

بكاء موسلي

بخاری اور مسلم اور نسائی میں مالک ابن صعصعه کی حدیث ہے کہ جب آنحضرت حضرت موسلی سے سل کر آگے بڑھ تو حضرت موسلی روئے که اے خدا یه لڑکا جو میرے بعد مبعوث هوا اس کی است کے لوگ میری است کے لوگوں سے زیادہ جنت میں جائیں گے ۔

باقی حدیثوں میں سے کسی حدیث میں اس واقعہ کا ذکر نہیں ہے ۔

١٠- تخفيف نمازون مس

بخاری اور مسلم میں ابوذرکی حدیث ہے اور نسائی میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ آنحضرت موسلی اور خدا کے پاس تخفیف کماز کے لیے جتنی دفعہ آئے گئے ہر مرتبہ ایک حصہ کمازوں کا معاف ہوا۔ تعداد کچھ نہیں بیان کی۔

بخاری اور نسائی میں مالک ابن صعصعه اور انس ابن مالک کی حدیثیں هیں جن سے معلوم هوتا هے که هر دفعه کے جانے میں دس کمازیں معاف هوئیں اور آخر کو پایخ رہ گئیں ۔

مسلم میں انس ابن مالک کی حدیث ہے جس سے معلوم ہوتا ہے کہ هر دفعه میں پانخ بازیں معاف هوئیں ۔

بخاری اور نسائی میں ابن مالک کی حدیث ہے کہ پانچ کمازیں مقرر ہونے کے بعد بھی موسلی علیہ السلام کے کہنے سے آنحضرت خدا کے پاس معافی کے لیے گئے مگر قبول نہ ہوئی اور اور حدیثوں میں ہے کہ پانچ کمازوں کے مقرر ہونے کے بعد آنحضرت نے موسلی علیہ السلام سے کہا کہ اب تو مجھ کو خدا کے پاس جانے میں شرم آتی ہے۔

متعدد حدیثوں سے معلوم هوتا ہے که سدرة المنتہلی پر پہنچنے سے پہلے کماز فرض هوئی تھی اور بعض میں مذکور ہے که سدرة المنتہلی پر پہنچنے کے بعد کماز فرض هوئی ۔

١١_ اختلافات نسبت سدرة المنتهني وبيت المعمور

مسلم اور ترمذی اور نسائی میں عبداللہ ابن مسعود سے حدیث ہے کہ سدرۃ المنتہلی چھٹے آسان پر ہے ۔

بخاری اور مسلم میں ابوذرکی حدیث ہے کہ سدرۃ المنتہلی سب آسانوں کے بعد ہے اور سدرۃ المنتہلی پر پہنچنے سے پہلے نماز فرض ہوئی ۔

بخاری اور نسائی میں مالک ابن صعصعه کی اور مسلم میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ بیتالمعمور سب آسانوں کے بعد ہے اور آس کے بعد سدرۃ المنتہلی ہے اور کماز سدرۃ المنتہلی ہر پہنچنے کے بعد فرض ہوئی ۔

بخاری اور مسلم میں مالک ابن صعصعه کی دوسری حدیث ہے کہ ساتوں آسانوں سے گزر کر سدرۃ المنتہلی پر پہنچے اور اس کے بعد بیت المعمور میں اور اس کے بعد بماز فرض ہوئی ۔

بخاری اور نسائی میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ ساتوں آس کے بعد نماز آس کے بعد نماز فرض ہوئی ۔

۱۲ـ الوان سدرة المنتهٰی اور آنحضرت صلعم کا سجدہ کرنا

بخاری اور مسلم میں ابوذرکی حدیث ہے جس میں بیان ہے کہ میں سدرة المنتہلٰی کے پاس پہنچا اور اُس پر ایسے رنگ چھائے ہوئے تھے جن کی حقیقت کو میں نہیں جانتا ۔

بخاری میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ پھر وہ یعنی آنحضرت ساتویں آسان سے اوپر گئے جس کا علم سوائے خدا کے کسی کو نہیں بہاں تک کہ سدرۃ المنتہلی کے پاس پہنچے اور خدا تعالٰی آن سے نزدیک ہوا پھر اور بھی نزدیک ہوا بہاں تک کہ دو کانوں کا یا اس سے بھی کم فاصلہ رہ گیا پھر خدا نے آن کو وحی بھیجی اور بچاس نمازیں مقرر کیں ۔

مسلم میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ آنحضرت نے فرمایا سدرة المنتہلی کی نسبت کہ جب اس پر حکم اللہی سے چھا گیا جو چھانا تھا تو اس کی حالت بدل گئی کسی انسان کی طاقت نہیں ہے کہ اُس کے حسن کی تعریف کر سکے ۔

مسلم اور ترمذی اور نسائی میں عبدالله ابن مسعود کی حدیث ہے آس میں قرآن محید کی اس آیت کی (اذینغشی السدرة ماینغشی) تفسیر میں یہ لکھا ہے کہ اس سے مطلب ہے سونے کے پروانوں سے یعنی سونے کے پروانے (یعنی پتنگر) درخت پر چھائے ہوئے تھے۔

نسائی میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ آنحضرت نے فرمایا کہ پھر ھم ساتوں آسانوں بعد سدرة المنتہلی کے پاس پہنچے پھر میں سجدہ کے لیے جھکا یعنی سجدہ کیا۔

١٣ ـ سدرة المنتهني كي نهريس

بخاری اور مسلم اور نسائی میں مالک ابن صعصعه کی حدیث ہے اس میں لکھا ہے که سدرة المنتہلی کی جڑ میں سے چار نہریں درین نکلتی ہیں دو پوشیدہ اور دو ظاہر ۔ دونوں پوشیدہ نہریں جنت میں ہتی ہیں اور دو ظاہر نیل اور فرات ہیں ۔

بخاری میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ آمانی دنیا یعنی سان اول پر دو نہریں بہتی ہوئی دیکھیں ۔ آنحضرت نے جبریل سے ریافت کیا کہ یہ کیا نہریں ہیں جبریل نے کہا یہ نیل و فرات کی اصل ہیں ۔

اور کسی حدیث میں سوائے ان حدیثوں کے نہروں کا ذکر ہیں ہے۔

۱۲_ شراب اور دوده

مسلم میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ آنحضرت نے رمایا کہ جب میں بیتالمقدس کی مسجد سے کماز پڑھ کر نکلا و جبریل نے دو پیالے پیش کیے ایک شراب اور ایک دودھ کا ۔ مسلم میں مالک ابن صعصعه کی حدیث ہے کہ بیتالمعمور

میں شراب اور دودھ کے دو پیالے پیش کیےگئے ۔

بخاری میں مالک ابن صعصعه کی حدیث ہے که بیت المعمور میں تین پیالے پیش کیے گئے ایک دودھ کا ، ایک شراب کا اور ایک شہد کا ۔

10_ جنت میں داخل ہونا

بخاری اور مسلم میں ابوذر کی حدیث ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سدرۃ المنتہلی کے بعد جنت میں داخل ہوئے ۔ اور کسی حدیث میں جنت میں جانے کا ذکر نہیں ہے ۔

١٦_ کو ثر

بخاری میں انس ابن مالک کی حدیث ہے کہ آنحضرت نے آسان اول پر ایک اور نہر دیکھی جس پر موتی اور زبرجد کے محل تھے جریل نے بتایا کہ یہ نہر کوثر ہے۔

اور کسی حدیث میں کوثر کا ذکر نہیں ھے۔

14 سماعت صريف الاقلام

بخاری اور مسلم میں ابوذر کی حدیث ہے کہ آنحضرت نے فرمایا کہ میں ایسے مقام پر پہنچا جہاں سے قلموں کے چلنے کی آواز آتی تھی ۔

اور کسی حدیث سی یه مضمون نهیں ـ

۱۸_ آسمانوں پر جانا بذریعہ معراج کے

اختلاف اقوال علماء نسبت اسرائے اور معراج کے جہاں هم نے بیان کیے هیں اس میں ابو سعید خدری کی حدیث کے یہ الفاظ نقل کیے هیں ـ

و فی حدیث ابی سعید الخدری عند ابن اسحاق فلما فرغت سما کان فی بیتالمقدس اتی بالمعراج یعنی جو کچه که بیتالمقدس میں هونا تها جب وه هو چکا تو

لائی گئی معراج ۔ معراج کا ترجمہ ہم نے سیڑھی کیا ہے جس کے ذریعه سے بلندی پر چڑھتر ھیں۔

معراج کے معنی سیڑھی کے لینے میں یه سند ہے که فتح الباری فاسا العروج ففي جلد هفتم صفحه ١٦٠ مين علامه ابن حجر نے لکھا ہے یعنی اس روایت کے سوا اور روایتوں سے معلوم هوتا هے که آنحضرت کا آسانوں پر جانا براق پر نه تھا بلکہ معراج پر گئے تھے **جس سے** مراد سیڑھی ھے۔ چناں چه ابن اسحاق کے نزدیک ابو سعید کی حدیث سی اور بہتی کی کتاب الدلائل سى صاف طور ير اس کی تصریج ہے۔ حدیث کے لفظ یه هس که یکایک ایک جویایه خچر کی مانند پتلر کانوں والا لایا گیا جس کو براق کہتے ہیں۔ مجھ سے پہلے پیغمبر اس پر سوار هوتے تھر ۔ س اس پر سوار هوا ـ پهر حديث مي بيان كيا ھے کہ آنحضرت نے فرمایا کہ جب س اور جریل دونوں بیت المقدس مین داخل هوئے ـ میں نے نماز پڑھی ۔ پھر معرمے پاس معراج یعنی ایک سیرهی

غير هذه الروايت سن الاخبار انه لم يكن على البران بلرق المعراج و هـو السلـم كـما وقـع مصرحـا به فی حدیث ایی سعید عند ابن اسحلق و البيهةي في الدلائل و لفظه فاذا انا بد ابة كالبغل مضطرب الاذنين يقال له المراق و كانت الانبياء تركبه قسل فركبته فذكر الحديث قال ثم دخلت انا و جبريل بيت المقدس فضليت ثم اتيت بالمراج و في روایت ابن اسحلٰق سمعت رسول الله صلى الله عدليه وسلم يقول لما فرغت سماكان ف بيت المقدس اتى بالمعراج فلم اوقط شيئاكان احسن سنه و هوالذي يحد اليه الميت عينية اذا حضرفا

لائی گئی اور ابن اسحاق کی

روایت میں ہے که میں نے

رسول الله صلى الله عليه وسلم

سے سنا کہ فرماتے تھرکہ

بیت المقدس میں جو کچھ ھونا

تھا میں آس سے جب فارغ ھوا تو

صعدني صاحبي فيه حتلي انتهی بی الی باب من ابواب السماء الحديث وفي رواية كعب فوضعت له مرقاة من فضه و مرقاة سن ذهب حتي عرج هو و جبريل و في رواية لا بي سعيد في شرف المصطفيلي انه اتى بالمعراج سن

معراج یعنی سیڑھی لائی گئی جس سے زیادہ خوبصورت چیز سی نے کبهی نهی دیکهی اور وه ایسی خوش نما تھی کہ مرنے والا جنة الفردوس وانه منضد عین جان کنی کے وقت اُس کے۔ باللولؤ وعن يمينه ملائكة دیکھنر کے لیر آنکھی کھول و عن يساره ملائكة _ (فتح البارى جلد هفتم دے ۔ پھر سرے ساتھی یعنی جریل نے محھ کو سیڑھی پر صفحه ١٦٠) چڑھایا ہاں تک کہ آسان کے ایک دروازہ کے پاس لے پہنچا اور کعب کی روایت میں ہے کہ ایک سیڑھی چاندی کی اور ایک سونے کی رکھی گئی یہاں تک کہ آنحضرت اور جبریل اس پر چڑھے اور شرف المصطفلي مين ابو سعيد كي روايت مين هے كه مهشت سے ايك سیڑھی لائی گئی جس میں ہوتی جڑے ھوئے تھر آس کے دائیں

طرف بھی فرشتے اور بائیں طرف بھی فرشتر تھر ۔

اگر ان روایتوں پر کچھ اعتبار ہو سکر تو آنحضرت صلی اللہ علیه وسلم کی معراج مثل حضرت یعقوب کی معراج کے ہو جاتی ہے جس کا ذکر توریت سیں ہے۔

توریت میں لکھا ہے کہ '' پس یعقوب از بیر شبع بیروں آمد و محاران روانه شد ـ و بجائے رسید که در انجا بیتوتت نمود زیرا که آفتاب فرو مے رفت و از سنگ هاے آن مکان گرفته بجهت بالین گذاشته و هان جا خوابید ۔ پس بخواب دید که اینک نردبانے بزدین برپا گشته سرش بآسان مے خورد و اینک فرشتگان خدا ازان ببالا وزیر می رفتند واینک خداوند بران ایستاده گفت من خداوند خدا پدرت ابراهیم و هم خداے اسحاقم این زمینے که بران می خوابی بتو و بذریت تو می دهم ۔ و ذریت تو مانند خاک زمین گردیده بمغرب و مشرق و شال و جنوب منتشر خواهند شد و هم از تود از ذریه ات کمامی قبائل زمین متبرک خواهند شد ۔ و اینک من با تو ام و هر جائے که میروی ترا نگاهداشته باین زمین باز پس خواهم آورد و تا بوقتیکه آنچه بتو گفته ام بجائے آورم ترا وا نخواهم گذاشت ۔ و یعقوب بوقتیکه آنچه بتو گفته ام بجائے آورم ترا وا نخواهم گذاشت ۔ و یعقوب از خواب خود بیدار شده گفت بدرستی که خداوند درین مکان ست و من ندانستم ۔ پس ترسیده گفت که این مکان چه ترسناک است این نیست مگر خانه خدا و این است دروازه آسان ۔ (کتاب پیدائش باب ۲۸ ورس ، الغایت ۱۲) ۔

اختلافات احادیث کا نتدجه

ان واقعات کا جن کا حدیثوں میں بیان ہے بلکہ ان سے بھی زیادہ تر عجیب باتوں کا خواب میں دیکھنا نا ممکن نہیں ہے مگر ہم نے آن کے اختلافات اس لیے دکھائے ہیں تاکہ معلوم ہو کہ بہ سبب آن اختلافات کے یقین نہیں ہو سکتا کہ در حقیقت کیا حالات آنحضرت نے دیکھے تھے اور کیا واقعات خواب میں گذرہے تھے اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے کیا فرمایا تھا اور راوی کیا سجھا اور کس قدر تغیر الفاظ ہیں ، طرز بیان میں ، واقعات میں اور معانی الفاظ میں ہو گیا اور کس راوی نے اپنی سمجھ کے مطابق کون کون سی باتیں آن میں زیادہ کر دیں اور کون سی کم کیوں کہ آن حدیثوں سے معلوم ہوتا ہے کہ بہت جگہ راویوں کے کیوں کہ آن حدیثوں سے معلوم ہوتا ہے کہ بہت جگہ راویوں کے

قول آن حدیثوں میں شامل ھیں۔ پس جس قدر قرآن مجید میں مذکور ھے کہ '' لنریہ من آیاتنا انہ ھوائسمیع البصیر'' اس قدر تو تسلیم ھے کہ خدا نے اُس خواب میں کچھ اپنی نشانیاں آنحضرت کو دکھلائیں مگر یہ ثابت نہیں ھوتا کہ کیا نشانیاں دکھلائیں اور اگر ھم آیات سے احکام مراد لیں جیسا کہ قرآن مجید کے بہت سے مقاموں میں آیات سے احکام مراد ھیں اور '' لنریہ '' سے ارادت قلمی یعنی کسی بات پر دلی اور کامل یقین ھو جانا سمجھیں تو آیت کے یہ معنی ھوتے ھیں۔ تاکہ ھم اُس کو یقین کرا دیں اپنے بعض حکموں پر اور یہ الفاظ جو حدیثوں میں آئے '' فاوحی الی ما اوحی '' اور '' فرضت علی اُمتی خمسون صلوۃ '' اسی پر دلالت کرتے ھیں کہ آیات سے احکام مراد ھیں۔

هم آوہر بیان کر چکے هیں که اس باب میں که معراج جاگتے میں اور بجسده هوئی تهی یا سوتے میں بروحه بطور خواب کے ۔ علائے متقدمین کے تین مذهب هیں مگر شاه ولی الله صاحب نے ایک چوتھا مذهب اختیار کیا تھا که جاگتے میں اور بجسده هوئی مگر بجسده برزخی بین المثال والشہادة ۔ چوتھے مذهب کو هم چهوڑ دیتے هیں کیوں که یه تو آنهی کی رائے یا مکاشفه هے جس کا پته نه کسی روایت میں هے نه اقوال علماء میں سے کسی قول میں ۔ بلکه حقیقت یه معلوم هوتی هے که شاه ولی الله صاحب کو بھی معراج بالجسد هونے پر یقین نہیں هے ۔ صاف صاف نہیں کہتے اور بجسد برزخی معراج کا بیان کرتے هیں ۔ جس کا صریح کمہتے اور بجسد برزخی معراج کا بیان کرتے هیں ۔ جس کا صریح مطلب یه هے که جسد اصلی موجوده کے ساتھ معراج نہیں هوئی ۔ اور اس لیے آن کا مذهب بھی انهی لوگوں کے ساتھ شامل هو جاتا هے جو کہتے هیں که بجسده معراج نہیں هوئی ۔

شاہ ولی اللہ صاحب کے مذہب کو چھوڑ کر تین مذہب باقی

رہ جاتے ہیں ۔ یعنی معراج کا ابتدا سے انتہا تک بجسدہ اور حالت بیداری مس هونا یا مکه سے بیت المقدس تک مجسده اور حالت بیداری می هدونا اور آس کے بعد بیت المقدس سے آساندوں اور سدرة المنتهلي تک همونا بمروحه يما معراج كا جس ميں اسرى بهى داخـل ہے ابتدا سے انتہا تک بروحہ اور سونے کی حالت میں یعنی خواب میں ہونا ۔ ہم پہلی دونوں صورتوں کو تسلیم نہیں کرتے لیکن ہر ایک صورت کو معه اس کے دلائل کے بیان کرتے هیں۔

صورت اول یعنی معراج بجسده ابتدا سے انتہا تک بحالت ببداري

اس میں کچھ شک نہیں کہ مت بڑا گروہ علماء کا اس بات کا قائل ہے کہ مراج ابتدا سے انتہا تک حالت بیداری میں اور عسده ھوئی تھی ۔ مگر اس کے ثبوت کے لبر آن کے پاس ایسی ضعیف دلیلی هیں جن سے امر مذکور ثابت نہیں هو سکتا ـ

ملی دلیل آن کی یه هے خدا نے فرمایا هے " اسری بعبده " اور عبد جسم اور روح دونوں کو شامل ہے۔ اس لیے ستعین ہوا کہ معراج میں آمخرت کا جسم اور روح دونوں گئے تھے۔

تفسیر کبیر میں لکھا ہے۔ کہ عبد نام ہے جسم اور روح ان العبد اسم لمجموع دونوں كا ـ پس ضرور هوا كه البجسد والروح فوجب ان اسرا مين جسم اور روح دونون يكون الاسراء حاصلا لمجموع گئے هوں پهر اس پر بحث ہے كه انسان جسم یا روح کا یا محموع

(تفسیر کبیر جلد ہم صفحہ ۲۰۱ کا نام ہے۔

اور شفاہے قاضی عیاض میں ہے کہ سعراج کا واقعہ اگر لوكان منا ما لقال خواب هوتا توخدا فرماتا بروح عبده اور بعبده نه کهتا مگر

بروح عبده ولم يقل بعبده ـ

البجسد والروح ـ

(شفامے قاضی عیاض وہ اس طرح پر کلام عرب کی صفحہ ۸٫) کوئی مثال نہیں بتاتے ۔

دوسری دلیل آن کی یه هے که سرے پر خدا نے فرمایا هے '' سبحان الذی '' اور سبحان کا لفظ تعجب کے موقعه پر بولا جاتا هے اگر اسرا اور معراج خواب میں هوتی تو کچھ تعجب کی بات نه تهی ۔ اس سے ظاهر هے که معراج حالت بیداری میں اور بجسده هوئی اور یه عجیب واقعه تها اس لیے خدا نے شروع میں فرمایا '' سبحان الذی ''۔

تیسری دلیل آن کی یه هے ۔ که انهوں نے سورۂ والمنجم ما زاغ المبصر وسا کو بهی معراج سے متعلق طغی و لوکان مناما ما کانت سمجھا هے ۔ سورۃ نجم میں آیا فیہ ایۃ ولا سعجزۃ ۔

هدائے قاضی عیاض ، صفحه میں تکاہ اور نه مقصد سے آگے بڑھی (شفائے قاضی عیاض ، صفحه میں تو اس میں نه کوئی نشانی اور اگر معراج هوتی سوتے میں تو اس میں نه کوئی نشانی هوتی نه معجزہ اور جب امر واقع کو بصر کی طرف منسوب کیا هے تو اس سے ثابت هوتا هے که معراج رویت عینی تهی نه رویت قلبی۔ چوتهی دلیل آن کی یه هے که حضرت عائشه نے سورہ والنجم کی ایک آیت کی تفسیر میں اس بات سے انکار کیا هے که آنحضرت کی ایک آیت کی تفسیر میں اس بات سے انکار کیا هے که آنحضرت فرقی تو خدا کو آنکھوں سے دیکھا هے اور اگر معراج خواب میں هوئی میں شوتی تو حضرت عائشه اس سے انکار نه کرتیں ۔ شفاے قاضی عیاض میں لکھا هے ۔

هاری مراد اس حدیث سے هے جس سے حضرت عائشه کا یه صحیح الدی یدل علیه قول معلوم هوتا هے که آنحضرت صحیح قولها انه بجسده کا معراج جسانی تها ـ کیوں که لا نکارها ان تکون رویاه لربه انهوں نے اس بات کا انکار کیا۔

رویا عبن ولو کانت عندها ہے که آنحضرت نے خدا کہ آنکھون سے دیکھا ۔ اگر واقعہ مناما لم تنكره ـ معراج آن کے نزدیک خواب هوتا (شفامے قاضی عیاض صفحہ و ۸) تو هرگز اس بات کا انکار نه کرتس ـ

مسروق کہتر ہیں کہ میں حضرت عائشہ کے پاس تکیہ لگائے بیٹھا تھا۔ آنھوں نے کہا اے ابو عائشه تين باتي هي جو شخص آن سی سے ایک بھی زبان پر لاتا ہے خدا پر جت بڑا متان باندھتا ہے۔ میں نے کہا وہ باتس کیا ہیں ۔ کہا جو شخص گان کرے کہ مجد صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنر رب کو دیکھا۔ وه خدا پر ست برا ستان باندهتا ھے۔ مسروق کہتر میں کہ میں تکیه لگائے بیٹھا تھا۔ یکایک سیدھا ھو بیٹھا اور میں نے کہا اے آم المومنین مجھ کو دم لینر دو اور جلدی نه کرو کیا الله تعاللي نے نہیں فرمایا ہے کہ ہے شک مجد صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کو یعنی خدا کو افق مین پر دیکھا اور اس نے دوبارہ اس کو یعنی خدا کو دیکھا۔ حضرت عائشه نے فرمایا که س

عـن مـسـروق قـال كنت متكيا عند عايشة ـ فقالت يا ابا عائشة ثلاث سن تكلم بواحدة سنهن فقد اعظم على الله الفريه قلت ساهن قالت من زعم رای ربه فقد اعظم علی الله الفريه قال و كنت متكيا فجلست فقلت يا ام الموسنين انظريني ولا ترحجليني الم يقل الله تعالي "ولقد راه بالافق المبين ولقد راه نزلة اخرى " فقالت اول هذه الاسة سال عنن ذلك رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال انما هو جبريل عليه السلام لم ره على صورته اللتي خلق عليها غرها

بين المرتين وايته منهبطا من الساء ساد اعظم خلقه مابين السياء الى الارض فقالت اولم تسمع ان الله عزو جل يـقـول " لا تـدركـه الا بـصار وهدو اللطييف الخيير" اوله تسمع ان الله عز وجل يقول "وساكان لبسران يكلمه الله الاوحيا اومن وراء حجاب او يرسل رسولا" الى قوله "على حكم" -عائشہ نے فرمایا کیا تم نے نہیں سنا خدا فرماتا ہے کہ نہیں پاتیں اس کو نظربن اور وہ پاتا ہے سب نظروں کو اور وہی ہے باریک

اس آمت میں سب سے پہلی ھوں حس نے رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم سے اس آیت کا مطلب یوچها _ آنحضرت نے فرمایا که اس سے مراد جریل علیهالسلام ھیں میں نے آس صورت میں حس بر وہ پیدا ھوئے ھیں آن کو دو دفعہ کے سوا نہیں دیکھا۔ میں نے آن کو آساں سے آترتے دیکھا کہ آنھوں نے اپنر حبثہ کی بڑائی سے زمین اور آسان کی درمیانی (صحیح مسلم ، صفحه ۹۸) فضا کو بهر دیا تها ـ حضرت

آبت تک ۔ پانچویں دلیل آن کی یہ ہے کہ قریش نے آنحضرت کے بیت المقدس جانے اور آن کے دیکھنے سے انکار کیا۔ اگر وہاں تک جانا بطور خواب دیکھنر کے هوتا تو قریش کو آس سے انکار اور تنازع کرنے کا کوئی مقام نہ تھا۔ اس سے ثابت ہوتا ہے کہ معراج حالت بیداری میں اور بجسدہ تھی ۔ جس کے سبب سے قریش نے جھگڑا کیا فتح الباری شرح بخاری اور نیز بخاری میں جو کچھ

اس کی نسبت لکھا ہے اس کو ہم اس مقام پر لکھتے ہیں ۔

دیکھنر والا خبردار اور کیا تو نے نہیں سنا خدا فرماتا ہے نہیں ممکن ھے کسی انسان کے لیر کہ خدا آس سے باتی کرمے مگر

بطور وحی کے یا پردے کی اولے سے یا کوئی رسول بھیجتا ہے آخر

وذهب بعضهم الى ان الا سراء كان في السقطة و المعراج كان في السنام او ان الاختلاف في كـونـه يقظه او سناما خاص بالمعراج لا بالاسراء ولذلك لما اخب به قریشا کذبوه فی الاسراء و استبعد وا وقوعه و له يتعرضواللمعراج و ايضاً فان الله سبحانه و تعالى قال "سبحان الذي اسرى بعبده ليلا من المسجد الحرام الى المسجد الاقصلي" فلو وقع المعراج في اليقظة كان ذلك ابلغ في الذكر فلما لم يقع ذكره في هذا الموضع مع كون شانه اعجب واسره اغرب سن الاسراء بكيشودل انه كان مناسا و اسا الاسراء لو كان منا ما لسما كنذبوه ولا استنكروه لجواز وقوع مشل ذلک و ابعد منه لاحاد لناس ـ

(فتح البارى ، جلد ، صفحه ۱۵۱)

فتح الباری میں لکھا ہے کہ بعض لوگوں کا مذہب یہ ہے که اسرا حالت بیداری می اور معراج سونے کی حالت میں هوئی تهی یا اس بات سی اختلاف که جاگتر مین هوئی یا سوتے میں خاص معراج سے متعلق هے نه اسرا سے ۔ اسی سبب سے جب رسول خدا نے قريش کو اس واقعه کي خبر دي تو آنهوں نے بیتالمقدس جانے کی تکذیب کی اور اس وقوع کو ناممکن خیال کیا اور معراج سے کچھ تعرض نہیں کیا نيز خدا تعاللي فرماتا هي "پاک ہے وہ جو لےگیا اپنے بندہ کو ایک رات مسجد حرام سے مسجد اقصلی تک '' اگر معراج جاگتر میں هوئی هوتی تو اس کا ذکر كرنا اور بهي زياده بليغ هوتا ـ مگر جب خدا نے اس کا ذکر ماں نہیں کیا حالاں کہ اس کی کیفیت اسرا سے ست عجیب اور اس کا قصه اس سے زیادہ نادر تها ـ تو معلوم هوا که معراج خواب میں هوئی تھی ـ لیکن اسرا اگر خواب میں هوتی تو

قریش اس کی تکذیب نه کرتے اور نه انکار کرتے کیوں که ایسی اور اس سے زیادہ دور از قیاس باتیں لوگوں کو خواب میں دکھائی دے سکتی هس ـ

اور بخاری کی ایک حدیث میں ہے جابر بن عبد الله کہتے ہیں قال جابر بن عبدالله انه که رسول الله صلی الله علیه وسلم سے سنا کہ آپ فرمائے تھے کہ جب قریش نے میری تکذیب کی میں مقام حجر میں کھڑا هوا _ خدا نے بیت المقدس کو ا خبرهم عن آیا ته و میری نظرون مین جلوه گرکر دیا میں اس کی نشانیاں قریش کو (صعیح بخاری ، صفحه ۵۳۸) بتاتا تها اور آس کو دیکهتا

سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول لماكذبني قريش قمت في الحجر فعجلي انا انظر اليه -

جاتا تھا۔ صحیح مسلم میں بھی مثل صحیح بخاری کے حدیث ہے۔ جس کے الفاظ اور مضمون میں بخاری کی حدیث سے اختلاف ہے -

صحیح مسلم کی ایک حدیث میں ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم نے فرمایا میں نے اپنے آپ کو مقام حجر *میں* دیکھا اس حال میں که قریش مجھ سے بیت المقدس تک جانے کا حال پوچھتے تھے۔ اُنھوں نے بیت المقدس کی ایسی باتس مجھ سے دریافت کیں جو مجھ کو یاد نه تهیں میں ایسا گهبرایا کہ اس سے پہلر کبھی ایسا نہیں گهبرایا تھا۔ رسول خدا فرماتے هس که خدا نے بیتالمقدس

قـال رسول الله صـلى الله عليه وسلم لقد رايتني في الحجر و قريش تسألني عن مسراي فسألتني عن اشياء من بيت المقدس لم اثبتها فكربت كربة ساكربت مشله قبط قبال فرفعه الله لي انظر اليه سا يسألون عن شيء الا انباتهم به -

(صحیح مسلم ، جلد ، ، صفحه ۹۶) عمه سے نزدیک کر دیا میں اس طرف دیکھتا تھا اور وہ جو کچھ مع سے پوچھتے تھے میں آن کو بتاتا تھا۔

چھٹی دلیل آن کی یہ ہے کہ اسہانی کی حدیث سے جو طعرانی نے نقل کی ہے اور شداد ابن اوس کی حدیث سے جو بہتی نے ذکر کی ہے ۔ صاف صاف ظاہر ہوتا ہے کہ آنحضرت کا معراج کو جانا جسم کے ساتھ بیداری کی حالت میں تھا چناں چه ان دونوں حدیثوں کو قاضی عیاض نے کتاب شفا میں نقل کیا ہے اور وہ یہ ہیں ب

حضرت اسمانی سے روایت ہے کہ جب رسول اللہ صلی اللہ و عن اسهانی ما اسری علیه وسلم کو معراج هوئی .. آس نے محھ کو جگایا جب آنحضرت اور هم صبح کی نماز پڑھ چکر تو آپ نے فرمایا اے امتہانی مین نے عشا کی نماز تمھارے ساته اس وادى يعنى مكه مس پڑھی جیساکہ تو نے دیکھا۔ پهر می بیت المقدس گیا اور اس میں نماز پڑھی پھر اس وقت صبح کی نماز تمهارے ساتھ پڑھی جيساكه تم ديكهتر هو اوريه

برسول صلی الله علیه وسلم رات سرمے گھر میں تھر ۔ عشا الا و هـو في بيتـي تـلک کي نماز پڙه کر هارے درميان الليلة صلى العشاء الاخرة سو رهے ـ صبح سے كچھ پہلے و نام بيننا فلماكان قيل رسول الله صلى الله عليه وسلم الفجر اهبنا رسول الله صلى الله عليه وسلم فلما صلى الصبح و صلينا قال يا ام هاني لقد صليت معكم العشاء الاخرة كما رايت بهذا الوادى ثم جئت بيت المقدس فصيلت فيه ثم صليت الغداة سعكم الان کسما تدرون و هـذا بـیـن في انه بجسمه ـ

حدیث معراج کے جسانی ہونے پر صریح دلیل ہے۔ شداد بن اوس نے ابوبکر سے روایت کی ہے کہ اُنھوں نے وعن ابی بکر سن روایت سعراج کی رات کے متعلق

شدادبن اوس عنه انه قال للنبى صلى الله عليه وسلم للنبى صلى الله عليه وسلم ليلته اسرى به طلبتك يا رسول الله البارحتة في مكانك فلم اجدك فاجابه ان جبريل حمله الى المسجد الا قصلي ـ

رسول الله صلى الله عليه وسلم سے كما ميں نے كل رات آپ كو نہيں مكان ميں ڈھونڈا آپ كو نہيں پايا _ آنحضرت نے جواب ديا كه جبريل مجھ كو بيتالمقدس لے گئے تھے ـ يه چھ دليليں ھيں جو حامياں معراج بالجسد نے بيان

(شفاء قاضی عیاض ، صفحه ۸۷ کی هیں ـ

ان تمام دلیلون سے ظاہر ہوتا ہے کہ جو لوگ اس بات کے مدعی ہیں کہ اسرا و معراج بجسدہ اور حالت بیداری میں ہوئی تھی آن کے پاس قرآن مجید سے یا حدیث سے کوئی سند موجود نہیں ہے قرآن مجید سے کہیں بیان نہیں ہوا ہے کہ اسرا یا معراج بجسدہ و حالت بیداری میں ہوئی تھی ۔ صحاح کی کسی حدیث میں اس کی تصریح نہیں ہے بلکہ اگر کچھ ہے تو اس کے برخلاف ہے اور جو دلیلیں بیان کی ہیں وہ نہایت ہی ضعیف اور غیر مثبت مدعا ہیں جیسا کہ ہم بیان کرتے ہیں ۔

پہلی دلیل که لفظ عبد میں جسم و روح دونوں شامل هیں اور اس لیے اسرا و معراج بجسده هوئی تهی ایسی بے معنی هے که اس پر نہایت تعجب هوتا هے اگر خدا یوں فرماتا که ''اسریت ببدی فی المنام من الکعبة اللی المدینة یا اریت عبدی فی المنام کذا و کذا '' تو کیا اس وقت بهی یه لوگ کہتے که عبد میں جسم و روح دونوں شامل هیں اور اس لیے خواب میں مع جسم جانا ثابت هوتا هے۔

جو شخص خواب دیکھتا ہے وہ ہمیشہ متکام کا صیغہ استعال کرتا ہے اور اگر کوئی شخص اس بات پر قادر ہو کہ دوسرے کو

بھی خواب دکھا سکے تو وہ ہمیشہ اس کو مخاطب کرمے گا خواہ نام لے کر یا اُس کی کسی صفت کو بجائے نام قرار دے کر اور آس پر اس طرح سے استدلال نہیں ہو سکتا جیسا کہ ان صاحبوں نے عبد کے لفظ سے استدلال چاہا ہے۔

قرآن مجید میں حضرت یوسف کے اپنے خواب کی نسبت کہا "یا ابت انی رایت احمد عشر کوکبا" اور قیدیوں نے اپنا خواب اس طرح بیان کیا ، ایک نے کہا "انی ارانی اعصر خمرا" دوسرے نے کہا ، "انی ارانی احمل فوق زاسی خبزا" حالاں که یه سب خواب تھے پھر لفظ "انی" پر یه بحث که آس میں جسم و روح دونوں داخل هیں اور خواب میں جو فعل کیا فیالواقع وہ جسانی فعل هی تھا کیسی لغو و بیہودہ بات ھے ۔کیا فیالواقع وہ جسانی فعل هی تھا کیسی لغو و بیہودہ بات ھے ۔خود رسول اللہ علیه وسلم نے اپنے خواب بیان کیے هیں اور دوسروں نے بھی اپنے خواب آنحضرت کے سامنے بیان کیے هیں اور دوسروں نے بھی اپنے خواب آنحضرت کے سامنے بیان کیے هیں جن میں متکلم کے صیغے "رایت" استعال هوئے هیں اور اشخاص کا ذکر آیا ہے جن کو خواب میں دیکھا۔ پس کیا اس پر خواب میں ان اشیاء اور اشخاص کے فیالوقع پس کیا اس پر خواب میں آن اشیاء اور اشخاص کے فیالوقع بسدھا موجود ہونے پر استدلال ہو سکتا ہے۔

اور یه قول که اگر معراج کا واقعه خواب هوتا تو خدا فرماتا "اسری بروح عبده" ایسا هی بیهوده هے جیسا که عبد کے لفظ سے جسانی معراج پر استدلال کرنا ۔ اس قول کے لیے ضرور تھا که کوئی سند کلام عرب کی پیش کی جاتی که خواب کے واقعه پر "فعل بروحه کدا وکدا" بولنا عرب کا محاوره هے پس صاف ظاهر هے که جو دلیل پیش کی هے وہ محض لغوو بیہوده هے اور اس سے مطلب ثابت نہیں هوتا ۔

دوسری دلیل کی نسبت ہم خوشی سے اس بات کو قبول

کرتے ہیں کہ سبحان کا لفظ تعجب کے موقع پر بولا جاتا ہے۔
مگر اس کو اسرا سے خواہ وہ خواب میں ہوئی ہو یا حالت بیداری
میں اور بجسدہ ہوئی ہو یا بروحہ کچھ تعلق نہیں ہے۔ بلکہ اس
کو اس سے تعلق ہے جو مقصد اعظم اس اسرا سے تھا اور وہ
مقصد اعظم خود خدا نے فرمایا ہے '' لنریہ سن آیاتنا انہ
ہوالسمیع البصیر'' اور اسی کے لیے خدا نے ابتدا میں فرمایا
''سیجان الذی''۔

تیسری اور چوتھی دلیل مبنی ہے سورہ والنجم کی چند آیتوں اور سورہ تکویر کی ایک آیت پر که اُنھوں نے اُن آیتوں کو معراج سے متعلق سمجھا ہے حالاں که قرآن مجید سے کسی طرح نصاً یا اشارتاً نہیں پایا جاتا که وہ آیتیں معراج سے متعلق ہیں ۔ علاوہ اس کے کس قدر بعید معلوم ہوتا ہے که سورہ بنی اسرائیل میں جس میں معراج کا ذکر ہے وہاں تو معراج کے حالات نه بیان کئے جاویں اور ایک زمانه کے بعد یا قبل جب سورہ والنجم نازل ہوئی ہو اس میں معراج کا حال بیان ہو ۔ سورہ والنجم سے ظاہر ہے کہ جو وحی آنحضرت صلی اللہ علیه وسلم پر نازل ہوتی تھی اور جس کو جو وحی آنحضرت صلی اللہ علیه وسلم پر نازل ہوتی تھی اور جس کو نازل ہوئی میں کرتے تھے اور آنحضرت کو نعوذ باللہ جھٹلاتے تھے اس کی تردید اور وحی کے سن اللہ ہونے کی تصدیق میں وہ آیتیں نازل ہوئی ہیں اُن کو معراج سے کچھ تعلق نہیں ۔

علما و محدثین کو سورہ و النجم کی آیتوں کے معراج سے متعلق هونے میں اس وجه سے شبه پڑا ہے که بعض راویوں نے معراج کا حال بیان کرنے میں سورہ و النجم کی آیتوں کو بیان کر دیا مثلاً بخاری میں انس ابن مالک سے جو روایت ہے اس کے راوی نے اپنی روایت میں یہ الفاظ کہے ہیں '' ودناالجبار ربالعزة فتدلی حتی کان قاب قوسین اوادنی فاوحی الله الیہ '' اور یہ الفاظ

قریب قریب آنہی الفاظ کے هیں جو سورہ والنجم میں آئے هیں ـ اسی طرح مسلم میں عبداللہ ابن مسعود سے جو روایت ہے اس کے راوی نے اپنی روایت میں یہ الفاظ کہر میں " اذ یخشی السدرة سايغشي " اوريه الفاظ بعينه وهي هي جو سوره والنجم میں آئے هیں ۔ مگر اس سے یه ثابت نہیں هوتا که سورہ والنجم کی آیتی معراج سے متعلق میں کیوں کہ حدیثوں کے راوی اپنر لفظوں میں حدیثوں کا مطلب کرتے تھے اور یہی وجہ ہے کہ اسی بیان کو مختلف راویوں نے مختلف لفظوں میں بیان کیا ہے کسی نے '' فلہا غـشـما (ای السدرة) سن اس الله ساغشی'' کسی نے بیان کیا ہے " نغشيها (اي السدرة) الوان لا ادري ما هي "غرض كه كسي راوی کا حدیث کے مطلب کو قرآن محید کے الفاظ سے تعییر کرنا اس کی دلیل نہیں ہو سکتی کہ وہ الفاظ اس واقعہ سے متعلق ہیں ـ علاوه اس کے سورہ والنجم میں یه آیت ہے '' ولقد راه نزلة اخرى عند سدرة المنتهني " يعني آنحضرت نے اس كو اور ایک دفعہ سدرة المنتہیٰ کے پاس دیکھا ۔ یه حالت ایک دفعه معراج میں آنحضرت پر طاری هوئی تھی سورہ والنجم سے ظاهر هوتا ہے کہ اُس وقت جو وحی آئی تھی اُس وقت بھی وھی حالت طاری هوئی تھی اور لفظ اخری صاف دلالت کرتا ہے کہ جو واقعہ سوره والنجم میں مذکور ہے وہ واقعه معراج سے علیحدہ ہے ـ

سوره والنجم سے جس امر میں وحی آنا معلوم هوتا هے وہ متعلق اصنام عرب تها اور اس لیے ان آیتوں کے بعد خدا نے فرمایا '' افریئم الات والعزی و سنات الشالشة الاخری '' اور آخر کو فرمایا '' ان یتبعوں الا الظن وسا تھوی الانفس و لقد جاءهم سن رہم الهدی۔''

سورہ والنجم کی آیتیں جن کو مفسرین نے معراج سے متعلق

سمجھا ہے اور ہم نے آن آیتوں کو معراج کے متعلق قرار نہیں دیا وہ بلا شبہ تفسیر کے لائق ہیں تاکہ ہارے نزدیک جو ان کی صحیح تفسیر ہے معلوم ہو جاوے اور پھر اس سیں کچھ شبہ نہ رہے اور اگر آن آیتوں کی تفسیر عربی زبان میں هو تو آن کی ضمیروں کا مرجع زیادہ وضاحت سے معلوم ہوگا اس لیر ہم آن کی تفسیر عربی زبان میں معہ اردو ترجمہ کے اس مقام پر لکھتے ہیں ـ

تفسير آيت سورة والنجم

ستارہ کی قسم جب که وہ ڈھلتا ھے۔ نہیں بھٹکا تمہارا صاحب و النجم اذا هـويل ما يعني عد صلى الله عليه وسلم اور نه بهکا اور وه نهیں بولتا اپنی خواهش سے ۔ نہیں ہے وہ بولنا مگر وحی جو بھیجی جاتی ہے سکھایا ہے اس کو یعنی جد صلى الله عليه وسلم كو ـ علمه سی جو ضمیر ہے اس کو آنحضرت صلی الله علیه وسلم کی طرف پهرا جائے ۔ تفسیر کبیر میں بھی لکھا ھے کہ مہتر ھے کہ یہ کہا جاوے کہ ضمر پھرتی ہے محد صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف اور آس کی مراد یہ ہے کہ سکھایا پر^م کو بڑی قوتوں والے صاحب قوت نے اور اس سے مراد خدا ھے یعنی خدا نے مجد حکو سکھایا۔ حو لفظ شدید کا اس آیت می

صاحبكم يعشى محد صلعم و سا غوی ـ و سا پنطق عن الهويل ان هو الا وحيى يوحني علمه يعني محد صلعم في التفسير الكبير و الاولى ان يقال الضمر عائد الي مجد صلى الله عالميله وسلم تقديره علم مجداً۔ شدید القوی ذو سره و هو الله العلى الكبر كمال قال لنفسه أن الله قوى شديد العدقاب وهو شديد المحال وقال اكشر المفسرين و هو جبريل ولانسلمه فاستوى اى جد صلعم و هوای محد صلعم بالافق الاعلىٰ ـ قال صاحب

ھے آس کو خدا تعالیٰ نے ہت جگہ اپنی ذات کے لیر بولا ہے جیسر که ان الله قوی شدید العقاب ـ وهو شديد المحال ـ اکثر مفسروں نے شدید القوی ذو مره یعنی بهت بڑی قوت والر صاحب قوت سے جبریل مراد لی ہے ۔ مگر ہم اس کو نہیں مانتر بلکه یه کهتر هی که اس سے مراد خدا ہے ۔ پھر وہ یعنی مجد صلى انته عليه وسلم كامل هوا اور وه يعني صلى الله عليه وسلم ایک بلند مکان یعنی اعلمی درجه پر تھا۔ هم نے '' استوی '' اور " هدو " کی ضمیر دونوں سے آنحضرت صلى الله عليه وسلم مراد لی ہے۔ تفسیر کسر میں لکھا ھے یہ بات ظاہر ہے کہ اس سے مراد محد صلى الله عليه وسلم هي اور معنی یه هی که وه باعتبار رتبه اور منزلت اور بلند قدر کے ایک عالی مکان سی یعنی درجه میں تھر نه په که وه درحقیقت کسی مکان میں پہنچ گئے تھے۔ اگر یه کہا جاوے که کس

التفسير الكبير وظاهران المراد محد صلى الله عليه وسلم معناه استوی بسکان و هو بالمكان العالى ربه و منزلة في رفعة القدر لا حقيقة في الحصول في المكان فان قيل كيف يجوز هذا و الله تعالني "يقول و لقد راه بالا فق السميين " اشارة الى انه راى حبريل بالافق المبين نقول وفي ذلك المموضع ايضا نقبول كما قلنا هلمنا انه صلى الله علیه وسلم رای حبریل و هـو بالافـق الـممين يـقـول القائل رايت الهلال فيقال ايمن رايمتمه فسيمقمول فوق السطح للمرئى والحبين هو الفارق من انان ای فرق ای هو بالافق الفارق بين درجة الانسان و منزلة المملك فانه صلى الله عليه وسلم انتهلي و بلغ الغاية وصار نبيا كما صار بعض الانبياء نبيا ياتيه الوحي في

نومه و عللي هيئته و هـو و اصل الى الافق الاعلى والافق الفارق بين المنزلتين ـ و ايضا في التنفسر المذكور فان قيل الاحاديث تدل على خلاف سا ذكرته حيث ورد في الاخبار ان جبريل صلى الله عليه وسلم ارى النبي صلى الله عليه وسلم نفسه عيلى صورته فسد المشرق فنقول نحن ما قلنا انه لم يكن وليس في الحديث ان الله تعالی اراد بهده الايه تلك الحكاية حتى يلزم مخالفة الحديث و انما نقول ان جبريد لا رى النبي صلى الله عليه وسلم نفسه سرتين و بسط حناحيه وقد ستر الجانب الشرقى وسده لكن الاية لم ترد لبيان ذلك ـ

ثم قال تعالى ثم دنا فتدلى _ قال في التفسير الكبير الدنوا والتدلي

طرح یه بات درست هوگی ایسی حالت میں کہ خدا نے ایک اور جگه فرمایا هے '' ولـقـد راه بالافق المبين " جس مين اشارہ اس بات کا ہے کہ آنحضرت نے جریل کو آفق سبہ ین پر دیکها تها ـ تو هم آس مقام پر بھی وھی کہیں گے جو اس مقام پر كهتر هس كه آنحضرت صلى الله علیہ وسلم نے حریل کو دیکھا اور وه يعني آنحضرت أفق مسبين یعنی مکان روشن سی با عتبار رتبه و منزلت کے تھر جیسر که کوئی شخص کسی سے کہر که می نے چاند دیکھا اور وه پوچهر که کمان دیکها اور وہ جواب دے که جهت پر ۔ اس سے مراد یه یه هوگی که دیکهنر والا چهت یر تها نه یه که چاند چهت پر تھا اور سبین کے معنی جدا کرنے والر لر، اور يه بنا هے لفظ ابان سے جس کے معنی جدا کرنے کرنے کے میں ۔ یس مطب یه هے که آنحضرت صلی الله علیه

بمعنى واحدكانه قال دني فقرب انتهني - والمعنى عندنا فقرب محد صلى الله عليه وسلم الى ربه او ربه اليه تقربا في المنزلة و الدرجة لا تقربا حسيا قال في الـ قلسير الكبير ان عدا صلى الله عليه وسلم دنا من الخلق والاسة ولان لهم وصاركو احد سنهم فتدلى اى فتدلى اليهم بالقول اللين والدعاء الرقيق فقال ''انا بشر مشلكم يوحي الي " وعلي هذا فيفي الكلام كماكن كانه تعاللي قال الوحي يوحني جبريل عليٰ عد فاستوى مجد وكمل فدنا من الخلق بعد علوه و تدلى اليمهم وبلغ الرسالة ـ

و فى التفسير المذكور ان المراد سنه هو ربه تعالىٰى و هو سنهب القائلين بالجهة والمكان اللهم الا ان يريدالقرب

وسلم انسان اور فرشته کے درجه اور منزلت کے جدا کرنے والے آفق پر تھے کیوں که آنحضرت صلی اللہ علیه وسلم اخیر درجه پر پہنچ گئے تھے اور نبی ھو گئے تھے جس طرح اور بعضے نبی نبی ھوئے ھیں۔ آنحضرت کو وحی ھوتی تھی سوتے سیں اور الحضرت بہنچ افق اعلیٰی کو جو جدا کرنے والا ہے دونوں درجوں کو (یعنی سلکیت اور بشریت کو)۔

اور تفسیر کبیر میں لکھا ہے اگر یہ کہا جاوے کہ جو کچھ ھم نے بیان کیا ۔ حدیثیں آس کے برخلاف دلالت کرتی ھیں جہاں کہ حدیثوں میں آیا ہے کہ اصلی صورت میں آخضرت کو اپنی دکھایا اور مشرق کو گھیر لیا ۔ تو ھم کہیں گے کہ ھم نے ایسا نہیں کہا کہ یہ نہیں ھوا اور حدیث میں یہ بات نہیں ہے کہ اللہ تعالیٰ نے اس آیت میں میں میں اس آیت میں اس آیت میں اس آیت میں اس آیت میں میں اس آیت میں اس آیت میں اس آیت میں میں اس آیت میں آیت میں اس آیت میں آیت میں آیت میں آیت میں آیت میں اس آیت میں آیت میں

بالمنزلة وعلى هذا يكون فيه ما في قدو له صلى الله عليه وسلم حكاية عن ربه تعاللي من تقرب الى شبرا تقربت اليه ذراعا وسن تقرب الى ذراعا تقربت اليه باعا و سن مشى الى اتيته هرولة اشارة الى المعنى المجازى و هذا ما اخترناه و همنا لما بين أن النبي صلى الله عليه وسلم استوى وعلى فر المنزلة العقلية لا في المكان الحسى قال و قرب الله منه تحقيقاً لما في قدوله من تقرب الني ذراعا تيقربت اليه باعال

فكان قاب قوسين او ادنى اى بين محد عليه السلام و بين ربه سقدار قوسين اواقيل و رد هذا على استعمال العرب قال في التفسير الكبيريكون قوس عبارة عن بعد من قاس يقوس عبادة فاوحلى اى اوحى الله الى عبده سا اوحى ما كذب

ادادہ کیا ہے اس بات کے کہنر کا یعنی جو حدیثوں میں ہے تاکہ حدیثوں کی مخالفت لازم آوہے ۔ بیشک هم کهتر هیں که جریل نے اپنے تئیں نی صلی اللہ علیہ وسلم كو دو دفعه دكهايا اور اپنر بازو پھیلا دے اور مشرق کی طرف کو گھر لیا۔ لیکن یه آیت اس بیان می نازل نهی هوئی _ واضح هو که اس مقام پر مم کو اس بات سے محث کرنی کہ جریل نے آنحضرت کو کس طرح ير دكهلايا اور آنحضرت نے آن کو کس طرح پر دیکھا ضرور نہیں ہے۔ کیوں که اس عث کو چهیڑیں تو خلط سبحث هو حاتا هے ـ

اس کے بعد خدا تعالیٰے نے فرمایا پھر وہ قریب ہوا پھر قریب ہوگیا۔ تفسیر کبیر میں لکھا ہے کہ دنو اور تدلی کے لفظ جو اس آیت میں آئے ہیں ۔ آن کے ایک ہی معنی ہیں ۔ کہا جاتا ہے کہ قریب ہوا پھر قریب ہو گیا ۔ هارے نزدیک ان دونوں

لفظوں دنی ۔ فتدلی میں جن کے معنی هل قریب هوا پهر قریب هو گیا ۔ جو ضمریں هی وه خدا اور پیغمبر خدا کی طرف يهرتي هي اور معني يه هي كه قريب هوئے محد صلى الله علیہ وسلم اپنر رب سے یا آن کا رب آن سے یعنی مجد صلی الله علیه وسلم سے ۔ اس قرب سے قریب هونا منزلت اور درجه سی مراد ھے نه ظاہر میں دو چیزوں کے پاس باس ھو جانے سے -تفسیر کبیر میں لکھا ہے کہ عد صلى الله عليه وسلم دنيا كے لوگون سے اور اپنی احت سے قریب ہوئے اور آن کے لیر نرم ھوگئر اور انھی میں سے ایک کی سانند ہو گئر ۔ پھر قریب ہو گئر آن سے نرم باتوں اور نرم کلام سے۔ پھر کہا میں انسان هوں تم جیسا ۔ وحی آتی ہے محھ یر اور اس بنا پر کلام میں دو خوبیاں میں گویا اللہ تعالی نے فرمایا مگر وحی که لاتے هیں جبريل مجد صلى الله عليه وسلم پر

الفواد ساراي قال في التفسير الكسير المشهور انه فواد عد صلى الله عليه وسلم معناه انه ساكنب فواده والام لتعريف سا علم حاله لسيق ذكر مجد عليه الصلوة والسلام في قوله ٬ الى عبده٬٬ و في قوله "و هـو بالافـق الاعـلني" و قوله تعالیٰی "ساضل صاحبکم " والرای هو فواد مد عليه السلام و المرئي الادات العحممة الالهمة -افتمار و ته علر سایری ای علی سا قدر ای مد عليه السلام و لقد راه ای محد صلی الله عملیه وسلم ربه بروية الفواد نزلة و في التفسر الكبير النزول بالقرب المعنوي لا الحسي فان الله تعاللي قد يقرب بالرحمة والفضل سن عسده ولا يراه العسد و لهذا قال موسلي عليه السلام " رب ارنی " ای ازل بعض

يهر مجد صلى الله عليه وسلم كامل اور یورے ہوئے۔ پھر اپنر اونچر هو۔ کے بعد دنیا کے لوگوں سے قریب ہوئے اور انسے نزدیک هوئے اور خدا کا پیغام منچا دیا۔ اسی تفسیر میں ہے که تدلی کی ضمر خدا کی طرف پھرتی ھے اور یہ آن کا مذھب ھے جو خدا کے لیر جہت اور ،کان کے قائل هیں ۔ مگر حاشا و کلا قرب سے سوامے قرب سنزلت کے اورکچھ مراد نہیں ہے اور بلحاظ اس مطلب کے ھی مطلب اس قول کا جس میں آنحضرت نے خداکی طرف سے کہا ھے کہ جو عم سے ایک بالشت نزدیک هوتا ھے میں اس سے ھاتھ بھر نزدیک هوتا هوں اور حو محھ سے هاتھ بھر قریب ہوتا ہے میں اس سے دو هاتھ قریب هوتا هوں اور جو مبری طرف چلتا ہے میں اس کی طرف دوڑتا کر جاتا ھوں ۔ ہاں قرب سے معنی محازی مراد ھیں نہ حقیقی اور مہی ہم نے اختیار کیا ہے اور ماں جب بیان کیا کہ

حجب العظمة و الجلال وادن من العبد بالرحمة و الافضال لاراك اخرى في تفسير ابن عباس سرة اخرى غیر الذی اخبر کم بها عند مدرة المنتهاي عند هاجنة الماوى و هذا دليل على أن الواقعة التي ذكرها في هذه السورة ساعدا واقعة المعراج فانضما سها بواقعة المعراج ليس بصحيح و له دليل ثان في الاية الاتية ـ اذ يغشي السدرة ما يشغى و هـذا اخـبـار عما وقع في المعراج ـ في البخاري عن ابن شهاب عن انس ابن سالک عن ابی ذر ـ ثم انطلق بی حتی انتهی بى الر السدرة المنتهي و غشيها الوان لا ادرى ما هي ـ و في النسائي عن سعيد ابن عبد العزيز عن يزيد ابن ابی مالک عن انس ابن مالک ـ ثم صعد بی فوق سبع سموات فاتينا

سدرة المنتهلي فغشيني ضبابة فخررت ساجدا و شريدك ابن عبدالله في حديثه عن انس ابن سالک اترى بعدة الفاظ من سورة النجم و قال حتى جاء سدرة المنتهلي و دنى الجبار رب العزة فتدلى حتى كان قاب قاوسیان او ادنسی فاوحسی الله اليه فيمايودي الله ما زاغ البصروسا طغلى في التنفسير الكبير واساعلى قولنا غشيها نور فقوله "ما زاغ " اي سا سال عن الانوار "و سا طغنی " ای سا طلب شیئا و راءها ـ ـ ـ ـ و فيه وجه آخر و هـو ان يـكون ذلـك بيان لـوصول مجد صـلى الله وسلـم الى سدرة اليقين الذي لايقين فوقه و لقد رای سن آیات ربه الكبري و هذا كقوله تعاللي في سورة الاسراء راندراله من آياتنا -"

نبی صلی اللہ علیہ وسلم کامل ہوئے اور عقلی مرتبہ میں اونچے ہوئے نہ کہ حسی مرتبہ میں ۔ تو پہر فرمایا کہ خدا آن سے قریب ہوا تحقیقاً جیسا کہ اس نے فرمایا کہ جو میری طرف ہاتھ بھر بڑھتا ہوں ۔ پھر رہ گیا فاصلہ دو بڑھتا ہوں ۔ پھر رہ گیا فاصلہ دو یعنی حضرت بجد علیہ السلام اور یعنی حضرت بجد علیہ السلام اور خدا کے درمیان دو کےانوں کا فاصلہ یا اس سے بھی کم رہے گا فاصلہ یا اسے بھی تھا فاصلہ یا اس سے بھی کم رہے گا فاصلہ یا سے بھی کی دو رہے گا فاصلہ یا سے بھی دو رہے گا

تفسیر کبیر میں لکھا ہے کہ قدوس سے دوری مراد ہو سکتی ہے کیوں کہ قاس یقوس کے معنی ہیں دور ہوا اور دور ہوگا۔ پہر وحی بھیجی یعنی اللہ نے اپنے بندہ کی طرف جو بھیجی۔ نہیں جھٹلایا دل نے اس چیز کو کہ دیکھا تھا۔ تفسیر کبیر میں لکھا ہے۔ کہ مشہور یہ ہے کہ مشہور یہ ہے کہ مشہور یہ ہے۔ کہ مشہور یہ ہے۔

علیه و سلم کا دل مراد ہے۔ معنی یه که ان کے دل نے نہیں جھٹلایا اور لام تعریف کا اس لیے آیا که حضرت مجدعلیه الصلوة والسلام کا پہلے ذکر ہو چکا ہے خدا کے اس قول میں که اپنے بنده کی طرف اور اس قول میں که وہ اونجی آفق پر تھا اور اس قول میں که تمهارا صاحب نہیں بھٹکا۔ اور دیکھنے والا مجد علیه السلام کا دل ہے اور جو دیکھا وہ خدا کی عجیب نشانیاں ھیں۔

کیا تم جهگڑتے ہو اس سے اس چیز ہر کہ اس نے دیکھی یعنی اس پر جو مجد علیه السلام نے دیکھا اور بیشک دیکھا اس کو یعنی مجد صلے اللہ علیہ وسلم نے اپنے رب کو دل کی بینائی سے دیکھا۔ اترتا تفسیر کبیر میں ہے کہ ماں قرب سے نزول معنوی مراد ہے نه حسی کیوں که خدا کبھی رحمت اور مہربانی کے ساتھ اپنر مہربانی کے ساتھ اپنر بندہ سے قریب ہوتا ہے۔ اور بندہ اس کو نہیں دیکھتا ۔ اس لیر موسلٰی علیه السلام نے کہا اے خدا محه کو دکھا یعنی عظمت و جلال کا ایک بردہ ہٹا دے اور رحمت اور مہربانی کے ساتھ اپنر بندہ سے قریب ہو۔ تاکہ تجھ کو دیکھوں ۔ دوسری بار تفسیر ابن عباس میں ہے که دوسری بار نه وہ کہ جس کی تم کو خبر دی سدرۃ المنتلی کے پاس جس کے یاس جنت الماویل ہے یہ آیت اس بات پر دلیل ہے کہ جو واقعه اس سورہ میں بیان ہوا وہ معراج کے سوا ایک اور واقعہ ہے اس کا ملانا واقعهٔ معراج کے ساتھ صحیح نہیں ہے اور اگلی آیت میں دوسری دلیل ہے۔ جب چھا گیا سدرہ پر جو چھا گیا یعنی ڈھانپ لیا سدرہ کو جس نے ڈھانپ لیا یہ واقعۂ معراج کی خبر ہے۔ بخاری میں ابن شہاب سے ، پھر انس بن مالک سے پھر ابوذر سے روایت ہے کہ پھر مجھ کو لر گیا ہاں تک کہ سدرہ المنتہلی

تک پہنچا دیا اور اس پر ایسے رنگ چھائے تھے کہ میں نہیں سمجها وه کیا چیز تهر اور نسائی میں سعید بن عبدالعزیز سے پھر بنید بن ابومالک سے بھر انس بن مالک سے روایت ہے کہ پھر محھ کو سات آسانوں سے اُوپر لے گیا ۔ پھر ہم سدرۃ المنتہنی تک بہنچر اور مجھ پر ایک کہر سی چھا گئی اور میں سجدہ میں گرا۔ اور شریک بن عبداللہ نے اپنی حدیث میں جو انس بن مالک سے روایت کی ہے چند الفاف سورۂ نجم کے بیان کر دئے هیں ۔ اور کہا که مهاں تک که سدرةالمنتنی تک آیا اور خداے رب العزت قریب هوا پهر قریب هو گیا ـ بہاں تک که دو کانوں کا فاصله یا اس سے بھی کم رہ گیا۔ پھر خدا نے اس کی طرف وحی بھیجی جو کچھ بھیجی ۔ نہیں مہکی نظر نہ حد سے بڑھی۔ تفسیر کبیر میں ہے کہ ہارے اس قول کے سوافق کہ اس پر نور چھایا ہوا تھا خدا کے اس قول کے معنی یہ ھوں کے کہ نہ وہ انوار سے دور ھوا۔ نہ سوائے ان کے اور چیز اُس نے طلب کی ۔ اور ایک معنی اس کے اور بھی ہیں ۔ وہ یہ کہ شاید یہ بیان ہو حضرت رسول اللہ کے سدرة الیتن تک پہنچنر کا جس سے بالاتر کوئی یتیں نہیں ہے اور بے شک دیکھیں آس نے اپنر خدا کی بڑی نشانیاں ۔ یہ قول خدا کا ایسا ہے جیسا سورهٔ اسرا میں هے تاکه هم اس کو اپنی نشانیاں دکھائیں انتہی ـ اس تفسیر میں هم نے ''شدید القوی ذومرہ'' سے خدا مراد لی ہے اور اکثر مفسرین نے جبریل مراد لی ہے حالاں که جريل کے مراد لينر کے لير کوئي اشارہ اس مقام ميں نہيں ہے بلکه جب خدا نے سورہ قیامہ میں فرمایا ہے " ان علینا جمعه و قىرآنىد فاذا اقىراناه فابىتىع قىرآنىد " تو نهايت مناسب ہے كه

"علمه شدیدالقوی ذومه" سے خدا مراد لی جاوے لیکن اگر جبریل مراد لی جاوے تو اس وقت یه بحث پیش هو گی که حقیقت جبریل کیا ہے اور نتیجه بحث کا یه هو گا که هو قوتالله وقدرته اور اس وقت شدیدالقوی ذومره سے خدا مراد لینا یا جبریل مراد لینا دونوں کا نتیجه متحد هو جاوے گا۔

سوره والنجم میں یه آیت هے '' فاستوی و هدوبالا فقالاعلی، اسی کی مانند ایک آیت سوره تکویر میں هے جہاں خدا نے فرمایا هے '' لقد راه بالا فق المبین '' صاحب تفسیر کبیر نے جس طرح که وهدوبالافقالاعلی کو آنحضرت صلے الله علیه و سلم سے متعلق کیا هے اسی طرح بالافقالدمین کو بھی آنحضرت سے متعلق کیا هے مگر راه میں جو ضمیر غائب کی هے اس کو جبریل کی طرف راجع کیا هے مگر جب هم ان دونوں آیتوں میں سے ایک کی تفسیر دوسری آیت سے کریں تو سوره تکویر کی آیت کی تفسیر اس طرح پر هوتی هے لقد راه ای را الله مجدابالافق المحبین ای علی مرتبة و مختولة فی رفعة السقدر کیافسر صاحب الله فی الاعلیٰ ۔

پس اس تیسری دلیل میں جو سورۂ نجم کو آیت کی معراج سے متعلق کیا ہے اور شفاء میں قاضی عیاض نے جو یہ حجت پکڑی ہے کہ اگر معراج سوتے میں ہوتی تو اُس میں نه کوئی نشانی ہوتی نه معجزہ، درست نہیں ہے اس لیے که اگر معراج رات کو بجسدہ اور جاگنے کی حالت میں ہوئی ہوتی تو بھی اُس پر معجزہ کا اطلاق نہیں ہو سکتا کیوں که معجزہ کے لیے تحدی اور اُس کا وقوع سب کے سامنے اور کم سے کم منکرین کے سامنے ہونا لازم ہے معراج اگر رات کو چپکے ہوگئی تو وہ معجزہ کیوں کر قرار پا سکتی ہے۔

مگرید کہنا قاضی صاحب کا کہ کوئی نشانی نہ ہوتی صحیح نہیں ہے ۔ اس لیے کہ اُنہوں نے آیت کو معجزہ سے علیحدہ بیان کیا ہے اور اس میں کچھ شک نہیں ہو سکتا کہ انبیاء علیہم السلام کے خواب جن میں وحی کا ہونا بھی ممکن ہے آبت سن آیات اللہ ہوتے ہیں ۔ بخاری میں حضرت عایشہ کی حدیث میں ہے '' اول ما بد'ی بہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من الوجی الرویا الصالحة فی المنوم '' یعنی حضرت عایشہ نے کہا کہ رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم کو اول اول جب وحی آنی شروع ہوئی تو اچھی اور سچی خوابوں کا دیکھنا تھا اور بلا شبہ وہ ایک آیت ہوتی ہیں آیات اللہ میں سے ۔

چوتھی دلبل تو اس سے زیادہ بودی ہے۔ حضرت ہایشہ کا مذھب یہ ہے کہ معراج بجسدہ نہیں ہوئی۔ مگر قاضی عیاض نے لکھا ہے کہ مشہور مذھب حضرت عایشہ کا یہ نہیں ہے۔ بلکہ صحیح مذھب آن کا اس کے برخلاف ہے کیوں کہ آنھوں نے خدا کی رویت سے واقعہ معراج میں انکار کیا ہے اور اگر معراج صرف خواب ہوتی تو وہ رویت کا انکار نہ کرتیں۔

اول تو یه پوچهنا ہے که خواب میں خدا کے دیکھنے کی حضرت عایشه قائل ہیں ۔ اس کا کیا ثبوت ہے ؟ کیوں که خدا کو نه کوئی جاگتے میں دیکھ سکتا ہے نه خواب میں ۔

حضرت عایشه کے انکار رویت پر جو دلیل قاضی عیاض نے بیان کی ھے ۔ وہ صحیح بخاری کی اُس حدیث سے استنباط کی ھے جو ھم نے اوپر بیان کی ھے ۔ اُس حدیث سے کسی طرح یه استدلال نہیں ھو سکتا که حضرت عایشه خواب میں رویت باری کی قائل تھیں ۔ اُس حدیث میں صرف اتنا بیان ھے که حضرت عایشه نے تھیں ۔ اُس حدیث میں صرف اتنا بیان ھے که حضرت عایشه نے

فرمایا کہ جو شخص یہ بات کہے کہ آنحضرت نے خدا کو دیکھا تھا۔ تو وہ خدا پر ہمتان باندھتا ہے۔

مسروق وهاں موجود تھے آنھوں نے حضرت عایشہ سے کہا کہ قرآن میں تو ہے۔ '' ولقد راہ بالافق المبین '' یعنی جد صلی الله علیه وسلم نے خدا کو افق المبین پر دیکھا ۔ حضرت عایشہ نے کہا کہ میں آنحضرت سے پوچھ چکی ھوں ۔ اس سے مراد جبریل کا دیکھنا ہے اور یہ بھی حضرت عایشہ نے کہا کہ خدا ۔ فرمایا ہے '' لا تبدرکہ الا بیصار و ھو بیدر نب الا بیصار '' انتے کلام میں کہاں سے ثابت ھوتا ہے کہ حضرت عایشہ خواب اتنے کلام میں کہاں سے ثابت ھوتا ہے کہ حضرت عایشہ خواب میں خدا کے دیکھنے کی قائل تھیں ۔

اگر کوئی یہ استدلال کرے کہ حضرت عابشہ کا مذہب بہ تھا کہ معراج بجسدہ نہیں ہوئی اور اس لیے آنہوں نے 'س حدیث میں خدا کے دیکھنے اس سے انکار کیا تو اس سے لازم آنا ہے کہ قاضی عیاض نے جو یہ بات لکھی ہے '' الذی یدل عملیمہ صحیح قولہا انہ حصدہ'' غلط اور باطل ہے۔

علاوہ اس کے حدیث مذکور میں عام طور پر بلا ذکر معرائے کے حضرت عایشہ نے فرمایا ہے کہ جس شخص نے خیال کیا کہ آنحضرت نے خدا کو دیکھا ہے تو اُس نے خدا پر ہتان کیا او اُس میں کچھ ذکر نہیں ہے آنکھ سے دیکھنے یا خواب میں دیکھنے کا ۔ تو کسی طرح اُس سے ثابت نہیں ہوتا کہ حضرت عائشہ کا یہ مذھب تھا کہ خواب کی حالت میں انسان خدا کو دیکھ سکتا ہے ۔ بانچویں دلیل بھی نہایت بودی ہے ۔ وہ دلیل اس امر پر مبنی پانچویں دلیل بھی نہایت بودی ہے ۔ وہ دلیل اس امر پر مبنی ہیان کرتے تو قریش اُس سے انکار نہ کرتے اور جھگڑے کے لیے بیان کرتے تو قریش اُس سے انکار نہ کرتے اور جھگڑے کے لیے مستعد نہ ہوتے ۔ اُن کا جھگڑا صرف اسی لیر تھا کہ آنحضرت کے

بیت المقدس بجسده جانا خیال کیا گیا تھا۔ اس دلیل کے ضعیف ہونے کی وحہ یہ ہے کہ قریش کی مخالفت رسول خدا صلی اللہ سے اس وحه سے تھی کہ آنحضرت نے دعوی نبوت و رسالت کیا تھا اور واقعات معراج جو کچھ ہوئے ہوں وہ نبوت اور رسالت کے شعبوں مبی سے تھے اور اس لیے ضرور تھا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے آن واقعات کا سوتے میں دیکھنا فرمایا ہو یا حاگنر کی حالت میں ۔ قریش اُس سے انکار کرتے اور نعوذ باللہ آنحضرت کو حھٹلاتے کیوں کہ وہ اصل نبوت و رسالت سے منکر تھر پھر جو امورکہ شعبہ نبوت میں تھر آن سے بھی انکار کرانا آن کو لازم تھا۔ قریش خواب کو بھی شعبۂ نبوت سمجھتے تنمے اور جو خواب کہ آن کے مقصد کے ہر خلاف ہوتا تھا۔ اُس سے گھیراہٹ اور ناراضی آن میں پیدا هوتی تھی۔ اس کی مثال میں عاتکہ بنت عبد المطلب كا ايك لمبا چوڑا خواب هے ـ

عاتکہ نے جو عبد المطلب کی بیٹی تھیں ضمضم کے مکہ میں و کانت عاتکہ بنت آنے سے تین دن بہار ایک بیان کیا اور چاها که وه اس خواب کو پوشیده رکهیں ـ عاتکه نے بیان کیا کہ میں نے ایک شتر سوار دیکھا جو وادی بطحا میں کھڑا ہے۔ اس نے بلند آواز سے کہا کہ اے مکارو اپنر مقتل کی طرف تین دن سی بهاگو ـ عاتکه کهتی هیں که

عبد المطلب قد رأت قبل هولناك خواب ديكها تها اور قدوم ضمضم مكة بشلاث أس كو اپنر بهائي عباس سے ليال رويا افزعتها فقصتها عللي اخيه العباس و استكتمه خبرها ـ قالت رايت راكبا على بعيرله واقفا بالا بطع ثم صرخ با على صوته ان انفرو ايا آل غدر لمصار عكم فے ثلاث قالت فارى الناس قد

احتمعوا اليه ثم دخل المسجد فمثل بعياره على الكعية ثم صرخ مشلها ثم مشل بعيره على راس ابى قبريس فصرخ مشلها ثم اخذ صخرة عظيمة و ارسلما فاحما كانت باسفل الوادى ارفضت فما بقي بيت من مكة الادخله فللقله منها فتخرج العباس فلقي الوليد بن عتبه بين ربيعه وكان صديهه فذكرها له و استكتمه ذلك فذكرها الوليد لابيه عتبه ففشا الخبر فلقى ابوجهل العباس فقال له يا ابا الفضل اقبل الينا قال فلما فرغت سن طوافي اقبلت اليه فقال لي متى حدثت فيكم هذه النبية و ذكر رويا عاتكة ثم قال سا رضيتم ان تيبنا رجالكم حتى تنبا نساؤ كم ـ

(صفحه ده جلد دوم تاریخ کاسل ابن اثـه ر)

میں نے دیکھا لوگ اس کے پاس جمع هوئے اور وہ مسجد میں داخل ہوا اور کعبہ کے سامنے اپنا آونٹ کھڑا کیا پھر اسى طرح چلايا پهركوه ابوقبيس کی چوٹی پر اپنر اونٹ کو کھڑا کیا پھر آسی طرح چلایا پھر یتھر کی ایک بڑی چٹان لرکر هاتھ سے چھوڑی چوں کہ مکه وادی کے نشیب میں بسا ھوا تھا چٹان کے ٹکڑے بکھر گئر اور کوئی مکان مکہ کا نہیں بچا جس میں پتھر کا ٹکڑا نہ گرا هو۔ اس خواب کو سن کر عباس نکار اور ولید بن عتبه بن ربیعہ سے جو آن کا دوست تھا ملر اور اس خواب کا اس سے ذکر کیا اور اس سے اس خواب کے چھپانے کی خواہش کی۔ ولید نے اپنر باپ عتبہ سے اس خواب کو بیان کیا اور جرچا بھیل گیا ۔ پھر ابوجہل کی ملاقات عباس سے ھوئی ۔ اس نے آن سے کہا اے ابو الفضل مرح یاس آؤ۔ عباس کہتر ھیں کہ کعبہ کے

طواف سے فارغ ہو کر میں اُس کے پاس گیا ۔ اُس نے کہا کہ تم میں یہ پیغمبرنی کب سے پیدا ہو گئی اور اُس نے عاتکہ کے خواب کا ذکر کیا ۔ پھر کہا اس سے تمھاری تسلی نہیں ہوئی کہ تمھاری مردوں نے نبوت کا دعوی کیا یہاں تک کہ تمھاری عورتیں بھی پیغمبری کا دعوی کرنے لگیں ۔

اصل یہ مے کہ آنحضرت نے معراج کی بہت سی باتیں جو خواب میں دیکھی هوں گی لوگوں سے بیان کی هوں گی منجملہ آن کے بیت المقدس میں جانا اور آس کو دیکھنا بھی بیان فرمایا هوگا۔ قربش سوائے بیت المقدس کے اور کسی حال سے واقف نہیں تھے۔ اس لیے آنھوں نے امتحاناً آنحضرت سے بیت المقدس کے حالات دریافت کیے ۔ چوں کہ انبیاء کے خواب صحیح اور سچے هوتے هیں۔ آنحضرت نے جو کچھ بیت المقدس کا حال خواب میں دیکھا تھا بیان کیا ۔ جس کو راویوں نے '' فیجی الله لی بیت المقدس '' فیجی الله لی بیت المقدس '' فیجی الله لی بیت المقدس کا خالت میں بیت المقدس جانا ثابت نہیں دو سکتا ۔

چھئی دلیل طبرانی اور بہتی کی احادیث پر مبنی ہے۔ ان دونوں کتابوں کا ایسا درجہ نہیں ہے جن کی حدیثوں سے رداً و قبولا ً بحث ہو سکتی ہے۔ اس کا کچھ ذکر نہ ہو ۔ با ایں ہمہ استمانی کی حدیث سے تو کوئی امر ثابت نہیں ہو سکتا اس لیے کہ اس حدیث میں ہے ۔ کہ آنحضرت نے نماز عشاء یہاں پڑھی اور ہارے پاس سو رہے ۔ پھر صبح کو ہم کو جگیا اور صبح کی نماز ہارے ساتھ پڑھی ۔ پھر آنحضرت نے فرمایا کہ عشاء کی نماز تو میں نے ساتھ پڑھی ۔ پھر آنحضرت نے فرمایا کہ عشاء کی نماز تو میں نے تمھارے ساتھ پڑھی ۔ پھر صبح کی نماز تمھارے ساتھ پڑھی ۔

اس حديث سي يه لفظ هين " تم جئت بيت المقدس" اور اسی پر قاضی عیاض نے استدلال کیا ہے کہ اسرا مجسدہ تھی حالاں کہ صرف '' جئت '' کے لفظ سے جس کے ساتھ کچھ بیان نہیں ہے کہ آنحضرت کا جانا یہ روحانی طور پر تھا یا جسانی طور پر -بجسده جانے پر استدلال نہیں ہو سکتا خصوصاً ایسی حالت میں جب که اس کی تشریج اس مقام پر هونی ضرور تهیی -

دوسری حدیث ـ شداد بن اوس کی ایسی رکاکت لفظ و معنی پر مشتمل ہے اور جو طرز کہ حدیث بیان کرنے کا ہے ۔ اس سے اس قدر بعید ہے کہ کسی طرح قابل اعتماد نہیں ۔

صورت دوم یعنی اسراء کا مکہ سے بیت المقدس تک بجسدہ و بحالت بیداری ہونا اور معراج کا آس کے بعد بیت المقدس سے آسمانوں اور سدرۃ المذتہلی تک در وحه هو نا

ایک قلیل گروہ علماء اور محدثین کا یہ مذہب ہے کہ اسراء مکہ سے بیت المقدس تک مجسدہ و محالت بیداری ہوئی اور اس کے بعد بروحه _ جن لوگوں کا یه مذهب هے وہ مکه سے بیت المقدس تک جانے کا نام اسراء رکھتے ھیں اور بیتالمقدس سے آسانوں اور سدرة المنتهلي تک جانے کا معراج -

آن کی اس رائے کی تائید میں نه قرآن مجید میں کچھ تصریح و ذهب بعضم الی ہے اور نه احادیث سے اس کی ان الا سراء كان في الـيـقـظـة و تصريح معلوم هوتي هے مگر فتح المعراج كان في الندوم - - والبارى شرح بخارى مين لكها ع فان الله سبحانه و تعاللي قال كه بعض لوگوں كا يه مذهب هے که اسراء بیداری کی حالت میں ہوئی اور معراج سونے کی حالت

ووسبحان الذي أسرى بعبده ليلا من المسجد الحرام

الى المسجد الاقصلى "فلو مين دليل يه هے كه قرآن مجيد وقع المعراج في الميقظة كان مين هے كه "پاك هے وہ جو ذلك ابلغ في الذكر الى آخره للے گيا اپنے بنده كو ايك رات (فتح البارى جلد ے صفحه ١٥١) مسجد حرام سےمسجد اقصلى تك" اور اگر معراج جاگنے مين هوتى تو اس كا ذكر كرنا زياده بليغ هوتا لور اگرچه اس بيان مين اسراء كے بجسده هونے كا كچه ذكر نهين مگر لفظ في الميقظة هوئى تهى ل

مگر اس دلیل کے ناکافی هونے کے لیے اسی بات کا کہنا کف ہے کہ بلاشبہ خدا نے فرمایا ہے کہ "سبہ حان الذی اسری بعیبدہ لیہ لا سن المسجد الحرام الی المسجد الا قصلی "مگر اس میں کچھ ذکر یا اشارہ اس بات کا کہ اسراء بحالت بیداری اور بجسدہ هوئی تھی، نہیں ہے پس اس آیت سے اس بات پر کہ معراج بحالت بیداری ہوئی تھی استدلال نہیں ہو سکتا ۔

اس بیان سے جو فتح الباری میں ہے لازم آتا ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم بیت المقدس میں پہنچنے کے بعد سو رہے تھے اور اس کے بعد معراج یعنی عروج الی السموات سونے کی حالت میں ہوا تھا حالاں کہ کسی حدیث سے نہیں پایا جاتا کہ آنحضرت بیت المقدس میں پہنچ کرسو رہے ہوں ۔

علاوہ اس کے هم نے صورت اول کی بحث میں ظاهر کیا ہے کہ کوئی دلیل اس بات پر نہیں ہے کہ اسراء یا معراج بحالت بیداری و بجسدہ هوئی تھی اور جو کہ اسراء بھی اسی کا ایک جزو ہے اس لیے اسراکا بھی بحالت بیداوی اور بجسدہ هونا ثابت نہیں هوتا اور اس کے لیے جدا گانہ دلیلوں کے بیان کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔

تیسری صورت یعنی معراج کا جس میں اسراء بھی داخل ہے ابتدا سے انتہا تک بروحہ اور سونے کی حالت میں ہونا

اس میں کچھ شک نہیں کہ ایک قلیل گروہ علماء و محدثین کا یہ مذھب ہے کہ معراج ابتدا سے انتہا تک سونے کی حالت میں ہوئی تھی یعنی وہ ایک خواب تھا جو رسول خدا صلی اللہ علیه وسلم نے دیکھا تھا مگر آس کی دلیلیں ایسی قوی ھیں کہ جو شخص آن پر غور کرے گا وہ یقین کرے گا کہ تمام واقعات معراج سونے کی حالت یعنی خواب میں رسول خدا صلی اللہ علیه وسلم نے دیکھے تھر اور آس کے لیر یہ دلیلیں ھیں۔

اول۔ دلالت النص یعنی خداکا به فرمانا که سبه حان الذی اسری بعبده لیلا یعنی رات کو خدا اپنے بنده کو لے گیا اس بات پر دلالت کرتا ہے که خواب میں یه امر واقع هوئے تھے جو وقت عام طور پر انسانوں کے سونے کا ہے ورنه '' لیلا'' کی قید لگانے کی ضرورت نه تھی اور هم اس کی مثالیں بیان کریں گے که خواب کے واقعات بلا بیان اس بات کے که وہ خواب هی بیان هوئے هیں که خواب هی کیوں که خود وہ واقعات دلیل اس بات کی هوتے هیں که خواب کا وہ بیان ہے۔

دوم - خود اسی سورة میں خدا نے معراج کی نسبت فرمایا هے '' وسا جعلنا الرؤیا اللتی اریناک الافتنة للناس'' یعنی هم نے نہیں کیا اس خواب کو جو تجھے دکھایا مگر آزمائش واسطے لوگوں کے - بخاری میں عبداللہ ابن عباس سے دو حدیثیں هیں که اس آیت میں جس میں رویا کا ذکر هے اس سے معراج میں آنحضرت نے جو دیکھا وہ مراد هے مگر اس مقام پر لفظ رویا کی نسبت جو قرآن مجید میں هے اور لفظ عین کی نسبت جو عبداللہ ابن نسبت جو عبداللہ ابن

عباس کی روایت میں ہے محث ہے جس کو ہم آیندہ بیان کریں گے اور ثابت کریں گے کہ رویا سے خواب ھی مراد ہے اور لفظ عین سے حو عبداللہ ابن عباس کی حدیث میں آیا ہے آن سعنوں میں کچھ تغمر ہمیں ہوتا ۔

ہلی حدیث بخاری کی یہ ہے کہ حدیث بیان کی هم سے عبر یہ عبداللہ نے آس نے کہ حدیث ا بیان کی ہم سے سفیان نے عمر سے ا اُس نے عکامہ سے اس نے ایا عباس سے کہ آیت "وسا حیعلنا الرودا المح ازيناك الأ فتدنية الدناس ٠٠ مس الفظ رويا سے آلکھ ن دیکھنا مراد ہے جو رسول الله کو اسراء کی رات

حدثنا على ابن عبدالله قال حداثنا سنميان عد عه وعان عاكريمسه عين اين عباس وسأحعمنا الرويا اللتي ارست دے الا فستناء لاتناس فال ہے۔ رویا عین ارہا رسول اللہ صبر اللہ ۔ عليله وسلم ليله اسرى له اللح اختاري صنعه ۾ ١٦

د کھا۔ نہ ـ

دوسری حدیث نخبری کی به ہے کہ حدیث بیان کی ہم سے حدثنا الحمداي قال حمدي نے اس نے کہ حدیث یان کی هم سے سفیان نے آس نے کہ حدیث بیان کی ہم سے عمر نے عکرمہ سے اُس نے ابن عماس يسم كه آيت " وساحع منا الرويا اللتي ارياناك الافتنة لسناس ، مس نفظ رویا سے آنکه کا دیکینا مراد هے حو رسول الله كو دكهايا گيا آس

حدائلنا سلفلمان قلال حداثلنا ع مار عان علكار ملة عان ايلور عبياس في قبوليه تبعيالني وسا جعدانا الترويا الدتي اربناك الافتنانة للناس قال هي رويا عبن ارهما رسول الله عمليمه وسملم ليلة اسرى به الى بيت المقدس ـ (یحاری صفحه . د د)

رات جب که بیت المتدس لر جائے گئر ۔

سوم _ مالک بن صعصعه اور انس بن مالک کی حدیثیں جو بخاری اور مسلم میں مذکور هیں آن سے پایا جاتا ہے که معراج کے وقت آپ سوتے تھے اور آن حدیثوں کے مندرجه ذیل الفاظ هیں ـ

مالک بن صعصعه کی حدیثوں میں ہے که رسول خدا صلی الله علیه وسلم نے فرمایا "بینا انا عند البیت بین النائم والیقظان" ۔

انهى مالک بن صعصعه كى ايك حديث مين هے كه آنحضرت فرمايا " بينما انا في الحطيم و ربما قال في الحجر منظم عباً " ـ منظم عباً " ـ

انس بن مالک کی حدیثوں میں ھے '' فیدما یدری قلبه و تنام عیدنه ولا ینام قلبه '' اور اسی حدیث کے آخر میں ھے '' فاستیة ظ و هو فی المسجد الحرام ''۔

صحاح کی اور کسی حدیث میں اس بات کا ذکر نہیں ہے کہ کسی وقت معراج کے اوقات میں آپ جاگتے تنبے ۔

چہارم _ معاویہ ، حسن ، حذیفہ بن الیہان اور حضرت عایشہ کا مذہب تھا کہ اسراء یا معراج خواب میں ہوئی ہے ـ

مگر قاضی عیاض نے جو قول نقل کیے ھیں ان کے آوپر کچھ اعتراض بھی وارد کیے ھیں۔ خصوصاً حضرت عایشہ کے قول پر۔ مگر جب ھم اس وجہ کی تشریج کریں گے تو بیان کریں گے کہ وہ اعتراض صحیح نہیں ھے اور اس قدر ھم اب بھی یاد دلا دیتے ھیں کہ شفاء قاضی عیاض میں حضرت عایشہ کا قول مذکور ھے اور جس میں '' ما فقدت'' کا لفظ بصیغۂ متکلم آیا ھے وہ صحیح نہیں بلکہ صحیح لفظ ھے '' ما فقد'' بصیغۂ مجمول ۔ چناںچہ ھم اس کا اشارہ آوپر کر چکے ھیں اور بیان کر چکے ھیں کہ عینی شرح بخاری میں مجائے لفظ '' ما فقدت'' چھاہا

ہوا ہے اور مصحح شفا نے '' سا فـقـد'' کے لفظ کو اختیار کیا ہے (دیکھو ھاری تفسیر کا صفحہ ۱۲) ۔

بهرحال جن روایتوں سے معاویہ اور حسن اور حذیفہ بن الیہان اور حضرت عایشه کا مذہب پایا جاتا ہے ان کو ہم بعینہ نقل کرتے ہیں ۔ کشاف میں ہے کہ اس بات میں اختلاف ہے کہ معراج واختلف فی انبه کان جاگتر میں ہوئی یا سوتے میں في البيقظة ام في المنام فعن حضرت عائشه سے منقول هے كه عائشه رضانها قالت والله أنهول نے كہا خدا كى قسم ما فقد جسد رسول الله صلى آنحضرت كا جسم غائب نهين عليه وسلم ولا كن عرج بروحه هوا بلكه أن كي روح كو معراج هوئی اور معاویه کا قول ہے کہ معراج بروحه هوئي ـ اور حسن سے منقول ہے کہ معراج ایک واقعه تها جو رسول خدا نے خواب میں دیکھا۔ اور اکثر

وعمن سعماويمة انمما عرج بمروحه وعنن البحسن كان في النم نيام رویـــار کاهـــاوا کـــثر الا قـــاویـــل بخىلا**ف** ذلىكى ـ

(کشاف صفحه ۸۵۸) قول اس کے ہر خلاف ھیں ۔

اور تفسیر کبس میں کہ مجد بن جریر طبری نے اپنی تفسیر عن محد بن جرير الطري في تنفسيره عن حنديفة أن قال ذلك رويا وانه سافقد جسد رسول الله صلى الله عــليه وســلم انما اسری بـروحـه و حـکی هـذا البقدولعين عائيشة وعين معاوييه تفسير كبير حلد چهارم منقول هے ـ صفحه وور)

و في التفسير الكبير حدى من حديقه بن اليان كا يه قول لکھا ہے کہ واقعہ معراج ایک خواب تها اور رسول خدا صلى الله عليه وسلم كا جسم غائب نہیں ہوا۔ بلکہ ان کی روح کو معراج ہوئی اور یہی قول حضرت عایشه اور معاویه سے

اور سبرة ابن هشام مس هے كه ابن اسحاق كمتر هيں محھ قال ابن اسحاق و سے آل ابوبکر میں سے ایک شخص نے بیان کیا کہ حضرت عائشه فرماتی تهین که رسول خدا ک جسم مبارک غائب نہیں ہوا بلکہ خدا آن کی روح مبارک کو معراج میں لر کیا تها ـ از اسعق كمتر هس مجه سے یعقوب بن عتبه بن مغیرہ بن احس نے بیان کیا ھے کہ معاویہ بن سفیان سے رسول خدا کی معراج کا حال یہ جھا کیا۔ اُنہوں نے کہا که یه تمام واقعه خدا کی طرف سے ایک مجا خواب تھا۔ دو وں کے اس قول کا کسی نے انکار نہیں کیا ھے ۔ کیوں که حسن کا قول ہے کہ اسی معراج کے باب میں یہ آیت نازل ہوئی وساجعلنا الدرويدااللتي اريناكال فتنة للناس" اور خدا نے ابراهیم علیه السلام کا خواب بھی حکایتاً بیان کیا هے "اذقال لابنه يا بني اني ارى في المنام اني اذبحك"

حدثنی بعض آل ایی بکر ان عائشة كانت تقول سافقد جسد رسول الله صلى الله عليه وسلم و لكن الله اسرى بروحه قال ابن اسحاق وحدثني يعقبوب بين عشية بين المغبرة بن الا خنس ان سعاوية بن سفيان كن اذا سئل عن مسدری رسول الله حالی الله عمليمه وسلم قال كانت رويا مدن الله صادقة فللمهينكر ذلك من قولها لقول الحسن أن هذه الابعة نيزات في ذلك قدول الله عنزوجيل وساحعلنا الرويا اللتي اريناك الافتنة لنناس" وليقدول الله عدزوجيل في العجر عن ابراهيم عليه السلام "اذ قال لابنه يا بني اني ارى فالمنام انی اذمحک'' ثم مضلی على ذلك فعرفت اذالوحي من الله ياتي الا انسياء ايقاطأ وينا سا قال بن اسحق وكان

رسول الله صلى الله عليه وسلم فيها بلغني يقول تنام عيني و قلم يقظان فا الله اعلم ای ذلک کان قدحاءه وعاین فيه ما عاين سن امرالله على ای حالیه کان نائیا اویقظان كل ذالك حق وصدق ـ

(سيرة ابن هشام جلد اول صفحات روء وووو مطبوعه لاڈن)

میں وحی آنحضرت کے پاس آئی اور کس حالت میں دونوں حالتوں میں سے جو کچھ خدا کے حکم سے دیکھنا تھا دیکھا جاگتر میں با سوتے میں اور یہ سب کچھ حق اور سے ہے ۔

والعلاء هدل كان الاسدراء هونے س تين مختلف قول بروحیه او جسلہ عملی ثبلاث ہیں ۔ ایک گروہ اسراء کے روح مقالات فذهبت طائفة کے ساتھ خواب میں ہونے کا الى انه اسرى بروحه و انه رويا منام مع اتقاقهم ان روياالابنياء وحيى وحتى والى هـذا ذهب سعاويـه وحـکي عـن الحسن والمشهور عنه خلافه واليه اشار محد بن اسحاق و حجتهم قبوله تعالمٰی'' وسا

يهر اس ير عمل كيا اس لير مس نے جان لیا کہ خدا کی طرف سے انساء یر خواب و بیداری دونوں میں وحی آتی ہے۔ ابن اسحاق كمبتر هل كه محه کو یہ خبر بہنچی ہے کہ رسول خدا فرساتے تھر که میری دونوں آنکهس سوتی هس اور سرا دل حاکتا ہے۔ بس خدا هي حالتا هے كه كم حالت

شفا قاضی عیاض میں ہے کہ اکبر لوگوں اور عالموں کے ثم اختسلف السليف البراء کے روحانی با حسانی قائل ہے اور وہ اس پر بھی متفق هس كه ييغمرون كا خواب وحي اور حق هوتا هے معاویه ک مذهب بھی یہی ہے حسن بصری کو بھی اس کا قائل

بتاتے ھیں لیکن آن کا مشہور

قول اس کے بزخلاف ھے اور

مجد ابن اسحاق نے اس طرف جعلنا الرويا اللتي اريناك اشارہ کیا ہے آن کی دلیل ہے الا فتندة اللناس' و ماحكواعن خدا کا یه فرمانا که "نهی کیا عادشة سافقات حسادرسول الله صلى الله عليه وسلم هم نے وہ خواب جو دکھایا وقبوله بينا انا نائم وقول تجه کو مگر آزمائش واسطر لوگوں کے " اور حضرت عائیشه انس و هونائم في المسجد کا یه قول که نہیں کھویا میں الحرام وذكر القصة ثم قال فی آخر فاستیقظت وانا نے رسول اللہ کے حسم کو یعنی بالمسجدالحرام - الخ -آپ کا جسم مبارک معراج میں (شف قاضی عیاض صفحه ۸۵) نمس گیا تها اور آنحضرت کا یه فرمانا که اس حالت میں که میں سوتا تھا اور انس کا یه قول که آنحضرت اس وقت مسجد حرام میں سوتے تھے پھر معراج کا قصہ بیان کرکے آخر میں کہا کہ میں جاگا اور اس وقت مسجد حرام میں تها _ الخ _

پذجم ۔ اگر کسی حدیث میں ایسے امور بیان ھوں جو ایک طرح پر نہیں اور طرح پر نہیں اور ایک طرح پر نہیں اور اگلے علم اور صحابه کی رائیں مختلف ھوں که کوئی اس طرف گیا ھو اور کوئی اس طرف تو بموجب اصول علم حدیث کے لازم ہے که اس صورت کو اختیار کیا جاوے جو بداھت عقل کے مخالف نہیں ہے ۔

تصریح پہلی دلیل کی

اب هم پہلی دلیل کی تصریح کرتے هیں یه جان لینا چاهیے که قرآن مجید اور نیز احادیث میں جب کوئی امر خواب کا بیان کیا جاتا ہے تو یه لازم نہیں ہے که اُس سے پہلے یه بھی بیان کیا جاوے که یه خواب ہے کیونکه قرینه اور سیاق کلام اور نیز وہ بیان خواب کا تھا مثلاً بیان خود اس بات کی دلیل ہوتا ہے که وہ بیان خواب کا تھا مثلاً

ضرت یوسف نے اپنے باپ سے اپنا خواب بیان کرتے وقت بغیر اس.

ت کے کہنے کے کہ میں نے خواب دیکھا ھے یوں کہا '' یا

ت انی رایت احد عشر کوکبا والشمس والقمرر ایہ م

المباحدین ''۔ لیکن قرینہ اس بات پر دلالت کرتا تھا کہ وہ

واب ھے اس لئے آن کے باپ نے کہا '' یابنی لا تقصص

ویاک علی اخوتک فیکید والک کیدا '' پس معراج

ویاک علی اخوتک فیکید والک کیدا '' پس معراج

کے واقعات خود اس بات پر دلالت کرتے تھے کہ وہ ایک خواب

ھے اس لیے اس بات کا کہنا کہ وہ خواب ھے ضرور نہیں تھا بلکہ

صرف یہ کہنا کہ رات کو اپنے بندہ کو لے گیا صاف قرینہ ھے کہ

وہ سب کچھ خواب میں ھوا تھا۔

اسی طرح چار حدیثیں عبدالله بن عمر کی روایت سے مسلم میں موجود ھیں جن میں آنحضرت صلی الله علیه وسلم کا کعبه کے پاس حضرت مسیح علیه السلام اور مسیح دجال کے دیکھنے کا ذکر هے آن حدیثوں کے لفظ جیسا که روایت بالمعنی میں راویوں کے بیان میں ھوتا ھے کسی قدر مختلف ھیں مگر سب میں مسیح علیه السلام اور مسیح دجال کے دیکھنے کا ایک ھی قصه بیان ھوا ھے اور اس میں کسی کو اختلاف نہیں ھے که آنحضرت نے اس کو خواب میں دیکھا تھا آن حدیثوں میں سے ایک حدیث کے ابتدا میں یه لفظ ھیں '' رایت عند الکعبة رجلا'' یعنی میں نے دیکھا کعبه کے پاس ایک شخص ۔ پس اس میں سے کوئی اشارہ لفظی اس بات کا کے پاس ایک شخواب میں دیکھا تھا مگر خود مضمون اس قصه کا دلالت کرتا ھے که خواب میں دیکھا تھا اس لیے کسی ایسے لفظ کے لانے کی جس سے خواب کا اظہار ھو ضرورت نه تھی ۔

دوسری حدیث کے شروع میں ھے '' ارائی لیلة عدد الکعبة '' اس میں صرف '' لیلة '' کا لفظ اس بات کا مطلب

ادا کرنے کو کافی سمجھا گیا ہے کہ آنحضرت نے خواب میں دیکھا تھا اسی طرح کے قصہ میں خدا کا یہ فرمانا '' اسری بعبدہ لید '' اس بات کے اشارہ کے لیے کہ وہ خواب ہے ، کافی ہے اور بطور دلالت النص کے معراج کا روحانی یعنی خواب میں ہونا پایا حاتا ہے۔

تیسری حدیث کے شروع میں یه الفاظ هیں '' بیننما انیا انیا انیا مرایت کی اطوف بالکعب، ق' یعنی جب که میں سوتا تھا میں نے دیکھا که میں کعبه کا طواف کرتا هوں ۔ انهی الفاذ کی مثل وہ الفاظ هیں جو بعض حدیثوں میں جن کو هم لکھ چکے هیں معراج کی نسبت آئے هیں اور کوئی وجه نہیں ہے که اس کو خواب نه سمجهیں ۔

چوتھی حدیث کے شروع میں یہ الفاظ ھیں '' ارانی لیلہ فی الدمنام عند الکعبة '' یعنی ایک رات مجھ کو کعبه کے پاس خواب میں دکھائی دیا ۔ اس حدیث میں بالکل تصریح خواب کی آس واقعه کی نسبت موجود ہے جس سے کسی کو اس میں کلام نہیں رھتا کہ وہ قصه خواب میں دیکھا تھا پس ھم کو اس باب میں شک کرنے کی کہ معراج کا واقعہ خواب میں ھوا تھا کوئی وجہ نہیں ہے ۔

تصریح دوسری دلیل کی

اس دلیل میں جو هم نے لکھا ہے '' وسا جعلنا الرویا اللتی اریناک الا فشنة للناس '' یه آیت متعلق ہے معراج سے بعض لو ً ک کہتے هیں که معراج سے متعلق نہیں ہے ۔ مگر ادنلی تامل سے معلوم هوتا ہے که جب یه آیت خاص اسی سورة میں ہے جس میں معراج کا ذکر ہے تو اس کو معراج سے متعلق نه سمجھنے کی کوئی وجه معقول نہیں ہے خصوصاً ایسی صورت میں که خود ابن

عماس نے اس آیت کو اسراء سے متعلق سمجھا ھے۔

سورہ بنی اسرائیل کی پہلی آیت بطور اظہار شکریہ اس نعمت کے ہے جو خدا تعالیٰ نے معراج کے سبب قلب مبارک آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر انکشاف فرمائی تھی۔ اس کے بعد بنی اسرائیل کا اور آن قوموں کا ذکر کیا ہے جن کے لیر بطور استحان و اطاعت فرمان باری تعالمی کچھ نشانیاں مقرر کی گئیں تھیں اور با وصف اس کے انھوں نے رسولوں سے انکار کیا اور خدا کی نافرمانی کی ۔ اسم. موقع پر خدا نے اپنر پیغمبر سے فرمایا کہ ہم نے جو خواب تجھ کو دکھلایا ہے وہ بھی لوگوں کے استحان کے لیر ہے کیوںکہ وہ بھی نبوت کے شعبہ میں سے ہے۔ تاکہ استحان ہو کہ کون اس سے انکار کرتا ہے اور کون اس کو تسلیم کرتا ہے۔ کیوں کہ آس سے انکار کرنا بمنزلہ انکار رسالت اور تسلیم کرنا بمنزلہ تسلیم رسالت کے ھے۔

یس سیاق قرآن محید پر نظر کرنے سے ثابت ہوتا ہے کہ مہلی سبحان الذي اسرى آيت اوروه دوسرى آيت متصل اور پیوسته هیں ۔ یعنی خدا نے یوں فرسایا ھے۔ یاک ھے وہ جو لرگیا اپنر بندہ کو ایک اقصلی تک ـ تاکه دکهائس هم آس کو کچھ اپنی نشانیاں یے شک وہ سننر والا ہے اور

بعبده ليلاسن المسجد الحرام الى المسجد الاقصلي الندى باركنا حوله لنريه سن آیاتنا انه هو السمیع رات مسجد سے ،سجد البصيرا واسا جعلنا الرويا اللتى اريناك الا فتنة للناس ـ

دیکھنر والا اور نہیں کیا ہم نے وہ خواب جو دکھایا تجھ کو سگر آزمائش واسطر لوگوں کے ۔

اور جن لوگوں نے اس آیت کو اُس رویا سے متعلق کیا تھا

جس كا اشاره سوره فتح كي اس آيت ميں ہے '' لـقـد صـدق الله رسوله الرويا بالحق" اس كي ترديد فتح الباري مين خود علامه ابن و فی ذلک رد لیمن قبال حجر نے کی ہے ۔ وہ لکھتر ہیں المراد بالرويا في هذه الاية كه ابن عباس كي اس حديث رویاه صلی الله علیه وسلم انه میں اس شخص کا رد ہے جو اس آیت کے خواب سے رسول خدا کا مسجد حرام میں داخل " لقد صدق الله رسوله الرويا هوني كا خواب مراد ليتا هي جس كا اشاره آيت "لقد صدق الله رسوله الرويا بالحق لتد خلن المسجد الحرام" مس هے اور کہتا ہے که رر فتنة اللناس " سع حديبيه میں رسول خدا کو مسجد حرام میں داخل ہونے سے مشرکین کا روکنا مراد ہے اگرچہ ممکن ھے کہ اس آیت سے یہی مراد ھو مگر قرآن کی تفسیر میں ترجان القرآن (حدیث) پر اعتاد

دخل المسجد الحرام المشأر اليها بقوله تعالني بالحق لتد خلن المسجد الحرام " قال هذا القائل والبمراد بيقوله "فتنة الليناس '' سا وقع سن صد المشركين له في الحديبية عن دخول المسجد الحرام يمكن أن يكون سراد الاية لا كن الاعتماد في تفسر ها على ترجمان القرآن اولى والله اعلم ـ

(فتح الباري جلد هفتم كرنا اولر هے ـ صفحه ۱۷۱) ـ

مگر هم کمتے هیں که اس آیت کو سورہ فتح کی آیت مذکور سے کسی طرح کا بھی تعلق نہیں ہے۔ مگر هم کو اس پر زیادہ محث کی ضرورت نہیں ہے کیوں کہ اکثر مفسرین نے بھی اس آیت کو معراج سے متعلق سمجھا ہے ۔ جو کچھ اختلاف کیا ہے وہ رویا کے معنوں میں کیا ہے ۔ جس پر ہم بحث کریں گے ۔

چناں چه تفسیر کبیر میں لکھا ہے که چوتھا قول جو صحیح تر و الدقول الرابع و هو اور اکثر مفسرین اس کے قائل الاصح و هو قول اکشر هیں یه ہے که رویا سے مراد وه المسلمان ان المراد بھا رویا ہے جو معراج کی رات خدا ما اراه الله لیلة الاسراء و نے آنحضرت کو دکھایا اور اس اختلفوا فی صعنی هذه رویا کے معنی میں انھوں اختلاف الرویا۔

(تفسیر کبیر جلد چهارم صفحه ۲،۹)

رویا کے اصلی لغوی معنی کسی چیز کو خواب میں دیکھنے کے ھیں ۔ لسان العرب میں ھے '' الرویا دا رایت فی منامک '' مگر کہا جاتا ہے کہ رویا کا اطلاق رویت یعنی جاگنے میں دیکھنے پر بھی آتا ہے چناں چہ لسان العرب میں ہے '' و قد جاء رویا فی الیقظۃ '' اور اس پر راعی شاعر جاھلی کا یہ شعر سند میں پیش کیا ہے ۔

فكبر للرويا وهش فواده

اس نظارہ کو دیکھ کر اُس نے (تعجب سے) اللہ اکبر کہا اور اس کا دل خوش ہوا ـ

و بشر نفسا كان قبل يلوسها

اور اس نے اپنے نفس کو خوش خبری دی جس کو پہلے ملامت کرتا تھا۔

اور متنبی کے شعر کے اس مصرعہ کو بھی سند میں پیش کیا ہے ـ

و روياك احلى في العيون من الغم ض

تیرا دیدار آنکھوں میں آونگھنے سے زیادہ لذیذ ہے ـ حریری نے رویا کو معتی "رویت فی یاقیظة" استعال کرنا غلط بتایا ہے اور متنبی کے شعر پر اعتراض کیا ہے اور درحقیقت متنبی کا ایسا درجہ نہیں ہے کہ اس کے کلام کو کلام جاہلیت کی طرح مستند مانا جائے ۔

حریری نے لکھا ہے۔ کہ لوگ کہتے ہیں میں فلاں کے رویا سے خوش ہوا اور اس سے اس کا دیکھنا مراد لیتر ہیں۔ وہ و یـقـولـون ''سورت برویا اس محاورہ میں غلطی کرتے ہیں اور آس نے ایک رات کچھ دیر تک آس سے باتس کی تھی اور آس شعر کا یہ ترجمہ ھے۔

رات تمام هو چلی هے اور تبرمے علم و فضل (کی داستان) تمام نہیں ہوتی ہے اور تبرا دیدار آنکھوں میں اونگھنر سے زیادہ لذیذ ہے۔ صحیح یہ ہے که اس محاوره میں رویا کی جگه رویت کا لفظ بولا جائے کیوں کہ اهل عرب رویت کو جاگنر کی حالت می دیکھنر پر اور رویا کو خواب دیکھنے کے موقع پر

فلان " اشارة الى مرآه فيو جيسے كه ابو الطيب متنى شاعر ھ مون فیلہ کے او میں غلطی کی ابو الطيب في قوله لبدر هي جو بدر بن عارسي كما تها بن عمار و قد سامره ذات ليلة الى قطع من الليل ـ

> مضى الليل و الفضل الذي لك لا يىمىضى و روياك احلى في العيون بمن الغمض و الصحيح ان يدقال سررت بروتيك لان البعارب تجعل الروية لما يرى فر اليقظة و الرويا لما يرى في المنام كـما قال سبحانه اخبارا عن يدوسف عليه السلام " هـذا

استعال کرتے هیں ـ جیسا که تاویل رویای من قبل ـ'' خدا نے حکایة یوسف علیه السلام (درة الغواص صفحه و ۸ و ۳۰) کا یہ قول بیان کیا ہے '' ہذا تاویل رویای من قبل ۔''

علاسه خفا جي درة الغيواص كي شرح مين لكهتے هين و فیه ثلاثة اقوال که رویا کے معنی میں اهل لغت لاهل اللغة احدها ما ذكره کے تین قول هیں ۔ ایک تو وہ المصنف والثاني انهما جس کا ذکر مصنف نے کیا ہے۔ دوسرا یه که دونون لفظون بمعنى فيكونان يقظة او (رویت اور رویا) کے ایک هی منا ما والشالث ان الروية سعنی هیں ۔ جاگنر کی حالت پر عاسة و الرويا سيختص لما بولر جائیں یا سونے پر۔ تیسرا يكون فر الليل ولويقظة قول یه هے که رویت عام هے فقول المتذبي ----اور رویا رات کے دیکھنر سے محتاج الى التاويل ـ

(شرح درة الغواص صفحه اگرچه حالت بیداری سی هو مخصوص ہے ۔ پس ستنبی شاعر کا - (100 قول ۔ ۔ ۔ ۔ ۔ تاویل کا محتاج ہے ۔

علامه خفا جی نے راعی کے تین شعر نقل کیر هیں که جن سے پورا مطلب معلوم ہوتا ہے۔ وہ لکھتے میں کہ ابن بری نے کہا ہے کہ رویا اگرچہ خواب کے معنوں میں ہے مگر اہل و قال ابن البرى الرويا عرب اكثر جاگنر كى حالت مس و ان كالت في المنهام فيالعرب ديكهنر پر بهي بولتر هين اور یہ استعال بطور محاز کے مشہور ھے جیساکہ راعی کا قول ھے۔ كتركى آواز يركان لگانے والا و مستنبح تـهـوى مساقـط راسه مسافر جس كا سر (نيندكي حالت

استعملتها في اليقظة كشيرا فلهلو ملجاز مشلهلور كـفـزل الـراعـي ـ میں) بار بار کجاوہ پر گرتا ہے

اندھیری رات میں جس کے تارہے

دھندلے ھیں ۔ سی نے اس کے

لیے آگ جلائی جس پر مشرق

کی ہوا چلی جو کبھی اس کو

على الرحل في طخياء طمس نجومها رفعت لـــه مشبوبـــة ً عــصفت لها صباتزد هيها مرة و تقيمها فكبر للرويا وهش فواده وبشر نفساً كان قبل يلومها و عليه اكشر المفسرين في قوله تعاليٰ "و سا جعلنا الرويا اللتي ارنياك الافتنة للناس -"

ھلاتی ہے اور کبھی اس کو بھڑکاتی ہے ۔ اس نے اس نظارہ کو دیکھ کر (تعجب سے) اللہ اکبر کہا اور اس کا دل خوش ہوا اور اُس نے اپنے نفس کو يعنى ما راه ليلة المعراج خوش خبری دی جس کو پہلے يقظضة على الصحيح -ملامت کرتا تھا اور اسی پر اکثر (شرح درة الغواص خفا مفسرین نے آیت '' و سا جعلنا جي صفحه ١٣٢) -

الرويا اللتي ايناك الافتنة للناس " مين رويا كي تفسیر کی ہے یعنی جو کچھ رسول خدا نے معراج کی رات جاگتے میں دیکھا اور یہی سعنی صحیح ہیں ـ

اور فتح الباری شرح صحیح بخاری میں لکھا ہے کہ لفظ رویا واستدل به علی اطلاق کے اس چیز پر جو جاگنے کی لفظ الرويا على مايرى حالت مين آنكه سے ديكهي جائے بولنے پر اس حدیث سے استدلال کیا گیا ہے ۔ حریری نے اس استعال کا اوروں کی طرح انکار کیا ہے ۔ وہ کہتے ہیں کہ رویا سوتے میں اور رویت جاگتے میں کچھ دیکھنے پر بولا جاتا ہے۔

بالعين في اليقظة وقد انكر ها الحريسري تبعا لغيره و قـالــو انمــا يــقــال رويــا فىالمنام و اسا اللـتي في الـيـقـظــة فيــقال روية و محن استعمل الرويا في السيـقـظـة المتنبي في قوله ـ ورویاک احلی فی العیون متنبی شاعر آن میں سے ہے جو من الخمض و هذا التفسیر رویا کو جاگتے میں دیکھنے پر یبرد علی من خطاہ ۔ استعال کرتے هیں ۔ اسکا قول (فتح الباری جلد هشتم صفحه ۲۰۰۰) ہے کہ تیرا رویا (دیدار) آنکھوں میں نیند کے آونگھنے سے زیادہ لذیذ ہے اور اس تفسیر سے آن پر اعتراض آتا ہے جو اس کی خطا پکڑتے ھیں ۔

اس تمام محث سے ثابت ہوتا ہے کہ حقیقی معنی رویا کےخواب میں دیکھنر کے میں اور رویت فی الیقظة پر محازاً بولا حاتا ہے۔ جس کے لیر کوئی قرینہ لفظی یا عقلی یا حالی ایسا موجود ہو جس کے سبب محازاً رویا کا استعال رویت پر پایا جاتا ہو جیسا کہ راعی کے اول اشعبار سے پایا جاتا ہے اور جو کہ مستنج نیند میں غرق تھا اور آسی حالت میں اس نے آگ کا شعله دیکھا تھا تہو لفظ رویا کا استعال محازاً رویت کے معنوں میں نہایت عمدہ تھا مگر قرآن محید مس جو لفظ رویاکا آیت '' وسا جعلنا السرويا اللتي اريناك الافتنة للنساس" مين آيا ه اس کا یہ حال نہیں ہے ۔ پس اگر ہم تسلیم کر لیں کہ رویـا کا اطلاق رویت الیقظة پر بھی هوتا هے تو یه بھی کافی نہیں هے بلکه اس بات کا ثبوت بھی درکار ہے کہ اس آیت میں جو لفظ رویا آیا ہے۔ اًس سے بھی رویت فی الیقظة مراد ہے ۔ آیت مذکورہ میں کوئی اشارہ یا کوئی قرینہ اس بات کا نہیں ہے کہ رویا سے رویدت فی الی قظة مراد لی جائے بلکہ جب اس آیت کو مہلی آیت سے سلایا جاتا ہے جس میں '' اسری بعبدہ لیلا '' یعنی رات کا لفظ ہے تو قرینہ اس بات کا هوتا هے که رویا سے خواب هی مراد هے نه رويت في اليقظة - خصوصاً اس صورت من كه قرآن محيد من كسى جگه روياكا اطلاق رويت في اليقظة پر نهس آيا ـ

علم نے ابن عباس کی حدیث میں جو '' رویا عـین ''کا لفظ رويا عن قيد به للا آيا هي تو لفظ عين پر محث كي شعار بان الرويا بمعنى الروية هے اور اس کے سبب رويا کو في البيقظة لا رويا النائم - رويت في البيقظة قرار ديا هي (حاشیه مخاری صفحه ۵۵۰) چنال چه کرمانی شرح بخاری نے ابن عباس کی حدیث کی نسبت لکھا ہے که رویا کے ساتھ لفظ عن کی قید اس لیر لگائی ہے تاکہ معلوم ہو کہ رویا سے رویت فی اليقظة مراد هے ۔ نه رويا معنى خواب ـ

اور پھر کرما نے لکھا ھے کہ عس کی قید سے جو رویا انما قید الرویا بالعین کے ساتھ کے اس بات کا اشارہ اشارة الى انها في اليقظة و هي كه اس سے جاكتر ميں ديكھنا الی انہا لیست بمعنی العلم ۔ مراد ہے اور وہ علم کے معنی

(حاشیه مخاری صفحه ۹۸۶) مس نهس <u>هے</u> .

اور شفا قاضی عیاض میں لکھا ہے کہ ابن عباس کہ تر ہیں کہ قال ابن عباس همي رويا ويا سے آنكه كا ديكهنا مراد هے عين راها النسي صلى الله عليه جو رسول خدا صلى الله عليه وسلم نے دیکھا ند خواب کا دیکھنا۔

وسلم لا رويا سنام ـ

(شفا صفحه مر)

واضح هو كه ابن عباسكي حديث مين الفاظ '' لا رويــا منام '' کے نہیں ھیں ۔ جن کے سعنی یہ ھیں کہ '' وہ دیکھنا سونے کی حالت سی نہیں ھے '' ۔

اگر اس امر کے ثبوت کا مدار کہ حضرت ابن عباس کے نزدیک معراج " في اليقظة " هوئي _ صرف اسى حديث پر هے تو هم اس بات کو تسلیم نہیں کرتے که ان کا مذهب یه تها که معراج ور في اليقظة " هوئي كيول كه اگر حضرت ابن عباس كا يه مذهب

تھا جیسا کہ قاضی عیاض نے قرار دیا ہے کہ اسرا یا سعراج محالت يقظة هوئى تهى تو صاف فرمات " هي رويا في اليقظة " يا " روية في اليقظة ارما رسول الله صلى الله عليه وسلم ليلة اسرے به الی بیت المقدس' اس صاف لفظ کو چهور کر ایک ایسر لفظ کو اختیار کرنے کی جس کے معنی یاقیظة کے نہیں ھیں اور اگر ہت کوشش کی جائے تو اس سے بطور دلالت التزامی کے یہ معنی کے یہ معنی سمجھ میں آتے ہیں ، کوئی وجہ نہیں هو سکتی ـ

اس میں کچھ شک نہیں ہے کہ سلف سے علماء اور صحابہ کو اس میں اختلاف ہے کہ واقعات معراج بحالت بیداری ہوئے تھے یا خواب ،س ـ ليكن اگر قيد لفظ "عبن" كي حو ابن عماس كي حدیث میں ہے ۔ ایسی صاف ہوتی جس سے '' رویت فی السیقظة '' سمجھی جاتی تو علماء سیں اختلاف نبه هوتا ۔ اس سے ظاهر ہے که قید لفظ '' عین'' سے '' رویت فی الیـقـظـــة کا سمجھنا ایسا صاف نہیں ھے جیسا کہ بعض نے سمجھا ھے۔

عین کے معنی لغت میں ''حققة السی،' کے هیں۔ اسان العرب العین عند العرب حقیقة میں لکھا ہے اهل عرب کے نزدیک اس کام کو عین صافی سے لایا یعنی اس کام کی اصلیت اور حتیقت سے اور حق کو بعینہ لایا یعنی خالص اور روشن حق کو لایا ـ

الشي يقال جاء بالامر سن عـين عين كسي چيز كي حقيقت پر بولا صافیه ای من فصه و حقیقة جاتبا هے ـ کمتر هیں که وه و جاء بالحق بعينه اي خالصا واضحا ـ

(لسان العرب جلد مرصفحه ١٨٠)

پس حضرت ابن عباس کا یہ فرمانا کہ رویا عین ۔ اس کے عنى هين ـ رويا حقيقة لان رويا الانبياء حق وحي " اور

اس لیر ھارے نزدیک ابن عباس کی حدیث میں رویا کے ساتھ حو عین کے لفظ کی قید لگائی ہے اس سے رویا کے معنوں کو تبدیل کرنا اور لفظ رویا کو جو قران محید میں آیا ہے بلا کسی قرینہ کے جو قرآن محید میں موجود نہیں ہے۔ مجازی معنوں میں لینا مقصود نہیں ہے بلکہ اس سے رویا کے صحیح اور واقعی اور حق هونے کی تاکید مراد ہے یعنی آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا یہ خواب وہم و خیال یا اضعاث احلام میں سے نہیں ہے بلکہ درحقیقت خواب میں حو کچھ رسول الله صلی الله علیه وسلم نے دیکھا وہ سچ اور حق ہے کیوں کہ انبیاء کے تمام خواب حق اور سچ هوتے هیں پس لفظ عین کی قید سے لازم نہیں آتا که حالت بیداری می دیکها هو ـ

هارے اس قول کی تائید میں ابن قم کا یه قول زاد المعاد واختلف الصحابة من هے كه صحابه من اختلاف خدا کو دیکھا تھا یا نہیں ۔ ابن عباس کی روایت ہے کہ دیکھا

هل راى ربه تملك الليملة ام هے كه آنحضرت صلى الله عمليه لا فیصح عن عباس انبه رای وسلم نے معراج کی رات میں ربه وصح عنه انه قال راه بـفـواده ـ

(زادالمعاد جلد اول صفحه ۳۰۱) تها مگر صحیح یه هے که آنهوں نے کہا که آنحضرت نے خدا کو اپنے دل سے دیکھا نھا یعنی آنکھوں سے ہں دیکھا اور یہ پوری دلیل ہے کہ آن کی روایت میں لفظ عین سے آنکھ کا دیکھنا مراد نہیں ھے۔

اگر ھاری یه رائے صحیح نه ھو اور ابن عباس نے عمن کا لفظ رویا کے ساتھ اسی مقصد سے بولا ھو کہ رویا سے رویت بالعين في اليقظة مراد هي ـ تو وه بهي منجمله اس گروه کے هوں گے جو معراج فیالیقظة کے قائل هوئے هیں۔ مگر

ھم اَس گروہ میں ھیں جو واقعہ معراج کو حالت خواب میں تسلیم کرتے ھیں اور ھارے نزدیک خواب ھی میں ماننا لازم ھے۔ جس کی وجه ھم پانچویں دلیل کی تصریح میں بیان کریں گے۔

شاہ ولی اللہ صاحب نے آنحضرت صلی اللہ علیه وسلم کا معراج میں جانا ''بجسد برزخدی بین الحثال والشہادة'' بیان کیا تھا۔ اور هم نے کہا تھا که هم اس کا مطلب نہیں سمجھ سکتے۔ اسی طرح ابن قیم نے زادالمعاد میں بیان کیا هے که صرف روح رسول خدا صلی اللہ علیه وسلم کی معراج میں گئی تھی اور جسد نہیں گیا اور اسی طرح پر روح گئی تھی۔ جس طرح پر انسان کی روح مرنے کے بعد جاتی هے۔ مگر فرق یہ هے که انسان کی روح نکانے کے بعد انسان می جاتا هے مگر رسول خدا صلی اللہ علیه وسلم کی روح جانے کے بعد آنحضرت فوت نہیں ہوئے تھے۔ اگرچه یه رسز بھی هاری سمجھ میں نہیں فوت نہیں ھوئے تھے۔ اگرچه یه رسز بھی هاری سمجھ میں نہیں کا قائل نہیں ہے اور شاہ ولی اللہ صاحب کی رائے کا ماخذ بھی کا قائل نہیں ہے اور شاہ ولی اللہ صاحب کی رائے کا ماخذ بھی ہی معلوم هوتا هے۔ برحال جو کچھ این قیم کی رائے کا ماخذ بھی ہی معلوم هوتا هے۔ برحال جو کچھ این قیم کی رائے ہی۔

وقد نقل ابن اسحاق ابن اسحاق نے حضرت عایشه و معاویه انما عایشه اور معاویه کا مذهب یه قال انما کان الاسراء بروحه کی روح گئی تهی اور جسم و لم یدفیقد جسده و نقل کی روح گئی تهی اور جسم عن البصری نحو غائب نهیں هوا اور حسن بصری ذلک و لکن ینبیغی ان یعلم کا مذهب بهی یهی بتایا هے ذلک و لکن ینبیغی ان یعلم کا مذهب بهی یهی بتایا هے المفرق بین ان یقال کان لیکن اس قول میں که اسرا، الاسراء منا ما و بین ان یقال خواب میں هوئی تهی اور اس

قول میں کہ اسرا روح کے ساتھ هوئی تهی نه جسم کے ساتھ فرق جاننا چاهیر اور دونوں میں بڑا فرق ھے ۔ حضرت عایشہ اور معاویہ نے یہ نہیں کہا کہ اسرا خواب میں هوئی تھی بلکه آنھوں نے کہا کہ اسرا روح کے ساتھ ہوئی تھی اور رسول خدا کا جسم اسرا میں نہیں گیا اور دونوں سی فرق ہے کیوں که سونے والا جو کچھ خواب سیں دیکھتا ہے وہ حقیقت میں ایک معلوم چيز کي مثالي هي جو محسوس شکلوں سیں اس کو د کھائی دیتی ھیں وہ دیکھتا ہے که گویا آسان پر چڑھ گیا اور مکہ اور دنیا کے اطراف میں چلا گیا ہے۔ حالاں کہ اس کی روح نہ چڑھی نه کہیں گئی ۔ بلکه خواب کے غلبہ نے اس کی نظر میں ایک صورت بنا دی ۔ جو لوگ رسول خدا کے سعراج کے قائل هیں۔ ان کے دو گروہ هس ـ ایک گروه کهتا هے که رسول خدا کی روخ اور بدن

کان بـروحه دون جسده و بینهـما فوق عظیم و عایشة و معاویه لم یقولا کان سنا ما وانما قالا اسرى بروحه و له يفقد جسده و فرق بين الاسرين فانها يراه النائم قلد يكون اسشا لاسضروبة للسمعلوم في الصور المحسوسة فيرى كانه قد عرج به الى السماء و ذهب به الى سكة و اقطار الارض و روحه لم تصعد ولم تذهب وانما ملک الرویا ضرب له المثال والذين قالو اعرج برسول الله صلى الله عليه وسلم طائفتان طائفة قالت عرج بروحه و بدنه و طائه فالت عرج بروحه ولم يفقد بدنه و هاولاء لم يريدوا ان السعراج كان سناسا و انما ارادوا ان الروح ذاتها اسرے بھا و عرج بھا حقيقة و باشرت من جنس ماتبا شربعدالمفارقة و كان حالها في ذلك كحالها

دونوں کو معراج هوئی ـ دوسرا کہتا ہے کہ سعراج سی آن کی روح گئی تھی بدن نہیں گیا اور اس سے آن کی یہ مراد نہیں ہے كه معراج خواب من هوئي بلكه آن کی مراد یه هے که خود آنحضرت کی روح اسرا سیں گئی اور حقیقت میں آسی کو معراج ھوئی اور آس نے وھی کام کیا جو بدن سے جدا ھونے کے بعد روح کرتی ہے اور اس واقعہ مس اس كا حال ايسا هوا جيسا کہ بدن سے حدا ہونے کے بعد روح ایک آسان سے دوسرمے آسان پر جاتی ہے ہاں تک که ساتویں آسان پر بہنچی اور خدا کے سامنر ٹھہر جاتی ہے۔ پھر خدا جو چاهتا ہے اس کو حکم كرتا هے پهر زسن پر آترتى هے ـ پس جو حال رسول خدا کا معراج میں هوا وہ اس سے زیادہ كامل تها جو روح كو بدن چھوڑنے کے بعد حاصل ھوتا ہے اور ظاہر ہے کہ یہ حال اس کیفیت سے جو سونے والا

بعد المفارقة في صعودها الى السموات سماء حتى ينتهى بها الى السماء السابعة فتقف بين يدى الله عزوحيل فيها سرفيها بما يشاء ثم تنزل الارض فالذي كان الرسول الله صلى الله عليه وسلم ليلة الاسراء اكمل ملما يتحلصل للروح عند الممفارقة وصعلوم ان هذا امر فوق سايراه المنامم لكن للماكان رسول الله صلى الله عليه وسلم في سقاسه خرق العوائد حتى شق بطنه و هوحي لايتالم بذالك عرج بذات روحه المقدسة حقيقة من غير اساتة و سن سواه لا يسال بذات روحه الصعود الي السماء الابعد المفارقة فالانبياء انما استقرت ارواحهم هناك بعد مفارقة الابـدان و روح رسول الله صـلي الله عليه وسلم صعدت الى هناك في حال الحيلوة ثم

خواب میں دیکھتا ھے بالا تر ھے لیکن چوں که رسول خدا نے اینر (بلند) مرتبه کے سیب ہت سے فطرت کے قاعدوں کو توڑا ماں تک کہ زندگی میں آن کا پیٹ جاک کیا گیا اور آن کو تکایف نہ ہوئی ۔ اس لیے حقیقت میں بدون مینے کے خود آن کی روح مقدس کو معراج هوئی اور جو آن کے سوا ھیں آن سیں سے کسی کی روح بدون مرنے اور بدن چھوڑنے کے آسان پر صعود نہیں کرتی ۔ انبیاء کی روحیں اس مقام پر بدن سے جدا ھونے کے بعد ہنچتی ہیں اور رسول خداکی روح زندگی هی س اس مقام تک گئی اور واپس آ گئی اور بعد وفات کے دیگر انبیاء کی روحوں کے ساتھ مقام '' رفیق اعلی'' میں ہے اور باوجود اس کے بدن پر اس کا پر تو اور اس کی اطلاع اور آن کے ساتھ ایسا تعلق ہے کہ رسول خدا ہر ایک کے سلام کا جواب دیتر ھیں اور اسی تعلق کے سبب سے

عادت و بعد وفاته استقرت في الرفيق الاعللي سع ارواح الانبياء و سع هـذا فـلـها اشراف على البدن واشراق و تخلق به بحیث یرد السلام على من سلم عليه و بهدذا التعلق راى سوسني قائما يصلى في قبرو راه في السماء السادسة و معلوم انه لم يعرج بموسلي من قبره ثم ردالیه وانما ذلک سقام روحه و استقرارها و قبره مقام بدنه و استقراره الى يدوم سعاد الارواح الى احسادها فراه يصلى في قبره وراه في السماء السادسة كما انه صلى الله عليه وسلم في ارفع سكان في الدرفيق الاعمللي مستقرا هناک و بدنه فی ضريحه غير سفقود واذا سلم عليه المسلم رداته عليه روحه حتى يدرد عليه السلام و لم يفارق الملاء الاعلني و من كشف ادراكمه و غلظت طباعه عن ادراک

هذا فلينظر الى الشمس في علو محلها وتعلقها و تاثيرها في الارض و حيواة النبات و الحيوان بها هذا و شان الدروح فيوق هيذا فيلهما شان و للا بدان شان و هـذه النار تكون في سحلها و حرارتها توثر في الجسم البعيد عنها مع ان الارتباط والتعلق الذى بين الروح و البدن اقوى و اكمل سن ذلك واتم فشان الـروح اعـلى مـن ذلـک و الطف _

فقل للعيون الرمد اياك ان ترى (زاد المعاد ابن قيم جلد اول

سنا الشمس استغشى ظلام اللياليا میں ایک بلند مقام پر ہے اور صفحه ۳۰۱ و ۳۰۲) -اور جب کوئی مسلمان آن پر درود و سلام بھیجتا ہے خدا آن کی روح کو بدن میں واپس بھیجتا ہے تاکہ اُس کے سلام کا جواب دیں حالاں کہ پھر بھی رسول خدا (کی روح) ملاء اعلیٰ سے جدا نہیں ہوتی اور جس شخص کی عقل تاریک اور طبیعت اس بات کے سمجھنے سے عاجز ہے وہ دیکھر کہ آفتاب بہت بلندی پر ہے اور اس کا تعلق اور تاثیر زمین میں اور نبات اور حیوان کی زندگی میں ہے اور روح کا حال تو اس سے بالا تر ہے۔ کیوں که روح

رسول خدا نے موسلی کو قس میں نماز پڑھتر دیکھا اور پھر آن کو چھٹر آسان پر بھی دیکھا اور یہ سب کو معلوم ہے کہ نہ موسلی نے قبر سے صعود كيا نه واپس آئے _ بلكه وه أن کی روح کا مقام اور اس کے ٹھہرنے کی جگہ ہے اور قبر آن کے بدن کا مقام اور اس کے ٹھہرنے کی جگہ ہے جب تک که روحی دوباره بدنول می آئیں گی ۔ اسی لیر رسول خدا نے آن کو قبر میں نماز پڑھتر دیکھا اور پھر چھٹر آسان پر دیکھا۔ حیسا که خود رسول خدا (کی روح) '' رفیق اعمالی '' آن کا بدن قس میں موجود ہے

کا حال اور ہے اور اجسام کا حال اور یہی آگ اپنی جگه میں ہوتی ہے اور اس کی گرمی اس جسم میں سرایت کرتی ہے جو اس سے دور ہے حالانکہ جو ربط اور تعلق روح اور بدن کے درمیان ہے وہ اس سے زیادہ لطیف اور بالا تر ہے ۔ درد بھری آنکھوں سے کہه دے کہ آفتاب کی روشنی کو دیکھنے سے بچو ۔ ورنه راتوں کا اندھیرا چھا جائے گا ۔

تصریح تیسری دلیل کی

حو الفاظ كه مالك بن صعصعه كي حديثوں مس هس " انا عندالميت بن النائم واليقظان " اور ايك حديث مس هے " فی الحجر مضطجعا" اور انس بن مالک کی حدیث مس هے " تنام عینه و لاینام قلبه " اور حدیث کے آخر مين هي '' فاستيقظ و هاو في المسجد الحرام '' يه صاف دليلس اس بات کی هیں که اسرا اور معراج سونے کی حالت سی هوئی تهیں ـ مالک بن صعصعه کی حدیثوں پر تو کسی شخص نے اعتراض نہیں کیا مگر انس بن مالک کی حدیث پر جس کے راویوں میں سے ایک راوی شریک بھی ہے اعتراض کیا ہے اور اعتراض یہ ہےکہ اس حدیث میں ہے کہ تین فرشتر وحی آنے سے پہلر رسول خدا کے پاس آئے اور وہ مسجد حرام سی سوتے تھے۔ اُس کے بعد بیان کیا ہے کہ ایک دوسری رات کو فرشتر آئے ایسی حالت میں جب که رسول خدا کا دل دیکهتا تها اور آنکهیں سوتی تهی اور دل جاگتا تھا ۔ پس اس حدیث میں دو نقص ھیں اول تو تزلزل ھے بیان میں ۔ دوسرے یہ کہ وحی آنے سے پہلے فرشتوں کا آنا بیان هوا ہے ۔ مگر یه اعتراض صحیح نہیں ہے کیوں که پہلا جمله ایک الگ واقعه کا بیان ہے اور دوسرا جمله جس میں '' فیما یسری قسلمبه و تسنام عیسنه '' آیا ہے وہ بیان ہے اسرا اور معراج کا ۔ چنا**ں** چہ

امام نووی کہتر ہیں کہ شریک کی روایت میں چند غلطیاں ھیں جن کا علماء نے انکار کیا ہے ان میں سے ایک یہ ہے کہ اس نے کہا ہے کہ معراج وخی آنے سے ملر هوئي اوريه غلط هے۔ كسى نے اس پر اتفاق نہیں کیا اور علاء باهم اس ير بهي متفق هي کـه نماز کا فرض هونا معراج کی رات میں هوا۔ پس معراج کیوں کر وحی آنے سے مملر هـو سكتي هے ـ ـ ـ خطـابي ـ ابن حزم - عبدالحق - قاضي عياض اور امام نووی نے اس کا انکار کیا ہے اور آنھوں نے صاف کہه دیا ہے که شریک اس بات مسس اکیلا ہے۔۔۔۔۔۔۔ راوی کا یه قول که اس کے بعد آن کو کسی نے نہیں دیکھا ہاں تک که وہ رسول خدا کے پاس دوسری رات آئے ۔ اس میں آس نے دونوں دفعہ آنے سی جو مدت گذری آس کو بیان نہیں کیا ھے۔ پس خیال کیا حائے گا۔ که دوسری دفعه کا

قال النووي حاء في رواية شريكب اوهام انكرها العلاء من جملتها انه قال ذلك قبل ان يوحى اليه و هـو غلط لـم يـوافـق عـليـه وايضأ العلاء اجمعو اعلى ان فرض الصلوة كان ليلة الاسراء فكيف يكون قسل الوحي _ _ _ _ وانكرها الخطابي و ابن حزم و عبدالحق والقاضي عياض والنووي ـ ـ وقد صرح هـٰؤلاء المذكورون بان شريكا تفرد بـذلـک _ _ _ _ _ قـولـه فـلم يرحم اي بعد ذلک حتى اتوه ليلة اخرى لم يعين المدة التي بين المجيئين فيحمل على ان السجئي الشاني كان بعد الوحي البيه وحينئذ وقع الاسراء والمعراج واذاكان بين المحجيئين سدة فلا فرق بن ان تكون تلك المدة ليلة واحدة اوليالي كشرة اوعدة

عینی شرح بخاری میں لکھا ھے۔

آس وقت اسرا اور معراج واقع

آنے میں کوئی مدت ہے تو کوئی

فرق نہیں ہے اس میں که وہ

مدت ایک وات هو یا مت سی

راتس هوں یا چند سال هوں

اور اس سے شریک کی روایت

میں جو اشکال بیدا هوتا ھے

سنين و بسهدا يرتفع الاشكال آنا وحي آنے كے بعد هوا اور عن روایة شریک و محصل الـوفـاق ان الاسراء كان في اليقظة هوئي ، اور اگر دونوں دفعه كے بعد البعدة وقبل الهجرة فيسقط تشنيع الخطابي و ابن حزم و غير هـ ا بـ ان شريـ كا خالف الا جاء في دعواه ان المعراج كان قبيل السعشة ـ

> (عینی جلد ۱۱ صفحه ٦٠٣ و ٦٠٣) -

وہ آٹھ جاتا ہے اور اس بات پر اتفاق کا ہونا نکلتا ہے کہ اسرا جاگتے میں بعد نبوت کے اور قبل ھجرت کے ھوئی ۔ پس خطابی ۔ ابن حزم اور دیگر معترضین کی یہ ملامت دور ہو جاتی ہے کہ شریک نے اج_اع آمت کو اپنے اس دعوی سے توڑا ہے کہ معراج نبوت سے پہلے ہوئی ۔

اس بیان سے صاف ظاہر ہے کہ پہلا واقعہ ایک رات کا ہے جس میں نه معراج هوئی هے نه کچھ اور واقعـه هوا هے اور اُس رات کو فرشتے آئے اور صرف دیکھ کر چلے گئے اور آسی کی نسبت شریک نے بیان کیا ہے کہ یہ واقعہ قبل وحی کا ہے۔ دوسرا جمله متعلق ہے اسرا اور معراج سے جیسا کہ عینی نے بیان کیا ہے اس صورت میں شریک کی حدیث میں اور قولوں میں کہ اسرا بعد نبوت ہوئی تھی، کچھ اختلاف باقی نہیں رہتا ۔ لیکن عینی نے جو بيان كيا هے كه " و محصل الوفاق ان الاسراء كان في السقظة بعد البعشة " اس جمله كالمهلا حصه غلط هي اس لير كه اس بات مين اتفاق نهين هواكه اسرافي السقطة تهي بلكه اس دوسر ع جمله مس بھی صاف بیان کیا گیا ہے ، '' فیہا یسری قبلبه و لا تنام

عینه و لا یسنام قسلمه " اور تمام قصه معراج کا بیان کرنے کے بعد حدیث کے اخبر میں بیان کیا ھے " فاستقیظ وہو فی المسجد الحرام '' یعنی ان تمام واقعات کے بعد آنحضرت جاگے اور وہ مسجد حرام میں تھے ۔ پس کچھ شک نہیں ہو سکتا کہ ان حدیثوں سے صاف ثابت ہو سکتا ہے کہ اسرا اور معراج ابتدا سے انتہا تک سونے کی حالت میں ہوئی تھی اور وہ ایک خواب تھا۔ جو رسول خدا نے دیکھا۔

اور عینی میں جو یہ بات لکھی ہے کہ ممکن ہے کہ یہ کہا فيمكن ان يقال كان جاوم كه أنحضرت شروع معراج في اول الامـر و آخـره في النوم و اور آخر معراج مين سوتے تهر اور اس حدیث میں کوئی دلیل اس بات پر نہیں ھے کہ رسول خدا

لميس فيه ما يدل على كونه نــائمــا في القصة كاــهــا ــ

(عینی جلد ۱۱ صفحه ۹.۳) کن قصه سی سوتے رہے۔

یه ایسی بودی اور ضعیف هے که کوئی شخص بھی اس پر کان نہیں رکھ سکتا ۔ کیوں که کسی حدیث سے ثابت نہیں ہے کہ درمیان معراج کے کسی وقت آنحضرت جاگ اٹھے تھے بلکہ کسی حدیث میں آنحضرت کے جاگتے ہونے کا اشارہ بھی نہیں ہے ۔

مالک بن صعصعه کی حدیث میں جو یه الفاظ هیں " بین النائم واليقطان '' اس كي نهايت عمده تشريج انس بن مالك كي حديث سے هوتی هے جس میں بیان هے " فیدما یری قلبه و تدام عینه ولا يسنام قلبه " اور تمام انبيا كا سونے ميں يهي حال هوتا هے ـ ظاهر میں آنکھیں سو جاتی ھیں اور دل جاگتا رھتا ہے ـ

تصریح چوتھی دلیل کی

ھم سمجھتر ھیں کہ اس دلیل کی زیادہ تصریح کرنے کی ھم کو چنداں ضرورت نہیں ہے اس لیے کہ جن صحابہ کا مذہب یہ تھا

که جسم مبارک آنحضرت صلی الله علیه وسلم کا معراج میں نہیں گیا تھا بلکہ معراج سونے کی حالت میں بالروح ہوئی تھی آن کے نام مع آن کے اقوال کی سند کے هم نے لکھ دے هی اور اس لیر زیادہ تشریح کی ضرورت کی نہیں ہے مگر شفا قاضی عیاض نے سندرجه حاشیہ نام آن لوگوں کے لکھر ہے جن کا مذہب یہ ہے کہ معراج بجسده اليقظة هوئي تهي ـ ان مين سے معلوم هوتا هے كه اساسه بن عبدالله ابن عباس ، زید ، انس بن مالک ، جابر بن جابر بن عبدالله ، انس بن عبد الله ، حذيفه بن اليان ، عبد الله بن عباس ، عبد الله بن مسعود ، عمر بن الخطاب ، مالک بن صعصعه اور ابو هريره تو صحابی هیں اور باقی تابعی وغیرہ ۔ مگر هم کو نہیں سعلوم کہ قاضی عیاض نے جو آن کا مذهب قرار دیا ھے ۔ آس کی کیا سند ہے اور کہاں سے آس (شفا قاضی صفحه عیاض ۸۹ نے استنباط کیا ہے۔

الک ، حذيفه بن اليان ، ر بين الخطاد ابو هريره مالک بن صعصعه، ابوحبة البدوي، عبدالله ابـن مسعود ، ضحاک ، سعید ابن جبیر ، قتاده ، ابن المسيب ، ابن شهاب ، ابن زيد ، ن ، ابراهیم ، مسروق ، محاهد عـكـرمــه، ابـر: ــريج ــ

انس بن مالک اور مالک بن صعصعه دو صحابیوں کی حدیثیں ہم نے اوپر نقل کی ہیں۔ جن کی حدیثوں میں خود الفاظ '' انا نـا ئم'' اوربين النائم والبيقطان " اور في التحجر سضطجعا " اور " فيما يرى قلبه و تنام عينه ولا ينام قلبه " اور " ثم استيقيظ وهو في المسجد الحرام" موجود هي، جن سے صاف پایا جاتا ہے کہ آن کے نزدیک معراج بحالت نوم ہوئی تھی پس معلوم نہیں ہوتا کہ آن دونوں صحابیوں کے نام قاضی عیاض نے آن لوگوں کی فہرست میں کیوں داخل کیے ہیں جن كا مذهب بجسده اور في السيقظة هونے كا هے -

مالک بن صعصعه اور انس بن مالک کی حدیثوں میں قتادہ بھی ایک راوی ھیں ۔ پھر وہ کسی طرح آن لوگوں کی فہرست میں داخل نہیں ھو سکتے ۔ جو معراج کے بجسدہ اور فی الیقے ظ ق ھونے کے قائل ھیں ۔

سوائے صحاح کے اور کتب حدیث میں جو حدیثیں ھیں آن پر بھی ھم نے سرسری طور سے نظر ڈالی ہے سوائے ایک حدیث کے جو بہتی میں ہے اور جس میں یہ الفاظ ھیں '' بیندما انا نائم عشاء فی المستجد الحرام اذا تانی آت فایقظنی فاستیقظت'' یعنی میں عشا کے وقت مسجد الحرام میں سوتا تھا کہ آنے والا آیا آس نے مجھ کو جگایا اور میں جاگا، اور کسی حدیث میں جاگتے یا سوتے ھونے کا کچھ ذکر نہیں ۔ پس ایسی حدیثوں سے اس بات پر استدلال کرنا کہ آن کے راویوں کا مذھب یہ ہے کہ معراج بجسدہ اور فی المیقظیة ھوئی تھی ۔ کسی طرح پر صحیح نہیں ہے ۔ علاوہ اس کے بہتی اور دیگر کتب کی حدیثیں جو صحاح میں داخل علاوہ اس کے بہتی اور دیگر کتب کی حدیثیں جو صحاح میں داخل غیری ھیں لائق وثوق اور قابل احتجاج نہیں ھیں ۔ پس قاضی عیاض نے جو فہرست لکھی ہے آس کا مآخذ ایسا نہیں ہے جس پر اعتاد کیا جا سکر ۔

تصریح پانچویں دلیل کی

یه دلیل اس امر سے علاقه رکھتی ہے که اگر عقل اور نقل میں بظاہر اختلاف پایا جاتا ہو تو نقل کے معنی اس طرح پر بیان کرنے چاھئیں جو عقل کے مطابق ہوں ۔ مگر اس کی تصریح بیان کرنے سے پہلے ہم کو یه بات معلوم کرنی چاھیے که حدیثیں جو کتابوں میں جمع ہوئی ھیں آن کے الفاظ وہ نہیں جو رسول خدا صلی اللہ علیه وسلم نے بیان کیے تھے ۔ بلکه راویوں کے لفظ ھیں

جو اُنھوں نے اپنی سمجھ کے موافق بیان کیر ھیں۔

اس باب مس كه حديث بلفظه روايت كرني لازم هے يا بالمعنى بھی روایت کرنا جائز ہے محدثین میں اختلاف رہا ہے ۔ ایک گروہ محدثين كا حديث كو بالمعنى روايت كرنا جائز نهس سمجهتا بلكه بلفظه روایت کرنا ضروری سمجهتا تها چنان چه فتح المغیث شرح الفيته الحديث مي جو حافظ زين الدين عراق كي تصنيف هے لکھا ھے۔

محدثین ۔ فقم اور اصولیین شافعیه وغیرہ کا ایک گروہ روایت بالمعنى كو مطلقاً روا نهين ركهتا ـ بالمعنى سطلقا قال طائفة قرطبي نے كها هے كه امام مالک کا اصلی مذهب بھی یہی ہے۔ ہاں تک کہ جو اس طرف گئے ھیں آن سیں سے بعض س باد سی بهت سختی کی ہے ۔ پس آن کے نزدیک ایک کلمه کا دوسرے کلمه یر یا ایک کا دوسرے حرف رف پر مقدم لانا جائز نهی ھے۔ نہ ایک حرف کا دوسرمے حرف کی حگه بدلنا۔ نه ایک حرف کو زیادہ یا کم کرنا چه جائیکه مت سے حرفوں کو ۔ نه ثقیل کو خفیف کرنا اور نه خفیف کو ثقیل کرنا ـ نه منصوب كو رفع دينا ـ نه مجروريا

قيل لا مجوزله الرواية من المحدثين والفقهاء والا صوليبن سنالشافعية وغير هـم قـال الـقـرطبي وهوالصحيح من سدهم سالک مین ان بعض من ذهب لهذا شدد فيه اكثر التشديد فلم يجوز تـقديم كلمـة عللي كلمة ولا حرف آخر ولا ابدال حرف باخر ولا زيادة حرف ولاحدنه نضلاعن اكثر ولا تخفيف ثقيل ولا تشقيل خفيف ولارفع منصوب ولانصب مجرورا ومرفوع ولولم يتغير المعنى في ذلك وكله بل اقتصر بعضهم علىالىلفظ ولوخالف

کان لحنا کیا بین تفصیل هـذا كا.ـه الـخـطيب في الكفايه ـ

(فتح المغيث صفحه ٢٧٦)

وقيل لا مجوز لغرا لصحابة خاصة لظهور الخلل في اللسان بالنسبة لمن قبلهم مخلاف الصحابة فهم ارباب اللسان واعلم الخلق بالكلام حكاه الاوردى والروياني في باب القضابل جزساباله لايجوز لنغبر المصحابي وجعملا المخلاف في الصحابي دون غيره و قييل لا مجيوز لغير الصحابة و التابعين يخلاف من کان سنمهم و به جزم بعض سعاصرالخطيب وهو حفيددالقاضي ابي بكرر في ادبالرواية قال لانالحديث اذاقيده بالا سناد وحدب

(فتح المغيث صفحه ٥٥٦ و ٥٥٥)

ان لا ختاف لفظه فد

خله الكذب ـ

اللغة الفصيحة وكذا لو مرفوع كو نصب دينا اگرچه ان تمام صورتوں سی معنی نه بدلتر ھوں۔ بلکہ آنھوں نے لفظ ھی پر بس کی ہے چاہے لغت فصیح کے برخلاف هي هو ۔ اور ايساچا هے

غلط هو هی خطیب نے کفایه میں اس کو مفصل بیان کیا ہے۔ اس تشدد میں جو بلفظه حدیث کے بیان کرنے کی نست تھا بعض بیان بزر کوں نے نرمی کی اور کہا کہ صرف صحابہ کو یا صحابه اور تابعین کو بالمعنى روايت كرنى جائز ہے اوركو نهس _ جنال چه فتح المغيث میں لکھا ھے کہ۔ اور کہا گیا ہے کہ صحابہ کے سوا دوسروں کے لیر روایت بالمعنی کرنا روا نہیں ہے ۔ کیوں که زبان میں به نسبت آن کے جو پہلے تھے۔خلل آ گیا ہے۔ بر خلاف صحابه کے اس لیے که وه اهل زبان اور کلام کو خاوب سمجهنے والر تاھے۔ ماوردی اور رویانی نے بابالقضا میں اس کا ذکر کیا ھے بلکہ اس بات کو زور کے ساتھ بیان کہ کیا ہے صحابی کے سوا دوسرمے كو روايت بالمعنى جائز نهين ـ

مگر یه آن کا اختلاف صرف صحابی میں ہے نه اوروں میں ، اور بعض کہتر کہ صحابہ اور تابعین کے سوا دوسروں کو روایت بالمعنی جائز نہیں ہے اور خطیب کے ایک معاصر یعنی قاضی ابوبکر اس نے کہا ہے کہ جب حدیث میں اسناد کی قید لگائی وليقيل الراي عقب ايراده تو يه واحب هے كه لفظ نه للحديث معنى اى بلمعنى لفظ بدلس تاكه جهوث داخل نه هو او کہا قال فقد کان انس رض کہا عندا حائے باوحود اس قید کے بھی ى**ە** با**ت** كىهى گئى كە روايت کرنے کے بعد راوی کو ایسر الفاظ کا کہہ دینا ضرور ہے جن سے معلوم ہو کہ حدیث کے بعینہ وہی لفظ نہیں ہیں جو پيغمىر خدا صلى الله عليه وسلم نے فرمائے تھر چناں چہ فتع المغیث میں لکھا ہے کہ راوی کو حدیث بالمعنی بیان کرنے کے بعد کہنا چاھیر ''اوکا قال'' خطیب نے ایک باب میں جس میں آن کا بیان ہے جن کو روایت بالمعنى كي اجازت هے ـ كمها ھے کہ انس ر^خ حدیث کے بعد کہتر تھر آس کے قول کی مانند یا ایسا یا اس جیسا یا اس سے ملتا جلتا _ خطیب نے ابن مسعود

کے پوتے نے ادب الروایة میں اس کو زور کے ساتھ بیان کیا ہے۔ في باد المعقودلمن احازا لرواية بالمعنى لقولها عقب الحديث ونحوه من الا لفاظكقوله اونحو هذا او شبهه اوشكله فقد روى الخطيب ايهاً عن ابن سسعود انه قبل سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم ارعد و ارعدت ثيمابه وقال او شبه ذا او نحوذا عن الى الدرداء انه كان اذا فسرغ من السحديث عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال هذا اونحه هذا اوشكله و رواهـا كلمها الـدارسي في نده بخوها ولفظه في ابن عود قال اومشله اونحوه او شميه به و في لفظ آخر

لغيره ان عمر بن ميمون سے روایت کی ہے۔ انہوں نے سمع يـوساً ابن مسعـود يحـدث کہا کہ میں نے پیغمبر خدا عن النبي صلى الله عليه وسلم سے سنا ہے پھر کانپے اور ان وقدد عملاه كدرب وجعدل کا کپڑا ہلنے لگا اور کہا ۔ اس العرق يستحد رمنه عن جبينه کی مانند یا آس کی مثل اور ابو درد وهـو يـقـول اسا فــوق ذلك سے روایت ہے کہ جب وہ واسا دون ذلك واسا قريب حدیث بیان کر چکتر تو کہتر سن ذلک وهدا کشک کہ یہ کہا تھا یا اُس کی مثل من المحدث والقارى ابهما یا اس جیسا ۔ دارمی نے اپنی عليه الامربه فانه يحسن مسند میں یه سب الفاظ بیان بيتول اوكما قال ـ کیے ہیں ابن مسعود کے الفاظ (فتح المغيث صفحه ٢٧٩) اس میں یہ هیں اس کی مثل یا اس کی مانند یا اس کے مشابہ اور دوسرے راوی نے اور الفاظ بیان کیے میں ۔ چناں چہ عمر بن سیموں نے کہا کہ میں نے ایک روز ابن مسعود کو حدیث بیان کرتے سنا اور آن کو تکلیف ہونے لگی اور پسینہ ان کی پیشانی پر ٹپکتا تھا اور وہ کہتے تھے کہ اس سے زیادہ یا اس سے کم یا اس کے قریب ـ غرضیکه ایسا لفظ کہے

جس سے قاری اور محدث کا شک ظاہر ہو ۔ باوجود اس کے صحابہ اور تابعین برابر حدیث کو بالمعنی روایت کرتے تھے ۔ جیسا کہ فتح المغیث کی مندرجہ ذیل عبارت سے ظاهر هوتا هے _

ایک تابعی کہتے ہیں کہ میں بہت سے صحابیوں سے ملا ہوں۔ جو معنى ميں متفق اور الفاظ ميں مختلف تھے میں نے ایک صحابی سے کہا تو کہنے لگے کیا مضائقہ

وعن بعض التابعين قال لقيت انا سا سن الصابة فاجتمعوا في المعنى

و اختلفوا على في اللفظ فقلت ذلك لبعضهم فقال لاباس به مالم محل سعناه حكاه الشافعي وقال حذيفة انا قوم عارب نور والاحاديث فنقدم ونوخرو قال ابن سمرين كننت اسمع الحديث من عشرة المعنى واحد والدفيظ مختلف وممين كان يدروي بالمعنى منالتابعين الحسن والشعبي والنخعي بل قال انن الصلاح انه الذي شهد به احوال الصحابة و السلف الاولين فكشرسا كانوا ينقلون سعني واحدا في امر واحد بالفاظ مختلفة وسا ذاک لان سعولهم کان على المعنى دون اللفظ ـ

(فتح لمغیث صفحه ۲۷۵)

قال الحسن لولا المعنى ما حدثنا وقال الشورى لو اردنا ان نحد ثكم بالحديث كما سمعناه ساحدثناكم محرف واحد ـ

(فتح المغيث صفحه ٢٧٧)

هے اگر معنی نه بدلیں یه شافعی کا بیان ہے اور حذیفہ کہتر تھر هم قوم عرب هين جب حديث بیان کرتے ہیں الفاظ آگے پیچھر کر دیتر هیں ابن سرین کہتے ھیں کہ میں دس آدمیوں سے حدیث سنتا تھا۔ معنی یکسال اور الفاظ جدا جدا هوتے تھر ـ تابعین سی سے حسن شعبی اور نخعی روایت بالمعنی کرتے تھے۔ ابن صلاح کہتر ہیں کہ صحابہ اور سلف اولین کے حالات اس پر شاهد هی که وه اکثر ایک مطلب كو مختلف الفاظ مين بيان کرتے تھر ۔ کیوں کہ آن کا زیاده تر خیال مضمون پر هوتا تها نه الفاظ ير ـ

حسن رضی اللہ عنه کہتے ہیں که اگر روایت بالمعنی کی اجازت نه هوتی تو هم حدیث نه بیان کر سکتے اور ثوری کہتے ہیں که اگر هم حدیث آسی طرح تم سے بیان کرنا چاھیں جس طرح سنی ہے تو ایک حرف بھی نہر بیان کر سکتر ۔

سمع بها مقتصرا عليها امام سخاوى فتح المغيث مين بدون تقدم ولا تاخر ولا لكهتر هم كه اس باب مس سب زيادة ولانقص لحرف فاكثر ولا ابدال حرف او اكثر بغر ولا مشدد بمشقل او عکسه من لا يعلم مدلولها اى الفاظ في اللسان و مقاصدها وما يحل معناها والمحتمل من غيره والمرادف منها و ذلك عللي وجه الوجوب بلا خلاف بين العلماء ـ

(فتح المغيث صفحه ٢٤٥) حرف کے بھی بدلنے کے اور مشدد کی جگه ثقیل اور ثقیل کی جگه مشدد لانے کے۔

> ذلك و محققه فاختلف فيه السلف و اصحاب الحديث وارباب الفقه والا صول فالمعظم منها اجاز له الرواية بالمعنى اذا كان قاطعا بانه ادى معنى اللفظ الذي بلغه سواء في ذالك

بالاتخر حدیثوں کا بعض شرطوں سے بالمعنی روایت کرنا محدثین ولمرد بالالفاظ اللتي کے نزدیک حائز قرار پایا۔ چنانچہ کا اتفاق ہے کہ جو شخص عربی زبان کے الفاظ کے مدلول اور آن کے مقاصد اور معنی کے متغیر هونے اور محتمل اور غیر محتمل سعنی اور مرادف کو نہیں جانتا آس کے لیے ضرور ہے کہ آنھی الفاظ سے روایت کرمے حواس نے سنر ہیں بغیر تقدیم و تاخیر کے اور بغیر ایک حرف کی بھی زیادتی یا کمی کے اور بغس ایک

اور کچھ لوگ ان لوگوں کے سوا ھیں جو ان سب باتوں کو و اسا غمره ممن يعلم جانتر هم أن كے روايت بالمعنى كرنے ميں اهل حديث ، اهل فقه اور اهل اصول میں اختلاف ہے۔ مت سے لوگوں نے آن کوبالمعنی روایت کرنے کی اجازت دی ہے۔ اگر روایت کرنے والا قطعاً سمجهتا ہوکہ جو لفظ اُس نے سنا اُس کے معنی پورے پورے اداکردے میں

المدرفوع او غيره كان موجبه العلم اوا العمل وقع من الصحابي او التابعي او غير هما حفظ اللفظ ام لا صدر في الافتاء و المناظرة اوالرواية اتی بلفظ مرادف له ام لاكان معناه غامضا او ظاهرا حيث لم محتمل اللفظ غير ذالك المعنى و غـلب على ظنه ارادة الشارع بهذا الدفظ ساهو سوضوع له دون التجوز فيه والا

ستعارة ـ

میں نه محاز هو نه استعاره۔

ان روایتوں سے نخوبی ظاہر ہے کہ ابتدا یعنی صحابہ و تابعین کے زمانہ سے حدیث کی روایت بالمعنی کرنے کا دستور تھا اور جو حدیثیں صحاح ستہ اور دیگر کتب حدیث سیں لکھی ہیں سوائے شاذ و نادر چھوٹی حدیثوں کے وہ سب بالمعنی روایت کی گئی ہیں ۔ یعنی آنحضرت نے جو بات جن لفظوں سے فرمائی تھی وہ لفظ بعینه و مجنسه نہیں هیں بلکه راویوں نے جو مطلب سمجھا اس کو آن لفظوں سی جن سی وہ بیان کر سکتر تھر بیان کیا ۔ پھر اسی طرح دوسرے راوی نے پہلے راوی کے اور تیسرے راوی نے دوسرے راوی کے اور چوتھے راوی نے تیسرے راوی کے بیان کو اپنر لفظوں میں یبان کیا اور عالمی هذالقیاس ـ پس حدیث کی کتابوں میں

اور روايت مرفوع علم هو يا غير مرفوع پر دلالت کرتی هو یا عمل پر صحابی سے ہو یا تابعی سے یا آن کے سوا کسی اور سے منقول ہو۔ راوی نے الفاظ یاد رکھر ھوں یا نہیں افتاہ اور سناظرہ سی ہو یا روایت میں اس کا مرادف لفظ بیان کیا هو یا نهیں ـ اس کے معنی مهم هول یا ایسر ظاهر کہ اس لفظ سے دوسرے معنی کا احتمال نہ نکار اور اس لفظ سے جو کچھ شارع نے مراد لی ہے راوی کا ظن غالب بھی اسی طرف (فتح المغیث صفحه ۲۵۵) گیا هو اور اس معنی مراد لینے حو حدیثس لکھی گئی ھیں وہ اخیر راوی کے لفظ ھیں اور معلوم نہیں ہوتا کہ اس درمیان میں اصلی الفاظ سے کس قدر لفظ ادل بدل اور آلك بلك هو گئر اور كچه عجب نهيں كه كسى نے حديث کے اصل مطلب سمجھنر میں بھی غلطی کی ہو اور اصلی حدیث کا مطلب بھی بدل گیا ہو اور آس کے یعنی غلط مطلب سمجھنر کی مثال میں متعدد حدیثیں بھی موجود ھیں۔ خود صحابہ نے حدیث ساع موتني اور حديث تعذيب الميت ببكاء اهله كا مطلب غلط سمحها تها۔

اسی باعث سر کہ حدیثوں کی روایت کے حو الفاظ میں وہ آخیر راویوں کے هیں جب که اصلی زبان عرب میں کسی قدر تبدیل هو گئی تهی علمائے علم ادب نے حدیثوں کو بلحاظ علم ادب کے قابل سند نہیں سمجها _ چنال چه جلال الدين سیوطی نے اپنی کتاب الاقتراح سیں لکھا ھے پیغمبر خدا کی اس کلام سے استدلال کیا جاتا ہے جس کی نسبت ثابت ہو چکا ھے کہ میں الفاظ جو روایت کیے گئے ہیں۔ آپ کی زبان مبارک سے نکلے میں ۔ اور یہ ہت ھی کم ہے ۔ صرف چھوٹی جهوٹی حدیثوں سی 🙇 ورنه اكثر حديثين بالمعنى روايت

واساكلاسه صلىالله عليه وسلم فيستدل منه بماثبت انه قاله على اللفظ المروى وذلكب نادرحدا انما يوحد في الاحاديث القصار على قلة ايها فان غالب الاحاديث مروى بالمعنى وقد تداولتها الاعاجم والمولدون قبل تــدويـــــا فردوها بمــا ادت اليه عبارتهم فزادوا ونقصوا وقدموا واخروا وابدلوا الفاظا بالفاظ ولهذاترى الحديث الواحد في القصة الواحدة مرويا على اوجه شي بعبارات مختلفة وسن ثم الكرعلي ابن مالك اثباته القواعد

هوئي هي اور عجميون اور مولدين نے حدیثوں کو آن کے جمع هونے بہارسے استعال کیا ہے۔ یھر خود ان کی عبارت حدیثوں کے مطلب کو جہاں کھینچ کر لے گئے وہیں بہنچا دیا۔ بڑھایا۔ گھٹایا ۔ تقدیم و تاخیر کی اور الفاظ بدل دے۔ اسی لیے ایک حدیث ایک هی مضمون کی مختلف طور پر جدا جدا عبارتوں سی بیان ہوئی ہے اور اسی لیے ابن مالک پر اعتراض کیا گیا ہے کہ اس نے الفاظ حدیث سے قواعد نحویہ کو ثابت کیا هے ـ ابوحیان شرح تسمیل میں لکھتا ہے کہ اس مصنف نے عربی زبان کے قواعد کلید کو اکثر الفاظ حدیث سے ثابت کیا ھے اور اس کے سوا متقدمین اور متاخرین میں سے کوئی اس طریقه پر نہیں چلا ۔ علم نحو کے اول بانیوں اور زبان عربی کے قواعد کے محققوں جیسر ابوعمر ابن علا۔ عیسی بن عدر اور سیبویه نے بصری نحویوں سی سے اور

النحوية بالالفاظ الواردة فىالىحدىث قال ابوحيان في شرح التيسيهيل قداكيثر هذالمصنف من الاستدلال بما وقدع فىالاحداديث عملى اثمات القدواعد الكلية في لسان العرب وسارايت احددا من السمتقدمين و المتاخرين سلك إهاده الطريقة غيره على أن الواضعين الا ولين لعلم النحوالمستقرئين للحكام سن لسان العرب كابي عمرو بن العلا وعيسلي بن عمروالخليل وسيبويه من ائمة البصريين والكسائي والفراء وعلىبن سبارك الا حمرو هشام الضريرمن الممتة الكوفيين لم يفعلوا ذلك وتبعهم على هذ المسلك المتاخرون من الفريقين وغبرهم عن نحاة الاقالم كنحاة بغداد و اهل الاندلس و قد جرى الكلام في ذلك سع بعض المتاخرين الاذكياء فقال انما ترك العلااء ذلك

کسائی ۔ فرا ۔ علی بن سبارک احمراور هشام الضرير نے كوفى نحویوں میں سے کسی نے ایسا نہیں کیا اور دونوں قسم کے نحوی متاخرین میں سے اور بغداد اور اندلس وغبره مختف ملكون کے نحوی بھی اسی طریق پر چلر ھیں ۔ ستاخرین میں سے ایک عالم کے سامنر اس کا تذكرہ آیا تو اُس نے كہا كه علاء نے اس طریقه کو اس لیر ترک کیا ہے کہ آن کو ھرگز اعتاد نہیں ھے کہ یہ الفاظ بعینہ پیغمر خدا کے هس ـ اگر وہ اعتباد کرتے تو قواعد کلیہ کے ثبوت میں حدیث بھی منزلہ قرآن کے هوتی ـ اور یه دو باعث سے ہوا ایک تو یہ کہ راویوں نے روایت بالمعنی کو جائےز سمجها اور تم دیکھو گے که ایک واقعہ جو پیغمبر خدا کے زمانه می هوا تها ـ انهی تمام الفاظ میں منقول نہیں ہوا ھے۔ جیسر ایک قصه میں کمیں تو "زوجتكما بما سعكب"

لعدم وثوقهم ان ذلك لفظ الرسول صلى الله عليه وسلم اذليو وثيقوا بذليك ليجرى محرى القرآن في اثبات القواعد الكلية وانماكان ذلك لا مريدن احدد هما ان الدرواة جوز والنقل بالمعنى قتجد فيضية واحيدة قيدجيرت في زمانه صلى الله عليه وسلم لم تنقل بشلك الالفاظ جميعا نحه داروی من قهوله زوجه کها عما سعك سن القرآن مسلكتكها ما سعك خددها ما سعك و غسر ذلك من الالفاظ الواردة في هذه الفضة فنعلم يقينا انه صلى الله عليه وسلم لم يلفظ بجميع هذه الالفاظ بل لا نجزم بانه قال بعضها اذ محتمل انه قال لفظاً مراد فالهذه الالفاظ غمرهافاتت الرواة با لرادف ولم تات بلفظه اذا لمعنى هوالمطلوب ولا سيها مع تقادم السهاع وعدم ضبطه بالكتابة والاتكال على الحفظ فا لضابط منهم

اور کمی "سلکتکمها عدا معک، اور کیس "خددها عما معكب الفاظ بيان هوئے هم اور هم يقيناً جانتر هم کہ پیغمس خدا نے یہ تمام الفاظ نہیں کہر بلکہ همیں اس کا بھی یقین نہیں ہے کہ ان سی سے کوئی لفظ کہا ھے۔ کیوں که مکن ہے کہ پیغمبر خدا نے ان الفاظ كاكوئي اور مرادف لفظ فرمايا هو _ يهر راويوں نے وہ لفظ نه بیان کیا هو اور اس کا مرادف لفظ كهديا هو اس لبر که مطلب تو سعنی سے ہے۔ اور خاصکر جب بار بار سنا گیا اور لکھا نہ گیا اور حافظہ پر بهروسا کیا گیا ۔ یس ضابطه وهی ھے جس نے مضمون یاد رکھا اور لفظ یاد رکھنا تو مشکل ہے خاصکر لمبی حدیثوں میں اور سفیان ثوری نے کہا ہے کہ اگر میں تم سے کہوں کہ میں نے جس طرح یہ حدیث سنی ہے اُسی طرح تم سے بیان کرتا ہوں تو هر گزیقین نه کرنا بلکه وه

من ضبط المعنى و اسا ضبط اللفظ فمعيد حدا لاسيافي الاحاددث العصوال وقد سفيان الـثوري ان قلت لكم انی احددثکم کا سمعت فيلا تبصد قوني انما هوالمعني وسن نظر فالتحديث ادني نظر علم اليقين الهم الما يىروون بالسمعنى وقال ابوحيان انما اسعنت الكلام في هذه المسئلة لئلا يــقــول الـمـمـةــدى مــا بال النحويات يستداون بقول العرب و فهم المسلم و الكافر و لا يستدليون عاروي في الحديث بنقل العددول كا البخارى ومسلم واضرابهما فمن طالع ماذ كرزاه اذرك السبب الذي لا جله له يستدل النحاة بالحديث انتهى كلام ابن حيان بلفظة.... وقال ابوالحسن ابن الصائع في شرح الجمل تجويدز الرواية بالمعنى هوالسبب عندى في تـركـ الاعمـة كـسـيبويـه

وغيره الاستشهاد على اثبات اللغة بالحديث واعتمد واق ذلك، على القرآن وصريح النقدل عن العرب ولولا تصريح الدملاء بجوارالعقل بالمعنى فى الحديث لكان الاولى فى اثبات فصيح اللغة كلام النبى صلى الله عليه وسلم لانه افتصح العرب ـ

(الاقتراح للسيوطي صفحه ۱۹ و ۲۰ و ۲۱)

و هكذا في خرانة الادب للعلامة عبد القادر البغدادي ناقلا عن السيوطي ومصحاله.

صرف حدیث کا مضمون ہے۔
اور جو شخص ذرا بھی حدیث
پر غور کرے گا اس کو یقین
ھو جائے گا کہ سب بالمعنی
روایت کرتے ھیں۔ ابوحیان
کہتے ھیں کہ میں نے اس مسئلہ
میں زیادہ گفتگو اس لیے کی کہ
مبتدی یہ نہ کہ دے کہ نحوی
مبتدی یہ نہ کہ دے کہ نحوی
عرب کے قول سے جن میں مسلم
عرب کے قول سے جن میں مسلم
اور کافر دونوں ھیں استدلال
سے جو بخاری اور الفاظ حدیث
سے جو بخاری اور مسلم وغیرہ
فقہ اور معتمد لوگوں سے روایت
ھوئی ھیں استدلال نہیں کرتے۔
ھوئی ھیں استدلال نہیں کرتے۔

بیان کو غور سے پڑھے گا آسے معلوم ہو جائے گا کہ نحویوں نے حدیث میں کیوں استدلال نہیں کیا اور ابوالحسن ابن ضائغ شرح جمل میں کہتے ہیں کہ روایت بالمعنی کا جائز رکھنا ھی میرے نزدیک اس بات کا سبب ہے کہ سیبویہ جیسے نحویوں نے زبان کے کلیہ قواعد ثابت کرنے میں حدیث سے سند نہیں لی اور اس باب میں قرآن اور عرب کے کلام پر اعتاد کیا ہے اور اگر علماء حدیث میں روایت بالمعنی کو جائز نہ رکھتے تو پیغمبر خدا کا کلام زبان فصیح کے ثابت کرنے میں زیادہ قابل اعتاد تھا کیوں کہ پیغمبر خدا تمام عرب سے زبادہ فصیح تھے۔

علامه عبدالقادر بغدادی نے خزانة الادب میں سیوطی کے

قول کو نقل کرکے اس کی تصدیق کی ہے۔

علمائے علم حدیث نے جس قدر حدیثوں پر کوشش کی ''شکرالله سعیہ۔م'' آن کی کوشش صرف راویوں کے ثقه اور معتمد هونے کے دریافت کرنے میں هوئی ۔ مگر هم کو نہیں معلوم هوتا که جو حدیثیں معتبر سمجھی گئی هیں آن کے مضمون کی صحت اور عدم صحت دریافت کرنے کا کیا طریقه اختیار کیا گیا تھا۔ حدیثوں کی تقسیم مرفوع ۔ متصل ۔ مسند وغیرہ پر کی گئی ہے ۔ مگر وہ تقسیم بھی بلحاظ اسناد راویوں کے ہے ۔ نه بلحاظ روایت یعنی بلحاظ صحت با مشتبه هو نے مضمون حدیث کے ۔

ھاں بلا شبہ موضوع حدیثوں کے پہچاننے کے لیے محدثین نے چند قواعد بنائے ہیں جن کے مطابق مضمون حدیث پر لحاظ کر کے آس حدیث کو موضوع قرار دیتے ہیں ۔ ہم یہ نہیں کہتے کہ صحاح سبعه یا حدیث کی اور معتبر کتابوں میں کوئی موضوع حدیث ہے۔ مگر جب کہ یہ بات تسلیم کی گئی ہے کہ روایت حدیثوں کی باللفظ نہیں ہے بلکہ بالمعنی ہے اور الفاظ حدیث کے رسول خدا صلی اللہ عليه وسلم کے الفاظ نہيں هيں تو کوئي وجه نہیں که آن حديثوں کے مضامین کی صحت نہ جانچی جاوے۔ تاکہ ظاہر ہو کہ جو مضمون اس حدیث میں بیان ہوا ہے اس کے بیان کرنے میں راوی سے تو کوئی غلطی نہیں ہوئی اور ہارے نزدیک یہ بات کہنی کافی نہیں ہے کہ جب وہ حدیثیں معتبر کتابوں میں لکھی گئی ہیں تو یہ تصور کر لینا چاہیر ، کہ آن کے مضمونوں کی صحت بھی جابخ لی گئی ہے۔ خصوصاً اس صورت میں کہ خود علمائے اسلام آن حدیثوں میں سے جو حدیث کی معتبر کتابوں میں لکھی گئی ہیں متعدد حدیثوں کو صحیح نہیں قرار دیتے ۔

تمام علماء اس بات پر متفق هیں که اگر کسی حدیث میں

مندرجه ذیل نقصوں میں سے کوئی نقص پایا جاوے تو وہ حدیث معتبر نہیں ہے بلکه موضوع ہے۔ چناں چه شاہ عبدالعزیز صاحب عجاله نافعه میں لکھتے ھیں که ''علاسات وضع حدیث وکذب راوی چند چیز است''۔

اول آنکه خلاف تاریخ مشهور روایت کند ـ

دوم آنکه راوی شیعه باشد وحدیث در طعن صحابه روایت کند و یا ناصبی باشد و حدیث در مطاعن اهلبیت باشد و عللی هذا القباس ـ

موم: آن که چیزے روایت کند که برجمیع مکنمین معرفت آن و عمل بران فرض باشد و او مفرد بود بروایت ـ

چهارم: آن که وقت و حال قرینه باشد برکذب او ـ

پذجم : آن که مخالف مقتضائے عقل و شرع باشد و قواعد شرعیه آنرا تکذیب نمایند۔

ششم : آن که درحدیث قصه باشد از امرحسی واقعی که اگر بالحقیقت متحقق می شد هزاران کس آنرا نقل می کردند ـ

هفتم: رکاکت لفظ و معنی ـ مثلاً لفظے روایـت کند کـه بر قواعد عربیه درست نشود یا معنی که سناسب شاں نبوت و وقار نباشد ـ

هشتم : افراط در وعید شدید برگناه صغیره یا افراط در وعده عظیم بر فعل قلیل ـ

نهم : آن که بر عمل قلیل ثواب حج و عمره ذکر نماید ـ دهم : آن که کسی را از عاملان خیر ثواب انبیاء موعود کند ـ یاز دهم : خود اقرار کرده باشد بوضع احادیث ـ

امام سخاوی نے فتح المغیث میں ابن جوزی سے حدیث کے موضوع ہونے کی یہ نشانیاں لکھی ہیں ۔

اول: جو حدیث کہ عقل اُس کے مخالف ہو اور اصول کے متناقص ہو ۔

دوم ؛ ایسی حدیث کـه حس اور مشاهـده اس کو غلط قرار دیتا هو ـ

سوم : وہ حدیث جو کہ مخالف ہو قرآن یا حدیث متواتر یا اجاع قطعی کے ـ

چہارم: جس سیں تھوڑے کام پر و عید شدید یا اجر عظیم کا وعدہ ھہ _

پذجم : رکت معنی اس روایت کی جو بیان کی گئی ہے ـ ششم : رکت یعنی سخافت راوی کی ـ

هفتم : منفرد هونا راوی کا ـ

هشتم : منفرد هونا ایسی روایت میں جو تمام مکافین سے متعلق هو ـ

نہم : یا ایسی بڑی با**ت ہ**و جس کے نقل کرنے کی بہت سی خر**ور**تیں ہو**ں** ۔

دہم : جس کے جھوٹ ہونے پر ایک گروہ کثیر متفق ہو۔ یہ جوکچھ ہم نے بیان کیا یہ خلاصہ ہے اس کاجو ابن جوزی نے بیان کیا ہے ۔ لیکن ہم اس مقام پر ابن جوزی کی عبارت بعینہ جو فتح المغیث میں نقل کی گئی ہے نقل کرتے ہیں ۔

ابن جوزی نے کہا ہے کہ جو حدیث عقل کے مخالف ہے یا اصول کے برخلاف ہے اس کو موضوع جانو۔ اس کے راویوں کی جرح قال ابن الہجدوزی و کل و تعدیل کرنے کی کوئی ضرورت حدیث راید پخالفہ العقول نہیں ہے۔ یا حدیث میں ایسا اویناقض الاصول فاعلم انہ بیان ہو جو حس و مشاہدہ کے موضوع فلایہ کا عتبارہ برخلاف ہے۔ یا قرآن یا حدیث مصوضوع فلایہ کا عتبارہ برخلاف ہے۔ یا قرآن یا حدیث

متواتریا اجاع قطعی کے برخلاف ھے ۔ جن سی سے ایک کی بھی تاویل نہیں هو سکتی ۔ یا تھوڑ ہے سے کام پر ہت سے عداب یا ثواب کا ذکر هو ۔ اور یه اخبر مضمون قصه گویوں اور بازاریوں کی حدیثوں سی ہت کثرت سے یایا حاتا ہے یا معنی رکیک و سخيف هول جيسر اس حديث میں کہ کدو کو بغیر ذبح کیے نه کهاؤ ـ اسی لیر اس رکت معنی کو بعض نے راوی کے کذب پر دلیل گردانا ھے اور یه سب قرینر تو روایت می هوتے هیں اور کبھی راوی سی ایسا قرینه هوتا هے جیسر غیاث کا قصہ مہدی کے ساتھ اور سعد بن طریف کی حکایت جن کا ذکر ہو چکا ہے اور ابن احمد هروی کا وه بهوده کلام (نسبت امام شافعی کے) گھڑ لینا حب اس سے کہا گیا کہ کیا تو شافعی کو نہیں دیکھتا اور آن کو جو اُس کے تابع ہیں خراسان میں ۔ حاکم نے اس کو مدخل

ای لا تعتر رواته و لا تنظر في جرحمه - او يكون ممايد فعه الحس و المشاهدة _ اوسبا ينالنص الكتاب او السنة المتواترة اوالاجاء القطعي حيث لا يقدل شئي من ذلك التاويل ـ او تيمضمن الافراط بالوعيد الشديد على الامراليسسراو بالوعد العظم على الفعل اليسير وهذا لاخيركشير موجود في حديث القصاص والطرقية ـ وسن ركت المعنى لاتاكا واالقرعة حتى تلذ محوا و لذا جعل بعض ذلك دليلا على كذب رواية وكل هذ سن القرائن في المروى ـ وقد تكون في الراوى كفضة غياث مع المهدى وحكاية سعد بن طریف الاضی ذکرها و اختلاف الهاسون بن احمد الهروى حين قيل له الاترى الشافعي و سن تبعم بخراسان ذاك الكلام القبيح حكاه الحاكم في المدخل قال

بعض المتاخرين وقدرايت رجلا قام ينوم جمعة قبيل الصلوة فابتد أليورده فسقط من قامته مغشيا عليه ـ او انفراده عمن لم يدركه بما لم يوجدعند غس هما او انفراده بشئي سع كونه فيه يلزم المكنفين علمه وقطع العذرفيه كما قىدرە الىخىطىيىپ نى اول الدكمفايدة و اوبام جسيم يتوفر الدواعي على نقله كبحصر البعدد لللحاج عن البيت او بما صرح بتكديبه فيله جلمه كاشعر تمتنده في البعيادة قواطئهم على البكذب و تتليد بعنضهم بعنا ـ (فتح المغيث صفحه مرر) ـ کرنا اور ایک دوسرے کی تقلید کرنا عادة ً نامکن ہے۔

> الهدروي الاترى الى الشافعي و سن تبعه مخراسان فقال مد بن عبدالس

میں بیان کیا ہے اور متاخرین میں سے ایک نے کہا ہے کہ میں نے ایک مرد کو دیکھا که حمعه کے دن تماز سے ملر كهيرًا هوا اور جاها أنه أس كو بیان کرنے پھر بہوش ہو کر گریڑا ۔ یا راوی کا منذرد ہونا ایسی حدیث سی حو اوروں کے اپاس نہیں ہے۔ آن نو نوں سے حنهوں نے آس حدیث کو نہیں سنا۔ با اس كا منفرد هو نا السم حديث میں جس کے مضمون ک جاننا اتمام مکالمین کو نہایت فاروزی ہے۔ با ايسر عظيرالشان واقعمه كا بیان جس کے نقل کرنے کی ہت سے لو کوں کو فارورت ہے۔ جیسر کعدہ سے حاحبوں کے ایک گروه کا روکا حان یا ایسا بیان جس کو اتنی بڑی جاعت نے جھٹلا دیا ہے جن کا جھوٹ بر اتفاق

اور جو قبیح الفاظ حضرت اسام شافعی کی نسبت کہر آئئر تھر وقييل لمامون ابن احمد وه يه هس ـ كه مامول بن احمد ہروی سے کہا گیا کہ کیا تو نے شافعی کو نہیں دیکھا اور آن کو جو خراسان میں اس کے تابع

حدثنا عبدالله بن معدان الازدى عن انس مرفوعياً يكون في استى رجل يقال له بحد بن ادریس اضر علی استی سن ابلیس -

شافعی) کہیں گے ۔ وہ مدری آست کو شیدطان سے زیادہ نقصان بہنچائے گا۔

و ممنا يبدخيل في قبريبنية الخطيب عن الى بكربن وه قول هے جو خطيب سے منقول العليب أن من حملة دلائل الوضع ان يكدون مخالفا للاعمقىل محميث لا يمقبل التاويل ويلتحق به ما يلافعه الحس والمشاهدة اويكون سنا فيا لدلالة الكتاب القطعية او السننة للتواترة او الاجماع المقبطعين بـ

یا حدیث متواتر یا اجاء قطعی کے خلاف هو۔

ومسن السخالف للعقل سارواه ابن الجوزي سن طريق

هیں۔ تو اس نے کہا هم سے احمد بن عبدالر نے اور اس سے عبداللہ بن معدان ازدی نے انس سے مرفوعاً حديث بيان كي هے كه مری آمت میں ایک شخص ہوگا (تدریب الراوی صفحه ۱۰۰) جس کو مجد بن ادریس (امام

اور تدریب الرادی میں نکھا ہے کہ موضوع ہونے کے ان قرینوں میں سے جو خود روایت حال المروى ما نقال عن کے دیکھنر سے معلوم ہوتے ہیں ھے اور آس نے ابنو بکر بین الطيب سے نقل كيا هے ـ كه موضوء هونے کے تمام دلائل میں سے ایک یہ ہے کہ حدیث اس طرح عتل کے مخالف ہو کہ آس کی تاویل نه هو سکتی هو اور اسی ذیل میں وہ حدیث ہے جس کے مضمون حیل و مشاہدہ (تدریب الراوی صفحه ۹۹) کے برخلاف هو ۔ یا کتاب الله

اور اسی کتاب میں درباب مخالفت عقل و نقل یه لکھا ہے که آن حدیثوں میں سے جو عقل کے مخالف ہیں ۔ ایک وہ ہے ۔ جو

عبدالرحان بن زيد بن سالم عن ابیه عن جده مرفوعاً ان سفينة نوح طافت بالبيت سبعا وصلت عندد المقام وكعدتسان ـ

(تدریب الراوی صفحه . . .) نزدیک دو رکعت نماز پارهی ـ

احسن قول القائل اذا رايت الحديث يباين المعقول او مخماليف السمندنسول و يسناقض الاصول فاعلم انه موضوع و سعني سناقضة للاصول ان ينكون خيارجيا عين دواوين الاسلام من المسانيد و والكتب المشهورة

(تدریب الراوی صنحه ۱۰۰) ـ

ابن جوزی نے جو سناقیضہ للاصول کے معنی میں لکھا ہے کہ وہ حدیث دوادین اسلام یعنی کتب حدیث اور کتب مشہورہ میں نه هو اس تید کو هم صحیح نهیں قرار دیتر ـ کیوں که یه بات مسلم ہے کہ صحابہ کرام رضی اللہ تعالمٰی عنہم اجمعین یا آن کے بعد جو حدیث کے راوی ھی معصوم نہ تھر اور یہ بھی تسلم ہے کہ احادیث کی روایت بالمعنی ہے بلفظہ نہیں ہے۔ پس اگر آن حدیثوں میں جو حدیث کی مروجه کتابوں میں مندرج هیں منجمله مذکوره

ابن حوزی نے عبدالرحان سے اور اس نے اپنر باپ زید سے اور اس نے اپنر باپ سالم سے مرفوعاً بیان کی ہے کہ نوح کی کشتی نے کعبہ کے گرد سات دفعہ طواف کیا اور مقام ابراھم کے

اور اسی کتاب میں لکھا ہے کہ ابن جوزی کہتر ہیں کسی وقال ابین الجوزی سا نے کیا اچھا کہا ہے کہ حب تو حدیث کو عقل یا نقل کے خلاف پائے ۔ سمجھ لر کہ وہ موضوء ہے اور اصول سے مخالف ہونے کے سعنی یہ ہس کہ وہ حدیث دواوین اسلام سے یعنی مسانید اور حدیث کی مشہور کتابوں سے خارج ہو ـ

بالا نقصوں کے کوئی نقص ہایا جاوے تو کیا وجہ ہے کہ ہم اس حدیث کی نسبت یہ نہ خیال کریں کہ راوی سے بیان کرنے میں یا مضمون کے سمجھنر سی کچھ غلطی ہوئی ہے اور اس بات کو فرض کر لینا که جب وه حدیث کتب حدیث میں مندرج هو گئی هے تو اس میں کچھ غلطی نہیں ہے ہارے نزدیک صعیح نہیں ہے اور راویوں کو معصومیت کا درجه دینا ھے۔

نقل اور عقل میں مخالفت

جب که نقل اور عقل میں مخالفت ہو تو ابن تمیمہ کی یہ رائے ہے کہ نقل کو عقل پر مقدم کیا جاوے ۔ کیوں کہ دلیل عقبی کا نقل کے خلاف ہونا محال سمجھتا ہے اور ابن رشد کا یہ خیال ہے کہ آدر نقل پر مخوبی غورکی جاوہے اور آس کے ما سبق اور مالحق پر لحاظ کیا جاومے تو خود نقل سے ظاہر ہوگا کہ وہ ساول ہے اور اس کے بعد عقل اور نقل میں مخالفت نہیں رھے گی اور وہ اقوال يه هس ـ

قول ابن تمدمه

یس اگر کوئی کہرکہ جب یقینی دلیل عقلی سمعی دلیل کے فلو قال قائل اذا قام خلاف هو تو دونوں میں سے یس اگر سمعی دلیل مقدم کی جاوے تو اصل کے خلاف ہوگ اور عقلی دلیل مقدم کی جاوے تو رسول کو حهثلانا لازم آوے گا ایسی بات میں جس کی نسبت اضطراری علم هے که رسول نے فرمایا ہے اور یہ کھلا

الدليل العقلي القطعي ايك كو مقدم كرنا ناگزير هوگ على مناقضة هذا (السمعي) فلا بد سن تقديم احد هما فلو قدم هذا السمعي قدح في اصله وان قدم العقلي لزم تكذيب الرسول فيما اعلم بالأضطرار انه جاء به وهذا هو الكفر الصريج

فلا بد لهم من جواب عن هذا والجواب عنهانه يمتنع ان يقوم عقلي قطعي يناقض هذا فتبين ان كلما قام عليه دليل قطعی سمعی یمتنع ان يعارضه قطعي عقلي ـ

(كتاب العقل و النقل لا بن تميمه صفحه و ر) ـ (نسخه قلمي) ـ

قول این ارشد

كن سا ادى اليه البرهان و خالفه ظاهر الشرء ان ذلك الظاهر يقبل التاويل على قانون التاويل العربي و هذه القضية لا يشك فيها مسلم ولا يرتاب بها سوسن و سا اعظم ازدياد اليقين بها عند من زاول هذا المعنى و جربه و قصد هذا المقصد من الجمع بين المعتول و المنقول بل نقول انه ما

هوا کفر ہے پس اس بات کا آن کو جواب دینا چاهبر اور حواب یه هے که یه بات نا ممکن ہے کہ کوئی یقینی عقلی دلیل سمعی دلیل کے خلاف هو پس ظاهر هو گيا كه جس بات پر يقيني سمعي دليل قائم هو محال ھے کہ یقینی عقلی دلیل اس کے خلاف ھو ۔

اور هم کو پورا یقین ہے کہ جس بات پر دلیل ہو اور نااھر و نبحين نقطع قبطعا ان شرع اس کے خلاف ہو تو وہ نا آھر عربی کے قانون تاویل کے موافق قابل تاویل هورد اور یه قضیه ہے جس میں کسی مسلم اور مومن کو شک نمیں هو سکتا اور ام شخص کو اس قضیه کا یتین کتنا بڑھ جاتا ہے جس نے آس کی مشق اور تجربه کیا ہو اور معقول اور منقول میں جمع كرنا چاها هو ـ بلكه هم تو كهتر هين كه جب كوئي ظاهر شرع اس بات کے خلاف ہو جس پر دلیل قائم ہو چکی ہے تو

من منطوق به في الشرع مخالف بظاهره لما ادى اليه البرهان الا اذا اعتبر الشرع وتصنحت سائر اجزايه و وجد في النفاظ الشرع سایشهد بظاهره لذلک التاويل او يقارب ان يشهد ـ

(كتاب فصل المقال و تقرير ما بين الشريعة و الحكمة من الاتصال لا بن الرشد) _

اعلم ان المعول فيما عليه سن نني و اثبات فاذا دلت الادلة على اسر من الاسور وجب ان بنني كل وارد من الاخسار اذا كن ظاهره بخلافه عليه و نسوقه اليه و نطابق بينه و بینه و نخلی ظاهرا آن کان له و نشرط ان کان مطلقا و نخصه ان كان عاما و نفصله ان كان سجملا و نوفق بينه وبين الادلة سن كل

ایسا نہیں ہے کہ جب شرع کا لحاظ کیا حاومے اور اس کے تمام حصوں میں تلاش هو تو شرع کے لفظوں میں ایسا ظاہر نہ ملر کہ اُس تاویل کے موافق ہو جو ظاہر شرء کی تاویل کے ہو اگر بعینه ایسا نه هوگا تو آس کے قریب ھوگا۔

اور شریف مرتضلی علم الهدی کا جو شیعوں کا ایک ست بڑا عالم فے اس باب میں یہ قول یعتقد علی ما تدل الادلة في كه اعتقادات میں بس انهی باتوں پر اعتاد کرنا چاھیر جو دليلس اثباتاً يا نفياثاً ثابت هون پس جب دلیلی کسی بات پر دلالت كريس پس واجب هے كه جو خبریں ظاہر میں اُس بات کے خلاف ہوں آن خبروں کو هم اس بات کی طرف کھینج لاویں اور اس سے مطابق کر دیں اور آن خبروں کے ظاہر کو چهوار دیں اور مطلق هو تو شرط لگا دیں اور عام ہوں تو

طريق اقتضلي الموافقة و أل الى المطابقة و اذاكنا نفعل ذلك ولا نحتشمه في ظواهر القرآن المقطوء على صحته المعلوم و روده فكيف تشوقف عين ذلك في اختمار آحاد لا توحب علما ولا تشمو بقيما فمتع وردت عليك اخبار فا عرضها على هذه الجملة و ابند ما عليما و انعل فيها ما حكمت به الادلة و اوجبت الجج العقلية و ان نغذر فيها بناءو تاويىل و تىخىرىج و تىنىزيىل فليس غير الاطراح لها و ترك النضريج عليساو لو اقتصرنا على هذه الجملة لاكتفينا فيمن يتدبر و يتـفـكـر ـ

(دردغرد شریف مرتضلی علم الهدی) ـ

خاص کر دیں اور محمل ھوں تو تفصیل کر دیں اور جس راہ سے ھو آن خبروں میں اور دلیلوں میں مطابقت کر دیں ۔ اور جب هم قرآن کے ظواهر کی نسبت حن کی صحت یقینی ہے اور جن کا نازل ہونا قطعی ہے ایسا کرتے ہیں تو اخبار احاد کی بابت حو علم اور یتن کا موجب نہیں ہوتی ایسا کرنے میں کیوں رکیں گے ہیں جب تجه پر خبرین وارد هون تو آن کا دلیلوں سے مقابلہ کر اور مقتضا دليلون كا هو آن خبروں کی ہرتاؤ کر اور آگر آن کی تاویل اور نکالنا اور آتارنا نه هو شکر تو سوائے گرا دینر خبروں اور آن کی تصریح چھوڑ دینے کے کیا چارہ ہے اور اگر ھم ان باتوں

یر اقتصار کریں تو آن لوگوں

کے لیر جو تامل اور فکر کرتے

هس کافی هوگا ـ

اس بیان سے دو باتیں ظاہر ہوتی ہیں اول یہ کہ الفاظ احادیث کے اور خصوصاً احادیث طوال کے جیسے کہ معراج کی

حدیثیں ہیں راویوں کے الفاظ ہیں اور وہ لفظ بعینہ نہیں ہیں۔ جو رسول خدا صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمائے تھے۔

دوم یه که جب نقل صحیح اور عقل قطعی میں مخالفت هو (ابن تمیمه کے نزدیک تو مخالفت هو هی نہیں سکتی اور ابن رشد کے نزدیک نقل پر غور کرنے سے ضرور ایسی بات نکلے گی جس سے مخالفت دور هو جاوے گی) اور نه ابن تمیمه کے یقین کے مطابق اور نه ابن رشد کے قول کے موافق آن میں تطبیق هو سکے تو اس کے راوی اگر نه معتمد هیں تو وہ حدیث موضوع سمجھی جاوے گی اور اگر سعتمد هیں تو بقین اس بات کا هوگا که وہ قول رسول خدا دی الله علیه وسلم کا نہیں ہے اور اس کے بیان میں راویوں سے کچھ سہو و خلطی هوئی ہے اور اگر وہ قول پیغمبر مانا جاوے تو ضرور سے کے نہیں کے معنی اور متصد سمجھنر میں دچھ غلطی ہے۔

مگر ہم آئو یہ بیان ادرنا جاہیے آئہ کن امور کو ہم عقل قطعی کے مخالف قرار دیتے ہیں آن میں سے ایک تو ممتنعات علی ہیں اور دوسرے ممتنعات استقرائی جو کئیہ کی حد تک پہنچ گئے ہوں اور جو قانون فطرت سے موسوم ہوتے ہیں ۔

مثلا جزئ کل کے برابر ہونا یا مساوی کے مساوی کا مساوی نه ہونا یا موجود بالذات غیر مخلوق کا کسی کو اپنے مثل پیدا کرنا ممتنعات عقلی سے ہیں۔

استقراء جس میں تجربه اور امور بھی داخل ھیں جو تحقیقات علمی سے ثابت ھوئے ھیں جب کلی ھونے کی حد تک پہنچ جاتا ہے اور جس سے قانون فطرت ثابت ھوتا ہے اس کی مخالفت ھونا ممتنعات استقرائی سے ہے اور اس کو بھی طرد اللباب ممتنعات عقلی سے تعبیر کیا جاتا ہے مثلاً انسان کا مستقیم القامت بادی البشرہ عریض الاظفار ھونا استقراء کلی سے ثابت ھوتا ہے۔

اسی استقراء سے جو امور ثابت ہوئے ہیں وہی قانون فطرت کہلاتے ہیں اور آن میں تغیر و تبدل نہیں ہو سکتا اور جیسا کہ آن میں تغیر و تبدل ہونا متنعات عقلی سے ہے اسی طرح مذہب اسلام میں از روئے نقل کے بھی آن میں تغیر و تبدل ہونا متنعات سے ہے قرآن مجید میں جا بجا فرمایا ہے '' لا تبدیل لخلق اللہ ولین تجد لسنة اللہ تبدیلا'' بس قانون فطرت کے برخلاف ہونا ممتنعات عقلی میں سے ہے ۔

اسی بناء پر حدبت صلواۃ سنینہ نوح عند المقاء اور حدبث ردالشمس ان کان مرادہ حقیقۃ کر دھا اور حدبث شق القمر تسلیم نہیں کی جاتی خواہ آن کو سوضوع نہا جاوے اگر آن کے راوی کا ذب البیان ھوں یا نا سمجھی اور غلط فہمی راویوں سے تعبیر کیا جاوے ادر آن کے راوی عادل ھوں ۔

معراج کے متعلق جس قدر حدیثیں ھیں آن میں آنعضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا بجسدہ جبریل کا ھاتھ پکڑ در خواہ براق بر سوار ھو کر یا پرند جانور کے گھونسلے میں بیٹھ کر جو درخت میں لٹکا ھوا تھا بیت المقدس تک جانا اور وھاں سے بجسدہ آسانوں پر تشریف لے جانا یا بذریعہ ایک سیڑھی کے جو آسانوں تک لگی ھوئی تھی چڑھ جانا خلاف قانون فطرت ہے اور اس لیے ممتنعات عقلی میں داخل ہے اگر ھم آن کے راویوں کو ثقہ اور معتبر تصور کر لیں تو بھی یہ قرار پائے گا کہ آن کو اصل مطلب کے سمجھنے اور بیان کرنے میں غلطی ھوئی مگر اس واقعہ کی صحت تسلیم نہیں ھو سکنے کی اس لیے کہ ایسا ھونا ممتنعات عقلی میں سے ہے اور یہ کہہ دینا کہ خدا میں سب قدرت ہے اس نے ایسا ھی کر دیا ھوگا جہال اور نا سمجھ بلکہ مرفوع القلم لوگوں کا کام ہے نہ ان کا جو دل سے اسلام پر یقین کرتے ھیں اور دوسروں کو اس مقام پر یقین دلانا اور

اعلائے کامة اللہ چاہتے ہیں۔

واقعات خلاف قانون فطرت کے وقوع کا ثبوت اگر گواهان رویت بھی گواهی دیں تو محالات سے ہے اس لیے کہ وہ اُس وقت دو دلیلیں جو ایک هی حیثیت پر مبنی هیں سامنے هوتی هیں ایک قانون فطرت جو هزاروں لا کھوں تجربوں سے جیلا بعد جیل و زماناً بعد زمان ثابت ہے اور ایک گواهان رویت جن کا عادل هونا بھی تجربه سے ثبت هوا هے پس اس کا تصفیه کرنا هوتا هے که دونوں تجربوں میں کون سا تجربه ترجبح کے قابل هے قانون فطرت کو غلط سمجھنا یا راوی کی سمجھ اور بیان میں سمو و غلطی کا هونا ۔ کوئی ذی عقل تو قانون فطرت پر راوی کے بیان کو ترجیح نہیں دے سکتا ۔ قول بیغمبر بلا حجت قابل تسایم ہے مگر کلام تو اسی میں ہے کہ قول بیغمبر ہے یا نہیں ۔

اب هم خور کرتے هیں احادیث معراج پر جن میں صاف پایا جاتا ہے کہ وہ ایک واقعہ ہے جو سوتے میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے دیکھا تھا اور دلالت النص سے بھی پایا جاتا ہے اور صحاح کی کسی حدیث سے نہیں پایا جاتا کہ حالت بیداری میں آپ نے یہ نظارے دیکھے اور بجسدہ آپ بیت المقدس اور آسانوں پر تشریف لے گئے بلکہ برخلاف اس کے چند حدیثوں میں سونے کی حالت پائی جاتی ہے تو ہارا اور ہر ذی عقل کا بلکہ ہر مسلمان کا فرض ہے کہ اس کو ایک واقعہ خواب کا تسلم کرے اور ابن رشد کے قول کو صحیح سمجھے کہ اگر نقل میں کوئی بات خلاف عقل معلوم ہوتی ہے تو خود نقل اور اس کے ما سبق و مالحق پر غور کرنے سے وہ مخالفت دور ہو جاتی ہے نہ یہ کہ تاویل بعید اور رکیکہ اور دلائل فرضی دور از کار سے اس کو ایسا واقعہ بنا دے جو حقیقت کے بھی ایسا ہی مخالف ہو جیساکہ عقل کے اور مذہب۔

اسلام کی بنیاد مستحکم کو توڑ کر ریت پر بلکه پانی پر اس کی بنیاد ركهر والله يهدى سن يساء الى صراط مستقم ـ

شنق صدر

منجمله واقعات معراج کے شق صدرکا بھی واقعہ ہے جس کو ہم بالتخصیص بیان کرنا چاہتر میں نبوں کہ اُس کی نسبت ایسی بھی حدبثیں میں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ علاوہ معراج کے اور دفعہ بھی شق صدر هوا تھا۔

نخری میں تین حدیثیں ابوذر سے اور دو حدیثیں مالک بن صفصعه سے اور ایک حدیث مسلم میں اور ایک نسائی میں مالک ابن صعصعه سے اور بخاری میں ایک حدیث انس بن مالک سے اور مسلم میں دو حدیثیں انس ابن مالک سے مروی ہیں جن میں شق صدر کا واقعہ معراج کے واقعات کے ساتھ بیان ہوا ہے۔

علاوہ اس کے اور روایتوں سے جن میں مسلم کی بھی ایک حدیث ہے جو انس ابن مالک سے مروی ہے معلوم ہوتا ہے کہ علاوہ معراج کے چار دفعہ اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا شق صدر هوا ہے اور یہ اختلاف روایات اس امرکا باعث ہوا ہے کہ آن کی تطبیق کے خیال سے لوگوں نے متعدد دفعہ شق صدر کا ہونا قرار دیا ہے مگر یہ محض غلطی ہے ۔ ابن قبم نے معراج کی و کل ہذا خبط و ہذہ مختلف روایدات کے سبب جن طریقة ضعفاء النظا هریدة لوگوں نے تعدد معراج کو مانا

مختلف روایات سے تعدد واقعہ کا

ماننا بالكل خبط هے اور يد طريقه

ظاهرى المذعب ضعيف راويون

من ارباب النقل الذين اذا هم أن كي نست لكها هم كه راوا فالقصة لفظة تخالف سياق بعض الروايات حعلوه مرة اخدرى فكرا اختتاف علمه

الروايات عدد وا الوقايم - كا هي جو سارے قصه مين (زاد المعاد ابن قیم صفحه روایت کے ایک لفظ کو دوسری روایت کر مخالف یا کر ایک حدا - (7.8

واقعه ثهمراتے هس اور جتنی مختلف روایتس ملتی جاتی هس آتنر هی حدا واقعات خيال كرتے هيں بس مناسب هےكه اول هم أن حديثون اور روایتوں کو اس مقاء بر نقل کر دیں ۔

شق صدر عند حليمة في بني الليث

انس ابن مالک کمتر هی که رسول خدا صلی الله علیه وسلم لڑکون کے ساتھ کھیل رہے تھر جبریل آئے اور آپ کو پکڑ کر عن انس بن مالک رضی ﴿ زَمَنَ بُرَ مِهَارُا اور آپ کے دل الله علمه ان رسول الله صلى كو چير كر نكالا اور أس مين اللہ علیہ وسلم آناہ جبریل و ہو سے ایک پھٹکی نکلی اور کما که یه تجه می شیطان کا حصه تھا پھر دل کو سونے کے لگن فاستخرج القلب فاستخرج من آب زمزم سے دھویا اور زخم اچھا کر کے وہیں رکھ دیا جہاں تھا۔ لڑکے دوڑتے ھوئے آب کی ماں یعنی دودھ پلائی کے پاس آئے اور کہا کہ جد مارے گئر لوگ آنحضرت کی طرف دوڑے دیکھا کہ آپ کے چہرہ کا رنگ متغیر ہے۔ انس کہتر ہیں کہ میں حضرت کے سنہ بر ڈنکوں کے نشان

بلعب سم الغييمان فاخذه فيصيره فشق عننه فيلبيه منه علقة فقال هذا حظ الشيطان منك نم غسله في طست من ذهب بماء زمزم ثم لائمه ثم اعاده في مكانه وجاء الغلمان يسعون الى اسه يعنى ظئره فقالوا ان محمدا قد قدل فاستقبلوه وهو منتقع البلون قبال انس فیکننت ارمے

دیکھتا تھا۔

اثر المخيط في صدره ـ (صحيح مسلم جلد اول صفحه ۲۰)

واخرج البيامة و ابن عساكر و غيره هم عن ابن عداس (في قصمة حليمة) فوالله انه ليعد مقدمنا بشهريين او ثبلانية سع اخبيه من الرضاعة لفي بهم لنا خلف بيوتنا جاء اخبوه يشتد فبقبال ذاك اخبى القريشي قد جاذ رجلان عليهما ثياب بيض فاضجعاه وشقابطنه فخرحت انا و ابوه نشتد نحره فنجده قائما سنتقعا لونه فاعشقه ابوه وقال ای بنی ما شا نک قال قد جاء نی رحلان عليهما ثياب بيض فاضجعاني فشقا بطني ثم استخرحا منه شيئا فطر حاه ثم راده كما كان ـ

(مواهب لدنيه نسخه قلمي صفحد ٢٠٠٠

ہمتی اور ابن عساکر وغیرہ نے حلیمہ کے قصہ میں ابن عباس کی یہ روابت بیان کی ہے کہ خدا کی قسم ھارے آنے کے دو تین مهينر بعد آنحضرت هارمے کھا کے پیچھر جہاں ھارہے جانور چرتے تھے اپنر دودہ شریک بھاؤ، کے ساتھ کھیل رہے تھر که آپ ک رضاعی بهائی دوژتا آیا اور آس نے کہا کہ دو شخص سفید کپڑے یہنے ہوئے آئے اور آنھوں نے میرے قریشی بھائی کو زمین پر لٹا کر آس کا بیٹ چیر ڈالا۔ میں اور اس کا باپ دونوں ان کے ڈھونڈنے کو دوڑے۔ ھم دیکھتر میں که وہ کھڑے میں اور چہرے کا رنگ متغمر ہے ۔ باپ نے آن کو گار سے لگا لیا اور پوچها بیٹا! تمهارا کیا حال ہے۔ کہا دو سفید ہوش آدمی آئے اور اُنھوں نے محھ کو زسن پر لٹایا اور میرا پیط

چر ڈالا پھر پیٹ میں سے کوئی چیز نکال کر پھینک دی اور اس کو ویسا هی کر دیا جیسا تها۔

ابو یعلی ، ابو نعم اور ابن عساکر نے شداد بن اوس کی حدیث میں جو بنی عامر کے ایک شخص سے مروی ہے بیان کیا ہے کہ رسول خدا نے فرسایا جب مس قبيله بني ليث مس دوده بیتا تیا ایک دن لڑ کوں کے ساتھ ميدان مس كهيل رها تهاكه تن شخص آئے حن کے پاس سونے ک لگن برف سے بھرا ہوا تھا۔ آنہوں نے لڑکوں کے درسیان سے محمل کو اٹھا لیا اور سب لؤکے بھاگ کر قبیلہ کی طرف چلر گئر ۔ آن شخصوں میں سے ایک نے محمل کو آھستہ زمین پر لٹا دیا اور سرمے پیٹ کو سینہ کے سرے سے پیڑو تک چیر ڈالا۔ میں دیکھ رہا تھا اور محھ کو كوئى تكليف معلوم نهى هوتى تهى پھر آس نے سرے پیٹ کی آنتوں کو نکل کر برف سی اچھی طرح دھویا اور ان کو اسی جگہ رکھ دیا _ پهر دوسرا آدسي کهژا هوا اور اس نے اپنر ساتھی سے کہا

و في حديث شداد ابن اوس عن رجل من بني عامر عند ای یعلی و ای نعیم و ابن عساكر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال كنت مسترضعا في بني لبت بن بكر فسيني انا ذات بوم فی بیطین و ادمه اتبراب سن الصبيان اذا انا برهط ثلاثة معمم طست سن ذهب ملئي ثلجا فاخذوني مـ.٠ بن اصحابي و انطلق الصبيان هرابا مسرعين الى الحي فعمد احدهم فاضجعني الى الارض اضجاعا لطيفا ثم شق سابن مفرق صدرى الى منتهى عانتي وانا انظر اليه لم اجد لذلك مساتح اخرج احتشاء بنطني ثم غسلها بذلك الشلج فانعم غسلها ثم اعادها مكنها ثم قام الشائي فقال لصاحبه

تو ھٹ جا پھر اس نے سرمے پیٹ میں ھاتھ ڈال کر معرا دل نكالا اور مين ديكهتا تها يهر أس کو چیر کر ایک کالی بھٹکی اس میں سے نکال کے بھینک دی۔ پھر اس نے ھاتھ سے دائی بائی انسارہ کیا گویا انسی چیز کو لینا چاھتا ہے۔ پھر ایک نور کی سیر سے جس آئو دیکھ کر آنکھیں چندھیائیں میرے دل پر مہر کی اور آس کو نور سے بھر دیا وہ نور نبوت اور حکمت کا تھا بھر دل کو آسی حگه رکھ دیا۔ آس مہر کی تھند ک ایک مدت تک سرمے دل میں محسوس ہےوتی رهی پهر تیسرے شخص نے اپنر رفیق سے کہا تو هٺ جا۔ پهر اس نے میرے سینہ کے سرمے سے پیڑو تک هاتھ بھیرا خدا کے حکم سے زخم بھر آیا ۔ پھر آھستہ پکڑ کر مجھ کو آٹھایا ۔ پہلے شخص نے کہا کہ اس کی آست کے دس آدمیوں کے ساتھ اس کو تولو ۔ آنھوں نے محھ کو تولا تو میں وزن می آن سے زیادہ نکلا ۔ یھر

تنح ثم ادخيل يده في جوني فاخرج قبلي وانا انظر اليه فصدعه ثم اخرج سنه مضغة سوداء فرمى بها ثم قال بيده تمينة ويسرة كانه يتناول شيئا فاذا مخاتم من تبورمجا ر البناظر دونه فختم به قلبي فاستبلاء نبورا و ذلك نبور النبيوة والتحكمية ثم اعاده سكانه فوجدت برد ذلك النخاتم في قلبي دهرا ثم قال الشالث لصاحبه تنج فام يده بن مفرق صدری الی سنتهای عالتی ـ فالتأم ذلك الشق باذن الله تعالني ثم اخدذ بيدى فالبهضي سن سكاني المهالسأ لطيفا ثم قال الاول ذنه بعشرة من استه فوزنونی مهم فرحجتهم ثم قال زنه بمایة من آسته فرحجتهم ثم ضموني الى صدورهم و قبلو راسی وسا بن عینی ثم قالوا يا حبيب لم نرع انک لو تدری سایراد بک سن الخبر لقرت عيناك _

(مواهب لدنیا نسخه قلمی اس نے کہا اب کے سو آدمیوں صفحه ۲۵ و ۲۶) کے ساتھ تولو ۔ میں وزن میں آن سے بھی زیادہ نکلا۔ اس نے کہا آن کو چھوڑ دو اگر ساری است کے ساتھ ان کو تولو کے تو پھر بھی یہ وزن میں زیادہ نکلیں گے یھر اُنھوں نے محھ کو چھاتی سے لگایا اور معرمے سر اور آنکھوں کے درمیان بوسہ دے کر کہا اے عزیز اندیشہ نہ کرو اگر تم کو معلوم ہوتا کہ خدا تم سے بھلائی کرنی چاہتا ہے تو تم ضرور خوش ہوتے ۔

بہتی میں ابن عباس کی روایت میں ہے کہ حلیمہ کہتی ہیں في روا يسة ابـن عـبـاس نا گاه سرا بيٹا ضمره دوڑتا هوا عند البيم. في قالت حليمة خوف زده اور روتا هوا آيا اس كر اذا نیا بنی ضمرہ بعدو ماتھے سے پسینہ ٹپکتا تھا اور پکرت تھا۔ اے باپ اے ماں جاؤ مجد سے سلو تم اُن کو مردہ یاؤ کے ۔ خدا آن کو پناہ میں رکھر ایک شخص آن کے پاس آیا اور ہارے درمیان سے آن کو آٹھا کر ہاڑکی چوٹی پر لر گیا اور آن کے سینہ کو پیڑو تک چیر ڈالا اور اسی روایت میں ہے که آنحضرت نے فرمایا تین شخص آئے ایک کے ھاتھ سی چاندیکا لوٹا اور دوسرے کے زمرد سبز کا لگن تھا ۔

فزعا وجبينه يارشع بأثبا يشادي يا ابت با اساه الحق عدأ فيما تبلحقاه الاميتا اعاذه الله من ذلك اتباه وحيل فاختطفه من اوسا طنا و عبلابيه ذروة البجيبيل حتي شق صدره الى عانشه و فيه انه عليه السلام قال اتاني رهط ثلاثه بيد احدهم ابريق سن فضة و في يدالشني طست سن زسرد اختضر ـ (مواهب لدنيه نسخه قلمي

صفحه ۲۳)

شق صدره في غار حرا ابو النعیم نے بیان کیا ہے کہ جبریل اور میکائیل دونوں نے

روی ابوالنعم ان جریل و میکائیل شقا صدره و غسلاه ثم قال اقرا باسم ربکے ۔ وکاذا روی شاق صدرہ الشريف همنا الطيالسي والحارث في مسنديهما ـ

(مواهب لدنيه نسخه قلمي صنعه و س و ۵۰)

شق صدره وهو ابن عشر

اور ابو نعم نے دلائل النبوت میں ایک اور شق صدر کا بیان وروی شق اینضا وهنو کیا هے جب که آنحضرت کی دس ابن عشر و نحو ها سع قصة برسكي عمر تهيي اور عبد المطلب له مع عبد المطلب ابو عے ساتھ ان کا ایک قصه بیان

آنحضرت کے سینہ مبارک کو حبرا

اور دھویا بھر کہا بڑھ خدا کر

نام سے اور ایسا ھی طیالسی اور

حارث نے اپنی مسندوں میں

(غار حرا میں آنحضرت کے شق

صدر کا) ذکر کیا ھے۔

نعيم في الدلائل -

(مواهب لدنيه نسخه قلمي صفحه ۲۳)

شق صدره مرة خامسته

پانچویں دفعہ بھی شق صدر بیان کیا گیا ہے مگر ثابت ہیں

و روی خامسته (ای سع شق صدره في المعراج) ولا

(مواهب لدنيا نسخه قلمي صفحه ۲۳)

جو اختلاف که آن روایتوں میں هیں وہ خود ان سے ظاهر هیں۔ مگر منجمله ان روایتوں کے ابن عسا کر ، شداد ابن اوس ، ابن عباس انس کی روایتیں ایسی هیں جن میں خاص ایک وقت اور ایک مقام

اور ایک زمانه کا قصه شق صدر مذکور ہے۔ بعنی جب که آنحضرت بنی لیث میں حلیمه کے گھر تشریف رکھتے تھے۔ یه چار روایتین باوجودیکه ایک وقت اور ایک زمانه اور ایک مقام کی ہیں ایسی مختلف ہیں که کسی طرح آن میں تطبیق نہیں ہو سکتی اور اس لیے آن میں سے کوئی روایت بھی قابل احتجاج کے نہیں ۔

 اختلاف اس باب میں که کتنے شخص یا فرشتے شق صدر کے لیے آئے

ابن عساکرکی حدیث میں ہے ۔کہ دو آدمی سفید کپڑے یہنے ہوئے آنحضرت کے پاس آئے ۔

شداد ابن اوس کی حدیث میں ہے ۔ که ایک شخص آنحضرت کے باس آیا ۔

ابن عباس کی حدیث میں ہے کہ ایک آدمی آیا اور آنحضرت کو آٹھا لے گیا اور یہ بھی ہے کہ تین شخص آئے ۔

انس کی حدیث میں ہے کہ جبریل آنحضرت کے پاس آئے۔

۲۔ جو چیزیں که آن شخصوں کے پاس تہیں آن
 میں اختلاف

شداد ابن اوس کی حدیث میں ہے کہ آن کے پاس ایک طشت تھا سونے کا برف سے بھرا ہوا ۔

ابن عباس کی حدیث میں ہے کہ ایک کے ہاتھ میں چاندی کی چھاگل تھی اور دوسرے کے ہاتھ میں سبز زمرد کا طشت۔

ابن عساکر اور انس کی حدیث میں ان چیزوں میں سے کسی کا ذکر نہیں ہے ـ

۔ اختلاف آنحضرت ک_ے زمین پر لٹانے کی نسبت

ابن عساکر اور شداد ابن اوس کی حدیث میں ہے کہ آنحضرت کو زمین پر لٹایا (یعنی حلیمہ کے گھر کے پیچھے جو میدان تھا

اس میں) ۔

ابن عباس کی حدیث میں ہے کہ آنحضرت کو آٹھا کر ہاڑکی چوٹی پر لر گئے اور وہاں لٹایا ۔

انس کی حدیث میں اس کا کچھ ذکر نہیں ہے۔

٧- اختلاف نسبت شق صدر و غسل قلب وغيره

ابن عساکرکی حدیث میں ہے کہ آنحضرت کا پیٹ چیرا اور آس میں سے کچھ نکال کر پھینک دیا اور بھر ویسا ہی کر دیا اور اس میں کسی چیز کا کسی چیز سے دھونے کا ذکر نہیں ہے ـ

ابن عباس کی حدیث میں ہے کہ آنحضرت کا سینہ پیڑو تک چیرا اور کسی چیز کے نکال کر پھینکنے کا ذکر نہیں ہے ـ

انس کی حدیث میں ہے کہ آن کا دل چیرا اور آس میں سے کوئی کالی چیز نکال کر پھینک دی اور کہاکہ یہ حصہ ہے شیطان کا اور آن کے دل کو زمزم کے پانی سے دھویا اور جہاں تھا وھیں رکھ دیا۔

شداد ابن اوس کی حدیث میں ہے کہ حلقوم سے پیڑو تک آنحضرت کا سینہ جمرا ۔

مندرجه ذیل امور صرف شداد ابن اوس کی حدیث میں ہیں اور کسی حدیث میں نہیں

1- آنحضرت کے پیٹ کی انتڑیاں نکالیں ۔

ہوں کو برف سے دھویا اور جہاں تھیں وھیں رکھ دیں ۔

چھر دوسرے شخص نے آنحضرت کے پیٹ میں ہاتھ ڈالا۔

اور ایک کالا ٹکڑا نکال کر پھینک دیا۔

ہ۔ پھر ایک نور کی مہر سے آنحضرت کے دل پر مہر کی اور جہاں تھا وہاں رکھ دیا ۔

ہور پہلے شخص نے آنحضرت کو ان کی امت سے تولا ۔

. ۔۔ پھر آن تینوں شخصوں نے آنحضرت کو چھاتی سے لگایا اور پیشانی دو بوسه دیا۔

٥- اختلاف در باب اطلاع واقعات بحليمه ابن عساکر کی حدیث میں اس کا کچھ ذکر نہیں ـ شداد ابن اوس في حديث مين هي اله قبل شق صدر جو الركح وهان تهر، وه بها ک اثر ـ

انس کی حدید میں ہے کہ بعد شق صدر لڑکے دوڑتے ہوئے حلیمہ کے پاس آنے اور کہا کہ مجد سارے کئے ۔

ابن عباس کی حدیث میں ہے کہ میرا بیٹا ضمرہ میرمے پاس دوڑتا ہوا آیا ۔

٦۔ اختلاف نسبت صحت پانے شق صدر کے

شداد ابن اوس کی حدیث سیں ہے کہ تین شخص جو آئے تھر آن میں سے ایک نے حلقوم سے پیڑو تک ھاتھ پھیرا اور زخم اچھا ھو کہ _

انس کہتے ہیں کہ میں ٹانکے لگنے کا نشان آنحضرت کے سینه پر دیکھتا ہوں (یعنی بعد شق صدر ٹانکے لکئے گئر) ۔

بہتی دو ۔ دیثوں میں اس کا کچھ ذکر نہیں ہے ۔

غرض له یه روابتین ایسی مختلف هین که آن مین تطبیق غیر ممکن ہے ۔ جو کہ شق صدر کا ہونا نہ امر عادی ہے نہ امر عقلی ۔ اس لیے بسبب اختلاف روایات کے اس کا متعدد دفعہ واقعہ هونا تسلیم نہیں هو سکتا بلکه اس کے اختلاف کے سبب سے یہ حديثيں قابل احتجاج نہيں ـ

اصل یه هے که قرآن مجید سی وارد هوا هے ۔ '' الم نشرح لک صدرک '' اُس کے ٹھیک معنی یہ ھیں '' شرح اللہ صدرہ للاسلام " جیسا که مخاری کی حدیث میں ابن عباس سے مروی ہے (بخاری صفحه ۹۳۵)، لیکن مسلم میں جو حدیث مالک بن صعصعه کی معراج کے متعلق آئی ہے اس میں بجائے شق صدر کے لفظ شرح صدر کا آیا ہے اس لیے مفسرین ۔ سورہ الم نشرح میں جو لفظ شرح صدر کا ہے ۔ اس کو شق صدر سے تعبیر کیا ہے حالاں کہ وہاں شق صدر سے تعبیر کرنا محض غلط ہے اور ترمذی نے بھی غلطی سے حدیث معراج کے اس ٹکڑے کو جس میں لفظ شرح صدر آیا ہے سورہ الم نشرح کی تفسیر میں لکھ دیا ہے اسی بنا پر راویوں نے شق صدر کی مختلف حدیثیں پیدا کر لیں ہیں ۔ جن میں اختلاف کثیر واقع ہو گیا ہے ۔ مگر ہم ان روایتوں میں سے کسی روایت کو بھی قابل احتجاج نہیں سمجھتر ۔

علاوہ معراج کے صحاح کی کسی حدیث میں بجز مسلم کے شق صدر کا ذکر نہیں ہے اور اس حدیث کو جو انس بن مالک سے مروی ہے ہم ابھی لکھ آئے ہیں لیکن وہ حدیث بھی قابل احتجاج نہیں ہے کیوں کہ خود اُس حدیث سے تعارض ظاہر ہوتا ہے حضرت انس فرماتے ہیں کہ آنحضرت کے سینہ مبارک پر ٹانکے لگائے کا نشان میں دیکھتا ہوں یعنی شق صدر کے بعد جبریل نے آپ کے سینہ پر جیسے جراح زخم پر ٹانکے لگاتا ہے ٹانکے لگائے تنے اور آنحضرت کے سینہ مبارک پر اُس زمانہ تک کہ انس مسلمان ہوئے ہوں ٹانکوں کے نشان موجود تنے اور حضرت انس اُن کو دیکھتے تھے ۔ العجب ثم العجب ۔

ایسی حدیثوں پر احتجاج نہیں ھو سکتا ۔ مولانا شاہ عبد العزیز نے عجاله نافعه میں نافعه میں علامات وضع حدیث میں لکھا ہے که "مخالف مقتضائے عقل و شرع باشد و قواعد شرعیه آن را تکذیب تماید " اس حدیث کا خلاف عقل ھونا تو ظاھر ہے اور مخالف شرع اس لیے ہے که اگر شق صدر رسول خدا کا ھوا ھو

تہ وہ بطور معجزہ کے ہوا ہو ک اور پھر اُس کا اندمال بھی بطور معجزہ کے ہوا ہوگا۔ اس پر مثل جراحوں کے ٹانکر لگائے حانے اور آن کے نشانوں کو حضرت انس کا دیکھنا خود اعجاز کے مخالف ہے ۔ جس پر اس واقعہ کی بنا ہے اور اس لیر اس حدیث پر احتجاج نهيں هو سکتا ۔

چند حدیثیں ایسی ہیں جن میں شق صدر کا ہونا معراج کے ساتھ بیان ہوا ہے ۔ ایسا ہونا البتہ تسلیم ہو سکتا ہے ۔ اس لیرکہ هاری تحقیق میں واقعه معراج کا ایک خواب تھا جو رسول خدا صلی اللہ علیه وسلم نے دیکھا تھا اُسی خواب میں یه بھی دیکھنا کہ جبریل نے آپ کا سینہ چبرا اور اُس کو آب زمزم سے دھویا قابل انکار نہیں ہے اور نہ کوئی اس سے انکار کرنے کی کوئی

بعض کتابس حدیث کی جیسر که بہقی اور دار قطنی مثل آن کے میں اور کتب سیر و تواریخ جیسر که سوامب لدینه اور سیرة ابن هشام وغیرہ هیں وہ جب تک آن کے صحیح هونے یا غلط نه ھونے کی کوئی وجہ نہ ہو مطلقاً قابل التفات نہیں ہیں اور آن کی اکثر حدیثیں اور روایتیں نا معتبر اور موضوع هیں آن پر استدلال کرنے سے زیادہ کوئی کام نادانی و سفاہت و بلادت کا نہیں ہے کیا یہ کچھ تعجب کی بات نہیں ہے کہ ابو نعیم کی روایت میں ہے کہ جبریل و سیکائیل شق صدر کرنے کو آئے تھے ایک راوی نے و في روايـته فاقبل أس پر يه طره اضافه كيا كه الی طیران ابیضان کا نبهما آنحضرت نے فرمایا که سرے

وه نسران یعنی دو گد تهر اور

ایک شاذ روایت سی هے که

نسران و فی روایت غریب ته پاس دو سفید پرند آئے گویا که نزل عليه كركيان و قد يقال ان الطيرين تارة

دو کرکی یعنی دو کانگ حانور

آئے تھے کہا جاتا ہے کہ وہ

دونوں جانور کبھی تو گد کے

مشابه هو جاتے تھے اور کبھی

کانگ کے (اور وہ جبریل و

شبها بالنسرين و تارة بالكركيين و في كون محجئي جبريل و ميكائيل عليها السلام على صورة النسر لطيفة لان النسر سيد الطيور

(صفحه ۳۳ ، سبرة مجدیه) میکابل فرشتے تھے) اور جبریل و میکایل کے گدوں کی صورت بن کر آنے میں یہ حکمت تھی کہ گد پرندوں میں سردار ہے۔ کیا کوئی با ایمان مسلمان جس کو اپنے ایمان کی کچھ بھی قدر ہوگی ایسی لغو اور بیہودہ روایتوں بر جن کے راوی " فلیت بوء سقع من النار" کے مصداق هیں۔ التفات كر سكتا هے _ حاشا وكلا .

L.B.S. National Academy of Administration, Library यसूरी MUS**S**OORIE

यह पुम्तक निम्नाँकित तारीख तक वापिस करनी है। This book is to be returned on the date last stamped

| | | | F |
|----------------|-----------------------------------------------|----------------|---------------------------------------------|
| दिनांक Date | उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No. | दिनांक Date | उधारकत्ता को संख्या Borrower's No. |
| | | | |
| | | | - |
| | - | | |
| | | | |

| 2 17 20 | 1020 | 13 Hos. | | | | |
|----------------------------------------------|------------------------------------|-----------------------------------------|--|--|--|--|
| 77.00 | अवाप्ति सं० | | | | | |
| 2017 | | • • • • • • • • • • • • • • • • • • • • | | | | |
| वर्ग सं. | पूस्तक स | | | | | |
| Class No | Book No | | | | | |
| लेखक | | | | | | |
| Author | li Tarin | | | | | |
| शोर्षक ^P | in ∸i | - | | | | |
| Title | وصحر أ بعد وه طربي ملّه و | | | | | |
| *************************************** | | | | | | |
| निर्गम दिनाँक | उधारकर्ता की सं. Borrower's No. | हस्ताक्षर | | | | |
| Date of Issue | Borrower's No. | | | | | |
| <u>י</u> | | 4020 | | | | |
| 37.092 | LIBRARY | | | | | |
| V.13 LAL BAHADUR SHASTRI | | | | | | |
| / Y.13 lational Academy of Administration | | | | | | |
| MUSSOORIE | | | | | | |
| | | | | | | |

Accession No.

- Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
- An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
- 3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
- Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
- Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

Help to keep this book fresh, clean & moving